श्री

प्रतिक्रमण सूत्र

तथा

नव स्मरण अने देववंदनादि भाष्यत्रय.

अर्थसहित.

अने चैत्यवंदन, थोय, स्तवन, सझायादि युक्त.

आ ग्रंथ

समस्त जैनबंधुउने प्रतिदिन अवश्य उपयोगी

जाणी, तेने यथामति संशोधन करीने

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्रीमोहमयीपत्तनमध्ये

निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९५१ ना माहा वदि १३ सन १८९५.

प्रस्तावना.

आ प्रतिक्रमण जे छे, ते षडावश्यकरूप छे, तेमां प्रथम सामायिक, बीजो चतुर्विंशतिस्तव, त्रीजुं वंदनक, चोथुं प्रतिक्रमण, पांचमो कायोत्सर्ग, अने छठुं प्रत्याख्यान, ए छ प्रकारनी आवश्यकक्रियालक्षणनुं कारिताकरण छे, ते विशेषें करी गृहस्थाश्रमीनो धर्म छे, तिहां संध्याकालने विषे जिनपूजनानंतर श्रावक जे छे, ते साधुनी पासें अथवा पोषधशालाने विषे जइने प्रतिक्रमण करे, ए प्रतिक्रमण शब्द, आवश्यकविशेषवाची छे, तो पण आंहिं सामान्यतायें करी षड्विध आवश्यक क्रियाने विषे रूढ छे, ते छ आवश्यकमध्यें पहेलुं सामायिक जे छे, ते आर्त्तरौद्रध्यानपरिहाररूप धर्मध्यानकरणें करी शत्रु, मित्र, पाषाण तथा कांचनादिकने विषे समजावरूप छे, माटें प्रारंजमां कह्युं छे. बीजो चतुर्विंशतिस्तव, एटले चोवीश तीर्थंकरनां नामकीर्त्तनपूर्वक गुणकीर्त्तन तेनुं कायोत्सर्गने विषे मनमां अनुध्यान होय छे, माटें तेने बीजुं कह्युं छे. त्रीजुं वंदनक एटले वांदवा योग्य एवा धर्माचार्यने पच्चीश आवश्यकें विशुद्ध, बत्रीश दोषरहित नमस्कार करवो, ते पण युक्तज छे. चोथुं प्रतिक्रमण ते शुजयोगथकी अशुजयोगने विषे गमन करनारने फरी पाछुं शुजयोगमांज क्रमण करवुं, तेने प्रतिक्रमण कहियें, ऐटले मोक्षफल आपनारा एवा शुजयोगने विषे निःशल्य थवुं तेने प्रतिक्रमण कहियें. तिहां मिथ्यात्व थवाथी तथा असंयम थवाथी तथा कषाय थवाथी अशुजयोग थाय, ते अशुजयोगना विछेदने माटें जे निंदाद्वारें करीने अशुजयोगनिवृत्तिरूप पडिक्कमणुं करवुं, ते अतीत काल विषयिक पडिक्कमणुं जाणवुं, तथा संवरद्वारें करीने वर्त्तमान काल विषयिक पडिक्कमणुं जाणवुं अने अनागतकाल ...ित् जेटलां सूत्रां अर्थर. संवरद्वारें करीने छे, माटे तेमां पण दोष. सांज सवारना पडिक्कमणानी क प्रतिक्रमण सिद्ध थाय छे. ए प्रतिज देववंदन, गुरुवंदन अने पच्चक्खाणनकें षडावश्यक क्रियामां घटशु श्रावकने प्रतिदिन अवश्य उपयोगमां तेमां एक दैवसिक, बीजुं रात्रि जाष्योनो अनुक्रम, साधु श्रावकनी क्रियाने पांचमुं सांवत्सरिक छे, ते हला जाष्यमां श्रीजिनेश्वरना देरासरने वंदन कर

आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे, परंतु विशेषविधि, जिज्ञासुजनोयें प्रतिक्रमण हेतुगर्भादिक, अन्यग्रंथोथकी जाणी लेवो.

हवे ए प्रतिक्रमण रूप जे षडावश्यक छे, ते दिवस दिवस प्रत्यें उजय कालने विषे श्रावकें करवुं. अने वली जद्रकप्राणीयें तो अन्यासने अर्थें पण करवुं. परंतु एवी रीतनी आशंकाउ करवी नहिं के " जेणें कोइ पण व्रत अंगीकार कर्युं नथी एवा जद्रक जीवने व्रतना अति चारोनो असंजव छे, तेम छतां पण तेनी शुद्धिरूप प्रतिक्रमण करवुं, ते तेने अनुचित छे? अथवा तेने ते प्रतिक्रमणना पाठनो उच्चार करवो पण योग्य नथी, तथा जेने व्रतोना अतिचारो लागता नथी, एवा ज द्रकजीवो जो अतिचार विना पण पाठनो उच्चार करे, अथवा प्र तिक्रमण पण करे, तो तेने साधुना पंच महाव्रतोना अतिचारना उ च्चार करवानो पण प्रसंग थाशे?" एवी एवी आ शंकाउ करवी नहिं, कार ण के जेम कोइ जद्रक जीवने जैनमार्गमां प्रवेश कराववाने अर्थें दी क्षानुं विधान करावीयें छैयें, तेनी पेठें जद्रक जीवने प्रतिक्रमण क रवुं पण युक्तज छे. जो पण ते जद्रक जीवें कोइ व्रत अंगीकार कर्युं नथी तो पण तेवा जीवने ते व्रत करवानुं अश्रद्धानादिकपणुं तो पूर्वें छेज, तेथी तेने ते व्रतोना अतिचारोना उच्चार करवाथकी अश्रद्धान विपरीत प्ररूपणादिक विषयनुं प्रतिक्रमण करवुं, तेतो तेणें अंगीकरेलुं ज छे. ते विषे आज पुस्तकना (१५५) मा पेचमां "पडिसिद्धाणं करणे" इत्यादि वंदितासूत्रनी अडतालीशमी गाथानो अर्थ जोइ लेवो, अने ते माटेंज श्रावकनी अगीयार प्रतिमा तथा साधुनी बार प्रतिमा जेणें अं गीकार करेली नथी, एवा साधु मुनिराज पण प्रतिक्रमण करतां " इगार स[illegible] बारसहिं जिरकुपडिमाहिं " एवी रीतनो पाठ जणे [illegible]में कांइ अंगीकार करेली होती नथी, तेथी [illegible] पण तेनो पाठ जणे छे. तेम जद्रकने प [illegible]ण तेनो पाठ जणवामां असंबंधपणुं [illegible]वतना अंशने अंगीकार करनार [illegible]ंगीकार करनारा श्रावकोने [illegible] प्रत्येक व्रतवालाने व

स्ते जूडुं जूडुं प्रतिक्रमणसूत्र बांधेलुं नथी, अने जो नद्रक जीवने प्रतिक्र मण करवानी प्रजुनी आज्ञा न होत, तो जूदां जूदां एकादिक व्रतोना धा रक श्रावकोने माटें पण जूदां जूदां प्रतिक्रमण करवां जोतां हतां, परंतु ते तो कस्यां देखातां नथी. प्रतिक्रमणसूत्र तो मात्र साधु अने श्रावक ए बे आश्रयीज डे, ते पण एटला वास्ते जूदां डे, के अणुव्रतवाला साधुने जे वातनी मनाइ करेली डे, तेवी वातोनुं जे श्रावकें आचरण करवुं, तेनो प्रपंच कहेवा सारु श्रावकनुं प्रतिक्रमण जूडुं डे, तेथी ते विशेषें करी श्राव कने घणुं उपयोगमां आवे तेवुं डे, ते माटें श्रावकना प्रतिक्रमणें करीनेज श्रावक प्रतिक्रमण करे डे. अहियां घणा हेतु तथा दृष्टांतो डे, परंतु प्र स्तावनाना विस्तारजयथी अधिक विलेखन कखुं नथी, माटें कोइ पण प्रका रनी आशंका कस्या विना नद्रकजीवें षडावश्यकरूप प्रतिक्रमण,प्रतिदिव स उन्नयकालें अवश्य करवुं;एज महानंदसंदोहनुं हेतु डे. किं बहु विलेखनेन.

विज्ञापना.

आ पंचप्रतिक्रमण सूत्र नामक पुस्तकनी चतुर्थ आवृत्ति बापी प्रसि द्धतामां मूकतां सर्व सज्जन तथा विद्धज्जनोनी समक्ष अमें सविनय प्रार्थना करियें बैयें के, आ चतुर्थावृत्तिमां यद्यपि नवीन प्रस्तावना लखवानी जरूर हती, तथापि प्रस्तावनामां जे कांइ ब आवश्यकनुं सामान्यथी स्वरूप द र्शाववुं जोइयें,तेटलुं स्वरूप तृतीयावृत्तिनी प्रस्तावनामां दर्शावेलुं होवाथी फरी नवीन प्रस्तावना न लखतां पूर्वनीज कायम राखी ने जे कांइ लख वानी जरूर डे, ते आहीं विज्ञापनामांज लखीयें बैयें.

त्रीजी आवृत्तिमां जे जे सूत्रां अर्थ सहित बपेलां हतां, तेटलां सर्व सूत्रां अर्थसहित सुधारीने आ चतुर्थावृत्तिमां पण बाप्यां डे. वली जेम ए न वकार, पंचिंदि तथा इरियावहिथी मांमीने यावत् जेटलां सूत्रां अर्थस हित बपेलां डे, ते सर्वे श्रावक नाइर्जने सांऊ सवारना पडिक्कमणानी क्रियामां हरहमेश उपयोगी डे, तेमज देववंदन, गुरुवंदन अने पच्चक्खा ण, ए त्रणे नाष्य पण सर्व साधु श्रावकने प्रतिदिन अवश्य उपयोगमां आवे तेवां डे, केम के ए त्रणे नाष्योनो अनुक्रम, साधु श्रावकनी क्रियाने अनुसरतोज डे. जेम के पहेला नाष्यमां श्रीजिनेश्वरना देरासरने वंदन कर

वानो सविस्तर विधि कह्यो छे, अने बीजा भाष्यमां श्रीगुरु महाराजने वंदन करवानो सविस्तर विधि कहेलो छे, तथा त्रीजा भाष्यमां कर्म परिशाटनने अर्थें साधु तथा श्रावकने नवकारसि आदिक पच्चरकाणो नित्य प्रत्यें करवानी आवश्यकता छे. तेनो सविस्तर विधि कहेलो छे, माटें ए त्रणे भाष्य पण सर्व कोइने अवश्य खपमां आववा योग्य होवाने लीधे उपयोगी छे, माटें ते भाष्यो त्रीजी आवृत्तिमां छपायां छे, तेवीज रीतें आ चतुर्थावृत्तिमां पण सविस्तर अर्थसहित पृष्ठ ३०४ थी मांमीने पृष्ठ ५१२ सुधी पृष्ठ १२० मां छाप्यां छे. ते भाष्योनी अनुक्रमणिका यद्यपि विशेष विस्तार पूर्वक करी नथी, तो पण प्रत्येक भाष्यनां जेटलां द्वार बांधेलां छे, तेटलां द्वारोनी अनुक्रमणिका संक्षेपथी बीजा ग्रंथोनी अनुक्रमणिकानी साथें करेली छे.

वली आ ग्रंथमां पोषध पारवानो विधि स्मरण न आववाथी बिलकुल छपायोज न हतो तेथी केटलाएक सुज्ञजनोनी सूचनाथी आ ग्रंथनी आ प्रस्तावना तथा विज्ञापना थइ रहे, त्यां ककानी बाराखडी हती ते काढी त्यां छठा पृष्ठथी छाप्यो छे. कारण के बीजे कोइ ठेकाणे जो छापीयें तो आ ग्रंथनी तृतीयावृत्तिमां जे बावतो दाखल करेली छे तेमांहेली कोई पण बावत काढी नाखवी पडे अने तेविना दाखल थइ शके नहिं. अने वली तेम करवाथी वांचनारा साहेबोनेज उपयुक्त छापेली कोइ पण बाबत नीकली जाय तो ते पण ठीक नही अने आ पौषधविधि जो आ ग्रंथने वधारीने छापीयें तो आ ग्रंथनी कीमतमां कांइक वधारो थाय कारण के थोडुं छापीयें तो पण ४ पेचथी ओछुं छपाय नही तेथी तेनो कागल तथा छपामणी वेसे. वली समेत शिखरजिन वंदियें ए स्तवन त्रीजी आवृत्तिमां (५३५) तथा (५६०) ए बेहु पेचमां भुलथी बे वार छपाइ गयुं हतुं ते (५६०) पेचमां हतुं ते काढी नाखी तेने बदले नेम राजुलनुं चोमासुं तथा (५६३) पृष्ठमां, सूरशशीकृत जिनप्रभुनी आंगीना दर्शननुं स्तवन दाखल करेलुं छे.

मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणा तथा शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा तथा देववांदवाना बार अधिकार, इत्यादि वातो सर्व भाष्यमां सविस्तर छपाइजवाथी जूदी छापी नथी तथा जूदी जूदी एकवीश सज्झाउ अने चार पांच स्तवन एमांनां केटलांएक बीजुं मूलपाठें प्रतिक्रमण छाप्युं छे, तेमां छपाइजवाथी तथा आ ग्रंथनी कीमत वधीजवाना भयथी आ ग्रथमां दाखल

कर्यो नथी. तथापि जाष्य त्रण छापवाथीज आ ग्रंथ घणो महोटो थएलो छे. तेथी किम्मतमां जेटलो वधारो करवो जोइयें तेटलो जीमसी शेठें पोतें पोतानी इश्यातीमां कर्यो नथी तो हाल अमें पण तेज कीमत राखी छे.

आ पुस्तकमां नवकार, पंचिंदि तथा इरियावहि सूत्रथी मांडीने देवसि कादिक पांचे प्रतिक्रमणोमां जे कांइ सूत्रों बोलाय छे, ते सर्वे सूत्रों घणां ज विस्तारित अर्थ सहित दाखल करेलां छे, तथा नवकारसी आदिक पच्चरकाणो अर्थसहित,तेमज अजितशांति स्तवनादिक नवस्मरण अर्थ सहित, तेमज बीजां पण चैत्यवंदनो, थुइउ, स्तवनो, सज्जाउ, गौतमस्वामीनारास आदिक जे जे घणांज अवश्योपयोगी प्रकरणो छे, ते सर्वे यथामति संशोधन करीने छापेलां छे, तेनुं विशेष वर्णन अहींयां लखवाने बदले गुणिजनोने विनति करीयें छैयें के आ संपूर्ण ग्रंथ, फुरसद लइने वांचवा कृपा करवी.

तेमज वली आ ग्रंथमां केटला एक पडिक्कमणा संबंधि सूत्रोना अर्थ छाप्या छे, तेमां वांचनार सज्जनोने संस्कृतनो बोध थवा सारु तथा ते पदोनो अर्थ स्पष्ट समजाय एवा हेतुथी प्रथम मागधी शब्दोना संस्कृत शब्दो करीने पछी तेनो प्राकृतमां अर्थ लख्यो छे, वली जे ठेकाणें कोइ वांचनार जनने आशंका उत्पन्न थवा योग्य कथन आवेलां छे, ते ठेकाणे ग्रंथांतरथी जोइने तेवी केटलीएक आशंकाउनुं समाधान पण करेलुं छे.

तथा प्रतिक्रमण करवाना विधि वगेरेने महान् ग्रंथोना अनुसारथी बीजी रीतें लखी, तेमां शब्दोनी रचना जूदी रीतें करीने तैय्यार करवा धार्यो हतो, परंतु प्रथमना घणां एक पुस्तकोमां जे विधि उपाइ गयेलो छे, तेथी ते केटली एक रीतें साधारण जनोने समजवामां अडचड पडवाना जयथी छाप्यो नथी, तथा पडिक्कमणामां अमुक सूत्र पछी अमुक सूत्र कहेवाय छे, तेनां कारणो दर्शावनारो तथा एवीज रीतें बीजी पण केटली एक बाबतोने दर्शावनारो एक थोकडो बनावी छापवा विचार कर्यो, परंतु एनी पण सुमारे बे हजार श्लोक संख्या थवा जाय छे, तेथी ते आ ग्रंथ साथें छापीयें तो ग्रंथ गौरवने पामे माटे छाप्योनथी.

तथा प्रतिक्रमणनां छए आवश्यक उपर सात नयादिक, नव द्वार, उतारवा जोइयें. परंतु जीमसी जाइना अजावथी ते पण बन्युं नथी. तथा तेमज वली आ चतुर्थावृत्तिना पडिक्कमणामां सुधारो

करतां बीजी कोइ नवीन ज़ूलो पण बुद्धिदोषादिकना सद्भावें अवश्य रही हशे, तेम वली केटले एक ठेकाणे ऱ्हस्व, दीर्घ, कानो, मात्रा, अनुस्वार वगेरेनी चूक तथा अक्षरादिक न्यूनाधिकनी ज़ूल चूक मनुष्य मतिथी अवश्य रहेली हशे, तथा मंदबुद्धिना प्रज्ञावथी क्यांहीएक अर्थमां पण अशुद्धता रहेली हशे, किं बहुना? अमाराथी आ ग्रंथ गपतां जे कांइ जिनवचन विरुद्ध ठपायानी आचरणा थइ होय, ते सं बंधि जे कांइ सूक्ष्म, बादर अपराध थयो होय, ते सर्व अपराधनुं डु ष्कृत, आ पुस्तक वांचनारा साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका रूप चतुर्विध संघ समक्ष मिथ्या करीयें ठेयें, अने तेमनी पासेंथी ते अपराधनी क्षमा मागीने वली प्रार्थना करीयें ठैयें के आ पुस्तकमां अमाराथी थयेली जे ज़ूलो होय, ते ज़ूलो साहेबोयें सुधारीने वांचवी ॥

॥ अथ पोसहपारवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमी, इच्छामि खमासमणो देइ इच्छाका रेण संदिसह ज़गवन्! पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं? एम बोली मुहपत्ति पडि लेहवी. तदनंतर इच्छामि० इच्छाका० पोसह संदिसाहुं. वली इच्छ इच्छाका० संदि० पोसह ठाउं? पठी बे हाथ जोडी एक नवकार गणीने पोसहनुं प च्चक्काण करवुं. इच्छामि० इच्छाका० सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं, त्यांथी ते सज्फाय करुं, त्यां सूधी कही त्रण नवकार गणी पठी इच्छामि० इच्छा० बहुवेल संदिसा हुं. इच्छं० इच्छा० बहुवेल करशुं. इच्छं इच्छा० पडिलेहण करुं? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी. इच्छामि० इच्छाकारि ज़गवन्! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावो. इच्छामि० इच्छाका० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी. इच्छामि० इच्छाका० उपधि संदि साहुं? इच्छामि० इच्छाका० उपधि पडि लेहुं. इच्छामि० इच्छाका० सज्फाय क रुं? एम कही एक नवकार गणी मन्हजिणाणंनी सज्जाय कहेवी, पो रसीना अवसरें इरियावहिया पडिक्कमी इच्छामि० इच्छाका० पडिलेहणा करुं॥ एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी.

॥ हवे सहु समक्ष पोसह उच्चारवो, ते कहे ठे ॥

उपर लख्या प्रमाणें सर्वे कहेवुं, पण सज्फाय न कहेवी. ने पठी राइ मुहपत्ति पडिलेहवी, वांदणां बे देवां. पठी राइयं आलोउं? एम कही

'जो मे राइयो' तथा सवस्सवि राइअ कही पन्नास होय तो वांदणां बे देवां. पछी अप्रुठिउं खामवो. खामीने वांदणां बे देवां अने पच्चक्काण करवुं. त्यार पछी कालना देव वांदवा. पाछली वखतें पडिलेहण करे, ते इरियावही, पडिक्कमी पछी गमणागमणे आलोउं? कही, इरियासमिति, जाषासमिति एषणासमिति, आदानजंरूनिक्खेवणासमिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. ए पांच समिति, त्रण गुप्ति, ए आठ प्रवचन मातातणी पोसह सामायिक लीधे खंरूण विराधना थइ होय, ते सवि मन,वचन, कायायें करी मिन्हा मि दुक्कडं. इन्हामि० इन्हाका० पडिलेहण करुं ? इन्हामि० इन्हाका० पोसहशाला प्रमार्जुं ? एम कही मुहपत्ति, कटासणुं, चरवलो पडिलेहवां. पछी इन्हामि इन्हाकारि जगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी. इन्हामि इन्हाका० उपधि मुहपत्ति पडिलेहवी. इन्हामि इन्हाका० सद्याय करुं ? एम कही एक नवकार गणीने मन्हजिणाणंनी सद्याय कहेवी. जो जम्या होय तो वांदणां बे देइ पच्चक्काण करे. अने जो जम्यो न होय तो खमासमण देइ पच्चक्काण करे. पछी इन्हामि० इन्हाका० उपधि संदिसाहुं, इन्हामि इन्हाका० उपधि पडिलेहुं ? एम कही जेटलां वस्त्र होय, तेटलां पडिलेहे. पछी देव वांदी प्रतिक्रमण करे अने पछी पोसह पारी नवकार गणी सागरचंदो कहे.

प्रजातना पोसह लीधेलाने रात्रें पोसह लेवानो विधि. प्रजातनो पोसह लेवानो विधि छे, ते प्रमाणें खमासमण देइ इरियावहियाथी यावत् बहु वेल करशुं, त्यां सुधी कहेवुं. पण पोसहना पच्चक्काणमां फेर छे, ते शेष दिवसमां अहोरत्तं पद कहेवुं. पछी खमासमण देइ इरियावहि पडिक्कमी इन्हामि० इन्हाका० ठंरूिल पडिलेहुं ? एम कही मांरूलां चोवीश करे.

सांजे नवीन पोसह लेवानो विधि. उपवासादि जघन्य एकासणुं कर्युं होय तो तेणे लेवाय. खमासमण देइ इरियावही पडिक्कमी पडिलेहण करे, खमासमण देइ इरियावहियथी यावत् बहु वेल करशुं त्यां सुधी. पछी इन्हामि० इन्हाका० पडिलेहण करुं? एम कही इन्हामि० इन्हाका० पोसहशाला प्रमार्जुं? कही मुहपत्ति पडिलेहवी. इन्हामि० इन्हकारि जगवन्! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावो जी. एम कही इन्हामि० इन्हाका० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी इन्हामि० इन्हाका० स

ध्याय करुं? कहे अने सध्याय करे, खाधेलुं होय तो, वांदणां बे देइ पच्च क्खाण करे, खाधेलुं न होय तो खमासण देइ पच्चक्खाण पारे. पछी इच्छामि० इच्छाका० उपधि संदिसा हुं. इच्छामि इच्छाका० उपधि पडिलेहुं? कही पछी देववंदना करी मांफलां करे. प्रतिक्रमण करे. पछी एक पहोर रात्रि आशरे जाय, त्यां सुधी निद्रा लीये नहीं. पछी खमासमण देइ इच्छाका० बहुपडि पुन्ना पोरिसी कही खमासमण देई इरियावहिया पडिक्कमी यावत् लोग स्स कही इच्छामि० इच्छाका० बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइअ संथारए ठाउं? कही पछी इच्छामि० इच्छाका० चैत्यवंदन करुं? एम कही चउक्कसायनुं चैत्यवं दन यावत् जयवीयराय सुधी करे. पछी इच्छामि० इच्छाका० संथारा विधि जणवा मुहपत्ति पडिलेहुं? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी. संथारा पोरिसी जणाववी. जागे त्यां सुधी सध्याय ध्यान करे. पोसहमां एकासणादिक कर्युं होय तो अवसरें पच्चक्खाण पारी पोसहशालाथी आवस्सइ कही ने निजगृहें ईर्या शोधतो खमासमण दइ, इरियावहि पडिक्कमी खमा० गमणागमणं आलोइ, काजो पूंजी यथासंभवें अतिथिसंविभाग व्रत फरसीने निश्चल आसने वेसी हाथ, मुख, पग वगेरे पडिलेही नवकार सं भाली प्राशुक आहार जमे. अथवा पोसहशालायें प्रथम प्रेरित नि जपुत्रादिकें आण्यो आहार करे, पण साधुनी पेरें गोचरी करे नही. त था कारण विना मोदक, स्वादिष्ट, लविंगादिक तांबूल न लीये. ते पछी निसिहि कही पोसहशालायें आवी खमा० इरिया० पडिक्कमी, चैत्यवंदन करे ॥ इति श्री पौषधपारवानोविधिःसंपूर्णः ॥१॥

श्री

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श

ष स ह क्ष ज्ञः

अस्यग्रंथस्यानुक्रमणिका.

अनुक्रमांक.	ग्रंथोनां नाम.	पृष्ठांक.

अनुक्रमांक. ग्रंथोनां नाम. पृष्ठांक.

॥ अथ देववंदनादि भाष्यत्रयानुक्रमणिका ॥

अनुक्रमांक.	ग्रंथोनां नाम.	पृष्ठांक.

॥ अथ स्तवनोना समुदायनी अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ सद्यायोनी अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ संधिसूत्राणि ॥

॥ सिद्धो वर्णसमाम्नायः। तत्र चतुर्दशादौ स्वराः। दश समानाः। तेषां द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ। पूर्वोह्रस्वः। परो दीर्घः। स्वरोऽवर्णवर्जोनामी। एकारादीनि संध्यक्षराणि। कादीनि व्यंजनानि। ते वर्गाः पंच पंच। वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ शषसाश्च घोषाः। घोषवन्तोऽन्ये। अनुनासिका ङञणनमाः। अन्तस्था यरलवाः। ऊष्माणः शषसहाः। अः इति विसर्जनीयः। अं इत्यनुस्वारः। पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौ पदम्। अस्वरं व्यंजनम्। परं वर्णं नयेत्। अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत्। लोकोपचाराद्ग्रहणसिद्धिः। इति संधिसूत्रेषु प्रथमश्चरणः॥१॥

॥ श्रीगोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

श्रीपंचप्रतिक्रमणादिसूत्राणि सार्थानि प्रारंभः

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमं नवकारमांगलिकरूपम् ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्व साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति नमस्काराः ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्वमांगलिकनुं मूल, श्रीजिनशासननो सार, अगीयार अंग अने चौद पूर्वनो उद्धार, सदैव शाश्वत एवो श्रीपंच परमेष्ठिने नमस्काररूप महामंत्र श्रीनवकार छे, तेनो प्रारंभ करीयें छैयें. त्यां प्रथम श्री अरिहंतपदनुं मंगल वर्णवीयें छैयें. (नमो अरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः एटले (अरि के०) रागादिक वैरी प्रत्यें (हंताणं के०) हणनार एवा बारगुणें करी सहित समवसरणने विषे बिराजमान विहरमान तीर्थंकर जे श्री अरिहंत, ते प्रत्यें (नमो के०) नमस्कार थाओ. एनो सविस्तर अर्थ कहे छे.

इहां नमः ए नैपातिक पद छे. ते द्रव्य तथा भावना संकोचने अर्थें छे. कहेलुं छे के " नेवाइयं पयं दवं भावसंकोयण पयत्थो " माटे नमः ए पद वडे कर, चरण अने मस्तकें करी सुप्रणिधानरूप नमस्कार थाओ. एटले कर, शिर अने पादादिकनुं जे हलन चलन, ते द्रव्यसंकोच जाणवो. अने विशुद्ध मननो नियोग ते भावसंकोच जाणवो. एटले द्रव्य अने भावथी नमस्कार थाओ, एम कह्युं. एवो नमस्कार कोने थाओ? तो के अरिहंतादिक प्रभुओने नमस्कार थाओ. अहींयां जूदा जूदा त्रण पाठ छे. एक ए

मो अरहंताणं, बीजो णमो अरिहंताणं, त्रीजो णमो अरुहंताणं, ए त्रणे पाठना भिन्न भिन्न अर्थो कहे ले.

प्रथम (णमो अरहंताणं के०) नमोऽर्हद्भ्यः जे अतिशय पूजाने अर्हंति एटले योग्य ले ते अरहंत कहियें. अर्थात् अमरवरनिर्मित एवा अशोकादि आठ महाप्रातिहार्यरूप पूजाने जे योग्य ले, तेने अरहंत कहियें. ए विषे आवुं वचन लेः-"अरहंति वंदण नमं,सणाइ अरहंति पूअसक्कारं॥ सिद्धिग मणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥१॥"ए माटे तेउने नमस्कार थाउ.

तथा अरिहननात् अरहंत एटले संसाररूप गहनवनने विषे अनेक दुःखोने पमाडनार एवा मोहादिक शत्रुने हणवाथकी अरहंत कहीयें.त था रजोहननात् अरहंत एटले जेम वादलां,सूर्यमंमलने ढांकी मूके ले,तेम आत्माना ज्ञानादिक गुणने ढांकी मूके, एवां चार घातिकर्मरूप रज,तद्रूप शत्रुने हणवाथकी अरहंत कहियें. तथा रहस्याजावात् अरहंत एटले दूर थयुं ले निरवशेष ज्ञानावरणादि कर्मनुं पारतंत्र्य जेने विषे अने न हणाय एवुं अद्भुत केवल ज्ञान अने दर्शन, तेणें करी निरंतर प्रत्यक्षपणे करी जा णनारा एवा जगवानने रहस्यनो अजाव ले एटले जेनाथी कांइ लानुं नथी माटें अरहंत कहियें, आ अरहंत पदना त्रणे अर्थ, पृषोदरादिनी पेठें सि द्ध थाय ले. ए माटें तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान ले (रह के०) एकांतरूप देश अने (अंत के०) मध्यजाग गिरि गुफादिकनो जेने एटले समस्त वस्तुसमूहग तप्रछन्नपणाने अजावें करी अरहोंतर कहीयें, अर्थात् सर्वविदितपणुं ले जेने एवा अरहोंतर जगवान् तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान ले एटले नथी (रह के०) रथ जे स्यं दन ते सकल परिग्रह उपलक्षणजूत जेने अने (अंत के०) विनाश एटले विनाशना करनारा जे जरादि उपलक्षणजूत ते जेमने अविद्यमान ले मा टें अरहांत एटले अरथांत कहियें, एवा अरहांत प्रजुउनें नमस्कार थाउ.

अथवा अरहयद्भ्यःएटले प्रकृष्ट रागादिहेतुजूत एवा मनोज्ञ अने अ मनोज्ञ जे विषय तेना संपर्कथकी पण वीतरागादिक जे पोतानो स्वस्वजाव ले, तेने लांमता नथी, तेमाटें अरहंत कहियें. एवा अरहंत प्रजुउने नम स्कार थाउ. यतः " थुइ वंदण मरहंता, अमरिंद नरिंद पूयमरहंता ॥

सासय सुहमरहंता,अरहंता हुंतु मे सरणं॥१॥" ए प्रथम पाठनो अर्थ थयो.
हवे (णमोअरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः ए बीजा पाठनो अर्थ करे छे. त्यां (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुने (हंताणं के०) हणनारा एवा श्रीअरिहंतप्रत्यें नमस्कार थाउं. ए विषे आवुं वाक्य छे "अठविहं पिअ कम्मं, अरिभूयं होइ सयलजीवाणं ॥ तं कम्ममरिहंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ १ ॥" ए गाथानो भावार्थः–आठ प्रकारनां जे कर्म छे, ते सर्व जीवोने अरिभूत एटले वैरीरूप छे,एवा कर्मरूप वैरीने हणनार छे, माटें अरिहंत कहेवाय छे. ते प्रत्यें नमस्कार थाउं.
तथा अरिहंतना सहायथी मोक्षरूप नगरने पमाय छे. माटें सार्थवाहनी उपमा, तथा एमना आश्रयथकी भवसमुद्रनो पार पमाय छे, माटें निर्यामिकनी उपमा, तथा प्राण, भूत, जीव अने सत्त्व, ए चार प्रकारना जीवोने मा हण मा हण एवो शब्द कहे, माटे सर्व जीवो उपर कृपा छे,तेथी निर्वाणरूप वनप्रत्यें पहोंचाडे छे, माटें महागोपनी उपमा. ए त्रण उपमा सार्थक छे. ते श्री अरिहंतनेज छाजे छे. एवा श्रीअरिहंतने ए सर्व जीवलोकने विषे लोगुत्तमभावें करी तेमज नमस्कार थाउं.
तथा राग, द्वेष, परिसह, उपसर्ग, एटलाने जे नमावे एटले पांचे इंद्रियना त्रेवीश विषय, चार कषाय, बावीश परिसह तथा आत्मोद्भित अने परकृत एवी बे प्रकारनी वेदना अने अनुलोम तथा प्रतिलोम, एवा बे प्रकारना उपसर्ग. इत्यादिक शत्रुने हणनार तेमाटें अरिहंत कहियें.ते प्रत्यें नमस्कार थाउं. एवा अरिहंतने मन, वचन अने कायाना एकाग्रतापणे नमस्कार करतो थको जीव,भवना सहस्रोथकी मूकाय, भाव सहित नमस्कार करतो थको बोधिना लाभने पामे. ए बीजा पाठनो अर्थ थयो.
हवे (णमो अरुहंताणं के०) नमोऽरुहद्भ्यः ए त्रीजा पदनो अर्थ कहे छे. तिहां अरुहद्भ्यः अहीं(रुह् बीजतंतुसंताने)ए धातुनुं रुह् पद छे एटले क्षीणकर्मबीजपणाथकी जेमने फरी संसारमध्यें (रुहंत के०) उपजवुं (अ के०) नथी एटले अरुहंत कहियें. अर्थात् बीजनुं विस्तारपणुं नथी. हवे कोइ पण भव करवो नथी माटें अरुहंत कहीयें, उक्तं च "दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवांकुरः ॥ १ ॥" अर्थः–जेम कोइ बीज छे, ते अत्यंतपणे अग्नि

यें करी बळ्युं होय, तेने बाळ्यां थकां तेनो अंकुरो प्रगट न थाय, तेम अहीयां पण कर्मरूप बीजें करी फरी संसारमध्यें अवताररूप अंकूरो ऊगे छे, ते कर्मरूप बीजने बाळ्याथकी संसाररूप अंकूरो प्रगट न थाय, नवा जव न करे. माटें अरुहंत कहीयें. एवा अरुहंतने नमस्कार थाउं.

एवा लक्षणोवाला जगवानने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. महाजयंकर जे आ जवरूप गहनवन, तेने विषे भ्रमण करवाने बीक पामेला एवा जीवोने अनुपम आनंदरूप जे परमपद तद्रूप जे नगर, तेना मार्गने देखाडवापणानुं परमोपकारीपणुं छे जेने विषे तेमाटें तेने नमस्कार करवो योग्यज छे. अहीयां नमः शब्दना योगथी व्याकरणरीतिथी चतुर्थी विजक्ति जोइयें, ते ठेकाणें जे षष्ठी छे ते प्राकृतसूत्रथकी प्राकृतशैलीना वशथकी छे, तेमां षष्ठीनुं बहुवचन छे, ते अद्वैतव्यवच्छेदें करी अर्हद्बहुत्वना ख्यापनने माटे छे. तथा विषय बहु पणायेंकरीने नमस्कार करनारने फलातिशय ज्ञापनने माटे छे,ए श्रीअरिहंतने चंद्रमंडलनी पेरें श्वेतवर्णें ध्यायियें. ए जावमंगल करतां पंच परमेष्ठिपदमां प्रथम अरिहंत पदनुं मंगल वर्णव्युं॥ ए पहेली संपदा एक पदनी थइ. संपदा एटले ज्यां अर्थसमाप्तिनो अधिकार होय, ते संपदा जाणवी. तथा ज्यां विशामो लइयें, ते विशामाना स्थानकने संपदा कहियें. एम सर्वत्र जाणवुं ॥ १ ॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे छे. (णमोसिद्धाणं के०) नमः सिद्धेभ्यः अहीयां (सित् के०) बद्ध एटले चिरकालनो बांधेलो एवो जे अष्टकर्मरूप काष्ठनो जारो, तेने जाज्वलमान शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी जेणें (ध्मातं के०) धम्यो छे बाळ्यो छे जस्म कीधो छे, तेने निरुक्तिना विधि प्रमाणें सिद्ध कहीयें. एवा सर्व सिद्धने महारो (णमो के०) नमस्कार होजो, अथवा षिधु धातु, गतिने अर्थें छे,ए वचनथी अपुनरावृत्तियें एटले पाछुं न अवाय एवी रीतें मोक्षनगरी प्रत्यें गया, ते सिद्ध कहेवाय, अथवा निष्ठितार्थ थया, ते सिद्ध, अथवा शिक्षा करनार शास्त्रकथक थया, ते सिद्ध अथवा शासनने प्रवर्त्तावनार थईने सिद्धरूप मांगल्यपणा प्रत्यें अनुजव्या, ते सिद्ध कहीयें. अथवा नित्य अपर्यवसित अनंत स्थितिने पामवापणाथकी सिद्ध कहीयें. अथवा जेनाथी गुणोनुं समूहपणुं जव्य जीवोने उपलब्ध थाय छे माटें सिद्ध कहियें, ए विषे आ वचन प्र

माण छे, "ध्मातं सितं येन पुराणकर्म्म, योवा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि ॥ ख्या तोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो, यःसोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे ॥१॥" ए श्लो कमां उपर जेटलां सिद्धनां लक्षणो कह्यां, तेटलांनो समुच्चय, वर्णनरूपें छे.

ए सिद्ध परमात्माने नमस्कार करवानो हेतु शुं ? त्यां कहे छे. ए वि नाश रहित एवो अनंत चतुष्क एटले ज्ञान, दर्शन,चारित्र तथा वीर्य, ए गुणो जेउने प्रगट थया ते ज्ञानदर्शन सुखवीर्यादिक गुण युक्तपणे करी स्वविषय प्रमोदप्रकर्ष उत्पादनें करी आनंद उत्पादन करवाने लीधे जव्य जीवोने अत्यंत उपकारहेतुपणुं छे माटें ते सिद्धने नमस्कार करवा योग्य छे. ए श्रीसिद्ध जगवानने उगता सूर्यनी पेरें रक्तवर्णें ध्यायियें. एवा सिद्धने नमस्कार करतां पंच परमेष्ठि मंगलमां बीजुं मंगल जाणवुं. ए बी जुं पद अने बीजी संपदा थई ॥ २ ॥

हवे आचार्यपदनुं त्रीजुं मंगल कहे छे. (णमो आयरियाणं के०) नम आचार्येज्यः आ एटले मर्यादायें तद्विषय विनयरूपें करी चर्यते एटले सेवि यें अर्थात् जिनशासनना अर्थनी उपदेशकतायें करीने,ते उपदेशकतानी आकांक्षा करनारा जीवो जेने सेवे छे, तेने आचार्य कहीयें. तेने (णमो के०) नमस्कार थाउ. उक्तं च " सुत्तछ विऊलरकण, जुत्तो गछस्स मेढि जूउअ ॥ गणतत्ति विप्पमुक्को, अछं वाएइ आयरिउ ॥ १ ॥

अथवा ज्ञानाचारादिक पांच प्रकारनो आचार, अथवा आ एटले म र्यादायें चार एटले विहार ते आचार एवा आचारने पालवामां पोतें साधु एटले जला चतुर छे तथा प्रकर्षें करी बीजाने ते आचार पलाववानो उ पदेश कहेवायकी तथा उत्कृष्टपणे बीजा साधु प्रमुखने ते आचार देखा डवायकी आचार्य कहियें. उक्तंच ॥ " पंचविहं आयारं, आयरमाणा त हा पयासंता ॥ आयारं दंसंता, आयरिया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ "

अथवा (आ के०) ईषत् एटले अपरिपूर्ण जे (चार के०) हेरिक एटले शिष्य ते आचार ते चारकल्प कहियें. एटले युक्तायुक्त विजाग निरू पण करवामां अनिपुण एवा विनेय जे शिष्य तेने विषे (साधु के०) ज ला यथार्थ शास्त्रार्थ उपदेशकपणें करीने ते आचार्य कहेवाय छे.

एवा आचार्यने नमस्कार करवानो हेतु शुं ? त्यां कहे छे. आचारनो उपदेश करवायकी परोपकारीपणुं जेमने प्राप्त थयुं छे तथा छत्रीश छत्रीशी

गुणें करी सुशोजित, युगप्रधान, सर्वजनमनोरंजक, जगज्जीवमां जव्य जीवने जिनवाणीनो उपदेश आपी प्रतिबोधिने कोइने सम्यक्पणुं पमाडे ढे, कोइने देशविरतिपणुं पमाडे ढे, कोइने सर्वविरतिपणुं पमाडे ढे तथा कोइएक उपदेश सांजलीने जद्रकपरिणामी थाय ढे. एवा उपकारना करनार, शांत मुद्राना धारक, क्षणमात्र पण कषायें ग्रसित न होय माटें ते प्रजुउं, नमस्कार करवा योग्य ढे.

वली ते आचार्य नित्यें प्रमाद रहित थका अप्रमत्त धर्मना कथक ढे. वली राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्तकथा, सम्यक्त्वढिलणीया अने उठी चारित्रढिलणीया, एवी विकथाना वर्जक ढे. वली अमल अमायी ढे. तथा सारणा, वारणा, चोयणा, अने पडिचोयणादिकें करी शिष्यादिकने प्रवचननो अज्यास करावनारा ढे अने साधुजनने क्रिया धरावता थका ढे. वली जेम सूर्य अस्त थयां गृहने विषे घटपटादिक पदार्थ न देखाय, पढी दीपकथकी सर्व पदार्थ दृष्टिगोचर आवे, तेम अहिंयां केवलज्ञान जास्कर समान श्रीतीर्थंकरदेव मुक्ति गया थकां त्रण जुवनना पदार्थना कथक दीपकसमान एवा श्रीआचार्य ढे, एवा श्रीआचार्यने जे जव्य प्राणी निरंतर नमस्कार करे, ते प्राणी धन्य जाणवा, तेमने जवनो क्षय तुरत थाय. वली ते आचार्य प्रजुउयें कृपा करीने जे हितनां वचन कह्यां होय, ते वचनोने हृदयथी अणमूकतो थको रहे, ते प्राणी विशेषें शुद्धि सहित जलो आचारवंत थाय. ए श्रीआचार्यने सुवर्णवर्णे ध्यायियें. एवा आचार्यने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्ठिमंगलमां त्रीजुं मंगल जाणवुं॥ ए त्रीजुं पद अने त्रीजी संपदा थइ ॥ ३ ॥

हवे उपाध्यायपदनुं चोथुं मंगल वर्णवे ढे. (णमो उवझायाणं के०) नम उपाध्यायेज्यः (उप के०) समीप रह्या तथा आव्या एवा जे साधु प्रमुख ते प्रत्यें जे (अझाय के०) अध्याय एटले सिद्धांतनुं अध्ययन करावे, तथा जेनी समीपें आवी अधीयते नाम जणाय ढे, ते उपाध्या कहियें. ते जणी (णमो के०) नमस्कार थाउं.

अथवा जेना उप समीपमां आधिक्येन गम्यते एटले अधिकपणायें जवाय ढे, अथवा इक् स्मरणे एवा धातुना अर्थमां स्मरण कराय ढे. सूत्रथकी जिनप्रवचननुं जेथकी ते उपाध्याय कहियें. ए विषे आवुं प्रमाण ढे. " बार

संगो जिणरकाउं सद्याउं कहिउं बुद्देहिं ॥ तं उवइसंति जम्हा,उवद्याया ते ण वुञ्चंति ॥ १ ॥ अर्थः–द्वादशांगी,श्रीवीतरागें अर्थथी जांखी अने गण धरें सूत्रथी गुंथी, तेनो सद्याय करवो. ए रीतें बुध एटले पंम्तिें कह्युं ते जे कारण माटें ते द्वादशांगीने उपदेशे,ते कारण माटें ते उपाध्याय कहियें,

अथवा"उत्ति उवउंग करणे,जत्ति ज्जाणस्स होइ निद्देसे ॥ एएण हुंति उज्जाः, एसो अन्नोवि पज्जाउं ॥ १ ॥ अर्थः–उकार जे ठे, ते उपयोग कर वाने अर्थें ठे,तेथी (उ के०) उव थयो अने उव पठी जज्जो ठे,ते जकार वर्णे ध्याननो निर्देश कह्यो ठे. एम उ अने ज ए बे अक्षरथकी उवज्जाय पद थाय ठे. ए पर्यायार्थ ठे.

वली पण पर्याय फेर नाम कहे ठे. "उत्ति उवउंगकरणे,पत्ति अ पाव परिवज्जणे होइ ॥ जत्ति अ जाणस्स कए, उत्ति अ उंसक्कणा कम्मे ॥१॥" अर्थः–उ वर्ण ते उपयोगने अर्थें ठे अने प वर्ण ते पापनुं समस्त प्रकारें वर्जवुं तेने अर्थें ठे, अने ज वर्ण ते ध्यान करवाने अर्थें ठे. पुनः उं वर्ण ते कर्मथकी उंसरवाने अर्थे ठे. ए रीतें चार अक्षर मल्या थकां उपाज्जाउं थाय ठे, ते पण पर्यायांतरें उपाध्यायनुंज नाम जाणवुं.

अथवा उपाधान एटले उपाधि अथवा सन्निधि ते पासें वसवुं; ते उ पाधियें करीने अथवा उपाधिने विषे आय एटले लाज ठे श्रुतनो जेउंथ की अथवा उपाधि एटले विशेषणादिकना प्रस्तावथकी शोजन उपाधिनो आय एटले लाज ठे जेउंथी ते उपाध्याय कहियें.

अथवा उपाधि तेज सन्निधि अने आय एटले इष्टफल एटले जेने वि षे दैवजनितपणे जे आय एटले इष्टफलो तेहना समूहनुं एक हेतुपणुं ठे, ए हेतुमाटें तेने उपाध्याय कहीयें.

अथवा आधि जे मननी पीडा, तेनो आय एटले लाज तेने आध्याय कहियें. अथवा अधि एटले टूंकी बुद्धि अर्थात् कुबुद्धि तेनो आय एटले लाज ते अध्याय कहियें. अथवा ध्यै धातु चिंताने अर्थें ठे. ए धातुनो प्रयो ग तथा नञ्नो अर्थ, कुत्सित एटले खराब एवो थाय ठे, ए बे मली डु र्ध्यान एवो अर्थ सिद्ध थाय ठे, एने अध्याय पण कहे ठे.ए उपरला अ ध्याय अथवा आध्याय तथा ए बन्ने जेउंयें करी उपहत एटले हणायेला ठे, तेने पण उपाध्याय कहियें.

एवा श्री उपाध्याय पच्चीश गुणें करी शोनित, द्वादशांगीना पारंगामि, द्वादशांगीना धारक, सूत्र अने अर्थना विस्तार करवाने रसिक,एवा उपा ध्यायने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. संप्रदायथकी आवेलां जे जिनवचन, तेनुं अध्यापन एटले नणाववुं करावे छे, एणें करी नव्य जीवोनी उपर उपकारीपणुं होवाथी नमस्कार करवा योग्य छे. ए श्रीउ पाध्यायजीने मरकतमणिनी पेरें नीलवर्णें ध्यायियें. ए श्रीउपाध्याय जीने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्ठिमंगलमां उपाध्यायपदनुं चोथुं मं गल जाणवुं. ए चोथुं पद अने चोथी संपदा थइ ॥ ४ ॥

हवे साधुपदनुं पांचमुं मंगल वर्णवे छे.(णमोलोएसव्वसाहूणं के०)नमोनमःलो के सर्वसाधुभ्यः अढीद्वीप प्रमाण लोकमांहेला सर्वसाधुउने नमस्कार थाउ.

त्यां जे ज्ञानादिक शक्तियें करी मोक्षने साधे,तेने साधु कहियें,अथवा सर्व प्राणीमात्रने विषे समपणुं ध्यावे, तेने निरुक्तिन्यायें करी साधु क हियें. ए विषे आ वचन प्रमाण छेः–“निव्वाण साहए जोए,जम्हा साहंति साहुणो ॥ समा य सव्वनूएसु,तम्हा ते नावसाहुणो॥१॥” अर्थः–निर्वाण जे मोक्ष तेना साधवाना जे योग,ते प्रत्यें जे कारण माटें साधे,ते माटें ते साधु कहीयें. वली सर्वनूत जे चोराशी लाख जीवायोनि तेथी उपना जे जीव, ते सर्वसाथें समतापणुं जे धरे छे. ते कारणमाटे तेने नावसाधु कहियें. अथवा संयमना सत्ताइ जे सत्तर नेद, ते प्रत्यें जे धारे,ते साधु कहीयें. उक्तं च ॥ “ किं पिछसि साहूणं, तवं च नियमं च संयमगुणं वा ॥ तो वंदसि साहूणं, एयं मे पुछिउं साहु ॥ १ ॥ अर्थः–अरे प्राणी ! साधु ते पोताना गुणें करीनेज साधु होय, तेमाटे तुं साधुनणी शुं देखे छे ? एटले शुं तपश्चर्यानो गुण देखे छे ? अथवा संयमना गुण देखे छे ? ते गुण देखीने तेवार पछी तुं शुं साधुप्रत्यें वांदीश ? एम हुं तुजने पूछुं छुं, माटें साधुने गुणेंज साधु देखीने वंदना करवी. उक्तं च ॥ विसय सुहनियत्ताणं, विसुद्धचारित्तनियमजुत्ताणं ॥ तच्च गुणसाहयाणं, साहण किच्चुज्जायण नमो ॥ १ ॥ अर्थः–साधु केहवा छे ? तो के शब्दादिक पांच प्रकारना विषय तेनां जे सुख, तेथी निवृत्त्या छे,एटले वेगला थया छे. तथा विशुद्ध निर्मल चारित्र अने विविध प्रकारना जे नियम,तेणें करी युक्त छे, वली (तच्च के०) तथ्य एटले साचा जे गुण तेना साधक छे?

कृतकृत्यपणुं थावाने अर्थें एटले मोक्ष पामवानां जे कार्य, तेहिज साधवाने उद्यमवंतपणुं छे, जेमने एवा साधुउने नमस्कार थाउ.

वली साधु केहवा छे ? " असहाइ सहायत्तं, करेति मे संजमं करंतस्स ॥ एएणं कारणेणं, णमामि हं सवसाहूणं ॥ १ ॥ " अर्थः– जेनो कोइ सखाइयो न होय, तेना साधु सखाइया छे. एटले जेने कोइनुं सहाय नथी, तेनुं सहाय साधु करे, निःकारणबंधुसमान उपकारी एवा साधु ते (मे के०) मुज प्रत्यें अनादिनुं असंयमपणुं टाली संयमपणुं कर्त्ता छे. एटले इंद्रियनो निग्रह करावे, इत्यादिक कारणें करी " सवसाहूणं अहं नमामि एटले सर्व साधुप्रत्यें हुं नमस्कार करुं छुं.

अथवा संयमकारी जनोने सहायता धारण करे, तेने साधु कहियें. निरुक्तिथकीज 'निरुक्तं पदभंजनं' एटले सामायिकादि विशेषणें सहित एवा समतावंत साधु सर्व, ते अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिनकल्पिक, प्रतिमाकल्पिक, यथालंदकल्पिक, परिहारविशुद्धिकल्पिक, स्थविरकल्पिक, स्थितकल्पिक, स्थितास्थितकल्पिक, तथा कल्पातीत भेदोवाला प्रत्येकबुद्ध, स्वयंबुद्ध, बुद्धबोधित भेदोवाला अने भारतादिक भेदोवाला अथवा सुखमदुखमादिक विशेषित साधु ते सर्व साधुउ जाणवा. अहींयां सर्व गुणवंतने अविशेषें करी नमस्कार करवा पणाना प्रतिपादनने अर्थें सर्व शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे. एवी रीतें अर्हत् प्रमुख पदोने विषे पण जाणी लेवुं. अहींयां पाचमा पदने विषे सर्व पदनी पूर्त्ति करवी, ए माटें पण सर्व पद मेल्युं छे, एटले न्यायना सामान्यपणाथकी पांचे पदें सर्व शब्द सूचव्यो.

अथवा सर्व जीवोने हितना करनारा ते सार्व, तेहीज साधु अथवा सार्वशब्दें अर्हद्धर्म अंगीकार करनार साधुउ जाणवा, पण सार्व शब्दें बौद्धादिकना साधुउ ग्रहण करवा नहिं, ते सार्व साधु अथवा सर्व शुभ योगोने साधे, ते सार्व साधु, अथवा सार्व एटले अरिहंत ते प्रत्यें साधे, एटले तेउनी आज्ञाना करवाथकी आराधे, प्रतिष्ठापना करे, दुर्नयना निराकरणथकी ते सार्वसाधु कहियें.

अथवा श्रव्य एटले श्रवण करवा योग्य जे वाक्यो, तेने विषे साधु, अथवा सव्य एटले दक्षिण ते पोताने अनुकूल जे कार्य तेने विषे साधु एटले निपुण, ते श्रव्यसाधु कहियें, अथवा सव्यसाधु पण सव्व शब्दवडे

जाणी लेवा, सर्व शब्दनुं देश तथा सर्वताने विषे दर्शन छे माटें अपरिशेष सर्वथकी उपदर्शनने माटें लोक शब्द कह्यो छे.

अहींयां लोकशब्दें मनुष्यलोक सार्द्धद्वयद्वीपसमुद्रवर्त्ती, ऊर्ध्व नव शत योजन प्रमाण, अधः नीचें सहस्त्रयोजन प्रमाण तथा वली कोइएक लब्धिवंत साधु मेरुचूलिका पर्यंत पण तपस्या करता थका होय. एम लोकने विषे जिहां जिहां साधु होय, ते सर्व साधुने म्हारो नमस्कार थाउ.

ए साधुउने नमस्कार करवानो हेतु शुं ? त्यां कहे छे. मोक्षमार्गने विषे सहायता करनार होवाथी उपकारीपणाने लीधे नमस्कार करवा योग्य छे. स्तवना, प्रशंसा, गुणवर्णन करवा योग्य छे.

जेम भ्रमर, वृक्षना सुगंधी फूल उपर बेसे, तेनो थोडो एक पराग लेइ बीजे फूलें जाय, एम अनेक फूलें नमी नमीने पोताना आत्माने संतुष्ट करे, पण फूलने बाधा न उपजावे,तेम साधु पण अनेक घर नमी नमीने बहेंतालीश दोष रहित आहार शुद्ध गवेषी पोतानुं पिंडपोषण करे.पांचेंद्रियने पोताने वश राखे, पांचेंद्रियना विषयने जींपे, षट्कायजीवनी रक्षा पोतें करे, बीजा पासें करावे, वली सत्तर भेद सहित संयमने आराधे, सर्वजीव उपर दयाना परिणाम राखे, अढार हजार शीलांग रथना धोरी, अचल, अभग्ग आचाररूप जेनुं चारित्र छे, एवा महंत मुनीश्वरने जयणायुक्त वांदीने पोतानुं जन्म पवित्र करीयें. वली नव प्रकारें ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले, बार प्रकारें तप करवाने शूरा, आत्मार्थी तथा वली आदेश, उपदेशथकी न्यारा छे, जेने जनमेलननी ईहा नथी, वंदन पूजननी वांछा नथी, एवा मुनिनुं दर्शन तो जो पुण्योदय होय तोज पामीयें, ए श्री साधुने आषाढना मेघनी पेरें श्यामवर्णें ध्यायियें. ए पांचमा पदरूप साधुमंगल वखाण्युं, एटले पांचमा पदनी पांचमी संपदा थइ ॥ ५ ॥ भावमंगल अनेक प्रकारें छे, तेमां ए पंच परमेष्ठीनुं प्रथम मंगल जाणवुं.

आशंकाः—ए पंच परमेष्ठीने जे नमस्कार करवो, ते संक्षेपें करवो, किंवा विस्तारें करवो ? तेमां जो संक्षेपें नमस्कार कराय छे, एम कहेशो, तो सिद्ध अने साधुउ प्रत्यें नमस्कार करवोज युक्त छे.केम के ? ए बेहुने नमन करवाथी अरिहंत,आचार्य अने उपाध्यायनुं पण ग्रहण थयुंज, कारण के ए अर्हदादिक त्रण जे छे, ते पण साधुपणुं छोडता नथी, ते माटे.

अने जो तमें कहेशो के विस्तारें नमस्कार कराय छे? तो त्यारें ऋषभादिक चोवीशे तीर्थंकरोने व्यक्तिसमुच्चारणथकी एटले जूडुं जूडुं नाम लेइने नमस्कार करवो जोइयें.

समाधानः–अरिहंतने नमस्कार करवाथकी जे फल पामीयें, ते साधुने नमस्कार करवाथकी फल न पामीयें, जेम मनुष्यमात्रने नमस्कार करवा थकी राजादिकना नमस्कारनुं फल न पामीयें, ते माटे विशेषथकी प्रथम श्रीअरिहंतनेज नमस्कार करवो युक्त छे.

आशंकाः–जे सर्वथी मुख्य होय, तेनुं प्रथम ग्रहण करवुं ए योग्य छे, तो तमें अहींयां पंच परमेष्ठीने नमस्कार करतां प्रथम श्रीअरिहंतने नमस्कार कीधो, परंतु जो प्रधान न्याय अंगीकार करीयें, तो अहींयां पंच परमेष्ठीमां सर्वथा कृतकृत्यपणे करी सिद्धने प्रधानपणुं छे माटें सिद्ध मुख्य छे, तेथी प्रथम सिद्धने नमस्कार करीने पछी अरिहंतादिकने आनुपूर्वीयें नमस्कार करवो युक्त छे.

समाधानः–सिद्धने पण श्रीअरिहंतना उपदेशथकी जाणीयें छैयें. वली अरिहंत, तीर्थ प्रवर्तन करे, उपदेश आपीने घणा जीवोने उपकार करे अने सिद्ध पण श्रीअरिहंतना उपदेशथकीज चारित्र आदरी कर्मरहित थइ सिद्धपणुं पामे, माटें श्रीअरिहंतनेज प्रथम नमस्कार करवो योग्य छे.

आशंकाः–जो एम उपकारीपणुं चिंतवी नमस्कार करीयें, तो आचार्यादिकने पण प्रथम नमस्कार करवो युक्त थाशे? केम के कोइ एक समयें एनाथी पण अर्हदादिकनुं जाणपणुं थाय छे, माटें आचार्यादिक पण महोटा उपकारी छे, तेथी तेमने प्रथम नमस्कार करवो युक्त छे?

समाधानः–आचार्यने उपदेश देवानुं सामर्थ्य, श्रीअरिहंतना उपदेश्याथकीज होय छे, परंतु आचार्यादिक स्वतंत्रथका उपदेशथकी अर्थज्ञापकपणुं पडिवज्जता नथी, एटला माटे अरिहंतज परमार्थें करी सर्व अर्थ ज्ञापक छे तेथी, प्रथम नमस्कार करवा योग्य छे. वली आचार्यादिक तो अरिहंतनी पर्षदारूप छे. माटे आचार्यादिकोने प्रथम नमस्कार करी पछी श्रीअरिहंतने नमस्कार करवो, ए योग्य न कहेवाय, ए विषे आम कह्युं छेः– "पुव्वाणुपुव्वि न कमो, नेवय पच्छाणुपुव्वि एस ज्जवे॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआ ए साहुणो आइं॥१॥" अरहंता उवएसेणं, सिद्धाणं जंति तेण अरि

हाई ॥ णवि कोई परिसाए, पणमित्ता पणमई रन्नोत्ति ॥ २ ॥ " पूर्वे जेटला प्रश्न उत्तर कस्या, तेनो संबंध ए गाथाउं मध्ये ठे, तेमाटे लोकमां पण पर्ष दाने प्रणाम करीने पठी राजाने कोइ प्रणाम न करे, तो अहीं आचार्यादिक तो सर्व पर्षदा रूप ठे अने श्रीअरिहंत ते राजा रूप ठे माटे प्रथम राजाने प्रणाम कस्या पठी पर्षदाने प्रणाम कराय ठे. ए रीतें श्रीअरिहंतने नमस्कार कस्या पठी आचार्यादिकने नमस्कार करवो युक्त ठे, एम सिद्ध थयुं, एटले पांत्रीश अक्षरें श्रीनवकार पांच पदरूप मूल मंत्र कह्यो. हवे आगले चार पदनी चूलिकामांहे ए मूलमंत्रनो प्रजाव कहे ठे.

(एसोपंचणमुक्कारो के०) एष पंच नमस्कारः (एसो के०) ए जे अ रिहंतादिक संबंधी (पंच णमुक्कारो के०) पांच नमस्कार ठे. एटले नमस्कार पंचक ठे, ते केहवो ठे ? तोके (सव्वपावप्पणासणो के०) सर्वपापप्रणाशनः (सव्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेनो (प्पणासणो के०) प्प णास एटले विनाशनो करनार ठे. अहीं ठठा अने सातमा, ए बे पदनी ठठी अने सातमी, ए बे संपदा थई. वली ते नमस्कारपंचक केहवो ठे ? तो के (मंगलाणंचसव्वेसिंपढमंहवइमंगलं के०) मगलानां च सर्वेषां प्रथमं जवति मंगलं एटले सर्व मंगलोमां (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य, मंगलं के०) मंगल मांगलिक एटले कल्याणकारक (हवइ के०) ठे.

एटले मंगल बे प्रकारनुं ठे. एक द्रव्यमंगल, ते लौकिक मंगल, अने बीजुं जावमंगल ते लोकोत्तर मंगल जाणवुं. तेमां दधि, अक्षत, केसर, चंदन, दूर्वादिक, ते लौकिक मंगल ठे. ए मंगल अनेकांतिक तथा अनात्यंतिक जा णवुं. ते पण एक नाममंगल, बीजुं स्थापनामंगल, अने त्रीजुं द्रव्यमंगल. ए त्रण मंगलथी वांठितार्थ सिद्धि न थाय. अने एथकी विपरीत एकांत मं गल तथा आत्यंतिक मंगल, ते जावमंगल जाणवुं. ए मंगल, विशेषें इष्ठि तार्थसिद्धिनुं कारक ठे, माटें पूजनीय ठे, प्रधान ठे, ते जप, तप तथा निय म प्रमुखजेद जिन्नपणे करी अनेक प्रकारनुं ठे. तेमां पण अति उत्कृष्ट मं गल, ए पंच परमेष्ठिनमस्काररूप ठे, माटें ए विशेषें करी ग्रहण करवुं. ए थकी मोक्षरूप सुखनी प्राप्ति थाय ठे. परमेष्ठीने मंगलपणें, लोकोत्तम पणे, शरणयोग्यपणे ग्रहवाय ठे. उक्तं च ॥ अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंग लं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ इति ॥ ए चूलिकानां

चार पदमां तेत्रीश अक्षर छे, आठमा अने नवमा, ए बे पदनी मलीने ए कज आठमी संपदा थइ. माटें एमां विश्रामनां स्थानकरूप संपदा आठ छे अने पद नव छे, तथा बधा मली लघु अक्षर एकशठ छे अने गुरु अक्षर सात छे, सर्व अक्षर अडशठ छे. इति मंगलम् ॥

हवे ए चूलिकामध्यें केटला एक (हवइ मंगलं) ने स्थानकें (होइ मंगलं) कहीने बत्रीशज अक्षर माने छे, परंतु एना मूल तेत्रीश अक्षर छे.यदुक्तं श्रीमहानिशीथसिद्धांते "तहेव इक्कारस पय परिछिन्नति आलावग तित्तीस अरकर परिमाणं ॥ एसो पंच णमुक्कारो,सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं,पढमं हवइ मंगलंति चूलं. तेणेव कमेण छठ सत्तमठम दिणेसु आयं बिलेहिं अहिज्जिज्जा"तथा प्रवचनसारोद्धारेऽप्युक्तं "पंच परमिठिमंते,पए पए सत्त संपया कमसो ॥ पज्जंत सत्तरस्कर, परिमाणा अठमी ज्रणिया ॥ १ ॥" गाथा (७ए मी. यद्यपि हवइ मंगलने स्थानकें होइ मंगलं एवो पाठ कहेवाथकी अर्थविच्छेद कांइ नथी, तथापि हवइ मंगलं एवोज पाठ कहेवो. केम के नमस्कारावलिकाग्रंथमध्यें कह्युं छे के, कोइ कार्यविशेष उपने थके जेवारें चूलिकानुंज ध्यान करियें, तेवारें बत्रीश दलनुं कमल रची एकेको अक्षर,एकेकी पांखडीयें स्थापवो अने तेत्रीशमो अक्षर, मध्यकर्णिकायें स्थापीने ध्यान करवुं. माटें जो होइ मंगलं एवो पाठ कहियें, तो चूलिकामां बत्रीशज अक्षर थाय,ते बत्रीश अक्षरें बत्रीश पांखडीज पूराय, तेवारें मध्यनी कर्णिका खाली रही जाय. इत्यादिक अनेक सिद्धांतयुक्ति छे, ते मध्यस्थपणे विचारवुं.

हवे ए पंच परमेष्ठीने नमस्कार करीने एमना एकशो ने आठ गुणरूप मंत्रनो जाप करीयें, ते गुणो आ प्रमाणें छेः—"बारस गुण अरिहंता,सिद्धा अठेव सूरि छत्तीसं ॥ उवद्याया पणवीसं, ,साहू सगवीस अठसयं ॥१॥ अर्थः—अरिहंतना बार गुण, सिद्धना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पच्चीश गुण अने साधुना सत्तावीश गुण, ए सर्व मली (अठसयं के०) एकशो ने आठ गुण थाय. ते आवी रीतेंः—

तिहां श्रीअरिहंत प्रज्जुनां आठ प्रातिहार्य,तथा चार मूलातिशय,मली ने बार गुणो जाणवा. तेमध्यें प्रथम आठ प्रातिहार्य कहे छे.

उक्तं चः—"किंकिल्लि कुसुमवुठि, देवज्झुणि चामरासणाइं च ॥ ज्रावलय

त्नेरि उत्तं,जयति जिण पाडिहेराइं ॥१॥"अर्थः–जगवंतने सहचारि होय माटें प्रातिहार्य कहियें,अथवा इंद्रना आदेशकारी जे देव,तेउनुं जे कर्म,तेने प्रातिहार्य कहीयें. ते आठे प्रातिहार्य, देवतानां करेलां जाणवां.तिहां प हेलुं १ (किंकिल्लि के०) अशोकवृक्ष, ते ज्यां श्रीजगवंत विचरे, समोसरे, तिहां महाविस्तीर्ण, कुसुमसमूहलुब्धभ्रमरनिकरें शीतल, सछाय, मनो हर, विस्तीर्णशाखावालो, जगवाननुं जेटलुं देहमान होय तेथी बारगुणो, अशोकवृक्ष, देवता करे, तेनी नीचें बेसीने धर्मदेशना जगवान् आपे.

२ (कुसुमवुठि के०) फूलनी वृष्टि एटले जल तथा स्थलने विषे उत्पन्न थयेलां फूलो जेवां के श्वेत, रक्त, पीत, नील तथा श्याम,ए पांच वर्णोनां विकश्वर सरस सुगंधमय, नीची वींटें अने ऊंचे मुखें एवां सचित्त फूलो नी वृष्टि समवसरणनी पृथिवीने विषे चोफेर एक योजनमध्यें गोठण प्रमाण देवताउ करे बे, अहींयां फूलविषे मतांतर बे, ते कहे बेः–कोइ एक तो अचित्त फूल कहे बे तथा कोइ एक तो किहां एक फूल उपर जाली बंध कहे बे. वली कोइ एक तो क्यां एक क्यारारूप बे. एटले ज्यां साधु, मनुष्य अने देवता बेसे बे, त्यां पुष्पवृष्टि नथी अने शेष चोफेर स्थानक बे, एम मतांतर बे. परंतु ते मध्यें अचित्त फूलना कथक तो डुर्मतिजिन वचनना उत्थापक एवा ढूंढक लोको जाणवा, अने शेष बे मतांतरनो पण निषेध बे, केम के समवसरणमां सर्वत्र फूलनी वृष्टि तो होयज बे, पण ते फूलोने जे बाधा नथी उपजती तेनुं कारण तो अचिंत्य शक्तिना धणी एवा श्रीजगवंतनुं माहात्म्य जाणवुं. एम श्रीआवश्यकचूर्णीमध्यें कह्युं बे. तेनी श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्ति, श्रीमलयगिरिमहाराजनी करेली बे, तेमां साख दीधी बे, माटें पुष्पवृष्टि समवसरणमध्यें सर्वत्र देवताउ करे बे.

३ (देवज्झुणि के०) दिव्यध्वनिः एटले जगवान् जेवारें दूध साकरथी पण मीठाशवाला अत्यंत मधुर स्वरवडे सरस अमृतरससमान समस्त लोकने प्रमोदनी देवा वाली एवी वाणीयें धर्मदेशना दीये बे. तेवारें देव ताउ ते जगवंतना स्वरने पोताना ध्वनिवडे अखंड पूरे बे. यद्यपि मधुर मां मधुर पदार्थथकी पण प्रजुनी वाणीमध्यें रस घणो बे, तोपण जव्य जीवना हितने अर्थें प्रजुजी जे देशना आपे बे, ते मालकोश रागें करीनेज आपे बे, अने ते मालकोश रागें जेवारें देशना आलापे, तेवारें

परमेश्वरनी बन्ने बाजुयें रहेला देवता, ते मनोहर वेणुवीणादिकना शब्दें करीने ते वाणीने विशेषें मनोहर करे, एटले जेम कोइ सुस्वरें गायन करतो होय, तेनी पासें वीणादिकने शब्दें ध्वनि पूरीयें, तेम अहींयां देवता करे, तेने दिव्यध्वनिनामा प्रातिहार्य कहियें.

४ (चामर के०) चामर एटले केलिना स्तंभने विषे जेम तंतुना निकर लागा होय तेनी पेरें मनोहर जेना दंमने विषे अनेक रत्नना समूह लागेला होय ते रत्नना किरणे करी जाणीयें, इंद्रधनुष्यने विस्तारतो होय नही? एवा रत्ने करी जडित सुवर्णनी कांमी सहित श्वेत चामरो समवसरणमां भगवंतने देवताउंथकी विंजाय छे.

५ (आसणाइंच के०) आसनानि च एटले आसन जे सिंहासन ते अनेकरत्ननी चूनीयें करी बिराजमान सुवर्णमय मेरुना श्रृंगनी पेरें उंचुं अने कर्मरूप वेरीना समूहने जाणीयें बीवरावतुं होय नहीं? एम साक्षात् सिंहरूपें शोभायमान एवुं सुवर्णमय सिंहासन देवताउं करे, तेनी उपर बेसीने भगवान् देशना आपे,

६ (भावलय के०) भामंमलनामा प्रातिहार्य, ते श्री भगवंतनी पूंठने विषे शरद् ऋतु संबंधि सूर्यना किरणनी पेरें जोतां दोहिलुं एवुं अत्यंत देदीप्यमान श्रीवीतरागना मस्तकने पाछले भागें भामंमलनी पेरें भामंमल होय एटले (भा के०) कांति तेनुं मंमल एटले मांमलुं करे, तेने भा मंमल कहीयें. भामंमल न होय तो प्रभुना मुखनी सन्मुख जोवाय नही.

७ (भेरि के० भेरी, ढक्का, ढुंडुभि, ए एकार्थ छे जेणें पोताना भांकार शब्दें करीने विश्वनुं विवर भर्युं छे, एवा भेरी. ढक्का शब्दायमान करे छे. एटले हे जनो! तमें प्रमादने छांमिने श्रीजिनेश्वरप्रत्यें सेवो, ए जिनेश्वर ते मुक्ति नगरीयें पहोंचाडवाने सार्थवाह समान छे. ए रीतें भेरीनो शब्द त्रण जगतनां लोकने कहे छे. एम हुं जाणुं बुं, एवी ढुंडुभि एटले आकाशने विषे क्रोडो गमे देवतानां वाजित्रो दिव्यनुभावें वाजे छे.

८ (छत्त के०) छत्रं, छत्रनामा प्रातिहार्य ते त्रण भवनने विषे परमेश्वर पणानुं जणावनार, शरत् कालना चंद्रमा तथा मचकुंदनी पेरें उज्ज्वल, एवी मोतीनी मालायें करी बिराजमान, एवा त्रण छत्र प्रभुने मस्तकें छत्रातिछत्र प्रत्यें धरे. समवसरणनी निश्रायें चार जोडी चामर, अने बार छत्रो

होय छे, ए आठ प्रातिहार्य कह्यां. उक्तं च ॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि, र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च॥ भामंमलं दुंदुभिरातपत्रं,सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम्॥१॥ए आठ प्रातिहार्य ते श्रीअरिहंतना आठ गुणो कहेवाय छे,

तेमज चार मूल अतिशय छे, ते आ प्रमाणेंः—पहेलो अपायापगमातिशय, बीजो ज्ञानातिशय, त्रीजो पूजातिशय तथा चोथो वचनातिशय. तत्र प्रथम अपायापगमातिशय, ते बे प्रकारें छेः—एक स्वाश्रयी ने बीजो पराश्रयी, तेमां स्वाश्रयी बे प्रकारें छेः—अपाय कहेतां उपद्रव ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारें छेः—तेमां द्रव्यथी जेमने सर्व रोगो अपगम एटले क्षय थइ गया छे अने भावथी अंतरायादिक अढार दोषथकी रहित थया छे ते आ प्रमाणेंः— १ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ वीर्यांतराय, ४ भोगांतराय, ५ उपभोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ए भय, १० शोक, ११ जुगुप्सा, एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष. ए अढार दोषो श्री वीतरागना क्षय थइ गया छे. ए स्वाश्रयी अपायापगमातिशय कह्यो. हवे पर आश्रयी अपायापगमातिशय आ प्रमाणेंः—ज्यां भगवंत विहार करे,त्यां आसमंतात् भागें सवाशो योजन सुधीमां प्रायः करी रोग, वैर,ऊंदर प्रमुखनो उपद्रव. मारी, मरकी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, पोताना सैन्यनो भय तथा परना सैन्यनो भय. एटला वानां थाय नहीं, ए पर आश्रयी जाणवो.

बीजो ज्ञानातिशय ते आवी रीतें जाणवो. भगवान् केवलज्ञानें करी लोकालोकनुं स्वरूप सर्व प्रकारें जाणे छे. सर्व प्रकारें देखे छे; कोइ प्रकारें कांइ भगवानथी अज्ञात रहेतुं नथी,तेथी भगवान् ज्ञानातिशयवंत जाणवा.

त्रीजो पूजातिशय ते आ प्रमाणेंः—भगवंतने राजा, बलदेव,वासुदेव, चक्रवर्ती, भवनपतिदेव, व्यंतरदेव, ज्योतिष्कदेव तथा वैमानिकदेवता प्रमुख जगत्त्रयवासी भव्य जीवो पूजा करवानी अभिलाषा करे छे.अर्थात् श्रीतीर्थंकर सर्वपूज्य छे,माटें ए त्रीजो पूजातिशय जाणवो.

चोथो वचनातिशय आम जाणवोः—भगवंतनी वाणी संस्कारादिकगुणें करी सहित होय छे. माटें मनुष्य,तिर्यंच तथा देवताउने अनुयायी होय, ते एवी रीतें संस्कारने पामे छे,के सर्व भव्य जीवो पोतपोतानी भाषाना अनुसारें तेनो अर्थ समजी जाय छे. जेम एक भिल्ल, पोतानी त्रण स्त्री स

हित एकदा प्रस्तावें वनमां जतो हतो, तेने मार्गमां एक स्त्रीयें कह्युं के मुझने हरण हणीने आणी आपो, बीजीयें कह्युं के मने अत्यंत तृषा लागी छे माटें पाणी लावी आपो. अने वली त्रीजीयें कह्युं के मने गीतगान करी संजलावो. ए त्रणेने जिल्लें कह्युं के, (सरो नथी) एम एक उत्तर कह्यो. त्यारें पहेली समजी के, सरो एटले बाण नथी. बीजी समजी के, सरो एटले सरोवर नथी. त्रीजी समजी के, सरो एटले मधुरस्वर नथी. एम एक उत्तरथी त्रणे स्त्रीयो समजी गइ, ए दृष्टांतें प्रजुनो वचनातिशय पण जाणवो. ए जिनेंद्रनी वाणीना पांत्रीश गुणो छे, ते विस्तारना जयथी लख्या नथी. ए चार अतिशय, आठ प्रातिहार्य सार्थे मेलवतां श्रीतीर्थंकरना बार गुणो थया.

हवे सिद्धना आठ गुणो विवरीने कहे छेः—गाथा "नाणं च दंसणं चेव, अव्वाबाहं तहेव सम्मत्तं॥ अक्खयठिइ अरूवी. अगुरु लहु वीरियं हवइ" अर्थः—प्रथम (नाणं च के०) ज्ञानावरणीय कर्म क्षय थइ जवाने लीधे ज्ञानની उत्पत्ति थयाथी तेना प्रजावें लोकालोकना स्वरूपने विशेष प्रकारें जाणे छे. बीजो (दंसणंचेव के०) दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थई जवाथी केवल दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे तेना योगें लोकालोकनुं स्वरूप जले प्रकारें देखे छे, त्रीजो (अव्वाबाहं के०) सर्व प्रकारनी बाधा पीडाथकी रहित, एटले वेदनीय कर्म क्षय थई जवाथी नैरुपाधिक अनंत सुखनी उत्पत्ति थाय छे. ते सुख आवुं छे केः—व्यवहारीयानां सुख, राजानां सुख, बलदेवनां सुख, वासुदेवनां सुख, चक्रवर्त्तीनां सुख, असंख्याता जवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देवोनां सुख, बार देवलोकना देवतानां सुख, नव ग्रैवेयकना देवतानां सुख, पांच अनुत्तर विमानवासी देव, ए सर्वेनां सुख तेथकी अनंतगणुं अधिक सुख, सिद्धना जीवोने छे. ते सुखनो अनुजव सिद्ध विना बीजा कोइने पण थइ शके नही. जेम मूंगो साकर खाय, तेनो स्वाद पोतें जाणे पण बीजाने कही शके नहीं, तेम सिद्धना सुखने केवलज्ञानी जाणे छे, पण ते सुख वचनातीत छे, माटें मुखथी कही शके नहीं. चोथो (तहेव सम्मत्तं के०) तेमज मोहनीय कर्मनो क्षय थइ जवाने लीधे क्षायिक सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय छे, ते सिद्धने विषे यथावस्थित होय छे. पांचमो (अक्खयठिइ के०) आयुःकर्मनो क्षय थयाथी अक्षयस्थिति थाय छे. सिद्धना जीवने पर्यायवडे सादि अनंत

स्थिति छे, माटें अक्षयस्थिति कहेवाय छे. छठो (अरूवी के०) रूपथकी रहित छे. उपलक्षणथी वर्ण, गंध, रस तथा फरसथकी पण रहित जाणियें. एटले सिद्ध पांच वर्णमांना एके वर्णें कहेवाय नहीं; बे गंधमां कोइ गंधनो सिद्धमां संजव नथी;पांच रसमां एके रस सिद्धनेविषे न होय अने आठ स्पर्शमांनो एके स्पर्श सिद्धने न होय. एटले नामकर्मना क्षयथकी एउनो तादात्म्यसंबंध सिद्धनेविषे नहिं होवाने लीधे ए अरूपी गुण कह्यो छे. सातमो (अगुरुलहु के०) गोत्रकर्मनो क्षय थइ जवाथी सिद्ध जारे पण नथी, तेम हलका पण नथी एटले (अगुरु के०) सिद्धने उंच गोत्र न होय तथा (अलहु के०) सिद्धने नीच गोत्र न होय. एटले सिद्ध,कार्मिक सन्मान तथा सत्कार रहित होय छे.अर्थात् विषयता संबंधें करी स्वाजाविक पूजा सत्कारें करी रहित छे अने आठमो (वीरियं हवइ के०) अंतराय कर्मनो क्षय थवाथकी वीर्यांतरायना क्षयने लीधे सिद्धने स्वाजाविक आत्मानुं अनंत बल होय छे,ते बल एवुं के लोकने अलोकमां तथा अलोकने लोकमां करी नाखे पण सिद्ध ते बलने फोरवे नहिं, फोरव्युं पण नथी अने फोरवशे पण नहीं. कृतकृत्य थया छे माटें तादृश वीर्यने फोरवे नहीं. ए आठ, सिद्धना गुण थया.

हवे आचार्यना छत्रीश गुणो आवी रीतें:–“ पंचिंदियसंवरणो, तह नवविह बंजचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अढारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायार पालण समछो ॥ पंच समिउ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥” अर्थः–(पंचिंदियसंवरणो के०) स्पर्शनेंद्रिय प्रमुख पांच इंद्रियो, तेउना स्पर्शादिक मुख्य पांच विषयो तथा ते विषयोना अवांतर त्रेवीश जेदो थाय, तेमां जे पोताने अनुकूल प्रीतिकारी होय, तेउनी उपर राग न धरे अने जे प्रतिकूल अप्रीतिकारी होय, तेउनी उपर द्वेष न करे, ते माटें पंचेंद्रियना संवरयुक्त एम कह्युं. एम प्रत्येक इंद्रियना विषयनेविषे राग तथा द्वेषना अजावें रहे. ए प्रमाणें पांचे इंद्रियना विषयोविषे करतां, पांच गुणो थया. (तह के०) तथा (नवविहबंजचेर के०) नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिने धारण करनार, तेमां प्रथम, गाय प्रमुख पशु,नपुंसक तथा स्त्रीथकी रहित एवा स्थानकने विषे रहे. बीजुं,स्त्रीनी कथा,वार्त्ता,प्रीतियुक्त

सरागपणे करे नही. त्रीजुं, जे आसनें स्त्री बेठी होय ते ठेकाणें बे घडी पर्यंत पण ब्रह्मचारी पुरुष बेसे नही, अने जे आसनने विषे पुरुष बेठो होय, तिहां स्त्री त्रण प्रहर सुधी बेसे नही; चोथुं, स्त्रीना अंगोपांग, राग सहित निरखे नही. पांचमुं, जींतप्रखने आंतरे स्त्री पुरुष बन्ने सूतां होय अथवा कामविषे वातो करतां होय, त्यां बेसी न रहे. ठहुं पूर्वावस्थामां स्त्रीनी साथें कामक्रीडा कीधी होय, तेनुं स्मरण न करे. सातमुं, सरस स्निग्ध आहार न लिये. आठमुं नीरस आहार पण अति मात्रायें वजन उपरांत न लिये; नवमुं शरीरनी शोजा विजूषा न करे. ए नव प्रकारें ब्रह्मचर्य मन, वचन, कायारूप त्रिकरण शुद्धपणें पाले. ए नव गुणो अने प्रथम कहेला पांच मली चौद गुणो थया. क्रोधादिक चार कषाय ते चारित्रना घातक परिणामविशेष जाणवा. ए चार कषायथकी मुक्त एटले मूकाणा ठे, एउना जेदोनुं विस्तारें करी विवरण कर्युं नथी. ए चार गुण मली अढार गुण थया. (इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो के०) ए अढार गुणोयें करी संयुक्त जाणवा ॥१॥ हवे बीजा अढार कहे ठेः—(पंचमहव्वयजुत्तो के०) पांच महाव्रतें करी युक्त. तेमां प्रथम "सवाउ पाणाइवायाउ वेरमणं" एटले मन, वचन अने कायायें करी ठ निकायना जीवोने पोतें हणे नहीं, बीजानी पासें हणावे नहीं, तथा हणनाराने अनुमोदन दिये नहीं, तिहां पृथिवी, हरमजी, वानी, हरियायल प्रमुख खरलें वाटे नहीं, वटावे नही, पोताने अर्थें वाटयुं होय ते लीये नही, तथा पाणी पोताने अर्थें उन्हुं कर्युं होय ते लीये नही, बीजाने लेवरावे नही तथा कोइ लेतो होय ते प्रत्यें रूडुं जाणे नहीं, लेनारनी साथें वसे नही, दिवसनुं आणेलुं पाणी, रात्रें तथा विहाणे वावरे नही, अग्निसंबंधी दीवो, फानस तथा अगर उक्केवो इत्यादिक करे नही, करावे नही, अनेरायें कीधुं आदरे नही, आदरनारनी साथें वसे नही तथा मोरपीठी अने लूगडा प्रमुखें वायरो करे नही, करावे नही, करतो होय, तेने वारी राखे, वायरो करवो आदरे, तेनी साथें वसे नही. वनस्पति, नील, फूल तथा जाडवां उपर चाले नहीं तथा धान्यप्रमुख साधुने अर्थें राध्युं होय, ते वहोरे नही. तथा आंबानो रस घोल्यो होय, खडबूजां प्रमुख मोळ्यां हाय, तेने वहोरे नही. तथा त्रसकायनी विराधना थाय, माटे

रात्रे चाले नही.गृहस्थने घेर तथा उपाशरे अणपडिलेह्यां वस्त्र राखे नहीं, ए प्रथम महाव्रत कह्युं.

२ “ सवाउ मुसावायाउ वेरमणं”क्रोध, लोज, जय तथा हास्यादिक थी द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जाव संबंधें मन, वचन तथा कायायें करी पोतें जूवुं बोले नही, बीजाने जूवुं बोलावे नही तथा जूवुं बोलनारने अ नुमोदे नहीं, एटले स्वजावें तथा कार्य उपने तथा पोतानो शिथिलाचार ढांकवाने अर्थें तथा आदेशादिकनी वात करतां तथा गृहस्थनुं मन राख वाने अर्थें जूवुं कदापि बोले नहीं. ए बीजुं माहाव्रत कह्युं.

३ “ सवाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं” पारकुं अदत्त, पोतें तृणमात्र पण लिये नही,परने लेवरावे नही, तथा लेताने अनुमोदे नहीं. एटले तीर्थंकर अदत्त, गुरुअदत्त,स्वामिअदत्त तथा जीवअदत्त. ए चार प्रकारनां अदत्त ठे, तिहां पोताने अर्थें रांधेलो आहार लीये तथा असुजतां वस्त्र,पात्र प्रमुख लीये,तेने तीर्थंकर अदत्त सहित गुरुअदत्त ए बे अदत्त लागे,अने गृहस्थें अणआप्युं तथा मन पांखे आप्युं लीये, तेने स्वामिअदत्त सहित तीर्थंकर अ दत्त लागे,अने फासुकरणमां पाणी प्रमुख सजीव वस्तु वहोरे. त्यां जीव अदत्तसहित तीर्थंकरअदत्त लागे. ते लिये नही, लेवरावे नही, तथा ले ताने अनुमोदे नही, ए त्रीजुं महाव्रत कह्युं.

४ “सवाउ मेहुणाउ वेरमणं. ” अढार जेदें ब्रह्मचर्य पाले. ते आ प्र माणेंः—औदारिक काम, ते मनुष्य तथा तिर्यंचनी स्त्री संबंधी तेने मन, वचन तथा कायायें करी सेवना करे नही.परने करावे नही तथा करताने अनुमोदन न दिये. एमज नव जेद वैक्रियना ते देवताउनी स्त्रीविषे जा णी लेवा. ए अढार जेदें ब्रह्मचर्य पाले एटले कोई प्रकारनी स्त्री जातिनी सोथें आलाप,संलाप तथा अतिपरिचय न करे. केम के एम कस्याथी व्रतनो जंग थाय ठे. अने बीजो कोइ देखे तो जिनशासननी हेलना करे अने घणो द्वेषी होय तो गाममां बकवाद करे,तेथी निंदा थाय.ए चोथुं महाव्रत कह्युं.

५ “सवाउ परिग्गहाउ वेरमणं.” नव विध परिग्रह तथा धातुमात्र मूर्छा रूपें राखे नहीं, धर्म सहायक उपकरणोथी अधिक उपकरणो राखे नही, बीजाने रखावे नही, अने राखताने अनुमोदन दिये नहीं. जे साधु होय,ते औधिक चौद उपकरण तथा औपग्रहिक जे संथारो, उत्तरपट्ट, जांजो प्रमुख

छे ते खप प्रमाणें राखे. परंतु गृहस्थने घरे गांठडी बांधीने तो सर्वथा राखेज नही अने जो गृहस्थने घेर राखे तो तेने पांच महाव्रत मांहेलुं एक पण माहाव्रत छे एम न जाणवुं. अने तेने नावसाधु पण न कहीयें, जो कहीयें तो मिथ्यात्व लागे. ए पांचमुं माहाव्रत कह्युं. सर्व मली त्रेवीश गुणो थया.

हवे (पंचविहायारपालणसमत्थो के०) पांच प्रकारना आचारने पालवाने समर्थ होय. तेमां प्रथम ज्ञानाचार एटले ज्ञान पोतें जाणे, परनेजणावे, पोतें लखे, बीजानी पासेंथी लखावे, पोतें ज्ञानना जंमारा करे, परनी पासें करावे अने जे ज्ञाननुं पठन प्रमुख सारो उपयोग करतो होय, तेनी उपर राग धरे. एम ' काले विणए ' इत्यादिक गाथा वडे कह्युं छे, ते जाणी लेवुं. बीजो दर्शनाचार. ते पोतें सम्यक्त्व पाले, बीजाने सम्यक्त्व पमाडे अने सम्यक्त्वथी पडतो होय तेने हेतुयुक्तिना वचनें करी स्थिर करे, ए ' निस्संकिय निक्कंखिय ' इत्यादिक बे गाथायें करी जाणवुं. त्रीजो चारित्राचार. ते पोतें चारित्र पाले, बीजाने चारित्र पलावे, जे कोइ शुद्ध चारित्रने पालतो होय तेने अनुमोदे, ते 'पणिहाण जोगजुत्तो' इत्यादिक बे गाथायें करी समजवो. चोथो तपआचार. ते पोतें बार नेदें तप करे, बीजाने तप करावे, जे कोइ बार नेदना तपने करतो होय, तेने अनुमोदे, ते ' अणसणमूणोअरिया ' ए गाथावडे जाणवुं. अने पांचमो वीर्याचार, ते पंचाचारने विषे शक्ति फोरवे, पडिक्कमणुं पडिलेहण, धर्मानुष्ठानने विषे बलवीर्य गोपवे नहीं. ते 'अणगूहिअ बलवीरिउ' ए गाथा थकी समजी लेवुं. ए पांच आचाररूप पांच गुणो मली अठावीश थया.

(पंच समिउ के०) पांच समितियो एटले ईर्यासमिति, नाषासमिति, एषणासमिति, आदाननिक्षेपणसमिति, तथा पारिष्ठापनिकासमिति. तिहां 'ईर्यासमिति' ते धोंसरा प्रमाण दृष्टियें जोतो चाले, संधि दिशायें उपयोग राखे, 'नाषासमिति' ते सर्वथा सावद्य वचन न बोले, निरवद्य वचनज बोले, जो धर्मोपदेश प्रमुख न आपे, तो अंतरायकर्म उपार्जन करे, माटें मुखें मुहपत्ती राखी क्रोधादिक रहित वचन बोले. 'एषणासमिति' ते आधाकर्मादिक बहेंतालीश दोष रहित आहार करतां अंगालिक दोष प्रमुख मांमलाना पांच दोष टाले. 'आदाननंमनिक्षेपणासमिति' ते दृष्टियें जोइ पूंजीने मात्रा प्रमुख लीये तथा मूके. 'पारिठावणियासमिति' ते लघु नीति तथा वडी नीतिने दृ

ष्टियें जोइ पूंजीने "अणुजाणह जसुग्गहो" ए पद कहीने परठवे,पछी त्रण वार वोसिरे कहे,मात्रे प्रमुखे जिंजेली नूमि उपरे परठवे,तो पंचेंद्रियनी घा तनो करनार जाणवो. ए पांच मली तेत्रीश गुणो थया. (तिगुत्तो के०) त्रण गुप्तियो एटले देशथी अथवा सर्वथी जे योगनी निवृत्ति तेने गुप्ति कहि यें.ते त्रण प्रकारें छेः–मनोगुप्ति, वचनगुप्ति तथा कायगुप्ति. तेमां वली मनो गुप्ति त्रण प्रकारें छेः–असत्कल्पनावियोगिनी, समताजाविनी, तथा आत्मा रामता. तेमां आर्त्त तथा रौद्रध्यानने अनुयायी ते शत्रु तथा रोगादिक माठी वस्तुनी अपेक्षायें हिंसादिक आरंज संबंधी जे मनोयोगनी निवृत्ति ते असत्कल्पनावियोगिनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्ति,प्रसन्नचंद्रादिक साधु नी पठें अशुज ध्यान तथा अशुज जावनाथी मनने निवृत्तावववाने प्रस्ता वे थाय छे. बीजी सिद्धांतने अनुसारें धर्मध्यानने अनुयायि जावनायें करी सहित परलोकसाधक एवी समता परिणामरूप जे मनोयोगनी निवृत्ति, ते समताजाविनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्तिनो अवकाश शुज जा वना तथा शुजध्यानना अजिमुखकालें होय. त्रीजी शैलेशीकरणकालें सकल मनोयोगनी निवृत्ति, ते आत्मारामता मनोगुप्ति जाणवी.हवे बीजी वचनगुप्ति बे जेदें छेः–एक मौनावलंबिनी अने बीजी वाङ्नियमिनी. तेमां पहेली ए जे संज्ञा, होंकारो, खोंखारो, पाषाण तथा काष्ठनुं फेंकवुं,नेत्रपल्ल वी तथा करपल्लवी प्रमुखने छांकवे करी मौन करवुं,अथवा सकल जाषायो गनुं रूंधवुं, ते मौनावलंबिनी जाषागुप्ति कहियें. ए गुप्ति,ध्यान तथा पूजा ना कालें होय छे. बीजी जणवुं, जणाववुं. पूछवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो, परावर्त्तना प्रमुखने कालें यत्नापूर्वक तथा शास्त्रने अनुसारें मुखें वस्त्रादिक देइने बोलतां जे सावद्ययोगनी निवृत्ति,ते वाङ्नि यमिनी जाषागुप्ति कहियें.त्रीजी कायगुप्ति ते बे जेदें छेः–एक चेष्टानिवृत्ति रूप तथा बीजी यथासूत्रचेष्टानियमिनी. तेमां प्रथम कायोत्सर्गावस्थायें काययोगनी स्थिरता अथवा सकलकाययोगनुं रूंधवुं ते चेष्टानिवृत्तिरूप कायगुप्ति कहियें. बीजी शास्त्रने अनुसारें सूवुं, बेसवुं, मूकवुं, लेवुं, जवुं, आववुं, ऊजुं रहेवुं. इत्यादिक ठामें कायायें करी पोताने छंदें प्रवृत्तती चेष्टा थी निवृत्ते,तेने यथासूत्रचेष्टनियमिनी कायगुप्ति कहियें. इहां गुप्तिने कालें जे शुद्धोपयोग ते जावगुप्ति कहियें,ए त्रण गुप्तियो अने प्रथमना तेत्रीश मली

(बत्तीसगुणोगुरू मज्झ के०)ए बत्रीश गुणें करी सहित गुरु मुऊ प्रत्यें थाउ.

हवे श्री उपाध्यायजीना पच्चीश गुणो कहे छेः—अगीयार अंग तथा बार उपांग, ए त्रेवीशने जणे तथा जणावे अने चरणसित्तिरी, तथा करणसित्तिरी ए बेहुने शुद्ध रीतें पाले, ए सर्व मली पच्चीश गुणो जाणवा.

हवे साधुना सत्त्यावीश गुणो कहे छेः—"छवय छक्काय रक्का, पंचिंदिय लोह निग्गहो खंती ॥ जावविसोही पडिले,हणाय करणे विसुद्धीय ॥१॥ संजम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण काय संरोहो ॥ सीयाइ पीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥ २ ॥" अर्थः—६ (छवय के०) पांच महाव्रत तथा छहुं रात्रिजोजनविरमण, ए छ व्रत पाले; १२ (छक्कायरक्का के०) पोताना आत्मानी पतें छकायनी रक्षा करे; १७ (पंचिंदियलोहनिग्गहो के०) पांच इंद्रियो तथा छठो लोज तेनो निग्रह करे, १७ (खंति के०) क्षमा करे, २० (जावविसोही के०) जावविशुद्धि ते चित्तनी निर्मलता करे, २१ (पडिलेहणायकरणेविसुद्धीय के०) बाह्य उपकरणादिकनुं पडिलेहण विशुद्धियें उपयोग सहित करे, २२ (संजमजोएजुत्तो के०) संयमना योग, तेणें करी सहित, एटले संयमने अनुकूल एवा समिति गुप्त्यादिरूप योगने आदरे, अविवेक, विकथा, निद्रादिक प्रमाद योगने छांके, एटले २५ (अकुसलमणवयणकायसंरोहो के०) माठे ठामें मन, वचन तथा काय प्रवर्त्ततां होय, तेउने रोकी राखे, २६ (सीयाइपीडसहणं के०) शीतादिक बावीश परिसहनी पीडाने सहन करे, २७ (मरणंउवसग्गसहणंच के०) मरणांत उपसर्ग सहे पण धर्म मूके नही. ए साधुना सत्त्यावीश गुणो जाणवा. ए सर्व, पांच परमेष्ठीना मलीने एकशो ने आठ गुणो थया.

हवे श्री नवकारनो महिमा कहे छेः—गाथा "नवकार इक्क अरकर, पावं फेडेइ सत्त अयराणं ॥ पन्नासं च पएणं, सागर पणसय समग्गेणं ॥ १ ॥ जो गुणइ लरक मेगं, पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं ॥ तिछयरनाम गोअं, सो बंधइ नत्रि संदेहो ॥ २ ॥ अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठ कोडीउ ॥ जो गुणइ जत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ ए श्री नवकारने जावसहित विधियें जपतां श्री गुरुदत्त आम्नाय आस्थान विशेषें करी इह लोकें अने परलोकें समस्त वांछितफलनी सिद्धि थाय.

॥ इति श्री नवकारनो बालावबोध संपूर्ण ॥

हवे जेम साधुनें एक अहोरात्रमां सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे, तेम श्रावकने पण सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें नित्य प्रत्यें जघन्यथी त्रण वार, पांच वार अने उत्कृष्टथी सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे. तेम वली गुणवंतनी भक्तिने अर्थें गुरुने वांदणां देवां तथा सर्व ज्ञानादि पंचाचार विशुद्धिने अर्थें सांज तथा सवार मली बेहु कालें त्रस स्थावर प्राणीयें करी रहित एवा प्रेक्षित प्रमार्जित स्थानकने विषे गुरुसाक्षिक छ आवश्यकरूप प्रतिक्रमण करवुं, कारण के गुरुसाक्षिक अनुष्ठान, अत्यंत दृढ थाय छे, माटें गुरुसाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं. तिहां ए सर्व क्रिया करवी. अने जो गुरुनो अभाव होय तो स्थापनाचार्यनी स्थापना मांमीने ते स्थापना आगल सर्व क्रिया करवी. कारण के आ, दुःखमकाल पांचमो आरो ते मांहे स्थापनानो आधार छे, एम श्रीजिनशासनने विषे दीपक समान श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण तेमणें कह्युं छे के,गुरुनो उपदेश तेना उपदर्शनने निमित्तें जेम जिनने विरहें श्रीजिनेश्वरनी प्रतिमानी सेवना छे, तेम गुरुना विरहें गुरुनी स्थापना करवी, जेम राजाने अभावें प्रधान राजकाज चलावे छे, तेम गुरुने अभावें स्थापनाचार्यनी गुरुनी पेरें सेवा करवी. ए विनयनुं कारण छे, माटें ते गुरुस्थापनानो पाठ कहे छे.

॥ अथ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंभचेर
गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अ
ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वय जुत्तो,
पंचविहायार पालण समत्थो ॥ पंचसमिउ ति
गुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥२॥

अर्थः—(पंचिंदिअ के०) पांचेंद्रियना शब्दादिक त्रेवीश विषय अने बशें बावन विकारप्रत्यें (संवरणो के०) संवरणहार एटले रोकनार (तह के०) तथा (नवविह के०) नवविध एटले नव प्रकारें (बंभचेर के०) ब्रह्मचर्य एटले शीलव्रतनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिना धरनार, एटले शीलनी नव वाडना पालनार, (चउविह के०) चतुर्विध एटले चार प्रकारना (कसाय के०) क्रोधादिक कषायथकी (मुक्को के०) मुक्त छे.

एटले मूकाणा ले (इअ के०) ए त्रण, गुरुविशेषणमांहे रह्या जे (अठा रसगुणेहिं के०) अढारे गुण, तेणें करी (संजुत्तो के०) संयुत एटले स हित ॥ १ ॥ (पंचमहव्वयजुत्तो के०) प्राणातिपातादिक पंचाश्रवना त्रि विध त्रिविध त्यागरूप पांच महाव्रतें करी युक्त सहित, (पंचविहायारपाल णसमत्थो के०) ज्ञानादिक पंचविध आचार पालवाने समर्थ सावधान (पं चसमिउ के०) ईर्यादिक पांच समितियें करी समित एटले युक्त, (ति गुत्तो के०) मनोगुप्त्यादिक त्रण गुप्तियें करी गुप्त, एटले गोप्यो ले,पाप थकी आत्मा जेणें ए सात,गुरुना विशेषणोमांहे रह्या जे (छत्तीस गुणो के०) छत्रीश गुण, तेणें करी संपन्न ते (गुरू के०) गुरु ले,एटले स्वामी ले, (मद्य के०) महारो. ए गुरुशब्दनो निरुक्तिथी अर्थ कहे ले. जेम केः— (गु के०) अज्ञान पाप तेने (रु के०) रूंधे, तेने गुरु कहियें. एनो वि स्तारें अर्थ, उपर पंचपरमेष्ठीना अर्थना विवरणप्रसंगें यथानुक्रमें एज बे गाथाउना वर्णनरूपें कस्यो ले, माटें अहीं फरी विस्तास्यो नथी,संक्षेपें ज अर्थ कस्यो ले. एमां गाथा बे ले, पद आठ ले, गुरु एटले बेवडा एवा जारे अक्षर दश ले, लघु एटले बेवडा वर्ण नहीं एवा अक्षर सित्तेर ले. सर्व मली ए सूत्रांना अक्षर एंशी ले. इति गुरुस्थापनायुगलगाथार्थः ॥१॥

आ सूत्रने विषे पंचेंड्रियना त्रेवीश विषयना वशें बावन विकार कह्या ले, जेणें करी जीवने कर्मबंध थाय ले, ते नेदो विवरीने देखाडे ले.

१२ प्रथम कर्णेंड्रियना बार विकार थाय ले. ते आवी रीतें केः—एइंड्रि यना एक सचित्त शब्द, बीजो अचित्त शब्द अने त्रीजो मिश्रशब्द,ए त्रण विषय ले, ते अनुक्रमें मयूर, कोकिल प्रमुखना सचित्त शब्द तथा मृदंग ताल प्रमुखना अचित्तशब्द तथा पुरुष अने स्त्री मध्यें वस्त्रादिक मिश्र नेरी नफेरी प्रमुखना मिश्रशब्द, ए त्रण शुन्न अने त्रण अशुन्न मली ल थाय. ते ल रागें अने ल द्वेषें मली बार श्रोत्रेंड्रियना विकार थाय.

६० बीजा चक्षुरिंड्रियना शाठ विकार थाय ले, ते आवी रीतें के, ए इंड्रियना पांच वर्णरूप पांच विषय ले, तेमां रत्नादिकना पांच शुन्न अने केशादिकना पांच अशुन्न मली दश नेद थाय, ते सचेत रत्नादिकना अने अचेत गुली प्रमुखना तथा मिश्र ते स्त्री, पुरुष प्रमुखना ए त्रण नेदें त्रिगुणा करतां त्रीश नेद थाय, ते रागें अने द्वेषें बमणा करतां साठ नेद थाय.

१२ त्रीजा घ्राणेंद्रियना बार विकार थाय छे. ते आवी रीतें के, ए इंद्रियना एक सुरभिगंध अने बीजो दुरभिगंध, एवा बे विषय छे,ते वली सचित्त पुष्पादिकनो शुभ गंध छे, अने लशणादिक सचित्तनो अशुभ गंध छे, तेमज अचित्त कस्तूरी प्रमुखनो शुभ गंध छे अने अचित्त विष्टादिकनो अशुभ गंध छे तथा मिश्र ते पद्मिनीस्त्रीप्रमुखनो शुभ गंध अने शंखिनी स्त्रीप्रमुखनो अशुभ गंध,एम शुभाशुभ ए बे गंधने सचित्त,अचित्त अने मिश्रें गुणतां छ भेद थाय, तेने राग अने द्वेषें गुणतां बार भेद थाय.

७२ चोथा रसेंद्रियना बहोंतेर विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंद्रियना विषय पांच छे तथापि अहीं छ रसना भेद लइने विकार करियें, तेवारें छ रस शुभ अने छ रस अशुभ मली बार थाय. तेने वली सचित्त, अचित्त ने मिश्र,एवा त्रण भेदें गुणतां छत्रीश थाय. ते छत्रीशने रागें अने द्वेषें बमणा करतां बहोंतेर भेदें रसेंद्रियना विकार थाय छे.

९६ स्पर्शेंद्रियना छन्नुं विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंद्रियनो एक हलवो स्पर्श, ते अर्कतुल्य, बीजो गुरुस्पर्श ते वज्रादिक, त्रीजो मृदु स्पर्श ते हांसरुं प्रमुख, चोथो खरस्पर्श ते करवतधार तथा गोजिव्हा प्रमुख, पांचमो शीतस्पर्श ते हिमप्रमुख, छठ्ठो ऊष्णस्पर्श ते अग्निप्रमुख, सातमो स्निग्धस्पर्श ते घृतादिक, आठमो लूखो स्पर्श ते भस्मादिकनो. एवा आठ स्पर्शरूप आठ विषय छे, ते पुष्पादिक सचित्त अने माखण प्रमुख अचित्त तथा स्त्री पुरुष मिश्र,एम सचित्त, अचित्त अने मिश्रना भेदें त्रण गुणा करतां आठ त्रिक चोवीश थाय, ते चोवीश सारा अने चोवीश नरसा गणतां अडतालीश थाय,तेने वली राग अने द्वेषें गुणतां छन्नुं थाय. ए रीतें श्रोत्रेंद्रियना बार,चक्षुरिंद्रियना शाठ,नासिकाना बार,जिव्हाना बहोंतेर अने स्पर्शेंद्रियना छन्नु, मली विकारना भेद बशें ने बावन थाय छे.

ए रीतें नवकारपूर्वक गुरुस्थापना करीने हवे इरियावही पडिक्कम्या विना चैत्यवंदन, सज्झाय, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणुं, कांइ पण कीधुं सूजे नहीं. उक्तं च श्रीआगमे "इरियावहिआए अपडिक्कंताए न कप्पइ किंपि चेइयवंदण सज्झाआवस्सयाइकाउ" ते भणी प्रथम इरियावहि सूत्र वखाणीयें छैयें. ते इरियावहिने धुरें खमासमण आपीयें, ते आवी रीतेंः—

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा
ए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥इति ॥३॥

अर्थः—(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! एटले क्षमादिक दश विध यतिधर्मने विषे प्रधान सावधान एवा हे क्षमासहित श्रमण तपस्वी ऋषीश्वर साधुजी ! एवा आमंत्रणें करी गुरुने बोलावीने कहियें के, तमारा चरणकमल प्रत्यें (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले शक्तिसहित एवी जे (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले आपणी तनु जे शरीर, तेणें करी (वंदिउं के०) वंदितुं एटले वांदवाने (इच्छामि के०) हुं वांछुं छुं, इच्छुं छुं. एटलुं उजा छतांज कहियें. पछेवी, संडासा, बे जानु, ललाट, डाबो हाथ अने नूमिका प्रमार्जी बे जानु, बे हाथ, अने पांचमुं ललाट, ए पंचांगें करी नूमि फरसतो थको (मत्थएण वंदामि) एवुं कहे, एटले (मस्तकेन वंदामि के०) मस्तकें करी तमोने हुं वांडुं छुं, एम कहे. ए सूत्र मां त्रण गुरु, अने पच्चीश लघु, मली अछावीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

फरी उजो थइ बे हाथ जोडीने नीचें मुजब समाचारी कहे.

॥ अथ सुगुरुने शातासुखपृच्छा ॥

इच्छकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुखतप, शरीरनिरा
बाध, सुख संजम जात्रा, निर्वहो छो जी, स्वामी शाता
छेजी, नात पाणीनो लान देजोजी ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थः—(इच्छकार के०) इच्छा करुं छुं. (सुहराइ के०) सुखें रात्रि, (सुह देवसि के०) सुखें दिवस, (सुखतप के०) सुखें तपश्चर्यामां (शरीरनि राबाध के०) शरीरसंबंधी निराबाधपणामां एटले रोगरहितपणामां (सुखसंजमजात्रा के०) सुखें संयमयात्रामां (निर्वहोछोजी के०) प्रवर्त्तो छो जी, स्वामी जी शाता छे जी ॥४॥ एवी सुखशाता पूछीने पछी एमज उजो थको बे हाथ जोडी इरियावहियंनो पाठ कहे. ते लखीयें छैयें.

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह नगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं ॥

अर्थः–(इच्छाकारेण के०) इच्छाकारि पूर्वक एटले तमारी इच्छा पूर्वक पण म्हारा वचनने बलात्कारें तथा दाक्षिण्यपणे नही, परंतु तमारी इच्छा होय तो (जगवन् के०) हे ज्ञानवंत ! महाजाग्य, पूज्य, (संदिसह के०) आदेश आपो आज्ञा करो, तो (इरियावहियं के०) चालवानो मार्ग तथा साधु श्रावकनो मार्ग, जे सर्वविरति देशविरतिरूप तेने विषे थइ होय, जे जीवबाधादिक सपापक्रिया तथा अतिचाररूप मलिनता ते पाप थकी निवर्त्तवानो जे साधु तथा श्रावकनो आचार छे, ते प्रमाणें हुं (पडिक्कमामि के०) प्रतिक्रमुं, निवर्त्तुं, पाछो वलुं, तेवारें गुरु कहे के (पडिक्कमह के०) एटले निवर्त्तो, पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे के, (इच्छं के०) प्रमाण छे. एटले जेम तमें आज्ञा दीधी, तेमज हुं तमारो आदेश अंगीकार करुं छुं, मस्तकें चढावुं छुं. ए आदेश मागवाना सूत्रामां त्रण गुरु अक्षर अने त्रेवीश लघु अक्षर छे, सर्व मली छवीश अक्षरो छे ॥

॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥२॥

अर्थः–हुं पण एटलुंज (इच्छामि के०) अभिलषामि एटले वांछुं छुं, जे (इरियावहियाएविराहणाए के०) ऐर्यापथिक्या विराधनया एटले गमन छे प्रधान जेमां एवो जे मार्ग, तेने इरियापथ कहियें अने ते मार्गने विषे थती एवी जे जंतुउंनी विराधना तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. अथवा ऐर्यापथिक ते साधु तथा श्रावकनो आचार एटले ध्यान मौनादिक जे जिक्षुनुं व्रत, तेने विषे थयेली जे आचारातिक्रमरूप व्रतने बाधा तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. तेनेज सपापक्रिया कहियें. ते थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमितुं एटले प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने हुं वांछुं छुं, इच्छुं छुं. अहींयां पडिक्कमवाने अत्यंत उजमाल थयो, ए संबंधें पहेला बे पदनी अभ्युपगमनामें प्रथम संपदा थइ. जे आलोचना लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं, ते अभ्युपगम संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर छ, तथा गुरु बे मली आठ अक्षर छे. अने बीजी इरियावहियादिक बे पदनी निमित्तसंपदा कही ते अंगीकारकृत वस्तुने उपजवानां कारण रूप छे. माटें एनुं निमित्त एवुं नाम छे. एमां पण बे पद छे, अने लघु अक्षर बार छे ॥२॥

हवे ते विराधनारूप सपापक्रिया शुं करवाथी थाय ? ते कहे छे.

॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥

अर्थः-(गमणागमणे के०) गमनागमने एटले पोताना स्थानकथकी परस्थानकें जवुं, तेने गमन कहियें अने परस्थानकथकी पोताने स्थानकें आववुं, तेने आगमन कहियें. तेने विषे जे जीवोनी विराधना थइ होय. अहीं विशेष न कह्युं माटें ए सामान्यप्रकारें प्रायश्चित्त उपजाववा रूप एक पदनी त्रीजी उंघ ते सामान्यहेतुसंपदा जाणवी. केम के जीवहिंसा उपजाववानुं सामान्यहेतु ते गमनागमन छे;एमां लघु अक्षर छ छे ॥३॥

हवे त्यां परस्थानकें जतां अने स्वस्थानकें आववाने
विषे विराधना केम थाय ? ते कहे छे.

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग
पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥

अर्थः-(पाणक्कमणे के०) प्राण्याक्रमणे एटले बेंड्रिय, तेंड्रिय अने चौरिंड्रिय, जीवोने प्राणी कहियें. ते जीवोने आक्रमण एटले पगें करी चांपवाथकी तथा (बीयक्कमणे के०) बीजाक्रमणे बीज एटले शालि, गोधूम, यव, शरशवादिक सर्वजातिनां धान्य प्रमुख जे वाव्यां छतां उगी आवे, ते बीज जाणवां तेने आक्रमण एटले पगे करी चांपवाथी तथा (हरियक्कमणे के०) हरिताक्रमणे. हरित एटले नीलवर्णवाली एवी जे मूलस्कंधादिक दश प्रकारनी वनस्पति, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवाथकी. एमां पाछलां बे पदें करी सर्व बीज अने सर्व वनस्पतिने विषे जीवपणुं कह्युं जे माटें, जीवनां लक्षण, सर्व एउमां संपूर्ण दीठामां आवे छे,ते आ प्रमाणेंः-मनुष्यना शरीरनी पेठें वनस्पतिनुं शरीर पण बाल, कोमल, तरुण तथा वृद्धताप्रमुखें करी सहित दीठामां आवे छे. तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोयें करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे, तेम शाखादिक अवयवोयें करी वृक्षनी वृद्धि पण थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिक प्राणीयोमां जाग्रत् तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम पुआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष,चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रतादिक अवस्था दीठामां आवे छे. तथा लोज, हर्ष, लज्जा, जय, मैथुन, क्रोध, मान, माया, लोज, आहार,

ओघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार, वृक्षोनें पण मनुष्यनी पेठें थता दीठामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष तथा बील पलाशादिक वृक्ष, भूमि गत निधानने पोताना मूलनी जडें करी वींटी लिये छे, ते लोभनो भाव जाणवो, वर्षाकालने विषे मेघनी गर्जना सांभलीने शीतल वायुना फरसे करी अंकूर उत्पन्न थाय छे, ते हर्षनो भाव जाणवो. लज्जालु वेली, मनु ष्यना हाथ वगेरे अंगना स्पर्शथकी संकोचाई जाय छे; ए लज्जा तथा भय नो भाव कहेवाय. अशोकवृक्ष, बकुकलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौ वनस्वरूप सालंकार कामिनीना पगनी पानीना प्रहारें करी, तेना मुखनो तांबूलरस छांटवाथी, तेना करेला सस्नेहालिंगन वडे तथा तेना करेला हावभाव कटाक्षविक्षेपें करी तत्काल फलता दीसे छे; ए मैथुनसंज्ञानो भाव जाणवो. कोकनद वृक्षनो कंद, मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूके छे; ए क्रोधनो भाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं छतां आ लोको दुःखी कां थाय छे ? एवा अहंकारें करी निरंतर अश्रुपात करे छे. केम के, तेना योगथी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटें ए माननो भाव जाणवो. प्रायः घणुं करीने बधी वेलीयो पोत पोतानां फलोने पांदडायें करी ढांकी लिये छे, ए मायानो भाव जाणवो. तथा भूमिका जलादिक आहारना योगें वृक्षो नी वृद्धि थाय छे; अने ते विना दिवसें दिवसें कुमलाई जाय छे. मनुष्य नी पेठें नागरवेलि प्रमुखने तिलवटी गोमय तथा दुग्धादिकना दोहला उपजे छे. ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसंज्ञानो भाव जाणवो. वृक्षने पांडू, गांठ, उदरवृद्धि, सोजो तथा दुर्बलपणुं प्रमुख रोगें करी फूल, फल, पान, त्वचाने विकार दीसे छे. तथा सर्व वनस्पतिना आउखां पोत पोताना नियतज होय छे; इष्ट तथा अनिष्ट आहारनी प्राप्तियें करी वृक्षो पुष्ट तथा अपुष्ट थाय छे; वेलीयो मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चढे छे; ए ओघसंज्ञानो भाव जाण वो. इत्यादिक युक्तियें करी श्री आचारांगना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं स्थाप्युं छे. अहीं कोइ पूछे के, जो वनस्पति जीवरूप होय तो छेदन तथा भेदन प्रमुख करतां कां रुदन करती न थी ? अथवा नाशी जती नथी ? एनो उत्तर ए छे के, मनुष्यनी पेठें वन स्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अभाव छे अने स्था

वर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी, तो पण तेउने अव्यक्त वेदना होयज छे. जेम कोइ एक आंधलो,बहेरो,बोबडो, ठूंठो, पांगलो अने विषम वायुना विकारें करी थंजाणो थको सर्व अंगोपांगना व्यापार रहित एवो पुरुष होय, तेने कोइ ताडनप्रमुख करे, तो तेथी ते सहन थाय नहीं पण मुखादिकना अजावें रोइ तथा नाशी शके नहीं तथापि तेने वेदना तो थायज छे. ते माटें कोइ महोटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्पतिनी विराधना करवी नही. (उंसा के०) अवश्याय एटले ठार, एथी आकाशथकी जे सूक्ष्म अप्काय पडे,तेनुं ग्रहण करवुं. ए सूक्ष्म अप्कायनी विराधना आकरी पापहेतु छे; एम जणावे छे. उक्तं च श्री आगमे"एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसिव मित्ता, जंबूदीवे न मायंति ॥ १ ॥" तथा (उत्तिंग के०) गर्दजाकार जीवो, जूमिने विषे वृत्ताकार घर करीने रहे, अर्थात् जूमिने विषे गोल विवरना करनार जेनुं जुईया एवुं नाम होय छे, ते जाणवा. अथवा उत्तिंग शब्दें करी कीडीयोनां नगरां पण जाणवां. (पणग के०) पनक एटले पांचवर्णां नील फूल जाणवां. (दगमट्टि के०) दकमृत्तिका एटले जे सचित्त जूमिकायें सचित्त पाणीने योगें करी कादव थाय, अर्थात् पाणी अने माटी, ए बे जेला मलेला कादव कीचड जाणवा अथवा दग एटले पाणी अने मट्टि एटले माटी एम बन्ने पदना अर्थ जूदा जूदा पण जाणवा. (मक्कडा के०) मर्कट एटले कोलीयावडाना (संताणा के०) संतान एटले जाल ए कोलीयावडानी जालने मर्कटसंतान कहियें. ए सर्व पांच अथवा छ जातिना जीवोने (संकमणे के०) संक्रमण एटले पगे करी पीड्यायकी अथवा चांप्याथकी, पगादिकें करी मसलवाथकी, मथन करवाथकी, ताडन, तर्जन करवाथकी जे कांइ विराधना थइ होय, ए विशेषपणे बीजादि आक्रमण रूप चार पदनी इत्वर एटले विशेषहेतु नामें चोथी संपदा जाणवी.एमां लघु अक्षर बत्रीश अने गुरु अक्षर छ छे, सर्व मली आडत्रीश अक्षरो जाणवा॥४॥

हवे घणुं शुं कहेवुं परंतु एकजपदें करी सर्व जीवोनी विराधना कहियें छैयें.

जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥

अर्थः– (जेमेजीवाविराहिया के०) ये मया जीवा विराधिताः एटले

जे कोइ जीवो में विराध्या होय, डुःखमांहे पाड्या होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्यें कह्युं पण एकेंड्रिय,बेंड्रिय,इत्यादिक विस्तारें न कह्युं माटें ए सकलजीवना परितापरूप एक पदनी पांचमी संग्रहसंपदा जाणवी. एमां सर्व लघु अक्षर आठ डे ॥ ५ ॥

हवे ते कया जीव में विराध्या एटले डुःखीया कीधा ? ते कहे डे.

॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥

अर्थः–(एगिंदिया के०) एकेंड्रियाः एटले जेने शरीररूप एकज इंड्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप पांच प्रकारना स्थावर जीवने एकेंड्रिय जाति कहियें, ते वली पांचे स्थावरना पण एकेकाना अनेक नेद डे, ते जीवस्वरूप कुलकथकी जाणवां. हवे त्रसजीव कहे डे. (बेइंदिया के०) द्वींड्रियाः एटले जेने शरीर अने मुख ए बे इंड्रियोज होय, एवा कृमि, शंख, शीप, जलो, गंफोला, अणसीयां प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंड्रिय जीव कहियें. (तेइंदिया के०) त्रींड्रियाः एटले जेने शरीर, मुख तथा नासिका, ए त्रणज इंड्रियो होय, एवा गदहिया, कुंथुआ, जू, लीख, मांकड, कीडी, मकोडा प्रमुख जेने आठंधिका पग होय अथवा जेने मुखाग्रें शिंग होय ते सर्व त्रेंड्रिय जीव जाणवा. (चउरिंदिया के०) चतुरिंड्रियाः एटले जेने शरीर, मुख,नासिका अने आंख, ए चार इंड्रिय होय एवा माखी, कुती, मडर, डांस, विंडी, कोलीयावडा, चांचड, ज्रमरी, टीड प्रमुख जे जे उडनारा जीव होय, जेने ड अथवा आठ पग होय तथा मस्तकें शिंग होय, ते सर्व चतुरिंड्रिय जीव जाणवा. (पंचिंदिया के०) पंचेंड्रियाः एटले जेने शरीर, मुख,नासिका, आंख अने कान. ए पांचे इंड्रिय होय एवा जलचर ते मत्स्य कडपादिक तथा स्थलचर ते सिंहव्याघ्रादिक अने खेचर ते हंस मयूरादिक,पक्षीयो ए तिर्यंच जाणवा. तथा मनुष्य, देव अने नारकी, ए सर्व पंचेंड्रिय जीव कहियें. ए पांच बोल मध्यें सर्व संसारी जीव आवी गया, एमां एकेंड्रिय,बेंड्रिय,एम जीवनां नाम कह्यां, तेथी ए एकेंड्रियादिक, जीवन्नेद देखाडवारूप पांच पदनी जीवसंपदा डही जाणवी. एमां सर्व मली एकवीश लघु अक्षर डे ॥ ६ ॥

हवे ए जीवोने केवी केवी रीतें विराध्या? तेनो प्रकार कहे छे.

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थः-(अभिहया के०) अभिहताः तिहां अभि एटले सामा आवताने पगें करी हता एटले हण्या, अथवा उपाडीने परहा पटकाव्या एटले परहा नाख्या, तेने अभिहता कहियें तथा (वत्तिया के०) वर्त्तिताः एटले पूंजीने एकठा कीधा एक ढगले कीधा, अथवा धूलें करी किंवा कर्दमें ढांक्या, तेने वर्त्तिता कहीयें. तथा (लेसिया के०) श्लेषिताः एटले भूमियें घश्या तथा भींतादिकें लगाड्या अथवा लगारेक मसल्या तेने लेसिया कहियें. (संघाइया के०) संघातिताः एटले मांहोमांहे शरीरने मेलववे करी पिंडीभूत कीधा, एकठा मेलव्या तेने संघातिता कहियें, तथा (संघट्टिया के०) संघट्टिताः एटले थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या, (परियाविया के०) परितापिताः एटले समस्त प्रकारें ताप्या, पीड्या, परिताप उपजाव्यो, (किलामिया के०) क्लामिताः एटले गाढी किलामणा ग्लानि उपजावीने निस्तेज कीधा, निटोल कीधा, माख्या नहिं पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया के०) अवद्राविताः एटले उत्त्रासित त्रास पमाड्या अर्थात् शेष जीव रह्यो पण हाली चाली न शके, एवा कीधा, तथा (ठाणाउ ठाणं संकामीया के०) स्थानात् स्थानं संक्रामिताः एटले (ठाणाउ के०) एक स्थानकथकी उपाडीने (ठाणं के०) बीजे स्थानकें (संकामिया के०) संक्रमाव्या (जीवियाउववरोविया के०) जीविताद्व्यवरोपिताः मारिताः एटले (जीवियाउ के०) जीवितव्यथकी (ववरोविया के०) चूकाव्या जूदा कीधा, अथवा माख्या. ए अभिहया इत्यादिकें करी जे एकेंद्रियादिक जीवोनी विराधना थइ होय (तस्स के०) ते संबंधी जे अतिचार लाग्या, तेने (दुक्कडं के०) दुष्कृत एटले पाप कहियें, ते दुष्कृत (मि के०) मे एटले महारुं मन, वचन, कायायें करी (मिच्छा के०) मिथ्या एटले निष्फल थाउ. हवे वली एवां पाप न करुं. इति भावः ॥ एमां अभिहया इत्यादिक विराधनानां नाम दीधां, माटें ए जीवादिक भेदने परितापना

विराधना रूप अगीयार पदनी विराधना नामें सातमी संपदा थइ. एमां लघु अक्षर एकावन, गुरु अक्षर ठ छे, सर्वाक्षर सत्तावन छे, हवे मिछा मिडुक्कडं ए पदनो अक्षरार्थ समासें करी कहे छे. जेम केः—" मिऊ मद्दव छत्ते,छचिय दोसाण छायणे होइ ॥ मित्तिय मेराइछिर्ज, डुत्ति डुगंछामि अप्पा णं ॥१॥ कत्तिय कडमे पावं, डत्तिय डवेमि तं उवसमेणं ॥ एसो मिछा डुक्कड, पयख्करछो समासेणं ॥ २ ॥ " अर्थः—(मिऊमद्दवछत्ते के०) मिकार जे छे ते मृडु सुकुमाल अहंकार रहितपणाने अर्थें छे, (छचियदोसाणछायणे होइ के०) छकार जे छे ते. दोषना छांकवाने अर्थें छे. (मित्तियमेराइछीर्ज के०) मिकार जे छे, ते मर्यादामां रहेवाने अर्थें छे. (डुत्तिडुगंछामिअप्पाणं के०) डुकार जे छे, ते पापकारि आत्माने डुगंछवाने माटें छे ॥१॥ (कत्तियकडमे पावं के०) ककार जे छे, ते में जे पाप कीधुं तेने (डत्तियडवेमितंउवसमेणं के०) डकारें करी दहुं छुं, बालुं छुं. उपशमावुं छुं, (एसोमिछाडुक्कड के०) ए मिछा मिडुक्कडंनो (पयख्करछोसमासेणं के०) पदाक्षरार्थ, समासें करीने कह्यो.

ए इरियावहिने सम्यक्प्रकारें मन,वचन अने कायायें करी त्रिकरणशुद्ध पडिक्कमतां मिछामि डुक्कडंना देनारने क्षणेकमां मृगावतीनी पेरें सर्व कर्मो नो क्षय थाय. तिहां सर्व मली पांचशे ने त्रेशठ जातिना जीवो छे, तेनी साथें मिछामिडुक्कडं दइयें, तेवारें अढार लाख, चोवीश हजार, एकशो ने वीश, एटला मिछामिडुक्कड देवाय, ते आवी रीतें:—तिहां प्रथम पांचशोने त्रेशठ स्थानकें जीव उपजे छे, ते स्थानकोनुं विवरण करे छेः—

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चार स्थावरने सूक्ष्म तथा बादर करतां आठ भेद थाय. अने पांचमा वनस्पतिकायना त्रण भेद छेः—एक सूक्ष्म निगोदरूप तथा बे प्रकारनी बादर, एक प्रत्येक ने बीजी साधारण, ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार भेद थया; तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चउरिंद्रिय,ए त्रणे विकलेंद्रिय कहेवाय छे. ए संमूर्छिमज होय छे. ए त्रण पहेला अग्यारनी सार्थे मेलवीयें एटले चौद भेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मली अठावीश भेद थाय. हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना दश भेद कहे छेः—तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादिक जलचरनो एक भेद, स्थलचरना त्रण भेद, तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पाद, आशीविष प्रमुख उरःपरिसर्प, अने गोहप्रमुख भुजपरिसर्प ए स्थलचरना त्रण

ज्ञेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक ज्ञेद, ए सर्व मली पांच गर्जज अने पांच संमूर्छिम मली दश ज्ञेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीयें त्यारें वीश ज्ञेद थाय. ए वीशमां पहेला अठावीश मेलवीयें,त्यारें अडतालीश थाय. ए तिर्यंचना ज्ञेद जाणवा. हवे नारकीना ज्ञेद कहे बे. रत्नप्रज्ञा, शर्कराप्रज्ञा, वालुकप्रज्ञा, पंकप्रज्ञा, धूमप्रज्ञा, तमःप्रज्ञा तथा तम स्तमप्रज्ञा,ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद ज्ञेद थाय; तेमां पाबला अडतालीश मेलवियें, त्यारें बाशठ थाय. हवे मनुष्यना ज्ञेद आ प्रमाणेंः–पांच जरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए कर्मज्रूमिना पंदर ज्ञेद; पांच हेमवंत, पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष,पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तरकुरु, ए अकर्मज्रूमिना त्रीश ज्ञेद अने उपन्न अंतरद्वीपो कहेवाय बे. ए उपन्ननी साथें पेला कर्म ज्रूमिना पंदर तथा अकर्मज्रूमिना त्रीश मेलवियें, त्यारें एकशो एक ज्ञेद मनुष्य जातिना थाय. एमां गर्जज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशें ने बे ज्ञेद थाय. अने तेनी साथें एकशो ने एक अपर्याप्ता संमूर्छिम मनुष्यना ज्ञेद मेलवीयें, त्यारें त्रणशें ने त्रण ज्ञेद थाय. अने बाशठ प्र थम तिर्यंचना कह्या, ते सर्व एकठा कस्याथी त्रणशें ने पांशठ ज्ञेद थाय.

हवे देवताना एकशो ने अठाणुं ज्ञेद कहियें बैयेंः–प्रथम परमाधामी ना पंदर, दश ज्रुवनपति, आठ व्यंतर, आठ वाणव्यंतर, दश ज्योतिषी, तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्बिषिया,दश तिर्यग्ज्रृंजक, पांच जरत तथा पांच ऐरवत, ए दश क्षेत्रना दश वैताढ्यने विषे "अन्ने पाणे सयणे, वत्थे लेयणपुप्फफलपुवा ॥ बहुफल अविवत्ति जुआ, जंज्रगा दसविहा हुंतीति जंज्रकाः ॥ १ ॥" नव लोकांतिक, बार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर वैमानिकना, ए सर्व मलीने नवाणुं थया. ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता, ए बे ज्ञेदें करतां एकशो ने अठाणुं ज्ञेद थाय. तेने पाबला त्रण शो ने पांशठमां ज्ञेलीयें, त्यारें पांचशो ने त्रेशठ सर्व जी वोनां उत्पत्तिस्थानक थाय. तेने 'अन्निहया' इत्यादिक दश पदवडे दश गुणा करियें, त्यारें पांच हजार बशें ने त्रीश थाय; ते वली राग ने द्वेषथी बमणा करियें, त्यारें अग्यार हजार बशें ने शाठ थाय; ते मन,वचन ने कायायें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें तेत्रीश हजार, सातशें ने एंशी था

य. ते करवा, कराववा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा करियें, त्यारें एक लाख, एक हजार, त्रणशें ने चालीश थाय. ते अतीत, अनागत तथा वर्त्तमानकालें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें त्रण लाख चार हजार ने वीश थाय. ते अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें, तथा आत्मानी साखें, ए छनी साखें छ गुणा करियें, त्यारें अढार लाख, चोवीश हजार, एक शो ने वीश, मिछामिदुक्कडं थाय. एवी रीतें जीवने खमत खामणां कीजें. ए इरियावही पडिक्कमतां शुज ध्यानें करी अनेक घोर पाप विलय थाय ॥ ५ ॥

हवे ए आलोया पडिक्कम्या जे अतिचार, तेनुं उत्तरीकरण एटले वली विशेषशुद्धि करवाने अर्थें काउस्सग्ग करवाने वांछतो थको तस्सउत्तरीनो पाठ कहे, ते आवी रीतें.

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं॥ ए॥

अर्थः—हवे एवी रीतें आलोवतां, पडिक्कमतां पण जे कांइ पापसहित आत्मा रह्यो होय, (तस्स के०) तेनीज वली विशेषशुद्धिने अर्थें जे कांइ आगल करवुं, तेने (उत्तरीकरणेणं के०) उत्तरीकरण एटले विशेषें करी वली उपर शुद्ध करवुं तेने उत्तरीकरण कहियें, ते आगल तो हवे काउस्सग्ग करवुं छे, माटे कायोत्सर्ग करवे करीने विशुद्धि करुं छुं, एटले जे अतिचारनुं आलोयण प्रमुख पूर्वें कीधुं छे, तेनी वली वशेषशुद्धिने अर्थें कायोत्सर्ग करुं छुं, वली ते कायोत्सर्ग तो (पायछित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त करवे करीने होय, एटले गुरुपासें पाप आलोवीयें, पछी गुरुयें दीधुं एवुं जे आलोयणानुं तप, तेने प्रायश्चित्त कहियें. प्रायः घणुं चित्त एटले मन अथवा जीव तेने शोधे छे, तेने प्रायश्चित्त कहियें अथवा जे पापने छेदे, तेने प्रायश्चित्त कहियें. ते काउस्सग्गने करवे करी पाप छेदाय, आत्मा पाप रहित थाय. वली ते प्रायश्चित्त पण (विसोहीकरणेणं के०) विशेषें

शोधवुं तेने विशोधीकरण कहियें एटले आत्माना पापरूप अंतर मल जे अतिचार, तेना टालवाथी एटले निर्मलता करवे करीने विशोधी होय वली ते विशोधीकरण पण विशल्य होय, तो थाय, त्यां कहे बे. (विसल्ली करणेणं के०) गयां बे मायादि त्रण शल्य जेनाथी तेने विशल्य कहियें. एटले एक मायाशल्य,बीजुं नियाणशल्य, अने त्रीजुं मिथ्यात्वशल्य, ए अंत रंग त्रण शल्यने टालवा थकी थाय. ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करी एटले ए चार निमित्तें करीने शुं करवुं बे ? तो के (पावाणं कम्माणं के०) संसार हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक पाप कर्मो बे,तेउने (निग्घायणठाए के०) निर्घातनार्थाय एटले उच्छेदन करवाने अर्थें (काउस्सग्गं के०) कायव्यापार त्यागरूप कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) तिष्ठुं बुं,कायाने एक ठामें करुं बुं, केम के जे स्थानकें कायानो व्यापार करवो कह्यो होय,तो ते स्थानकें जीव शुं नहिं करे ? अर्थात् सर्व कांइ करे. ए माटे कायाना व्यापारने बांडुं बुं.एमां तस्स उत्तरीकरणेणं इत्यादिक पडिक्कमवाना शब्दो कह्या. माटें ए ब पदनी आठमी पडिक्कमण नामें संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उंगणचालीश, गुरु अक्षर दश,सर्वाक्षर उंगणच्चालीश बे. ए बे सूत्रोना गद्यपाठ बे गाथा बंध नथी माटें ए बेहु सूत्रोमां संपदा आठ, पद बत्रीश,गुरु अक्षर चोवी श, लघु अक्षर एकशो ने पंचोतेर,सर्व मली एकशो ने नवाणुं अक्षरो बेः–

हवे ए आगल एक ठामें काउस्सग्ग करुं ए पदें करी एवी प्रतिज्ञा करी के, कायानो व्यापार न करुं, तो हवे बीजो शरीरनो कोइ पण व्या पार करवाथी प्रतिज्ञानो जंग थाय,तेमाटे काउस्सग्गमां नीचें कहेला आ गार मोकलां राख्यां बे,ए आगारें करी काउस्सग्गनो जंग न थाय ते कहे बे.

॥ अथ अन्नब उससिएणं ॥

अन्नब उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, बीएणं, जंभा इएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, जमलिए, पित्तमुछाए ॥१॥

अर्थः–(अन्नब के०) अन्यत्र ते बीजे ठामें एटले हवे जे उछ्वासादिक आगारो कहेशे, ते आगार वर्जीने बीजे स्थानकें कायानो व्यापार कर वानो नियम करुं बुं. हवे ते आगारोनां नाम कहे बे, (उससिएणं के०) उछ्वासितात् एटले मुखें तथा नासिकायें करी उंचो श्वास लइयें, तेने

उच्छ्वास कहियें. ते टालीने अन्यत्र बीजो कायव्यापार करवानो नियम छे अर्थात् उंचो श्वास लेतां महारो काउस्सग्ग भंग न थाय. एम आगल पण सर्व पदें जाणी लेवुं. (नीससिएणं के०) निःश्वासितात् एटले जे मुखें तथा नासिकायें करी नीचो श्वास मूकीयें, तेने निःश्वास कहियें, ते नीचो श्वास मूकतां महारो काउस्सग्ग न भांगे, ए बे आगार, अशक्यपरिहार भणी मोकला कीधा, (खासिएणं के०) कासितात् एटले खांसी उधरस आवे थके (छीएणं के०) छिक्कितात् एटले छींक आवे थके (जंभाइएणं के०) जृंभितात् एटले बगासुं आवे थके एटले जेवारें खांसी, छींक अने बगासुं आवे, तेवारें जीवरक्षा भणी मुखें हाथ देतां महारो काउस्सग्ग न भांगे. (उड्डुएणं के०) उद्गारितात् एटले उंरुकार आवे थके (वायनिसग्गेणं के०) वातनिसर्गात् एटले वायसंचय ते अधोद्वारें जे वायु निकले तेने वातनिसर्ग कहियें, ए जेवारें उद्गार तथा वातप्रवर्त्तन करे तेवारें जीव रक्षा भणी मुखद्वारें हाथ देतां मुहपत्ति प्रमुख देवानी जयणा करतां काउस्सग्ग न भांजे, (भमलिए के०) देहभ्रमेः एटले भ्रमरी, चक्री, फेर अकस्मात् आवे, तेने भमलि कहियें. (पित्तमुच्छाए के०) पित्तमूर्छायाः एटले पित्तने प्रकोपें करी मूर्छा आवे, तेने पित्तमूर्छा कहियें. ए भ्रमरी अने मूर्छा आवे थके जो नीचें न बेसे तो उभो थको पडे, तेथी आत्मविराधना तथा संयमविराधना थाय, तेमाटें भ्रमरी, मूर्छा आव्याथी तिहां बेसवुं पडे तेथी महारो काउस्सग्ग भंग न थाय. अहीं सुधी एकेका आगारनां नाम दीधां, माटें ए नव पदनी प्रथम एकवचनांत आगारसंपदा थइ. एमां लघु अक्षर आडत्रीश, अने गुरु अक्षर छ छे, सर्व मली चुम्मालीश अक्षर छे.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसं
चालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ ७ ॥

अर्थः—(सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेभ्योऽङ्गसंचारेभ्यः एटले सूक्ष्म जे अंगनो संचार ते हालवुं करे, शीतादिक वेदनायें करी रोमोद्गम उपजे तेथी शरीरनो संचार थाय, (सुहुमेहिंखेलसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेभ्यः श्लेष्मसंचारेभ्यः एटले शरीरमांहे जे सूक्ष्म श्लेष्मनो संचार थाय, मुखना थूंकनुं चालवुं तथा कफनुं गलवुं थाय, (सुहुमेहिंदिठिसंचा

लेहिं के०) सूक्ष्मेभ्यो दृष्टिसंचारेभ्यः एटले सूक्ष्म जे दृष्टिनो संचार मिषो न्मिषादिकें चक्षुने हलाववाथकी थाय. अहीं सुहुमेहिं प्रमुख पदमांहे बहु आगारनां नाम दीधां माटे ए त्रण पदनी बहुवचनांत आगार नामें संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश अने गुरु एक, मली त्रीश अक्षरो छे.

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अ
विराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥

अर्थः--(एवमाइएहिंआगारेहिं के०) एवमादिकैः आगारैः एटले एव मादिक जे पूर्वोक्त बार आगार कह्यां, ते आदें देइने अंहिं आदि शब्द थकी वीजां पण चार (आगारेहिं के०) आगार लेवां, तेनां नाम कहे छे. एक तो वीजली अथवा दीपकादिकनी उजेहि एटले अग्निना अजवा लानो प्रकाश आपणा शरीर उपर पडे, तो उंढण वस्त्रादिक लेवुं पडे अ थवा बीजे स्थानकें जवुं पडे, तेथी महारो काउस्सग्ग न भांजे. बीजो मा र्जार तथा उंदरादिक प्रमुख, आगल जतां आवतां होय. दोडता होय, तथा मुख आगल पंचेंद्रियजीवनुं छेदन, भेदन थतुं देखे. तो बीजे स्थान कें जवुं पडे तेथी काउस्सग्ग न भांगे. त्रीजो अकस्मात् चोरनी धाड आ वी पडे, अथवा राजादिकना भयथी बीजे स्थानकें जवुं पडे आघा पाछा थवुं पडे तेथी काउस्सग्ग न भांगे, तथा चोथो अग्नि लागे अथवा घरनी भींत खडहडती पडती जाणीयें तथा पोताने अने पर जे साधु आदिक तेने सर्पादिक दंश मारे, अथवा सिंहादिकना उपद्रव थता जाणे, इत्यादिक अनेरा पण जिहां विलंब करतां घणीज धर्मनी हानि थती देखीयें तो तिहां अणपूगो काउस्सग्ग पारतां थकां पण काउस्सग्ग न भांगे, ए चार आगार अपवादमार्गें जाणवां, पण उत्सर्गें न जाणवा. एनी साथें पूर्वोक्त बार आगार मेलवीयें तेवारें शोल आगार थाय,ए सर्व शोल आगारोयें करीने काउस्सग्ग पारतां थोडीशी विराधना थतां पण ए व्यापार करतां महारो काउस्सग्ग (अभग्गो के०) अभग्नः एटले सर्वथा अखंडित (अविरा हिउ के०) अविराधितः एटले थोडोशो देशथी पण न विराध्यो, अर्थात् देशथी पण अविराधित एवो अखंडित संपूर्ण (काउस्सग्गो के०) कायो त्सर्ग ते (मे के०) महारे (हुज्ज के०) होजो, एमां एवमाइ इत्यादिक

आगार कह्यां, माटें ए ७ पदनी त्रीजी आगंतुक आगारसंपदा जाणवी. एमां लघु एकवीश, अने गुरु चार, मली पच्चीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

हवे ए काउस्सग्गनो वखत आंके छे, एटले एवो कायो त्सर्ग केटली वार सुधी होय ? ते कहे छेः—

जाव अरिहंताणं, जगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥

अर्थः—(जावअरिहंताणंजगवंताणंनमुक्कारेणं के०) यावदर्हतां जगवतां नमस्कारेण एटले (जाव के०) ज्यां लगें (अरिहंताणं जगवंताणं के०) श्री अरिहंत जगवंत पूज्य तेने (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित एटले नमो अरिहंताणं एवो उच्चार करी (न पारेमि के०) न पारयामि,नहिं हुं पारुं,एट ले कायोत्सर्गना पार प्रत्यें न पामुं, समाप्त न करुं, त्यां सुधी जाणवुं. एमां जाव अरिहंताणं इत्यादिक पदमां काउस्सग्गनुं मान कह्युं. तेथी ए चार पदनी का योत्सर्गने अवधिमर्यादारूप कायोत्सर्गावधि नामें चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर वीश. अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली एकवीश अक्षरो छे ॥४॥

तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थः—(तावकायं के०) तावत्कायं एटले (ताव के०) त्यां लगें (का यं के०) म्हारी कायाने शरीरने (ठाणेणं के०) स्थानेन एटले एकस्थान कें स्थिरपणे उनुं राखीने (मोणेणं के०) मौनेन एटले वचनने रुंधवे करीने (झाणेणं के०) ध्यानेन एटले ध्यान ते धर्मने विषे मननुं स्थिरपणुं अर्थात् नवकारादिकने विषे एकाग्रध्यान तेणें करीने (अप्पा णंवोसिरामि के०) आत्मानं व्युत्सृजामि एटले (अप्पाणं के०) पोतानी काया ते प्रत्यें (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, एटले हुं तजुं छुं. अर्थात् काउस्सग्ग रहित पणायकी अने सावद्यव्यापारपणायकी कायाने वोसिरावुं छु. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवानुं कह्युं, माटें ए ७ पदनी पांचमी स्वरूपसंपदा जाणवी· एमां लघु अक्षर ओगणी श,अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली वीश अक्षरो छे. तथा ए काउस्सग्ग ने सूत्रें अन्नछ उससिएणंथी मांमीने अप्पाणंवोसिरामि लगें बधी मली संपदा पांच छे, छवीश पद छे, लघु अक्षर एकशो सत्तावीश छे, अने गुरु अ क्षर तेर छे, सर्वाक्षर एकशो चालीश छे ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे ए काउस्स

ग्गमां ओगणीश दोष टालवा तेनां नाम, लक्षण सहित कहियें बैयें. (१) घोडानी पेरें एक पगे शरीरनो भार आपी, बीजो पग वांको करी रहे, (२) वायरे हलावेली वेलडीनी पेरें क्षणें क्षणें अरहुं परहुं झोले, कंप्या करे, (३) थांभाने अथवा भींतने आधारें अडक्यो थको काउस्सग्गें रहे, (४) उपरले माले मस्तक अडावी रहे, (५) जेम भीलडी वस्त्र रहितथकी आगले विभागें हाथज आडो आपे, तेम काउस्सग्ग करतो बे हाथने आगल आणी राखे, (६) नवपरणीत वधूनी पेरें नीचुं माथुं करे, (७) बेडी घाल्यानी पेरें पग पहोला करे अथवा बे पग मेलावी भेला करे,पण जिनमुद्रामां जेटलुं आंतरुं कह्युं बे, तेटलुं न करे. (८) नाभि थकी चार अंगुल नीचें अने जानुथकी चार अंगुल उपर, चोलपट्ट पहेरवुं कह्युं बे, तेम न करे, परंतु नाभि उपर अने जानु हेठल वस्त्र पहेरी काउस्सग्ग करे, (९) डांस मशकादिकना भयथकी चोलपट्टादिकें करी हृदय ढांकीने काउस्सग्ग करे, (१०) गाडांनी ऊधनी पेरें पगनी बे पानी मेलवीने आगल बे पग विस्तारी काउस्सग्ग करे, अथवा बे पगना बे अंगुठा मेलवीने पाछला पानीना भाग तरफ बेहु पग विस्तारे. (११) संयति महासतीनी पेरें बेहु स्कंध उपरें वस्त्र ओढे, जे भणी काउस्सग्गमां दक्षिणस्कंध उघाडो कीधो जोइयें, ते न करे, माटें ए दोष. (१२) घोडाना चोकडानी पेरें रजोहरण, आगल आडुं आपी काउस्सग्ग करे, (१३) वायसनी पेरें आंखना डोला कीकी अरहां परहां फेरवे, (१४) कोठनी पेरें पहेरवानां वस्त्रनो एकठो पिंड करी बेहु पगनी वचालें चांपे, (१५) भूतावेशनी परें मस्तक कंपावे, (१६) मूंगानी पेरें हुं हुं करे, (१७) नवकार लोगस्सनी संख्या करवाने अर्थे भमुह ते पापण अथवा आंगुली हलावे, ते भमुहंगली दोष जाणवो. (१८) मदिरा पीधेलानी पेरें बड बड करतो काउस्सग्ग करे, (१९) अपेक्षा विना अरहुं परहूं जोतो वानरनी पेठें होठ बे हलावतो काउस्सग्ग करे. ए काउस्सग्गना ओगणीश दोष मध्यें आठमो, नवमो, तथा अगीयारमो ए त्रण दोष महासती साध्वीने न लागे, केम के तेनुं वस्त्रावृत शरीर होय तेमाटे, पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करे तो मस्तक उघाडुं राखे, अने वधू दोष भेलीयें, तेवारें चार दोषश्राविकाने न लागे, शेष पंदर दोष

लागे. ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो. तथा श्रीसिद्धांतमां तो सर्वक्रिया साधु आश्रयी कही छे. तेमाटे नाभिथी चार अंगुल नीचें चोलपट्टो पहेरवानुं राखे तथा बे कोणीयें चोलपट्टो झाली राखे, कंदोरा न बांधे. इत्यादिक सर्व साधु आश्रयी छे. ए कायोत्सर्गने विषे " चंदेसु निम्मलयरा " लगें, लोगस्सना पच्चीश पद चिंतवियें, अने काउस्सग्ग पूरो थया पछी " नमो अरिहंताणं " कहीने काउस्सग्ग पारीयें ॥ इति ॥ ६ ॥

हवे ए काउस्सग्ग पार्या पछी तो " सिद्धासिद्धं " पर्यंत संपूर्ण लोगस्सनो पाठ प्रगट कहेवो जोइयें, माटें ते कहे छे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

अर्थः– अर्हं (अरिहंते के०) अर्हतः एटले कर्मरूपशत्रुने हणवा थकी निर्दोषपणुं प्राप्त थयुं छे जेमने एवा अरिहंतने (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तयिष्ये, एटले नामोच्चारणपूर्वक हुं स्तुति करीश. हवे ते अरिहंत तो राजादिक अवस्थाने विषे द्रव्य अरिहंत पण होय छे, ते माटें भावार्हत्त्व प्रतिपादनने माटें (केवली के०) केवलिनः एटले उत्पन्न थयुं छे केवल ज्ञान जेमने, एवानुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् भावार्हतनुं कीर्त्तन करीश. आ केवल ज्ञानना पदें करीने प्रभुनो ज्ञानातिशय सूचव्यो. हवे ते तीर्थंकरोनी संख्या कहे छे. (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशतिमपि एटले ऋषभादिक चोवीश परमेश्वरनुं तो नामोच्चारणपूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपि शब्दथकी अन्य तीर्थंकरो जे महाविदेहादिक क्षेत्रोने विषे छे, तेनुं पण कीर्त्तन करीश. ते केहवा छे? तो के, (लोगस्सउज्जोअगरे के०) लोकस्य उद्योतकरान् एटले पंचास्तिकायात्मकलोकने केवलज्ञानरूप प्रदीपेंकरीने उद्योतकरणशील छे,एवानुं कीर्त्तन करीश. हवे जे अनुपकारी होय तेने कोइ सेवे नही,माटें एमना उपकारी पणाना प्रदर्शनने अर्थें कहे छे.(धम्मतित्थयरे के०) धर्मतीर्थकरान् एटले धर्म ते उक्तस्वरूप अने तीर्थ एटले जेनाथी तराय छे ते तीर्थ कहियें, एवो धर्म प्रधान जे तीर्थ तेने धर्मतीर्थ कहियें, ते धर्मतीर्थ करवानुं शील छे जेमनुं तेमनुं कीर्त्तन

करीश. अहीयां तीर्थंकरान् एवो पाठ न कह्यो अने धर्मतीर्थकरान् एवो पाठ कह्यो छे, ते एटला माटें के नद्यादि शाक्यादि संबंधी जे द्रव्यतीर्थ अधर्म प्रधान छे, तेनो परिहार करवानुं छे शील जेमनुं तेमने धर्मतीर्थकर कहियें. तेमनुं हुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् देव, मनुष्य, असुरयुक्त एवी पर्षदामांहे सर्व जाषा परिणामि एवी वाणीयें करी धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावनारा एवा प्रजुउं छे, तेमने हुं स्तवीश. आ पदें करीने प्रजुनो पूजातिशय तथा वचनातिशय सूचव्यो. हवे चोथो अपायापगमातिशय कहे छे. (जिणे के०) जिनान् एटले रागद्वेषादिकने जीतनारा, तेमनुं कीर्त्तन करीश ॥१॥ ए श्लोकमां लघु छवीश, अने गुरु छ, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे.

हवे कीर्त्तन करतो छतो आगली त्रण गाथायें चोवीशे तीर्थंकरोनां नाम कहे छे.

उसजमजियं च वंदे, संजवमजिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

अर्थः—"ऋषजमजितं च वंदे, संजवमजिनंदनं च सुमतिं च ॥ पद्मप्रजं सुपार्श्वं, जिनं च चंद्रप्रजं वंदे" (उसजं के०) श्रीऋषजदेवप्रत्यें (अजियंवंदे के०) श्री अजितनाथ प्रत्यें हुं वांदुं छुं. (च के०) वली (संजवं के०) संजवनाथ प्रत्यें, (अजिणंदणं के०) अजिनंदननाथ प्रत्यें, (च के०) वली (सुमइं के०) सुमतिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (पउमप्पहं के०) पद्मप्रजस्वामी प्रत्यें, (सुपासं के०) सुपार्श्वनाथप्रत्यें, (जिणं के०) कर्मशत्रुने जीतनार एवा, (च के०) वली (चंदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रजप्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं ॥ २ ॥ ए गाथामां लघु अक्षर साडत्रीश, अने गुरु अक्षर बे, सर्व मली उंगणचालीश अक्षरो छे.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

अर्थः—(सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथप्रत्यें, (च के०) वली एमनुं बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) पुष्पदंत छे ते प्रत्यें, (सीअल के०) श्रीशीतलनाथ प्रत्यें, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथप्रत्यें, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्य स्वामी, ए त्रण तीर्थंकर प्रत्यें, (च के०) वली (विमलं के०) श्रीविमल

नाथ प्रत्यें, (अणंतं के०) श्रीअनंतनाथप्रत्यें, (च के०) वली (जिणं के०) कर्मशत्रुप्रत्यें, जीपनार एवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथ ते प्रत्यें, (च के०) वली (संतिं के०) श्रीशांतिनाथप्रत्यें, (वंदामि के०) वांडुं बुं ॥३॥ ए गाथामां बत्रीश लघु, अने चार गुरु, मली बत्रीश अक्षरो बे.

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

अर्थः–(कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथप्रत्यें, (अरं के०) श्रीअरनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें, (वंदे के०) वांडुं बुं. (मुणिसुव्वयं के०) श्रीमुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिणं के०) श्रीनमिजिन प्रत्यें, (च के०) वली (वंदामि के०) वांडुं बुं. (रिठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि प्रत्यें, (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथ प्रत्यें, (तह के०) तथा (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हुं वांडुं बुं. आ श्लोकमां जे बेल्लो चकार बे, ते पादपूर्णार्थ बे ॥ ४ ॥ आ गाथामां लघु एकत्रीश, अने गुरु चार, मली पांत्रीश अक्षरो बे. एम त्रण गाथायें करीने श्रीऋषजादिक चोवीश तीर्थंकरने वंदना करी, हवे पूर्वोक्त " उसज्ज मजियं च " इत्यादि त्रणे गाथाउंनो समुयादायार्थ तो सुगम बे,परंतु पदना अर्थनुं विज्ञजन कराय बे, ते बे प्रकारें बे, एक सामान्यथकी अने बीजुं विशेषथकी. तेमां सामान्यथकी तो जे अर्थ सर्वें तीर्थंकरोमां पामीयें. जेम के (उसज्जं के०) ऋषज्जं एटले (ऋषति के०) गबति अर्थात् जे परमपदप्रत्यें (गबति के०) जाय बे,तेने ऋषज्ज कहियें. तथा 'उद्दत्वादौ' एणें करी उत्व करे बे, ते (उसहः के०) वृषजः आ रीतें पण अर्थ करियें तो वर्षति एटले सींचे बे, देशनारूपजलें करीने डुःखाग्नियें करी ज्वलित एवा जगतनें ते ऋषज्ज, ए अर्थ सर्व तीर्थंकरोमां व्याप्त बे. अने जे विशेषार्थ बे ते एकज तीर्थंकरना नामनुं निमित्त बे, ते विशेषार्थ कहे बे,

१ पहेला श्रीऋषज्ज देवने हुं वांडुं बुं, ते जगवानना बेहु ऊरुने विषे वृषजनुं लांबन हतुं माटे वृषज्ज नाम दीधुं. तथा सर्व तीर्थंकरोनी माता प्रथम स्वप्नमां हस्ती देखे, अने एमनी जननीयें प्रथम स्वप्नमां वृषज्ज दीठो, माटें वृषज्ज कहियें तथा धर्मनी आदिना करनार माटें बीजुं आदिनाथ नाम कहि

यें.एवी रीतें सर्व तीर्थंकरोना प्रथम सामान्यार्थ अने बीजा विशेषार्थ नामो जाणवां. एमनी विनीता नगरी, नाभिराजा पिता, श्रीमरुदेवी माता, पांचशें धनुष्यप्रमाण शरीर,चोराशी लक्षपूर्वायु,सुवर्णवर्ण देह, वृषभ लांछन.

२ बीजा श्रीअजितनाथने हुं वांदुं छुं,अजित एटले परिसहादिकें करी निर्जित तथा भगवाननां माता, पिता प्रथम कोइ वारें द्यूतरमण करतां हतां,तेवारें राणी बाजी हारी जती हती, अने राजानी जीत थती हती, अने भगवान्,गर्भे आव्या पछी भगवाननी माता जीतवा लागी अने राजा हारवा लाग्यो. एवो गर्भनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं,एमनी अयोध्या नगरी, जितशत्रु राजा पिता, विजया राणी माता, साडा चारशें धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोंतेर लक्ष पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, हस्ती लांछन.

३ त्रीजा श्रीसंभवनाथने हुं वांदुं छुं,एटले प्रकर्षें करीने चोत्रीश अतिशयना गुणो जेने विषे छे ते माटे संभव कहियें, अथवा जे,ए प्रभुनी स्तुति करे छे, तेने (सं के०) सुख (भव के०) थाय छे, तेमाटे संभव कहियें, तथा भगवान् गर्भगत थये थके अधिक सस्य एटले धान्यनो संभव थयो माटे संभव कहियें, एटले देशमां दौर्भिक्ष्य हतुं,ते भगवान् गर्भे आव्याथी अणचिंतव्यो मेह वूठो, धान्यनां वहाणो आव्यां, अणचिंतव्यो पृथिवीमां धान्यनो संभव थयो,तेथी संभव नाम दीधुं, एमनी श्रावस्ती नगरी,जितारिराजा पिता, सेना राणी माता, चारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अश्व लांछन.

४ चोथा श्रीअभिनंदन प्रभुने हुं वांदुं छुं. एटले (च के०) वली देवेंद्रादिकोयें जेमनुं अभिनंदन थाय छे, तेथी अभिनंदन तथा प्रभु गर्भे आव्या तिहांथी आरंभीने प्रतिक्षण शक्राभिनंदन छे, एटले गर्भे आव्या पछी इंद्र महाराज आवी स्तवी स्तवीने जता. अर्थात् इंद्रें अभिनंद्या, प्रशंस्या ते माटे अभिनंदन नाम,मात पितायें दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, संवरराजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, साडात्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर,पचाश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, वानर लांछन.

५ पांचमा श्री सुमतिनाथने हुं वांदुं छुं. (च के०) वली शोभन छे मति जेमनी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी तेमनी जननीनी सुनिश्चित भली मति थइ छे, ते आवी रीतें के, एक वणिकनी बे स्त्रीयो हतीउं,तेमां न्हानीने

पुत्र हतो अने महोटी वंध्या हती, अने ते ढोकरानुं प्रतिपालन बन्ने मा ताउ करती हती, एम करतां ते वणिकें अकस्मात् काल कस्यो, तेवारें महोटी स्त्री धननी लालचें कहेवा लागी जे पुत्र महारो ढे, अने जेनो पुत्र, तेनुं धन थाय. एवो चाल ढे, माटें धन पण महारुं ढे, तेमज न्हानीनो तो दी करो हतोज तेथी तेणें कह्युं के पुत्र महारो ढे अने धन पण महारुं ढे. ए रीतें बन्ने शोक्योनी वढवाड थइ. ते वढती वढती दरबारमां गइ, त्यां राजाथी पण चूकादो न थयो, तेवारें गर्जना माहात्म्यथकी राणीने चूकादो करवानी जली बुद्धि उत्पन्न थइ. तेथी युक्ति करीने राणीयें कह्युं जे, बन्ने शोक्यो मलीने धन अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो, तथा ढोकराना पण बे जाग करी अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो, ते सांजली न्हानी स्त्री जे सगी माता हती, ते बोली के महारे द्रव्य जोइतुं नथी अने ढोकराना कांइ बे जाग थाय नहीं, महारे पुत्रनो तथा धननो खप नथी, एनेज सोंपो, एनो ढे ते महारोज ढे, एवुं सांजली राणी बोली के ए पुत्र न्हानी स्त्रीनो ढे, केम के पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यां सुधी पण महोटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीनो पुत्र ढे तेथी तेणें मारवानी मनाइ करी, माटे एने पुत्र अने धन बेहु स्वाधीन करो अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. एवी न्याय करवानी बुद्धि उपनी माटें सुमतिनाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला राणी माता, त्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, चालीश लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण देह, क्रौंच लांढन.

६ ढ्ठा श्रीपद्मप्रजने हुं वांदुं ढुं. पद्मप्रज एटले निःकंपताने अंगीकार करीने पद्मना समूह सरखी ढे, प्रजा एटले कांति जेमनी तेथी पद्मप्रज कहियें, तथा गर्जें आव्या पढी एमनी माताने पद्म एटले कमलनी शय्यायें शयन करवानो दहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कस्यो, तेना महिमाथी पद्मप्रज नाम दीधुं. तथा पद्म सरखुं रक्तवर्णें जगवाननुं शरीर हतुं, माटें पद्मप्रज कहियें. एमनी कोशंबी नगरी, धरराजा पिता, सुसीमा राणी माता, अढीशें धनुष्य शरीर, त्रीश लाख पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, पद्म लांढन.

७ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथने हुं वांदुं ढुं. सुपार्श्व एटले रूडां ढे पार्श्व जेमने तथा जगवान् गर्जगत थये ढते तेमनी जननी पण सुपार्श्वा थइ. एटले राणीनां बेहु पासां रोगें करी कोढीयां हतां, ते सुवर्णवर्णें घणां

सुकुमार थयां, माटें सुपार्श्वनाम दीधुं, एमनी वाराणसी नगरी, सुप्रतिष्ठ राजा पिता, पृथिवीराणी माता, बशें धनुष्य प्रमाण शरीर,वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, स्वस्तिक लांछन.

८ आठमा श्रीचंद्रप्रजने हुं वांदुं बुं. वली चंद्रना सरखी जेनी प्रजा छे चंद्रसमान वर्ण छे, तथा परमेश्वर गर्जगत थये छते एमनी माताने चंद्रपान करवानो दहोलो उपन्यो,ते प्रधानें बुद्धियें करी पूर्ण कस्यो,एवो प्रजाव जाणी चंद्रप्रज एवुं नाम दीधुं. एमनी चंद्रपुरी नगरी, महसेन राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता, एकशो पचास धनुष्यप्रमाण शरीर, दश लाख पूर्व आयु, श्वेतवर्ण देह, चंद्र लांछन.

९ नवमा श्रीसुविधिनाथने हुं वांदुं बुं. एटले शोजन छे विधि जेनो अर्थात् सर्वस्थलें छे कौशल्य जेमनुं, ते सुविधि कहियें,तथा जगवान् गर्ज गत छतेज तेमनां माता, पिता, जला विधियें करी धर्ममां प्रवर्त्त्यां. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं. वली मचकुंदना फूलनी कली सरखा उज्ज्वल प्रजुना दांत हता,माटे बीजुं पुष्पदंत एवुं नाम दीधुं. एमनी काकंदी नगरी, सुग्रीवराजा पिता,रामा राणी माता, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर. बे लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, मगरमत्स्य लांछन.

१० दशमा श्रीशीतलनाथने हुं वांदुं बुं,समस्त जीवोना संतापने हरण करे छे,माटे शीतलनाथ तथा जगवानना पिताने पित्तदाहरोग हतो,ते जगवान् गर्जे आव्या पछी राजाना शरीर उपर राणीयें हाथ फेरव्यो, तेथी रोग उपशांत थयो,शरीरें शीतलता थइ, ते माटें शीतलनाथ नाम दीधुं. एमनुं जद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदा राणी माता, नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु,सुवर्णवर्ण देह, श्रीवत्सलांछन.

११ अगियारमा श्री श्रेयांसजिनने हुं वांदुं बुं.सर्वजगतने श्रेय एटले हितना करनार माटें तथा सकलजवनने अत्यंत प्रशंसा करवापणुं छे. जेमनुं ते माटें श्रेयांस कहियें, ते पृषोदरादिकनी पेठें सिद्ध थाय छे. तथा राजाना घरमां परंपरागत देव अधिष्ठित शय्यानी पूजा थती हती, ते शय्यायें जे बेसे, अथवा सुवे,तेने उपद्रव उपजे, ते जगवंत गर्जे आव्या पछी माताने ते शय्या उपर सूवानो दहोलो उपन्यो तेवारें विचार्युं जे देव गुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय,परंतु शय्यानी पूजा तो क्यांहिं सांजली नथी,

एम चिंतवी शय्यानी रक्षा करनारें मनाइ कस्या छतां पण प्रभुनी माता, ते शय्या उपर सूतां, तेवारें गर्जना प्रजावथी अधिष्ठित देव शय्या मूकी जतो रह्यो. पछी राजा प्रमुखें ते शय्या वपराशमां लीधी, ए रीतें माताने श्रेय थयुं, माटें श्रेयांस नाम दीधुं. एमनुं सिंहपुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णा राणी माता, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, षडंगी लांछन.

१२ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीने हुं वांडुं बुं. वसु जे देवताविशेष ते मने पूजवा योग्य माटें वासुपूज्य कहियें, अथवा जगवंत गर्भे आव्या पछी वसु जे हिरण्य तेणें करी इंद्र महाराजें आवी राजकुलने पूजता हता माटें वासुपूज्य, अथवा वसुपूज्य राजाना पुत्र माटें वासुपूज्य नाम दीधुं छे, एमनी चंपा नगरी, वसुपूज्य राजा पिता, जया राणी माता, सीत्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोंतेर लाख वर्षायु, रक्तवर्ण देह, महिष लांछन.

१३ तेरमा श्रीविमलनाथने हुं वांडुं बुं. जेने निर्मलज्ञानादिक छे, तेमाटें विमल कहियें अथवा कर्ममलरहित माटें विमल कहियें, तथा प्रजु गर्भे आव्याथी तेमना नगरमां कोइ स्त्री भर्त्तार, देहरे आवी उतस्यां, तेमांथी स्त्री पाणी पीवाने अन्यस्थानकें गइ एटलामां, एक व्यंतरी देवी त्यां रहेती हती तेणें ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं, तेथी तेने कामक्रीडा करवानी अभिलाषा थइ, त्यारें तेनी स्त्रीना जेवुं पोतानुं रूप विकूर्वी, ते व्यंतरी तेनी पासें आवी बेठी, एटलामां पोतानी खरी स्त्री पण आवी, तेवारें बन्ने स्त्रीने समान देखीने पुरुषें कह्युं जे एमां म्हारी स्त्री कोण छे? तेवारें पहेलीयें कह्युं के हुं तहारी स्त्री बुं, अने बीजीयें कह्युं के हुं तहारी स्त्री बुं, एम वढतां वढतां सर्व राजा पासें आव्यां, तेवारें राजा तथा प्रधान पण बेहु स्त्रीयोने सरखा रूपवाली देखी निवेडो करी शक्या नहीं, परंतु राणीयें पहेला पुरुषने एक बाजू उज्जो राख्यो अने बेहु स्त्रीयोने तेनाथी केटलेक दूर उजी राखीने बोली के जे स्त्री पोताना सत्यवचनना प्रजावथी भर्त्तारनें स्पर्श करे, तेनो ए जरतार जाणवो, ते सांजली व्यंतरीयें देव शक्तिना प्रजावें पोतानो हाथ लांबो करी भर्त्तारने स्पर्श कस्यो, तेवोज राणीयें तेनो हाथ पकडीने कह्युं, के तुं तो व्यंतरी छो, माटें तहारे ठेकाणें जती रहे. एवा जूदा जूदा चार न्याय करवाथी राणी विमलमतीवाली

कहेवाणी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी मातानुं शरीर पण निर्मल थयुं, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, एमनुं कांपिलपुर नगर, कृत वर्माराजा पिता, श्यामा राणी माता, शाठ धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सुकर लांछन.

१४ चौदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुने हुं वांदुं बुं. कर्मना अनंत अंश जेणें जींत्या बे अथवा जेने ज्ञान, दर्शन पण अनंतुं बे, माटें अनंतनाम सार्थक बे. तथा गाममां आगल ताप आवता हता ते प्रभु गर्भे आव्या पबी, एमनी मातायें अनंत गांठना दोरा करी बांध्या, तेथी ताप निवृत्त थयो तथा स्वप्नमध्यें जेनो अंत नहिं एवी महोटी रत्ननी माला दीठी, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी अनंतनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, सिंहसेन राजा पिता, सुयशा राणी माता, पच्चास धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सिंचाणानुं लांछन.

१५ पंदरमा श्रीधर्मनाथ जिनने हुं वांदुं बुं, डुर्गतियें पडता प्राणीने धरी राखे, माटें धर्मनाथ, तथा प्रभु गर्भमां आव्याथी प्रभुनां मातापिता रूडी रीतें दानादि धर्मपरायण थयां. एवो गर्भनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं. एमनुं रत्नपुर नगर, भानुराजा पिता, सुव्रता राणी माता, पिस्तालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, वज्रनुं लांछन.

१६ शोलमा श्रीशांतिनाथने हुं वांदुं बुं. स्वयमेव शांतिना करनारा अथवा शांतिना योगथी अथवा शांतिरूप होवथी शांतिनाथ तथा ते देशमां मरकीनो उपद्रव घणो हतो, ते प्रभु गर्भे आव्या पबी राणीयें अमृतना बांटा नाख्या, तेथी मरकीनी शांति थइ. तेना प्रभावथी शांतिनाथ नाम दीधुं. एमनुं गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिरा राणी माता, चालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, मृग लांछन.

१७ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथने हुं वांदुं बुं. कु कहेतां पृथिवी तेने विषे स्थित माटे कुंथु तथा भगवान् गर्भमां आवे बते, तेमनी मातायें रत्नमय कुंथु उनो राशि पृथ्वीमां दीठो अथवा परमेश्वर जन्म्या पबी कुंथुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ती, माटें कुंथुनाथ नाम दीधुं. एमनुं हस्तिनापुर नगर, शूरराजा पिता, श्रीराणी माता, पांत्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पंचाणुं हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, बाग लाछन.

१० अढारमा श्रीअरनाथने हुं वांडुं बुं. अरिहंत जेवा सर्वोत्तम पुरुष जे कुलने विषे उपजे,अने जेनाथी कुलनी वृद्धि थाय, ते पुरुषने वृद्ध पुरुषो अर एवुं नाम कहे छे.तथा जगवान् गर्जमां आवे थके तेमनी मातायें स्वप्नामां सर्व रत्नमय अर एटले आरो तथा थुज दीठो माटें अरनाथ नाम दीधुं, एमनुं गज पुर नगर,सुदर्शनराजा पिता, देवी राणी माता, त्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नंदावर्त्त लांछन.

१ए उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथने हुं वांडुं बुं. परिसहरूप मल्ल तेनो जय करवाथकी मल्लि कहियें. तथा जगवान् गर्जे आव्या पछी माताने एक ऋतुमां सर्व ऋतुनां सुरजि फूलनी शय्यायें सुवानो दहोलो उपन्यो, ते देवातायें पूर्ण कर्यो, माटें मल्लिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, कुंजराजा पिता, प्रजावती राणी माता, पच्चीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चावन्न हजार वर्षायु, नीलवर्ण देह, कुंज लांछन.

२० वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामीने हुं वांडुं बुं. जे जगतनी त्रिकाला वस्थाने जाणे, ते मुनि कहियें. वली जेने शोजन व्रत छे तेने सुव्रत कहियें. तथा जगवान् गर्जे आव्या पछी एमनी जननीयें मुनि सरखा शोजन श्रावकनां व्रत पाल्यां, एवो महिमा जाणी मुनिसुव्रत नाम दीधुं, एमनुं राजगृह नगर, सुमित्र राजा पिता, पद्मराणी माता, वीश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश हजार वर्षायु, कृष्णवर्ण देह, काछवानुं लांछन.

२१ एकवीशमा श्रीनमिजिनेश्वरने हुं वांडुं बुं.परिसह उपसर्गादिकने जेणें नमाव्या छे माटें नमि कहियें, तथा प्रजु गर्जे आव्या पछी सीमाडिया राजा जगवंतना पिताना शत्रु हता, ते चढी आव्या,गामने विंटी लीधुं, राजा आकुल व्याकुल थयो, निमित्तियाने पूछ्युं, तेवारें निमित्तियायें कह्युं के राणी सगर्जा छे, तेने गढने कोशीशें चढावी वैरीयोने दर्शन करावो, राजायें तेमज राणीने किल्ला उपर चढावीने शत्रुउने वांकी नजरें जोवराव्या, तेवारें वैरीयोथी राणीनुं तेज खमायुं नही, तेथी सर्व वैरी मान मूकी जगवंतनी माताने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या जे अमोने सौम्यदृष्टियें करी जूउ, राणीयें सौम्यदृष्टियें जोइ माथे हाथ राख्यो. पछी सर्व राजाउ राणीने पगे लागी आज्ञा मागी पोत पोताने नगरें गया, ए रीतें सर्वराजा नम्या, एवो गर्जनो प्रजाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी

विजयराजा पिता, विप्रा राणी माता, पन्नर धनुष्य प्रमाण शरीर, दश हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नीलोत्पलनुं लांछन.

२२ बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि प्रभुने हुं वांदुं छुं. रिष्ट एटले पाप तेना नाशने विषे चक्रधारी सरखा हता माटें अरिष्टनेमि, तथा प्रभु गर्भें आव्या पछी प्रभुनी मातायें स्वप्नमां रिष्टरत्ननी रेल दीठी. वली आकाशने विषे अरिष्ट रत्नमय नेमि एटले चक्रधारा उछलती स्वप्नामां दीठी, माटें अरिष्टनेमि नाम दीधुं, बीजुं नाम श्रीनेमिनाथ. एमनुं सौरीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवी राणी माता, दश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक हजार वर्षायु, श्यामवर्ण देह, शंखनुं लांछन.

२३ त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथने हुं वांदुं छुं. जे समस्त भावोने स्पृशति एटले जाणे छे माटें पार्श्वनाथ तथा एमनो वैयावृत्त्यकर जे पार्श्वनामा यक्ष तेना नाथ माटें पार्श्वनाथ अथवा प्रभु गर्भें आव्या पछी अंधारी रात्रें पोतानीपासें सर्प जतो (पासइ के०) दीठो, ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें उंचो कीधो, तेथी राजा जागी उठ्यो ने बोल्यो के शा माटे हाथ उंचो कीधो ? राणीयें कह्युं के में सर्प जतो दीठो माटे तमारो हाथ उंचो कीधो. राजा बोल्यो, तमें जूठुं बोलो छो. पछी सेवकने तेडी दीपक मंगावीने जोयुं, तो सर्प दीठो, तेवारें विस्मय पामी राजायें विचार्युं जे में न दीठुं, अने राणीयें दीठुं, ए निश्चें गर्भनो प्रभाव छे, एम जाणी श्रीपार्श्वनाथ नाम दीधुं. एमनी वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा पिता, वामा राणी माता, नव हाथनुं शरीर, एकशो वर्षायु, नीलवर्ण देह, सर्पनुं लांछन.

२४ चोवीशमा श्रीवर्द्धमानस्वामीने हुं वांदुं छुं. जन्मथकी मांडीने ज्ञानादिकें वृद्धि पाम्या तेथी वर्द्धमान तथा प्रभु गर्भें आव्या पछी मातापिता धन धान्यादिकना भंडार तथा देश, नगर, द्विपद, चतुष्पद, इत्यादि सर्व प्रकारनी ऋद्धियें करी वृद्धि पाम्यां. तथा सर्व राजाउ पण आज्ञामां वर्त्तवा लाग्या. एवो गर्भनो प्रभाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं तथा भगवंतें जन्म तांज मेरु पर्वत डाबा पगने अंगुठे कंपाव्यो, वली देवता साथें आमल क्रीडा करतां भगवंत आगल देवता हार्यो, नाशीने इंद्र पासें गयो, भगवंत जीत्या. एम भगवंतनुं अनंत बल जाणीने श्रीमहावीर एवुं बीजुं नाम इंद्र

महाराजें दीधुं.एमनुं क्षत्रियकुंड नगर,सिद्धार्थ राजा पिता, त्रिशला राणी माता, सात हाथनुं शरीर,बहोंतेर वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सिंह लांछन.

ए रीतें कीर्तन करीने चित्तनी शुद्धिने माटें प्रणिधान कहे छे.

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा,तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥

अर्थः-(एवं के०) ए प्रकारें (मए के०) महारे जीवें जे (अभिथुआ के०) अभिस्तुता एटले नामपूर्वक स्तव्या ते चोवीशे परमेश्वर केहवा छे? तो के (विहुय के०) विधुत एटले टाल्या छे (रयमला के०) कर्मरूप रज अने कर्मरूप मल जेणें एटले जे कर्म इरियावहि क्रियायें करी बंधाय अथवा नवां बंधातां जे ढीलां कर्म, तेने रज कहियें अने जे पूर्व बंध चिरकालनुं संचित निकाचित गाढ कर्म अथवा सांपरायिक क्रियायें करी बंधाय, तेने मल कहियें, ए बेहु प्रकारना कर्मने जेणें टाल्यां छे. वली केहवा छे ? तो के (पहीण के०) प्रक्षीण एटले अतिशयें करीने क्षय कस्या छे (जरमरणा के० (जरा अने मरण जेणें एटले जे समय समय आयुष्य घटे, तेने जरा कहियें अने सर्वथा आयु घटीने प्राणनो वियोग थाय, तेने मरण कहियें. एवा जरा अने मरण, ए बेहु जेणें क्षय कस्यां छे एवा जे (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशतिरपि एटले पूर्वोक्त ए चोवीशे जिनवर सांप्रत कालें थया अने अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा. (जिणवरा के०) श्रुतधरादिक जिनोथकी प्रधान श्रेष्ठ एवा जिनवर (तित्थयरा के०) तीर्थंकरा एटले तीर्थंकरो ते (मे के०)महारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसीदंतु एटले प्रसन्न थाउ, अर्थात् प्रसाद (कृपा) करवाने तत्पर थाउ. यद्यपि श्रीवीतराग छे, तेथी स्तुति करनार उपर प्रसन्न थता नथी,तेमज निंदा करनार उपर अप्रसन्न पण थता नथी तथापि स्तुति करनारने स्तुतिनुं फल मले छे,अने निंदा करनारने निंदानुं फल मले छे.जेम चिंतामणि,मंत्रादिकोयें करी शुभनी वांछा करनारने शुभफल मले छे अने अशुभनी वांछा करनारने अशुभ फल मले छे, यद्यपि जे न थीज प्रसन्न थता ते शी रीतें प्रसन्न थशे ? माटें वृथा प्रलापें करी भक्तिनो अतिशय थतो नथी; तथापि एम कहे छते पण दोष नथी,कारण के क्षीण

क्लेश छे ते जेम प्रसन्न थता नथी तेम तेमनी स्तुति पण वृथा थती नथी कारण के तेने सर्व नावनी विशुद्धि छे ॥ ५ ॥ ए गाथामां लघु चालीश, अने गुरु एक, मली एकतालीश अक्षरो छे.

किक्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्ग बोहिलानं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

अर्थः—(किक्तिय के०) कीर्त्तित छे, एटले नामविशेषें करी जेने इंद्रादिक कीर्त्ते छे, स्तवे छे. (वंदिय के०) जे वंदित छे एटले इंद्रादिक जेने विशुद्ध एवा मन, वचन अने कायायें करी वांदे छे. पंचांग प्रणाम करे छे. (महिया के०) जे महित छे एटले इंद्रादिक जेनें प्रधान पुष्पादिकें करी अर्चे छे, पूजे छे, एवा (जे के०) जे तीर्थंकर (ए के०) ए सुतीर्थ ज्ञानदृष्टिवंत ते प्रत्यक्ष (लोगस्सउत्तमा के०) लोकने विषे उत्तम प्रधान एवा (सिद्धा के०) श्री सिद्ध नगवंत थया एटले निष्ठितार्थ थया. एवा हे उत्तम सिद्ध नगवंत ! तमें मुऊने (आरुग्ग के०) द्रव्य आरोग्यता तथा नाव आरोग्यता, त्यां द्रव्य आरोग्यता ते रोगरहितपणुं अने नाव आरोग्यता ते सिद्धपणुं जाणवुं. ते सिद्धपणुं (बोहिलानं के०) श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लान थाय, तेवारें पमाय छे माटें श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लान थवाने अर्थें (उत्तमं के०) उत्कृष्ट अत्यंत उंची एवी (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि ते ज्ञानादिकरत्नत्रय तेने विषे एकता परमस्थिरता ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो एटले समाधि अनेक प्रकारें तारतम्यतायें अधिक न्यून छे माटें अत्युत्कृष्ट समाधि द्यो ॥ ६ ॥ आ गाथामध्यें लघु त्रीश, अने गुरु ब, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे.

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सा
गरवर गंनीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थः—(चंदेसु के०) चंद्रसमुदायथकी (निम्मलयरा के०) निर्मलतर एटले अत्यंत निर्मल (आइच्चेसु के०) आदित्य एटले सूर्य समुदाय ते थकी पण (अहियं के०) अधिक (पयासयरा के०) प्रकाशना करनार (सागरवर के०) प्रधान छेलो स्वयंनूरमण नामा समुद्र तेनी परें (गंनीरा के० (गुणें करी गंनीर छे. एवा जे (सिद्धा के०) अष्टकर्म रहित सिद्ध ते

(सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मुक्ति ते (मम के०) मुजने (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥ ७ ॥ आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साड त्रीश अक्षरो छे, अने ए चउविसाछने विषे प्रथमनो एक श्लोक अने पछ वाडेनी छ गाथा मली सात गाथाउ छे, पद अठावीश छे, तेमां लघु अ क्षर बशें उंगणत्रीश, तथा गुरु अक्षर सत्त्यावीश, मली सर्वाक्षर बशें ने छप्पन्न छे. तथा सव्वलोएना चार अक्षर एनी साथें मेलवीयें, तेवारें बशें ने साठ अक्षरो थाय. इति नामस्तवसूत्रार्थः ॥ ८ ॥

॥ अथ करेमि जंते, अथवा सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चरकामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवे मि, तस्स जंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहा मि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ए ॥

अर्थः–(जंते के०) हे जदंत,जयांत,जवांत,पूज्य,एटलेसुखकारककल्याण कारकपणाथकी जदंत कहियें तथा सात प्रकारना जयनो अंत करवाथकी जयांत कहीयें तथा चातुर्गतिकरूप संसारनो उछेद करवाथकी जवांत कहि यें तथा पूजवा योग्य माटें पूज्य कहियें. एवी रीतें गुरुनुं आमंत्रण करीने सर्व कार्य करवां. हवे कहे छे के,तमारा समीप वर्त्तमान काल आश्रयी (सामाइयं के०) सामायिकप्रत्यें एटले (सम के०) ज्ञानादिक गुण तेनो (आय के०) लाज छे जेने विषे अथवा (सम के०) रागद्वेषरहित एवो जे जीव, तेने सम्यग् ज्ञानादिक गुणनो छे (आय के०) लाज जेने विषे ते रूप जे व्रत, ते सामायिक व्रत कहियें अथवा समता परिणामरूप प्रशमसुख तद्रूप सामायिक प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं एटले समता परिणाम आणुं! वली अनागत काल आश्रयी तो (सावज्जं के०) सावद्यं एमां अवद्य एटले पाप, जेणें करी स एटले सहित एवा जे (जोगं के०) योग एटले मन, वचन अने कायाना व्यापार, अर्थात् पापसहित जे मन, वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चरकामि के०) हुं पच्चरकुं छुं, निषेधुं छुं. एटले

त्यागुं बुं. ते क्यां सुधि? तो के (जाव के०) ज्यां सुधी (नियमं के०) सामायिक व्रतना नियम प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं एटले सेवुं, अर्थात् ज्यां सुधी सामायिकनो काल,जघन्यतो एक मुहूर्त्त प्रमाण बे, तेने विषे हुं पर्युपासुं एटले रहुं, त्यां सुधि (डुविहं के०) कर वा कराववा रूप ए बे प्रकारनो जे सावद्य व्यापार, ते प्रत्यें (तिविहेणं के०) त्रिविधें करी एटले त्रण प्रकारें करी. ते त्रण प्रकारनां नाम कहे बे. एक (मणेणं के०) मनें करी, बीजो (वायाए के०) वचनें करी, त्रीजो (काएणं के०) शरीरें करीने, (नकरेमि के०) नहीं हुं पोतें करुं, (नकारवेमि के०)हुं बीजा पासें न करावुं, (तस्स के०) ते अतीतकाल संबंधी जे सावद्य व्यापार रूप पाप, ते प्रत्यें (नंते के०) हे नगवंत ! आपनी समीप (पडिक्क मामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं. एटले ते पापथकी हुं निवर्त्तुं बुं मिछामि डुक्कड देउं बुं. (निंदामि के०) आत्मा साखें हुं निंडुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, एटले विशेषें निंडुं बुं (अप्पाणं के०) पूर्वकालसंबंधी डुष्ट क्रियाकारक एवो जे महारो आत्मा, तेने ते डुष्ट क्रियाथकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं बुं, एटले विशेषें करीने तजुं बुं, अहींयां साधु जावनियमंने स्थानकें जावजीवं बोले बे.अने डुविहंने स्था नकें तिविहं बोले बे. अने "सवं करतंपि अन्नं न समणुजाणामि" एवा बे पाठ अधिक बोले बे,अने श्रावकने तो एक मुहूर्त्तनुं सामायिक बे,तेमां पण पुत्र,स्त्री,वाणोतर प्रमुख जे सावद्यव्यापार करे बे,ते व्यापारने पोतें अण क रतो बतो पण तेनुं अनुमोदन बे.ए मन,वचन अने कायायें करी करुं नहीं, करावुं नहीं, ए ब बोल आश्रयी श्रावकने (१३०४१२०७१२००) एटला नांगा उपजे,ते ग्रंथांतरथकी जाणवा ॥ इति सामायिकसूत्रार्थः ॥ १ ॥ इति॥ ए॥

॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

सामाइअ वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ॥
बिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥
सामाइअंमि उ कए, समणोइअ सावउ हवइ ज
म्हा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥

सामायिकविधिं लीधूं, विधिं पारिउं, विधि करतां
जे कोइ अविधि हुउ होय, ते सवि हुं मन वचन
कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः—(जाव के०) ज्यां सुधी (मणे के०) मन, एटले जीव ते (नियमसंजुत्तो के०) सावद्य व्यापारना नियम एटले पच्चरकाणने विषे संयुक्त (होइ के०) होय, एटले सम्यक् प्रकारें जोडेलो होय. वली (सामाइअवयजुत्तो के०) सामाइक व्रतने विषे संयुक्त होय, त्यां सुधी ए जीव, (असुहंकम्मं के०) अशुज कर्मने (छिन्नइ के०) छेदे, (जत्ति आवारा के०) जेटली वार (सामाइअ के०) सामायिक करे, तेटली वार अशुज कर्मप्रत्यें छेदे. अथवा ज्यां सुधी सावद्य व्यापारने विषे मनमांहे नियम संयुक्त होय, तेटली वार सामायिक व्रतनो धणी कहेवाय ते जेटली वार सामायिक व्रत लीये, तेटली वार अशुज कर्मने छेदे ॥ १ ॥ (उ के०) तु एटले वली (जम्हा के०) जेमाटें (सामाइअं मि कए के०) सामायिक करती वखत (सावउ के०) श्रावक जे छे, ते (समणोइअ के०) श्रमण एटले साधु समान (हवइ के०) होय, (एएणकारणेणं के०) ए कारणें (बहुसो के०) घणी वार,) सामाइयं के०) सामायिकप्रत्यें जे तत्त्वना जाण होय, ते (कुज्जा के०) करे ॥ २ ॥

अहींयां केटलाएक एम कहे छे के सामायिक, दिन प्रत्यें उजय कालज करियें, पण अधिक न करियें, तेने निषेधे छे. जे जणी "सामाइयंमिउकए" ए गाथा श्री जद्रबाहुस्वामी चौद पूर्वधरप्रणीत आवश्यकनिर्युक्तिमांहेली छे, एमां सामायिक करतां श्रावक, मनें, वचनें अने कायायें करी करे नहीं, करावे नही, ते जणी साधु समान तो होय, पण साधु निटोल नहीं कहेवाय. अने श्रावकने अनुमति मोकली छे, तथा श्रावकें देशथकी पोसह लीधो होय अने सामायिक उते पण आधाकर्मी आहार गृहस्थने मोकलो मूक्यो छे, जे जणी श्रीनिशीथचूर्णीमध्यें एम कह्युं छे, जे "जंच उद्दिठ कडं, तं कड सामाइउ विजुं जइय" अने साधु तो आधाकर्मी आहार कोइ पण रीतें लीये नही, ते जणी साधु निटोल न कहेवाय, तो पण सामायिकने विषे रहेला श्रावकने साधु सरखो कहियें. ए कारणमाटें "बहुसो सामाइयं

कुज्जा" एटले घणां सामायिक लेवां. एम कह्युं, जेवारें वखत मले, तेवारें सामायिक लेवो, उक्तं च "जाहे खणिउ ताहे, सामाइअं करेइ" तथा श्री आवश्यकचूर्णी, श्रावकने प्रज्ञप्तिवृत्त्यादिक घणा ग्रंथोमध्यें वारं वार सामायिक लेवो, एम कह्युं छे. "सामाइअ पोसह सं, ठिअस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो,सेसो संसारफलहेऊ ॥१॥" अर्थः–सामायिक तथा पौंषध लीधे थके जीवनो जे काल जाय, ते सफल जाणवो. अने शेष काल जे छे, ते संसार उपार्जन करवानुं कारण जाणवो ॥ १ ॥ १० ॥

॥ अथ सव्वलोए ॥

॥ सव्वलोए,अरिहंत० ॥ करेमि० ॥ वंदण० ॥१॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः–त्रण भवननां चैत्य वांदवा निमित्तें काउस्सग्ग करवा वांछतो सव्वलोए कहे. त्यां सर्वलोक शब्दें अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने तिर्यग् लोक, ए त्रण लोकमांहे जे (अरिहंतचेइआणं के०) श्रीअरिहंतनां चैत्य, प्रतिमारूप छे, एटले आठ क्रोड, सत्तावन लाख, बशें ने ब्याशी शाश्वता प्रासाद छे, तेमां पंदरशें क्रोड, बहेंतालीश क्रोड, अठावन लाख, छत्रीश हजार अने एंशी, एटलां जिनबिंब छे, तेने (वंदणवत्तिआए के०) वांदवादिक निमित्तें (करेमिकाउस्सग्गं के०)हुं काउस्सग्ग करुं छुं ॥ ११ ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥
इच्छं ॥ जग चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्ख
ण ॥ जगबंधव जगसच्छवाह,जगभाव विअक्खण ॥
अठावय संठविय, रूव कम्मठ विणासण ॥ च
उवीसंपि जिणवरा, जयंतु अप्पडिहयसासण ॥१॥

अर्थः–हवे श्रीवीतराग देव केहवा छे? तो के (जग के०) भव्यजीव, तेमना मनोवांछित अर्थ पूरवा माटे (चिंतामणि के०) चिंतामणिरत्न समान छे. एटले चिंतामणि जेम मनोवांछा पूर्ण करे छे, तेम प्रभु पण आश्रित भव्य प्राणियोनां सर्व वांछित पूर्ण करे छे,वली (जग के०)निकट भव्य जीवोना जे (नाह के०) नाथ छे, केम के? जे जीव, धर्म पाम्या नथी

तेने धर्मने विषे जोडे ठे अने जे जीव, धर्म पाम्या ठे,तेना धर्मनी रक्षा करे ठे, माटें नाथ ठे. वली (जग के०) समस्तलोकमांहे हितोपदेश देवाथकी (गुरु के०) महोटा ठे, वली (जग के०) षड्जीवनिकायना जे (रस्कण के०) रक्षक ठे, प्रतिपालक ठे, वली (जग के०) समान बोधवंतना तथा सकल जंतुना जे (बंधव के०) महोटा विवेकवंत जाइनी पेरें जाई ठे. वली (जग के०) मोक्षाजिलाषी साधु प्रमुखना, जे (सब वाह के०) सार्थवाह ठे, महोटा व्यापारी ठे,शा थकी ? के जे संसाररूप कांतारथकी पार पमाडीने अनंत लाजनुं स्थानक, एवुं जे मोक्षरूप नगर ते प्रत्यें पहोंचाडे ठे. वली (जग के०) षड्द्रव्य तथा जीवादिक नव पदार्थना (जाव के०) रहस्य तेने दर्शाववाने विषे जे (विअरकण के०) विचक्षण ठे,डाह्या ठे, अनंत ज्ञानपणामाटें विचक्षण ठे. वली (अठावय के०) अष्टापद पर्वतनी उपर जरतेश्वरें (संठविय के०) संस्थापित कस्यां ठे (रूव के०) रूप एटले बिंब जेनां, वली (कम्मठविणासण के०) ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्मनो कीधो ठे विनाश जेणें, एवा ते (चउवीसंपिजिणवरा के०) चोवीश जिनवर ते अपि एटले निश्चें (जयंतु के०) जयवंता वर्त्तो. सर्व उपरें वर्त्तो. (अप्पडिहयसासण के०) अप्रतिहतशासन एटले कोइथी हणाय,रोकाय नही एवुं जेनुं शासन ठे अर्थात् शिक्षावचन रूप उपदेश ठे॥१॥

कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडीहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि ॥ बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस डुअ ॥ थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥

अर्थः—(कम्मजूमिहिं के०) असि, मषी, अने कृषि रूप कर्म जिहां वर्त्ते ठे, एटले असि, मषी अने कृषि, ए त्रण.तेमां तरवार प्रमुख शस्त्रनी ज्यां प्रवृत्ति होय, तेने असि कहियें अने लिखित प्रमुख ज्ञान ज्यां होय, तेने मषी कहियें तथा क्षेत्र,वाडी प्रमुखें ज्यां आजीविका होय तेने कृषि कहियें. ए त्रणें करी जिहां आजीविका चाले ठे,तेने कर्मजूमिका कहियें.

(कम्मभूमिहिं के०) ते कर्मभूमिनां भरतादिक पन्नर क्षेत्रनेविषे (उक्को सय के०) उत्कृष्टपदें (जिणवराण के०) जिनवरो एटले जे तीर्थंकरो छे, (पढमसंघयणि के०) प्रथम संघयण जे वज्रऋषभनाराच तेना धणी एवा (सत्तरिसय के०) सप्ततिशत एटले एकशो ने सित्तेरनो समु दाय, (विहरंतलब्भइ के०) विचरतो लाभे. ते श्रीअजितनाथनी वारें एटला लाभे, वली (नवकोडीहिंकेवलिण के०) केवलज्ञानी भगवाननी नव कोटि होय, तथा (कोडिसहस्सनव के०) नव सहस्रकोटि (साहु के०) साधु (गम्मइ के०) जिनागमथकी जाणियें अने (संपइ के०) संप्रति एटले वर्त्तमानकालें (जिणवरवीस के०) श्रीसीमंधरस्वामी प्रमुख वीश जिनवर विचरता पामियें, तथा (मुणिविहुंकोडिहिं के०) बे क्रोड मुनि, (वरनाण के०) प्रधान केवलज्ञानना धरनार, एवा केवलज्ञानी वली (कोडिसहस्सदुअ के०) द्विसहस्र कोटि (समणह के०) श्रमण एट ले साधु विचरे छे, ते सर्वने (थुणिजिअ के०) थुणीयें, स्तवियें, (निच्च वि हाणि के०) नित्य प्रभातें सूर्योदयें निरंतर स्तवीयें ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी ॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंत
पहु नेमि जिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंडण ॥ भरु
अच्छहिं मुणिसुव्वय॥ मुहरि पास दुह दुरिअ खंडण॥
अवरविदेहिं तित्थयरा॥चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि॥
तीआणागय संपइअ, वंदूं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

अर्थः– हवे श्री (सत्तुंजि के०) शत्रुंजय तीर्थ उपरें (सामीरिसह के०) श्री ऋषभस्वामी (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो. वली (उज्जिंत के०) श्रीगिर नारजी उपर (पहु के०) प्रभु एटले सामर्थ्यवाला एवा(सामी नेमिजिण के०) स्वामी श्री नेमिजिनेश्वर ते (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, वली (वी र के०) महावीर स्वामी ते (सच्चउरीमंडण के०)सत्यपुरी एटले साचोर नगर तेना मंडण एटले आभूषणरूप ते जयवंता वर्त्तो. वली (भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय के०) श्रीभरूच नगरने विषे श्री मुनिसुव्रत नाथ अने (मुहरि के०) मुहरिगामना नायक, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथ, ए जिन पंचक

केहवुं ठे ? तो के (डुहडुरियखंरूण के०) डुःख अने डुरित जे पाप तेनुं खंरून एटले विनाश करनारुं ठे, (अवर के०) अपर एटले बीजा (विदेहिं के०) पांच महाविदेहने विषे जे (तिन्नयरा के०) तीर्थंकर ठे, (चिहुं दिसिविदिसि के०) पूर्वादि चार दिशि अने अग्निकोणादि चार विदिशि, ए आठने विषे (जिंकेवि के०) जे कोइ पण (तीआणागयसंपइअ के०) अतीतकाल,अनागतकाल अने संप्रति जे वर्त्तमानकाल, ए त्रण कालसंबंधी (जिणसवेवि के०) सर्वे जिनेश्वर ते प्रत्यें पण (वंडु के०) हुं वांदूं बुं ॥ ३ ॥

हवे निरंतर स्मरणने अर्थें शाश्वता जिनप्रासादनी संख्या कहे ठे.

॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का ठप्पन्न अठ को
डीउ ॥ बत्तीस बासिआइं ॥ पाठांतरं ॥ बत्ती
सय बासिआइं, तिअ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः—(अठकोडीउ के०) आठ क्रोड, (लस्काठप्पन्न के०) ठप्पन लाख, (सत्ताणवइसहस्सा के०) सत्ताणुं सहस्र,(बत्तीसबासिआइं के०) बत्रीशशें ने ब्याशी,एटला (तिअलोए के०) त्रण लोकने विषे (चेइए के०) चैत्य एटले जिनप्रासाद ठे, ते सर्वप्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं बुं ॥ ४ ॥

हवे पूर्वोक्त शाश्वता प्रासादोने विषे एकंदर प्रतिमानी संख्या कहे ठे.

॥ पनरस कोडि सयाइं, कोडी बायाल लस्क
अडवन्ना ॥ बत्तीस सहस असिई ॥ पाठांतरं ॥
असिआइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

अर्थः—(पनरसकोडिसयाइं के०) पन्नरशें कोडी एटले पंदर अब्ज, वली (कोडीबायाल के०) बहेंतालीश क्रोड, (लस्कअडवन्ना के०) अठ्ठावन लाख, (बत्तीससहसअसिई के०) बत्रीश हजार अने उपर एंशी, (१५४२५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिनप्रासादने विषे (सासयबिंबाइं के०) शाश्वतां जिनबिंब ठे, ते सर्व प्रत्यें (पणमामि के०) हुं प्रणमुं बुं ॥५॥

॥ अथ जं किंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिबं, सग्गे पायालि माणुसे लोए॥
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सवाइं वंदामि॥६॥इति ॥१२॥

अर्थः—(सग्गे के०) स्वर्गे एटले ऊर्ध्वलोकने विषे, (पायालि के०) पाताले एटले अधोलोकने विषे, (माणुसे लोए के०) मानुष्ये लोके एटले तीर्छालोकने विषे, (जाइंजिणबिंबाइं के०) जे जिन तीर्थंकरनां बिंब छे, (ताइं सवाइं के०) ते सर्व जिनबिंब प्रत्यें किं बहुना घणुं शुं कहियें? (जंकिंचि के०) जे कांइ त्रण लोकने विषे परमेश्वरनां (नामतिछं के०) नामरूप तीर्थो छे, ते प्रत्यें पण (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

एम चैत्यवंदन कह्या पछी, पंचांग प्रणाम करी बेशीने बेहु जानु भूमियें लगाडी हाथे एकेक अंगुली मांहोमांहे करी कोशाने आकारें बे हाथ करीने पेट उपर बे हाथनी कोणी राखीयें, तेने योगमुद्रा कहियें. ए समस्त ठकुराई प्रमुख लक्षणें करी सहित छे, एवी योगमुद्रा साचवतो "नमुत्थुणं अरिहंताणं" इत्यादिक शक्रस्तव दंमक कहे. इंद्र, जेवारें परमेश्वरने स्तवे, तेवारें ए नमत्थुणंनो पाठ कहेतो थकोज स्तवे छे, एवी स्थिति छे, तेमाटे एने शक्रस्तव कहियें छैयें. तेनो पाठ कहे छे, अहींयां केटलाएक एवुं कहे छे के नमुत्थुणं कहेतां थकां डावो जानु उंचो करियें, अने जमणो जानु भूमियें लगाडीयें, ते युक्त नथी. केम के श्रीमहानिशीथना तृतीयाध्ययनमां कह्युं छे के, " जिणपडिमाविणवस्सिय, नयणेण विरईय वक्कमंजलिणा॥ भूमिनिहि उजय जाणुणा, सक्कत्थउं पढियवो ॥१॥" इति ॥ अने श्रीकल्पसूत्र मध्यें इंद्रआश्री श्रीमाहावीरने अधिकारें " वामजाणु अचेइ दाहिणजाणु धरणितलसिकट्टइ" एवो पाठ छे, तिहां इंद्र ठाकुर छे ते भणी चतुरंग प्रणाम करे, एवुं कारण कह्युं छे, तथा श्रीज्ञाताधर्मकथांगमध्यें धर्मरुचि महात्मायें आराधनाने अवसरें बेठां थकांज नमुत्थुणं कह्युं छे. तिहां ते धर्मरुचि महात्माने नागश्रीनुं आपेलुं विषमय कडवुं तुंबडुं परठवतां घणी विराधना दीठामां आवी तेथी ते तुंबडानो तेमणें पोतेंज आहार कस्यो तेनुं विष परिणमतां थकां शरीरनी शक्ति मंद थइ. तेमाटे पर्यंकासनें बेठां थकांज नमुत्थुणंनो पाठ कह्यो छे, ए कारण जाणवुं.

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

अर्थः—(नमुत्थुणं के०) नमोस्तु एटले नमस्कार हो. अहीं नमः पदवडे

नमस्कार, अत्थु एटले अस्तु नवतु ए पदवडे हो, तथा णं कार जे छे, ते वाक्यालंकारने अर्थे छे, जेम अलंकारें करी स्त्री शोने, तेम णंकारें करी वाक्य शोने छे,ते नमस्कार कोने हो? तो के (अरिहंताणं के०) श्री अरिहंतने हो. अहीं जूदा जूदा त्रण पाठ छे, एक तो इंद्रादिक देवोनी करेली पूजाने योग्य तेने अरहंत कहियें, बीजो कर्मरूप वैरीने हण्या,माटें अरिहंत कहियें, त्रीजो फरी संसारमां अवतरवुं नथी माटे अरुहंत कहियें, तेने नमस्कार थाउं. हवे ते श्री अरिहंतजी तो नामादिकनेदें करी अनेक प्रकारें छे, माटें अहीं नावअरिहंतने नमस्कार करवाने अर्थें आगल, पद कहे छे. (नगवंताणं के०) नगवद्न्यः एटले नगवंतने हो. ए नग शब्द, ते छ प्रकारें छे. एक समस्त ठकुराइ, बीजुं रूप, त्रीजुं यश, चोथी लक्ष्मी, पांचमो धर्म, अने छठो प्रयत्न, ए छ वानां अरिहंतमां उत्कृष्ट छे. तिहां नक्ति नम्रतायें करीने देवोयें शुनानुबंधी माहाप्रातिहार्य करण लक्षण, तेने समग्र ऐश्वर्य कहियें. तथा सकल स्वस्वप्रनावविनिर्म्मित अंगुष्ठरूप अंगार निदर्शनातिशयें करी जे सिद्ध, तेने रूप कहियें, तथा राग, द्वेष,परिसह, उपसर्ग सहनरूप पराक्रमथकी उत्पन्न थयुं जे त्रैलोक्यानंदकाल प्रतिष्ठ, तेने यश कहियें, तथा घातिकर्मना उच्छेदरूप पराक्रमें करी प्राप्त थयुं जे केवल लोकोत्तरनिरतिशय सुख, तेनी संपत्तियें करी युक्त तेने उत्कृष्टलक्ष्मी कहियें, तथा सम्यग्दर्शनादि रूप अने दान, शील तपोनावनामय. तेने धर्म कहियें, तथा परम वीर्यें करी उत्पन्न थयुं जे एक रात्रिक्यादिक महाप्रतिमा नावहेतु, तेने प्रयत्न कहियें, ए छ प्रकारनुं छे नग जेमने,ते नगवान् कहियें, तेमने नमस्कार थाउं. एवा नगवंत ते विवेकी पुरुषोने स्तववा योग्य छे, माटें ए बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी. एमां लघु तेर अने गुरु एक, सर्व मली चौद अक्षरो छे ॥ १ ॥

हवे स्तववा योग्यनो सामान्य हेतु कहेवा माटें कहे छे.

॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

अर्थः—वली ते श्री अरिहंत केहेवा छे? ए प्रकारें आगल पण हवे पछीना सर्व पदोने विषे कहेवुं. (आइगराणं के०) आदिकरेन्यः एटले सर्व तीर्थंकर पोत पोताना तीर्थें द्वादशांगीनी आदिना करनार छे, तेमाटें आदिकर कहियें. यद्यपि ए द्वादशांगी, निरंतर छे तथापि तेमां अर्थनी अपेक्षायें तो नित्य

छे परंतु शब्दनी अपेक्षायें तो स्वस्वतीर्थमां श्रुतधर्मादिकनुं करवुं अविरुद्धज छे. हवे ए पण कैवल्यप्राप्त्यनंतर अपवर्गवादीउंयें ते अतीर्थंकरज कहेवाय छे? तो त्यां कहे छे के, (तित्थयराणं के०) तीर्थंकरेभ्यः जेणें करी संसारसमुद्र तराय छे ते तीर्थ एटले प्रवचन तथा तेना अव्यतिरेक संबंधथकी संघ पण तीर्थ कहियें, वली गणधर पण तीर्थ कहियें, एटले प्रवचनकथकपणा थकी तथा चतुर्विध श्रीसंघरूप तीर्थना करवाथकी तथा प्रथम गणधर रूप तीर्थना करवाथकी, तीर्थंकर कहियें. हवे ए तीर्थंकरपणुं पण श्री अरिहंतने अन्यउपदेशपूर्वकपणे नथी, एटला माटें आगल पद कहे छे. (सयंसंबुद्धाणं के०) स्वयंसंबुद्धेभ्यः (सयं के०) पोतानी मेलें (सं के०) सम्यक् प्रकारें (बुद्धाणं के०) तत्त्वना जाण थया एटले परोपदेश विना पोतानी मेलें भव्य सामग्रीना परिपाकथकी बोध पामेला जाणवा. यद्यपि भवांतरने विषे तथाविध गुरु संनिधानथकी अवबोधित छे, तथापि तीर्थंकर जन्मने विषे परोपदेशनी अपेक्षा नथीज. अने जो पण तीर्थंकर जन्मने विषे लोकांतिक देवताना वचनथकी “भयवं तित्थं पवत्तेहि” ए लक्षणवाली दीक्षाने पामे छे, तो पण जेम राजा होय ते भाट प्रमुख स्तुति करनाराउंना वचनमां रहेतो छतो पण स्वतंत्रताने त्याग न करतो थको पोतानुं कार्य करे छे, तेम ते तीर्थंकरो पण पोतानी स्वतंत्रतायेंज प्रव्रज्या ग्रहण करे छे,तेमाटें सयंसंबुद्धाणं कहियें. एमां स्तववा योग्यना सामान्य हेतु कह्या, माटें ए त्रण पदनी उंघ एटले सामान्यहेतु नामें बीजी संपदा जाणवी. एमां लघु चौद, अने गुरु बे, सर्व मली शोल अक्षरो छे ॥ २ ॥

हवे ए बीजी संपदाना अर्थनें विशेषें दीपाववा माटे त्रीजी विशेषहेतु संपदामां पूर्वोक्त स्वयंसंबुद्धपणुं तो कोइ सामान्य जनने पण होय छे, परंतु भगवंत तेवा पुरुष नथी, भगवंत तो सर्व पुरुषमांहे उत्तम छे. तेमाटें आगल पुरुषोत्तमपणुं देखाडवाने पद कहे छे.

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुं
डरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

अर्थः–(पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषोत्तमेभ्यः पुरुषोने विषे उत्तम प्रधान एटले धैर्य, गांभीर्य औदार्य, परोपकार, इत्यादिक गुणें करी उत्तम छे प

रंतु बीजा जीवनी पेरें क्रूर, कृपण, मलीन बुद्धिना धणी नथी,अहीं पुरि एटले शरीर तेने विषे जे शयन करे, ते पुरुष जाणवो. ते शरीरने विषे वास करनारा जे सत्त्व तेमने विषे सहज नव्यत्वादिक नावथकी श्रेष्ठ माटें पुरुषोत्तम जाणवा. तथा सर्वार्थ विना सर्व संसारी जीवोने परमार्थ करवानुं ठे व्यसन जेने तथा उचितक्रियारूप दानें करी युक्त ठे माटें पुरुषोत्तम कहियें. हवे ए पुरुषोत्तमपणानेज सिंहादिक उपमायें करी समर्थतो थको आगल कहे ठे. (पुरिससीहाणं के०) पुरुषसिंहेन्यः एटले पुरुषमांहे सिंहसमान ठे. अर्थात् जेम सिंह, शौर्यादिकगुणें करी युक्त होय ठे, तेम नगवंत पण कर्मरूप शत्रुने शूरतायें करी ठेदनारा ठे, क्रूरतायें करी क्रोधादिकने उठेदनारा ठे, सहनतायें करी रागादिकने उठेदनारा ठे. वीर्ययोगें करी तपश्चर्यामां प्रवर्त्तनारा ठे तथा अवज्ञा परीसह उपसर्गने विषे एमने नय नथी, इंद्रियवर्गनेविषे खेद नथी तथा श्रद्धायें करी संयम मार्गने विषे निःप्रकंपता ठे. अथवा नगवंत १ बौद्ध, २ नैयायिक, ३ सांख्य, ४ वैशेषिक, ५ जैमिनीय, अने ६ मीमांसक, ए परवादीरूप हस्तीयोनुं मथन करनारा ठे तेमाटे पुरुषसिंह कहियें.(पुरिसवरपुंडरीयाणं के०) पुरुषवरपुंडरीकेन्यः एटले पुरुषोने विषे वर प्रधान पुंडरीक कमल समान ठे, एटले पुंडरीक कमल. जेम कचराथी उत्पन्न थाय ठे, जलमां वृद्धि पामे ठे. अने ते बन्नेनो त्याग करी उपर वर्त्ते ठे, प्रकृतियें करी सुंदर होय ठे, नुवनलक्ष्मीनो निवास ठे, चक्षु प्रमुखने आनंदनुं घर ठे, उत्तमगुणना योगें करी विशिष्ट तिर्यंच, मनुष्य अने देवोयें करी सेवन कराय ठे, तेने सुखनुं हेतु थाय ठे. तेम श्रीअरिहंत नगवंत पण, कामरूप जे कचरो एटले मातानुं रुधिर अने पितानुं वीर्य, ते थकी उत्पन्न थया, दिव्यनोगरूप जलें करी वृद्धि पाम्या, पठी बेहुनो त्याग करी वर्त्ते ठे, पोतें सुंदर ठे, केवल ज्ञानादिक गुणना योगें करी नव्यजीवो सेवे ठे. तेने मोक्षसुखना हेतु थाय ठे, (पुरिसवरगंधहत्थीणं के०) पुरुषवरगंधहस्तिन्यः पुरुषोने विषे वर प्रधान गंधहस्ती समान ठे एटले जेम गंधहस्तीना गंधें करी ते देशमां विचरनारा बीजा क्षुद्र हाथीयो नाशी जाय ठे,तेनी पेठें नगवानना विहाररूप पवनना गंधथकी परचक्र, डुर्निक्ष, मारी प्रमुख उपद्रवरूप जे गज ठे, ते नागी जाय ठे, माटें पुरुषवरगंधहस्ती कहियें.

एम सिंह, पुंडरिक अने गंधहस्ती, ए त्रण उपमायकी पुरुषोत्तम कहि यें,एमां पुरुषमांहे उत्तम कह्या, माटें ए चार पदनी पूर्वोक्त सामान्यहेतु संपदायकी इस्वर एटले विशेषहेतुनामें त्रीजी संपदा जाणवी. एमां लघु त्रीश, अने गुरु बे, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

हवे चोथी उपयोग संपदामां जे पूर्वें जगवानने पुरुषोत्तमज कह्या, परंतु ते केवल पुरुषोत्तमज नथी, त्यारें केहवा छे ? ते कहे छे.

॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अर्थः–(लोगुत्तमाणं के०) लोकोत्तमेन्यः सर्व लोकने विषे उत्तम छे. अहीं लोकशब्दें करीने सर्व जव्य लोकज ग्रहण करवा, ते जव्य लोकोने कल्याणना करनार छे, ए माटें लोकोत्तम कहियें. हवे जे लोकमां उत्तम होय. ते तो नाथ कहेवाय, ते आगले पदें देखाडे छे. (लोगनाहाणं के०) लोकनाथेन्यः एटले लोकना नाथ छे. अहीं लोकशब्दें करीने आसन्न सिद्धि जीव लेवा, (आसन्न के०) नजीक छे सिद्धि जेने एवा जव्य जीवोना नाथ छे एटले तेने योगक्षेमना करनार छे. केम के ? अलब्धधर्मीने धर्मनेविषे जोडवो, तेने योग कहियें, अने लब्धधर्मीने जेम कुशल वर्त्ते,तेम करवुं, तेने क्षेम कहियें. अर्थात् जे धर्म पाम्या नथी तेने पमाडे छे अने जे धर्म पाम्या छे तेनी रक्षा करे छे, ए रीतें योग अने क्षेम, ए बेहु वानां प्रजु करे छे माटें लोकना नाथ कहियें. तिहां तात्त्विक नाथपणुं केवा प्रकारें थाय ? ते कहे छे. (लोगहियाणं के०) लोकहितेन्यः लोकने हितना करनार छे. अहीं लोकशब्दें सर्वसंव्यवहारी प्राणिवर्ग लेवो, तेने सम्यग्दर्शन प्ररूपण,रक्षणरूप योगें करी हितना करनार छे. अथवा षड्विध जीवनिकायनी रक्षादिकने करवे करी ते हितकारक छे. माटें लोकने हितना करनार कहियें. हवे ए नाथपणुं अने हितपणुं ते यथावस्थित समस्तवस्तुसमूहप्रदीपन थकीज होय, तेमाटें आगल पद कहे छे. (लोगपईवाणं के०) लोकप्रदीपेन्यः अहीं लोकशब्दें संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, जेने धर्मनी आस्था छे ते लेवा.तेमने देशनादिक करवे करीने अज्ञानमिथ्यात्वरूप अंधकार टालवा माटें प्रदीप समान छे. अहीं संज्ञी जीवोने विषे प्रदीपपणानी उपपत्ति छे, परंतु

असंज्ञीने विषे नथी. केम के अंधप्रत्यें प्रदीपपणुं वृथा छे ते माटें. तथा (लोगपज्जोअगराणं के०) लोकप्रद्योतकरेज्यः अहीं लोकशब्दें विशिष्ट चौद पूर्वने जाणनारा लोक ग्रहण करवा ते गणधर चौद पूर्वधर जाणवा. तेमना हृदयने विषे द्वादशांगीरचनारूप बोधना प्रकाश करवापणानी उप पत्ति छे एटले तेने सूर्य समान छे, अर्थात् प्रजुना "उपन्नेइवा, विगमेइवा,धुवे इवा," एटली त्रिपदीने वचनें करीज गणधरने एवी बुद्धि उत्पन्न थाय छे के जेथकी ते नवां अगीयार अंग अने चौद पूर्वनी ते वखतेंज रचना क रे छे, माटे लोकप्रद्योतकर कहियें. एमां लोगुत्तमाणं इत्यादिकें करी लोक मां उत्तम कह्या माटें सामान्यस्तवनानो जे उपयोग तेनो हेतु कह्यो ते थी ए उपयोगसंपदा चोथी जाणवी. एमां लघु सत्तावीश अने गुरु बे, सर्व मली उंगणत्रीश अक्षरो छे ॥ ४ ॥

हवे ए पूर्वोक्त संपदाने विशेष हेतुरूप पांचमी उपयोगहेतुसंपदा कहे छे. पूर्वोक्त लोकप्रद्योतकर एवा विशेषणयुक्त तो सूर्य, हरि, हर, ब्रह्मादिक पण तत्तीर्थिकमतें करीने होय छे. त्यारें ते प्रजुमां विशेष शुं ? ते आगलना पदें करी कहे छे.

॥ अजयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदया
णं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥

अर्थः-(अजयदयाणं के०) अजयदेज्यः एटले इह लोक, परलोकादिक सात जय रहित एवुं जे अजयपद, तेना दातार अथवा सर्व प्राणीनां जे जय, तेना परिहारवाली एवी दया अनुकंपा छे जेने अथवा जे अपकारी प्राणापहरणरसिक उपसर्गकारक एवा जीवोने पण जय न आपे माटें अ जयद कहियें. ए प्रमाणें सर्व प्राणीने अजय देनारा, एवा हरि, हर, ब्रह्मा दिक न होय. हवे ए प्रजु केवल अपकारीने अथवा ते अपकारीथी अने रा बीजा जीवोने अनर्थपरिहारमात्रज करे छे, एटलुंज नहीं पण अर्थ प्राप्ति पण करे छे, तद्दर्शनार्थ कहे छे. (चक्खुदयाणं के०) चक्षुर्देज्यः सम्य ग्ज्ञानरूप लोचनना दातार तथा चक्षुशब्दें विशिष्ट आत्मधर्मरूप तत्त्वा वबोध वस्तुत्वदर्शनें धर्मकल्पद्रुमनी बीजजूत एवी श्रद्धारूप कल्याणचक्षु ते जगवानथकी प्राप्त थाय छे, तथा अज्ञानांध जीवने श्रुतज्ञानरूप चक्षु

आपे छे. कहेलुं छे, के चक्षुष्मंत तो तेज नर जाणवा के जे श्रुतज्ञानरूप च क्षुयें करीने सम्यक्रीतें हेय उपादेय जावने जाणे, माटें श्रुतचक्षुने दे नारा ते चक्षुर्द कहियें, ए रीतें चक्षु आपी, तेथी ते प्रजुनुं श्रुतचक्षुर्दत्व उपकारीपणुं कह्युं. हवे निर्वाणमार्गदत्व उपकारीपणुं कहे छे, (मग्गद याणं के०) सम्यग्दर्शनादिक रत्नत्रयरूप जे मोक्षनो मार्ग छे, तेना दातार; जेम कोइ एक अटवीमां जूला पडेला वटेमार्गुनुं धन, चोर लोको यें लूंटीने तेने उन्मार्गें पाड्यो होय. पछी तेने कोइ सत्पुरुष वस्त्र, धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखाडी, तेना स्थानकें पहोंचाडे, तेम आ संसार रूप अटवीने विषे जविक जीवरूप सार्थना धर्मधनरूप संबलने महामोहा दिकनी धाडें लूंटी मिथ्यात्वादिक पाटा बांधीने कर्मस्थितिरूप कुमार्ग अट वीमां नाख्या, तेने परोपकारी एवा जगवंत ते मिथ्यात्वादिक पाटा कापी, धर्मसंबल आपी, रत्नत्रयीरूप शुद्ध मार्गें चलावी शाश्वतस्थानप्रत्यें पहोंचाडे छे. हवे तेवा मार्गप्रत्यें पहोंचाडे, ते परमोपकारी कहेवाय ? ते माटे परमोपकारीपणुं देखाडवाने कहे छे. (सरणदयाणं के०) शरण देज्यः एटले जन्म, जरा अने मरणप्रत्यें पमाडनार एवो कर्मरूप जूप, ते थकी बीक पामनारा जीवने शरणना दातार छे, अर्थात् जेम वैरीना जयथकी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम डुर्गतिना जय थकी बीक पामनार पुरुषने जगवंत शरण राखे. अहीं शरणशब्दें करी ज यार्त्तत्राण एटले संसाररूप डुर्मार्गने विषे प्राप्त थयेला अने अत्यंत प्रबल रा गादिकें करी पीडा पामेला एवा जनोने तत्त्वचिंतवनरूप अध्यवसाय जेणें करी मोक्षप्राप्ति थाय तेना दातार.हवे ते शरणद पणानेज आपीने पछी शा नो लाज आपे छे?ते माटें आगल कहे छे.(बोहिदयाणं के०) बोधिदेज्यः ए टले बोधि ते जिनधर्मप्राप्ति तेने देनारा ते बोधिद कहियें. एमां पूर्वें कही जे उपयोगसंपदा तेना अर्थने अजयदयाणं इत्यादिक हेतुसद्भावें करी दीपा व्युं माटे ए पांचमी तद्धेतु संपदा अथवा उपयोगहेतुसंपदा जाणवी. एमां लघु पच्चीश अने गुरु बे,सर्व मली सत्तावीश अक्षरो छे ॥ ५ ॥

एम अजयदान, चक्षुर्दान, मार्गदान,शरणदान अने बोधिदान. ए सर्वने जगवंतना धर्मनी प्राप्तियें करी पाम्यो,ए माटे प्रजुनुं धर्मदत्व आगल कहे छे. तथा स्तोतव्य संपदाने विषेज विशेषें करी उपयोग संपदा पण कहे छे.

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६॥

अर्थः– (धम्मदयाणं के०) धर्मदेन्यः यथायोग्य साधु श्रावक संबंधी धर्मना दातार ठे.इहां धर्म एटले चारित्रधर्म ग्रहण करवो,ते बे नेदें ठे.तेमां सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षण,ते साधुनो धर्म अने देशविरतिलक्षण तेश्रावकनो धर्म, ए पण नगवानथकीज प्राप्त थाय ठे यद्यपि धर्मना अन्य हेतुनो सद्नाव ठे खरो, तथापि तेनुं प्रधानत्व नगवानने विषेज ठे.केम के एनी देशना अन्यथा होय नही, माटे धर्मद कहियें. हवे धर्मदायकपणुं तो धर्मना उपदेशथकी होय,तेमाटेज आगल पद कहे ठे के, (धम्मदेसियाणं के०) धर्मदेशकेन्यःपूर्वोक्त जेने जेवो धर्म योग्य होय, तेने तेवो साधु श्रावक संबंधी धर्म तेना देशक एटले उपदेशना करनार ठे.माटें धर्मदेशक कहियें. (धम्मनायगाणं के०) धर्म्मनायकेन्यःएटले धर्मना नायक अर्थात् धर्मने वश करवाथकी तथा ते धर्मनुं फल जे अरिहंत पदवी ठे,तेने नोगववाथकी अथवा कोइ धर्मनो व्याघात करे, तो करवा न दीये माटें धर्मनायक कहियें, तथा (धम्मसारहीणं के०) धर्मसारथिन्यः धर्मना सारथि ठे, केम के जेम सारथि रथस्थनी तथा रथिकनी अने अश्वोनी रक्षा करे ठे,तेम श्री अरिहंत पण चारित्रधर्मनां जे अंग तेमनुं रक्षण तथा उपदेश करे, नव्यजीवरूप रथसमूह तेने कुमार्गें चालवा न आपे, कुमार्गें जाताने पाठा वाले, एक मोक्षमार्गेने विषेज चलावे माटें धर्मसारथि कहियें; तथा(धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं के०) धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्तिन्यःधर्म तेज प्रधान श्रेष्ठ ठे चार गतिरूप संसारना अंतनुं करनार एटले मिथ्यात्वादिक नावशत्रु तेमने उच्छेद करवानुं कारण तद्रूप धर्मचक्रें करीने जे वर्त्ते ठे,विचरे ठे अर्थात् उत्कृष्टधर्म तेज चारगतिना अंत करवारूप चक्र तेणें करी सहित वर्त्ते ठे,ते धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती कहियें.एमां पूर्वोक्त उपयोगहेतु संपदाना गुण दीपाववा निमित्तें कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कह्युं. माटें ए ठही सविशेषोपयोगहेतु संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश,अने गुरु सात सर्व मली ठत्रीश अक्षरो ठे ॥ ६ ॥

हवे यथार्थस्वरूप प्रकटार्थ देखाडवा रूप सातमी संपदा कहे ठे.

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—हवे ते धम्मदयाणं इत्यादि प्रकृष्ट विशेषण समूह तो ज्ञानादिक योगथकी होय, त्यां ज्ञानातिशयत्व कहे छे. (अप्पडिहय के०) अप्रतिहत एटले क्षायिकपणाथकी कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जे (वर के०)प्रधान (नाण के०) ज्ञान ते विशेषोपयोग अने (दंसण के०) दर्शन ते सामान्योप योग तेहना (धराणं के०) धरनार छे, तेने अप्पडिहयवरनाणदंसणधरा णं कहियें. हवे एवी ज्ञानसंपत्तिमान् तो कोइ एक छद्मस्थ पण होय, परंतु ते मिथ्या उपदेशकपणाथकी उपकारी न होय माटें निश्छद्मपणुं प्रतिपाद न करतो थको कहे छे. तथा अप्रतिहतज्ञानपणुं केम उपन्युं ? ते पण कहे छे. (विअट्टछउमाणं के०) व्यावृत्तछद्मभ्यः अहीं (विअट्ट के०)निवृ त्युं छे जेथकी (छउमाणं के०) छद्मस्थपणुं एटले कपटपणुं शठपणुं अथवा आवरणपणुं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय अने अंत राय, ए चार घनघातिकर्म जेथकी क्षय थइ गयां छे तेने व्यावृत्तछद्मा कहियें. एमां अप्रतिहतवरनाणदंसणधरत्वें करी तथा व्यावृत्तछद्मतायें करीने प्रथम स्तोतव्यसंपदाने विषेज सातमी स्वरूपहेतु संपदा कही. एमां लघु वीश अने गुरु बे, सर्व मली बावीश अक्षरो छे ॥ ७ ॥

हवे ए "भ्रांतिमात्रमसदविद्या" एवां वचनथी अरिहंतप्रभुने कल्पितअविद्या वादीयो परमार्थें करी अजिनादिक कहे छे. तन्निरासार्थ तथा पूर्वोक्तव्यावृत्त छद्मस्थपणुं रागादिकना जयथी थायज छे. माटें ते आठमी संपदायें कहे छे.

॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

अर्थः—(जिणाणं जावयाणं के०) जिनेभ्यो जापकेभ्यः एटले (जिणाणं के०) रागादिक वैरीनुं जीतवापणुं छे माटें जिन कहियें, अर्थात् ए प्रभुने विषे रागादिक शत्रुनुं अस्तित्व नथी. तथा (जावयाणं के०) जापके भ्यः एटले भव्य जीवोने पण सद्उपदेशें करी रागादिक शत्रुथकी मूकाव नार छे, माटें जापक कहीयें. अहीं एवा जापक पण काल करणवादीयोयें भावथकी अतीर्ण कहेवाय छे तेना निरासार्थ कहे छे. (तिन्नाणंतारया णं के०) तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यः एटले पोतें संसारसमुद्रथकी तस्या, अने

जव्यजीवोप्रत्यें संसारसमुद्रथकी तारनार छे. अर्थात् सम्यक्ज्ञानदर्शन चारित्ररूप नावेंकरीने पोतें जवार्णवथी तस्या छे तथा अन्य जवि जीवोने तारे छे माटें संसारपारंगतने कालावर्त्तनपणुं घटतुं नथी माटें ते तीर्ण अने तारक जाणवा. अहिं तेवाने पण ज्ञानवादी एवा मैमांसिकजेदवाला पुरुषो, अबुद्ध कहे छे ? तेना निराकरणार्थ कहे छे. (बुद्धाणं के०) बुद्धेज्यः पोतें तत्त्वना जाण थया. (बोहयाणं के०) बोधकेज्यः एटले जव्य जीवोने स्वपरस्वरूपनो बोध करावनार, (मुत्ताणं के०) मुक्तेज्यः एटले पोतें चातुर्गतिकविपाक विचित्र कर्मथकी मूकाणा तथा (मोअगाणं के०) बीजा जव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावनारा छे,ए जिनत्व जापकत्व, तीर्णत्व तारकत्व, बुद्धत्व बोधकत्व,मुक्तत्व मोचकत्व, एणें करी स्वपरहित सिद्धि छे तेथी पोताने तुल्य परने फलना आपनार कह्या,ते माटें ए स्वतुल्य फलकारीएवी चार पदनी आठमी निजसमफलद नामें संपदा जाणवी. एमां लघु पच्चीश,अने गुरु त्रण, सर्व मली अठावीश अक्षरो छे ॥ ८ ॥

हवे श्री अरिहंत मोक्षें गया, ते अवस्था आश्रयीने नवमी संपदा कहे छे.

सवन्नूणं, सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत म
क्खय मवाबाह मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं,
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअजयाणं ॥ ९ ॥

अर्थः–(सवन्नूणं के०) सर्वज्ञेज्यः एटले सूक्ष्म बादर एवा सर्व जगत् संबंधी जाव तेना ज्ञात जाण एटले सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः सर्वने जाणे तेने सर्वज्ञ कहियें, (सवदरिसिणं के०)सर्वदर्शिज्यः एटले सर्व सूक्ष्म,बादर जगत्ना जाव तेने प्रत्यक्षनी पेरें देखे, अहींयां सर्वपदार्थ सामान्य अने विशेषरूप छे, तो पण प्रथमसमयें विशेषरूप जाणे माटें सर्वज्ञ अने तेवार पछी बीजे समयें सर्वपदार्थ सामान्यपणे देखे, माटें सर्वदर्शी जाणवा. अहींयां कोइ आशंका करे के प्रथम समयें ज्ञानोपयोग अने बीजे समयें दर्शनोपयोग कहो छो, तेवारें ज्ञानसमयें दर्शननो अजाव अने दर्शनसमयें ज्ञाननो अजाव थवानो प्रसंग आवशे ? तेने कहीयें के, सर्वज्ञ केवलीने सर्वदा निरंतर ज्ञान दर्शननी लब्धि छतां पण स्वजावथी एकसमयें बे उपयोगनो असंजव छे, क्षायोपशमिकजावें पण एमज

देखाय छे, केम के चार ज्ञानना धणीने पण एक समय एक ज्ञाननो उप योग होय, तेवारें बीजा त्रण ज्ञाननो अभाव न होय. अहीयां घणी वक्तव्यता छे, परंतु ग्रंथगौरवना भयथी नथी लखता. हवे ए प्रकारना सर्व विशेषणोयें करी युक्त मुक्त छे, तो पण मुक्तवादीउयें नियतस्थानस्थ, ते कहेवाता नथी त्यां कहे छे. (सिव के०) शिव एटले सर्वोपद्रवरहित छे, माटें शिव कहियें. (मयल के०) अचल एटले स्वाभाविक प्रायोगिक चलनक्रिया रहित छे माटें अचल,स्थिर अने अकंपित कहियें.(मरुय के०) अरुज एटले व्याधिवेदनथी रहित तथा तेना बंधनरूप शरीर अने मन नो अभाव छे माटें अरुज रोगरहित कहियें. (मणंत के०) अनंत एटले अ नंत ज्ञानादिक चतुष्टयें करी युक्त छे माटें अनंत कहियें. (अरकय के०)अ क्षय एटले सर्वकाल विनाशनो अभाव छे निरंतर निश्चल छे माटें अक्षय कहियें. (मवाबाह के०) अव्याबाध एटले अकर्मत्व छे माटें समस्त प्रकारें बाधारहित छे (मपुणराविति के०) अपुनरावर्त्ति अपुनः एटले नथी वली आवृत्ति एटले पाछुं आववुं जेथी अर्थात् जे गतिथकी फरी सं सारने विषे अवतार लेवो नथी, एवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति छे,(ना मधेयं के०) नाम जेनुं ए शिवमयलथी मांमीने सात विशेषणसहित एवुं (ठाणं के०) स्थानकप्रत्यें (संपत्ताणं के०) संप्राप्तेभ्यः एटले पाम्या छे, अर्थात् मोक्षनगर प्रत्यें पाम्या छे, एवा अरिहंत भणी (णमो के०) नमस्कार थाउ. अहीयां बीजी वार णमो पद आव्युं ते पदें पदें नमस्का र जणाववाने अर्थें छे. तथा आहिं स्तुति करी छे, माटें पुनरुक्ति दोष पण नथी कारण के, सद्याय, ध्यान, तप, कायोत्सर्ग, उपदेश, स्तुति अने उत्तमना गुणनां वखाण,एटले स्थानकें पुनरुक्तिनो दोष कह्यो नथी. वली ते श्रीअरिहंत केंहवा छे?तो के (जिणाणं के०) अंतरंगरागादिक रिपुवर्ग प्रत्यें जींपनार तथा (जियभयाणं के०) इहलोकादिक सात भयप्रत्यें जींप नार छे, ते सात भयनां नाम कहे छे. मनुष्यने मनुष्यनुं भय, ते प्रथम इहलोकभय जाणवुं. मनुष्यने देवतादिकनुं भय, ते बीजुं परलोकभय जाणवुं. रखे कोइ महारुं कांहिं लीये? ते त्रीजुं आदानभय जाणवुं, रखे म हारी आजीविका हणाय? ते चोथुं आजीविकाभय जाणवुं. भींत प्रमुख पडवानो शब्द सांभली बीक पामे, ते पांचमुं अकस्मात् भय जाणवुं.

रखे ने मुजने मरण आवे? ते छहुं मरणजय जाणवुं. अपयश पामवाथकी बीक राखे, ए सातमुं अपयशजय जाणवुं. ए सवन्नूणं इत्यादिक वाक्य मोक्षमां छे, तेहवुं स्वरूप कह्युं माटें ए त्रण पदनी मोक्षसंपदा जाणवी. एमां लघु एकावन्न अने गुरु सात, सर्व मली अठावन्न अक्षरो छे ॥ ए ॥

ए श्री शक्रस्तवमांहे अनेक विद्यामंत्र गोपव्या छे, ते गुरु आम्नायें जाणीयें. ए नमुत्थुणें करीने जगवंतने जन्म कल्याणादिकने विषे इंद्र स्तवे छे माटे एने शक्रस्तव कहियें. एमां सर्व मली संपदा नव छे, पद तेत्रीश छे, बशें चोत्रीश लघु, अने अठावीश गुरु, सर्व मली बशें ने बाशठ अक्षरो छे.ए समवसरणें बेठा विहरमान तीर्थंकर देव जे जावजिन छे,तेने स्तववारूप प्रथम अधिकार कह्यो.एटलो शक्रस्तव श्रीगणधर देवनो करेलो जाणवो.

हवे ड्रव्यअरिहंत जे श्री तीर्थंकर देवनां दलियां, ते पण वंदनीय छे. जेम श्रीजरतेश्वरें श्रीमहावीरना जीवने मरीचिना जवें वांद्यो, ते जणी ते ड्रव्यअरिहंत कहियें. एवा त्रिकालवर्त्ती ड्रव्य अरिहंत जे होय,तेमने वांदवाने अर्थें पूर्वाचार्यकृत गाथा कहे छे.

॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ जविस्संति णाग
ए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा, सवे तिविहेण
वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

अर्थः-(जेअ के०) ये एटले जे जिन,(अईआ के०)अतीताःएटले अतीत कालने विषे थया, एवा (सिद्धा के०) सिद्धाःसिद्ध जगवंत एटले जे अतीत कालने विषे तीर्थंकर पदवी पाली मोक्षें पहोता (अणागएकाले के०) अनागत कालने विषे (जे के०)ये एटले जे जिन,(जविस्संति के०)जविष्यंति एटले थाशे सिद्धपर्याय पामशे,(अ के०)वली(संपइअ के०)सांप्रतिक एटले सांप्रत वर्त्तमान कालने विषे (वट्टमाणा के०) वर्त्तमानाः सांप्रतकालें वर्त्तमान चोवीशीयें श्रीऋषजप्रमुख चोवीश तीर्थंकर थया अथवा महाविदेह क्षेत्रने विषे विहरमान जे श्रीसीमंधर प्रमुख वीश तीर्थंकर जयवंता छे, तेने वर्त्तमान कहियें. ते (सवे के०) सर्व जिनप्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधेन त्रिविधें करी एटले मन,वचन अने कायानी एकाग्रतायें करी (वंदामि के०) हुं वांडुं बुं ॥ ड्रव्य अरिहंत जो नरकादि गतिमां होय तो पण

ते जावअरिहंतनी पेरें वांदवा योग्य बे, अहिं नामजिन अने जावजिन पण ड्रव्यमां स्थापन करी वांदवा. आ गाथामां लघु एकत्रीश, गुरु चार, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो बे. ते पूर्वला साथें मेलवतां लघु (२६५) अने गुरु (३२) मली (२७७) अक्षरो थाय ॥ १० ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तब संताइं ॥ १ ॥ १४ ॥

अर्थः–(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्ख्रलोकनेविषे (जावंति के०) जेटलां (चेइआइं के०) चैत्यानि एटले जिनप्रतिमा बे. (ता इं सवाइं के०) तानि सर्वाणि एटले ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडु बुं,ते केहवो थको हुं वांडु बुं? तो के (इहसंतो के०) अहींया रह्यो थको. अने कहेवी ते जिनप्रतिमाउ बे? तो के, (तब के०) तिहां त्रण लोकमांहे (संताइं के०) ठती बिराजमान रही बे, एटले ऊर्ध्वलोकें वैमानिकमांहे (८४९७०२३) एटलां चैत्योने विषे (१५२९४४४७६०) जिनप्रतिमा बे, तथा ज्योतिषी मध्यें असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब बे तथा अधोलोकें जवन पतिमध्यें (७७२००००००) प्रासाद बे. तिहां (१३८९६००००००) बिंब बे. तेमज व्यंतरमां असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब बे. तथा तिर्यंचलोकमां (३२५९) प्रासाद. तिहां (३९१३२०) एटलां शा श्वतां जिनबिंब बे अने अशाश्वतानुं कांहिं गणित नथी, ते हुं अहींयां बुं अने ते चैत्य तिहां बे तेने अहींयांथकी हुं वांडु बुं. आ गाथामां चार पद बे, चार संपदा बे, लघु बत्रीश अने गुरु त्रण, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो बे ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि ॥

जावंत केवि साहू, जरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सवेसिं
तेसिं पणउ, तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥१॥ इति ॥ १५ ॥

अर्थः–(जरह के०) पांच जरत, (एरवय के०) पांच ऐरवत, (अ के०) वली (महाविदेहे के०) पांच महाविदेह, ए पंदर क्षेत्रने विषे (जावंत के०)

जेटला (केवि के०) कोइ पण (साहू के०) साधु ले, (तेसिंसवेसिं के०) ते सर्व साधु, साध्वी जाणी महारो (पणउं के०) नमस्कार थाउं. ते साधु केहवा ले ? तो के (तिविहेण के०) त्रिविध एटले मन, वचन, अने कायायें करीने (तिदंम के०) अशुज मन, वचन, कायारूप त्रण दंमथकी (विरयाणं के०) निवर्त्त्या ले. एटले जे जीवनुं मन, कुध्यानें वर्त्ते, ते मनोदंम, सावद्य वचन बोले ते वचनदंम, अने काया कुव्यापारें प्रवर्त्तावे, तेने कायदंम कहियें. ए त्रण दंम जाणवा ॥ एमां चार पद, चार संपदा, लघु साडत्रीश अने गुरु एक, सर्व अक्षर आडत्रीश ले. पूर्वली गाथाना मेलवतां उंगणोतेर लघु, चार गुरु, सर्व अक्षर तहोंतेर ले ॥ १ ॥ १५ ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥

अर्थः—जेना शासनना (उवसग्गहरं के०) डुःखसंकटादिक उपसर्गनो हरनार एवो, (पासं के०) पार्श्वनामें यक्ष ले सेवक जेनो एवा श्री (पासं के०) पार्श्वनाथ स्वामीप्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांडुं लुं. अथवा राग द्वेष अने मोह ए त्रणना करेला जे जन्म, जरा अने मरणरूप उपसर्ग, ते प्रत्यें प्रजु पोतें हरनार ले. एवा (पासं के०) प्राशं एटले प्रशब्दें करी गइ ले आशं शब्दें करी आशा वांछा जेथकी एवा श्रीपार्श्वनाथ प्रत्यें हुं वांडुं लुं. वली श्री पार्श्वनाथ केहवा ले ? तो के, (कम्मघणमुक्कं के०) कर्मना घन एटले समूह तेथकी मुक्त ले, रहित ले, अथवा शुद्धचेतनरूप चंद्रमाने ढांकनार एवो कर्मरूप घन एटले मेघ तेथकी मुक्त ले, रहित ले. वली श्री पार्श्वनाथ केहवा ले ? तो के, (विसहर के०) विषधर जे द्रव्यथी तिर्यंचसर्प, ते संबंधी जे (विस के०) विष, एटले दृष्टिविष, आशीविष, लालविषादिक ते प्रत्यें (निन्नासं के०) निर्नाश एटले अतिशयें करीने नाशना करनार ले. अथवा जावथी विषधर ते मिथ्यात्वी जीव संबंधी जे विष, ते मिथ्यादृष्टिपणुं जे अनादि अनंत कालनुं महामोहरूप सर्पनुं विष, ते जावथी सर्व आत्मप्रदेशें व्याप्युं ले एवुं जे मिथ्यात्वरूप विष, तेना अतिशयें करी नाशना करनार ले. वलीश्री पार्श्वनाथ केहवा

छे ? तो के (मंगल के०) दुःखनो विलय, उपद्रवनिवृत्ति तेने मंगल कहियें तथा (कल्लाण के०) सुखनी वृद्धि तेना (आवासं के०) आवास छे. आ गाथामां लघु बत्रीश,अने गुरु पांच, मली साडत्रीश अक्षरो छे ॥१॥

हवे मंत्रगर्जित एवुं जे आ स्तवन, तेनो महिमा कहे छे.

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गह रोग मारी, दुठजरा जंति उवसामं ॥२॥

अर्थः–(जो के०) जे (मणुउ के०) मनुष्य, श्री पार्श्वनाथना नाम गर्भित एवो (विसहरफुलिंगमंतं के०) विषधरस्फुलिंगनामा अढार अक्षरनो मंत्र जे एहीज स्तोत्रमांथी निकले छे, ते मंत्रप्रत्यें (सया के०) सदा सदैव निरंतर (कंठे के०) कंठने विषे (धारेइ के०) धरे, स्मरे, (तस्स के०) तेहना (गह के०) सूर्यादिक ग्रह, (रोग के०) कफ कुष्ठजलोदरादिक रोग, (मारी के०) मर्की उपद्रव, (दुठजरा के०) दुष्ट दुर्जन एवा शत्रु तथा एकांतरिया प्रमुख ज्वर, ते (उवसामं के०) उपशमजावप्रत्यें एटले नाशप्रत्यें (जंति के०) पामे. आ गाथामां छत्रीश लघु अने बे गुरु, मली आडत्रीश अक्षरो छे ॥ २ ॥

॥चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥
नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः–अथवा हे नाथ ! ए ताहारो जे (मंतो के०) विषधर स्फुलिंग नामें जे मंत्र, ते तो (दूरे के०)दूर एटले वेगलो (चिठउ के०) तिष्ठतु एटले रहो. पण (तुज्झ के०) तहारो (पणामोवि के०) प्रणाम एटले नमस्कार करवो, ते पण (बहुफलो के०) बहुफल एटले घणां एवा सौजाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, कलत्र, पुत्र, द्विपद, चतुःपद, चक्रवर्त्ती अने इंद्रादिकनी पदवीना फलनो आपनार (होइ के०) छे, तेहीज कहियें छैयें. इह लोकना फलनुं तो शुं कहेवुं? पण तमोने नमस्कार करनार जे सम्यग्दृष्टि जीव छे, ते प्रायः वैमानिकदेवोमां उत्पन्न थाय छे. अने कदाचित् पूर्वबद्धायु छतां जवपरंपरायें करीने जीव, (नरतिरिएसुवि के०) नर एटले मनुष्यने विषे अथवा तिर्यंचने विषे उत्पन्न थाय छे, तो पण त्यां तेने शारीरिक

तथा मानसिक दुःख अने दारिद्र प्राप्त न थाय, केम के? जो मनुष्यमां उ पजे, तो रोगादिकें रहित थाय अने समस्त हितार्थें करी संपत्तिमान् थाय. माटे तेने शारीरिक अने मानसिक दुःख प्राप्त न थाय. तथा ऋद्धि समृद्धि वान् होय माटें दरिद्रीपणें न होय अने तिर्यंचमां उपजे, तो पण कनक, रत्न, चिंतामणि, कल्पद्रुम, पट्टतुरंगम, जयकुंजरादिने विषे उपजे, तिहां पूजा पामे. अथवा ते मनुष्य पण केहवो? तो के तिरिए एटले पशु समान एवा बाल गोपाल कृषीबलादिक तेने विषे पण कदाचित् कर्मना वशथकी उपजे, कोण उपजे? तो के तुमप्रत्यें प्रणामना करनार एवा (जीवा के०) जीवो, तो तिहां पण (दुरकदोगच्चं के०) दुःख अने दारिद्रप्रत्यें (नपावंति के०) न पामे. आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साडत्रीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवप्नहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः—(चिंतामणि के०) चिंतामणिरत्नथकी अने (कप्पपायवप्न हिए के०) कल्पपादप एटले कल्पवृक्षथकी अधिक एवो (तुह के०) त मारा (सम्मत्ते के०) सम्यक्त्वदर्शनने (लद्धे के०) पामे छते, (अवि ग्घेणं के०) विघ्नरहितपणे (जीवा के०) ज्ञव्य जीवो, (अयरामरं के०) अजर एटले ज्यां जरा नथी अने अमर एटले ज्यां मरण नथी, एवुं (ठाणं के०) स्थान, तेप्रत्यें (पावंति के०) पामे छे, पण तमारुं सम्यग् दर्शन पाम्या विना कोइ जीव, मोक्षप्रत्यें पामे नहीं. आ गाथामां ल घु उंगणत्रीश, अने गुरु छ, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥ ४ ॥

॥ इअ संथुउ महायस, ज्ञत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं, ज्ञवे ज्ञवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

अर्थः—(महायस के०) हे महायशः! एटले हे त्रैलोक्यव्यापकयशः! (ज्ञ त्तिप्नर के०) ज्ञक्तिने समूहें करी (निप्नरेण के०) पूर्णज्ञरें एटले ज्ञक्तिना समुदायें करी परिपूर्ण ज्ञर्खुं एवुं, (हिअएण के०) हृदय एटले चित्त तेवा चित्तें करी में सेवकें (इअ के०) ए प्रकारें तुऊने (संथुउ के०) संस्तुत एट

ले स्तव्यो. (ता के०) ते कारण माटें (देव के०) हे देव ! निज स्वरूप रूपवननेविषे क्रीडाना करनार एवा (पासजिणचंद के०) हे पार्श्वजि नचंद्र! एटले समीप रह्या जे श्रुतधरादिक जिन, तेने विषे चंद्रमा समान एवा हे श्रीपार्श्वनाथ ! तमें मुऊ जणी (जवेजवे के०) जन्म जन्मने विषे एटले ज्यां सुधी हुं मुक्तिप्रत्यें नहीं पामुं, त्यां सुधी (बोहिं के०) बोधि एटले जिनधर्मनी प्राप्ति तेप्रत्यें (दिज्ञ के०) दीयो, एटले आपो. किं बहुना एटले शुं घणुं कहुं ? आ गाथामां लघु चोत्रीश, अने गुरु चार, सर्व अक्षर आडत्रीश ठे ॥ ५ ॥ सर्व मली पांचे गाथामध्यें पद वीश, सं पदा वीश, गुरु एकवीश, लघु एकशो चोशठ,सर्वाक्षर एकशो पंच्याशी ठे॥

हवे आ उवसग्गहरं स्तोत्र शा माटें अने क्यारें थयुं? तेनुं कारण लखे ठे. वाराहमिहिरनो जीव मरी व्यंतर देवता थयो, तेणें संघमां मरकी वि कुर्वी, संघें श्रीजद्रबाहु गुरुने वीनव्या, तेवारें गुरुयें ए महामंत्रमय उवस ग्गहर स्तोत्र करी आप्युं, एना जणवा गणवा तथा सांजलवा थकी मर की उपशम पामी, पठी लोक निरंतर उवसग्गहरं जणवा लाग्या, तेवारें ध रणींद्रने प्रत्यक्ष आववुं पडतुं हतुं, माटें धरणींद्रें गुरुने विनति करी के हे ज गवन्! सर्वलोक उवसग्गहरं स्तोत्र जणे ठे,तिहां निरंतर मुऊने आववुं पडे ठे. माटें प्रसन्न थइ ठही अने सातमी गाथा जंमारी मूको अने बाकीनी पांच गाथायेंज श्रीसंघनी आर्त्ति जांजीशुं. एवुं सांजली गुरुयें बे गाथा जंमारी मूकी बाकी आ पांच गाथाज राखी,ते आज सुधी प्रवर्त्ते ठे.

ए स्तवन कह्या पठी साम सामी आंगुली मेली मोतीयें जरेली शीपना संपुटने आकारें बे हाथ जोडी ललाटदेशें लगाडीयें, तेने मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहियें. केटलाएक आचार्य कहे ठे के,बे हाथ जोडी ललाटें न लगाडीयें, एम बे मत ठे. पठी ए मुद्रायें जयवीयराय कहियें,तेनो पाठ लखे ठे ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीयराय ॥

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पनावउ जयवं ॥
जवनिवेउ मग्गा, णुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥

अर्थः–(वीयराय के०) हे श्रीवीतराग ! (जगगुरु के०) हे जगत्रय गुरो ! तुमें (जय के०) जयवंता वर्त्तो. ए वीतरागादिक आमंत्रण, ते त्रिलो

कनाथ एवा जगवानने बुद्धिना सन्निधापनार्थं बे. (तुहपजावर्ज के०) तमारा प्रजावथकी एटले तमारा सामर्थ्यथकी (ममं के०) महारे (होउ के०) थाउ, (जयवं के०) हे जगवन्! ए जे संबोधन बे, ते जक्तयतिशयना ज्ञापनने माटें बे.हवे ते शुं थाउ? त्यां कहे बे.एक तो (जवनिव्वेर्ज के०) जव निर्वेद थाउ,एटले अत्यंत डुःखदायक बंदीखाना समान एवो जे जव संसार तेथी उदासपणुं थाउ, एटले हुं संसारमांहेथी निकलुं, चारित्रधर्मने आदरुं, एवो जे जाव तेने जवनिर्वेद कहियें, ते महारे थाउ. कहेलुं बे के जवथकी अनिर्विण्ण (जेने निर्वेद नथी) ते मोक्षने योग्य नथी. अने बीजुं (मग्गाणुसारिया के०) मार्गानुसारिपणुं थाउ. एटले कदाग्रहने त्याग करी तहारा मार्गने अनुसारें चालवुं, तेवा मार्गानुसारी पुरुष संबंधी गुणो,तेनी प्राप्ति थाउ. त्रीजुं (इठफलसिद्धी के०) इष्ट एटले वांबितफल तेनी सिद्धि थाउ.एटले शुद्ध आत्मधर्म बे,ते साधु अथवा श्रावकने इष्ट बे माटें तेनेविषे सदा उपयोगनी पूर्णता तेनी सिद्धता ते महारे थाउ.आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु चार, सर्व मली चालीश अक्षरो बे ॥ १ ॥

॥ लोगविरुद्धच्चाउ, गुरुजणपूआ परत्रकरणं च ॥
सुह गुरुजोगो तव्वय, ण सेवणा आजव मखंमा॥२॥

अर्थः–तथा चोथो (लोगविरुधच्चाउ के०) लोक विरुद्धनो त्याग थाउ, एटले जे कार्य जिनागमथी विरुद्ध होय अने साधु श्रावक जे कार्यने निषेधे, निंदे, तथा जे कार्यथी धर्मनी हेलना थाय, एवां कर्त्तव्य जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक,ते सर्व लोकविरुद्ध कार्य कहियें तेनो त्याग थाउ. तथा पांचमो (गुरुजण के०) मातापितादिक तथा धर्मना दातार जे सद्गुरु इत्यादिक महोटानी (पूआ के०) पूजा जक्ति करवी थाउ. यद्यपि गुरुपदें करीने आचार्यनुंज ग्रहण थाय, तथापि अहिं मातापितादिकनुं पण ग्रहण करवुं, बहुं (परत्रकरणंच के०) परार्थ एटले पर संबंधी जे अर्थ तेनुं करण एटले करवुं एटले परोपकार करवो, ते महारे थाउ अथवा (परार्थ के०) मोक्ष तेनुं (कारण के०) साधन जे ज्ञानादि रत्नत्रय ते महारे थाउ.ए प्रमाणें परहितार्थादिक करण आ जीवलोकनुं सारजूत पुरुषार्थनुं चिन्ह थये बते लौकिकने विषे लोकोत्तर धर्माधिकारी थाय बे. ते कहे बे.

सातमो (सुहगुरु के०) शुभगुरु जे शुद्धप्ररूपक कालानुसारें शुद्धक्रियाना खप करनारा गुरु तेनो (जोगो के०) योग एटले समागम म्हारे थाउ, आठमो (तव्वयण के०) तद्वचन एटले तेहीज सद्गुरुना वचननी अथवा जिनवचननी (सेवणा के०) सेवा एटले आराधना थाउ. ते क्यां सुधी थाउ ? तो के मारे ज्यां सुधी (आभवं के०) संसार छे, त्यां सुधी थाउ. ते सेवना केवी रीतें थाउ? तो के (अखंडा के०) अखंड परिपूर्ण जेथी परगुणमां चित्त प्रवेश करे नहीं. सदा निज गुणमां ज चित्त वर्त्ते, अथवा ए आठ वानां ज्यां सुधी हुं संसारमां रहुं,त्यां सुधी मुझने थाउ. किं बहुना.ए गाथामां लघु पांत्रीश, गुरु चार, सर्वाक्षर उंगणचालीश छे ॥ २॥ ए बे गाथा श्रीगणधरजीनी करेली छे, एमां प्रणिधान मननी समाधिनी याचना करी, ते प्रायः करीने निःसंगाभिलाषरूपत्व छे. ए बे गाथामां पद आठ छे, संपदा आठ छे. एकोत्तेर लघु अने आठ गुरु सर्व मली उंगणाएंशी अक्षरो छे.बेहु जावंतना मेलवतां (१५२) थाय॥२॥

हवे आगली त्रण गाथा पूर्वाचार्यकृत छे माटे मुख आगल बे हाथ जोडी देव वांदवानी समाप्तियें कहे, ते कहे छे,

वारिज्जइ जइवि निआ, ण बंधणं वीअराय तुह समए ॥
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

अर्थः-(वीअराय के०) हे श्रीवीतराग ! (तुह के०) तमारा (समए के०) सिद्धांत तेने विषे (जयवि के०) यद्यपि एटले जो पण (निआण बंधणं के०) नियाणानुं बांधवुं एटले अमुक राज्यादिकनी पदवी हुं पामुं? एवा निदाननी वांछानुं करवुं, तेने (वारिज्जइ के०) वार्युं छे, निषेध्युं छे. (तहवि के०) तथापि एटले तो पण हुं एटलुं मागुं छुं जे (तुम्हचलणाणं के) तमारा चरणोनी (सेवा के०) भक्ति, ते (मम के०) म्हारे (भवेभवे के०) भन्म जन्मने विषे (हुज्ज के०) होजो ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु आडत्रीश, गुरु त्रण, सर्व मली एकतालीश अक्षरो छे॥

॥ दुक्खक्खउ कम्मक्खउ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ॥
संपज्जउ मह एअं, तुह णाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥

अर्थः—एक (ङुक्खक्खर्ज के०) शारीरिक अने मानसिक एटले शरीर संबंधी ङुःख अने मननां ङुःख तेनो क्षय तथा बीजो (कम्मक्खर्ज के०) अष्ट कर्मनो क्षय, एटले मोहनीयादिक अशुजकर्मनो क्षय, त्रीजो (समाहिमरणं के०) समाधिमरण, (च के०) वली चोथो (बोहिलाजो अ के०) बोधिबीजनो लाज, ते जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं. एटले क्रियासहित सम्यग् ज्ञानदर्शननो लाज. अकार पादपूर्णार्थ ठे. (एअं के०) ए चार बोल, (मह के०) माहारे (संपज्जर्ज के०) संपद्यतां एटले थार्ज. पण शुं करीने थार्ज? तोके (तुहणाह के०) तुमनाथ प्रत्यें एटले हे नाथ ! तुऊ प्रत्यें (पणामकरणेणं के०) प्रणाम करवे करीने एटला वानां मुऊने थार्ज.आ गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु पांच, सर्वाक्षर र्जगणचालीश ठे ॥ ४ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥१७॥

अर्थः—हवे जिनशासनने मांगलिक जणी संस्कृत श्लोकें करी आशीर्वाद आपे ठे. (जैनं शासनं के०) जैन एवुं शासन ते श्रीजिन तीर्थंकर संबंधीयुं शासन एटले आदेश. (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते ठे, ते केहेवुं ठे? तो के (सर्वमंगलमांगल्यं के०) सर्व मंगलमांहे मांगलिक ठे, एटले जैनशासन विना बीजी कोइ मांगलिक वस्तु नथी अने दर्पण, रूपुं, पुत्रमुख, गायमुखादिकनुं जोवुं,तथा दधि, गोल, पुष्प, चंदन, अक्षत, दूर्वादिकने जे लोक मांगलिक कहे ठे, ते सर्व जूठी कल्पना जाणवी. कारण के ते ऐहिक मंगल ठे, ने जैनशासन पारलौकिक मंगल ठे. वली ते जेनशासन केहवुं ठे? तोके (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्वकल्याणनुं संपूर्ण कारण एटले सुखवृद्धिनुं कारण ठे. वली (सर्वधर्माणां के०) सर्व धर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधान ठे मुख्य ठे.ए श्लोकमां जारे त्रण अने लघु र्जगणत्रीश, मली बत्रीश अक्षरो ठे ॥५॥ एमां जीवदयानी मुख्यता ठे ते जणी, ए पाठली बे गाथा अने एक श्लोक मली त्रण थइ. तेमां बार पद, बार संपदा, लघु एकशो एक अने गुरु अगीयार, सर्व मली एकशो बार अक्षरो ठे. अने ए जयवीयराय नी सर्व मली पांच गाथा थइने पद वीश, संपदा वीश, लघु (१७२) गुरु र्जगणीश, सर्व मली (१ए१) अक्षरो ठे. ए रीतें सूत्र,अर्थ, संपदा, पद, अक्षर

शुद्धनो उच्चार करतां देव वांदवामां ध्याननें बलें जीव तीर्थंकरगोत्र मेघर थराजानी परें उपार्जन करे ॥ इति जयवीयराय सूत्रार्थः ॥ इति ॥ १७॥

हवे पंचांग प्रणाम करी उनो थइ पगे जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो थको चैत्यस्तव दंमक कहे, ते लखे छे ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

अर्थः–(अरिहंतचेइआणं के०) अरिहंतचैत्यानां एटले अहीं अरिहंत शब्दें जावअरिहंत लेवा, तेमनी चैत्य शब्दें, चित्तने समाधिनी करनार प्रतिमा समजवी, ते प्रतिमाने वंदनादिने अर्थें (करेमिकाउस्सग्गं के०) करोमि कायोत्सर्गं एटले हुं कायोत्सर्ग करुं बुं. ए संबंध. एटले एक स्थानकें रही मौन करवुं, ध्यान धरवुं, एटलां वानां विना बीजी क्रियानो त्याग करवो, तेने काउस्सग्ग कहियें. ए बे पदें करी अरिहंतनां चैत्य वांदवा निमित्तें काउस्सग्ग करीश? माटें अरिहंत वांदवानी अंगिकारूप प्रथम अन्युपगम एटले अंगीकार संपदा जाणवी. एमां पद बे, लघु तेर, अने गुरु बे, सर्व मली पंदर अक्षरो छे ॥ १ ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाजवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥ २ ॥

अर्थः–हवे श्री तीर्थंकरनी प्रतिमाने वंदन आदिक जे जे निमित्तें काउस्सग्ग करवो, ते निमित्त कहे छे. (वंदणवत्तिआए के०) वंदनप्रत्ययं एटले प्रशस्त मन, वचन अने कायानी प्रवृत्ति त्रिधा शुद्धियें प्रणामनुं करवुं तेथकी जे निर्झरारूप फल थाय छे, ते फलने निमित्तें अर्थात् परमेश्वरनां चैत्य वांदतां जे पुण्य थाय, ते पुण्य, काउस्सग्ग करतां मुजने होजो. अहीं प्राकृत जणी वत्तिआए एवो शब्द थयो छे. एम काउस्सग्ग करतां मुजने फल होजो. इत्यादि जाव, आगले पांचे पदें जाणवो. (पूअणवत्तिआए के०) पूजनप्रत्ययं एटले गंध, कर्पूर, कस्तूरी, फल, फूल, चंदनादिकें पूजानुं करवुं, ते थकी जे निर्झरारूप फल थाय छे, ते फलने अर्थें काउस्सग्ग करुं बुं. (सक्कारवत्तिआए के०) सत्कारप्रत्ययं एटले सत्कार ते जलां वस्त्र, आजरणादिकें करी पूजवुं, तेथकी जे निर्झरारूप

फल थाय छे, ते फलने अर्थें काउस्सग्ग करुं छुं. (सम्माणवत्तिआए के०) सन्मानप्रत्ययं सन्मान एटले स्तवन,स्तोत्र प्रमुखें करी प्रजुना गुणग्राम कहे वा थकी जे निर्ज्जरारूप फल थाय छे, ते फलने अर्थें (काउस्सग्ग के०) कायोत्सर्गप्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं छुं. अहीयां कोइ कहेशे के श्री अरिहंतनी प्रतिमाने वंदन, पूजा, सत्कार अने सन्माननां फलनी प्रार्थना शा वास्ते करो छो ? तेनी आशंका टालवाने हवे आगल पद कहे छे. (बोहिलाजवत्तिआए के०) बोधिलाजप्रत्ययं एटले परजवें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिने अर्थें प्रार्थना करीयें छेयें. वली कोइ कहेशे के श्रीजिनधर्मनी प्रार्थना पण शा वास्ते करो छो ? तेमाटें आगल पद कहे छे के, (निरुवसग्गवत्तिआए के०) निरुपसर्गप्रत्ययं एटले जन्म, जरा अने मरणादिक उपसर्गथी रहित एवुं जे मोक्षरूप स्थानक, ते स्थानकने निरुपसर्ग कहियें, ते पामवाने अर्थें काउस्सग्ग करुं छुं. एमां वंदणवत्तिआए इत्यादिकमां श्रीअरिहंतनां चैत्यवंदनादिक करतां जे फल होय, ते फल, ए काउस्सग्गथी होजो, ए निमित्त कह्यां. तेमाटें ए छ पदनी बीजी निमित्तसंपदा जाणवी. एमां पद छ छे, लघु बत्रीश अने गुरु नव, सर्व मली पीस्तालीश अक्षरो छे ॥ २ ॥

हवे ए काउस्सग्ग जे छे, ते श्रद्धादिकें करी रहित कस्यो थको फलने न आपे, परंतु श्रद्धादिकें करी सहित कस्यो थको इष्टफलने अपनार थाय छे, माटे जेणें करी काउस्सग्ग सफल थाय, तेनी त्रीजी संपदा कहे छे.

॥ सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥१८॥ अन्नछ० ॥

अर्थः– (सद्धाए के०) श्रद्धया ते ए काउस्सग्ग श्रद्धायें करी एटले पोतानी आस्ताथी करुं, पण कोइनी जोरावरीथी नहीं, (मेहाए के०) मेधया एटले मेधायें करी ते हेय उपादेय परिज्ञानरूप निर्मल बुद्धियें करी एटले सारा मागनां फल जाणीने करुं, पण मूर्खपणे नहिं. (धीईए के०) धृत्या एटले धृतियें करी अर्थात् चित्तनी स्थिरतायें करी मनने स्वस्थपणे करी करुं; पण राग, द्वेष, चपलतायें करी नहीं करुं. (धारणाए के०) धारणया एटले धारणायें करी अर्थात् श्रीजिनेश्वरना गुण धारतो थको अणविसारतो थको करुं, पण शून्यपणे नहिं करुं. (अणुप्पेहाए

के०) अनुप्रेक्षायें करी एटले श्रीजिनेश्वरना गुणने वार वार चिंतवतो थको करुं, श्रीजिनगुणार्थ विचारतो थको करुं, पण विकलपणे नहीं करुं, (वड्ढमाणीए के०) वर्द्धमानया एटले वृद्धिने पामती एवी श्रद्धा, मेधा, धृति, धारणा अने अनुप्रेक्षा, ए पांचे बोल तेणें करी सहित थको (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्गप्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं छुं ॥ ३ ॥ एमां सद्धाए इत्यादिकमां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंता थवाना हेतु कह्या. माटें ए सात बोलनी त्रीजी हेतुसंपदा जाणवी. एमां पद सात, लघु चोवीश अने गुरु पांच, मली उंगणत्रीश अक्षरो छे. अहीं सुधी बधां मली पन्नर पद थयां, त्रण संपदा थइ, तथा त्र्होंतेर लघु अने शोल गुरु, मली नेव्याशी अक्षरो थया. तथा एने छेडे अन्नछउससिएणं इत्यादिक काउस्सग्ग दंडक संपूर्ण कहियें. तेनो अर्थ, प्रथम लखाइ गयो छे, ए बेहु मलीने आठ संपदा, त्रेंतालीश पद, लघु अक्षर बशो, गुरु उंगणत्रीश, सर्व मली बशें ने उंगणत्रीश अक्षरो छे ॥ इति ॥ १० ॥

हवे जेणें करी सकल पदार्थ जाणीयें एवो प्रदीप समान जे श्रीसिद्धांत, तेने संस्तववो जोइयें, तेमध्यें पहेली गाथायें तेना प्ररूपक श्रीतीर्थंकर देवने स्तवे छे.

॥ अथ पुक्खरवरदीवड्ढे लिख्यते ॥

॥ पुक्खरवर दीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

अर्थः—(पुक्खवरदीवड्ढे के०) पुष्करवर नामा त्रीजो द्वीप तेनो अर्द्ध एटले पुष्करवरद्वीपार्द्ध तेने विषे बे बे, तथा (अ के०) वली (धायइसंडे के०) धातकिखंड नामा बीजो द्वीप. ए द्वीपमां धाहुडी वृक्षना खंड एटले वन ते घणां छे माटें द्वीपनुं पण तेहीज नाम जाणवुं, तेने विषे पण बे बे, तथा (जंबुदीवेअ के०) जंबुद्वीपने विषे एक,एक. ए रीतें अढी द्वीप संबंधी (भरह के०) पांच भरत क्षेत्र छे, तेने विषे, वली (एरवय के०) पांच ऐरवत क्षेत्र छे, तेने विषे, वलि (विदेहे के०) पांच महाविदेह क्षेत्र छे, तेने विषे, (धम्माइगरे के०) धर्मनी आदिना करनार एवा जे श्री सीमंधर स्वामीप्रमुख विहरमान भगवंत छे ते सर्वप्रत्यें (नमंसा

नयविवेक रहित, पुरुष तो पृथ्वीने विषे जारजूत छे, ते शा कामना जाणवा? इत्यर्थः॥३॥ आ काव्यमां लघु सुडतालीश,गुरु नव,सर्व छप्पन्न अक्षरो छे ॥३॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

सिद्धे जो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे॥ देवं नाग सुवन्न किन्नरगण, स्सप्भूय जावच्चिए ॥ लोगो जब पइठिउ जगमिणं, तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स जगवउ ॥ करेमि काउस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥इति॥१८॥

अर्थः–(जो के०) हे ज्ञानवंतलोको ! तमें जुउ (सिद्धे के०) सिद्धाय एटले फलना अव्यजिचारपणायें प्रतिष्ठित तथा नय निक्षेप प्रमाणादिकें करीने जे सिद्ध एटले निष्पन्न करेलो छे, अथवा जे कुतर्करहित स्याद्वादरूप छे वली जेने आराधीने जव्य जीव मोक्षफलप्रत्यें पामे छे. एवो (जिणमए के०) जिनमताय एटले जिनमत अर्थात् श्रीतीर्थंकर देवनी प्रकाशेलो जे सिद्धांत छे तेने (पयउ के०) प्रयतः एटले आदर सहित थको हुं, (णमो के०) नमस्कार करुं छुं. ते जिनमतना प्रसादथकी महारे (संजमे के०) संयम एटले चारित्र, तेने विषे (सया के०) सदा निरंतर, (नंदी के०) समृद्धि वृद्धि थाउ, ते संयम केहवो छे ? तो के (देवं के०) वैमानिक देवो, (नाग के०) नागेंद्रादि ते पातालवासी जवनपति देवो, (सुवन्न के०) सुपर्ण जे गरुडो तथा ज्योतिषी देवो, (किन्नर के०) व्यंतर देवो, ए चार प्रकारना देव, तेना (गण के०) समूहने जे (स्सप्भूयजाव के०) सद्भूतजावें एटले सत्यजावें करी (अच्चिए के०) अर्च्यो, पूज्यो छे. वली (जब के०) जे जिनमतने विषे (लोगो के०) त्रिकाल ज्ञान, (पइठिउ के०) प्रतिष्ठ्युं छे, कह्युं छे. वली जे सिद्धांतने विषे (तेलुक्क के०) अधोलोक, ऊर्ध्व लोक अने तीर्छोलोक, ए त्रण लोकमध्यें (मच्च के०) मृत्य एटले मनुष्य, (असुरं के०) जवनपति प्रमुख सर्व देवता अने उप

लक्षणथी नारकी, तिर्यंच पण लेवा. ए प्रकारनुं (जगमिणं के०) आ जगत् ज्ञेयत्वें प्रतिष्ठ्युं छे. एटले ए सर्व लोकनुं ज्ञान जे शास्त्रमां स्थाप्युं छे. अर्थात् आ सर्व जगत्,जे सिद्धांतना बलें करी जणाय छे,एवो (धम्मो के०) सिद्धांतरूपश्रुतधर्म, ते (वड्ढउ के०) वृद्धि यातु, वृद्धिने पामो. ते श्रुतधर्म नित्यपणामाटे अर्थ आश्रयी सदैव (सासउ के०) शाश्वतो छे तथा (विजयउ के०) परवादीयोने जींपवाथकी विशेषपणे करी जय वंतो छे. वली (धम्म के०) चारित्र धर्मनुं (उत्तरं के०) प्रधानपणुं जेम थाय, तेम ते श्रुतधर्म, (वड्ढउ के०) वृद्धिने पामो. एमां फरीने जे (व ड्ढउ) ए पद छे, ते ज्ञानवृद्धि करवी, एम देखाडवा माटें छे ॥ ४ ॥

(सुअस्सभगवउ के०) हे भगवंत ! ते श्रुतसिद्धांतने आराधवा भणी अथवा एवा श्रुतसिद्धांतरूप भगवंत तेने आराधवा भणी अथवा (भगव उ के०) महिमावंत जे सिद्धांत तेने आराधवाने निमित्तें (करेमि काउस्स ग्गं के०) हुं काउस्सग करुं छुं, पछी वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ भणी ने कायोत्सर्ग करे, तेनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ इति श्रुतस्तवसूत्रार्थः॥ ए काव्यमां लघु एकशठ, गुरु पंदर, सर्वाक्षर छोंतेर छे, "सुअस्स भगवउ" एटले सुधी गणतां लघु सडशठ,गुरु शोल, सर्व मली त्र्याशी अक्षरो छे. ए चारे गाथाउना मली लघु एक शो त्र्याशी,गुरु तेत्रीश मली सर्व अक्षर बशो ने शोल छे. एमां बे गाथा तथा काव्य पण बे छे ॥ इति ॥ १ए ॥ हवे सर्वक्रियाना परंपराफलभूत जे सिद्ध,तेने नमस्कार करवा माटें कहे छे.

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्ग मुअगयाणं, नमो सया सवसिद्धाणं ॥१॥

अर्थः-(सिद्धाणं के०) सर्व अर्थ सिद्ध कस्या छे जेणें, तेने सिद्ध क हियें. हवे ते सामान्यथी कर्मसिद्ध, विज्ञानसिद्ध, विद्यासिद्ध, ए पण सिद्ध कहेवाय छे? त्यां कहे छे के, (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः एटले ज्ञानव डे तत्त्वना जाण अर्थात् समस्त जगत्रयना स्वरूपने जेणें जाण्यां छे. वली (पारगयाणं के०) पारगतेभ्यः एटले संसारसमुद्रना पारप्रत्यें पाम्या छे, अथवा सर्व कार्यनो पार एटले अंत, ते प्रत्यें पाम्या छे माटे सिद्ध

कहियें. (परंपरगयाणं के०) परंपरागतेभ्यः एटले परंपरायें करीने अर्थात् मिथ्यात्व गुणस्थानकथी मांडीने अनुक्रमें चउदमा अयोगी गुणठाणा सुधी चडीने मोक्षप्रत्यें पहोता अथवा कर्मना क्षयोपशमादिकथी प्रथम शुद्ध सम्यक्दर्शन, पछी सम्यक्ज्ञान, पछी सम्यक्चारित्र पामी क्षपकश्रेणि करी. एवी परंपरायें करी अनुक्रमें मोक्षें पहोता. (लोअग्गमुवगयाणं के०) लोकाग्रमुपगतेभ्यः एटले लोकाग्रने विषे उपगत एटले पहोता सिद्धक्षेत्रप्रत्यें पाम्या, एवा (सवसिद्धाणं के०)सर्वसिद्धेभ्यः एटले तीर्थ, अतीर्थादिकभेदें पंदर प्रकारना जे सर्व सिद्ध, ते प्रत्यें (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ. आ गाथामां लघु त्रीश, अने गुरु पांच, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥ १ ॥

हवे ढुकडा निकट उपकारी माटें वर्त्तमान तीर्थंकर शासनना नायक श्री महावीरस्वामी छे, तेनी स्तुति जणे छे.

॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

अर्थः–(जोदेवाणविदेवो के०) योदेवानामपि देवः एटले जे देवोना पण देव छे,ते देवाधिदेव कहियें. वली (जं के०) जेमने (देवा के०) वैमानिक प्रमुख चार निकायना देवताउ,ते (पंजली के०) हाथ जोडी मस्तकें चढावीने (नमंसंति के०) नमस्कार करे छे. वली (देवदेव के०) देवताउनो देव जे इंद्र, तेणें (महिअं के०) पुष्पादिकें करी पूज्या छे. (तं के०) ते (महावीरं के०) श्रीमहावीरस्वामीप्रत्यें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदे के०) हुं वांडुं बुं. आ गाथामां सर्व मली चोत्रीश लघु अक्षरोज छे ॥ २ ॥

हवे नमस्कारनुं फल देखाडवाने आगल गाथा कहे छे.

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥
संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारीं वा ॥ ३ ॥

अर्थः–(जिणवर के०) सामान्य केवलीयोने विषे एटले श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी प्रमुख ते जिन कहियें, ते मध्यें वर एटले प्रधान एवा केवलज्ञानी जगवान् तेने जिनवर कहियें. ते केवलीयोने विषे (वसहस्स के०) वृषज सरखा छे, एटले तीर्थंकर नामकर्मना उदयथकी प्रधान छे. त्यां शंका

करे छे, के एवा तो ऋषजादि चोविशे तीर्थंकरो ग्रहण थाशे, तो त्यां कहे छे. के (वद्धमाणस्स के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी लेवा. तेने जावें करीने (इक्कोवि न मुक्कारो के०) एक वार पण नमस्कार कस्यो होय, एटले घणा नमस्कार तो अलगा रह्या, तथापि एक वारनो नमस्कार करवाथी पण दुःखें पार पमाय, एवो जे (संसारसागराउ के०) संसारसमुद्र तेथकी (तारेइ के०) तारे छे, एटले मोक्षपदवी आपे छे. ते कोने तारे छे ? तो के (नरं के०) नर प्रत्यें अने (व के०) वली (नारीं के०) नारीप्रत्यें (वा के०) अथवा कृत्रिम नपुंसकप्रत्यें तारे छे. अहीं कोइएक दिगंबरमतानुसारी स्त्रीने मोक्ष नथी, एम कहे छे. ते जूतुं कहे छे, केम के ? मोक्षनुं कारण जे ज्ञान,दर्शन,अने चारित्ररूप रत्नत्रयी छे, तेनुं आराधन करवुं तो, पुरुष तथा स्त्री बेहुने विषे समान छे, ते तो प्रत्यक्ष दीठामां आवे छे,माटे स्त्रीने मोक्ष जवामां कांइपण प्रतिबंध नथी॥आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु पांच,सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे॥३॥ए त्रण गाथा श्रीगणधरजीनी करेली छे ते माटें नियमपूर्वक कहेवी.

हवे आगली आवश्यकचूर्णीमांहेली बे गाथा, गुरुपरंपरागत छे, ते पण कहेवी. तेमां पहेली गाथायें श्रीगिरनारपर्वतमुखमंरुन सकलविघ्नसमूहविहंरुन, एवा श्रीनेमिनाथ जगवान्, तेमनी स्तुति कहे छे.

उज्जिंत सेलसिहरे, दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥४॥

अर्थः—(उज्जिंतसेलसिहरे के०) उज्जिंत शैलशिखरनी उपर एटले गिरनार पर्वतना शिखरनी उपर सहस्राम्रवनमांहे जेनां त्रण कल्याणक थयां छे, ते कहे छे. एक (दिस्का के०) दीक्षाकल्याणक, अने बीजुं (नाणं के०) ज्ञानकल्याणक, त्रीजुं (निसीहिआ के०) सकलव्यापार निषेधवा जणी निषेधिका एटले मोक्षकल्याणक, ए त्रण कल्याणक, (जस्स के०) जे स्वामीनां थयां छे. वली (धम्मचक्कवट्टिं के०) मिथ्यात्वादिक जाव शत्रुनो उछेद करवाथकी धर्मचक्रवर्त्तीसमान, (तं के०) ते (अरिठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि जगवानने (नमंसामि के०) हुं नमस्कार करुं छुं॥ आ गाथामां लघु सत्तावीश अने गुरु सात, मली चोत्रीश अक्षरो छे ॥४॥

त्रीजी गाथा श्रीअष्टापद प्रमुख तीर्थने नमस्कार करवा जणी कहे छे.

चत्तारि अठ दस दो, अ वंदिआ जिणवरा चउवीसं ॥
परमठनिठिअठा, सिध्धा सिध्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥२०॥

अर्थः—अष्टापद पर्वत उपर जरत चक्रवर्तीयें करावेलो एवो जे चतुर्मुख प्रासाद तेने विषे जेनां प्रतिबिंब बिराज्यां छे, त्यां दक्षिण दिशिने विषे संजवादिक (चत्तारि के०) चार अने पश्चिमदिशिने विषे सुपार्श्वजिनादिक (अठ के०) आठ तथा उत्तरदिशिने विषे धर्मजिनादिक (दस के०) दश तथा पूर्वदिशिने विषे ऋषजजिनादिक (दोअ के०) बे,ए सर्व एकठा मेल वीयें, तेवारें (जिणवरा चउवीसं के०) चोवीश तीर्थंकरो वर्तमान चोवीशीना थाय.ते केहवा छे?तो के (वंदिया के०) वंदित छे, एटले जेने इंद्रादिक वांदे छे. माटें वंदित छे,वली (परमठ के०) परमार्थें करी, पण कल्पनामात्रें नही, एटले सत्यार्थपणे करी जे (निठिअठा के०) निष्ठितार्थ थया छे, एटले (निष्ठित के०) स्थिर अचल कह्युं छे (अर्थ के०) सर्व प्रयोजन जेणें अर्थात् जे कृतकृत्य थया छे तथा (सिद्धा के०) सिद्ध थया छे, एटले पूर्णफलने पाम्या छे, एवा ऋषजादिक चोवीश जिनवर ते (मम के०) मुऊने (सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मोक्ष, ते प्रत्यें (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥५॥ ए गाथामां लघु उंगणत्रीश,गुरु आठ,मली साडत्रीश अक्षरो छे. ए गाथा जे प्रकारें श्रीगौतम स्वामीयें अष्टापद पर्वतनी उपर जइने देवनी वंदना करतां करतां करी छे, ते प्रकारेंज निबंधन थयेली छे. ए सिद्धस्तवमां बधी मलीने पांच गाथा छे, वीश पद छे, वीश संपदा छे, लघु एकशो ने एकावन अने गुरु पच्चीश, मली एकशो ने छहोंतेर अक्षरो छे ॥ २० ॥

हवे सवछ उचियकरण एम परमेश्वरें कह्युं छे,तेमाटें उचित करवा जणी श्रीवीतरागना वैयावच्चगर एवा जे सम्यग्दृष्टि देवता, तेना प्रत्ययने अर्थें काउस्सग्ग करवा सारु आवी रीतें कहेवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ वेआवच्चगराणं ॥

वेआवच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिठिसमाहिगराणं ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥ करेमि काउस्सग्गं अन्नछ० ॥

अर्थः—श्रीजिनशासननुं (वेआवच्चगराणं के०) वैयावच्च एटले सार

संघाना चिंताना करनार सान्निध्यकारी एवा जे गोमुख यक्ष, अने चक्रे श्वरी प्रमुख, (संतिगराणं के०) सर्वसंघने शांतिना करनार, क्षुद्रोपद्रवने उपशमना करनार, (सम्मद्दिठिसमाहिगराणं के०) सम्यग्दृष्टि जीवोने स माधि एटले चित्तनी एकाग्रताना करनार, एवा देवो आश्रयीने ॥१॥ (करे मि काउस्सग्गं के०) हुं कायोत्सर्ग करुं छुं. अहीं वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ न कहियें, जे जणी ते यक्षादिक देवो अविरतिपणे छे, माटें वांदवा पूजवा योग्य नथी तेथी 'अन्नछ उससीएणं' इत्यादिकज कहियें. अहींयां देवतानो काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्व लागे छे, ए रीतें केटलाएक कहे छे, ते जूवुं कहे छे, केम के? श्रीहरिजद्रसूरिकृत ललितविस्तरानी वृत्ति तथा श्रीहेमाचार्यकृत योगशास्त्रवृत्ति तथा आवश्यकचूर्णीमध्यें देवतानो काउ स्सग्ग करवो प्रगटज कह्यो छे, तथा श्रीवयरस्वामीयें गोष्ठामाहिल्ल निन्ह वने अर्थें तथा सुजद्रा श्राविकायें चंपानगरीनी पोल उघाडवाने अवसरें तथा मनोरमा श्राविकायें, सुदर्शन श्रेष्ठीने शूलीनुं संकट पडे थके देवताना काउस्सग्ग कीधा छे.एम घणे स्थलें सांजलियें छैयें, माटें सम्यग्दृष्टि जीवोने देवतानो काउस्सग्ग करवाथकी कांई पण दूषण नथी. आ सूत्रमध्यें अ ढार लघु, अने चार गुरु, मली बावीश अक्षरो छे ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुन्यः ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥

अर्थः—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, ए पांच परमे ष्ठिने महारो नमस्कार हो. ए सूत्र चौद पूर्वमांहेलुं छे एवो प्रघोष छे, तेजणी स्त्री जणवा न पामे ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ इंद्रवज्राछंद ॥

संसारदावानलदाहनीरं,संमोहधूलीहरणे समीरम्॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम्॥ १ ॥

अर्थः—(वीरं के०)श्रीवीर जगवान् प्रत्यें (नमामि के०) हुं नमस्कार करुं छुं. ते श्रीवीर केहवा छे ? तो के (संसार के०) चातुर्गतिकने विषे

संसरवुं एटले ज्रमवुं तेने संसार कहियें. ते संसाररूप (दावानल के०) वननो अग्नि तेनो (दाह के०) ताप, ते तापने उलववाने (नीरं के०) पाणी समान बे. वली केहवा बे ? तो के (संमोहधूली के०) मोह एटले अज्ञान तद्रूप धूली एटले रज तेना (हरणे के०) हरण करवाने (समीरं के०) पवन समान बे. तथा (मायारसा के०) कपटरूप जे रसा एटले पृथ्वी तेने (दारण के०) विदारवाने उखेडवाने (सार के०) प्रधान अत्यंत तीक्ष्ण एवा (सीरं के०) हल समान बे. वली केहवा बे ? तो के (गिरिसार के०) मेरुनी पेरें (धीरं के०) जे धीर बे, अचल बे, एटले पोताना स्वरूपने विषे अचल बे, एवा वीर जगवान् बे. आ श्लोकमां सर्व अक्षर चुम्मालीश बे, तेमां जारे अक्षर कोइ पण नथी ॥ १ ॥

॥ वसंततिलकाछंद ॥

॥ जावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलक-
मलावलिमालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमी-
हितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥

अर्थः–(तानि के०) ते प्रसिद्ध (जिनराजपदानि के०) जिनराजनां चरण, ते प्रत्यें (कामं के०) यथेबपणे (नमामि के०) हुं नमुं बुं. नमस्कार करुं बुं, ते श्रीजिनराजनां चरण केहवां बे ? तो के (जाव के०) जावें करीने (अवनाम के०) नम्या एवा जे (सुरदानवमानव के०) सुर ते वैमानिक अने ज्यौतिषिक देवता, तथा दानव ते पातालवासी जवनपति तथा व्यंतर देवता अने मानव ते मनुष्य, तेना जे (इन के०) स्वामी ठाकुर तेना (चूला के०) मस्तकने विषे जे मुकुट तेनी उपर रहेली एवी जे (विलोल के०) देदीप्यमान (कमलावलि के०) कमलनी श्रेणियो तेणें, (मालितानि के०) पूजित कस्यां बे, एटले पूज्यां बे. वली ते श्रीजिनराजनां चरण केहवां बे ? तो के (संपूरित के०) सम्यक् प्रकारें पूस्यां बे (अजिनतलोक के०) त्रिकरणशुद्धियें करी नमनार एवा जे जक्तलोको जव्यजीवो तेनां (समीहितानि के०) मनोवांबित जेणें एवां बे. आ श्लोकमां अक्षर बप्पन बे, जारे अक्षर कोइ पण नथी ॥ २ ॥

॥ मंदाक्रांताछंद ॥

बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरल लहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

अर्थः-(वीर के०) श्रीवीरजिन संबंधी जे (आगम के०) सिद्धांत तेरूप (जलनिधिं के०) समुद्र ते प्रत्यें, (सादरं के०) आदर सहित (साधु के०) सम्यक् प्रकारें (सेवे के०) हुं सेवुं बुं, ते श्रीवीरागमजल निधि केहवो बे ? एवी रीतें सर्वविशेषणोनी सार्थें कहेवुं, (बोधागाधं के०) बोध जे ज्ञान तेणें करीने अगाध एटले गंभीर बे, अथवा अगाध एटले अर्थें करीने गंभीर एवो बोध एटले यथार्थज्ञान बे जेने विषे, एवो बे. वली (सुपद के०) "धम्मोमंगलमुक्किठं" इत्यादि सुंदर पदोनी (पद वी के०) श्रेणीरचना ते रूप (नीरपूर के०) पाणीनो पूर जे समूह, तेणें करीने (अभिरामं के०) शोभायमान बे, मनोहर बे. वली केहवो बे ? तो के (जिवाहिंसा के०) जीवदयारूप एटले षट्काय जीवोनी रक्षारूप (अविरल के०) अंतररहित एवी (लहरी के०) लहेरीयो एटले तरंगो तेना (संगम के०) परस्पर मलवे करीने (अगाह के०) अगाध एटले अपार बे देहस्वरूप जेनुं,एटले बेदन भेदन करी नहीं शकाय एवो अने अगाध महागंभीर (देहं के०) देह एटले शरीर बे जेनुं, एवो वली (चूला के०) श्री सिद्धांतोनी जे चूलिकाउ बे, ते चूलिकारूपिणी (वेलं के०) वेलो बे जे समुद्रने विषे, वली जे (गुरु के०) महोटा एवा जे (गम के०) सरखा पाठ ते रूप (मणी के०) रत्नो तेणें करी (संकुलं के०) संकीर्ण बे भरेलो बे, वली (दूर के०) अत्यंत दूर बे (पारं के०) पार जेनो एटले जेनो कांठो घणो दूर बे, केम के ? समुद्रनी पेरें सिद्धांतनो पार पामवो महादुर्लभ बे, एटले संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलज्ञानी विना बीजाथी जेनो पार पमाय नहीं, एवो (सारं के०) प्रधान बे, पूज्य बे. माटें आ श्लोकमां सर्व अक्षर अडशठ बे, भारे अक्षर कोइ नथी ॥ ३ ॥

॥ स्नग्धरा छंद ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला, ऊं
कारारावसारामलदलकमलागारजूमीनिवासे॥ छायासंजा
रसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वाणीसंदोहदेहे जव
विरहवरं देहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ ७३ ॥

अर्थः-(देवि के०) हे श्रुतदेवि ! (मे के०) मुजने (सारं के०) प्रधान एवो (जवविरह के०) संसारनो जे विरह तेने मोक्ष कहियें, तेनो (वरं के०) वरदान एटले मोक्षसंबंधि वरदान, तेने (देहि के०) दे, आप. अहीं पांच संबोधनयुक्त एवी देवी छे,माटें ते पांच संबोधन कहियें छैयें. प्रथम (आमूल के०) मूल लगें (आलोल के०) चपल ते झोलतुं एवुं, वली (धूली के०) मकरंद सुगंधना कणीया तेना (बहुल के०) घणा (परिमल के०) सुगंध, तेने विषे (आलीढ के०) आसक्त मग्न एवा जे (लोल के०) चपल (अलि के०) जमराउ तेनी (माला के०) श्रेणी तेना (ऊंकार के०) गुंजार तेना (आराव के०) शब्द तेणें करीने जे (सार के०) प्रधान छे एवुं, वली (अमल के०) निर्मल एवां (दल के०) पांदडां तेणें करीने सहित एवुं (कमल के०) जे कमल, तेनी उपर, (आगार के०) जुवन छे एटले घर छे जेनुं, तेना मध्यजागनी (जूमी के०) जूमिने विषे शयन चेन करवानी अतिरमणीय शय्या छे तेने विषे (निवासे के०) निवास छे एटले वसवुं छे जेनुं ए प्रथम पदें करी प्रथम संबोधन जाणवुं. हवे वली (छाया के०) कांति तेनो जे (संजार के०) समूह ते समूहें करी (सारे के०) प्रधान छे माटें हे छायासंजारसारे! ए बीजा पदें करी बीजुं संबोधन जाणवुं. वली (वरकमल के०) प्रधान कमल छे जेना (करे के०) हाथने विषे तेना संबोधने हे वरकमलकरे! ए त्रीजुं संबोधन जाणवुं. वली (तार के०) देदीप्यमान एवा (हार के०) हारें करीने (अजिरामे के०) सुंदर छे हृदय जेनुं अथवा (तार के०) नेत्रनी कीकी छे(हार के०) सुरनरने हरावनारी जेनी तेणें करी (अजिरामे के०) सुंदर छे. अहीं हे तारहाराजिरामे! ए चोथें पदें करी चोथुं संबोधन जाणवुं. हवे (वाणी के०) द्वादशांगीरूप वाणी तेनो (संदोह के०) समूह

तेहीज छे (देहे के०) शरीर जेनुं, अहीं हे वाणीसंदोहदेहे ! ए पांचमा पदनुं पांचमुं संबोधन जाणवुं. आ श्लोकमां सर्व अक्षर चोराशी छे,जारे अक्षर कोई नथी ॥४॥ सर्व चारे गाथानां मली पद शोल छे, संपदा शोल छे, सर्व मली बशें ने बावन अक्षरो छे, एमां कोइ जारे अक्षर नथी ॥२३॥

॥ अथ कल्लाणकंदनी स्तुतिप्रारंजः ॥

॥ तिहां श्री जिनपंचकने वांदवानी पहेली थुइ कहे छे ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तउ नेमिजिणं मुणिंदं ॥
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, जत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

अर्थः—(कल्लाणकंदं के०) कल्याण एटले सुखवृद्धि तेना कंदं एटले मूल छे एवा, (पढमंजिणंदं के०) प्रथम जिनेंद्र जे श्रीऋषजदेव तेप्रत्यें तथा बीजा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ ते प्रत्यें (तउ के०) तेवार पछी त्रीजा (मुणिंदं के०) मुनिर्उने विषे इंद्र समान एवा जे श्री (नेमिजिणं के०) नेमि जिनेश्वर तेप्रत्यें, वली त्रण जुवनने विषे (पयासं के०) प्रकाश ना करनार, एवा (पासं के०) श्री पार्श्वनाथ तेप्रत्यें, वली चोथा (सुगुण के०) ज्ञानादि, दयादि अने क्षमादि, इत्यादिक अनेक गुण तेने सुगुण समूह कहियें. तेनुं (इक्कठाणं के०) एक अद्वितीय स्थानक एवा, (सिरिवद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमान जगवान् ते प्रत्यें (जत्तीइ के०) जक्तियें करीने (वंदे के०) हुं वांडुं बुं. आ काव्यमां लघु चालीश, गुरु चार, मली चुम्मालीश अक्षरो छे. ए जिनपंचकने वांदवारूप प्रथम थुइ थइ ॥ १ ॥

हवे सर्व तीर्थंकरोने वांदवानी बीजी थुइ कहे छे.

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सवे
जिणंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

अर्थः—(सवेजिणंदा के०) सर्वे जिनेंद्र जे छे, ते मुजने (सिवं के०) शिव जे मोक्ष, तेने (दिंतु के०) द्यो, आपो. ते समस्त जिनेंद्र केहवा छे ? तो के (अपारसंसारसमुद्दपारं के०)नथी जेनो पार एटले छेडो एवो जे संसाररूप समुद्र तेना पारप्रत्यें अंतप्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त एटले पाम्या छे. वली ते सर्वजिनेंद्र केहवा छे ? तो के (सुरविंद के०) देव

ताउंनां वृंद एटले समूह. तेने जे (वंदा के०) वांदवा योग्य ढे. वली ते सर्वे जिनेंद्र केहवा ढे ? तो के (कल्लाणवल्लीण के०) कल्याणरूप वेलीना (विसालकंदा के०) विस्तीर्ण महोटा कंद ढे मूल ढे, वली ते शिव कहेवुं ढे ? तो के (सुश्कसारं के०) शुचि एटले पवित्र जे वस्तुउं ढे, तेनुं एक सार ढे, अर्थात् जाणियें एक सारज काढेलो होय नहीं ? एवुं ढे. श्रा काव्यमां लघु श्राडत्रीश तथा गुरु ढ. मली चुम्मालीश श्रक्षरो ढे ॥ २ ॥

हवे ज्ञानवर्णनपूर्वक जिनमत नमनरूप त्रीजी थुइ कहे ढे.

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं ॥
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं॥३॥

श्रर्थः–(जिणाणं के०) जिनानां एटले जिन जे ढे तेमना (मयं के०) मत एटले श्री जिनमतप्रत्यें (निच्चं के०) नित्य एटले सदा निरंतर (नमामि के०) हुं नमुं बुं. ते श्री जिनमत केहवुं ढे? तो के (निव्वाणमग्गे के०) निर्वाण जे मोक्ष,तेना मार्गने विषे एटले मोक्षनगरनो ज्ञानादिरत्नत्रयरूप जे मार्ग ढे ते मार्गने विपे पहोंचाडवाने (वर के०) प्रधान एवुं (जाण के०) यान एटले रथ तेनी (कप्पं के०) कल्प एटले समान ढे. वली ते जिनमत केहवुं ढे ? तो के (पणासिय के०) श्रतिशयपणे करीने नाश कस्यो ढे (श्रसेस के०) संपूर्ण (कुवाइ के०) कुवादीयो एटले पाखंमीयो नो (दप्पं के०) दर्प एटले श्रहंकार जेणें, एटले कुवादीयो जे श्रन्यदर्शनीयो तेना श्रहंकारने जेणें संपूर्ण नाश कस्यो ढे. एवुं जिनमत ढे. वली जिनमत केहवुं ढे ? तो के (बुहाणं के०) बुधानां एटले जे पंमितो ढे, तेने (सरणं के०) शरण ढे, श्राधारजूत ढे, जेम पक्षीयोने श्राकाश श्राधारजूत ढे, तेनी पेरें जाणवुं. वली ते श्री जिनमत केहवुं ढे ? तो के (तिजग के०) त्रण जगतने विषे (प्पहाणं के०) प्रधान ढे. एमां लघु श्राडत्रीश श्रने गुरु ढ, सर्व मली चुम्मालीश श्रक्षरो ढे ॥ ३ ॥

हवे शासनना श्रधिष्ठायिक देव, देवीना वर्णननी चोथी थुइ कहे ढे.

कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥ ७४ ॥

अर्थः–(सा के०) ते (वाएसरी के०) वागीश्वरी एटले श्रुतदेवी सरस्वती (अम्ह के०) अमने (सया के०) सदा निरंतर, (सुहाय के०) सुखाय एटले सुखने माटें थाओ. इति शेषः ॥ हवे ते वागीश्वरी केहवी छे? तो के (कुंद के०) मचकुंद जातिनां फूल, (इंदु के०) चंद्रमा, (गोक्खीर के०) गायनुं दूध तथा (तुसार के०) हिम, ए चारनी परें उज्ज्वल छे, (वन्ना के०) वर्ण जेनो, वली ते वागीश्वरी केहवी छे ? तो के (सरोजहत्था के०) सरोजहस्ता छे. तिहां (सरोज के०) कमल तेणें करी सहित छे (हत्था के०) हाथ जेनो एटले हाथमां कमल धारण कर्युं छे. वली ते वागीश्वरी केहेवी छे ? तो के (कमले के०) कमलमां (निसन्ना के०) बेसवुं छे, रहेवुं छे जेनुं एवी छे. वली ते वागीश्वरी केहवी छे ? तो के पुत्थयवग्गहत्था छे. तिहां (पुत्थय के०) पुस्तकनो जे (वग्ग के०) वर्ग एटले समूह, ते (हत्था के०) जेना हाथने विषे छे. वली ते श्रुतदेवी केहवी छे? तो के (पसत्था के०) प्रशस्ता एटले श्रीसंघनी भक्ति विद्यादानादिक करवाथकी प्रशस्त छे, उत्तम छे ॥ ४ ॥ आ गाथामां लघु पांत्रीश तथा गुरु नव, सर्वाक्षर चुम्मालीश छे, ए चारे गाथामां पद शोल, संपदा शोल, लघु एकशो एकावन्न, गुरु पच्चीश, सर्वाक्षर एकशो छोंतेर छे ॥ इति ॥२४॥

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुतिप्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम वर्द्धमानस्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे, रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया, वक्त्रं यस्य पुनःपुनःस जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः॥१॥

अर्थः–(शच्या के०) इंद्राणी जे तेणें (मेरुशिखरे के०) मेरु पर्वतना शिखरने विषे (स्नातस्य के०) नवराव्या अने (अप्रतिमस्य के०) निरुपम

एवा (विज्ञोः के०) वीरजगवान् तेना (शैशवे के०) बालकपणाने विषे (रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या के०) रूपनुं आलोकन जे जोवुं, ते थकी उपन्यो एवो जे विस्मय कहेतां आश्चर्य तद्रूप आहृत एटले जोगव्यो एवो जे रस कहेतां पारो, तेनी जे भ्रांति तेणें करी (भ्रमच्चक्षुषा के०) भ्रमती नाम अरही परही थाती ढे चक्षु जेनी एवी इंद्राणीयें (नयनप्रज्ञा धवलितं के०) नेत्रनी प्रज्ञा जे कांति तेणें करी धवलित एटले उज्ज्वल कर्युं एवुं (यस्य के०) जे प्रजुनुं (वक्रं के०) मुख, ते (क्षीरोदक के०) क्षीरसागरनुं जल, तेनी (आशंकया के०) आशंकायें करीने (उन्मृष्टं के०) लूब्युं ढे, एवा (श्रीवर्द्धमानोजिनः के०) श्रीवर्द्धमानजिन जे श्रीवीर जगवान् (सः के०) ते (पुनःपुनः के०) वारं वार (जयति के०) उत्कृष्टा वर्ते ढे ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीया सर्वजिनस्तुतिः ॥

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांजोजृतैः, कुंजै
रप्सरसां पयोधरजरप्रस्पर्द्धिजिः कांचनैः ॥ येषां
मंदररत्नशैलशिखरे जन्माजिषेकः कृतः, सर्वैः स
र्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥

अर्थः—(सर्वैः के०) सर्व एवा (सर्वसुरासुरेश्वरगणैः के०) सर्व नाम समग्र सुर, असुर तेना ईश्वर जे इंद्र, तेना गण जे समूह, तेमणें (हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांजोजृतैः के०) हंस जे राजहंसो तेनी अंस जे पांखो तेणें करी हत नाम उमाडी एवी पद्मरेणु जे कमलनी रज, तेणें करी कपिश नाम रातुं पीलुं थयुं एवुं क्षीरांज जे क्षीरसमुद्रनुं जल तेणें करी जृतैः नाम जस्या एवा अने (अप्सरसांपयोधरजरप्रस्पर्द्धिजिःके०) अप्सराउंना पयोधर जे स्तन तेमनो जर जे समूह तेनी साथें प्रस्पर्द्धिजिः एटले अतिस्पर्द्धाना करनार एवा (कांचनैः के०) कांचनना (कुंजैः के०) कलशोयें करीने (मंदररत्नशैलशिखरे के०) मंदररत्न जे मेरुनामा शैल जे पर्वत, तेना शिखरे नाम शिखरने विषे (येषां के०) जे जिनोनो (जन्माजिषेकः के०) जन्माजिषेक, ते (कृतः के०) करेलो ढे, (तेषां के०) ते सर्व जिनोनां (क्रमान् के०) चरणकमलप्रत्यें (नतोऽहं के०) हुं नमेलो ढुं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीया द्वादशांगस्तुतिः ॥

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं,चि
त्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मो
क्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं भक्त्या
नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

अर्थः–(अर्हद्वक्त्रप्रसूतं के०) अर्हत् जे अरिहंत तेनुं वक्त्र जे वदन ते थकी प्रसूतं नाम प्रगट थयुं,अने (गणधररचितं के०) गणधर कहेतां गणध रोयें रचितं नाम रचना कर्युं अने (चित्रं के०) आश्चर्यकारि तथा (बह्वर्थ युक्तं के०) बह्वर्थ ते घणा अर्थो तेणें करी युक्तं नाम सहित तथा (बुद्धिमद्भिः के०) बुद्धिमंत एवा (मुनिगणवृषभैः के०) मुनिगण एटले साधुजनोनो स मुदाय तेना वृषभ एटले नायकोयें (धारितं के०) धारण कर्युं एवुं अने (मोक्षाग्रद्वारभूतं के०) मोक्षरूपगृह तेनुं अग्रद्वार केहतां मुख्यद्वार समान तथा (व्रतचरणफलं के०) व्रत अने चरण, जे चारित्र तेनुं फल छे जेमां एवुं, अने (ज्ञेयभावप्रदीपं के०) ज्ञेयभाव ते जाणवा योग्य भाव तेने विषे प्रदीप नाम दीपक समान एवुं अने(सर्वलोकैकसारं के०)सर्व लोकने विषे एकसारं कहेतां अद्वितीयसारभूत एवुं (अखिलं के०) समग्र (विशालं के०) विशाल एवुं (द्वादशांगं के०) द्वादशांगरूप (श्रुतं के०) सिद्धांत तेने (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (नित्यं के०) निरंतर (अहं के०) हुं (प्रपद्ये के०) अंगीकार करुं छुं ॥ ३ ॥

॥ अथ कार्यसिद्धिप्राप्त्यर्थं चतुर्थ सर्वानुभूतिनामा यक्षस्तुतिः ॥

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं
घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्य
नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूति
र्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति ॥२५॥

अर्थः–(निष्पंकव्योमनीलद्युतिं के०) निष्पंक एटले वादळे रहित एवुं

व्योम जे आकाश. तेनी द्युति जे कांति तेना सरखी नील एटले श्याम बे कांति जेनी एवो, तथा (अलसदृशं के०) अलस एटले मदघूर्णित बे नेत्र जेना तथा (बालचंद्राजदंष्ट्रं के०) बालचंद्र एटले बालचंद्रमानी आजा जे कांति तेना सरखी दंष्ट्रा एटले दाढो बे जेनी एवा (मत्तं के०) मदोन्मत्त, अने (घंटारवेण के०) घंटाना रवेण नाम शब्दनी साथें (प्रसृतमदजलं के०) प्रसृत नाम प्रसरतुं एवुं जे मदजलं एटले मदवारि तेप्रत्यें (समंतात् के०) सर्व जगायें (पूरयंतं के०) पूरावतो एवो (दिव्यनागं के०) दिव्यरूप नाग जे हस्ती ते प्रत्यें (आरूढः के०) बेठो एवो बतो (कामरूपी के०) स्वेबाचारी तथा (कामदः के०) काम जे मनोरथ तेने देनारो एवो (सर्वानुजूतिः के०) सर्वानुजूतिनामा (यक्षः के०) यक्ष बे, ते (गगने के०) आकाशने विषे (विचरति के०) विचरे बे. ते (मम के०) मुजने (सदा के०) निरंतर, (सर्वकार्येषु के०) समग्रकार्योने विषे (सिद्धिं के०) सिद्धिने (दिशतु के०) आपो ॥ ४ ॥ इति ॥ २५ ॥

॥ अथ गुरुवांदणां प्रारंजः ॥

हवे गुरुवंदन वखाणियें बैयें. ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारें बे. तिहां प्रणाममात्र जे फेटावंदन, ते जघन्यवंदन कहियें. अने जे खमासमण आपी विधियें करी वांदीयें, ते थोज वंदनने मध्यमवंदन कहियें, तथा उत्कृष्ट तो द्वादशावर्त्त वंदन गुणवंत गुरुने पगे आपीयें. ते आवी रीतें.

त्यां गुरुने वांदणां देतां उंघो, मुहपत्ती, ए बे उपकरण साधुने जोइयें, अने श्रावकने मुहपत्ती, तथा चरवलो ए बे जोइयें. ए मुहपत्ती अने रजोहरण लेवाना अक्षर, साधुने तथा श्रावकने साधारणपणे श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनी वृत्तिमध्यें प्रकटज बे तथा केवल श्रावक आश्रयी पण आवी रीतें अक्षर कह्या बे, "सामाइअ कडस्स समणोवासगस्स चउविहे धम्मोवगरणे पन्नत्ते. तं जहा ठवणायरिअत्ति मुहपत्तीअत्ती जवमालियत्ति दंकपाउपुब्रणगंचत्ति" ए आलावो श्रीअनुयोगद्वारनी चूर्णीमध्यें बे, तथा वली जो "मुहपत्तियं अपडिलेहित्ता वंदणं देई गोयमा तस्स गुरुअं पायब्रितं हविज्जा" ए आलावो व्यवहारचूर्णीमध्यें बे. तथा "गंतु पोसह सालाए, ठावितु ठवणायरियं ॥ मुहपत्तिअं पमज्जंतो, सीहो गिण्हइ पोसहं ॥ १ ॥" ए श्लोक विवाहचूलिकाग्रंथें सिंहश्रावने पोसह ले

वाने अधिकारें छे, तथा "पावरणं मुत्तूणं. गिण्हीता मुहपत्तिश्रं ॥ वत्थ काय विसुद्धीए, करेइ पोसहाइयं ॥ १ ॥ ए श्लोक श्री व्यवहारचूर्णी मध्यें छे. इत्यादिक वचनथकी ए बे उपकरण टाली बीजां कल्पक, कांबली प्रमुख साधुने तेमज पछेडी प्रमुख श्रावकने कांहि पण राखवुं न सूजे. तथा छेहडे वांदणां दीधां न सूजे अने साधवीने तथा श्राविकाने वस्त्र होय ते थकां वांदणां देवानो व्यवहार छे,त्यां प्रथम खमासमण देइ,आदेश मागी. मुहपत्ती पडिलेही,शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा करी,ए मुहपत्तीनी पच्चीश पडिलेहणा तथा शरीरनी पच्चीश पडिलेहणानी गाथा अर्थ सुधां आ पडिक्कमणामां आगल आवशे;मूलगे जांगे पोताना पगने चरवले करी पूंजवा.

हवे वांदणां देतां जे पच्चीश आवश्यक साचववां जोइयें, ते विगतें करी कहे छे. गुरुथी चार दिशायें उंठ उंठ हाथ प्रमाण साधु श्रावकनी अपेक्षायें अवग्रह राखवो एटले पोताना देहप्रमाण ते अवग्रहनुं क्षेत्र जाणवुं,अने साधवी तथा श्राविकानी अपेक्षायें तेर हाथनो अवग्रह जाणवो, ते मध्यें कोइ कार्यने अर्थे आचार्यनी अनुज्ञा मागीने अवग्रहमांहे प्रवेश करवो,ते आवी रीतें केः—अवग्रह बाहिर रह्यो शिष्य.पणछ चडावेला धनुष्यनी पेठें नम्रकाय छतो बे हाथ जोडी मुखें मुहपत्ती आपी, "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एटलुं कहेतो पोतें गुरुने वांदवानी इच्छा जणावे.पछी लगारेक नीचो नमीने "अणुजाणह मे मिउग्गहं" कहे. ए नीचुं नमवारूप प्रथम आवश्यक जाणवुं, पछी वली शिष्य मुखथकी निसीहि कहेतो रजोहरणें करी आगली जूमि पूंजतो प्रमार्जतो अवग्रहमांहे प्रवेश करे. ए अवग्रहमांहे प्रवेश करवारूप बीजुं आवश्यक जाणवुं. पछी संकासादिक पडिलेहतो अधुगडो बेशीने गुरुना चरण समीपें रजोहरण मूकी, मावे हाथे मुहपत्ती लेइ ते मुहपत्तीयें करी मावा कर्णथी आरंजीने दक्षिण कर्ण पर्यंत ललाट पूंजी प्रमार्जी वली तेणें करीज मावो जानु पूंजी तिहां मुहपत्ती मूकी 'अहोकाय' इत्यादिक कहेतो त्रण आवर्त्त करे, ते आवी रीतें केः—बेहु बाहु लांबा करी, पसारी, कूर्परें साथल अणस्पर्शतो गुरुना चरण उपरें संलग्न, बेहु हाथनी दश आंगुली लगाडतो मुखें (अ) अक्षर कहे, पछी तेमज दश आंगुली पोताने ललाटें लगाडतो (हो) अक्षर कहे, ए बेहु अक्षरें एक आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (यं) ए बेहु अक्ष

रने उच्चारवे बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (य) ए बे अक्षरें त्रीजो आवर्त्त थाय. पछी संफासं शब्द कहेतो गुरुने पगें मस्तक लगाडे. वली बेहु हाथ कमलकोशने आकारें जोडी, माथे चडावी "खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो" एवो पाठ कहे. पछी बेहु हाथ मस्तकथी उतारी जत्ता भे इत्यादि कहेतो वली पण त्रण आवर्त्त करे, तिहां पूर्वली पेरें दश आंगली सामसामी करी, गुरुने पगें हाथ लगा डतो पहेलुं (ज) अक्षर मंदस्वरें कहे, बीजुं हाथउपाडतो (त्ता) अक्षर मध्यमस्वरें कहे, त्रीजुं (भे) अक्षर ललाटें हाथ फरसतो उंचेस्वरें कहे. ए त्रण स्थानकें त्रण अक्षर उच्चारतां प्रथम आवर्त्त थाय. तेवी रीतेंज वली (ज) (व) (णि) ए त्रण अक्षर त्रिविधसादें करी त्रण स्थानकें उच्चारतां बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (ज्जं) (च) (भे) ए त्रण अक्षर पूर्व रीतें उच्चारतां त्रीजो आवर्त्त थाय, एवं ठ आवर्त्त थया. पछी बे हाथ अने म स्तक गुरुने पगे लगाडी "खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं" कहे. पछी उभो थइ रजोहरणें करी पाछली भूमि प्रमार्जतो मुखथकी "आवसि आए" कहेतो थको अवग्रहथी बाहेर नीकले. ए अवग्रहमध्येथी बाहेर नीकलवा रूप आवश्यक जाणवुं. पछी उभो रही बे हाथे योगमुद्रा पगे जिनमुद्रा साचवतो "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक संपूर्ण छेहडा पर्यंत सूत्रनो उच्चार करे. एमज वली बीजुं वांदणुं पूर्वली रीतेंज करे, पण एटलुं विशेष जे बीजे वांदणें "आवसिआए" ए पद न कहे, एटले अवग्रहथी बाहेर नीकलवुं नही, स्थानकेंज उभो रही "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक सूत्रनो उच्चार करे. ए वांदणां देतां मनोगुप्ति एटले मनमांहे एक ध्यानपणुं करवुं. वचनगुप्ति एटले बे वांदणांनी वचमां बीजुं कांही बोलवुं नहीं, कायगुप्ति एटले शरीर आघुं पाछुं हलाववुं नही. ए त्रण गुप्तिरूप त्रण आवश्यक जाणवां. तथा "खमणिज्जोभेकिलामो" इत्यादिक कहेतां जे, मस्तकें बे हाथ चडावीयें छैयें, तेने यथायात आव श्यक कहियें. जे भणी जन्मसमयें जेम बालक बे हाथ मस्तकें चडावी नेज जन्मे छे, तेम ए पण छे, ते भणी यथाजात एवुं नाम जाणवुं.

हवे ए पच्चीश आवश्यकनो शरवालो मेलवे छे. बेहु वांदणे थइ बे वार नीचुं नमवारूप बे, बेहु वांदणांना बार आवर्त्त, गुरुचरणें चार वखत

मस्तक नमाडवुं ते रूप चार, बे वार अवग्रहमां पेसतां नीचुं नमवा रूप बे, एकवार अवग्रहथी बाहेर नीकलवा रूप एक, बीजे वांदणें अवग्रहथी नीकलवुं नथी माटें एकज कह्युं. त्रण गुप्ति अने एक यथाजात, एवं पच्चीश. आवश्यक ते अवश्य करवा माटें आवश्यक एवुं नाम कहेलुं छे. ए गुरुवंदन संबंधि विशेष बोल आश्चर्यी विचार, गुरुवंदनभाष्य, तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथमां छपाइ गयाथी अहींयां विस्तार कस्यो नथी.

हवे वांदवाने उजमाल थयेलो एवो शिष्य, विधिपूर्वक मुहपत्ती पडिलेही वली पोतानुं शरीर पडिलेही लगारेक काय नमावतो बे हाथे उंघो, चरवलादिक ग्रहण कस्यां छे जेणें एवो अवग्रहथी बाहिर रह्यो थको मुखें मुहपत्ती देइ आ प्रमाणें वांदणांना सूत्रनो पाठ कहे, ते कहे छे.

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्ज ए निसीहिआए ॥१॥

अर्थः-(खमासमणो के०) हे क्षमादिक गुणें प्रधान ! अहींया क्षमा ते सहन कहियें तथा श्राम्यति एटले संसारना विषयने विषे जे खिन्न छे अथवा तपश्चर्या करे छे, तेने श्रमण कहियें, एटले सहनशील जे श्रमण तेने क्षमाश्रमण कहियें,आहिं क्षमा शब्दना ग्रहणें करीने मार्दव,आर्जवादिक गुणोनी पण सूचना करी छे.वली क्षमा शब्दें करी तेमने वंदनयोग्यत्व सूचन कस्युं छे, एवा हे क्षमाश्रमण ! तमोने (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले जेणें करी कालक्षेप करीयें काल गमावियें तेने यापनीया कहियें, ते शक्तियें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन छे जेमां, तेने निषेधिकी तनु एटले शरीर कहियें.अर्थात् जीवहिंसादिक निवृत्तिरूप प्रयोजनवाळुं शरीर जाणवुं. आ ठेकाणें नैषेधिक्या ते विशेष्य छे अने यापनीयया ते विशेषण छे.एटले पोतानी शक्तियें करी सहित एवुं निषेधिकी जे शरीर,तेवा शरीरें करी तमने (वंदिउं के०) वांदवाने (इच्छामि के०) अभिलषामि एटले हुं इच्छुं छुं, वांछुं छुं. ए पदें करीने बलाभियोगनो त्याग करवानी सूचना करी, एटले हे श्रमणगुणयुक्त ! हुं शक्तिसमन्वित छतो प्रतिषेध करी छे पापक्रिया जेणें एवो थको तमोने वांदवाने इच्छुं छुं. ए प्रथम शिष्यनुं वचन सांभलीने ते वखतें जो गुरु कोइ कार्यमां विक्षेपचित्तवंत होय

तो 'तिविहेण' एवो शब्द कहे एटले मन, वचन अने काया, एम त्रिविधें करी संक्षेपेंज वांदो. एवा अर्थवालुं गुरुनुं वचन सांजली शिष्य पण संक्षेपेंज वांदे अने जो गुरुनुं चित्त, कोइ कार्यादिकमां विक्षेप न होय तो 'छंदेण, एवो शब्द कहे एटले महारे निराबाध छे सुखशाता छे, माटें जेम तमारो छंद एटले अभिप्राय होय, इछा होय तेम वांदो. ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं. ए पांच पदनुं प्रथम स्थानक थयुं ॥ १ ॥

पछी शिष्य तिहांज रह्यो थको, लगारेक नीचो नमीने नीचें प्रमाणें पाठ कहे.

अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥ २ ॥

अर्थः—गुरु पासेंथी चारे दिशायें (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले मान करेलो एवो जे स्वदेहप्रमाण अवग्रह, एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्र, तेमांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुजने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो. एटले आज्ञा आपो, ए बीजुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे. (अणुजाणामि के०) हुं आज्ञा आपुं छुं. ए बीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक थयुं ॥ २ ॥

हवे बार पदनुं त्रीजुं स्थानक कहे छे.

निसीहि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कंतो ॥ ३ ॥

अर्थः—पछी शिष्य निसीहि कहेतो थको एटले (निसीहि के०) एक गुरुवांदणां विना निषेध्यो छे अन्यक्रियारूप व्यापार जेणें एवो छतो मित अवग्रहमांहे विधिपूर्वक प्रवेश करीने बेसीने संमासां पूंजी रजोहरण पग उपर मूकी अने मुहपत्ती साधु माबा ढींचण उपर मूके तथा श्रावक चरवला उपर मूके, ते मूकीने बे हाथ पोताना ललाटें लगाडी गुरुनां चरण प्रत्यें स्पर्शवाने अर्थे आवी रीतनो पाठ कहे, ते कहे छे. (अहोकायं के०) अधःकायं एटले अधः प्रदेशनो छेहलो भाग, तेने पग कहियें. अर्थात् हेठी काय ते गुरुना पगलक्षण जाणवी. ते तमारा पगप्रत्यें (काय के०) महारा हाथ अने ललाटें करी रूडी रीतें (संफासं के०) स्पर्शवुं छे तेनी आज्ञा आपो. ते गुरुनी आज्ञा पामीने गुरुनां चरण प्रत्यें पोताने हाथे तथा मस्तकें करी रूडी रीतें स्पर्शे, पछी उंचो थइ

मस्तकें बे हाथ चडावी गुरुनी संमुख दृष्टि राखी, " खमणिज्जो भे " इत्यादिक पद कहे, ते आवी रीतें के, हे जगवंत! तमारां चरण स्पर्शतां जे कांइ आपने (किलामो के०) क्लम एटले जे कांइ ग्लानि उप जावी होय, खेद उपजाव्यो होय, एटले महारे जीवें जे कांइ तमारे शरीरें पीडा उपजावी होय, ते पीडारूप जे खेद, तेने (भे के०) जवद्भिः एटले तमोयें (खमणिज्जो के०) खमवायोग्य ठे. एटलुं कहीने पठी वली पण शिष्य, दिवस संबंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप गुरुने पूछे, ते आवी रीतें:- (बहुसुन्नेण के०) बहुशुन्नेन एटले बहु शुन्नें करीने क्षेमकुशलें करीने अर्थात् घणा समाधिजावें करीने (भे के०) जवतां एटले तमारो (दिव सो के०) दिवस, निराबाधपणे (वइक्कंतो के०) व्यतिक्रांत थयो, एटले वीत्यो, तमें केहवा ठो? तो के (अप्पकिलंताणं के०) अल्प ठे क्लांत एटले ग्लानिपणुं जेमने एवा, अर्थात् अल्पवेदनावाला एवा तमें ठो. अहीं रात्रिना अनुष्ठानने विषे 'राइउं वइक्कंतो' अने पाक्षिकना दिवसने विषे 'पक्खो वइक्कंतो' तथा चउमासीना दिवसने विषे 'चउम्मासिउं वइक्कंतो' तेमज संवत्सरीना दिवसने विषे 'संवछरो वइक्कंतो' एवा पाठ कहेवा. ए त्रीजुं शिष्यनुं वचन थयुं. ए सांजलीने गुरु कहे के, तहत्ति एटले तथेति अर्थात् जेम तमें पूछ्युं तेमज अमारो दिवस समाधिमांहेज गयो ठे ॥ इति जावः ॥ ए त्रीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए बार पदनुं त्रीजुं स्थानक थयुं ॥ ३ ॥

ए रीतें शरीरसंबंधी सुखशाता गुरुने पूछीने हवे वली शिष्य तप नियमादिक संयमसंबंधि वार्त्ता गुरुने पूछवाने अर्थें गुरुना पगने विषे पोतानुं ललाट फरसतो आवर्त्त करतो, आवी रीतें पाठ कहे ठे.

जत्ता, भे ॥ ४ ॥

अर्थः-हे करुणासमुद्र! (जत्ता के०) तप, नियम, संयम, स्वाध्याय रूप यात्रा, ते (भे के०) जवतां एटले तमारे अव्याबाधपणें वर्त्ते ठे? ए चोथुं शिष्यनुं वचन थयुं, ते सांजलीने गुरु कहे के, (तुप्नंपि वट्टए के०) तुज्यमपि वर्त्तते एटले जेम मुजने वर्त्ते ठे, तेम तुने पण वर्त्ते ठे? ए गुरुनुं पण चोथुं वचन जाणवुं. ए बे पदनुं चोथुं स्थानक थयुं ॥ ४ ॥

जवणिज्जं, च, भे ॥ ५ ॥

अर्थः–(च के०) वली नियममां राखवा योग्य पदार्थ संबंधि वार्त्ता, शिष्य पूछे छे. (जवणिज्जं के०) यापनीयं एटले इंद्रिय अने नोइंद्रियोना उपशमादिक प्रकारें करी निराबाध शरीर. (भे के०) भवतां एटले तमारुं छे ? अर्थात् इंद्रिय अने नोइंद्रियोयें पीडित नहीं एवुं तमारुं शरीर छे? ए पांचमुं शिष्यनुं वचन सांभलीने गुरु कहे, (एवं के०) एमज छे. ए गुरुनुं पण पांचमुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक थयुं ॥ ५ ॥

खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कमं ॥ ६ ॥

अर्थः–वली शिष्य, रजोहरण उपर हाथ तथा मस्तक मूकीने कहे के, (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! (देवसियं के०) दिवससंबंधि (वइक्कमं के०) व्यतिक्रम एटले अवश्यकरणीय विराधनारूप महारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खामुं छुं. ए छहुं शिष्यनुं वचन सांभलीने गुरु कहे के, (अहमवि खामेमि के०) अहमपि क्षमयामि एटले में पण सारणावारणादिक करवाने विषे,जे प्रमाद किधो होय. ते हुं पण तने खमावुं छुं. ए गुरुनुं पण छहुं वचन थयुं, एटले छ शिष्यनां वचन प्रश्नरूपें अने छ गुरुनां वचन उत्तररूपें कह्यां, ए चार पदनुं छहुं स्थानक थयुं ॥ ६ ॥ ए छए स्थानकना मलीने ओगणत्रीश पद थयां ॥

पछी शिष्य, पगे जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो उभो रही वली पाछली वातनेज विशेषपणे पूछतो नीचें प्रमाणें कहे.

आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए,जं किंचि, मिच्छाए,मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए,कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए,सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, अइआरो, कओ, तस्स, खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥ २६ ॥ अहींयां बीजी वारने वांदणें 'आवस्सिआए' ए पद न कहेवुं ॥

अर्थः—हवे शिष्य,रजोहरणें करी पाछली भूमिका पूंजी मितअवग्रहथी बाहेर नीकलतो 'आवसियाए पडिक्कमामि' कहेतो थको निकले एटले (आवसिआए के०) अवश्य कर्त्तव्य जे चरणसित्तरी अने करणसित्तरी रूप क्रिया पडिलेहण प्रमुख व्यापार, ते सेवतां, पालतां, जे अतिचार लाग्यो होय, मातुं आचर्युं होय, तेथकी (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निवर्त्तुं छुं. (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण संबंधिनी (देवसिआए के०) दिवसने विषे थइ, एवी जे (आसायणाए के०) आशातना खंडना, ते आशातनायें करीने. ते केवी आशातनायें करीने ? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातनामांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने. वली केवी आशातनायें करीने? तो के (जंकिंचिमिछाए के०) जे कांइ कूडुं आलंबन लइने मिथ्याभाव वरताव्यो होय, ते किंचित् मिथ्याभावरूप आशातनायें करीने. वली बीजी पण केहवी आशातनायें करीने ? ए रीतें आगल पदें पदें कहेतां जवुं, (मणडुक्कडाए के०) मनःसंबंधी जे दुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करीने, अर्थात् प्रद्वेष मनें करी तथा (वयडुक्कडाए के०) वचनसंबंधी दुष्कृत ते असभ्य पुरुषादिक वचनें करी जे दुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी, (कायडुक्कडाए के०) कायासंबंधि ते आसन, गमन स्थानादिक जे दुष्कृत एटले पाप ते रूप आशातनायें करी, (कोहाए के०) क्रोधभाव ते विनयभ्रंशादिक जे दुष्कृत एटले पाप ते रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मानरूप आशातनायें करी, (मायाए के०) माया एटले कपट ते रूप आशातनायें करी, (लोहाए के०) लोभरूप आशातनायें करी, (सवकालिआए के०) सर्वकाल ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमानकालने विषे गुरुनां अविनयादिक जे थयां, ते रूप आशातनायें करी. अहिंयां कोइ पूछे, जे अनागत कालनी शी आशातना थइ ? तेने कहियें जे अनागत कालें कदापि कोइ समयें गुरुने आमंत्रणें कोइ एक प्रकारें अनिष्ट अविनयादिक थइ जाय,एवुं चिंतव्युं होय,तत्संबंधि अनागत कालनी आशातना जाणवी.(सवमिछोवयाराए के०) सर्व मिथ्याउपचाररूप एटले सर्व कूड, कपट, क्रियारूप आशातनायें करीने (सवधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्म ते आठ प्रवचनमातारूप अथवा सर्वधर्मनी जे करणी, तेने अतिक्रमवा उल्लंघवारूप आशातनायें करीने.

ए पूर्वोक्त प्रकारनी सर्व (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) महारे जीवें, (अइआरो के०) अतिचार दोष, (कउ के०) कस्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारप्रत्यें (खमा समणो के०) हे क्षमाश्रमण ! तमारी समीपें (पडिक्कमामि के०) हुं प्रति क्रमुं बुं. मिछामि डुक्कड देउं बुं. फरी तेम हुं नहिं करुं, (निंदामि के०) डुष्ट कर्मकारी आत्माने हुं निंदुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, एटले विशेषें निंदुं बुं. (अप्पाणं के०) डुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्यें (वोसिरामि के०) हुं वोसिरावुं बुं, एटले बोडावुं बुं. अर्थात् आशातना करवी, ते कालसंबंधि पाप सहित अत्माने हुं त्यागुं बुं. ए प्रथम वांदणुं थयुं. तेमज बीजुं वांदणुं पण एवीज रीतें जाणवुं, परंतु तेमां एटलुं विशेष जे तिहां अवग्रहथी नी कलवुं नथी, माटें त्यां आवसियाए एवो पाठ न कहेवो ॥ ३ ॥ ए वां दणांना सूत्रमध्यें पच्चीश आवश्यक, अठावन पद, तथा पच्चीश गुरु अने बशे ने एक लघु, सर्व मली बशें ने बविश अक्षरो छे. इति गुरुवंदनसू त्रार्थः ॥ ए रीतें सर्व बोल साचवतो जे गुरुने ज्ञावसहित वांदणां आ पे, तेनां अनेक ज्ञवनां संच्यां कर्म, क्षय थइ जाय. परंतु ज्ञाव विना अल्प फल होय. जेम श्रीकृष्ण, ज्ञावसहित साधुने वांदतां क्षायिक स म्यक्त्व पाम्या. तथा सातमी नरक योग्य शिथिल आयुःकर्म उपार्जन कस्तुं हतुं, ते संक्रमण करणें करी टालीने त्रीजी पृथिवीयोग्य कीधुं, अने वीराशालवीने ड्व्यथी वांदणां देतां मात्र पोताना स्वामीनी अनुवर्त्तना टाली, पण बीजुं कांइ फल थयुं नहीं ॥ इति सुगुरुवांदणां ॥ २६ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि॥
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा ज्ञणिउ ॥ १ ॥

अर्थः– (नाणंमि के०) ज्ञानने विषे, (दंसणंमि के०) दर्शनने विषे (अ के०) वली (चरणंमि के०) चारित्रने विषे, वली (तवंमि के०) तपने विषे, (तहय के०) तथा (विरियंमि के०) वीर्यने विषे, (आयरणं के०) जे आचरण एटले व्यापार, तेने (आयारो के०) आचार कहियें. अथवा ए ज्ञानादिक पांचनुं जे आचरण एटले व्यापार, तेने आचार क

हियें, जेम ज्ञान आश्रयी ज्ञानाचार, ए रीतें सर्वने विषे केहवुं. (इअ के०) ए प्रकारें (एसो के०) ए प्रत्यक्ष, (पंचहा के०) पंचधा एटले पांच प्रकारें आचार, ते (नणिउ के०) श्रीतीर्थंकरें कह्यो बे ॥ १ ॥

हवे त्यां प्रथम ज्ञानाचार कहे बे.

काले विणए बहुमाणे,उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥
वंजण अह्न तडुनए, अठविहो नाणमायारो ॥२॥

अर्थः–प्रथम (काले के०) जे कालें, जे अवसरें, जे नणवानुं होय, ते कालें तेज अवसरें तेज नणवुं, तेने काल कहियें. बीजो (विणए के०) ज्ञानीनुं अज्युह्रान वंदनादिक उचित साचववुं तेने विनय कहियें, त्रीजो (बहुमाणे के०) ज्ञानी तथा ज्ञानने विषे अंतरंग प्रेम करवो, तेने बहुमान कहियें. चोथो (उवहाणे के०) नवकारादिक सूत्रोना तपोविशेष उपधान योग्यनुं वहेवुं, तेने उपधान कहियें. (तह के०) तथा पांचमुं (अनिण्हवणे के०) नणावनार जे विद्यागुरु, तेने उलववो नहिं विसारवो नहिं, तेने अनिण्हवण कहियें. बहो (वंजण के०) सूत्र अक्षर, शुद्ध नणवो खोटुं न नणवुं, शुद्धोच्चार करवो, तेने वंजण कहियें. सातमो (अह्न के०) अर्थ शुद्ध नणवो, आठमो (तडुनए के०) सूत्र अने अर्थ, ए बहु शुद्ध नणवा, ए (अठविहो के०) आठ प्रकारें (नाणमायारो के०) ज्ञानाचार जाणवो. ए आठ प्रकारें ज्ञानना आचार जेम कह्या बे, तेमज करियें. तेने ज्ञानाचार कहियें, अने तेथी विपरीत करियें, तो अतिचार लागे ॥ २ ॥

हवे दर्शनाचार कहे बे.

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिह्ना अमूढदिठी अ॥
उववूह थिरीकरणे, वह्नल्ल प्पनावणे अठ ॥ ३ ॥

अर्थः–प्रथम श्रीवीतरागना वचनमां शंका न करवी. एकांतें सत्य मानवुं ते (निस्संकिअ के०) निःशंकित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, बीजो स्याद्वादरूप श्रीजिनमत विना बीजा अन्यमतनी आकांक्षा एटले वांग न करवी, लगारेक तप क्षमादिक गुण देखी, परदर्शननो अनिलाष करवो नहीं,

ते (निक्कंखिअ के०) निःकांक्षित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, त्रीजो धर्मना फलमां संदेह न आणवो, एटले श्रीजिनधर्मने विषे क्रिया अनुष्ठानादिक ना फलने विषे संदेह करवो नहिं, अथवा साधु, साधवीनां मलमलिन शरीर तथा वस्त्र देखी, दुगंछा करवी नहीं, निंदा करवी नहीं, ग्लानि कर वी नहीं, ते (निव्वितिगिछा के०) निर्विजुगुप्स पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. चोथुं अज्ञानी, मिथ्यात्वीनां क्रिया, कष्ट, कांइ करामत चमत्कार देखीने तेनी उ पर व्यामोहित न थावुं, तथा ए लोकोमां पण कांइक छे? एवो पण मनमां विचार न करवो. तथा श्री जिनशासनने विषे नवतत्त्व समाचारी प्रमुखमां मुंफावुं नहिं, तेमां प्रवीण होवुं, ते (अमूढदिठीअ के०) अमूढदृष्टि पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. पांचमुं सम्यक्त्वधारी गुणवंतना अल्पगुणनी पण श्रद्धा पूर्वक प्रशंसा करवी, मुखें करी प्रकाशवी, ते (उववूह के०) उपबृंहक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. छठुं श्रीजिनधर्मथकी पडता प्राणीने सहाय आ पीने धर्ममां स्थिर करवो, अथवा जे जीव, श्रीजिनधर्म नथी पाम्या, ते जीवने हितोपदेशादिकनुं सहाय आपीने श्रीजिनधर्मने विषे स्थापवो, स्थिर करवो, ते (थिरीकरणे के०) स्थिरीकार पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, सा तमो साधर्मिकनी विशेषजक्ति करवी तथा सर्व जीवने विषे करुणा, मैत्री जावना करवी, ते (वछल के०) वात्सल्यपुरुषनुं लक्षण जाणवुं. आठमो जे रीतें अन्य दर्शनी लोक पण जैनशासननी अनुमोदना करे, मिथ्यात्व मत मूकीने जैनमतने आदरे, तेम करवुं, एटले एवां कार्य करवां, के जे थकी जैनशासन दीपे, घणां लोक बोधबीज पामे, ते (प्पजावणे के०) प्राजाविक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, ए (अठ के०) आठ लक्षण दर्शनाचार नां जाणवां. आहिं लक्षण शब्दें आचार ग्रहण करवो. एवी रीतें प्रवर्त्तवुं, ते ने दर्शनाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥ ३ ॥

हवे चारित्राचार कहे छे.

पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥
एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

अर्थः-(पणिहाणजोग के०) प्रणिधान एटले स्थिरयोग, संयम व्यापार, तेणें करी एटले एकाग्र सावधानपणे करी मन, वचन, तथा कायाना

योग सर्व चारित्र पालवाने विषे (जुत्तो के०) युक्त होय एवो, (एसचरित्ता यारो के०) ए चारित्राचार, ते (पंचहिं समिइहिं के०) पांच समिति तेणें करी तथा (तिहिंगुत्तीहिं के०) त्रण गुप्ति तेणें करी (अठविहो के०) अष्टविध एटले आठ प्रकारें (होइ के०) छे, ते (नायव्वो के०) जाणवो. ते अष्ट विध जे पांच समिति अने त्रण गुप्तिनां नाम आगल नवकारना अर्थमां श्री आचार्यनां विशेषणमां आव्यां छे, माटें अहीं नथी लख्यां. ए आठ बोलें प्रवर्त्तवुं, तेने चारित्राचार कहियें, अने ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति न पाले, तो चारित्राचारना अतिचार लागे, तेमाटें साधुने निरंतर अने श्रावकने सामायिक पोसह लीधे ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति अवश्य पालवी ॥४॥

हवे तपाचार कहे छे.

वारसविहंमिवि तवे, सभ्भिंतर बाहिरे कुसलदिठ्ठे ॥
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥

अर्थः—(सो के०) ते (तवायारो के०) तपाचार, ते (बारस विहंमि वि तवे के०) वार प्रकारना तपने विषे अपि एटले निश्चें (नायव्वो के०) जाणवो. ते तपाचार केहवो छे ? तो के (अगिलाइ के०) ग्लानि भाव एटले दुगंछाभाव रहित छे एटले तप करतां दुगंछा करीने तेनो भंग करे नहीं, वली (अणाजीवी के०) अशनादिक आजीविकायें करी रहित छे, एटले हुं जो तप करुं, तो तपस्वी कहेवाउं ? पेट भराइ चाले ? मने लोको तपस्वी जाणी धन प्रमुखवडे महारी भक्ति करे ? एवी बुद्धिथी तप न करवुं, वली ते द्वादशविध तप केहवुं छे? तो के (सभ्भिंतरबाहिरे के०) छ भेद अभ्यंतर, अने छ भेद बाह्य सहित छे. वली केहवुं छे? तो के (कुसल के०) तीर्थंकरोयें (दिठ्ठे के०) उपदिष्युं छे, प्रकाश्युं छे एवा तपमां प्रवर्त्तवुं, तेने तपाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥ ५॥

हवे ए तपाचारमां बाह्य तपना छ भेद विवरीने कहे छे.

अणसण मूणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥
कायकिलेसो संली, णयाय बज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥

अर्थः—पहेलुं (अणसणं के०) अशनादिक चार आहारनो त्याग थोडा

काल लगें करवो अथवा जावजीव पर्यंत करवो, ते अनशन तप जाणवुं. बीजुं (ऊणोयरिया के०) ऊनोदरिका एटले वस्त्र, पात्र, ऊंडां करवां, अथवा जूख करतां पांच सात कोलिया ऊंडा जमवा तथा कषायनी न्यूनता करवी, तेने ऊनोदरिका तप कहियें. त्रीजुं (वित्तीसंखेवणं के०) द्रव्यादिक चार प्रकारना अजिग्रहें करीने जे वृत्ति एटले आजीविका तेनो संक्षेप करवो, तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. जेम के साधु होय, ते द्रव्यादिक चारथी संक्षेप करे, त्यां वहोरवा जतां साधु घरनी संख्या करे, जेम के पांच, सात अथवा एटलेज घेरथी जो सूजतो आहार मले, तो लेवो, न मले तो उपवास करवो. अने श्रावकें तो सवारनुं पच्चक्काण करतां दश, पंदर, किं वा जेटलां द्रव्य मोकलां राख्यां होय, तेमांथी वली बे त्रण द्रव्य ऊंडां करवां. एवा प्रकारना अजिग्रह करे, तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. चोथुं (रसच्चाउ के०) विगयादिक रसनो त्याग करवो, एटले छ विगयमांथी एक बे विगयनो त्याग करवो, तथा लीलोतरी प्रमुखनो जे नियम लेवो, तेने रसत्याग तप कहियें. पांचमुं (कायकिलेसो के०) कायोत्सर्ग करवो. वीरासन, पद्मासन, तथा उत्कटासनादिक आसन करवां. जेम तेम कायाने पीडवी, टाढ तापनी आतापना लेवी, लोच कराववो, उघाडे पगे चालवुं, जूमि उपर शयन करवुं, इत्यादिक प्रकारें करीने शरीरने कष्ट देवुं, तेने कायक्लेश तप कहियें. छठुं (संलीणयाय के०) विषयकषायने उदीरवा नहीं, जे उदय आव्या तेने निःफल करवा, अशुज योगनुं निवारवुं, शुजयोगमां प्रवर्त्तवुं; स्त्री, पशु, नपुंसक रहित स्थानक सेववुं, कुकडीनी पेरें हाथ, पग, प्रमुख अंगोपांग संवरी राखवा, तेने संलीनता तप कहियें. ए छ प्रकारें (बह्योतवो के०) बाह्य तप (होइ के०) छे ॥ ६ ॥

हवे प्रथम कहेला अज्यंतर तपना छ जेद विवरीने कहे छे.

पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सद्याउ ॥
ऊाणं उस्सग्गो विच्य, अप्निंतरउ तवो होई॥७॥

अर्थः—प्रथम (पायच्छित्तं के०) दोष लागे थके गुरु गीतार्थनी आगल सरल मनवडे पापरूप अपराध प्रकासे, पछी ते अपराधनो निवारण

करवाने अर्थे गुरु जे आलोचनादिक एटले प्रायश्चित्तादिक आपे,ते रूडी रीतें करे, तेने प्रायश्चित्ततप कहियें.

बीजुं (विणर्ड के०) ज्ञानादिक सात प्रकारनो विनय करवो,ते विनयतप, अथवा वली आठ प्रकारें गुरुनो विनय करवो,ते कहे छे, एक गुरुने देखी उजा थवुं, बीजुं गुरुने आवता देखी सामे जवुं,त्रीजुं गुरुने देखी हाथ जोडी मस्तकें चढाववा, चोथुं गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, पांचमुं पोतें आसने बेसवानुं मूकी देवुं, छठुं ज्यां सुधी गुरु उजा होय, त्यां सुधी उजा रहेवुं, सातमुं गुरुने वांदणां देवां,गुरुनी पर्युपासना एटले सेवा करवी, विसामण करवा, तथा आठमुं गुरु जाय, तेवारें तेनी पाछल वोलाववा जवुं. ए आठ प्रकारें पण विनयतप कहियें.

त्रीजुं (वेआवच्चं के०) वैयावृत्त्य तप करवुं, ते आहारादिक आणी आपवा, केड पगादिक चांपवा प्रमुख आचार्यादिक दश पुरुषोनी जक्ति करवी, एटले आचार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तपस्वी, नवदीक्षित साधु, साधर्मी, कुल, ते जे एक आचार्यनां संतान तेने कुल कहियें, तथा गछ, ते जे घणा आचार्यनां संतान एकठां थयेलां होय, तेने गछ कहियें, तथा संघ, ते साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका तद्रूप ते संघ. ए दशनुं जे वैयावृत्त्य करवुं, तेने वैयावच्च तप कहियें. (तहेव के०) तेमज वली.

चोथुं (सज्झार्ड के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, तेने स्वाध्यायतप कहियें. त्यां एक वांचना एटले जणवुं, बीजी पृछना ते संशय टालवाने पूछवुं, त्रीजी परावर्त्तना एटले विसरी गयेलुं संजारवुं. चोथी अनुप्रेक्षा एटले तत्त्वचिंतवना करवी, पांचमी धर्मकथा एटले तीर्थंकरादिक गुणिजननी कथा करवी. ए पांच ज्ञेद, सज्झायतपना जाणवा.

पांचमुं (झाण के०) ध्यानतप ते आर्त्त रौद्रध्याननुं निवारवुं अने धर्म तथा शुक्ल, ए बे शुज्रध्याननुं ध्यावबुं, ए बे प्रकारें ध्यानतप जाणवुं.

छठुं (उस्सग्गो के०) परवस्तुनो त्याग करवो, कर्मना क्षय निमित्तें कायोत्सर्ग करवो, तेने कायोत्सर्गतप कहियें. (अपि के०) निश्चें, ए छ ज्ञेदें (अप्निंतरर्ड तवो के०) अज्यंतर तप (होइ के०) छे ॥ ७ ॥

अणिगूहिअ बल विरिउ, पडिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥
जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥ इति ॥२७॥

अर्थः-(अणिगूहिअ के०) अनिगूहित छे, अणढांकेलुं छे एटले प्रगट छे, (बलविरिउं के०) बल वीर्य जेनुं, वली (जो के०) जे (जहुत्तं के०) यथोक्त एटले जेम श्रीतीर्थंकर देवें कह्युं छे, तेमज (पडिक्कमइ के०) पराक्रम करे छे, एटले उद्यम करे छे. अर्थात् शरीरनुं बल अने मननुं वीर्य, ए बेहुने अणगोपवतो थको मनमां उत्साह धरतो थको,वचनें धर्मव्यापार करतो छतो, खेदने अणपामतो थको, धर्मने विषे उद्यम करे छे. वली जे (आउत्तो के०) उपयुक्त थको, एटले सावधान थको, (जहाथामं के०) पोताना बलने अनुसारें पोतानीशक्ति प्रमाणें (जुंजइ के०) जोडे, लागे, एटले प्रवर्त्ते, ते शेनेविषे प्रवर्त्ते ? तो के धर्मकार्यने विषे प्रवर्त्ते. ते (वीरिआयारो के०) वीर्याचार, (नायव्वो के०) जाणवो. ए त्रण प्रकारें वीर्याचार कह्यो ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥ हवे आ नीचें लखेली गाथा मुनिराज, काउस्सग्गमां चिंतवे, ते लखियें छैयें.

सयणासणन्नपाणे, चेइय जइ सिद्य काय उच्चारे ॥ समिई जावण गुत्ती, वितहायरणे अईयारो ॥ १ ॥ अर्थः-(सयण के०) सुवाना संथारिया प्रमुख, (आसण के०) बेसवाना आसन, बाजोठ प्रमुख, (अन्नपाणे के०) अशन, पान, खादिम, स्वादिम, (चेइय के०) चैत्यवंदन, (जइ के०) यति, ते साधुजक्ति अज्युछानादिक, (सिद्य के०) शय्या, वसति, उपाश्रय, (काय के०) लघुनीति, ते पीशाब, (उच्चारे के०) वडीनीति ते थंडिल परठवानो विधि, (समई के०) ईर्यादिक पांच समिति, (जावण के०) अनित्यादिक बार जावना तथा पंच महाव्रतनी पच्चीश जावना, (गुत्ती के०) त्रण गुप्ति ए सर्व बोल, (वितह के०) वितथपणे एटले असत्यपणे विपरीतपणे (आयरणे के०) आचरवाथकी अंगीकार करवाथकी (अईयारो के०) अतिचार होय, एटले ज्ञानादिक आत्मगुण मलिन थाय ॥ इति गाथार्थः ॥१॥ इति ॥२७॥

॥ अथ देवसिअंआलोउं लिख्यते ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् देवसिअं आलोउं॥ इच्छं आ लोएमि जो मे देवसिउ अइयारो कउ काइउ वाइउ माण सिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो ङज्जाउ ङविचिं तिउ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दं सणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सि क्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि ङक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थः–(जगवन् के०) हे जगवन्! (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी पण कोइना बलात्कारें नहीं, (संदिसह के०) मुजने आदेश आपो. (देवसिअं के०) दिवससंबंधि जे अतिचार उपन्या, ते प्रत्यें (आलोएमि के०) आ एटले मर्यादायें करी अथवा समस्तपणे करी लोएमि एटले हुं प्रकाशुं बुं. अहियां रात्रि होय, तो राइसंबंधि अतिचार प्रकाशुं बुं.एम कहेवुं. ए रीतें शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे के आलोह, एटले आलोचो प्रकाशो. पढी शिष्य कहे, (इच्छं के०) हुं पण इच्छुं बुं, तमारुं वचन अंगीकार करुं बुं.(आलोएमि के०)हुं आलोउं बुं, एटले मर्यादायें करी संपूर्णजावें करी हुं प्रकाशुं बुं. (जो के०) जे (मे के०) महारे जीवें, (देवसिउ के०) दिवस संबंधियो (अइआरो के०) अतिचार दोष(कउ के०) कीधो होय, एटले लगाड्यो होय, ते अतिचार, अनेक प्रकारें बे. माटें तेना प्रकारो कहे बे. (काइउ के०) कायासंबंधी (वाइउ के०) वचन संबंधी (माणसिउ के०) मनःसंबंधी एटले काया, वचन अने मनः संबंधियो अतिचार बे. तेमां प्रथम काया अने वचन संबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे बे. (उस्सुत्तो के०) उत्सूत्र एटले जिनागमथी विरुद्ध बोलवुं ते हेतुथी उत्पन्न थयुं तथा (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग ते क्षायोपशमिक जावरूप मार्ग, ते प्रत्यें अतिक्रमि उलंघीने औदयिकजावें करी एटले मिथ्यात्व कषायादिक जावें करी कीधो थाप्यो जे उन्मार्ग,ते उन्मार्गना

योगें करी नीपन्यो जे (अकप्पो के०) अकल्पः एटले कल्प जे विधि ते चरणकरणव्यापार, तेथकी अ एटले रहित ते अकल्प कहियें, ते अकल्पपणाना हेतुथकी उत्पन्न थयो जे (अकरणिज्जो के०) अकरणीय एटले जे करवा योग्य नहीं, एवा कार्यने करवे करी, एम अहींयां हेतुहेतुमद्भाव छे, ते आवी रीतें के, जेमाटें उत्सूत्र, ते माटेंज उन्मार्ग ; अने जेमाटें उन्मार्ग, तेमाटेंज अकल्प, जेमाटें अकल्प, तेमाटेंज अकरणीय कहियें. एटले काय अने वचनसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कह्युं.हवे मनःसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. (दुज्झाउ के०) दुर्ध्यान ते चित्तने एकाग्रपणे आर्त्त रौद्रध्याननुं ध्याववुं,जेमाटें दुर्ध्यान, तेमाटेंज(दुव्विचिंतिउ के०)दुर्विचिंतित एटले जे चल चित्तपणे करी दुष्ट अशुभकार्यनेज मनमां चिंतववुं,जेमाटें ते दुर्विचिंतित,ते माटेंज(अणायारो के०)अनाचार कहियें.एटले जेथकी व्रतादिकनो सर्वथा भंग थाय,जेमाटें ते अनाचार,तेमाटेंज(अणिच्छियव्वो के०)अनेष्टितव्यःएटले जे इछवा वांछवा योग्य नथी,जेमाटे ते अनेष्टितव्य,तेमाटेज (असावगपाउग्गो के०) नथी श्रावकने प्रायोग्य एटले श्रावकने उचित नथी. इति मनः संबंधि अतिचार.हवे ए सर्व अतिचार.शेने विषे लगाड्या होय?ते कहे छे.

(नाणे के०) निजपरसत्तारूप वस्तुनुं यथार्थ जाणपणारूप जे ज्ञान, तेने विषे, (दंसणे के०) देवादिक त्रण तत्त्वनुं साचुं श्रद्धानरूप जे दर्शन, तेने विषे, (चरित्ताचरित्ते के०) कांइएक विरतिरूप, कांइएक अविरति रूप एवुं जे देशविरतिरूप श्रावकनुं चारित्र,तेने विषे.अथवा ज्ञानादिक निजगुणमांहे देशथकी जे स्थिरता, ते रूप जे चारित्राचारित्र तेने विषे. एहीज वली कहे छे. (सुए के०) श्रुतसिद्धांतने विषे अकाले स्वाध्याय इत्यादिक अतिचार लगाड्यो होय, (सामाइए के०) सम्यक्त्वरूप सामायिकने विषे जिनवचनने विषे शंकादिक अतिचार लगाड्यो होय. ए चारित्राचारित्रसंबंधि अतिचार,प्रतिभेदें करी कहे छे. (तिण्हंगुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति. ए त्रण गुप्तिने अणपालवे करी. (चउण्हंकसायाणं के०) क्रोध, मान, माया अने लोभ, एवा चार कषायने करवे करी (पंचण्हमणुव्वयाणं के०) एक स्थूलप्राणातिपातविरमण, बीजुं स्थूलमृषावादविरमण, त्रीजुं स्थूलअदत्तादानविरमण, चोथुं स्थूलमैथुनविरमण, पांचमुं स्थूलपरिग्रहविरमण, ए पांच अणुव्रतमांहेथी

तथा (तिण्हंगुणव्वयाणं के०) एकदिशि परिमाणव्रत, बीजुं उपन्नोगपरि न्नोगपरिमाणव्रत, त्रीजुं अनर्थदंडविरमणव्रत, ए त्रण गुणव्रतमांहेथी तथा (चउण्हंसिख्खावयाणं के०) एक सामायिकव्रत, बीजुं देशावकाशिक व्रत, त्रीजुं पौषधोपवासव्रत, चोथुं अतिथिसंविन्नागव्रत, ए चार शिक्षाव्रतमांहेथी, घणुं शुं कहियें ? परंतु (बारसविहस्स के०) ए पूर्वोक्त द्वादशविध एटले बार प्रकारना व्रतरूप (सावगधम्मस्स के०) श्रावक संबंधी जे धर्म ते मांहेथी मह्यारे जीवें (जंखंमियं के०) जे खंड्युं, एटले देशथकी नंग कीधो, (जंविराहियं के०) जे विराध्युं एटले सर्वथकी नंग कीधो, (तस्स के०)तेहनुं (डुक्कड के०) डुष्कृत एटले पाप, ते (मि के०) मने जे लाग्युं ते (मिछा के०) मिथ्या थाउं, एटले निष्फल थाउं ॥ १ ॥ एमां लघु अक्षर एक शो उंगणचालीश अने गुरु अक्षर उंगणत्रीश, सर्व मली एकशो ने अडशठ अक्षरो छे ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंडिय, बे लाख तेंडिय, बे लाख चौरिंडिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंडिय, चौद लाख मनुष्य, एवंकारें चोराशी लाख जीवायोनिमांहे महारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ २९ ॥ एनो अर्थ सुगम छे ॥

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान,

आठमे माया, नवमे लोज, दशमे राग, इगियारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नर मे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषा वाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य. ए अढार पापस्थानकमां हि मढारे जीवें जे कोइ सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवताप्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सर्वे मनें, वचनें, काया यें करी तस्स मिछा मि छुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

अर्थः—परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो ते प्रथम प्राणातिपात. जूठुं बो लवाना परिणाम, ते बीजुं मृषावाद. पारकी वस्तु धणीना दीधा विना चो री लेवानी रुचि, ते त्रीजुं अदत्तादान. विषयसुखनी वांछारूप परिणाम ते चोथुं मैथुन. नव प्रकारें बाह्य अने चौद प्रकारें अभ्यंतर परिग्रहनी वांछा,ते पांचमो परिग्रह. कोइनी उपर आकरा तीव्र परिणामें क्रोध करवो, ते छठो क्रोध. आठ प्रकारें मद करवो, ते सातमुं मान. कपटसहित लोकने देखाडवा रूप धर्मकरणी करवी, ते आठमी माया. धन, शरीर, कुटुंब, परिवाररूप संप दाने एकठी करवानी तथा राखवानी घणी वांछा, ते नवमो लोज. पौजलिक परवस्तु उपर राग धरवो, ते दशमो राग. पोताने अणगमती वस्तु उपर अरुचिजाव, ते अगीयारमो द्वेष. कोइ पण कारणें क्लेश करवानी रुचि, ते बारमो कलह. परजीवने अणदीठुं अणसांजल्युं आल देवुं, ते तेरमुं अज्याख्यान. पारकी चामी करवी, ते चौदमुं पैशुन्य. सुख छुःख आवे ह र्ष शोक धरवो, ते पंदरमुं रति अरतिनामा पापस्थानक कहियें. गुणी किं वा निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, ते शोलमो परपरिवाद कहियें. अंतरमां बीजी वात होय अने बाहेर मुखथकी मीठुं बोलवुं, इत्यादिक अनेक प्रका रें छल करीने लोकोने ठगवाना परिणाम, ते सत्तरमो माया मृषावाद. पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम, ते अढारमुं मिथ्यात्व शल्य नामा पापस्थानक जाणवुं. ए अढार प्रकारें जे जीवने चित्तमां पापरूप जाव उत्पन्न थाय, तेने जावपाप कहियें अने ते जावनी चिकाशें करी

जे जीवने सत्तायें कर्मनां दलीयां लागे, तेने द्रव्यपाप कहियें, ते द्रव्यपापनां दलियां सत्तायें बंधाणां, ते आगल जावपणे तिर्यंच तथा नारकीना जव पामीने ब्याशी प्रकारें जोगवाय॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथ देवसिअपडिक्कमणे ठाउं ॥

सबस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ, डुप्भासिअ, डुच्चिछिअ, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३१ ॥

अर्थः–आ सूत्रनो अर्थ, आगल सबस्सवि नामा साडत्रीशमुं सूत्र आवशे, तेना अंतरगत आवी जाशे, माटें आहीं नथी लख्यो ॥ १ ॥३१॥

॥ अथ श्रावकपडिक्कमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र ॥

वंदित्तु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

अर्थः–(सब के०) सर्व सर्वज्ञ एटले सर्व वस्तुने जाणे, सर्वना हितवांछक एवा तीर्थंकर तेमने, तथा (सिद्धे के०) सिद्ध जे अष्ट कर्मना क्षय थकी पूर्ण थयां छे अर्थ प्रयोजन जेमनां तेमनें,तथा (धम्मायरिए के०) धर्माचार्य जे श्रुतचारित्ररूप धर्म, तेना आचारने विषे श्रेष्ठ तथा धर्मना दातार तेमने, तथा (अ के०) चशब्दथकी उपाध्याय जे सिद्धांतना जणावनार ते पण लेवा, तेमने तथा (सबसाहू के०) सर्व साधु ते स्थविरकल्पिकादिक जिनकल्पी प्रमुख अनेक प्रकारना साधु मोक्षना साधनार तेमने, (अ के०) अकार ते समुच्चयार्थवाचक छे. एटले ए पांच पद जे छे, तेमने (वंदित्तु के०) वांदीने नमस्कार करीने एटले ए पांचेने सर्व विघ्नोपशांतिने माटें वंदन करीने, (सावगधम्माइआरस्स के०) श्रावकधर्मने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, तेथकी एटले एकशो ने चोवीश अतिचारथकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमवाने निवृत्तवाने (इच्छामि के०) हुं इछुं छुं, वांछुं छुं.अहिं अतिचार शब्दनो अर्थ आवी रीतें छे,के जे आत्माना गुणने मलिन करे,तेने अतिचार कहियें ॥ १ ॥

हवे सामान्यप्रकारें सघला व्रतना अतिचार पडिक्कमवाने अर्थें कहे छे.

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा,तं निंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥

अर्थः—(वयाइयारो के०) बार व्रतना अतिचार पंचोतेर छे, केम के ? अगीयार व्रतना तो प्रत्येकें पांच पांच अतिचार छे. अने एक सातमा व्रतमध्यें कर्मादानना पंदर अतिचार अंतर्भूत आवे छे,अने पांच मूल सातमा व्रतना अतिचार मेलवतां वीश थाय. ए रीतें सर्व मली पञ्चोतेर अतिचार थाय, (तह के०) तथा (नाणे के०) ज्ञानना आठ अतिचार,ते 'काले विणए' इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार,तेने विपरीतपणे आचरवाथकी होय, (दंसणे के०) दर्शन सम्यक्त्वना तेर अतिचार छे.तेमां शंकादिक पांचने सेववाथकी पांच अतिचार तथा 'निस्संकिय निक्कंखिय' इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचारने अणसेववाथकी आठ अतिचार, सर्व मली तेर अतिचार थाय तथा (चरित्ते के०) चारित्राचारना आठ अतिचार,ते पांच समिति अने त्रण गुप्तिने अणपालवाथकी अथवा विपरीतपणे पालवाथकी थाय, (अ के०) चशब्दथकी तपाचारना बार अतिचार, ते 'अनशन ऊणोदरी' इत्यादिक बार प्रकारनो तपाचार तेने विपरीत पणे आचरवाथकी होय. वीर्याचारना त्रण अतिचार, ते छती सामर्थ्यें मन, वचन अने कायायें करी धर्मने विषे उद्यम अणकरवाथकी होय, अने संलेषणा मरणांत आराधनाना इह लोक परलोकनी वांछा इत्यादिक पांच अतिचार छे. ए सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारमध्येंथी (सुहुमो के०) सूक्ष्म ते जे जाणवामां नहिं आवे, ते जाणवो. (अ के०) वली (वा के०) अथवा (बायरो के०) बादर जे प्रगट जाणवामां आवे, ते जाणवो. ए सूक्ष्म अथवा बादर अतिचारमांहेलो (जो के०) जे अतिचार,(मे के०) महारे हुउं होय, (तं के०) ते अतिचारप्रत्यें (निंदे के०) आत्मसाखें हुं निंदुं छुं. हवे वली नहिं करुं. (च के०) वली (तं के०) ते अतिचारप्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसमक्ष हुं गर्हुं छुं, एटले निंदुं छुं ॥२॥

हवे जे जे व्रत छे, ते ते व्रतना अतिचार पण प्रायः परिग्रहथकी उपजे छे, तेमाटें प्रथम सामान्यपणे परिग्रह आश्रयीने पडिक्कमवाने कहे छे.

दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सवं ॥ ३ ॥

अर्थः-(डुविहे के०) बे प्रकारना (परिग्गहंमि के०) परिग्रह छे, तिहां एक द्विपद चतुष्पदरूप सचित्त परिग्रह, अने बीजो द्रव्य तथा आनूषणादिक ते अचित्तपरिग्रह जाणवो. तथा एक बाह्यपरिग्रह ते धनधान्यादिक नवविध जाणवो. अने बीजो अज्यंतरपरिग्रह ते कषाय, नोकषाय, मिथ्यात्वरूप चौद प्रकारनो परिग्रह छे. तेनी उत्पत्तिनुं कारण, (सावज्जे के०) पापसहित एवा (अ के०) वली (बहुविहे के०) बहुविध कृषि प्रमुख अनेक प्रकारना जे (आरंन्ने के०) आरंज, तेने (करणे के०) पोतें करवाथकी (कारावणे के०) अनेरापासें करावववाथकी (अ के०) बीजा आरंज करनाराने अनुमोदवाथकी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (देसियं सव्वं के०) ते सर्व दिवससंबंधी अतिचारप्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, एटले ते अतिचारथकी हुं निवर्त्तुं बुं ॥ ३ ॥

हवे प्रथम ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे छे.

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

अर्थः-(इंदिएहिं के०) स्पर्शनादिक पांच इंद्रिय मोकलां राख्यां तेणें करीने तथा (चउहिंकसाएहिं के०) क्रोधादिक चार कषायें करी, (अप्पसत्थेहिं के०) अप्रशस्त एटले माठो मिथ्यात्वादिक औदयिक जाव तेना उदयें करी) रागेण के०) रागें करी, (व के०) अथवा (दोसेण व के०) द्वेषें करी, आहिं व पादपूर्णार्थ छे, (जं के०) जे ज्ञानातिचाररूप अशुज कर्मने (बद्ध के०) बांध्युं होय, उपार्ज्युं होय, (तं के०) ते ज्ञानातिचाररूप अशुज कर्मप्रत्यें (निंदे के०) आत्मानी साखें हुं निंदुं बुं, (च के०) वली (तं के०) तेप्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, निंदुं बुं ॥ ४ ॥

हवे सम्यग्दर्शनना तथा चक्षुर्दर्शनना अतिचार आलोवे छे.

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाजोगे ॥
अनिउगे अ निउगे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ५ ॥

अर्थः-(अणाजोगे के०) अनुपयोगथकी (अनिउगे के०) राजाना

आदेश तथा घणा लोकना आग्रहथकी. इत्यादिक अभियोग आगार थकी (अ के०) वली (निउंगे के०) पराधीन आजीविका चलावता जेनुं दासपणुं करीयें, तेनी आज्ञाथकी तथा मंत्री, श्रेष्ठी, तेनी आज्ञा थ की, मिथ्यादृष्टि संबंधि रथ, यात्रा प्रमुख जोवाने अर्थें कौतुक जोवाने अ र्थें एटले मिथ्यात्वीनां देव, देहरां प्रमुखने विषे उत्सवादिक जोवाने (आ गमणेनिग्गमणे के०) आगमन, निर्गमन करवुं एटले जावुं तथा आववुं तथा (ठाणे के०) मिथ्यात्वीने स्थानकें उन्नां रहेतां, (चंकमणे के०) ति हांज अरहां परहां फरतां, जे अतिचाररूप पाप बांध्युं, ते (पडिक्कमेदेसियं सवं के०) ते सर्व दिवससंबंधिया अतिचार लाग्या होय, तेथी पडिक्कमुं छुं, निवर्त्तुं छुं. अहींयां प्राकृत शैलीना वशथकी वकारनो लोप थाय छे, तेमा टे 'देसियं सवं' पाठ कह्यो छे, परंतु 'देवसियं सवं' पाठ कह्यो नथी. वली आ ठेकाणे प्रन्नातें 'राइयं' एवो पाठ कहियें, अने पक्खिएं 'पक्खियं' एवो पाठ कहियें, तथा चउमासियें 'चउम्मासियं' एवो पाठ कहियें, तथा संव च्छरियें 'संवछरियं' एवो पाठ कहियें ॥ ५ ॥

हवे सम्यक्त्वना अतिचार आलोवे छे.

संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु॥
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ ६ ॥

अर्थः—प्रथम जीवादिक नव तत्त्वनेविषे जीव छे, किंवा नथी ? तथा जि नन्नाषित वचननेविषे ए साचुं हशे, के केम हशे ? एवो संदेह करवो तेने (संका के०) शंका जाणवी, बीजुं अल्प स्वल्प क्षमादिक, अहिंसादिक गुण, परदर्शनीमां देखीने ते उपर अन्निलाष उपजे, ते (कंख के०) कांक्षा कहियें, त्रीजुं दानादिक धर्म कस्यानुं फल हशे, के नहिं होय ? रखे फोक ट प्रयास करवो पडतो होय ? एवो संदेह धरवो, अथवा साधु, साधवीनां शरीर, वस्त्र मलिन देखी डुगंछा करे. ते (विगिछा के०) विद्वज्जुगुप्सा क हियें. चोथो (कुलिंगीसु के०) कुलिंगी मिथ्यात्वीने विषे (पसंस के०)प्रशं सा करे, ते प्रशंसा कहियें, (तह के०) तथा पांचमो कुलिंगी मिथ्यात्वी ने विषे संस्तव, परिचय करे, ते (संथवो के०) संस्तव कहियें.

ए दर्शनमोहनीय कर्मना क्षायोपशमादिकपणाथकी उत्पन्न थयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मानो शुभपरिणाम, तेने (सम्मत्तस्स के०) सम्यक्त्व कहियें, तेना ए पांच (इआरे के०) अतिचार जाणवा. ते आश्रयीने जे (देसियं के०) दिवससंबंधी पाप बांध्युं ते, (सबं के०) सर्व (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं ॥ ६ ॥

हवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे छे.

छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥
अत्तहा य परहा, उभयहा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥

अर्थः—चारित्रना अतिचार प्रतिक्रमवानी आदिमां छकाय समारंभ आश्रयी दोषने निंदियें छैयें. (अत्तहा के०) आत्माने अर्थे एटले पोताना जोगने अर्थे अथवा आत्मार्थ एटले मुझने आम करवाथी पुण्य थशे? एवी जोली बुद्धियें साधुने आपवाने अर्थे. (य के०) वली (परहा के०) प्राहूणादिक परने अर्थे अने (उभयहा के०) निज पर ए बेहुने अर्थे अशनादिक आहारने (पयणे के०) पचवते एटले पोतें रांधते (अ के०) वली (पयावणे के०) पचावते एटले बीजा पासें रंधावते (अ के०) अशब्द थकी बीजा रांधता होय तेने अनुमोदन देते, एम (छक्काय के०) पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति अने त्रस, ए छकायजीवोना (समारंभे के०) समारंभ, परिताप, उपद्रव हुवे छते अथवा छकायने विषे अयत्नायें प्रवर्त्तवाथकी, (जे के०) जे कर्मबंधरूप (दोसा के०) दोष लाग्या होय, (चेव के०) एव शब्दें निश्चे च शब्दें पर उपर द्वेष करवाथकी जे अतिचार दोष लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥ ७ ॥

त्यां सामान्यप्रकारें चारित्राचार प्रतिक्रमवाने अर्थे बार व्रतना अतिचार कहे छे.

पंचन्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिन्हमइयारे ॥
सिक्खाणं च चउन्हं, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥८॥

अर्थः—(पंचन्हमणुव्वयाणं के०) स्थूल प्राणातिपातादिक एवां पांच अणुव्रत, तेने विषे, (च के०) वली (तिन्हं के०) दिशिपरिमाण आदिक त्रण

(गुणव्वयाणं के०) गुणव्रत, तेने विषे तथा (चउण्हंसिरकाणं के०) सामायिक आदें देइने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे, (च के०) वली तप, संलेषणादिकने विषे जे (अइयारे के०) अतिचार लाग्यो होय, ते अतिचार आश्रयी, (प डिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं. निंदुं छुं. (देसियंसव्वं के०) दिवससंबंधि सर्व अतिचारप्रत्यें. अहीं पांच अणुव्रत ते पांच मूलगुण कहियें, अने ते पांचने विशेष गुण करनारा दिशिप्रमाणप्रमुख त्रण गुणव्रत जाणवां. वली चार शिक्षाव्रत, ते थोडा कालनां मानवालां जाणवां. ते जेम शिष्यने विद्या जणावीने अभ्यास करावत्रा योग्य छे, तेम ए सामायिकादिक चा र शिक्षाव्रतनेविषे पण सदा उद्यम करावत्रा योग्य छे ॥ ८ ॥

हवे प्रथम स्थूलप्राणातिपातविरमणनामा अणुव्रत कहे छे.

पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईओ ॥
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥

अर्थः-(पमाय के०) पांच प्रकारना प्रमाद तेने विषे, (प्पसंगेणं के०) अत्यंतपणे प्रसंग एटले प्रवर्त्तवुं, तेने प्रमादप्रसंग कहियें, तेणें करीने तथा आकुट्यादिकें करीने (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुभ माठा एवा अज्ञानमिथ्यात्व कषायादिक औदयिकभाव हुए छते, (थूलग के०) स्थूल बादर मोटको जे जावुं, आववुं, फरवुं, इत्यादिक लक्षणें करी प्रगट जणाय छे, तथा संकल्प निरपराधि निरपेक्ष, बेंद्रिय, तेंद्रिय चउरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, त्रस जीव ते संबंधी (पाण के०) आयु, इंद्रिय, प्राण, तेनां (अइ वाय के०) अतिपात एटले विनाश तेनी (विरईओ के०) विरति निवृत्तिः तेथकी (आयरिअ के०) जे अतिक्रमवुं उल्लंघवुं ते (इत्थ के०) अहींयां (पढमेअणुव्वयंमि के०) प्रथम अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवो. अथवा स्थूलप्राणातिपातनिवृत्तिप्रत्यें आश्रयीने जे जे दोष (आयरियं के०) आचर्यो सेव्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमिश ॥ ९ ॥

हवे प्रथम व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

वह बंध छवि छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ॥
पढमवयस्स इअआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥

अर्थः—कषायना वशथकी द्विपदादिक जीवने लाकडी प्रमुखें निर्दयता यें करी, एक (वह के०) वधवुं, हणवुं, ताडवुं, प्रहार देवो, घायल करवो, बीजो (बंध के०) दोरडादिकें करी बांधवुं, त्रीजो (छवि के०) बलद समा रवा,शरीरना कान अने नासिकादिक अवयवोने(छेए के०)छेदवा,चोथो थो डो जार उपाडवानी शक्तिवाला एवा पोठीया गाडला वृषजादिकोनी उपर लोजना वशथकी (अइजारे के०) अतिजारनुं आरोपण करवुं. एटले तेनी उपर घणो जार नाखवो, पांचमो (जत्तपाणवुछेए के०) जात पाणीनो व्युछेद करवो, अंतराय करवो, ए (पढमवयस्सइआरे के०) प्रथम व्रतना पांच अतिचार, ते आश्रयीने जे मुने अतिचार लाग्यो होय, (स व्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचारप्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निंदुं बुं. आ ठेकाणें कोइ शंका करे के, प्राणातिपातविरम णव्रतवालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहीं,कारण के प्राणातिपात श ब्दें करी वधादिक ग्रहण थाय नहीं,तेथी वधादिक करे तो पण तेने प्राणा तिपातविरमणव्रतनो अतिचार लागे नहीं ? त्यां कहे छे के, मुख्यतायें क रीने तो प्राणातिपातनुंज पच्चरकाण कर्युं छे, परंतु वधादिकनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, तो पण परमार्थें ते वधादिकनुंज प्रत्याख्यान जाणवुं, का रण के ते वधादिकने प्राणातिपातनुं हेतुत्व छे, ते हेतुमाटें ते वधादिक करवा थकी प्राणातिपातव्रतजंग थाय, तेथी ते प्राणातिपातविरमणव्रत वालाने वधादिकनुं पच्चरकाण योग्य छे ॥ १० ॥

हवे बीजुं अणुव्रत कहे छे.

बीए अणुवयंमि,परिथूलग अलिअवयणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥

अर्थः—एक कन्यालीक ते कन्याआश्रयी जूठुं बोलवुं, सुलक्षणीने अप लक्षणी कहेवुं अने अपलक्षणीने सुलक्षणी कहेवुं, एमां द्विपद संबंधी जे जूठुं बोलवुं, ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गोवालिक ते गौआश्रयी जूठुं बो लवुं, एटले थोडा दूधवालीने घणा दूधवाली कहेवी अने घणा दूधवालीने थोडा दूधवाली कहेवी. एमां कोइ पण चतुष्पदसंबंधी जे जूठुं बोलवुं ते सर्व लेवुं.त्रीजुं जूम्यलीक ते जूमिआश्रयी जूठ ते पारकी जूमिने पोतानी

नूमि कहेवी. तथा द्रव्यादिक संबंधी जे जूतुं बोलवुं ते सर्व एमां आवे छे, चोथो न्यासापहार ते पारकी थापण वस्तु राखीने जूतुं बोलवुं, जे में तो नथी राखी. पांचमुं मत्सरने लीधे अथवा लांच लेइने मोटकी कूडी साक्षी नरवी तथा कूडा करहानुं काढवुं, विश्वासघात करवो,ए सर्व एमां आव्युं. इत्यादिक जेमां राजा दंके, लोक नंके, एवो (परिथूलग के०) अतिशयें करी मोटको (अलियवयण के०) अलीक वचन मृषावाद तेनी (विरइन के०) विरति ते थकी (आयरिअं के०)जे अतिक्रमवुं,उल्लंघवुं ते (बीएअणुव्वयंमि के०) बीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय; ते अतिचार, शुं होवाथी थाय? तो के (इब के०) एहीज व्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करी (अप्पसड़े के०) अप्रशस्त अशुन नाव हुए छते थाय,अथवा मोटका मृषावादनी विरतिप्रत्यें आश्रयीने (आयरियं के०) जे दोष आचर्यो होय,एटले आ व्रतमध्यें जे दोष लगाड्यो होय,ते आगली गाथायें पडिक्कमीश

अहीं कोइ कहेशे के अदत्तादानविरमणव्रतमां न्यासापहारनी वात आवशे, तेवारें अहीं लखवाथी पुनरुक्ति थाय छे. त्यां कहे छे के, प्रधानत्वें करी तो न्यासापहार ते वचननुं खोटुं बोलवापणुंज छे, तेथी ए मृषावादपणुंज थाय छे. तेमाटें अहीं मृषावाद आश्रयी लख्युं छे.

तथा वली न्यासापहार अने जूठी साक्षीपणुं,ए पूर्वोक्त द्विपदादिक अलीकना अंतर्नावमां आवी जाय छे, तो पण लोकने विषे ए बेहुनुं अत्यंत ग्रहण करेलापणुं छे, माटें अहीं ए बेनुं जूदुं ग्रहण कर्युं छे ॥ ११ ॥

सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥
बीअ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ १२ ॥

अर्थः—(सहसा के०) सहसात्कारें अणविचार्युं कोइने माथे जूतुं आल देवुं एटले कोइना उपर आ चोर छे,इत्यादिक कहीने कलंक चढाववुं. ते प्रथम सहसाभ्याख्यान अतिचार तथा कोइने एकांतें छानी वात करतां देखीने कहे के, तमें अमुक अमुक राजविरुद्ध विचार करो छो? बोलो छो? ते बीजो (रहस्स के०) रहस्याभ्याख्यान अतिचार जाणवो. तथा पोतानी स्त्रीयें आपणा उपर विश्वास आणीने कांइ छानी वात आपणने कही होय, ते वात बीजा आगल प्रगट करे, एटले ते साचुं वचन

होय तो पण परने पीडाकारी थवाथी जूठुं जाणवुं, ते त्रीजो (दारे के०) स्वदारमंत्रभेद अतिचार जाणवो, तथा अणजाण्यां औषध मंत्रादिक ब तावे अथवा कोइने कष्टमां पाडवाने अर्थे कूडी बुद्धि आपे, ते चोथो (मो सुवएसे के०) मृषा उपदेश अतिचार कहियें, तथा (अ के०) वली कूडा का गल लखवा,खोटां खत करवां,तथा खरा अक्षर भांजी खोटा अक्षर लखवा, बीजानी महोर मुद्रा भांजवी. इत्यादिक मषीभेद सर्व एमां आवे छे, ते पां चमो (कूडलेहे के०) कूट लेख अतिचार कहीयें. (अ के०) अकार पादपू र्णार्थ छे. ए पांच, (बीअवयस्सइयारे के०) बीजा व्रतना अतिचार,ते आ श्रयी जे मुने अतिचार लाग्यो होय, ते (सव्वंदेसियं के०) सर्व दिवस संबंधी अतिचारप्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं ॥१२॥

हवे त्रीजुं अणुव्रत कहे छे.

तइए अणुवयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥

अर्थः–जेथकी राजानो दंड पामीयें, एवुं खातर खणी गंठडी छोडी, तालां,पडकूंची,पडी जडी वस्तु धणी जाणी राखवी, रखाववी, मार्गे जाताने लूंटवो, इत्यादिक (थूलग के०) मोटको, (परदव्वहरण के०) परनुं द्रव्य ते धन हरवानी (विरईउ के०) विरतिथकी (आयरिअ के०) अतिक्रमवुं उलंघवुं ते (तइएअणुवयंमि के०) त्रीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय, ते अति चार शुं होये थके थाय ? तो के (इत्थ के०) एहीज तृतीयव्रतने विषे(पमा यप्पसंगेणं के०) प्रमादना प्रसंगें करीने (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशु भभाव हुए छते थाय ॥१३॥ ते अतिचारोने आगली गाथायें प्रगट कहे छे.

त्रीजा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ॥
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥

अर्थः–(तेन के०) चोर तेनी (आहड के०) आहृत एटले हरण करेली अर्थात् चोरेली वस्तु,तेने लेवी एटले चोरनी आणेली केशर कस्तूरी आ दिक बहुमूल्य वस्तु तेने सोंघी जाणी लीये, ते प्रथम स्तेनाहृत अतिचार

जाणवो. बीजो (प्पउंगे के०) चोरने खरचादिक संबल सहाय आपवुं,स खाइ मेलवी आपवो, चोरीनी प्रेरणा करवी,ते बीजो प्रयोगातिचार जाण वो. तथा त्रीजुं (तप्पडिरूवे के०) तत्प्रतिरूप वस्तु करीने वेचवी एटले खो टी वस्तुने खरी वस्तुने रूपें करी, खरीने नावें वेचवी तथा वस्तुमां नेल सं नेल करवो, एटले खरा मोतीमां खोटां मोती, सोनामां त्रांबुं, केशरमां क सुंवो, कस्तुरीमां मेल, घृतमां तेल, गहूंना लोटमां जुवारनो लोट, गोलमां राख, अरू जूनां वस्त्रने निखरावी, रंगावी, तेने नवां करी वेचवां अथवा कारमी माठी एवी जे सिंदूर,कपूर,अफिणादिक वस्तु होय तेने खराने मूल्यें वेचवी. सूत्र,कपासादिकने पाणीयें नींजवीने वेचवा. लविंग,जायफलादिक मांहे दूधनुं पोतुं देवुं, इत्यादिक तत्प्रतिरूप अतिचार जाणवो, तथा चोथुं (विरुद्धगमणे के०) विरुद्धगमन ते दाणचोरी प्रमुख राजविरुद्ध आचरवुं, जेथी राजा दंरु लीये, बंदीखाने नाखे, ते विरुद्धगमन अतिचार जाणवो. पांचमो (कूडतुलकूडमाणे के०) कूडां तोलां, अने कूडां मापां राखे, एटले अधिकां उंगं काटलां, वाट तथा तोलां, त्राजुआं, पाली, माणां, गजा दिकनुं राखवुं, त्यां अधिके लेवुं अने उंबे देवुं, ए कूडतोल कूडमान अति चार जाणवो. अहीं यकार समुच्चयार्थे छे. ए त्रीजा व्रतना पाच अतिचा र, ते आश्रयी जे मुने अतिचार लाग्यो होय, (सवंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधी अतिचारप्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं ॥१४॥

हवे चोथुं अणुव्रत कहे छे.

चउछे अणुवयंमि, निच्चं परदारगमणविरईउ ॥
आयरिअमप्पसछे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥

अर्थः–(निच्चं के०) नित्य सदैव निरंतर, (परदार के०) परनी ते बी जानी दार एटले स्त्री तेनी साथें, (गमण के०) गमन करवानी एटले कामनोग नोगववानी (विरईउ के०) विरति, ते थकी (आयरिय के०) जे अतिक्रमवुं, उलंघवुं ते (चउछेअणुवयंमि के०) चोथा अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवो, ते अतिचार शुं हुए छते थाय ? (इछ के०) एहीज परस्त्रीगमनत्यागरूप चोथा अणुव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करी, (अप्पसछे के०) अप्रशस्त अशुननाव हुए छते

थाय, अथवा परस्त्री सेववानो व्रतीप्रत्यें जे (आयरिअं के०) अतिचार आच र्यो होय, सेव्यो होय, ते आगली गाथामां नाम लइने पडिक्कमीश ॥ १५ ॥

॥ चोथा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥
चउछ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १६ ॥

अर्थः—प्रथम (अपरिग्गहिया के०) अपरिगृहीता एटले जेने बीजा कोइ यें ग्रहण करेली न होय, परणेली न होय, ते कुमारिका, अथवा जेनो धणी मृ त्यु पाम्यो होय, ते विधवा, तेनी साथें मैथुन सेववुं. तेमज श्राविका पण कुंआरा अथवा रांकेला पुरुषनी वांछा करे, तो तेने पण अतिचार लागे. बी जो (इत्तर के०) इत्वर ते कोइएक पुरुषें वेश्यादिकने स्त्रीने स्थानकें राखेली होय, तेनी साथें मैथुन सेववुं, तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं निवारण करी जर्त्तारने सेवे, तेने बीजो अतिचार लागे. त्रीजुं (अणंग के०) कामक्रीडा, ते जेम केः—परस्त्रीनी साथें हास्य, कुतूहल करवां, तथा तेनुं कुच मर्दन, मुखचुंबन, उष्ठदशन आलिंगनादिक करवुं, कंदर्पनां चोराशी आसन सेववां, पुरुषचिह्न टाली सायलें अंगुष्ठादिकें करी मैथुन सेववुं, ते त्रीजो अतिचार. चोथो (वीवाह के०) विवाहकरण ते पोतानां छोरु टालीने य श लेवाने अर्थें परना विवाह, सगाइ, लग्न करवां, करावववां, कन्यादान देवुं, देवरावतुं, नात्रुं जोडवुं. पाचमुं (तिव्वअणुरागे के०) कामजोगने विषे तीव्र अनुराग करवो, अत्यंत अजिलाषनुं करवुं, कामजोगने अर्थें दूध, दहिं, घृतादिक, बंग, त्रांबुं, फलाद प्रमुख धातु तथा अनेक औषधीपाक मा जूम रसादिक काम दीपाववानी वस्तु खावी, वापरवी. ए पांच, (चउब्बव यस्सइयारे के०) चोथा व्रतना अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अति चार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबधी अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निंडं बुं ॥ १६ ॥

हवे पांचमुं अणुव्रत कहे छे.

इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसछंमि ॥
परिमाणपरिछेए, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥

अर्थः—(इत्तो के०) ए चोथा व्रत कह्या उपरांत स्थूलपरिग्रहपरि

माणनामें पांचमुं अणुव्रत कहियें छेयें. (इह के०) ए परिग्रहपरिमाण व्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करीने, (अप्पसत्थंमि के०) अप्रशस्त अशुजन्नाव थये छते, (परिमाणपरिछेए के०) परिग्रहना परिमाणप्रत्यें परिछेद करे छते एटले उल्लंघन करवाथकी (पंचमंमिअणुवए के०) धनधान्यादिक नवविध परिग्रहना परिमाणरूप पांचमा अणुव्रतने विषे, जे अतिचार (आयरिअं के०) आचर्यो होय, एटले लगाड्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमीश ॥ १७ ॥

धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥
डुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ १८ ॥

अर्थः–प्रथम (धण के०) चार प्रकारनां धन छे, तेमां एक गणवा रूप धन, ते पूगी, नालीएर प्रमुख जे गणीने वेचाय ते. बीजुं धरिम एटले तोलवारूप धन, ते गोल, खांम, प्रमुख तोलीने वेचाय, ते जाणवुं. त्रीजुं गजें तथा पालीयें करी मापीने वेचाय, ते मापवारूप धन ते कापड, जमीन, तेल, दूध, घृत, प्रमुख. चोथुं परीक्षा करीने जे लेवाय, वेचाय, ते रूपुं, नाणुं, धन, रत्नादिक, माणिक्य मोती प्रमुख जाणवां. ए चार प्रकारें धन अने (धन्न के०) धान्य ते गोधूम, चोखा, अडद प्रमुख जाणवा. ए बेहुना करेला परिमाणथकी उल्लंघवुं एटले नियम उपरांत थयुं जाणीने ज्यां सुधी आगलुं वेचाय नहीं, त्यां सुधी बीजाने घेर रखावे अथवा संचकार आपी मूके, कोठा अथवा मूडानुं परिमाण कीधुं होय तो ते न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्यपरिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. बीजो (खित्त के०) क्षेत्र, ते हलें खेडी नूमि, ते क्षेत्र, ते त्रण प्रकारनुं छे. एक अरहट्टने पाणीयें नीपजे, ते सेतुक्षेत्र, बीजुं वरसादने पाणीयें निपजे, ते केतुक्षेत्र, त्रीजुं जे बेहुना पाणीयेंथी नीपजे, ते उन्नयक्षेत्र जाणवुं. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. तथा (वत्थू के०) वास्तु ते घर, हाट, वखारप्रमुखनी नूमि, ते पण त्रण प्रकारें छे. एक तो जे जमीन खोदीने नीचें नोंयरादिक करियें, ते खातनूमि, बीजी मालियादिक जे उंचां चडावीयें, ते उछ्रित नूमि, त्रीजी ज्यां खणवुं, चणवुं, बेहु वानां करीयें, एटले नोंयरुं पण करियें अने उपर माल पण चणावियें. तथा ग्राम नगरादिक पण एमां आ

वे, ते खातोछ्रित भूमि जाणवी. ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं, ते आवी रीतें केः—एक क्षेत्र मोकलुं होय अने बीजुं लेवरावे, तेवारें नियमभंगना जयथी पूर्वला क्षेत्रनी वाड भांगीने बन्नेनुं एक क्षेत्र करी मूके; तथा घर,हाट, व खार, प्रमुख अधिका थतां देखीने वचमांनी भींत तथा मोभ पाडीने एक करी मूके, ए क्षेत्र वास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार चाणवो, त्रीजुं (रुप्प के०) रूपुं, (सुवन्ने के०) सोनुं, ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं एटले रूपुं, सोनुं, अधिक थतुं देखीने भार्यादिकना नाम उपर करी मूके, ते रुप्प सुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. (अ के०) वली (कुविअपरिमाणे के०) कुपित ते थाल कचोलां प्रमुख एटले सोनुं, रूपुं टालीने बाकी समस्त धातुना त्रांबडा, थाली, कलशीया, वाटका, चरू, खाटला, पाटला प्रमुख समस्त घरवखरी जे होय छे, ते सर्वने नियम उप रांत अधिक थतां देखीने भांगी नखावी महोटां करीने संख्यायें तेटलांज राखे, ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (दुपए के०) द्विपद ते गाडी. दास, दासी, रांधणी, वाणोतर प्रमुख अने (चउप्पयं मि के०) चतुष्पद ते गाय, घोडा, भेंष प्रमुख जाणवां. ए बेहुना परिमा णथी उल्लंघवुं, एटले नियम उपरांत थता जाणी गर्भग्रहण घणुं महोडुं करावे, तथा वेचे, ते पांचमो द्विपदचतुःपदपरिमाणातिक्रम अतिचार जाण वो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार ते आश्रयी जे महारे कोइ अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधी अतिचारप्रत्यें (प डिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं ॥ १८ ॥

हवे त्रण गुणव्रतमां प्रथम दिक्परिमाणव्रत कहे छे.

गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं
च॥वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥

अर्थः—(दिसासु के०) ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि अने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि, ए आठने तीर्छी दिशि कहियें, तेने विषे (गमणस्स के०) जावाना (परिमाणे के०) परिमाण एटले सो योजन अथवा तेथी न्यूनाधिक पर्यंत जावानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम गुणव्रतने विषे (उ के०) तु शब्दथकी जे अतिचार लाग्यो होय, ते आ

गल निंदियें ढैयें. प्रथम (उड्ढं के०) ऊर्ध्व ते उंची दिशिना परिमाणप्रत्यें उल्लंघवुं, बीजुं (अहेअ के०) अधो एटले नीची दिशिना परिमाण प्रत्यें उल्लंघवुं,वली त्रीजुं(तिरिअं के०)तीर्छि दिशिना परिमाणप्रत्यें अतिक्रमवुं, उल्लंघवुं अथवा नियमभंगना जयने लीधे वाणोतर प्रमुखने मोकलवो, चोथुं (वुड्ढि के०) क्षेत्रनी वृद्धि एटले सर्व दिशीयोना परिमाण ते सो, किं वा बसो योजन पर्यंत जावाना सरखा करेला ढे, पढी कोइ कार्य पडे, तेवारें एक दिशियें कार्यविशेषें पच्चास योजन वधारवा, बीजी दिशियें पच्चास योजन घटाडवा, ते चोथो क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो. पांचमो (सइ अंतरद्धा के०) स्मृत्यंतर्द्धा ते मार्गमांहे स्मृतिनो भ्रंश थाय एटले संदेहकारी एक विचार उपजे के,शुं आ दिशि म्हारे सो योजन मोकली राखेली ढे? के पच्चास योजन मोकली राखेली ढे? एवी शंका बते पच्चास योजन उपरांत जावुं, ते पांचमो अतिचार. अने सो योजन उपरांत जावुं ते अनाचार व्रतभंग जाणवो. ए पांचमो स्मृत्यंतर्द्धानामें अतिचार. (पढमंमिगुणव्वए के०) प्रथम गुणव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचारमांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ १ए ॥

हवे बीजुं उपभोग परिभोग परिमाण गुणव्रत कहे ढे.

मज्जंमि अ मंसंमि अ,पुप्फे अ फले अ गंध मल्ले अ॥
उवभोगपरीभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—जे वस्तु उप एटले एकवार सेवाय तथा मुखादिकमां शरीरमां प्रवेश कराय एवी वस्तु, जेम के खान, पान, फूल, विलेपन प्रमुख जे वस्तु तेनो भोग ते उपभोग. तथा परि एटले बाहिरथी वारं वार सेवियें,ते परिभोग वस्तु. ते वस्त्र, आभरण, भवन, स्त्री प्रमुख जाणवां. उपभोग परिभोग परिमाणनामा बीजुं गुणव्रत बे प्रकारें ढे. एक भोजनथकी, बीजुं कर्मथकी, तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदियें ढैयें.

(मज्जंमिअ के०) मदिरा,(मंसंमिअ के०) मांस. बे चकारथकी बीजां पण अभक्ष्य द्रव्य ग्रहण करवां. जेवां के मधु, माखण, अनंतकाय प्रमुख. (पुप्फे के०) केरडां, मउडादिकनां फूल,(अ के०) चशब्दथकी कुंथुआदिक त्रस जीवें करीने सहित एवा नागरवेलीनां पान प्रमुख जाणवां. तथा (फलेअ

के०) वली जांबू,बीलां, पीलूडां, पीचु, बोर, पाकां करमदां. ए फल सर्व अ
भक्ष्य वस्तु छे, श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी. ए वस्तु खाधामां वपरा
य छे,ते कही, एटले अंतर्भोगवस्तु सूचवी. हवे बाहिरना भोगमां आवे ते
वस्तु कहे छे. (गंध के०) बरास, अतर, अबीर, कपूर, अगर, तगर, धूपादि
क जाणवां. (मल्लेअ के०) फूलादिकनी माला,ते केतकी चंपकादिकनां फूल
नी जाणवी. तथा च शब्दथकी अन्य सर्व भोग्य वस्तु,जेवी केः—सचित्तद्रव्य
विगयादिक वस्तु पण लेवी. ए सर्व वस्तु, करेलाप्रमाणथकी विपरीतपणें
अनुचितपणे आसेवन करते थके एटले भोगवते थके (उवभोगपरीभोगे
के०) उपभोगपरिभोगनामें (बीअंमि गुणव्वए के०) बीजा गुणव्रतने विषे
जे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्व प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥२०॥

हवे विशेषथी ए व्रतना भोग उपभोग आश्रयी पांच अने कर्म आश्र
यी पंदर, मलीने वीश अतिचार छे, ते पडिक्कमियें छैयें. त्यां प्रायः श्रावक
सचित्त वस्तुनो तो त्यागीज होय, माटें तेनी अपेक्षायें करी प्रथम भोजन
आश्रयी अतिचारपंचक पडिक्कमियें छैयें.

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलियं च आहारे ॥
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २१ ॥

अर्थः—(सच्चित्ते के०) सर्व समस्त सचित्तनो त्याग करीने अथवा स
चित्तनुं परिमाण कर्युं होय, तेथी उपरांत प्रमादने वशें सचित्त वस्तुनो
आहार करवो, ते प्रथम सचित्ताहारनामें अतिचार जाणवो. बीजो (पडि
बद्धे के०) सचित्त प्रतिबद्ध ते सचित्तनी साथें बांधेली वस्तु एटले जोडें
लागेलो गुंदर,ठलिया सहित रायण अने गोटली सहित आंबां,तेनुं मुखमां
घालवुं, जेम वृक्षमांथी उखेडीने गुंदरने अचित्तनी बुद्धियें वापरे, अथवा
आंबाने गोटली सहित अने रायणने ठलिया सहित मुखमां घाले, ते स
चित्तप्रतिबद्धनामें बीजो अतिचार जाणवो, तथा त्रीजो (अपोल के०)
अपक्काहार एटले जेने अग्निनो संस्कार कीधो न होय,एवी सचित्त मिश्रि
त काची वस्तु, जेवी केः—तुरतनो पीशेलो लोट, अणचाल्यो लोट इत्या
दिक अपोल जाणवी. ए विषे सिद्धांतमां कर्युं छे के, अणचाल्यो लोट,श्रा
वण अने भादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय.

आश्विनमासें चार दिवस मिश्र रहे. कार्त्तिक, मार्गशीर्ष अने पौष, ए त्रण मासें त्रण दिवस मिश्र रहे, तथा माह्रा अने फाल्गुनें पांच प्रहर मिश्र रहे. चैत्रें, वैशाखें चार प्रहर मिश्र रहे. ज्येष्ठ तथा आषाढें त्रण प्रहर मिश्र रहे, इत्यादिक मिश्र रहे, पढी अचित्त थाय.ते काचो लोट,तेने पीशेलो जाणीने अचित्त बुद्धियें लीये. इत्यादिक सचित्त शंकित वस्तुनुं जक्षण करवुं, ते अपक्कौषधिजक्षणनामें त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो (डुप्पोलियंच के०) डुपक्काहार ते कांइक काचा अने कांइक पाका एवा उंला, उंबी, पोंक, पापडी प्रमुख वस्तु, तेनो (आहारे के०) आहार करवो जक्षण करवुं,ते डुःपक्कौषधिजक्षणनामें चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (तुहोसहिजरकणया के०) तुछौषधिजक्षण ते मग प्रमुखनी कोमल फली तथा बोर प्रमुख तुछ असार वस्तु जे घणी खाधाथी पण तृप्ति न थाय, एवी जे औषधि कुलीफलीरूप तेने अचित्त करी वापरे, तो तेने तुछौषधिजक्षणनामें पांचमो अतिचार लागे,जेने सचित्त वस्तु खावानो नियम होय, तेने ए पांच अतिचार संजवे. ए बीजा गुणव्रतना जोजन विषयिक पांच अतिचार, ते आश्रयी जे मह्रारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधी अतिचार प्रत्यें(पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निंडुं बुं.

हवे जे गृहस्थ आजीविकाना हेतुयें कुव्यापार करे, तेने पण जोगोपजोगज कहियें. ते इंगालादिक पांच कर्म, दंतादिक पांच वाणिज्य, अने यंत्रादिक पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान बे. ते अत्यंत घणा कर्मो उपार्जन करवानां कारण बे, तेमाटें एने श्रावकें जाणवां, पण आचरवां नहीं. ते पन्नर कर्मादान आश्रयीने पंदर अतिचार बे गाथायें करी कहे बे.

इंगाली वण साडी, जाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥
वाणिज्जं चेवय दं,त लरक रस केस विस विसयं ॥२२॥

अर्थः—प्रथम काष्ठ बाली अंगारा करी वेचवा तथा सोनार,कुंजार,लोहार, जाडजुंजा, कंसारादिकनां'अग्निसंबंधि जे कर्म, ते (इंगाली के०) अंगारकर्म.

बीजुं वनस्पतिनुं निपजाववुं, बेदवुं, जेदवुं, बेद्यां अणबेद्यां आखां वन वेचवां.पान,फल,फूल,लीलां तृण, काष्ठ अने कंद वेचवां. वाडी, वनखंम करवा, आजीविकाहेतुयें कण दलावे, पीसावे, ते बीजुं (वण के०) वनकर्म.

त्रीजुं गाडां प्रमुख बनावी बनावीने वेचे,तथा गाडांना अवयव धोंसरी धोंसरा समोल प्रमुख, घडावीने वेचे,वेचावे, ते (साडी के०)शकटकर्म.

चोथुं गाडां,बलद, उंट, नेष, खर, वेसर, घोडा, घर, हाट प्रमुख राखीने नाडे आपवानुं आजीविकानिमित्तें करे, ते (नाडी के०) नाटिक कर्म.

पांचमुं जव, चणा, गोधूम, मग,अडद,प्रमुख धान्यनो साथवो करवो, तथा तेनी दाल करवी,तथा शालि प्रमुखना चोखा करवा, तथा पृथिवी काय प्रमुखनो फोड, तोड करवो एटले कूवा, वापी, तलाव प्रमुख खणवा, खणाववा,उरू लोकोनुं,तथा शिलाटनुं काम करवुं,हल दंतालीयें करीनूमि खेडवी, खाण खणाववी, टांकुं खणाववुं, कृषी करवी, इत्यादिक जेटलो पृथिवीनो आरंन,ते सर्व (फोडी के०) स्फोटिक कर्म जाणवुं. (कम्मं के०) ए पांच सामान्य कर्म, ते प्रत्यें श्रावक (सुवज्जाए के०) अत्यंतपणें वर्जो.

हवे पांच कुवाणिज्य कहे डे. (च के०) वली (एव के०) निश्चें अथवा चेवय ए शब्द पादपूर्णार्थ डे. त्यां प्रथम दांत, नख, चर्म, शिंगडा दिकना व्यापार एटले हाथीदांत, चमरीगायना वालनां चामर,मत्स्यादिकना नख, शंख, कोडा, चीड, पोइसा, कस्तूरी, मुक्ताफल, तथा वाघ, चितरा अने मृगादिकनां चर्म, हिंग, हांसरू प्रमुख रोम, इत्यादिक त्रस जीवोना अंगोनुं वाणिज्य जेमां आवे डे, तेने जो आगरें जइ वहोरे, तो तेमां घणो दोष लागे, ए सर्वने (दंत के०) दंतकुवाणिज्य कहियें.

बीजुं लाख, धावडीनां फूल, कसुंबो, हरताल, मणशिल, गली, महुडां, टंकणक्षारादिकनो व्यापार, जेथकी बाहिरना जीवोनुं मृत्यु थाय, तेसर्व (लक्ख के०) लाखकुवाणिज्य जाणवुं.

त्रीजुं विगय महाविगय एटले घृत, तेल, गोल, मध, दूध, दहीं प्रमुखनो व्यापार, ते सर्व (रस के०) रसकुवाणिज्य जाणवुं.

चोथुं द्विपद ते मोर,सूडा,तथा मनुष्य प्रमुखना व्यापार अने चतुष्पद ते गाय, नेंष, बलद, घोडा, डाली प्रमुखनो व्यापार ते सर्व, (केस के०) केशकुवाणिज्य जाणवुं.

पांचमुं अफीण, सोमल,शिंगीयो वत्सनाग, साबू, हरताल,नांग, पोस्त, इत्यादिक तथा डूरी, कटारी, धनुष्य, बाण, खड्ग, कूहाडादिक शस्त्र, अने सन्नाह पाखर प्रमुख जेना बलें करी संग्राममध्यें घणा जीवोनो संहार

थाय, तथा हल, कोदाल, इत्यादिक सर्व कुवस्तुनो जे व्यापार, ते (विस विसयं के०) विस केतां विष तथा शस्त्रादिकनो विसय एटले विसय छे जेने विषे ते विसविसय कहियें. ए विसविसय, (वाणिज्जं के०) वाणिज्य जाणवुं. ए पांच कुवाणिज्यने श्रावकें वर्जवां ॥ २२ ॥

एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥
सर दह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥

अर्थः—हवे पांच सामान्य कर्म कहे छे. (एवं के०) एम (खु के०) निश्चें शिला, लोढी, उखल, मूशल, घंटी, चरखो, रेंटीया प्रमुख अनेक जातिनां यंत्र करीने वेचे, ते सर्व यंत्रकर्म. तथा पिल्लण ते शेलडी, तिल, सरशव, एरंडादिकने पीलवानां यंत्र, जेम के कोल्हुं, घाणी प्रमुख, ते सर्वथी लागे जे कर्म, तेने प्रथम (जंतपिल्लण के०) यंत्रपीलन कर्म कहियें,

बीजुं बालकनां कान, नाक, वींधवा, स्त्रीफूल विध्वंस करवो, नपुंसक करवो, उंटादिकने आंकवो, घोडा बलदनां नाक वींधाववां, आंक पडाववा, समराववा, कर्ण, कंबल, पूछडां छेदाववां. तेमज इजारे गाम लइने आकरा कर करवा, कोटवालपणुं करवुं, इत्यादिक जेटलां निर्दयपणानां काम छे, ते सर्व, (निल्लंछणं के०) निर्लंछन कर्म जाणवुं. (च के०) वली

त्रीजुं धर्मनी बुद्धियें अथवा मोकली भूमिने विषे सुखथी संग्राम थाय अथवा स्वभावें अथवा तृणादिक बाल्या पछी नवा अंकूरा उगे, तो गायो चरे. इत्यादिक हेतुथी वन अने झाडी प्रमुखने जे (दव के०) अग्निनुं (दाणं के०) दान एटले आपवुं, अर्थात् दव लगाडवो, तथा कोइने अग्निनुं देवुं, तेने दवदानकर्म कहियें.

चोथुं सरोवर खण्या विना जे जगामां जल रहे, तेवा ठामने (सर के०) सर कहियें तथा (दह के०) द्रह अने (तलाय के०) तलाव, ए सरोवर, द्रह, तलाव, तथा कूवा, वापी, इत्यादिक पाणीना स्थानकोनुं (सोसं के०) शोषण करवुं, ए जलाशयना पाणी उलेचाववाथी अनेक जलचर पंचेंद्रिय जीवनी हिंसा थाय, तथा नील फूल वगेरे घणा जीवोनो विनाश थाय, तेने सरदहतलायसोसणकर्म कहियें.

पांचमुं (च के०) वली (असईपोसं के०) असतीपोषणकर्म, ते अस
ती कहियें कुतरां, बिल्लाडां, मोर, कूकडां सूवा, मेनां, सींचाणा, सूडा,
सालही प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवुं, ते असतीपोषणकर्म कहि
यें. अथवा असती एटले कुसती, कुशीलिणी व्यभिचारिणी स्त्रीनुं पोष
ण करवुं. ते पण असतीपोषणकर्म कहियें, अथवा दुष्ट पुत्रादिक, दुष्ट
दास, दासीनुं भरण पोषण करवुं तथा कसाइ, माछी, वाघरी, तेलीनी
साथें व्यापार करवो, इत्यादिक जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं, ते सर्व,
असतीपोषणकर्म कहियें. (कम्मं के०) ए पांच सामान्यकर्म कह्यां,
अहिं एवं खु शब्द ते गाथाना अंत सुधीना दरेक पदमां लेवुं. जेम केः–एवं
एटले ए प्रकारनां खर कर्मो जे गुप्तिपालनादिक छे, तेने खु एटले निश्चयें
करी श्रावकें (वज्जिज्जा के०) वर्जवां, ए पंदरे अतिचारमांहेलो जे म
हारे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्वप्रत्यें हुं निंदुं छुं ॥ २३ ॥

हवे अनर्थदंडविरमणनामा त्रीजुं गुणव्रत कहे छे. जेथकी निरर्थक
आत्मा दंडाय, पाप लागे, तेने अनर्थदंड कहियें. ते चार प्रकारें छे. ते
मां प्रथम तो जे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याववुं, ते अपध्यानाचरित अनर्थ
दंड कहियें, एटले वेगां वेगां मनमां चिंतवना करवी, जे वैरीने बांधुं, मा
री नाखुं अने राजा थाउं, तो वैरीनां गाम बाली नाखुं ? विद्याधर थाउं,
तो स्वेछायें ज्यां भावे त्यां जाउं? मनमानती स्त्रीनी साथें विलास करुं?
इत्यादिक जे माठुं ध्यान करवुं, ते अपध्यानाचरित अनर्थदंड कहियें.

बीजो प्रमादाचरितअनर्थदंड. ते पाप विकथा करवी, दूध, दहीं, छा
श, घृत, तेल, इत्यादिक वस्तुने ढांकवानुं आलस करवुं, ते बीजो भेद.

त्रीजो हिंसप्रदानअनर्थदंड, ते घंटी, उखल, मुशल, चाकू, छुरी प्रमु
ख पाप अधिकरण कोइने आपवां, ते हिंसप्रदानअनर्थदंडनो त्रीजो भेद.

चोथो पापकर्मोपदेश अनर्थदंड, ते न्हाउ, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो,
खेती करो, करावो, वाछडाने समरावो, अमुकने कूटो, मारो, बांधो,
इत्यादिक उपदेश देवा, ते चोथो भेद. ए चार प्रकारना अनर्थदंडथकी
निवृत्तवुं, तेने अनर्थदंडविरमणनामें त्रीजुं गुणव्रत कहियें. तिहां पोता
ने तथा ज्ञाती, गोत्री प्रमुखने अर्थें पाप करवुं, ते व्यवहारदृष्टियें अर्थ

दंम्ड छे, माटें अहींयां तेनो त्याग नथी ॥ २३ ॥ हवे ते त्रीजा गुणव्रत आश्रयी जे अतिचार लाग्या, ते त्रण गाथायें करी पडिक्कमियें छैयें.

सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कठ्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ २४ ॥

अर्थः–(सत्थ के०) शस्त्र, (अग्गि के०) अग्नि, (मुसल के०) मुशल, (जंतग के०) यंत्रक ते घंटी प्रमुख, (तण के०) सावरणी प्रमुख, (कठ्ठे के०) काष्ठ लाकडी अरहट्टनी लाती प्रमुख, (मंत के०) मंत्र ते साप खीलवा प्रमुखना जाणवा, (मूल के०) नागदमणी प्रमुख जडी बूटी, तथा गर्भशातन पातन प्रमुख जाणवा. (भेसज्जे के०) भैषज्य ते बे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उपजे एटले गोली, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवकारी वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली वी जाने (दिन्ने के०) देवाथकी, एटले आपवाथकी, (दवाविए के०) परपासें अपाववाथकी (वा के०) अथवा बीजा आपनारने अनुमोदवाथकी, जे अतिचार लाग्या होय, (सवंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधि अतिचार प्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंदुं छुं ॥ २४ ॥

न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे ॥
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसियं सवं ॥ २५ ॥

अर्थः–(न्हाण के०) स्नान ते अभ्यंग करी तेल चोपडीने नाहियें त्यां अजयणायें जीवाकुल भूमिकायें स्नान करे, अथवा अणगल पाणीयें स्नान करे, (उवट्टण के०) उवटणुं ते उद्धर्त्तन जे पीठी प्रमुखें करी शरीरनुं उवटण करे, मेल उतारे, (वन्नग के०) वर्णक वस्तु, ते अबीर, गुलाल, अलतादिक, (विलेवणे के०) केसर, चंदन, कुंकुमादिक वगेरेनुं विलेपन जाणवुं. (सद्द के०) वंश वीणादिकना शब्द कौतुकें सांभलवा, तथा प्रहर रात्रि उपरांत उंचे शब्दें बोलवुं, (रूव के०) स्त्री प्रमुखना रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, (रस के०) मधुर, आम्लादिक रस, (गंधे के०) वास, एटले सुगंध, ते कर्पूर, कस्तूरी प्रमुखना जाणवा (वत्थ के०) वस्त्र, (आसण के०) बेसवानां आसन, तेने संबंधें शय्या पण जाणवी. तथा

आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायनादिक शीख्या होय अनेकविध विषयजोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां, (आजरणे के०) आजरण ते जूषण, मुकुट, कुंमल, कंकण, मुद्रिकादिक तथा द्यूतक्रीडा, मद्यपान, जल क्रीडा, हींचवुं, इत्यादिक डुष्ट वानां करवां, जोवां, एम अनेक उपजोग परि जोग वस्तुउं आश्रयी अयत्नाथी अणउपयोगथी जे कोइ महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवससंबंधी अतिचारप्रत्यें (पडिक्क मे के०)हुं पडिक्कमुं बुं,निंडुं बुं.आ ठेकाणें शब्दादिक पांच विषय ग्रहण कस्या ठे. माटें तज्जातीय मद्यादि पांच प्रकारना प्रमादनुं पण ग्रहण करवुं ॥ २५ ॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचार, प्रतिक्रमणने माटें कहे ठे.

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइरित्ते ॥
दंमंमि अणठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

अर्थः—(कंदप्पे के०) कंदर्प्प,ते कामजोगनी कथानुं करवुं,तथा एवुं हास्य कारी वचन बोलवुं,जे थकी कामविकार जागे, ते प्रथम अतिचार जाणवो,त था (कुक्कुइए के०) कौकुच्ये,ते जृकुटी,नेत्र,नाक,मुख, हाथ पादादिकनी एवी चेष्टा करे, के जेथकी लोकोने अत्यंत हास्य उत्पन्न थाय, एटले जांमनी पेरें शरीरादिकनी कुचेष्टायें करीने लोकोने अत्यंत हास्य उपजाववुं, कोइना चा ला पाडवा, ते बीजो अतिचार, तथा (मोहरि के०) मुखरीपणुं,ते विचारर हित वाचालपणे घणुं बडबड करवुं मकार चकारादिक अघटित वचन बोल वां, ते त्रीजो अतिचार जाणवो, तथा (अहिगरण के०) शस्त्र, अग्नि,मुश ल, नीसा, लोढुं, घंटी प्रमुख अधिकरण, सज्ज करी राखवां, कोइ मागवा आवे तेने आपवां, तेमज अग्नि प्रमुख अधिकरणनी प्रथम प्रवृत्ति चलाव वी, ते चोथो अतिचार जाणवो. तथा (जोगअइरित्ते के०) उपजोग परिजो गनी वस्तु ते अतिरिक्त एटले पोताना खप करतां पण अधिक राखवी एटले जोगवस्तु जे तेल, कंकोडी, खयल, पाणी प्रमुख ठे,ते अधिक राखे, जे देखीने बीजाने न्हावा प्रमुखनी वांढा उपजे, तेथी जोगादिक वस्तुनो दोष लागे अ ने उपजोग वस्तु, ते जो एक घरनो खप होय तो पण बे चार घर प्रमुख खप विना सामटां करावे, तेथी उपजोग वस्तुनो अधिक दोष लागे. ते पां चमो अतिचार. (दंमंमिअणठाए के०) ए अनर्थदंमविरमण नामें (तइयं

मिगुणव्वए के०) त्रीजा गुणव्रतने विषे पूर्वोक्त जे अतिचार लाग्यो होय,ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं बुं ॥ २६ ॥ इति गुणव्रतप्रतिक्रमणं ॥

हवे चार शिक्षाव्रत कहे बे. त्यां प्रथम सामायिक नामक शिक्षाव्रत कहे बे.

तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठ्ठाणे तहा सइविहूणे ॥
सामाइअ वितह कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥२७॥

अर्थः–(तिविहे के०) त्रिविधें एटले त्रण प्रकारें (डुप्पणिहाणे के०) डुःप्रणिधान ते डुष्टव्यापार एटले सावद्य व्यापार बे, तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमध्यें प्रथम घर, हाट प्रमुख संबंधी जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं, ते प्रथम मनोडुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कठोर, सावद्यजाषायें करी बोलवुं, ते बीजो वचनडुःप्रणिधान नामें अतिचार जाणवो. तथा अण उपयोगथी पापव्यापारमां कायाने प्रवर्त्तावबी, देखवा, पूंजवा विना बेसवुं, सूवुं, जींतनुं ओठिंगण करवुं, इत्यादिक विपरीतपणे जे कायाने प्रवर्त्तावबी, ते कायडुःप्रणिधाननामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (अणवठ्ठाणे के०) अनवस्थान, ते सामायिकनुं जघन्य बे घडी कालमान बे तेटलो काल पूर्ण कस्या विना सामायिक पारवो, तथा आदररहितपणे सामायिक पारवो, तथा आदररहितपणे सामायिक करवो, ते चोथो अनवस्थानअतिचार जाणवो. (तहा के०) तथा (सइविहूणे के०) स्मृतिविहीन एटले नीद्रादि प्रमादथकी सामायिक में कीधो के नथी कीधो? एवुं उपयोगनुं शून्यपणुं ते पांचमो अतिचार. ए रीतें (सामाइअ के०) सामायिकप्रत्यें (वितहकए के०) वितथ एटले जूठो, कृते नाम कीधे थके (पढमेसिरकावए के०) प्रथम सामायिकनामा शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं बुं ॥ २७ ॥

आशंकाः–सामायिक लेइने पढी सर्वथा मननो संवर तो करी शकीयें नहीं, अने मनना कुव्यापारें एक तो कुव्यापारनुं पाप लागे, अने बीजुं सामायिकनो जंग थाय बे, तेथी तेनुं फरी प्रायश्चित्त करवुं जोइयें, तेमाटें अविधिदोषने लीधे सामायिक करवाने बदले नहींज करवो तेज जलुं बे?

समाधानः–सामायिक तो अवश्य करवो, केम के सामायिक जे लेवाय

छे, ते दुविहं तिविहेणं ए नांगे लेवाय छे, ए नांगामां मन, वचन अने काया ए त्रणें करी सावद्य व्यापार करुं नहीं, तथा करावुं नहीं, ए छ नियम आवे छे, तो ते छ मध्यें कोइवारें कदापि एक नियम नंग थाय तो पण पांच तो अखंमित रहे छे. अने मनना कुव्यापारनुं पाप अल्प होय छे, ते पापथी तो 'मिछा मि डुक्कडं' देवाथी बूटीयें छैयें. माटें एवां अल्प कारण थी जो सामायिक करवानो चालज बंध करीयें, तो आ कालमां चारित्रीयो कोइ पण नथी. एवुंज थइ जाय, तेमाटें सामायिक अवश्य लेवो अने ते सामायिक लेइने पछी जेम बने तेम शुद्ध पालवानो खप करवो, कारण के हमणांना कालनी दीक्षा अने सामायिक प्रमुख जे छे, ते सर्व अन्यास मात्रें छे. माटें अन्यास करतां थकां कोइ वखतें शुद्ध चारित्रनो लान पण थशे.

तेथी सामायिकनो अत्यंतानाव एटले निर्मूलपणुं करवुं योग्य नथी, केम के सर्वविरति सामायिकने विषे पण तेमज थाय छे, तेमां पण गुप्त्यादि नंगमां मिथ्या डुष्कृत प्रायश्चित्त कहेलुं छे, तेथी सामायिक न करवो ते योग्य नथी. वली पण सातिचार जे अनुष्ठान छे, ते पण अन्यास करतां कालें करीने निरतिचार अनुष्ठान थाय छे, एम पूर्वाचार्यो कहे छे. वली कहेलुं छे के, अन्यास जे छे, ते मनुष्यादिकना महोटा जन्ममां पछवाडे चालनारो थाय छे, माटें शुद्ध छे. तथा बाह्य लोको पण कहे छे, के अन्यास जे छे, ते कर्मना कुशलपणाने करे छे. माटें निरंतर सामायिक करवो तेज योग्य छे. जेम ग्रहण करवाना पात्रमां एक वखत पडेलो उदकबिंदु महत्ताने पामतो नथी, तेम मनना सदोषपणायें करी सामायिक करवो, ए पण अत्यंत दोषनी महत्ताने पामतो नथी कारण के तेनी मिछामि डुक्कडंथी शुद्धि छे, माटे अविधि करवाने बदले सामायिक नज करवो, एवुं बोलवुं ते असूयावचनज छे. कहेलुं छे, के "अविहिकया वरमकयं, उस्सूअ वयणं नणंति समणुन्नं ॥ पायछित्तं जम्हा, अकए लहुअं कए गुरुअं ॥ १ ॥ माटें धर्मानुष्ठान निरंतर करवुं अने करनारें सर्व शक्तियें करी विधिमां यत्न राखवो. एज श्रद्धालुनुं लक्षण छे. वली कृषी, वाणिज्य, सेवादिक, नोजन, शयन, आसन, गमन, तथा वचनादिक ते सर्व पण डव्य, क्षेत्र, कालादिक विधियें करीने पूर्ण फलवालां थाय छे. अन्यथा थतां नथी, माटें समस्त पुण्यक्रियाना प्रांतमां अविधि आशातना निमित्त मिथ्याडुष्कृत देवुं. किंबहुना.

हवे बीजा देशावकाशिक शिक्षाव्रतना अतिचार कहे छे.

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥

अर्थः–प्रथम जे भूमिनां परिमाण कीधां छे, ते भूमिनी उपरांत बाहिर नी भूमिथी कोइ जनार माणसनी हस्तक वस्तु पदार्थने (आणवणे के०) आनयन, एटले अणाववुं, मगाववुं ते, आनयननामा प्रथम अतिचार जाणवो. तथा परिमाण उपरांतनी भूमिने विषे दास प्रमुखने मोकलवो, क्रय विक्रयनो आदेश देवो, ते बीजो (पेसवणे के०) प्रेषवणनामा अतिचार जाणवो, तथा कोइ कार्य उपने थके नीमेली भूमिकाथी बाहिर रह्यो जे मनुष्य, तेने खोंखारादिक शब्दें करी पोतापणुं जणाववुं, ते त्रीजो (सद्दे के०) शब्दानुपाति नामा अतिचार जाणवो. तथा उंचो थइ पोतानुं रूप देखाडीने बोल्या विना पण जेने बोलाववुं होय, तेनी दृष्टियें पडे, तेना दर्शनथकी तेना समीपमां जाय, ते चोथो (रूवेअ के०) रूपानुपातिनामा अतिचार जाणवो. तथा नीमेली भूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुषने कांकरादिक नाखी पोतापणुं जणाववुं, ते पांचमो (पुग्गलक्खेवे के०) पुद्गलोत्क्षेप नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारमांहेथी (देसावगासिअंमि के०) देशावकाशिकनामें (बीएसिक्खावए के०) बीजा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं. अहीयां ए व्रतने विषे देशथकी अवकाश छे, एटले जे व्रतने विषे उपभोग परिभोग वस्तुनी छूट छे, तेने देशावकाशिक कहियें, तथा घणाथी थोडुं करवुं, तेने पण देशावकाशिक कहियें ॥ २८ ॥

हवे त्रीजा पौषधोपवास शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए ॥
पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥

अर्थः–(संथार के०) शय्यासंथार, (उच्चार के०) वडीनीति अने लघुनीतिनां थंडिल, एनो (विही के०) विधि जे प्रकार, तेने विषे (पमाय के०) जे प्रमाद करवो, ते अतिचारचउक्क जाणवुं, ते अतिचारचउक्क

ने विवरीने कहे छे. त्यां शय्या संथाराने न पडिलेहे अथवा प्रतिलेखन करे, तो कांइक करे, कांइक न करे, ते प्रथम अप्पडिलेहिअ डुप्पडिलेहिअ सद्यासंथारे नामा अतिचार जाणवो, तथा शय्या संथाराने न प्रमार्जवुं, अने प्रमार्जवुं तो कांइक प्रमार्जवुं, कांइक न प्रमार्जवुं, ते बीजो अप्पमज्जिअडुप्पमज्जियसद्यासंथारे नामा अतिचार जाणवो, तथा वडीनीति अने लघुनीति, परठववानी जे भूमि, ते भूमिने न पडिलेहवी, अथवा पडिलेहवी, तो कांइक पडिलेहवी अने कांइक न पडिलेहवी, ते त्रीजो अप्पडिलेहिअ डुप्पडिलेहिअ उच्चारपासवणभूमि नामा अतिचार जाणवो. तेमज ते भूमिने न प्रमार्जवी, अथवा प्रमार्जवी तो कांइक प्रमार्जवी कांइक न प्रमार्जवी, ते चोथो अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जिअ उच्चारपासहवणभूमिनामा अतिचार जाणवो. ए चारे अतिचार ते शय्या संथारो तथा लघुनीति, वडीनीतिनां थंडिलने दृष्टियें करी जूवे नहीं, तेमज चरवला तथा दंडासणादिकें करी पूंजे, प्रमार्जे नहीं अथवा शून्यचित्तें जूए, अने पूंजे ते संबंधी ए अतिचारचतुष्क कह्युं. (तहचेव के०) तथैव एटले तेमज वली निश्चें (भोअणाभोए के०) भोजननो आभोय एटले आभोग करवो चिंतवन करवुं,अर्थात् पोसह लीधा पछी भोजनादिकनी चिंता करे, एटले क्यारें पोसह पूर्ण थशे अने क्यारें पारणुं करशुं ? अथवा पारणे अमुक भोजन करशुं? एवी चिंतवणा करवी, ते पांचमो भोअणाभोए नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारोयें करीने (पोसहविहिविवरीए के०) पोसहव्रतनो विधि जे प्रकार ते विपरीत करे थके, (तइएसिक्खावए के०) पौषधोपवासनामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, तेने (निंदे के०) हुं निंदु छुं ॥२९॥

हवे चोथा अतिथिसंविभाग शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥
कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥

अर्थः—(सच्चित्ते के०) साधुने देवा योग्य जे भक्तादिक तेने पृथिव्यादिक जे सचित्त,ते सचित्तनी उपर पूर्वोक्त प्राशुक निर्दोष वस्तुनुं (निक्खिवणे के०) निक्षेपवुं मूकवुं ते सचित्तनिक्षेपण नामा प्रथम अतिचार जाणवो. तथा

प्राशुक निर्दोष देवा योग्य वस्तुने सचित्त ते कंद, पत्र, पुष्पादि पदार्थें करी (पिहिणे के०) ढांकवी, ते सचित्तपिहिण नामा बीजो अतिचार जाणवो, तथा (ववएस के०) व्यपदेश करवो एटले पोतानी वस्तुने अण देवानी बुद्धियें पारकी करीने कहेवी, तथा देवानी बुद्धियें पारकी वस्तुने पोतानी करीने कहेवी, एवी रीतें व्यपदेश करवो ते व्यपदेशनामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (मच्छरे के०) मत्सर एटले कोप आवें दान आपवुं तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं परनी ईर्ष्या करतां मान धरतां मुनिने दान आपवुं, ते मत्सरनामा चोथो अतिचार जाणवो. तथा (चेव के०) निश्चें (कालाइक्कमदाणे के०) मुनिराजनी गोचरीनो काल अतिक्रमि उल्लंघीने मुनिराजने तेडे, अने मनमां जाणे जे साधु हमणां वहोरशे पण नहीं अने महारो नियम भंग पण थाशे नहीं ? ते पांचमो कालातिक्रमदान नामें अतिचार जाणवो. ए अतिथिसंविभागनामें (चउत्थेसिक्खावए के०) चोथा शिक्षाव्रतने विषे अल्प देवानी बुद्धियें तथा अणदेवानी बुद्धियें करीने ए मांहेला जे अतिचार लाग्या होय, तेप्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥३०॥

हवे रागादिकें करी दान दीधुं तेना प्रतिक्रमणने माटें कहे छे.

सुहिएसु अ दुहिएसु अ,जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

अर्थः–(सुहिएसु के०) सुष्ठु नाम रूडी रीतें हित छे ज्ञानादित्रय एटले सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनुं जेमने ते सुहित कहियें, ते सुहित एवा, (अ के०) वली (दुहिएसु के०) दुःखित ते रोगें करीने पीडित तपें करीने दुर्बल, तुच्छ, जीर्ण,उपाधियें करीने दुःखिया एवा,(अस्संजएसु के०) अहीं (अ के०) नथी (स्वं के०) पोताने छंदें (यत के०) यत्न एटले उद्यम करवो विचरवुं जेने एटले पोतानी स्वेच्छायें विचरनारा नहिं, परंतु गुरुनी आज्ञाने विषे विचरनारा एवा सुसाधु, ते उपर (रागेण के०) पुत्रादिकने रागें करी एटले आ महारो पुत्र तथा भाइ प्रमुख छे, एवा रागें करी दान दीधुं,पण गुणवंतनी बुद्धियें दान न दीधुं, (व के०) अथवा (दोसेण के०) द्वेष ते आ छेकाणें साधुनिंदारूप जाणवो. ते जेम के, आ साधुने ज्ञातिना लोकोयें काढेलो छे, भूख्यो छे, ए बापडाने आपणे आहार पाणी

न आपीयें,तो बीजो कोण आपे? नहिं आपशुं तो ए भूखें मरशे? एवी निंदा रूप जे द्वेष, तेवा द्वेषें करी एटले डुगंछाजावनी बुद्धियें करी (मे के०) महा रे जीवें (जा के०) जे (अणुकंपा के०) अशनादिक प्रमुख दानें करी दया जक्ति कीधी होय, (तं के०) तेप्रत्यें (निंदे के०) अत्मसाखें हुं निंडुं बुं, (च के०) वली तेप्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गर्हुं बुं, विशेषें निंडुं बुं.

अथवा बीजो अर्थ आवी रीतें बेः—(सुहिएसु के०) वस्त्र पात्रादिकें करी सुखीया अने (डुहिएसु के०) रोगप्रमुखें करी डुःखिया एवा (अ संजएसु के०) असंयत एटले (अ के०) नथी जेने (सं के०) सम्यक् एटले रूडो एवो, (यत के०) यत्न जे उद्यम करवो. एटले जे रूडो उ द्यम नथी करता, परंतु जीवहिंसादिक कर्मपाशमां पडवा संबंधी उद्यमना करवावाला,जैनाजास,वेशविडंबक एवा असंयती,पासह्या,उसन्नादिक तेने. तथा त्रीजो अर्थ, ते असंयत षड्विधजीव वधकोने अथवा अन्यदर्शनी कुलिं गी तेने रागें करीने, जेम के, एक गामना वासी बे अथवा महारा जाइ प्रमुख बे, आपणी उलखाणना बे, इत्यादिक जे रागजावें करी दान दीधुं तथा जिनशासनना प्रत्यनीक बे, द्वेषी बे, निर्लज्ज जंरुक बे, इत्यादिक द्वेष उपन्यो तो पण घरे आव्या, माटें दान आप्युं, इत्यादिक जावें जे म हारे जीवें अनुकंपा, दया कीधी होय, तेने हुं निंडुं बुं ॥ ३१ ॥

अहीं गुणवंत साधुने दान दीधुं ते निंदवुं नहीं, परंतु पूर्वोक्त राग द्वे षनी निंदा करवी तथा पासह्यादिक अने कुलिंगी प्रमुखने गुणवंतनी बुद्धियें दान दीधुं होय, ते निंदवुं, पण जे सहेज अनुकंपायें दान दीधुं होय, ते तो अनुकंपाज कहेवाय, ते दाननें जगवंतें निषेध्युं नथी, अहीं रागद्वेषनी निंदा जाणवी, पण दान दीधुं, तेनी निंदा जाणवी नहीं ॥

हवे सुसाधुने दान न दीधुं, ते आलोवे बे.

साहूसु संविजागो,न कर्ज तव चरण करण जुत्तेसु॥
संते फासुअ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥

अर्थः—(तव के०) तपें करीने, (चरण के०) चरणसित्तरीयें करीने (करण के०) करणसित्तरियें करीने, (जुत्तेसु के०) सहित एवा, (सा हूसु के०) सुसाधु तेने विषे (फासुअदाणे के०) देवा योग्य प्राशुक

निर्दोष एवुं अशनादिक दान, (संते के०) छते म्हारे जीवें जो (संवि जागो के०) संविज्ञाग, (नकर्ज के०) न कीधो होय, तेथी जे अतिचा र हुर्ज होय, (तं के०) तेप्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंदुं छुं, (च के०) वली (तं के०) तेप्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें गहुँ छुं. आ ठेकाणें तपः पदनुं जूडुं उपादान कर्युं छे, तेणें करीने जे तप छे, ते नीकाचित कर्मोने पण क्षय करनारुं छे, एवुं प्राधान्य सूचन कर्युं छे. ए त्रण गाथायें करी चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ इति चतुःशिक्षाव्रतप्रतिक्रमणं ॥३२॥

हवे संलेषणाना पांच अतिचार परिहार करता छता कहे छे.

इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपर्जगे ॥
पंचविहो अइआरो, मा मज्क हुज्क मरणंते ॥ ३३ ॥

अर्थः-(इहलोए के०) इह लोकने विषे एटले आ धर्मना प्रज्ञावें शे ठ, गाथापति, सेनापति, राजा, मंत्रि प्रमुख ऋद्धिमंत मनुष्य थवानो (आसंसपर्जगे के०) आशंसा जे अज्ञिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते इहलोकाशंसप्रयोग नामा प्रथम अतिचार जाणवो. अहीं आशंसाप्रयोग ए पद, दरेक पदना प्रारंजमां प्रयोजवुं. (परलोए के०) आ धर्मना प्रज्ञावें पर लोकनी आशंसा जे देव, देवेंद्र थवानो अज्ञिलाष, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार करवो, ते परलोकाशंसप्रयोगनामा बीजो अतिचार, (जीविअ के०) अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल पर्यंत जीववानी आशंसा जे वांछा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अतिचार जाणवो. (मरणे के०) कर्कश क्षेत्रने विषे अनशन लइने कोइ पूजा, अर्चा न करता होय तेणें करी अथवा क्षुधादिकें करी पीड्यां थकां शीघ्र मरण नी आशंसा जे वांछा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार जाणवो. (अ के०) चशब्दथकी आ धर्मने प्रज्ञा वें आवते ज्ञवें रूडा शब्द, रूप, रसादिक जे कामज्ञोग छे, तेनी आशंसा जे वांछा तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते पांचमो कामज्ञोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो. ए पाच वांछानुं जे करवुं, ते संलेषणा संबंधी ए (पंचविहो के०) पंचविध, (अइयारो के०) अतिचार, (मरणंते के०) मरणने अंतें एटले ज्यां सुधी चरम श्वास होय, त्यां पर्यंत (मचं के०)

महारे (मा के०) न (हुज्ज के०) थाउं, एटले ए पंचविध अतिचार, ते मरणने अंतें मुजने म होजो ॥ ३३ ॥

हवे प्रायः सर्व अतिचार, मन, वचन अने कायाना कुव्या पारें होय छे, तेनुं प्रतिक्रमण कहे छे.

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स॥३४॥

अर्थः–(काइअस्स के०) कायिकस्य एटले वधादिकारी एवा शरीरें करी करेला जे अतिचार, ते अतिचारने (काएण के०) कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक जे कायाना शुज व्यापार, तेणें करी युक्त एवा शरीरें करीने, तथा (वाइअस्स के०) वाचिकस्य एटले सहसाभ्याख्यानदानादिरूप वाणीयें करीने कस्यो एवो जे वचनसंबंधी अतिचार तेने, (वायाए के०) वचनें करीने मिछाउक्कड देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुज वचन नो व्यापार, तेणें करीने, तथा (माणसिअस्स के०) मानसिकस्य एटले देवतत्त्वादिकने विषे मनें करी शंकादिकने करवे करी कस्या एवा जे अतिचार तेने, (मणसा के०) मनें करीने एटले अनित्य जावनादिक जे मनना शुजव्यापार तेणें करीने तथा “हा! में डुष्ट काम कस्युं” इत्यादिक आत्मनिंदायें करीने एम (सव्वस्सवयाइआरस्स के०) सर्व व्रतना अतिचारप्रत्यें त्रिकरण शुद्धें करीने (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निवर्तुं छुं. अहीं ‘सव्वस्सवयाइआरस्स’ ए पदें करीने सामान्यें करी त्रण योगनुं प्रतिक्रमण कस्युं ॥ ३४ ॥

हवे एनेज विशेषें करी कहे छे.

वंदण वय सिक्खा गा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥

अर्थः–एक (वंदण के०) वंदन ते बे प्रकारें छे. तेमां एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन छे. बीजुं (वय के०) श्रावकनां स्थूलप्राणातिपात विरमणादिक व्रत बार प्रकारें छे, त्रीजी (सिक्खा के०) शिक्षा बे जेदें छे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहणशिक्षा कहियें. ते जघन्यें नवकारथी मांमीने अष्ट प्रवचन, गुरु पासेंथी जणे अने उत्कृष्टो दशवैकालिकसूत्रना पांचमा

छज्जीवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र अने अर्थ बेहु जाणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगें प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी. अने जे अर्थ सहित नमुक्कार सहित प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधी क्रियाअनुष्ठाननी जे समाचारी छे, एटले पहेलो नवकार कहेतो थकोज उठे, पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावक छुं, केटलां व्रत मुजने छे ? इत्यादिक श्राद्धदिनकृत्य प्रकरण तथा श्राद्धविधिमांहे जे समाचारी कही छे, ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवनाशिक्षा कहियें. चोथो (गारवेसु के०) ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण प्रकारनां गारव छे. तेमां जे पोतानी पासें धन, तथा कुटुंब परिवार घणो देखीने मनने विषे अहंकार आणे, तेने ऋद्धिगारव कहियें. अने जे सरस अन्न पाणी प्रमुखने विषे लोलुपी थाय, ते रसगारव कहियें. तथा जे सुकुमाल वस्त्र, शय्या, घर प्रमुखने मोहें बांध्यो थको तेने मूकी शके नहीं, तेने शातागारव कहियें. ए त्रण प्रकारनां गारव कह्यां, तेनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो (सन्ना के०) आहार, भय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञाउं. बीजी क्रोध, मान, माया, लोभ, लोक, उंघ, ए छ संज्ञाउं. ते एकेंद्रियादिक सर्व जीवोने होय छे, तथा छठो (कसाय के०) क्रोधादिक चार कषाय, तथा सातमो (दंडेसु के०) धर्मधनर्थी जेणें करी आत्मा दंडाय, ते दंड, अशुभ मनादिक त्रण भेदें छे. आठमो (गुत्तीसुअ के०) मनादिक त्रण गुप्ति, नवमो (समिईसु के०) ईर्यादिक पांच समिति (अ के०) चशब्दथकी दर्शनपडिमा प्रमुख श्रावकनी अगीयार पडिमा. ए पूर्वोक्त नव बोल मध्यें जे बोल निषेध करवा योग्य छे, तेना करवा थकी अने जे बोल करवा योग्य छे तेना न करवाथकी (जो के०) जे (अइयारो के०) अतिचार, (अ के०) अथवा दोषसमुच्चय जे मनें लाग्यो होय, (तं के०) तेप्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥ ३५ ॥

हवे सम्यग्दर्शनने माटें कहे छे.

सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि॥
अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥

अर्थः—(जइवि के०) जो पण (सम्मद्दिट्ठीजीवो के०) सम्यग्दृष्टि एटले यथावस्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव, ते (किंचि के०) किंचित् थोडुं

(पावं के०) कृषी प्रमुख आरंभरूप पाप, ते प्रत्यें निर्वाह चलाववाने अर्थे (समायरइ के०) समाचरे छे, एटले करे छे, (हु के०) तो पण (सि के०) ते श्रावक सम्यग्दृष्टि जीवने (अप्पो के०) अल्प ते पूर्व गुणस्थाननी अपेक्षायें करी थोडो (बंधो के०) कर्मनो बंध, (होइ के०) होय, (जेण के०)जेकारण माटें जाणीयें छेयें के,सम्यग्दृष्टि जे श्रावक छे ते, (निद्धंधसं के०) निर्दयपणे हिंसादिक व्यापार, (नकुणइ के०) न करे, अने करे, तो पण शंका राखीने करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पडो आ गृहस्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पडे छे ? एवी बीक राखीने करे पण निर्दय परिणाम राखीने न करे, तेथी तेने पाप थोडुं लागे छे ॥ ३६ ॥

अहीं कोइ आशंका करे के, जेम थोडुं पण विष खाधुं थकुं प्राण हरण करे छे, तेम थोडुं पण पाप करवाथकी दुर्गतिनी प्राप्ति न थाय शुं ? आ आशंकानो उत्तर आगली गाथायें आपे छे.

तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥
खिप्पं उवसामेई, वाहि व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥

अर्थः–(सपडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण जे षडावश्यक तेणें करी सहित थको एटले प्रतिक्रमणने करवे करी, (च के०) वली (सप्परिआवं के०) परिताप सहित थको एटले पश्चात्ताप करवे करी, वली (सउत्तरगुणं के०) उत्तर गुणें सहित थको एटले गुरुयें दीधुं जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त एवो श्रावक, (हु के०) निश्चें (तंपि के०) ते अल्पकर्मना बंध प्रत्यें पण (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र उतावलो (उवसामेई के०) उपशमावे छे, टाले छे. कोनी पेठें ? तोके (व के०) जेम (सुसिक्खिउ के०) जलो शीखेलो एवो (विज्जो के०) वैद्य, ते (वाहि के०) व्याधिप्रत्यें साध्यरोगप्रत्यें तुरत उपशमावे छे, तेम ए पण जाणवुं ॥ ३७ ॥

हवे वली बीजो दृष्टांत कहे छे.

जहा विसं कुट्ठगयं, मंत मूल विसारया ॥
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥

अर्थः–(जहा के०) यथा जेम, (मंतमूलविसारया के०) मंत्र मूलना

विशारद, एटले जाण, डाह्या एवा जे (विज्जा के०) वैद्यो, ते (कुठगयं के०) कोष्ठगत एटले शरीरमां व्यापेलुं एवुं जे (विसं के०) सर्पादिकनुं विष, तेप्रत्यें (मंतेहिं के०) मंत्रोयें करीने (हणंति के०) हणे छे, एटले दूर करे छे,(तो के०)ते वारें (तं के०) ते शरीर, (निव्विसं के०) निर्विष एटले विषरहित (हवइ के०) होय छे. जो पण विषार्त्त पुरुष, अहिमणि मंत्राक्षर औषधि नो प्रभाव जाणतो नथी तो पण अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रभाव अचिंत्य छे, तेथी तेनुं विषार्त्तत्व निवृत्त थाय छे, तेम अहिं पण श्रावक ने गुरुवाक्यानुसारें तदक्षरश्रवणथी लाभ थाय छे ॥ ३८ ॥

एवं अठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ॥ आलो
अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥

अर्थः—(एवं के०) ए पूर्वोक्त दृष्टांतें (आलोअंतो के०) गुरु समीपें आलोवतो एटले पोतानां पाप प्रकाश करतो छतो, (अ के०) वली (निंदंतो के०) निंदतो थको एटले साचा मनथी 'मिछामिदुक्कडं' देतो थको (सुसावउ के०) भलो श्रावक जे छे, ते (रागदोस के०) राग, द्वेषें करीने (समज्जिअं के०) समार्जित करेलुं एटले उपार्जेलुं बांधेलुं एवुं जे (अठविहंकम्मं के०) अष्टविध कर्म, ते प्रत्यें (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र, (हणइ के०) हणे छे, फेडे छे ॥ ३९ ॥

वली एहीज वातने सविशेष कहे छे.

कयपावोवि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे ॥
होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरु व भारवहो ॥४०॥

अर्थः—(कयपावोवि के०) पापनो करनार एवो पण (मणुस्सो के०) मनुष्य, अहीं मनुष्य शब्दना ग्रहणें करीने प्रतिक्रमण जे छे,ते कृतपाप म नुष्यनेज करवुं योग्य छे. ते (गुरुसगासे के०) गुरुनी समीपें अहिं गुरुसगासे ए पदें करीने पूर्वोक्त आलोयणा, गुरु गीतार्थादिकनी समीपमांज करवी, एवी सूचना करी अने जो कदाचित् स्वतःज आलोयणा करी होय तो शु द्धिनो अभाव थाय छे. एम पण सूचन कर्युं छे, माटें गुरु समीपने विषे (आलोइय के०) आलोवतो थको एटले करेला पापप्रत्यें प्रकाश करतो

थको (निंदिअ के०) पापनी निंदा करतो थको एटले मिछाडुक्कडं देतो थको (अइरेग के०) अतिरेक एटले अत्यंत पापथकी (लहुउ के०) लहु एटले हलवो (होइ के०) थाय, (व के०) जेम (जारवहो के०) जारनो व हेनार वहीतरुं करनार पुरुष, (जरु के०) जार प्रत्यें (उहरिअ के०) उतारी ने हलवो थाय छे, तेम ए पण कर्मरूप जारें करीने हलवो थाय छे ॥४०॥

हवे बहु आरंजरक्त एवा श्रावकने पण आवश्यकें करी ते पापरूप डुःखनो अंत थाय छे, ते देखाडे छे.

आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥
डुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण॥४१॥

अर्थः– जइवि के०) जो पण, (बहुरउ के०) बहु एटले घणो नवो कर्मबंधरूप रजवालो एटले आरंज परिग्रहें करी घणा पापें सहित एवो (सावउ के०) श्रावक (होइ के०) होय, तो पण (एएण के०) एतेन एटले ए पडिक्कमणादिक (आवस्सएण के०) आवश्यकेन एटले आव श्यकें करीने. आहीं कोइ शंका करशे जे आवश्यकशब्दें करी दंतधावना दिक पण आवश्यक छे, ते लेशुं ? तो त्यां कहे छेके, आ गाथामां एतेन ए शब्दनुं जे ग्रहण कर्युं छे, ते डव्यावश्यक निषेधार्थ छे तथा जावावश्य क प्रतिपादनार्थ छे माटें तेवा जावावश्यकें करी (डुक्खाणं के०) शा रीरिक, मानसिक डुःखोनी (अंतकिरिअं के०) अंतक्रिया एटले विनाश क्रियाने (काही के०) करशे. (अचिरेणकालेण के०) थोडा कालमां हे ते पापोनो विनाश करशे ॥ ४१ ॥

हवे पडिक्कमणुं करतां जे अतिचार आलोववाने विसर्जन थया होय एटले जे अतिचारो, विस्मृत थया होय, ते आलोवे छे.

आलोअणा बहुविहा, नय संजरिआ पडिक्कमणकाले ॥
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

अर्थः–(आलोअणा के०) आलोचना एटले गुरु आगल पाप, प्रमाद, आलोववानी प्रकाश करवानी रीति ते, (बहुविहा के०) घणा प्रकारनी छे. ते (पडिक्कमणकाले के०) तेना प्रतिक्रमण कालने विषे एटले पडिक्क

मणा करवाना अवसरें (नयसंजरिआ के०) न सांजरी होय, ते न सांजरवाथकी (मूलगुण के०) सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत, तेने विषे तथा (उत्तरगुणे के०) त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंदु बुं. (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गर्हुं बुं, निंदु बुं ॥ ४२ ॥ ए बहेंतालीश गाथाउं बेठा थकांज कहेवी.

पबी उनो थको 'तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स' एम कहेतो उनो थइ बे हाथ जोडीने आगली मंगलगर्जित आठ गाथाउं कहे, ते कहे बे.

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अप्नुठिउंमि
आरा, हणाए विरउंमि विराहणाए ॥ तिविहेण
पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥

अर्थः–(तस्स के०) ते गुरुपार्श्वने विषे प्रतिपन्न एवो अने (केवलि पन्नत्तस्स के०) केवलिजाषित एवो (धम्मस्स के०) श्रावकधर्मनी (आ राहणाए के०) आराधनाने माटें (अप्नुठिउंमि के०) हुं सारी रीतें पालन करवाने उठ्यो बुं, (विराहणाए के०) ते धर्मनी विराधनाथकी (विरउंमि के०) हुं विरत्यो बुं, एटले निवर्त्यो बुं, (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (पडिक्कंतो के०) प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यो थको (चउवीसंजिणे के०) चोवीश जिनप्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांडु बुं ॥ ४३ ॥

एवी रीतें जावजिनने नमस्कार करीने हवे सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें त्रिलोकगत स्थापना अरिहंत वांदवाने गाथा कहे बे.

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तब संताइं ॥ ४४ ॥

अर्थः–(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्च्छालोकने विषे (जावंति के०) जेटलां (चेइआइं के०) चैत्य एटले जिनबिंब बे. (ताइं स व्वाइं के०) ते सर्वप्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडु बुं. शुं करतो थको वांडुं

हुं ? तो के हुं (इह के०) अहिंयां (संतो के०) रह्यो थको अने (तत्र के०) त्यां ते त्रण लोकने विषे (संताइं के०) रह्यां छे जे जिनबिंब,ते सर्व प्रत्यें हुं वांडु छुं ॥ ४४ ॥

हवे सर्व साधुने वंदन करवाने अर्थें कहे छे.

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वे सिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥

अर्थः—(भरह के०) पांच भरतक्षेत्रने विषे, (एरवय के०) पांच ऐरवतक्षेत्रने विषे, (महाविदेहे के०) पांच महाविदेहक्षेत्रने विषे, (अ के०) चशब्दथकी अकर्मभूमिक्षेत्रादिकने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि क०) कोइ पण जिनकल्पिक स्थविरकल्पिक प्रमुख जघन्य बे हजार कोडी अने उत्कृष्टा नव हजार कोडी (साहू के०) साधुओ छे; (ते सिंसव्वेसिं के०) ते सर्व साधुप्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पणओ के०) हुं प्रणमुं छुं, ते सर्व साधु केहेवा छे ? तो के, (तिदंड के०) त्रण दंडथकी एटले अशुभ मन, वचन अने कायाना व्यापारथकी (विरयाणं के०) विराम पामेला छे ॥ ४५ ॥

हवे एवी रीतें चैत्यनें तथा यतिने वंदन कस्यां छे जेणें एवो छतो भविष्यकालनेविषे पण शुभभावनी प्रार्थना करतो छतो कहे, ते लखे छे.

चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीस जिणविणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥

अर्थः—(चिरसंचियपाव के०) चिरसंचित पापप्रत्यें एटले घणा कालना संचायेलां एवां जे पापो, तेप्रत्यें (पणासणीइ के०) प्रनाशनी करनारी एटले विनाशनी करनारी एवी, (भवसयसहस्स के०) शतसहस्रभव प्रत्यें एटले संसारना लक्ष भव जे करवा, तेप्रत्यें, (महणीए के०) मथन करनारी एटले हणनारी एवी, (चउवीसजिण के०) चोवीशजिनो थकी एटले चोवीश तीर्थंकरोथकी (विणिग्गय के०) विनिर्गत एटले नीकली जे (कहाइं के०) जिनगुणोत्कीर्त्तनरूप कथा, ते कथा करवे करीने

(मे के०) म्हारा (दिअहा के०) दिवसो, (वोलंतु के०) व्रजंतु एटले वोलो, जाउ. ए प्रार्थना करी बे ॥ ४६ ॥

हवे मंगलपूर्वक जन्मांतरने विषे पण सम्यग्दृष्टि देवोपासेंथी बोधबीज पामवानी प्रार्थना करे बे.

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥
सम्मदिठ्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥

अर्थः–(अरिहंता के०) एक श्रीअरिहंत देव, (सिद्धा के०)बीजा सिद्ध जगवान्, (च के०) वली (साहू के०) त्रीजा साधु मुनिराज, (सुअं के०) चोथो श्रुतधर्म, ते अंगोपांगादिक आगम, (अ के०) वली (धम्मो के०) चारित्रात्मक धर्म पण लेवो. ए श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म, एम बे प्रकारें केवलीयें प्ररूप्यो जे धर्म ते. ए चार वानां (मम के०) म्हारे (मंगलं के०) मांगलिक बे, अशब्दथकी ए चारे वानां लोकने विषे उत्तम बे, शरणजूत बे, वली पण एम प्रार्थना करीयें बैयें जे, (सम्मदिठ्ठीदेवा के०) सम्यग्दृष्टि जिनजक्त देवताउ जे बे, ते मुजने (समाहिं के०) समाधिप्रत्यें एटले शुजकार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता, तेप्रत्यें (च के०) वली (बोहिं के०) बोधिप्रत्यें एटले परजवें श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति तेप्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो. (च के०) बीजो च बे, ते पादपूर्णार्थ बे॥

अहीं आशंका करे बे के; आ गाथामां धर्मशब्दना ग्रहण करवाथकी श्रुतशब्दनुं ग्रहण थयुंज, कारण के श्रुतनुं धर्मांतर्गतत्व बे ? त्यां कहे बे. श्रुतशब्दनुं जे पृथक् ग्रहण कर्युं बे तेनुं कारण ए बे जे,समुदित एवां ज्ञानक्रियायें करीनेज मोक्ष थाय बे, तेनुं सूचन करवाने अर्थें जूदुं ग्रहण कर्युं बे.

अहीं वली बीजी पण आशंका करे बे के, ते देवो समाधिदानने विषे समर्थ बे, किंवा नथी ? जो कहेशो के समर्थ नथी, तो प्रार्थना करवी व्यर्थ बे ? अने जो कहेशो के समर्थ बे, तो दूरजव्य तथा अजव्यने केम नथी आपता ? अने कदापि एम मानशो के योग्यनेज आपे बे,पण अयोग्यने आपवा असमर्थ बे ? त्यारें तो योग्यताज प्रमाण बे, माटें अजागलस्तनसदृश एवा देवोनी प्रार्थनायें करीने शुं ?

समाधानः–अमारे सर्वत्र योग्यताज प्रमाण बे; परंतु अमें नियतवा

दीयोनी पेठें एकांतवादी नथी. कारण के अमें जिनमतानुयायी ठेयें माटें सर्वनयसमूहात्मक स्याद्वादमुद्रा, ते अनन्निन्नेदि सामग्रीने विशेषें उत्पन्न करनारी ठे, एवुं वचन ठे ए हेतुमाटें जेम घटसिद्धिने विषे मृत्तिकानी योग्यता ठे खरी तो पण कुंनार, चक्र, चीवर, दंमादिक, ए सर्व तेनां सह कारी कारण ठे, एम अहीं पण जीवनी योग्यता तो ठे, तथापि पूर्वोक्त दृष्टांत नी पेठें विघ्नोनुं निराकरण करीने ते देवो पण समाधिबोधिदानने विषे समर्थ होय ठे,माटें ते देवोनी बोधिदानने विषे प्रार्थना करवी निरर्थक नथी ॥४७॥

हवे कोइ आशंका करे,के जेणें व्रत स्वीकाखां ठे तेने प्रतिक्रमण करवुं योग्य ठे, परंतु अव्रतीने तो व्रतना अन्नावें करीने तेना अतिचारनो पण अन्नाव ठे, माटें प्रतिक्रमण करवुं योग्य नथी, ते वातनो निषेध करवाने कहे ठे के, आ प्रतिक्रमण जे ठे, ते केवल अतिचारोने विषेज नथी परंतु चार स्थानकने विषे पण ठे, माटें ते चारे स्थानकने विषे प्रतिक्र मण थाय ठे, तेना उपदर्शनने माटें गाथा कहे ठे.

पडिसिध्दाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ॥
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥४८॥

अर्थः–एक (पडिसिद्धाणं के०) जे प्रतिषेधवा योग्य निषेधवा योग्य ते सम्यक्त्व अणुव्रतादिनां मालिन्यहेतु एवां शंकावधादि तथा अढार पाप स्थानकादिक जे अतिचारसेवनादिकरूप अशुन्नकारी ठे, ते अशुन्न कार्यने (करणे के०) करवे करी, तथा बीजो (किच्चाणं के०) करवा योग्य एवां जे देवपूजादिक षट्कर्म तथा सामायिकादिक षडावश्यक विनयदानादिक अरिहंतनां न्नक्तिप्रमुख जे शुन्नकार्य ठे, ते शुन्नकार्यने (अकरणे के०) अणकरवाथकी (अ के०) वली त्रीजो (असद्दहणे के०) अश्रद्धान ने विषे एटले निगोदादिक सूक्ष्मविचारने अणसर्दहवे करीने (अ के०) वली (तहा के०) तथा चोथो (विवरीयपरूवणाए के०) जिनागम थकी विपरीत एटले उलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र प्ररूपणा करवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ठे, ते चतुरंत एवुं अत्यंत नवन्रमण, तेनी कारणन्नूत ठे. ते विपरीतप्ररूपणा तो अनान्नोगादिकें करे ठते पण प्रतिक्रमण कराय ठे. त्यां शंका करे ठे के, विपरीत प्ररू

वणा जे बे, ते तो सूत्र कथन करतो होय, तेने थवानो संजव बे, परंतु अन्य ने तो नथी, माटें शुं धर्मकथननो अधिकार श्रावकने बे ? तो त्यां कहे बे के, श्रावकने धर्मकथननो अधिकार बे, कारण के गीतार्थथकी अधिगत बे सूत्र जेने तेवा तथा गुरुने आधीन बे वचन जेने, तेवा श्रावकने शा माटें सूत्रकथननो अधिकार न होय?त्यारें वादी कहे बे के, ए जे अधिका र बे, तेमां प्रमाण शुं ? तो त्यां प्रमाण कहे बे केः–"पढइ सुणेइ गुणेइ, जिणस्स धम्मं परिकहेइ" इत्यादि वचन बे तथा चूर्णीमां पण लख्युं बे जे "सो जिणदास सावउमि चउदसीसु उववासं करेइ पुब्वयं च वाएइ" इत्यादि माटें श्रावकने अधिकार बेज, तेथी ए चार प्रकारें करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार हुउं होय, ते पापने दूर करवाने अर्थें (पडि क्कमणं के०) प्रतिक्रमण बे, मिछा मि डुक्कड बे ॥ ४८ ॥

हवे अनादि संसारसागरावर्त्तांतर्गत जे सत्त्वो बे, तेमने अन्योऽन्य वैरनो संजव बे, माटें तेने खमाववाने कहे बे.

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वजूएसु, वेरं मद्यं न केणइ ॥ ४९ ॥

अर्थः–(सव्वजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमावुं बुं एटले अनंतजवोने विषे पण अज्ञानमोहावृतत्वें करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावुं बुं, अने (सव्वेजीवा के०) ते सर्व जीवो पण (मे के०) महारा अपराधप्रत्यें, (खमंतु के०) खमो, माफ करो. ए क्षमनक्षमापनमां कारण कहे बे के, (सव्वजूएसु के०) सर्व जूतोने विषे (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रीजाव बे, (केणइ के०) कोइ जीवनी साथें (मद्यं के०) महारे (वेरं के०) वैरजाव (न के०) नथी ॥४९॥

हवे प्रतिक्रमण अध्ययनने उपसंहार करतो बतो बेल्ली मंगलप्रदर्शनार्थ गाथा कहे बे.

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंबिअं सम्मं ॥
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥५०॥ इति ॥३१॥

अर्थः–(एवं के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाश कीधुं

(निंदिअ के० (आत्मसाखें निंदुं, (गरहिय के०) गर्हुं (डुगंबिअं के०) डुगंबुं, अत्यंत खोटुं जाणवुं, ते माटें (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें ए सम्यक् पद सर्वपदोनी साथें पूर्वमां योजवुं, (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पडिक्कंतो के०) अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांत थको पाबो फरतो थको एटले पापने पडिक्कमतो एवो जे (अहं के०) हुं, ते (चउवीसंजिणे के०) चोवीश जिनप्रत्यें (वंदामि के०) वांडुं बुं. आ प्रकारें अल्परुचि जीवोना बोधने माटें आ वंदितासूत्रनो अर्थ, संक्षेपें करी कह्यो बे. विस्तारार्थ तो बृहद्वृत्तिथकी तथा चूर्णीथकी जाणवो ॥ ५० ॥ इति ॥ ३१ ॥

हवे वली तेमज बे वांदणां देइने गुरुने अपराध खमाववाने आवी रीतें कहे, ते कहे बे.–

॥ अथ अप्भुठिर्ड हं गुरुखामणां ॥

॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् अप्भुठिर्डमि अप्रिंतर देवसिअं खामेउं० ॥ इछं० ॥ खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं जत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरनासाए उवरिनासाए जं किंचि मज्ज विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुप्रे जाणह अहं न याणामि तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३२ ॥

अर्थः–(जगवन् के०) हे जगवन् ! (इछाकारेण के०) तमारी पोतानी इछायें करी, (संदिसह के०) मुऊने आदेश आपो, (अप्रिंतरदेवसिअं के०) दिवसमांहे कीधा होय जे अपराध, तेप्रत्यें (खामेउं के०) खमाववाने (अप्भुठिर्डमि के०) हुं अन्युत्थित एटले ऊठ्यो बुं, अर्थात् आपना सन्मुख हुं उज्जो थयो बुं. तेवारें गुरु कहे, खामेह एटले खमावो. एवुं सद्गुरुनुं वचन तेने बहु मानतो बतो शिष्य उज्जो रह्यो थकोज इछं एवो पाठ कहे एटले (इछं के०) एहीज हुं इछुं बुं, वांडुं बुं. (खामेमि के०) हुं खामुं बुं. शा

प्रत्यें खामुं छुं ? तो के (देवसिअं के०) दिवससंबंधि अपराध प्रत्यें खामुं छुं, पछी विधिवत् धरणीतलस्पृष्ट एवा पचांगें प्रणाम करी मुखें मुहपत्ती देइ आवी रीतें जणे, ते कहे छे.

(जंकिंचि के०) जे कांइ सामान्यथी (अपत्तिअं के०) अप्रीतिकं एटले अप्रीतिभाव उपजाव्यो होय, (परपत्तियं के०) परप्रीतिकं पर प्रकृष्ट एटले विशेषथी अप्रीतिभाव, अध्याहारथी आपने विषे उपजाव्यो होय, शाने विषे उपजाव्यो होय ? ते कहे छे. (भत्ते के०) अशन, खादिम, स्वादिमने विषे, (पाणे के०) पाणीने विषे, (विणए के०) गुरु आव्या देखीने साहामा उठवा वांदवादिक आसन प्रमुख आपवुं, इत्यादिक विनय करवो, तेने विषे (वेआ वच्चे के०) गुरुनी पादसेवा, औषधपथ्यादिक आणी आपवां इत्यादिक वैयावृत्यने विषे, (आलावे के०) एक वार बोलाववाने विषे, (संलावे के०) वारं वार बोलाववाने विषे, (उच्चासणे के०) गुरुथी उंचे आसने बेसवाने विषे, (समासणे के०) गुरुनी पासें सरखुं आसन करी तेनी उपर बेसवा नेविषे, (अंतरभासाए के०) अंतरभाषाने विषे एटले गुरु वात करता होय, तेनी वच्चें वात करवी, तेने अंतरभाषा कहियें तेने विषे, (उवरिभा साए के०) उपरिभाषाने विषे एटले गुरु वात करी रह्या पछी तेहीज वात पोतानी स्फुरती देखाडवाने अर्थें विशेषपणे करवी, तेने उपरिभाषा कहियें, तेने विषे, (जंकिंचि के०) जे कांइ (मद्य के०) महारे (विणय परिहीणं के०) विनय भक्ति परिहीनपणुं एटले रहितपणुं थयुं होय, ते विनयभक्तिरहितपणुं केवुं थयुं होय ? तो के (सुहुमं के०) सूक्ष्म एटले न्हानुं जे थोडे प्रायश्चित्तें शुद्ध थाय ते, (वा के०) अथवा (बायरं के०) बादर ते जे घणा प्रायश्चित्तें करी शुद्ध थाय, एवुं विनयहीन पणुं ते सर्वे हे नाथ ! (तुप्नेजाणह के०) सकल जगतना भाव जाणवाथकी तुमें जाणो छो. अने (अहंनयाणामि के०) हुं मूढपणामाटें जाणतो नथी (तस्स के०) ते अप्रीतिप्रमुख अतिचारनुं लाग्युं जे (डुक्कडं के०) दुःकृत एटले पाप, ते (मि के०) महारुं (मिच्छा के०) मिथ्या थाओ. एटले फोक थाओ. अहीं बीजो वा छे ते पादपूर्णार्थ छे ॥१॥ इति गुरुखामणासूत्रार्थः ॥३३॥ ए खामणांना सूत्रने विषे धुरथकी गुरु पंदर अने लघु एकसो अगीयार, मली एकशो ने छवीश अक्षरो छे. ए विधिपूर्वक अप

राध खमावतां चंडरौद्राचार्यादिक अनेक जीवोने केवलज्ञान उपन्युं ढे.

॥ अथ आयरिय उवन्नाए ॥

आयरिय उवन्नाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे केइ कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

अर्थः—पंचाचारसंपन्न अथवा छत्रीश गुणें विराजमान, अर्थदानना दातार, तेने (आयरिय के०) आचार्य कहियें. तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना नणावनार अथवा पच्चीश गुणें विराजमान तेने (उवन्नाए के०) उपाध्याय कहीयें, तथा ग्रहणशिक्षा अने आसेवनाशिक्षाने योग्य होय तेने (सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें करीने जे आपणा सरखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहियें, तथा जे एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहियें, तथा घणा आचार्यना शिष्यसंतान परिवार, तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहियें. (अ के०) ए अ ते वली वली कहेवाने अर्थें ढे. ए सर्वनी उपर (मे के०) म्हारे जीवें (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय, ए कारणें (सवे के०) सर्व ते आचार्यादिकप्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (खामेमि के०) हुं खामुं ढुं ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु बत्रीश, गुरु त्रण, सर्व अक्षर पांत्रीश ढे.

सवस्स समणसंघस्स, नगवर्ज अंजलिं करिय सीसे ॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥

अर्थः—(सीसे के०) मस्तकनी उपर (अंजलिं के०) बे हाथप्रत्यें (करिय के०) करीने एटले स्थापीने नम्रीनूत थइने (सवस्ससमणसंघस्सनगवर्ज के०) सर्व श्रमणसंघरूप नगवंतना कीधा जे अपराध, (सवं के०) ते सर्व अपराधप्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे, के (सवस्स के०) ते सर्वना करेला अपराधप्रत्यें (अहयंपि के०) हुं पण (खमामि के०) खमुं ढुं, एटले सम्यक् प्रकारें सहन करुं ढुं ॥ २ ॥ आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु सात, मली सर्वाक्षर आडत्रीश ढे ॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, ज्ञावन धम्म निहिय नियचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ ३४ ॥

अर्थः-(ज्ञावन के०) ज्ञावथी (सव्वस्सजीवरासिस्स के०) एकेंड्रियादिक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (सव्वं के०) सर्व अपराधप्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समज्ञाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विषे (निहिय के०) निधित कर्युं ने एटले स्थाप्युं ने ज्ञावथकी आरोपण कर्युं ने, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानुं मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) हुं पण (सव्वस्स के०) सर्व जीवराशिना कीधा जे अपराध ते अपराधप्रत्यें (खमामि के०) हुं खमुं बुं ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु अठावीश अने गुरु नव, सर्वाक्षर साडत्रीश ने ॥ इति खामणां ॥३४॥

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इछामो अणुसहिं ॥ नमो खमासमणाणं ॥ नमो
ऽर्हत्० ॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥

अर्थः-(वर्द्धमानाय के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी ज्ञणी, (नमोस्तु के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीवर्द्धमान स्वामी केहवा ने ? तो के (कर्मणा के०) कर्मोनी साथें (स्पर्द्धमानाय के०) स्पर्द्धाना करनार ने, एटले ईर्ष्याना करनार ने, केम के ? कर्मोना वैरी ने, माटें तेनी साथें ईर्ष्याना करनार ने. वली केहवा ने? तो के (तज्जया के०) ते कर्मनो जय करीने (अवाप्त के०) पाम्या ने (मोक्षाय के०) मोक्ष प्रत्यें एवा ने, वली केहवा ने ? तो के (कुतीर्थिनां के०) कुतीर्थीयो जे मिथ्यादृष्टि जीवो, तेउने (परोक्षाय के०) परोक्ष ने, एटले दृष्टिथी दूर ने. अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीव होय, ते प्रज्जुनुं स्वरूप जाणी न शके ॥ इति ज्ञावः ॥ १ ॥

येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥

अर्थः–(ते के०) ते (जिनेंद्राः के०) जिनेंद्र तीर्थंकर,(शिवाय के०) शिव एटले परम कल्याण, तेने अर्थें (संतु के०) थाउ. ते जिनेंद्र केहवा छे ? तो के (येषां के०) जे जिनेंद्रोनी (ज्यायः के०) प्रधान प्रशंसनीय एवी (क्रमकमलावलिं के०) चरणकमलनी आवलि एटले श्रेणीप्रत्यें (दधत्या के०) धरती हुइ एटले पोतानी उपर स्थापित हुइ, अर्थात् विहारसमयें प्रजुना चरणकमलनी नीचें सुवर्णमय नव कमल जे देवताउ रचे छे, ते रूप (विकच के०) विकस्वर प्रफुल्लित (अरविंद के०) अरविंद जे कमल तेनी (राज्या के०) राजी एटले श्रेणीयें करीने, (सदृशैः के०) सरखानी साथें (संगतं के०) मलवुं, ते (प्रशस्यं के०) अति रूडुं प्रशंसा करवा योग्य छे. (इति के०) ए प्रकारें (कथितं के०) कह्युं छे. जेम के सरखे सरखां मले ते शोजे, माटें ते सुवर्णमय नवकमल अने प्रजुनां चरण, ए बेहु कमलो मलवाथी अत्यंत शोजा थई ॥२॥

कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति योजैनमुखां
बुदोज्ञतः ॥ स शुक्रमासोज्ञववृष्टिसंनिजो, दधातु
तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

अर्थः–(स के०) ते (गिरां के०) सिद्धांतरूपवाणीनो (विस्तरःके०) विस्तार ते, (मयि के०) म्हारे विषे (तुष्टिं के०) तुष्टिप्रत्यें संतोषप्रत्यें (दधातु के०) करो, ते वाणीनो विस्तार केहवो छे ? तो के (यो के०) जे वाणीनो विस्तार, (कषाय के०) कषायरूप (ताप के०) तापें करीने (अर्दित के०) पीडित एवा (जंतु के०) प्राणीयो तेने (निर्वृतिं के०) शांति समाधिप्रत्यें (करोति के०) करे छे. वली (यो के०) जे (जैनमुख के०) जिनराजना मुखरूप (अंबुद के०) मेघ तेथकी (उज्ञतःके०) उपज्यो छे. वली (यो के०) जे (शुक्रमास के०) ज्येष्ठमासथकी (उज्ञव के०) उपन्यो एवो जे (वृष्टि के०) वर्षाद तेनी (संनिजो के०) सरखो छे ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरम् ॥
प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥

अर्थः—(वः के०) तुमने (प्रातः के०) प्रजातसमयें (वीरजिनेंद्र स्य के०) श्रीवीरजिनेंद्र संबंधी (मुखपद्मं के०) मुखकमल ढे, ते (पुनातु के०) पवित्र करो, ते मुखकमल केहवुं ढे ? तो के (विशाल के०) विस्तीर्ण (लोचन के०) नेत्ररूप (दलं के०) पत्र ढे जेने विषे वली केहवुं ढे ? तो के (प्रोद्यत् के०) अत्यंत ऊलहलता एवा (दंतांशु के०) दांतनां किरणरूप (केसरं के०) केसर सुगंधना कणीया ढे जेने विषे ॥ १ ॥

येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं,प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेंद्राः॥२॥

अर्थः—(ते के०) ते (जिनेंद्राः के०) श्रीजिनेंद्रो जे तीर्थंकरो,ते(प्रातः के०) प्रजात समयें (शिवाय के०) शिवने एटले निरुपद्रवने अर्थे (संतु के०) थार्ज. ते जिनेंद्रो केहवा ढे? तो के (येषां के०) जे जिनेंद्रोना (अभिषेककर्म के०) स्नानकर्म कार्यप्रत्यें (कृत्वा के०) करीने (हर्षजरात् के०) हर्षना जर एटले समूहथकी (मत्ता के०) माता थका मग्न थका (सुरेंद्राः के०) देवेंद्रो जे ढे. ते (नाकं के०) देवलोक संबंधी जे (सुखं के०) सुख तेने (तृणमपि के०) तृणतुल्य पण (नैव के०) नहींज (गणयंति के०) गणे ढे. अर्थात् जिनेंद्रना अभिषेक सुखने पामीने देवतार्ज स्वर्गसुखने तृणसमान पण नथी मानता ॥ २ ॥

कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रजाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३६ ॥

अर्थः—(जिनचंद्रजाषितं के०) जिनचंद्र संबंधि जाषित जे आगम ते प्रत्यें (दिनागमे के०) प्रजातसमयें (नौमि के०) हुं स्तवुं बुं. ते जिनचंद्रजाषित केहवुं ढे ? तो के (कलंकनिर्मुक्तं के०) कलंक रहित एवुं अने (अमुक्तपूर्णतं के०) नथी मूकाणी पूर्णता जेनी अने वली (कुतर्कराहुग्रसनं के०) कुतर्क करनारा एवा जे परदर्शनीरूप राहु तेने ग्रसनहार एटले जक्षण करनार एवुं ढे,तथा (सदोदयं के०) सदा निरंतर उदय

एटले उगेलो एवो एक (अपूर्वचंद्र के०) अपूर्व चंद्रसदृश छे, एटले जिनागमरूपचंद्रमानी तुल्य बीजो कोइ चंद्रमा नथी, वली ते जिनचंद्रजाषित केहवुं छे? तो के (बुधैर्नमस्कृतं के०) बुधोयें एटले पंमितोयें कर्यो छे नमस्कार जेने, एवुं छे ॥३॥ इति स्तुतिसूत्रार्थः ॥३६॥

॥ अथ सव्वस्सवि देवसिय लिख्यते ॥

सव्वस्सवि देवसिअ, डुच्चिंतिअ, डुप्नासिअ,
डुच्चिठिअ इछाकारेण संदिसह जगवन् इछं
तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३७ ॥

अर्थः–(सव्वस्सविदेवसिअ के०) सर्वे पण दिवस संबंधी अतिचार ते (डुच्चिंतिअ के०) डुश्चिंतित जे परद्रोहादिक डुष्ट कार्य तेने चिंतववाथकी थयो, वली केहवो ते दिवस संबंधि अतिचार? तो के (डुप्नासिअ के०) डुर्जाषित जे उपयोग रहित अनिष्ट डुष्टादिक जाषा तेवी जाषा बोलवा थकी थयो, वली केहवो ते दिवस संबंधि अतिचार ? तो के (डुच्चिठिअ के०) डुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा चालवाथकी तथा कामासनादिक एवी कायनी डुष्ट चेष्टारूप प्रवृत्ति, ते प्रवृत्ति करवाथकी थयो, तेनुं मिथ्याडुःकृत देवाने (जगवन् के०) हे जगवन् ! (इछाकारेण के०) पोतानी इछायें करी (संदिसह के०) मुजने आज्ञा करो. अहिंयां गुरु आज्ञा आपे पछी शिष्य कहे. (इछं के०) हुं एहीज इछुं छुं. (तस्समिछामि डुक्कडं) ए पदोनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ १ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्रुतदेवतास्तुतिः ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेवया जगवई, नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं
खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे जत्ती ॥ १ ॥

अर्थः–(सययं के०) सततं एटले सदा निरंतर, (जेसिं के०) जे जव्य पुरुषोनी (सुयसायरे के०) श्रुतिसागरने विषे (जत्ती के०) जक्ति छे, एटले अंतर प्रीति छे (तेसिं के०) ते पुरुषो संबंधी (नाणावरणीय

कम्म के०) ज्ञानावरणीयकर्मना (संघायं के०) संघात एटले समूह ते प्रत्यें (सुअदेवया के०) श्रुतदेवता, वली (जगवई के०) जगवती जे सरस्वती छे, ते (खवेउ के०) खपावो एटले क्षय करो ॥ १ ॥ ए श्रुतदेवता श्रुतसिद्धांतनी अधिष्ठायिका जे सरस्वती, तेने आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करवो. एमां वंदणवत्तीआए ए पाठ न कहियें, अन्नत्थ उससिएणं ए पाठज कहीयें. ए गाथा श्रीपाक्षिक सूत्र सिद्धांतने छेहडे छे, ते जणी काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्वनी शंका न करवी. आ गाथामां लघु छत्रीश, अने गुरु बे, मली सर्वाक्षर आडत्रीश छे ॥

॥ अथ क्षेत्रदेवतानी स्तुति ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥
साहंति मुक्खमग्गं,सा देवी हरउ डुरियाइं ॥१॥इति॥३८॥

अर्थः-(चरणसहिएहिं के०) चारित्र सहित एवो (दंसणनाणेहिं के०) दर्शन अने ज्ञान तेणें करीने (जीसे के०) जे देवीना (खित्ते के०) क्षेत्रने विषे (साहू के०) साधु मुनिराज, (मुक्खमग्गं के०) मोक्षना मार्ग प्रत्यें (साहंति के०) साधे छे, (सा के०) ते, (देवी के०) देवी, (डुरियाइं के०) डुरितप्रत्यें एटले पापप्रत्यें (हरउ के०) हरो, दूर करो ॥१॥ ए क्षेत्र देवतानो काउस्सग्ग श्रीवयरस्वामीयें कीधो सांजलीयें छेयें अने श्रीजद्रबाहु स्वामीयें पण करवो कह्यो छे,ते जणी एमां मिथ्यात्व नहीं,एम समजवुं. आ गाथामां लघु तेत्रीश, गुरु त्रण, सर्वाक्षर छत्रीश छे. बेहु गाथाना लघु उगणोतेर, अने गुरु पांच, मली सर्वाक्षर चम्मोतेर छे ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ १ ॥ इति ॥ ३९ ॥

अर्थः-(जगवती के०) ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी एवी जे (श्रुतदेवता के०) सिद्धांतनी अधिष्ठायिका श्रुतदेवी छे, ते अमने (सिद्धिं

के०) धर्मनी सिद्धिप्रत्यें (ददातु के०) दियो आपो, ते श्रुतदेवी केहवी छे? तो के (कमलदल के०) कमलनी पांखडी समान (विपुल के०) विशाल छे (नयना के०) नेत्र जेहनां एवी छे. वली केहवी छे ? तो के (कमलमुखी के०) कमलमुखी छे, अर्थात् कमल सरखुं सुगंधीयुक्त वाटलुं एवुं सुशोभित मुख छे जेहनुं, वली केहवी छे ? तो के (कमलगर्जसमगौरी के०) कमलना गर्जनी पेरें गौर वर्ण छे, एटले कमलना मध्यजागमां जे गर्ज छे, तेना सरखो गौरवर्ण छे जेनो एवी छे, वली केहवी छे? तो के (कमले के०) कमलने विषे (स्थिता के०) रही छे ॥ १ ॥ इति ॥ ३ए ॥

॥ अथजु वनदेवतादिस्तुतिः ॥

नुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुनिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

अर्थः-(नः के०) अमने (सा के०) ते.(क्षेत्रदेवता के०) क्षेत्रदेवी, (नित्यं के०) निरंतर, (सुखदायिनी के०)सुखनी देवावाली (नूयात् के०) होय, ते क्षेत्रदेवी केहवी छे ? तो के (यस्याः के०) जेना (क्षेत्रं के०) क्षेत्रने (समाश्रित्य के०) समाश्रयीने एटले अंगीकार करीने (साधुनिः के०) साधुउयें (क्रियाः के०) तपःसंयमरूप धर्मक्रियाउ (साध्यते के०) सधाय छे, अर्थात् कराय छे ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणयुतानां,नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्॥विदधातु नुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ इति ॥ ४०॥

अर्थः-(नुवनदेवी के०) नुवननिवासिनी देवी छे ते, (सर्वसाधूनां के०) सर्व साधुउने (शिवं के०) शिव एटले परम कल्याण, ते प्रत्यें (सदा के०) निरंतर, (विदधातु के०) करो, ते सर्व साधु केहवा छे ? तो के (ज्ञानादिगुण के०) ज्ञानादिक गुणें करीने (युतानां के०) युक्त छे सहित छे. वली ते सर्वसाधु केहवा छे? तो के (नित्यं के०) निरंतर जे (स्वाध्यायसंयमरतानां के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय अने आश्रवनिरोध रूप सत्तर प्रकारनो संयम,तेने विषे रत छे,एटले आसक्त छे,मग्न

छे.ए जुवनदेवतानो काउस्सग्ग श्री जद्रबाहुस्वामीयें आवश्यकमां करवो कह्यो छे, ते माटें एमां मिथ्यात्व समजवुं नहीं ॥ २ ॥ इति ॥ ४० ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मजूमीसु ॥
जावंत केवि साहू, रयहरण गुछ पडिग्गहधारा
॥ १ ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंग
धारा ॥ अस्कयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मण
सा मछएण वंदामि ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

अर्थः-(अड्ढाइज्जेसुदीवसमुद्देसु के०) अढी द्वीप बे समुद्र संबंधी जे (पनरससुकम्मजूमीसु के०) पंदर कर्मजूमीक्षेत्रने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) कोइ पण (साहू के०) साधु, (रयहरणगुछपडिग्गहधारा के०) रजोहरण ते उंघो अने गुछो ते पात्रानी जोलीनी उपरनुं उपकरण अने पतद्ग्रह ते पात्रुं इत्यादिक धर्मोपकरणना (धारा के०) धारण करनारा छे॥१॥ एटले सुधी साधुनो वेषमात्र जणाव्यो परंतु ते वेष तो गुण विना अप्रमाण कह्यो छे, माटें हवे गुण कही देखाडे छे. वली ते साधु केहवा छे? तो के (पंचमहव्वयधारा के०) पांच महाव्रतना धरणहार छे, वली केहवा छे?तो के(अठारससहस्ससीलंगधारा के०) अष्टादश सहस्र शीलनां चारित्रनां अंग जे अंश छे तेना धरनार, वली केहवा छे ? तो के (अस्कयायारचरित्ता के०)अक्षत संपूर्ण आचाररूप चारित्र तेना धरणहार छे.(ते सव्वे के०) ते सर्वप्रत्यें (सिरसा के०) ललाटें करीने (मणसा के०) मनें करीने (मछएण के०) मस्तकें करीने (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं. अथवा मछएण वंदामि ए वचनें पंचांग प्रणामें करी वांदुं छुं ॥२॥ इति सर्वसाधु नमस्कार सूत्रार्थः॥आ बेहु गाथामां लघु बहोंतेर, गुरु तेर, सर्वाक्षर पंच्याशी छे ॥४१॥

॥ अथ वरकनक ॥ अथवा सप्ततिशतजिनस्तुतिः ॥

वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभं विगतमोहम् ॥
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥ ४२ ॥

अर्थः-(जिनानां के०) जिनेंद्रो संबंधी (सप्ततिशतं के०) सप्ततिशत प्रत्यें एटले एकशो सित्तेर जिनेंद्रोप्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं बुं. ते जिन सप्ततिशत केहवुं बे ? तो के (वर के०) प्रधान एवुं (कनक के०) सुवर्ण, (शंख के०) शंख, (विद्रुम के०) प्रवालां, (मरकत के०) नीलमणि, (घन के०) सजल मेघ, तेना (सन्निभं के०) सरखुं बे, एटले पांचव र्णो बे जेना एवुं बे. वली ते सप्ततिशत केहवुं बे ? तो के (विगतमोहं के०) मोहादिक रहित बे. वली केहवुं बे ? तो के (सर्वामरपूजितं के०) सर्व अमर एटले देवता पूजे बे जेने एवुं बे ॥ १ ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदूं कर जोड्य, जिनवरनामें मंगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गें लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशि दीस ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्यां. त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अड लाख धार, पांचमे वंदूं लाखज चार ॥२॥ बठे स्वर्गें सहस पच्चास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गें ब हजार, नव दशमे वंदूं शत चार ॥३॥ अग्या र बारमे त्रणशें सार, नवग्रैवेयकें त्रणशें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥४॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सार, जि नवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो योजन विस्तार, पचास उंचां ब होंतेर धार ॥५॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण; सभा सहित एक चैत्यें जा ण ॥ शो कोड बावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥६॥ सातशें उपर साठ विशाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥ सात कोड ने बहोंतेर लाख, भुवनपतिमां देवल भांख ॥७॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्यें संख्या जाण ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड,शाठ लाख वंदूं कर जोड ॥८॥ बत्रीशें ने ओगणशाठ, तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥९॥ व्यंतर ज्यो तिषीमां वलि जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ ऋषभ चंद्रानन वारि षेण, वर्द्धमान नामें गुणसेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जिन वीश, अ ष्टापद वंदूं चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगें श्री अजित जुहार ॥

अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलो ने थंजण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवरचैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दीस ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समितिसार, पाले पलावे पंचाचार ॥१४॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित नित उठी कीर्त्ति करुं, जीव कहे जवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ लघुशांतिस्तवप्रारंजः ॥

बृहङ्गीय प्रसिद्धप्रजावी श्रीमानदेव सूरि, ते नाकूल नगरमां चोमासुं रह्या हता, ते समयें, शाकंजरी नगरमां श्रीसंघ, शाकिनीजनित मरकीना उपद्रवें पीडित थयो, तेवारें त्यांना संघें मलीने विनतिपत्र लखी तेमां रोग स्वरूप निवेदन करी श्रीमानदेव सूरि पासें मनुष्य मोकल्यां, पढी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता, ए चार देवीयोनुं ठे सान्निध्य जेमने एवा तथा निरतिशय करुणायें करीने जेमनुं अंतःकरण कोमल ठे, एवा श्रीमानदेवसूरि, तेउयें सर्वत्र सकल श्रीसंघने सर्वोपद्रव शांतिने अर्थें आ स्तोत्रनी रचना करीने संघने आप्युं. पढी ते शाकंजरी नगरस्थ संघना केटला एक जनोयें तो प्रतिदिवस ए स्तोत्रनुं पोतें अध्ययन कर्युं, तथा केटला एकोयें तो अन्यपासें अध्ययन करावीने सांजलवा मांड्युं. तथा ए स्तोत्रें अजिमंत्रित जलने ढंटाव्युं, तेणें करी श्रीसंघनो शाकिनीजनित मरकीनो उपद्रव शांतिने पाम्यो. त्यांथी ए स्तोत्र सर्वस्थलें शांतिकारक थयुं, ते पढी प्रायः प्रतिदिवस ए लघुशांतिस्तोत्र प्रतिक्रमणानंतर जणाय ठे, एवो संप्रदाय ठे. आ स्तोत्र कये ठेकाणें शा वास्ते निर्मित कर्युं? ते विषे एज गबना गुरुयें एक श्लोक रचेलो ठे, ते लखीयें ढैयें ॥ श्लोक ॥ नाकूल नामनगरस्थितमेघकालैः, शाकंजरीपुरसमागतसंघवाचा ॥ शांतिस्तवः प्रबलमारिजयापहारी, यैर्निर्ममे सुविहितक्रममार्गदीपैः ॥ १ ॥

हवे ए स्तोत्रनो अर्थसहित प्रारंज करियें ढैयें.

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य॥
स्तोतुःशांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥१॥

अर्थः–हुं (शांतिं के०) श्रीशांतिजिनप्रत्यें (नमस्कृत्य के०) नमस्कार करीने, तेज श्रीशांतिजिनना (मंत्रपदैःके०) मंत्रोनां पदोयें करीने अर्थात् अक्षरगर्जित जे मंत्रनां पद, तेणें करीने (स्तौमि के०) स्तुति करुं बुं, ते शा माटें स्तुति करुं बुं? तो के (शांतये के०) डुःख, डुरित, उपसर्ग, तेनी निवृत्तिने माटें स्तुति करुं बुं, हवे ते श्रीशांतिजिन केहवा बे? तो के (शांति के०) डुःखउपसर्गनिवृत्तिरूप, अथवा कषायोदयापगम लक्षण, तेना (निशांतं के०) घर बे, वा स्थानकरूप बे, वली (शांतं के०) उपशमोपेत बे, एटले रागद्वेषरहित बे. वली (शांताऽशिवं के०) शांत एटले उपशमने पाम्या बे अशिव एटले अकल्याणकारक अरिष्टउपद्रवो जेथकी एवा श्रीशांतिजिन बे. वली केहवा बे ? तो के (स्तोतुः के०) स्तुति करवारना (शांतिनिमित्तं के०) अरिष्टोपद्रवनिवारण रूप जे शांति, तेना निमित्तं एटले उत्पादनहेतु बे ॥ १ ॥

उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥
शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥

अर्थः–(शांतिजिनाय के०) श्रीशांतिजिन, तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ. आंहीं नमोनमः ए द्विरुक्ति जे बे, ते अत्यादर जणाववाने अर्थें अथवा ससंभ्रम ख्यापनने अर्थें बे. हवे ते श्रीशांतिजिन केहवा बे? तो के (उमितिनिश्चितवचसे के०) अवति एटले रक्षण करे बे, तेने ॐ कहीयें, अने ॐ एटले परंज्योति, इति केतां ए प्रकारें निश्चित एटले निर्धार कर्युं बे वचः एटले वाचक पद जेमनुं एवा बे, अथवा ॐ एवा वचनें करीने आख्येय एटले कहेवा योग्य बे वाच्यवाचकजाव जेमनो एवा बे. वली केहवा बे? तो के (जगवते के०) समग्र ऐश्वर्य बे जेमने तेमने जगवान् कहियें, वली जे (पूजां के०) पूजाने (अर्हते के०) योग्य बे अर्थात् सुराऽसुरनरेंद्रादिकें करेली पूजाने योग्य एवा बे. वली (जयवते के०) जेमने रागादिक पराजव करी शकता नथी माटे जयवान् जययुक्त बे. वली (यशस्विने के०) प्रसिद्ध प्रशस्त यश बे जेमनुं, एवा बे. वली(दमिनां के०) इंडियोने दमन कर्यां बे, वश कर्यां बे जेणें एवा जे मुनिमहाराज, तेमना (स्वामिने के०) स्वामी एटले नाथ एवा बे ॥ २ ॥

सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥

अर्थः—(शांतिदेवाय के०) शोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथजी तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउं. ते केहवा छे? तो के (सकल के०) समस्त (अतिशेषक के०) चोत्रीश अतिशय, ते रूप (महासंपत्ति के०) महोटी संपदा तेणें करीने (समन्विताय के०) सहित, तथा (शस्याय के०) प्रशंसवा योग्य एवा (च के०) वली (त्रैलोक्य के०) स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप त्रण लोक, तेणें (पूजिताय के०) पूजित एवा छे ॥ ३ ॥

सर्वामरससमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥
भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥

अर्थः—(तस्मै के०) ते श्रीशांतिजिन महाराज तेमने (सततं के०) निरंतर, (नमः के०) नमस्कार थाउं,ते केहवा छे ? तो के (सर्वामरससमूह के०) समस्त चार निकायना देवताना समूह सहित, तेहना (स्वामिक के०) स्वामी जे चोशठ इंद्रो छे, तेमणें (संपूजिताय के०) सम्यक् प्रकारें पूजित एवा छे. वली (निजिताय के०) नथी जींत्या देवादिकोयें अर्थात् कोइयें पोताने वश करेला नथी एवा.तथा (भुवन के०) त्रण भुवनना (जन के०) लोको तेमनुं (पालन के०) पालन करवुं, तेहने विषे (उद्यततमाय के०) अत्यंत सावधान एवा छे ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय ॥
दुष्टग्रहभूतपिशाच,शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः—वली केहवा छे? तो के (सर्व के०) समस्त जे (दुरित के०) पाप तेहनो (ओघ के०) समूह, तेहना (.नाशनकराय के०) नाश करनार छे. वली ते केहवा छे ? तो के (सर्वाशिव के०) सर्व जे अशिव एटले उपद्रव तेहना (प्रशमनाय के०) प्रकर्षें करी एटले अतिशयपणे समावणहार छे, वली केहवा छे? तो के (दुष्टग्रह के०) दुष्ट आकरा एवा जे मंगल, शनिश्चर, राहु,केतु, इत्यादिक असुखनां करनार ग्रह तथा (भूत के०)

वृक्षादिकने विषे वसनार, (पिशाच के०) राक्षसादिक, तथा (शाकिनी नां के०) शाकिनी ते मंत्राधिष्ठित स्त्री, ए सर्वना उपद्रवो तेमने (प्रमथ नाय के०) प्रकर्षें करी मथन एटले नाशना करनार बे, मटाडनार बे अर्थात् श्रीशांतिजिनेश्वरना स्मरण करनारना पूर्वोक्त सर्व उपद्रवो, नाश ने पामे बे, माटें तेने नमस्कार थाय बे ॥ ५ ॥

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥
विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिं॥६॥

अर्थः– हे जव्य जनो ! तमें (तं के०) ते (शांतिं के०) श्रीशांतिजिनप्रत्यें (नमत के०) प्रणाम करो, ते कया शांतिजिन? तो के (यस्य के०) जे शांतिजिननो (इति के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें करीने (नाममंत्र के०) नामरूप जे महामंत्र तेणें करीने (प्रधानवाक्य के०) प्रकृष्ट सर्वोत्तम पवित्र एवुं जे वचन तेनो (उपयोग के०) उपयोग एटले नामोच्चारणमात्र स्मरण तेणें करीने (कृत के०) कस्यो बे चित्तने विषे (तोषा के०) संतोष जेणें एवी (विजया के०) विजयानामें जे देवी बे, ते श्री शांतिजिनना नाम स्मरण करनारा एवा जे (जन के०) जन एटले मनुष्य, तेनुं (हितं के०) हित जे तेने (कुरुते के०) करे बे, (च के०) वली ते विजया देवी केहवी बे ? तो के (इति के०) ए पूर्वें कह्यो एवो जे प्रकार ते प्रकारें करीने (नुता के०) नमेली बे, स्तुति करेली बे, श्रीशांतिनाथने एवी बे ॥ ६ ॥

नवतु नमस्ते नगवति,विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां,जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥

अर्थः–(जगवति के०) अहीं जग शब्द जे बे, ते ज्ञान, माहात्म्य, यशोरूप जे वीर्य, तेनो प्रयत्नेच्छालक्षण ग्रहण करवो, ते जेने विद्यमान होय, तेने जगवती कहीयें. तेना आमंत्रणें हे जगवति ! (विजये के०) सहन न करी शके एवा ईर्ष्यावाला पुरुषोनुं पराजव करवापणुं बे जेने विषे तेना संबोधने हे विजया देवि ! तथा (सुजये के०) जेना प्रतापनी वृद्धिने शत्रुर्जयें पराजव कस्यो नथी, तेना संबोधने हे सुजयादेवि ! अथवा सुजय एटले शोजन बे जयपणुं जेने अथवा सु एटले अतिशयें करीने

छे जय जेनो एवी तेना संबोधने हे सुजयानामा देवि ! तथा (परापरैर जिते के०) पर एटले उत्कृष्ट एवा अपर एटले अन्य देवो तेमणें नजिता एटले नथी पराजव कस्यो जेनो तेवा संबोधने हे परापरैरजिते देवि ! अर्थात् हे अजिता देवि ! तथा (अपराजिते के०) कोइ स्थानकें पराजवने न पामेली एवा आमंत्रणे हे अपराजिता देवि ! तमो (जगत्यां के०) पृथिवीने विषे (जयति के०) जयवंतां वर्त्तो, (इति के०) एम स्तुति करे छते (जयावहे के०) स्तुति करनार जक्तजनने जयनी आवहन करनारी थाय छे, तेने संबोधने हे जयावहा देवि ! तथा (जवति के०) स्त्रीलिंगें जवत् शब्दना संबोधने हे जवति ! ए प्रकारनी पूर्वोक्त एक विजया, बीजी जया, त्रीजी अजिता, चोथी अपराजिता, एवी चार देवियो, (ते के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार (जवतु के०) थाउ ॥ ७ ॥

सर्वस्यापि च संघस्य, जद्रकल्याणमंगलप्रददे ॥
साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥

अर्थः—(सर्वस्यापिच के०)चतुर्विध एवा सर्व पण,च पादपूर्णार्थ छे. (संघस्य के०) संघने (जद्र के०) सौख्य, (कल्याण के०) निरुपद्रवपणुं, (मंगल के०) दुरितोपशांति, इत्यादिकने (प्रददे के०) प्रकर्षे करी आपनार एवी, अर्थात् एतादृशगुणयुक्त एवी हे देवि ! (च के०) वली (साधूनां के०) मोक्षने जे साधे ते साधु कहियें एटले मुनियो तेमने (सदा के०) सर्वदा (शिव के०) निरुपद्रवत्व, (सुतुष्टि के०) शोजन चित्तनी शांति, (पुष्टि के०) धर्मनी वृद्धि, तेने (प्रदे के०) देनारी एवी हे देवि ! तुं (जीयाः के०) जयवंती हो, अर्थात् सर्वोत्कर्षपणे जगत्मां वर्त्तो ॥ ८ ॥

जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्तिनिर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥
अजयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ए॥

अर्थः—(जव्यानां के०) जव्य जीवोने (कृतसिद्धे के०) करी छे सिद्धि जेणें एटले सर्वकार्योनी निर्विघ्नपणे समाप्ति करी छे जेणें एवी, वली (सत्त्वानां के०) जव्य जीवोने (निर्वृति के०) चित्तसमाधि तथा (निर्वाण के०) मोक्ष एटले परमानंद एम निर्वृत्ति, निर्वाणने (जननि के०) उत्पन्न क

रनारी माटें निर्वृतिनिर्वाणजननि एवा संबोधनवाली, उक्तं च " सम्म द्दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च " तथा (अजय के०) निर्जयपणुं तेने (प्रदान के०) प्रकर्षें करीने देवाने (निरते के०) तत्पर छे. तथा (स्वस्तिप्रदे के०) कल्याणने प्रकर्षें करी देवावाली एवी अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्वगुणयुक्त एवा संबोधनवाली हे देवि ! (तुभ्यं के०) तुजने (नमोऽस्तु के०) नमस्कार हो ॥ ए ॥

भक्तानां जंतूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥१०॥

अर्थः—(भक्तानां के०) पोतानी सेवाना करनार भक्तिमंत एवा (जंतूनां के०) जे जीव छे, तेमनें (शुभावहे के०) शुभ एटले श्रेयपणाने आ एटले सर्व प्रकारें वहा एटले वहन करनारी पमाडनारी छे माटें शुभकारिका कहियें, तथा वली (सम्यग्दृष्टीनां के०) सम्यग्दृष्टि जीवोने (धृति के०) संतोष, (रति के०) प्रीति, (मति के०) अप्राप्तविषयनी बुद्धि, एटले भविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, (बुद्धि के०) सांप्रतदर्शिनी एटले वर्त्तमानकालना विषयनी जाणनारी एवी बुद्धि, ते प्रत्यें (प्रदानाय के०) अतिशयपणे देवाने माटें (नित्यं के०) सदैव निरंतर, (उद्यते के०) सावधान उद्यमवंत, एवा सर्व संबोधनयुक्त (देवि के०) हे देवि ! तमें छो ॥ १० ॥

जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥
श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥

अर्थः—(जिनशासन के०) श्रीवीतरागना शासनने विषे (निरतानां के०) रक्त ते रागवंत तत्पर एवा अने (च के०) वली केहवा ? तो के (शांतिनतानां के०) श्रीशांतिनाथप्रत्यें नमस्कार करनारा, प्रणाम करनारा एवा (जगति के०) जगतने विषे (जनतानां के०) जनसमुदायो जे छे, तेमने (श्री के०) लक्ष्मी, ते सुवर्णादि तथा (संपत् के०) ऋद्धिविस्तार, (कीर्त्ति के०) ख्याति, ते एक दिग्व्यापि, (यशः के०) यश ते सर्वदिग्व्यापी एटले सर्वत्र प्रसिद्धि तेनी (वर्द्धनि के०) वधारनार एवी (जयदेवि के०) हे जया नामा देवि ! तमें (विजयस्व के०) सर्वोत्कर्षें करी वर्त्तो ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर, दुष्टग्रहराजरोगरण
भयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादि
भ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्षं रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु
शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं.
कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥

अर्थः– सलिल के०) जल ते समुद्रादिकनां, (अनल के०) अग्नि ते उत्पातरूप, (विष के०) विष ते अफीणादिक, (विषधर के०) सर्प (दुष्टग्रह के०) दुष्ट ग्रह एटले चालवामां अशुभ एवा शनिश्चर, राहु, केतु आदिक दुष्टस्वभाववाला ग्रह, (राज के०) दुष्टस्वभाव वाला दंमादिक करनारा अर्थग्रहण करनारा एवा राजा, (रोग के०) दुष्टज्वर, भगंदर, महोदरादिक रोग अने (रण के०) संग्राम, ए सर्वना (भयतः के०) भय थकी (रक्ष रक्ष के०) रक्षण कर, रक्षण कर. वली (राक्षस के०) राक्षस ते व्यंतरविशेष, (रिपुगण के०) शत्रुना समूह, (मारी के०) मरकीनो उपद्रव (चौर के०) चोर ते तस्कर, (ईति के०) सात ईतिना भय, (श्वापद के०) मदोन्मत्त हस्ती, सिंहादि प्रमुख दुष्ट जीवो, (आदिभ्यः के०) आदिशब्दथकी शाकिनी, डाकिनी, भूत, वेतालादिक पण ग्रहण करवां. ते सर्वना भयथकी रक्षण कर, रक्षण कर. आहीं रक्ष रक्ष ए क्रियापद छे ते आवता श्लोकमांथी ग्रहण करेलुं छे, कारण के बेहु श्लोकनो संबंध एकत्र छे ॥१२॥ (अथ के०) एटला थकी अनंतर हे विजयामाता ! (त्वं के०) तुं (सु के०) अतिशयें करीने अथवा सुष्ठु एवुं (शिवं के०) निरुपद्रवपणुं तेने (कुरुकुरु के०) कर कर, (च के०) वली (शांतिं के०) शांति ते पूर्वे उत्पन्न रोगनी निवृत्तिरूप तेने (सदा के०) निरंतर (कुरु कुरु के०)कर कर, (इति के०) ए प्रकारें वली (तुष्टिं कुरुकुरु के०) संतोषपणाने कर कर तथा (पुष्टिं कुरु कुरु के०) पुष्टि जे वृद्धि अथवा शरीरनुं नीरोगपणुं ते प्रत्यें कर कर, तथा (स्वस्ति कुरु कुरु के०) कल्याणपणाप्रत्यें कर कर, आमां कुरु कुरु शब्द जे छे, ते अत्यादर ख्यापनने अर्थें छे, तथा मंत्रपदमां सर्वत्र द्विरुच्चार देखाय छे, एवो संप्रदाय पण छे ॥ १३ ॥

भगवति गुणवति शिव शांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तीह
कुरु कुरु जनानाम् ॥ ॐमिति नमोनमो ह्राँ, ह्रीं
ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थः—(भगवति के०) हे भगवति ! एटले समग्र ऐश्वर्यादि गुणयुक्त ताय (गुणवति के०) हे गुणवति ! गुण एटले औदार्य, धैर्य, गांभीर्य, शौर्यादिक सकल गुणोयें करी शोभायमान एवी हे देवि ! तुं (इह के०) आ पृथ्वीने विषे (जनानां के०) समस्त लोकोने (शिव के०) निरुपद्रव कल्याण, (शांति के०) मरक्यादि रोगनी उपशांति, (तुष्टि के०) मनःसं तोष (पुष्टि के०) शरीरादिकनी वृद्धि, दृढपणुं. (स्वस्ति के०) क्षेम ते कल्याण. तेने (इह के०) आ जगतने विषे (कुरुकुरु के०) कर, कर, इवे मंत्राक्षरें करीने विजया देवीने स्तवे छे. (ॐमिति के०) ज्योतिःस्वरूपिणी एवी हे देवि ! तुने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउं, तथा (ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा के०) ए प्रकारना मंत्रस्वरूपिणी एवी हे देवि ! तुने नमस्कार थाउं. आंहीं फुट्फुट् ए जे शब्द लख्या छे, ते विघ्न त्रासार्थ मंत्राक्षर प्रयोग छे. अने आ ह्रां ह्रीं इत्यादि अक्षरो जे लख्या छे, ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नम
तां पाठांतरे (कुरुते शांतिनिमित्तं) नमोनमःशांतये तस्मै ॥१५॥

अर्थः—(तस्मैशांतये के०) ते शांतिनाथने (नमोनमः के०) पुनः पुनः न मस्कार थाउं. ते कया शांतिनाथने नमस्कार थाउं? तो के (एवं के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें (यन्नामाक्षरपुरस्सरं के०) जेना नामाक्षरमंत्रपूर्वक (सं स्तुता के०) स्तुति करेली एवी (जया के०) जयानामा (देवी के०) देवी ते (शांतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें (नमतां के०) नमस्कार कर नारा एवा भव्यजीवोने (शांतिं के०)सर्वारिष्टनुंजे प्रशमन,तेने (कुरुते के०) करे छे, पाठांतरे (कुरुतेशांतिनिमित्तं के०) शांति जे सर्वोपद्रवनिवृत्तिरूप तेनुं निमित्त एटले हेतु, तेने कुरुते एटले उत्पन्न करे छे ॥ १५ ॥

इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ स
लिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥१६॥

अर्थः–(शांतेः के०) ए श्रीशांतिनाथजीनो (स्तवः के०) स्तव, ते (भ क्तिमतां के०) भक्तिमान् प्राणीयो जे छे,तेमने(सलिलादिभय के०) समुद्रोप द्रवादिभय,आहिं आदिशब्दथकी अग्नि, विष, सर्प,दुष्टगज, सिंह, संग्राम, शत्रु, चोर, शाकिनी, भूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक एवा भयनो (वि नाशी के०) विनाश करनारो, (च के०) वली (शांत्यादिकरः के०) शां त्यादि ते शांति, सुख, सौभाग्य, ऋद्धि, वृद्धि. कल्याण अने जय, ए सर्वने करनारो थाउं. वली ते स्तव केहवो छे ? तो के (इति के०) आप्रकारें (पूर्वसूरिदर्शित के०) पूर्वाचार्यें दर्शित नाम उपदिष्ट करेलां एवां (मंत्रपद के०) मंत्रनां पद एटले मंत्राक्षर बीज, तेणें (विदर्भितः के०) विरचित एवो छे, आ श्लोकनो तथा आवता बीजा श्लोकनो संबंध साथें छे ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा,शृणोति भावयति वा यथा
योगम्॥स हि शांतिपदं यायात् पाठांतरे(शि
वशांतिपदं यायात्) सूरिश्रीमानदेवश्च ॥१७॥

अर्थः–(च के०) वली (यः के०) जे पुरुष, (यथायोगं के०) योग ने न उल्लंघन करीने एटले योग प्रत्यें यथा कार्यनो उद्देश करीने (सदा के०) सर्वदा (पठति के०) पोतें पाठ करे छे, (एनं के०) ए स्तोत्रने (शृणो ति के०) अन्यपासेंथी श्रवण करे छे, (वा के०) अथवा (भावयति के०) मनमध्यें भावना करे छे, एटले मनमां स्मरण करे छे, तो (हिं के०) निश्चें (सः के०) ते पुरुष, (शांतिपदं के०) शांतिनुं स्थानक एटले रो ग, उपसर्ग, व्याधि, दुःख, दौर्मनस्य तेथकी रहितत्व, तेने (यायात् के०) पामे (च के०) वली (सूरिश्रीमानदेवः के०) "श्रीमानदेवसूरि" पण शांतिपदने पामे. आ पदें करीने स्तोत्रकर्त्तायें पोताना नामनी पण सूचना करी छे. पाठांतरे (शिवशांतिपदंयायात् के०) शिव जे क ल्याण, शांति जे सर्वोपद्रवादिनिवृत्ति, तेनुं पद जे स्थानक तेने यायात् एटले पामे ॥ १७ ॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥

अर्थः-(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर एवा जगवान् ते(पूज्यमाने के०) पूजे उते, (उपसर्गाः के०) देवादिकृत उपसर्गो जे छे ते, (क्षयं के०) क्षय प्रत्यें (यांति के०) पामे छे. अने (विघ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लीयो जे छे ते, (छिद्यंते के०) छेदाय छे, (मनः के०) मन जे छे ते, (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे छे ॥ १८ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

अर्थः-(जैनंशासनं के०) जिनतीर्थंकर संबंधि जे शासन एटले आ देश ते, (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते छे. ते शासन केहवुं छे ? तो के (सर्वमंगलमांगल्यं के०) सर्वमंगलमांहे मांगलिक छे, वली केहवुं छे? तो के (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्व कल्याण एटले सुखवृद्धि, तेनुं कारण छे, वली (सर्वधर्म्माणां के०) सर्वधर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधा न छे, एटले मुख्य छे ॥ १९ ॥ इति लघुशांतिस्तवः संपूर्णः ॥ ४४ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरणू ॥
सरसपिअंगु वन्नु गयगामिउ,जयउ पासु जुवणत्तय सामिउ॥१॥

अर्थः-(जुवणत्तयसामिउ के०) त्रण जुवनना स्वामी, (पासु के०) श्रीपार्श्वनाथ छे. ते (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो. ते श्रीपार्श्वनाथ केहवा छे? तो के, (चउक्कसाय के०) क्रोधादिक चार कषायरूप जे (पडिमल्ल के०) प्रतिमल्ल एटले वैरी, तेना (उल्लूरणु के०) उछेदनार छे,एटले टा लनार छे, वली केहवा छे ? तो के (दुज्जय के०) दुर्जय दुःखें जींत्यो जाय एवो (मयण के०) मदन एटले कंदर्प ते संबंधी जे (बाण के०) बाण, एटले तीक्ष्ण बाण, तेना (मुसुमूरणू के०) जाजनार छे, एटले उन्मूलन करनार छे. वली केहवा छे? तो के (सरस के०) रसें करीने सहित एटले

स्निग्ध, नीलो एवो (पिअंगु के०) प्रियंगु ते रायणनो वृक्ष, ते समान (वन्नु के०) शरीरनो वर्ण छे जेनो, वली केहेवा छे? तो के (गयगामिउ के०) गजनी पेरें गमनना करनार छे, अर्थात् हस्तीनी जेवी गति छे ॥१॥

जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिम
णि किरणा लिद्धउ ॥ नं नवजलहर तडिल्लय
लंछिउ, सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्थः–(सो के०) ते (जिणुपासु के०) श्रीपार्श्वजिन ते, (वंछिउ के०) महारा वांछित प्रत्यें (पयछउ के०) आपो. हवे ते श्रीपार्श्वजिन केहवा छे ? तो के (जसु के०) जेना (तणु के०) शरीरनी (कंति के०) कांति एटले द्युति तेनो (कडप्प के०) कलाप एटले समूह ते (सोहइ के०) शोभे छे. ते कांतिसमूह केहवो छे? तो के (सिणिद्धउ के०) स्निग्ध छे, एटले चीकाश सहित छे, वली ते कांतिसमूह केहवो छे? तो के (फणि के०) नागेंद्रनी फण संबंधि जे (मणि के०) मणिरत्न तेना (किरण के०) किरणोयें करी (आलिद्धउ के०) व्यास छे, एटले सहित छे. वली ते कांतिसमूह केवी रीतें अने केवो शोभे छे? तो के (तडित् के०) विजली, तेनी (लय के०) लतायें करी (लंछिउ के०) लांछित एटले सहित एवो (नवजलहर के०) नवो मेघ, (नं के०) जेम शोभे छे, तेम ते कांतिसमूह शोभे छे ॥ २ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥

करेमि भंते पोसहं, आहारपोसहं, देसउ सवउ ॥ सरीर
सक्कारपोसहं सवउ ॥ बंभचेर पोसहं सवउ ॥ अवावार
पोसहं सवउ ॥ चउविहे पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं, अ
होरत्तं, पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का
एणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदा
मि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

अर्थः—जंते के०) हे जगवन्! हे कल्याणकारक! अगीयारमा पौषधव्रत ने अथवा जे धर्मनी पोष नाम पुष्टिप्रत्यें धरे, तेने पोषध कहियें, ते (पोस हं के०) पोषध प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं बुं. एटले अष्टमी. चतुर्दशी प्रमुख दिवसोने विषे जे पोषधनो नियम करवो, ते चार प्रकारें बे, तेहीज वली विशेषपणे कहियें ठैयें. प्रथम (आहारपोसहं के०) अशनादिक आ हार निषेध पोषध पहेलो जेद, ते वली बे प्रकारें. एक तो (देसर्ज के०) देशथकी निषेध, ते त्रिविध आहारत्यागरूप तिविहार तथा विगयत्या ग, आयंबिल,' एकासण पच्चरकाणथी करवो ते देशथकी आहार त्याग पोसह कहियें अने बीजो (सवर्ज के०) सर्वथकी चारे आहारनो त्याग करवो, ते सर्वथकी आहारत्याग पोसह कहियें. ए प्रथम आहार त्याग पोसहना बे जेद कह्या. हवे बीजो (सरीरसक्कारपोसहं के०) शरीरसंबं धि स्नान, उवटण, विलेपनादिक तथा वस्त्राजरणादिकें शोजानो नियम तथा नख, केश, रोमनुं समारवुं. तेल चोपडवुं, पीठीनुं करवुं, इत्यादिक शरीर सत्कारनिषेध नामें ए बीजो पोसह बे, ते (सवर्ज के०) सर्वथकी जाणवो. त्रीजो (बंजचेरपोसहं के०) ब्रह्मचर्यपोषध ते (सवर्ज के०) सर्व थकी जाणवो. एटले सर्वथकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टि करे, सर्व प्रकारें स्त्रीसेवन न करे. चोथुं (अव्वावारपोसहं के०) अव्यापारनी पुष्टिरूप ते (सवर्ज के०) सर्व थी जाणवो. एटले कृषी, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन, गृहकर्म प्रमुखना जे व्यापार, तेनो सर्वथा निषेध करे, (चउव्विहेपोसहं के०) ए चार प्रकारना पोषधने विषे (ठामि के०) हुं तिष्ठुं, रहुं, अंगीकार करुं बुं, (जाव के०) ज्यां सुधी (अहोरत्तं के०) दिवस अने रात्रि मली आठ पहोरें पोषधप्रत्यें अ थवा (जावदिवसं के०) ज्यां सुधि दिवस प्रत्यें क्रमण बे त्यां सुधी क्रमण चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें, अथवा (जावरत्तं के०) ज्यां सुधि रात्रिप्रत्यें क्रमण चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं, सेवुं, त्यां सुधि. अने थोडोक दिवस होय, तेवारें रात्रिपोसह जो लीये तो "जावदि वसं रत्तं पज्जुवासामि" एवो पाठ कहे, ज्यां सुधि थोडो दिवस होय, त्यांथी लेइने आखी रात्रि सुधी पोसह निरतिचार पालुं, (डुविहंतिवि हेणं के०) डुविध, त्रिविधें करी इत्यादिनो अर्थ सुगम बे ॥१॥ इति ॥४६॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

सागरचंदो कामो, चंदवर्डिसो सुदंसणो धन्नो ॥
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीवियंतेवि ॥१॥

अर्थः–(जीवियंतेवि के०) जीवितना अंत थाते थके पण एटले आयुनो विनाश थाते थके पण, (जेसिं के०) जेहनी (पोसहपडिमा के०) पोषधप्रतिमा, (अखंडिआ के०) अखंडित रही, संपूर्ण रही, ते श्रावक (धन्नो के०) धन्य छे, ते श्रावकोनां नाम कहे छे. (सागरचंदो के०) एक सागरचंद्र कुमार, बीजो (कामो के०) कामजी, त्रीजो (चंदवर्डिसो के०) चंद्रावतंस राजा, चोथो (सुदंसणो के०) सुदर्शन शेठ ॥ १ ॥

धन्ना सलाहणिज्ञा, सुलसा आणंद कामदेवा य ॥
जेसिं पसंसइ भयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधिं लीधउं,विधिं पारिउं,विधि करतां जे कांइ अविधि हुउ हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थः–एक (सुलसा के०) सुलसाश्राविका, बीजा (आणंद के०) आनंद श्रावक (य के०) वली त्रीजा (कामदेवा के०) कामदेव श्रावक, ए त्रणे (धन्ना के०) धन्य छे, (सलाहणिज्ञा के०) श्लाघनीय छे एटले श्लाघा करवा योग्य छे. (तं के०) ते प्रत्यक्ष पणे (जेसिं के०) जेहना (दढव्वयं के०) दृढव्रत प्रत्यें (भयवं के०) भगवान् (महावीरो के०) श्रीमहावीर स्वामी, पोतें श्रीमुखें (पसंसइ के०) प्रशंसे छे, वखाण करे छे, माटें ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥२॥ पोषध व्रत विधियें लीधुं होय, विधियें पाल्युं होय, विधि करतां जे कांइ अविधि हुउं होय, ते सर्व, मन, वचन अने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय प्रारंभः ॥

भरहेसर बाहुबली, अभय कुमारो अ ढंढणकुमारो ॥
सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥

अर्थः—एक (नरहेसर के०) श्रीनरतेश्वर, प्रथम चक्रवर्त्ती श्रीरुषनदेवना पुत्र, बीजा (बाहुबली के०) बाहुबली ते पण श्रीरुषनदेवना पुत्र, नरतेश्वर करतां पण अधिक बलवंत जाणवा, त्रीजा (अनयकुमारो के०) अनयकुमार, श्रेणिकराजाना पुत्र, (च के०) वली चोथा (ढंढणकुमारो के०) ढंढणकुमार, ते श्रीकृष्णजीना पुत्र. पांचमा (सिरिउ के०) श्रीक, ते श्रीथूलिनद्रजीना न्हाना नाई, उठा (अणियाउत्तो के०) अनिकापुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, सातमा (अइमुत्तो के०) अतिमुक्त कुमार, जेणें उ वर्षनी अवस्थामां श्रीवीरपासेंथी दीक्षा लीधी, (च के०) वली आठमा (नागदत्तो के०) नागदत्त, श्रेष्ठीना पुत्र, अदत्त दानना त्यागी जाणवा ॥ १ ॥

मेअज्ज थूलिनद्दो, वयररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिउ केसि करकंमु ॥ २ ॥

अर्थः—नवमा (मेअज्ज के०) मेतार्यमुनि, जेने माथे सुवर्णकारें आलां चांबडां वींट्यां, दशमा (थूलिनद्दो के०) श्रीथूलिनद्रमुनि, जेणें कोश्या वेश्याने घरे चोमासुं कीधुं, अने अखंम शील राख्युं, तथा वेश्याने श्राविका कीधी, अगीयारमा (वयररिसी के०) वज्ररुषि एटले वज्रस्वामी, बारमा (नंदिसेण के०) नंदिषेणजी, जेणें वेश्याने घरे रहीने बार वर्षपर्यंत प्रतिदिवस दश दश जण प्रतिबोध्या, तेरमा (सीहगिरी के०) श्रीसिंहगिरिजी माहाराज, ते श्रीवज्रस्वामीना गुरु, चउदमा (कयवन्नो के०) कृतवर्णकुंमार, श्रेष्ठिपुत्र, (च के०) वली पंदरमा (सुकोसल के०) सुकोशलमुनि, जेमनुं शरीर, वाघणीयें नक्षण कीधुं, शोलमा (पुंमरिउ के०) श्रीपुंमरिकजी, श्रीप्रथम तीर्थंकरना प्रथम गणधर, वली जे चैत्री पूनमने दिवसें पांचकोडी मुनि संघातें सिद्धगिरिनी उपर सिद्धनगरीमां पहोता, सत्तरमा (केसि के०) केशीकुमार, ते परदेशी राजाना गुरु, अढारमा (करकंमु के०) करकंमु, प्रत्येकबुद्ध मुनि, जे जर्जरीनूत वृषन प्रत्यें जोइने साधु थया ॥ २ ॥

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल माहासाल सालिनद्दो
अ ॥ नद्दो दसन्ननद्दो, पसन्नचंदो अ जसनद्दो ॥ ३ ॥

अर्थः—उंगणीशमा (हल्ल के०) हल्यकुमार, वीशमा (विहल्ल के०) विहल्यकुमार, ए बेहु पण श्रेणिकराजाना पुत्र जाणवा. एकवीशमा (सुदंसण के०) सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रजावें शूलिमांथी सिंहासन थयुं, बावीशमा (साल के०) साल मुनि, त्रेवीशमा (माहासाल के०) माहासाल मुनि, ए बे श्रीगौतमस्वामीजीयें प्रतिबोध्या, चोवीशमा (सालिजद्दोश्र के०) शालिजद्र प्रसिद्धजोगी, श्रेष्ठिपुत्र, पच्चीशमा (जद्दो के०) जद्रबाहु स्वामी चतुर्दश पूर्वना जाण,ब्वीशमा (दसन्नजद्दो के०) दशार्णजद्र, ते रिद्धिगार वें,जे श्रीवीरने वांदवा आव्या, त्यां संयम लीधो, सत्तावीशमा (पसन्नचंदो श्र के०) प्रसन्नचंद्र राजर्षि, जेणें रौद्रध्यानथी सातमी नरकनां दलीयां मेलव्यां, तेने शुक्लध्यानथी विखेरीने केवलज्ञान प्रगट कीधुं, अठावीशमा (जसजद्दो के०) श्रीयशोजद्रसूरि, ते श्रीजद्रबाहुस्वामीना गुरु जाणवा॥३॥

जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो॥
धन्नो इलाइपुत्तो,चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥

अर्थः—उंगणत्रीशमा (जंबुपहु के०) जंबुप्रजुस्वामी. जे अष्टवधू अने नवाणुं क्रोड द्रव्य, त्यागीने चरिम केवली थया, त्रीशमा (वंकचूलो के०)वंकचूलराजकुमार, जे कर्मना वशथकी चोरना स्वामी थया, पठी साधुयें दीधेलां व्रत पालीने देवलोकें गया. एकत्रीशमा (गयसुकुमालो के०) गजसुकुमार, श्रीकृष्णजीना न्हाना जाई, सोमलनो करेलो अग्निनो उपसर्ग सहन करीने जे दीक्षाने दिवसेंज मोक्षें गया, बत्रीशमा (अवंतिसुकुमालो के०) अवंतिसुकुमार, जेनुं श्यालिणीयें शरीर जक्षण कीधुं,तोपण चारित्र धर्मथी न चल्या, जे नलिनी गुल्मविमानें पहोता,तेत्रीशमा (धन्नो के०) धन्नो, ते शालिजद्रनो बनेवी, चोत्रीशमा (इलाइपुत्तो के०) एलाचीपुत्र, जे नाटक करतां थकां केवलज्ञान पाम्या, पांत्रीशमा (चिलाइपुत्तो के०) चिलातिपुत्र, जेनुं शरीर, कीडीयोयें चालणीप्राय कीधुं, तो पण उपशम, विवेक अने संवरना अर्थविचारथकी न चूक्या,जे अतिशय ज्ञान पामी स्वर्गगामी थया, (च के०) वली उत्रीशमा (बाहुमुणी के०) युगबाहु मुनि ॥ ४ ॥

अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥५॥

अर्थः– साडत्रीशमा (अज्जगिरि के०) आर्यमाहागिरिजी, श्रीथूलिजद्र स्वामीना शिष्य,आडत्रीशमा (अज्जरक्खिअ के०) आर्यरक्षित माहाराजा, उंगणचालीशमा (अज्जसुहत्थी के०) आर्यसुहस्ती सूरि,थूलिजद्रजी जेना गुरु हता,चालीशमा (उदायगो के०) उदायिराजा, ते श्रीजगवतीसूत्रें प्रसिद्ध छे. एकतालीशमा (मणगो के०) मनकपुत्र, जेने अर्थें श्रीदशवैकालिक सूत्र नीपन्युं,बहेंतालीशमा (कालयसूरि के०) श्रीकालिकाचार्यश्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता, निगोदस्वरूपना वक्ता,त्रेंतालीशमा (संबो के०) सांब कुमार, अंबवतीना पुत्र,चुम्मालीशमा (पज्जुन्नो के०) प्रद्युम्न कुमार,रुक्मिणीना पुत्र, पीस्तालीशमा (मूलदेवोअ के०) मूलदेवराजा, जेणें तपस्वी साधुने निर्दोष अडद दीधा ॥ ५ ॥

पजवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ॥
सिजंस कूरगडूअ, सिज्जंजव मेहकुमारो अ ॥६॥

अर्थः– छेंतालीशमा (पजवो के०) प्रजवस्वामीजी, जेने श्रीजंबुस्वामीयें प्रतिबोध्या, सुडतालीशमा (विन्हुकुमारो के०) विष्णुकुमार, जेणें श्रीसंघने कारणें लाख योजननुं रूप विकूर्व्युं,अडतालीशमा (अद्दकुमारो के०) आर्द्रकुमार, जे पूर्वजवें संयम विराधवाथकी अनार्यदेशमां उपन्या, अने अजयकुमारें मोकलेली जिनप्रतिमा देखीने जेने पूर्वजव सांजस्यो,साधु थया,उंगणपच्चाशमा (दढप्पहारी के०) दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि थइने मोक्षें गया, (च के०) वली पच्चाशमा (सिचंस के०) श्रेयांसकुमार, जेणें श्रीऋषजदेवप्रत्यें इक्षुरसनुं दान दीधुं, एकावनमा (कूरगडूअ के०) कूरगडू साधु, जेणें गुरुनुं क्षुत जे थूंक ते सहित खीचडी खातां केवलज्ञान उपार्ज्युं, बावनमा (सिज्जंजव के०) सिज्जंजव आचार्य. जेणें पूर्वथकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपनमा (मेहकुमारोअ के०) मेघकुमार श्रेणिकराजाना पुत्र, जेने श्रीवीरप्रजुजीयें हाथीनो पूर्वलो जव संजलावीने संयममां स्थिर कीधो ॥ ६ ॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥
जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥

अर्थः—(एमाइ के०) इत्यादिक बीजा पण खंधकुमार, खंधकमुनि, कपिलमुनि, हरिकेशी मुनि, संयतमुनि, दमदंतमुनीश्वर,दमसारमुनीश्वर प्रमुख (महासत्ता के०) माहासत्त्वना धरनारा एटले महोटा पराक्रमी केटलाएक ते नवेंज मोदें गया, केटलाएक आगल मोदें जाशे,तेसर्वे मुफ नणी (सुहं के०) शिवसुखप्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो, ते महासत्वा केहवा बे? तो के (गुणगणेहिं के०) ज्ञानादिक गुणोना गणें करी एटले समूहें करिने (संजुत्ता के०) संयुक्त बे, वली केहवा बे? तो के (जेसिं के०) जेना (नामग्गहणे के०) नामग्रहण करवायकी (पावपबंधा के०) पापना प्रबंध एटले समूह जे बे, ते (विलय के०) विनाश प्रत्यें (जंति के०) पामे बे ॥ ७ ॥

सुलसा चंदनबाला,मणोरमा मयणरेहा दमयंती॥
नमयासुंदरी सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥ ८ ॥

अर्थः—एक (सुलसा के०) सुलसा श्रीवीरस्वामीनी मुख्य श्राविका, बीजी (चंदनबाला के०) चंदनवालिका श्रीवीरस्वामीनी प्रथम साधवी, त्रीजी (मणोरमा के०) मनोरमा सुदर्शनशेठनी नार्या, चोथी (मयणरेहा के०) मदनरेखा,नमिराजर्षिनी माता, पांचमी (दमयंती के०) दमयंती नलराजानी राणी, जेनुं मस्तक दीवानी पेरें प्रकाशकारी थातुं हतुं, बठी (नमयासुंदरी के०) नर्मदासुंदरी, सातमी (सीया के०) सीता सती, आठमी (नंदा के०) नंदा अन्नयकुमारनी माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा जाणवी, दशमी (नद्दा के०) नद्रा शेठाणी, शालिनद्रनी माता, (च के०) वली अगीयारमी एवंतिसकुमारनी माता पण नद्रा जाणवी. बारमी (सुनद्दा के०) सुनद्रा जेणें काचे तातणे चारणी बांधी, कूवामांथी जल काढी चंपानगरीनी पोल उघाडी, तथा तेरमी श्रीकृष्णजीनी उंरमान नगिनी, तेनुं नाम पण सुनद्राज जाणवुं ॥ ८ ॥

रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी देवी॥
जिठ सुजिठ मिगावई,पन्नावई चिल्लाण देवी॥९॥

अर्थः—चौदमी (रायमई के०) राजिमती जेणें गिरिगुफामांहे संयम

थकी पडता एवा रथनेमि प्रत्यें सुजाषित वचनें स्थिर कीधो.पंदरमी (रिसिदत्ता के०) रुषिदत्ता सती, शोलमी (पउमावइ के०) पद्मावती करकंडुजीनी माता,सत्तरमी (अंजणा के०) अंजना सुंदरी, हनुमंतवीरनी माता, अढारमी (सिरीदेवी के०) श्रीदेवी, अतिमुक्तकुमारनी माता, उंगणीशमी (जिठ के०) ज्येष्ठा, वीशमी (सुजिठ के०) सुज्येष्ठा, एकवीशमी (मिगावई के०) मृगावती, बावीशमी (पजावइ के०) प्रजावती, त्रेवीशमी (चिल्लणादेवी के०) चेलणा राणी, ए पांचे चेडा राजानी पुत्रीयो जाणवी ॥९॥

वंजी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ॥
देवइ दोवइ धारणी,कलावई पुप्फचूला य ॥ १०॥

अर्थः—चोवीशमी (वंजी के०) ब्राह्मी, जरतनी जगिनी, पच्चीशमी (सुंदरी के०) सुंदरी, ते बाहुबलनी जगिनी, ढवीशमी (रुप्पिणि. के०) रुक्मिणी, जेणें वज्रस्वामीनी पासें कुमारिकापणामां दीक्षा लीधी,सत्तावीशमी (रेवइ के०) रेवती श्राविका, जेणें जगवानने कोलापाक वहोराव्यो, अठावीशमी (कुंती के०) कुंती, पांरुवोनी माता, उंगणत्रीशमी (सिवा के०) शिवा, ते चेडाराजानी पुत्री, त्रीशमी (जयंती य के०) जयंती श्रीवीरस्वामीनी श्राविका. "जंते किं सव्वे जवा सिज्झंति ?" इत्यादिक प्रश्ननी करवावाली, एकत्रीशमी (देवइ के०) देवकी, श्रीकृष्णजीनी माता, बत्रीशमी (दोवइ के०) ड्रौपदी, पांरुवजार्या, तेत्रीशमी (धारणी के०) धारणी,ते चंदनबालानी माता, चोत्रीशमी मेघकुमारनी माता पण धारणी नामें जाणवी. पांत्रीशमी जंबुकुमारनी माता पण धारणी जाणवी. ढत्रीशमी (कलावई के०) कलावती, शीलने प्रजावें जेना कापेला हाथ वली नवपल्लव थया, (च के०) वली साडत्रीशमी (पुप्फचूला के०) पुष्पचूलानामा साधवी, अनिकापुत्र आचार्यनी जक्तिना उल्लासथी जेणें केवल ज्ञान पाम्युं, जे वर्षाद वरसते आहार लावी ॥ १० ॥

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ॥
जंबुवइ सच्चजामा, रुप्पिणिकन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥

अर्थः—आडत्रीशमी (पउमावइ के०) पद्मावती,उंगणचालीशमी (गोरी के०)

गौरी, चालीशमी (गंधारी के०) गांधारी, एकतालीशमी (लक्खमणा के०) लक्ष्मणा, बहेंतालीशमी (सुसीमा के०) सुसीमा, (च के०) वली त्रेंतालीशमी (जंबुवइ के०) जांबुवती, चुम्मालीशमी (सच्चजामा के०) सत्यजामा, पीस्तालीशमी (रुप्पिणी के०) रुक्मिणी ए (कन्हठ के०) श्रीकृष्णनी आठ, (महिसीउ के०) अग्रमहिषीयो छे, एटले पटराणीयो छे, अहिं चकार पादपूर्णार्थ छे ॥११॥

जक्खा य जक्खदिन्ना, नूआ तह चेव नूअदिन्ना य ॥
सेणा वेणा रेणा, नयणीउ थूलिनदस्स ॥ १२ ॥

अर्थः—छेंतालीशमी (जक्खा के०) यक्षा, (च के०) वली सुडतालीशमी (जक्खदिन्ना के०) यक्षदिन्ना, अडतालीशमी (नूआ के०) नूता (तह के०) तथा (चेव के०) वली निश्चें, उंगणपच्चासमी (नूअदिन्ना के०) नूतदिन्ना, (च के०) वली पच्चासमी (सेणा के०) सेना, एकावन्नमी (वेणा के०) वेणा, बावन्नमी (रेणा के०) रेणा, ए सात (नयणीउ के०) नगिनीयो, (थूलिनदस्स के०) श्रीस्थूलिनद्रजीनी जाणवी ॥ १२ ॥

इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥ अज्जवि
वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ ४८ ॥

अर्थः—(इच्चाइ के०) इत्यादिक बीजी पण कमलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंद्रलेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख (महासइउ के०) जे महोटी सतीयो ते सर्वे. (जयंति के०) जयवंती छे, एटले सर्व स्त्रीयोमां प्रधान थाती हवी. केहवी थाती हवी ? तो के (अकलंकसीलकलिआउ के०) निर्मल शील गुणें करीने सहित होती हवी, वली (जासिं के०)जेना (जसपडहो के०) जशनो ढोल, (तिहुअणेसयले के०) सकल त्रिभुवनने विषे (अद्यवि के०) आज पण (वज्जइ के०) वाजे छे ॥ १३ ॥ इति सत्त सतीयोनी सद्याय सूत्रार्थः ॥ ४८ ॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सद्याय ॥

मन्ह जिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥
छविह आवसयंमी, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १॥

अर्थः–(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्वरनी (आणं के०) आज्ञा तेने (मन्ह के०) मानवी, तथा (मिछं के०) मिथ्यात्वनो (परिहरह के०) परिहार करवो, एटले त्याग करवो, अने (सम्मत्तं के०) समक्त्वने (धर के०) धरवो एटले धारण करवो. (छव्विह के०) षड्विध एटले सामायिकादिक छ प्रकारना (आवसयंमि के०) आवश्यकने विषे (पइदिवस के०) प्रतिदिवस (उज्जुत्तो के०) उद्युक्तो एटले उद्यमवंत (होइ के०) होय एटले हो ॥ १ ॥

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ जावो अ ॥
सज्झायनमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥

अर्थः–चतुर्दशी आदिक (पव्वेसु के०) पर्वोना दिवसोने विषे (पोसहवयं के०) पौषधव्रत करवुं, अने (दाणं के०) सुपात्रने दान देवुं, (सीलं के०) शील पालवुं, (तवो के०) तप करवुं, (अ के०) वली (जावो के०) अनित्यादि जावनाउ जाववी (अ के०) वली (सज्झाय के०) वाचना पृछनादि पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, (नमुक्कारो के०) नमस्कारनो पाठ करवो. (परोवयारो के०) परोपकार करवो, (अ के०) वली (जयणाअ के०) जयणा राखवी एटले यत्नायें प्रवर्त्तवुं ॥ २ ॥

जिणपूआ जिणथुणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वछल्लं ॥
ववहारस्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥

अर्थः–(जिणपूआ के०) श्रीजिनेश्वर जगवाननी पूजा जक्ति करवी (जिणथुणिणं के०) श्रीजिनेश्वरनी स्तुति करवी, (गुरुथुअ के०) गुरुनी स्तुति करवी अने (साहम्मिआण वछल्लं के०) साधर्मियोनी वत्सलता करवी, ए (ववहारस्सय सुद्धि के०) व्यवहारनी शुद्धि ते (रहजुत्ता के०)रथयात्रा अने (तिछजुत्ता य के०) तीर्थयात्रा सहित करवी ॥ ३ ॥

उवसम विवेक संवर, जासा समिई छजीवकरुणा य ॥
धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥४॥

अर्थः–(उवसम के०) उपशम एटले क्षमा धारण करवी, तथा(विवेक के०) विवेक अने (संवर के०) संवर जाव राखवो (जासा समिई के०)

जाषा समिति अने (बजीव करुणाय के०) पृथिव्यादिक ब प्रकारनो जे जीव निकाय तेमना उपर करुणा, एटले दया राखवी, रक्षा करवी तथा (धम्मिअ जण संसग्गो के०) धार्मिक जनोनी साथें संसर्ग करवो, तथा (करण के०) रसनादिक पांच इंद्रियो तेने (दमो के०) दमवी दमन करवुं, अने (चरिण परिणामो के०) चारित्रना परिणाम राखवा ॥ ४ ॥

संघोवरि बहुमाणो, पुत्थय लिहणं पन्नावणा तिब्बे ॥
सड्ढाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥
इति श्रावकदिनकृत्य सद्याय ॥ ४ए ॥

अर्थः-(संघोवरि के०) चतुर्विध श्रीसंघनी उपर (बहुमाणो के०) बहुमान राखवुं, एटले श्रीसंघनुं बहुमान करवुं, तथा (पुत्थयलिहणं के०) पुस्तक लखाववुं अने (पन्नावणातिब्बे के०) तीर्थमां प्रजावना करवी, (सड्ढाण के०) श्रावक जनोना (निच्चं के०) नित्य करवा योग्य (किच्च के०) कृत्य ते (मेयं के०) एयं एटले ए बे ते (सुगुरुवएसेणं के०) सुगुरुना उपदेशें करी जाणी लेवां ॥ ५ ॥ इति ॥ ४ए ॥

॥ अथ संथारापोरिसि लिख्यते ॥

निसिही, निसिही, निसिही, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा नवकार तथा करेमि जंते सामाइयं ए सर्व पाठ त्रण वार कहीने पठी ॥ अणुजाणह जिठिज्जा, ठिज्जा ॥ अणुजाणह परम गुरु ॥ गुरु गुण रयणेहिं मंमिअ सरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइअ संथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थः—हवे अर्थ विजाषायें करी संथारानो विधि लखीयें बैयें. अहीयां साधु तथा श्रावक, पडिक्कमणां करीने पठी स्वाध्याय करे, एटले जणवुं, गणवुं करे, पठी पोरिसी थये ठते आचार्य समीपें आवे, तिहां खमासमण दश्ने कहे. श्छाकारेण संदिसह जगवन् "बहु पडिपुन्ना पोरिसि, राइय संथारए ठामि" एनो अर्थ लखियें बैयें. (जगवन् के०) हे जगवन् ! संपू

र्ण ऐश्वर्यादिक गुणें युक्त! तमें (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी, मुऊ ने (संदिसह के०) आदेश आपो. (बहुपडिपुन्नापोरिसि के०) घणी प्र तिपूर्ण एवी पोरिसि थइ माटे (राइअ के०) रात्रि संबंधी (संथारए के०) सं थारा प्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं? गुरु आदेश आपे, पछी इरियावहियं पू र्वक चैत्यवंदन करे, पछी शरीरचिंता लघुशंकादिक कार्य सर्व करे, पछी यत्ना यें करी संथारो करे. पछी काबो पग, संथारानी साथें राखीने मुखवस्त्रिका नुं प्रतिलेखन करे एटले मुहपत्ती पडिलेहे, पछी त्रण वार निसिही जणे, (निसिही के०) पाप व्यापारनो निषेध करीने, (महामुणीणं के०) महोटा मुनीश्वर एवा (गोयमाईणं के०) श्रीगौतमादिक. (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण जे छे, ते प्रत्यें (णमो के०) नमस्कार करे, पछी (जिठिज्जा के) हे ज्येष्ठार्याः! एटले हे वृद्धसाधुउ ? तमें मुऊने (अणुजाणह के०) आज्ञा आपो, ए प्रकारें कहेतो थको, संथारानी उपर रह्यो थको, नम स्कारपूर्वक सामायिकनो पाठ त्रण वार जणे, पछी आवी रीतें कहे, ते कहे छे. (गुरुगुणरयणेहिं के०) प्रतिरूपादिक आचार्यना गुरुगुण एटले महोटा जे गुण, ते रूप रत्नोयें करी (मंम्रिअसरीरा के०) मंमित छे, शोजित छे शरीर जेनां एवा (परमगुरु के०) उत्कृष्ट गुरुउ तेमने संबोधन दइ, बोला वीयें, कें हे परमगुरु! तमे मुऊने (अणुजाणह के०) आदेश आपो. प्रति पूर्ण एटले घणी एवी पोरिसि थइ, माटें रात्रिसंथारकनी उपर हुं तिष्ठुं? एटले विश्राम करुं? निद्रा मुकाउं! अहींयां सुधी गद्यपाठ तथा एक गाथा मां संथारानी आज्ञानुं स्वरूप कह्युं ॥ १ ॥

हवे वली आगल बे गाथायें करी संथारानी आज्ञा प्रमुखनुं स्वरूप कहियें छेयें.

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥
कुक्कुडिपाय पसारण, अंतरंत पमऊए जूमिं ॥ २ ॥
संकोइअ संमासा, उवट्टंते य कायपडिलेहा ॥
दवाई उवउंगं, ऊसास निरुंजणा लोए ॥ ३ ॥

अर्थः-(संथारं के०) संथारानी, हे जगवन्! तमें मुऊने (अणुजाणह के०)

आज्ञा आपो, पढी गुरु आज्ञा आपे, . तेवारें (बाहुवहाणेण के०) बाहु अने हाथने उपधानें करी एटले उंशीके करी (वामपासेण के०) डाबे पासें सूवे. ते पण शी रीतें सूवे ? तो के (कुक्कुडि के०) कुकडीनी पेरें आकाशने विषे (पायपसारण के०) पग पसारीने सूवे, जो ए रीतें (अंतरंत के०) समर्थ थकां नहीं रहि शकाय, तो शुं करे ? ते कहियें ढैयें (जूमिं के०)जूमि प्रत्यें (पमज्जए के०) प्रमार्जी,पूंजीने तिहां पग स्थापे ॥२॥

ज्यारें पग संकोचवो होय, त्यारें (संकासा के०) साथल संधी प्रत्यें पूंजीने (संकोइअ के०) संकोचे, अने ज्यारें पासुं फेरववुं होय, त्यारें (काय के०) शरीरप्रत्यें (पडिलेहा के०) प्रतिलेखीने एटले शरीरने प्रमार्जी पूंजीने,(उवट्टंते के०) उद्वर्त्ते,एटले पासुं फेरवे. ए सूवानो प्रकार कह्यो.हवे (च के०) वली जागवानो प्रकार कहियें ढैयें, ज्यारें लघुशंका दिकने अर्थें उठे,तेवारें(दवाईउवर्उगं के०)द्रव्यादिकना उपयोग करे एटले ते विचार करे, जे द्रव्यथकी हुं कोण ढुं? साधु ढुं के गृहस्थ ढुं ? अने क्षेत्र थकी एम विचारे के हुं उपर ढुं, के नीचें ढुं ? के कोइ अन्य स्थानकें ढुं ? कालथकी शुं विचारे ? तो के हमणां रात्रि ढे,के दिवस ढे? जो रात्रि ढे, तो केटली रात्रि बाकी हशे ? इत्यादि कालथी विचार करे, उपयोग आपे अने नावथी तो आम विचारे के महारे लघुशंकादिकनी बाधा ढे, किंवा नथी ? एवा चार प्रकारें उपयोग देतां, विचार करतां जो निद्रा न जाय, तो (ऊसासनिरुंनण के०) उच्छ्वास, निःश्वास प्रत्यें रुंधीने एटले नासिका दबावीने निद्रा दूर करे ते निद्रा दूर थाय पढी (आलोए के०) आलोक प्रत्यें जूए एटले बाहेर निकलवानां द्वार प्रत्यें देखे, त्यां जइ लघुशंकादिक करीने पढी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते ॥ ३ ॥

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे सुइ रहेवाथी प्रथम शुं करवुं ? ते कहियें ढैयें. (इमाइरइणीए के०) रात्रिने विषे (जइ के०) जो (मे के०) महारे (इमस्सदेहस्स के०) आ देहसंबंधी (पमाउ के०) प्रमाद एटले मरवुं, (हुज्ज के०) थाय तो (आहारं के०) अशनादिक चार प्रकारना आहार प्रत्यें

(उवहि के०) उपधि जे वस्त्र, पात्रादिक तेप्रत्यें,तथा (देहं के०) शरीर प्रत्यें अथवा (उवहिदेहं के०) शरीर संबंधि उपधि प्रत्यें, (सव्वं के०) बीजा पण सर्वप्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (वोसिरिअ के०) हुं वोसिरावुं बुं, त्यागुं बुं ॥ ४ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा,अरिहंता लोगुत्तमा,सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥६॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥७॥

अर्थः-(चत्तारि के०) चार (मंगलं के०) मांगलिक बे. तेमां एक तो (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्रीअरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक बे बीजा (सिद्धा के०) अष्ट कर्मोनो क्षय करीने जे सिद्धिपदने पाम्या बे, ते सिद्ध. (मंगलं के०) मांगलिक बे, त्रीजा (साहु के०) सम्यक्ज्ञान क्रियायें करी शिवसुखना साधक जे साधु, ते (मंगलं के०) मांगलिक बे, चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलीजगवंतें (पन्नत्तो के०)प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप (धम्मो के०) धर्म, ते (मंगलं के०) मांगलिक बे ॥५॥ (चत्तारि के०) चार (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम बे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंत बे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम बे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध जे बे ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम बे,त्रीजा (साहु के०) साधु बे, ते (लोगुत्तमा ते०) लोकमां उत्तम बे, चोथो (केवली के०) श्रीकेवलियें (पन्नत्तो के०) प्ररूप्यो जे (धम्मो के०) धर्म, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमां उत्तम बे ॥ ६ ॥ (चत्तारि के०) चार (सरणं के०) शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं पडिवज्जुं बुं. अंगीकार करुं बुं एक तो (अरिहंते सरणं के०) श्रीअरिहंत शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. बीजुं. (सिद्धेसरणं के०) श्री

सिद्धशरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं, त्रीजुं (साहु सरणं के०)साधुशरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. चोथुं (केवलि के०) श्रीकेवलियें (पण्णत्तं के०) प्ररूप्यो जांख्यो एवो जे(धम्मं के०)धर्म तेना (सरणं के०) शरणप्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुछं ॥
कोहं माणं मायं, लोजं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥
कलहं अप्नक्काणं, पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं ॥
परपरिवायं माया, मोसं मिछत्तसल्लं च ॥ ए ॥

अर्थः-प्रथम (पाणाइवाय के०) प्राणातिपात ते जीवहिंसा, बीजुं (अलियं के०) अलिक वचन एटले मृषावाद, त्रीजुं (चोरिक्कं के०) चोरी, एटले अदत्तादान. चोथुं (मेहुणं के०) मैथुन एटले स्त्रीप्रमुखनो जोग, पांचमुं (दविणमुछं के०) पुद्गलद्रव्यने विषे मूर्छा, एटले परिग्रह, बछो (कोहं के०) क्रोध, सातमो (माणं के०) मान एटले अहंकार, आठमो (मायं के०) माया ते कपट, नवमो (लोहं के०) लोज, दशमो (पिज्जं के०) प्रेम ते राग, (तहा के०) तथा अगियारमो (दोसं के०) दोष ते द्वेष ॥ ८ ॥ बारमो (कलहं के०) क्लेश, तेरमो (अप्नक्काणं के०) अज्याख्यान, एटले परने आल देवुं, चौदमुं (पेसुन्नं के०) पैशून्य एटले चुगली चाडी करवी, पंदरमुं (रइअरइ के०) पुद्गल पदार्थोने विषे रति तथा खुशी पण एमां ग्रहण करवी अने अरति ते शुजकार्यने विषे दिलगीरी, तेणें करीने (समाउत्तं के०) सहित, शोलमो (परपरिवायं के०) परनो परिवाद एटले निंदा, सत्तरमो (मायामोसं के०)मायामृषा एटले कपट सहित जूठ बोलवुं, अढारमुं (मिछत्तसल्लं के०) मिथ्यात्वनुं शल्य, एटले श्री जिनमतथी विपरीत मतनी श्रद्धा, तेने मिथ्यात्वशल्य कहियें. अहीं चकार जे बे, ते समुच्चयार्थवाची बे. ए अढार पाप स्थानकनां नाम कह्यां ॥ ए ॥

हवे आगलनी गाथामां एनो त्याग कहियें बैयें.

वोसिरिसु इमाइं मु, क्क मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥
डुग्गइ निबंधणाइं, अढारस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थः-(इमाइं के०) ए प्रत्यक्ष, (अठारसपावठाणाइं के०) अढार पापस्थानक जे ठे, ते प्रत्यें रे जीव ! तुं (वोसिरिसु के०) वोसिराव एट ले त्याग कर. ते अढार पापस्थानक केहवां ठे? तो के (मुरकमग्ग के०) मोक्षमार्गने विषे (संसग्ग के०) संसर्ग करता एटले गमन करता एवा जीवोने (विग्घभूआई के०) विघ्नभूत ठे, एटले अंतरायनां करनार ठे. वली ते पापस्थानक केहवां ठे ? तो के (दुग्गइ के०) दुर्गति जे नरकनिगोदा दिकनी गति तेनां (निबंधणाइं के०) कारण ठे ॥ १० ॥

एगो हं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ॥
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥

अर्थः-(अहं के०) हुं (एगो के०) एक बुं, (मे के०) महारो (कोई के०) कोइ (नत्थि के०) नथी, अने (अन्नस्सकस्सई के०) अन्य कोइनो (अहं के०) हुं (न के०) नथी, (एवं के०) एम, (अदीणम णसो के०) अदीनमनथको एटले सावधानचित्त थयो थको (अप्पाणं के०) आत्माप्रत्यें (अणुसासई के०) शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा भावा, सवे संजोगलरकणा ॥१२॥

अर्थः-(नाणदंसण के०) ज्ञान दर्शनें करी (संजुउ के०) संयुत ए टले सहित एवो (सासउ के०) शाश्वतो सदा, नित्य एवो (एगो के०) रागादिक प्रभावथी रहित एकज, (मे के०) महारो (अप्पा के०) आ त्मा ठे, (सेसा के०) शेष थाकता रह्या जे (संजोगलरकणा के०) द्र व्यथकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मिलापरूप अने भावथकी विषय कषा यादिरूप संयोग मिलाप, एवा (भावा के०) भाव जे ठे ते (सवे के०) सर्वे (मे के०) महारा स्वरूपथकी (बाहिरा के०) बाह्य ठे, एटले न्यारा ठे ॥१२॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुरकपरंपरा ॥ तम्हा
संजोगसंबंधं, सवं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥

अर्थः-तन, धन, कुटुंब ममत्वादि रूपनो (संजोग के०) संयोग एटले मि लाप, तेहीज (मूला के०) मूलकारण ठे जेनुं एवी (दुरकपरंपरा के०) दुःख नी श्रेणी ते (जीवेण के०) जीवें (पत्ता के०) पामी (तम्हा के०) ते कार

ए माटें (संजोगसंबंधं के०) पूर्वोक्त जे संयोग सबंध छे, ते (सवं के०) सर्व प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी (वोसिरियं के०) हुं वोसिरावुं छुं, अथवा त्यागुं छुं, एम कहेवुं ॥ १३ ॥

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १४ ॥

अर्थः—(अरिहंतो के०) श्रीअरिहंत अने सिद्ध जगवंत,ते (मह के०) महारा (देवो के०) देव छे. (जावज्जीवं के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी (सुसाहुणो के०) सुसाधु, जे जिनमतने विषे सावधान सम्यक् ज्ञानक्रियावान् एवा आचार्य उपाध्याय अने मुनि, ते महारा (गुरुणो के०) गुरु छे, ज्यां सुधी जीवुं, त्यां सुधी (जिण के०) जिनेश्वर देवोयें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्युं जांख्युं एवुं जे दयामूल तथा विनयमूल तत्त्व, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपोरूप (तत्तं के०) तत्त्व, ते महारो धर्म छे. जावजीव सुधी (इय के०) ए प्रकारें (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्व (मए के०) महारे जीवें (गहियं के०) ग्रह्युं अंगीकार कीधुं ॥ १४ ॥ इति रात्रिसंस्तारकविधिसूत्रार्थः ॥

खमिअ खमाविअ मइ खमिय, सवह जीवनिकाय ॥ सिद्धह साख आलोयणह,मुज्जह वइर न जाव॥१५॥सव्वे जीवा कम्मवस,चउदह राज जमंत ॥
ते मे सव खमाविआ, मुज्जवि तेह खमंत ॥ १६ ॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण जासिअं पावं ॥जं जं काएण कयं,मिछा मि डुक्कडं तस्स॥१७॥ इति॥५०॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीस्तुति प्रारंजः ॥

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माभिषेक, श्चंचत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदभिदा पंचवक्त्रोपमानः॥
निर्मुक्तः पंचदेह्याः परमसुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः,
कल्याणं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचमज्ञानवान् वः ॥१॥

अर्थः—(श्रीनेमिः के०) श्रीनेमिनाथ जगवान्, ते (वः के०) तमारा (पंचमीसत्तपसि के०) पंचमीना सारा तपने विषे (कल्याणं के०) निर्विघ्नप्रत्यें (वितनुतां के०) विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ जगवान् केहवा ठे ? तो के (पंचरूप के०) पांच रूपें करीने (त्रिदशपति के०) देवतानो पति एवो जे इंद्र, तेणें (कृत के०) कस्यो ठे, (प्राज्यजन्माजिषेकः के०) महोटो अने उत्तम जन्माजिषेक जेमनो एवा, वली ते केहवा ठे ? तो के (चंचत् के०) दीपता एवां (पंचाक्ष के०) पांच इंद्रियो तेरूप (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विरद के०) हस्ती, तेना (मदजिदा के०) मद जेदवे करीने (पंचवक्त्रोपमानः के०) पंचवक्त्र जे सिंह तेनुं ठे उपमान जेमने एवा ठे, वली ते केहेवा ठे ? तो के (पंचदेह्याः के०) औदारिकादिक पांच शरीर ते थकी (निर्मुक्तः के०) मुक्त थया एवा, वली ते केहवा ठे ? तो के (परम के०) उत्कृष्ट एटले अतींद्रिय एवा (सुखमय के०) सुखें करी सहित, वली ते केहवा ठे ? तो के (प्रास्त के०) प्रकर्षें करी टाल्या ठे, (कर्मप्रपंचः के०) कर्मना प्रपंच एटले विस्तार जेमणें एवा, वली ते केहवा ठे ? तो के (पंचमज्ञानवान् के०) पांचमुं ज्ञान जे केवलज्ञान तेणें करी युक्त ठे ॥ १ ॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौशिकानंदमूर्तिः,
पुण्याब्धिप्रीतिदायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोजिस्तमांसि ॥
सांद्राणि ध्वंसमानः सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार, ज्ञानं
पुष्याज्जिनौघः सुतपसि जविनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥

अर्थः—हवे जिनसमुदायने चंद्रनी समानतारूपें स्तवे ठे. (सितरुचिरिव के०) चंद्रमा सदृश एवो तथा (शिवतिलकसमः के०) शिव जे मोक्ष तेने विषे तिलकसमान एवो (यः के०) जे (जिनौघः के०) जिनसमुदाय ठे, ते (जविनां के०) जव्यजनोना (पंचमीवासरस्य के०) पंचमीना दिवसना (सुतपसि के०) रूडा तपने विषे (ज्ञानं के०) ज्ञान जे तेने (पुष्यात् के०) पुष्टिने करो. हवे ते जिनसमुदायने चंद्रतुल्यता केहवी रीतें ठे ? ते सर्व, विशेषणोयें करीने कहे ठे. जेम चंद्र (सच्चकोरान् के०) उत्तम जे चकोर तेमने (संप्रीणन् के०) रुडे प्रकारें आनंद करे ठे, तेम ए श्रीजिनसमुदाय पण (सच्चकोरान् के०) सत्पुरुषरूप जे चकोर

तेमने (संप्रीणन् के०) सम्यक् प्रकारें हर्ष करे ढे. वली जेम चंद्र (कौशिक के०) घूड, तेने (आनंदमूर्तिः के०) आनंददायक ढे मूर्ति जेनी एवो ढे, तेम ए जिनसमुदाय पण (कौशिक के०) इंद्र तेने (आनंदमूर्त्तिः के०) आनंदरूप ढे मूर्त्ति जेनी एवो ढे. तथा जेम चंद्र, (पुण्याब्धि के०) पुण्यकारक समुद्र तेने (प्रीतिदायी के०) प्रीतिदायिक ढे, तेम जिनौघ पण (पुण्याब्धि के०) पुण्यरूप जे समुद्र तेने (प्रीतिदायी के०) प्रीतिनो देनारो ढे, तथा जेम चंद्र (स्वीय के०) पोतानां (गोजिः के०) किरणोयें करी (सांड्राणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) अंधकारोने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाश करनारो ढे, तेम जिनौघ पण (सांड्राणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) जीवोनां अज्ञान, तेमने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाशनो करनारो ढे. तथा जेम चंद्र, (सकलकुवलय के०) समग्र कुवलय जे चंद्रविकासी एवां कमलो, तेने (उल्लासं के०) वीकसित पणाने (उच्चैः के०) अत्यंत (चकार के०) करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण (कुवलय के०) पृथ्वीवलय तेने (उल्लासं के०) हर्षने (चकार के०) करतो हवो एवो ढे, माटे तेने चंद्रमानी उपमा योग्य ढे ॥ २ ॥

पीत्वा नानाजिधार्थामृतरसमसमं यांति यास्यंति जग्मु,
र्जीवा यस्मादनेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाणपुर्याम् ॥
यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधाकुंममानंदहेतु, स्तत्पं
चम्यास्तपस्युद्यतविशदधियां जाविनामस्तु नित्यम् ॥३॥

अर्थः–(देवाधिदेव के०) श्री वीतराग देव तेनो (आगम के०) सिद्धांत ते रूप (दशम के०) दशमो, एवो (सुधाकुंम के०) अमृतकुंम जे ढे (तत् के०) ते (पंचम्याः के०) ज्ञानपंचमीना (तपसि के०) तपने विषे (उद्यत के०) उजमाल तथा (विशदधियां के०) निर्मल ढे बुद्धि जेमनी एवा (जाविनां के०) जाविक जव्य जीवोने (आनंदहेतुः के०) आनंदनो कारणजूत (नित्यं के०) निरंतर (अस्तु के०) थाउ. हवे ते जिनागमरूप दशम सुधाकुंम केहवो ढे? तो के (नानाजिधार्था

मृतरसं के०) नाना प्रकारनां छे नाम जेमनां एवा जे अर्थो, ते रूप अ मृतरस छे जेमां एवो छे तेने(विधिवत् के०) विधिप्रमाणें (पीत्वा के०) पान करीने (असमं के०)निरुपम एवा सुखने (यास्यंति के०) पामशे, (यांति के०) पामे छे, अने (जग्मुः के०) पामता हवा. (यस्मात् के०) जेनुं पान करवाथकी (अनेके के०) अनेक एवा (जीवाः के०) जीवो जे छे ते (प्राज्य के०) महोटी एवी (निर्वाणपुर्यां के०) मोक्षनगरीने विषे (अमरतां के०) अजरामरपणाने (यात्वा के०) पामीने स्वस्थ थाय छे ॥३॥

स्वर्णालंकारवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनित्यांधकारा, हुंकारारावदूरीकृतसुकृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥ देवी श्रीअंबिकाख्या जिनवरचरणांभोजभृंगीसमाना, पंचम्यह्नस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां सावधाना ॥ ४ ॥ ५१ ॥

अर्थः–(श्रीअंबिकाख्या के०) श्रीअंबिका छे नाम जेनुं एवी (देवी के०) देवी. ते (सावधाना के०) सावधान एवी छती (धीमतां के०) बुद्धिमान् एवा भविक जीवना (पंचम्यह्नः के०) पंचमीना दिवसना (तपोर्थं के०) तपने माटें (कुशलं के०) कुशल जे छे तेने (वितरतु के०) विस्तारो. ते देवी केहवी छे ? तो के (स्वर्णालंकार के०) सुवर्णना जे अलंकार तेने विषे (वल्गन्मणिकिरणगण के०) वलग्या एवा जे मणि तेनां किरण तेना जे गण, तेणें करी (ध्वस्तनित्यांधकारा के०) टाल्यो छे निरंतर अंधकार जेणें, वली ते देवी केहवी छे? तो के (हुंकार के०) हुंकारनो (आराव के०) शब्द तेणें करी (दूरीकृत के०) दूर कस्या छे (सुकृतजनव्रात के०) सुकृतनो करनारो एवो जे जनसमूह तेना (विघ्नप्रचारा के०) विघ्नना प्रचार जेणें,वली ते देवी केहेवी छे? तो के(जिनवरचरणांभोज के०) श्रीवीतरागनां चरणरूप कमल,तेने विषे (भृंगीसमाना के०) भ्रमरी समान छे ॥४॥५१॥

हवे पाक्षिकादि प्रतिक्रमण योग्य सूत्रां लखियें छैयें.

॥ अथ सकलार्हत्प्रारंभः ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

अर्थः-(आर्हत्यं के०) अरिहंतनो जे समूह, तेने अमो (प्रणिदध्महे के०) चित्तमांहे ध्यान करीयें छैयें. हवे ते आर्हत्य केहेवुं छे? तो के (सकल के०) समग्रने (अर्हत् के०) पूजवानुं (प्रतिष्ठानं के०) स्थानक छे, वली ते केहवुं छे? तो के (शिवश्रियः के०) मोक्षरूप लक्ष्मीनुं (अधिष्ठानं के०) स्थानक छे, वली ते केहवुं छे? तो के (भूः के०) मनुष्यलोक, (भुवः के०) पाताललोक, (स्वः के०) देवलोक, ए (त्रयी के०) त्रण लोक तेनुं (ईशानं के०) स्वामी छे ॥ १ ॥

नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनम् ॥
क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥

अर्थः-(सर्वस्मिन् के०) सर्व एवां (क्षेत्रे के०) क्षेत्रने विषे, (च के०) वली (काले के०) समस्तकालनेविषे एटले अतीत, अनागत अने वर्त्तमान कालने विषे, (नाम के०) नामनिक्षेप, ते तीर्थंकरनाम कर्मोदय जाणवो तथा (आकृति के०) स्थापनानिक्षेप, ते जिनप्रतिमा जाणवी. (द्रव्य के०) द्रव्यनिक्षेप, ते जिनना जीव जे आगल थाशे, ते जाणवा, (भावैः के०) भावनिक्षेप, ते समवसरणने विषे बिराजमान श्रीसीमंधर स्वामीप्रमुख जाणवा. ए चार निक्षेपायें करी (त्रिजगज्जनम् के०) त्रण जगतना जे जनो तेप्रत्यें (पुनतः के०) पवित्र करनार एवा (अर्हतः के०) श्रीअरिहंत प्रभुने (समुपास्महे के०) वंदन, सत्कार, सन्मानादिकें करी अमें सेवीयें छैयें ॥ २ ॥

हवे वर्त्तमान चोवीशजिनने प्रणाम करवा इछतो छतो
प्रथम श्री ऋषभदेवजीने स्तवे छे.

आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरिग्रहम् ॥
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥

अर्थः-प्रथम (ऋषभ के०) जेमनी मातायें स्वप्नमां वृषभ दीठो, माटें ऋषभ कहियें, अथवा जेमनी दक्षिण जंघाने विषे वृषभनुं चिन्ह छे माटे ऋषभ कहियें, एवा (स्वामिनं के०) श्री ऋषभ स्वामी तेने (स्तुमः के०) स्तवियें छैयें. ते केहवा छे? तो के (आदिमंपृथिवीनाथं के०) प्रथम

पृथिवीना नाथ,अर्थात् सर्वनी आदिमां राजा एवा,तथा वली ते केहवा छे? तो के (आदिमं के०) सर्वथी प्रथम एवा (निःपरिग्रहं के०) निःशेष पणायें करीने त्याग कस्यो छे परिग्रह जेणें एवा अर्थात् अग्रिम साधु छे. वली ते केहवा छे? तो के (आदिमं के०) प्रथम एवा (तीर्थनाथं के०) तीर्थना नाथ अर्थात् आदिम तीर्थंकर एवा छे ॥ ३ ॥

हवे बीजा श्रीअजितनाथने स्तवे छे.

अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकरजास्करम्॥अ
म्लानकेवलादर्शो, संक्रातजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥

अर्थः—(अजितं के०) कर्मोयें जींती न शकाय माटें अजित अथवा माताना गर्जमां रहे छते अन्य राजायें एमनां माता पिता जींती न शकायां, ते माटें अजित कहियें.ते बीजा अजितनाथने (स्तुवे के०)हुं स्तवुं छुं. ते अजितनाथ केहवा छे? तो के (अर्हंतं के०) त्रण लोकने पूजवा योग्य एवा तथा वली ते केहवा छे? तो के (विश्वकमलाकर के०) विश्व रूप जे कमलाकर सरोवर अर्थात् कमलना आकर एटले समूह छे जेमां एवुं सरोवर तेहने प्रकाश करवामां (जास्करं के०) सूर्यतुल्य एवा, वली ते केहवा छे? तो के (अम्लान के०) निर्मल एवुं (केवल के०) केवल ज्ञानरूप, (आदर्श के०) आरीसो तेने विषे (संक्रांत के०) संक्रमाव्युं छे, एटले प्रतिबिंबित कर्युं छे (जगतं के०) जगत् जेणें एवा छे ॥ ४ ॥

हवे त्रीजा श्रीसंजवनाथने स्तवे छे.

विश्वजव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंतु ताः ॥
देशनासमये वाचः, श्रीसंजवजगत्पतेः ॥ ५ ॥

अर्थः—(ताः के०) ते उत्कृष्ट एवी (देशनासमये के०) देशना एटले धर्मोपदेशना समयने विषे (श्रीसंजवजगत्पतेः के०) जेथी शं केतां सुख उत्पन्न थाय तेने शंजव कहियें. अथवा जेमनाजन्मना समयने विषे धान्यना समुदाय, विशेषें निपन्या, ते माटें संजव कहियें. तेमनी (वाचः के०) वाणीयो ते (जयंतु के०) जयवंती वर्तो, अर्थात् उत्कृष्टी वर्तो. ते वाणीयो केहवी छे? तो के (विश्व के०) जगत्ने विषे अथवा (विश्व के०)

समस्त (जव्यजन के०) जव्यजनरूप (आराम के०) उद्यान तेने सींच वाने (कुल्या के०) पाणीनी नीक तेने (तुल्या के०) तुल्य एवी बे ॥ ५ ॥

हवे चतुर्थ श्रीअजिनंदन जिनने स्तवे बे.

अनेकांतमतांजोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥
दद्यादमंदमानंदं, जगवानजिनंदनः ॥ ६ ॥

अर्थः–(जगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त एवा (अजिनंदनः के०) श्रीअजिनंदन नामा जिन जे बे, ते (अमंदं के०) घणो एवो जे (आनंदं के०) हर्ष तेने (दद्यात् के०) आपो, ते अजिनंद जगवान् केहवा बे? तो के (अनेकांतमत के०) स्याद्वादमतरूप जे (अंजोधि के०) अपरंपार अगाधजलवालो एवो समुद्र, तेना (समुल्लासन के०) रूडो उल्लास करवाने (चंद्रमाः के०) चंद्रमा जेवा बे, अर्थात् जेम चंद्रमा देखी समुद्र वृद्धिने पामे बे, तेम स्याद्वादरूप समुद्र जे बे,ते जगवंतरूपचंद्रमाने जोइ समुल्लास पामे बे ॥ ६ ॥

हवे पांचमा श्रीसुमतिनाथने स्तवे बे.

द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥ जगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वजिमतानि वः ॥ ७ ॥

अर्थः–(सुमतिस्वामी के०) श्रीसुमतिस्वामीनामा (जगवान् के०) जगवान् ते, (वः के०) तमारां (अजिमतानि के०) वांबितोने (तनोतु के०) विस्तारो. ते सुमतिनाथ केहवा बे? तो के (द्युसत् के०) देवताउं, तेना (किरीट के०) मुकुट, तद्रूप जे (शाणाग्र के०) शृंगना खूणा एटले देवताना मुकुटना अग्रजागना खूणा तेणें (उत्तेजित के०) अतिशयतेजवंत कीधी बे (अंघ्रि के०) चरण तेना (नख के०) नख तेनी (आवलिः के०) पंक्ति जेमनी एवा बे ॥ ७ ॥

हवे बघा श्रीपद्मप्रज स्वामीने वंदन करे बे.

पद्मप्रजप्रजोर्देह, जासः पुष्णंतु वः श्रियम् ॥
अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥

अर्थः–(पद्मप्रजप्रजोः के०) स्वामी गर्जगत थवाथी जेमनी माताने रक्तपद्मनी शय्यामां सूवानो दहोलो उत्पन्न थयो, तेमाटें पद्मप्रज कहियें. ते प्रजुनी (देहजासः के०) शरीरसंबंधी जे कांति डे, ते (वः के०) तमारी (श्रियं के०) कल्याणरूप लक्ष्मी जे डे, ते प्रत्यें (पुष्णंतु के०) पोषण करो. हवे ते श्रीपद्मप्रजनी शरीरकांति रक्तवर्णें डे, ते उपर कवि उत्प्रेक्षा करे डे, के (अंतरंगारि के०) अंतरंग शत्रु जे मोहादिक तेमने (मथने के०) मथन करवाने विषे अर्थात् दूर करवाने विषे (कोपाटोपात् के०) कोप जे क्रोध तेनो आटोप जे प्रबलपणुं तेनाथीज (इव के०) जाणे (अरुणा के०) राती थइ होय नहिं ? ॥ ७ ॥

हवे सातमा श्रीसुपार्श्वजिनने नमन करे डे.

श्रीसुपार्श्वजिनेंड्राय, महेंड्रमहितांघ्रये ॥
नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगनाजोगजास्वते ॥ ए ॥

अर्थः–(श्रीसुपार्श्व के०) श्रीसुपार्श्वनामा (जिनेंड्राय के०) श्रीजिनेंड्र तेने (नमः के०) नमस्कार हो, ते सुपार्श्वजिन केहवा डे? तो के (महेंड्र के०) महोटा जे चोशठ इंड्रो, तेमणें (महित के०) पूजित डे, (अंघ्रये के०) चरण जेमनां एवा तथा वली केहवा डे? तो के (चतुर्वर्णसंघ के०) चतुर्वर्ण जे श्रीसंघ एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ते रूप जे (गगन के०) आकाश तेनो (आजोग के०) प्रकाश तेनो विस्तार करवाने (जास्वते के०) सूर्यसमान डे ॥ ए ॥

हवे आठमा श्रीचंड्रप्रज स्वामीने स्तवे डे.

चंड्रप्रजप्रजोश्चंड्र, मरीचिनिचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्ति
मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥

अर्थः–(चंड्रप्रजप्रजोः के०) चंड्रप्रजनामा प्रजुनी (मूर्त्तिः के०) मूर्त्ति एटले शरीर, ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. ते प्रजुनी मूर्त्ति केहवी डे ? तो के (चंड्र के०) चंड्रमानां (मरीचि के०) किरणो, तेमना (निचय के०) समूह तेथकी पण अधिक (उज्ज्वला के०) उज्ज्वल एटले निर्मल एवी डे, तथा वली केहवी डे?

तो के (मूर्त्त के०) मूर्त्तिमंत एवुं जे (सितध्यान के०) शुक्लध्यान, तेणें करीनेज (इव के०) जाणें (निर्मिता के०) निर्माण करी होय नहिं? एवी छे ॥ १० ॥

हवे नवमा श्रीसुविधिजिनने स्तवे छे.

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया॥ अचिं
त्यमाहात्म्यनिधिः,सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥

अर्थः—(सुविधिः के०) श्रीसुविधिनाथ, ते (वः के०) तमोने (बोधये के०) बोधि जे सम्यक्त्व, तेने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. ते श्रीसुविधिनाथ केहवा छे? तो के (कर के०) हाथ, तेहने विषे रहेलुं एवुं (अमल के०) निर्मल (क के०) पाणी तेहनी (वत् के०) पेठें (विश्वं के०) सर्व प्राणीप्रत्यें (केवलश्रिया के०) केवलज्ञानरूप लक्ष्मीयें करी, (कलयन् के०) जाणता एवा तथा (अचिंत्य के०) न चिंतवी शकवा योग्य एहवुं जे (माहात्म्य के०) महोटापणुं तेहना (निधिः के०) निधान छे ॥ ११ ॥

हवे. दशमा श्रीशीतल जिननी स्तुति करे छे.

सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वा
दामृतनिस्यंदी, शीतलः पातु वोजिनः ॥ १२॥

अर्थः—(शीतलः के०) श्रीशीतलनाथनामा (जिनः के०) जिन जे छे, ते (वः के०) तमोने (पातु के०) रक्षण करो, अर्थात् संसारथी रक्षण करो. ते श्रीशीतलजिन केहवा छे ? तो के (सत्त्वानां के०) प्राणीयोने (परम के०) उत्कृष्ट एवो जे (आनंद के०) चित्तप्रसन्नतालक्षण आनंद, तेहनो (कंद के०) अंकूर तेनुं (उद्भेद के०) प्रगट थवुं, तेने विषे (नवांबुदः के०) नवीन मेघसदृश छे. तथा (स्याद्वादामृत के०) अनेकांत शासन ते रूप जे अमृत रस, तेहना (निस्यंदी के०) झरनारा एवा छे ॥ १२ ॥

हवे अग्यारमा श्रीश्रेयांस जिनने स्तवे छे.

भवरोगाऽर्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेय
सश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥

अर्थः–(श्रेयांसः के०) श्रेयांसनामा जिन ते, (वः के०) तमारा (श्रेयसे के०) कल्याणने अर्थे (अस्तु के०) थाओ. हवे ते श्रेयांस प्रभु केहवा छे? तो के (भवरोग के०) संसाररूप रोग तेणें करी (आर्त्तजंतूनां के०) आर्त्त एटले पीडायेला अर्थात् जन्म, जरा अने मरणरूप रोगें करी पीडायेला एवा जंतुओने (अगदंकार के०) वैद्यसमान छे (दर्शनः के०) सम्यक्त्व दर्शन जेमनुं, अथवा दर्शन एटले देखवुं जेमनुं एवा. वली ते केहवा छे? तो के (निःश्रेयस के०) मोक्ष ते रूप (श्री के०) लक्ष्मी तेना (रमणः के०) भरतार एटले स्वामी छे ॥ १३ ॥

हवे बारमा श्री वासुपूज्यजिननी स्तुति करे छे.

विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥
सुराऽसुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥

अर्थः–(वासुपूज्यः के०) श्रीवासुपूज्यनामा जिन, ते (वः के०) तमोने (पुनातु के०) पवित्र करो, एटले तमारां पाप टालो. ते वासुपूज्य केहवा छे? तो के (विश्वोपकारकीभूत के०) विश्वना उपकारभूत एवुं जे (तीर्थकृत्कर्म के०) तीर्थंकरनामकर्म, तेमनी (निर्मितिः के०) निष्पत्ति करी छे जेणें, अर्थात् पंचकल्याणकने विषे सुखना हेतु छे, वली (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादि देवता, तथा (नरैः के०) मनुष्य तेमणें (पूज्यः के०) पूजवा योग्य छे ॥ १४ ॥

हवे तेरमा श्रीविमलजिनने स्तवे छे.

विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥
जयंति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः॥१५॥

अर्थः–(विमलस्वामिनः के०) श्रीविमलस्वामीनी (वाचः के०) वाणीयो जे छे, ते (जयंति के०) जयवंती वर्त्ते छे. ते वाणीयो केहवी छे? तो के (कतकक्षोद के०) कतक फलनुं क्षोद जे चूर्ण, तेनी (सोदराः के०) सरखी छे. अर्थात् जेम कतक फलना चूर्णना योगें पाणी निर्मल थाय छे तेम, (त्रिजगच्चेतोजलनैर्मल्यहेतवः के०) त्रण जगतनां जे चित्त, ते रूप जे जल तेनुं जे निर्मलपणुं करवुं तेनी हेतु छे. एटले जेम कतकफलचूर्णें करी मेलसहित पाणी निर्मल थाय छे, तेम भगवंतनी वाणी

यें करी मेलां थयां एवां जे त्रण जगतनां चित्त, ते निर्मल थाय छे॥१५॥

हवे चउदमा श्रीअनंतजिनने स्तवे छे.

स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंतां वः, प्रयछतु सुखश्रियम् ॥१६॥

अर्थः–(स्वयंभूरमण के०) अंतिमसमुद्र तेनी (स्पर्द्धि के०) स्पर्द्धा करे अर्थात् ते अंतिम समुद्रथकी पण अधिक एवुं (करुणारसवारिणा के०) करुणारसरूप वारि जे जल, तेणें करी युक्त एवा (अनंतजित् के०) अनंतनाथ परमेश्वर छे, ते (वः के०) तमोने (अनंतां के०) नथी अंत जेनो एवी (सुखश्रियं के०) मोक्षस्वरूप लक्ष्मी तेने (प्रयछतु के०) आपो ॥ १६ ॥

हवे पन्नरमा श्रीधर्मनाथजिनने स्तवे छे.

कल्पद्रुमसधर्माण, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥
चतुर्द्धा धर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥

अर्थः–(धर्मनाथं के०) धर्मनाथजिन प्रत्यें (उपास्महे के०) उपासना करियें छैयें, एटले सेवीयें छैयें. ते धर्मनाथ जिन केहवा छे ? तो के (शरीरिणां के०) शरीरधारी प्राणीयोने, (इष्टप्राप्तौ के०) वांछितफलनी प्राप्तिने विषे (कल्पद्रुमसधर्माणं के०) कल्पद्रुम समान छे धर्म जेमनो एवा छे, वली केहवा छे ? तो के (चतुर्द्धाधर्म के०) दान, शील, तप तथा भाव, ते रूप चार प्रकारनो जे धर्म, तेने (देष्टारं के०) देखाडनार एवा छे॥१७॥

हवे शोलमा श्रीशांतिनाथजिनने स्तवे छे.

सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥
मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥

अर्थः–(शांतिनाथजिनः के०) शांतिनाथनामा जिन ते, (वः के०) तमारी एटले भव्यजीवोनी (तमः के०) अज्ञाननी (शांत्यै के०) शांतिने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. हवे ते शांतिनाथ केहवा छे ? तो के (सुधा के०) अमृत तेनी (सोदर के० (सरखी एवी (वाक् के०) वा

णी ते रूप जे (ज्योत्स्ना के०) चंद्रिका तेणें करी (निर्मलीकृत के०) निर्मल कस्यां छे (दिङ्मुखः के०) दिग्वासी जनोनां मुख जेमणें एवां छे, वली (मृगलक्ष्मा के०) मृगनुं छे लक्ष्म एटले चिन्ह जेमनें एवा छे ॥१७॥

हवे सत्तरमा श्रीकुंथुनाथजिनने स्तवे छे.

श्रीकुंथुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ॥
सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१८॥

अर्थः–(श्रीकुंथुनाथोभगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त एवा श्रीकुंथुनाथ भगवान् ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थें (अस्तु के०) थाओ. ते कुंथुनाथ भगवान् केहवा छे ? तो के (अतिशयर्द्धिभिः के०) चोत्रीश अतिशयरूप जे ऋद्धि तेणें करी (सनाथः के०) सहित छे. वली ते केहवा छे ? तो के (सुर के०) वैमानिक देवता (असुर के०) भवनपत्यादिक देवता (नृ के०) मनुष्य तेमना (नाथानां के०) स्वामी जे इंद्र अने उपेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेमना (एकनाथः के०) एकनाथ एवा अर्थात् अद्वितीयपणे नाथ छे ॥ १८ ॥

हवे अढारमा श्री अरनाथजिनने स्तवे छे.

अरनाथस्तु भगवाँ, श्चतुर्थारनभोरविः ॥
चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥२०॥

अर्थः–(भगवान् के०) ज्ञानादि बार अर्थयुक्त, अर्थात् भगशब्दना चउद अर्थ थाय छे. तेमांथी बार अर्थ परमेश्वरने घटे छे माटें अहिं बार अर्थ लेवा. एवा (अरनाथस्तु के०) अरनाथनामा जिन, ते (वः के०) तमोने (चतुर्थपुरुषार्थ के०) चोथो पुरुषार्थ जे मोक्ष, तेहनी (श्री के०) लक्ष्मी तेनो (विलासं के०) भोगविलासने (वितनोतु के०) विस्तारो. ते अरनाथ भगवान् केहवा छे ? तो के (चतुर्थार के०) चोथो आरो ते रूप (नभः के०) आकाश तेने विषे (रविः के०) सूर्यसमान छे ॥२०॥

हवे उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथजिनने स्तवे छे.

सुराऽसुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्मद्रू
न्मूलने हस्ति,मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥

अर्थः–(मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथप्रत्यें (अभिष्टुमः के०) स्तवना करियें ठैयें. ते श्रीमल्लिजिन केहवा ठे? तो के (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) जवनपत्यादि तथा (नर के०) मनुष्य, तेहना (अधीश के०) इंद्र, उपेंद्र, चक्रवर्त्यादिक, तेरूप जे (मयूर के०) मोर तेहने उल्लास करवाने (नववारिदं के०) नवीन आषाढना मेघसमान ठे. वली ते केहवा ठे ? तो के (कर्म के०) ज्ञानावरणादिक कर्म तेरूप जे (डु के०) वृक्ष तेहना (उन्मूलने के०) उखेडी नाखवाने विषे एटले दूर करवाने विषे (हस्तिमल्लं के०) ऐरावत हस्ती जेवा ठे ॥ २१ ॥

हवे वीशमा श्रीमुनिसुव्रतजिनने स्तवे ठे.

जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥

अर्थः–(मुनिसुव्रतनाथस्य के०) मुनिसुव्रतनाथसंबंधी (देशनावचनं के०) धर्मोपदेशनुं वचन, तेने (स्तुमः के०) स्तवीयें ठैयें. ते देशनावचन केहवुं ठे ? तो के (जगन्महामोह के०) जगत्ने विषे रहेला एवा जे प्राणीयो तेनो जे महामोह ते रूप जे (निद्रा के०) निद्रा, तेने दूर करवाने (प्रत्यूषसमयोपमं के०) प्रजातकालनी उपमा ठे जेहने एवुं ठे, अर्थात् जेम प्रजातमां उंघथकी जागीयें ठैयें, तेम प्रजुना उपदेशरूप प्रजातथकी अज्ञानरूप निद्रानो त्याग करी जागीयें ठैयें ॥ २२ ॥

हवे एकवीशमा श्रीनमिनाथजिनने स्तवे ठे.

लुठंतोनमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ॥
वारिप्लवा इव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥२३॥

अर्थः–(नमेः के०) श्रीनमिनाथ जे ठे तेमना (पादनखांशवः के०) पाद जे पग तेना जे नख तेनां अंशु जे किरणो ते, तमारुं (पांतु के०) रक्षण करो, अर्थात् नमिनाथना चरणना नखनां जे किरणो ठे,ते रक्षण करो. ते चरणनखांशु केहवा ठे ? तो के (नमतां के०) नमस्कार करता एवा जे प्राणीयो तेमना (मूर्ध्नि के०) मस्तकने विषे (लुठंतः के०) लुठायमान, तथा वली केहवा ठे ? तो के (निर्मलीकारकारणं के०) निर्मल एटले पा

परहितपणाना कारण एटले हेतुजूत बे.आहिं वंदन करनार प्राणीना मस्त क उपर जगवंतना पादनखनी कांति पडे बे तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे बे के (वारिप्लवाइव के०) वारि जे जल तेना प्रवाहज जाणीयें होय नहिं? ॥ २३ ॥

हवे बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि जिनने वंदन करुं बे.

यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरि
ष्टनेमिर्जगवान्, जूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥२४॥

अर्थः–(अरिष्टनेमिः के०) अरिष्टनेमिनामा (जगवान् के०) जग वान्; ते (वः के०) तमारा (अरिष्टनाशनः के०) अरिष्ट जे उपद्रव, तेने नाश करनार एवा (जूयात् के०) थाउ. ते अरिष्टनेमि केहवा बे? तो के (यदुवंश के०) यादववंश तद्रूप जे (समुद्र के०) समुद्र, तेने उल्लास पमाडवाने (इंदुः के०) चंद्रमासदृश बे. वली ते केहवा बे? तो के (कर्म के०) कर्म जे ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्म, तद्रूप (कक्ष के०) कक्ष जे वनखंम तेने विषे (हुताशनः के०) अग्निसमान बे. अर्थात् शु क्लध्यानानलें करी सर्व कर्म जस्म कस्यां बे जेणें एवा बे ॥ २४ ॥

हवे त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथ जिनने स्तवे बे.

कमठे धरणींद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रजुस्तु
ल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥२५॥

अर्थः–(पार्श्वनाथः के०) श्रीपार्श्वनाथ, ते (वः के०) तमारी (श्रिये के०) ज्ञानादि लक्ष्मी तेने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते श्रीपार्श्व नाथ केहवा बे ? तो के (कमठे के०) कमठनामें पूर्वजवनो वैरी एवो जे मेघमाली देवता तेने विषे, (च के०) वली (धरणींद्र के०) पार्श्वनाथ प्रजुयें बलतो उगास्यो एवो जे सर्प, ते मरीने धरणींद्र थयो ते धरणीं द्रने विषे, (तुल्यमनोवृत्तिः के०) तुल्य बे मननी वृत्ति जेमनी एवा बे. वली ते कमठ तथा धरणींद्र केहवा बे? तो के (स्वोचितं के०) पोताने योग्य एवुं (कर्म के०) कर्म तेने (कुर्वति के०) करे बे. अर्थात् पोत पोतानुं उचित कर्म करे बे. जेम के कमठ बे,ते उपसर्ग करे बे,अने धर णींद्र बे,ते उपसर्ग निवारे बे,पण श्रीपार्श्वनाथ बे ते समदृष्टिवाला बे, पर जावमां वर्त्तता नथी. वली केहवा बे ? तो के (प्रजुः के०) समर्थ बे ॥२५॥

हवे चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने स्तवे छे.

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥
महानंदसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥२६॥

अर्थः—(अर्हते के०) अरिहंत एवा (वीरनाथाय के०) श्रीमहावीर स्वामी तेमने (नमः के०) नमस्कार थाउं. ते अरिहंत केहवा छे? तो के (श्रीमते के०) केवल ज्ञानरूप छे धन जेने तथा वली केहवा छे? तो के (अद्भुतश्रिया के०) आठ महाप्रातिहार्य तथा चोत्रीश ततिशयादिक जे अद्भुत लक्ष्मी तेणें करीने (सनाथाय के०) सहित छे. वली केहवा छे ? तो के (महानंद के०) महानंदरूप (सरः के०) सरोवर तेने विषे क्रीडा करवाने (राजमरालाय के०) राजहंस नामा पक्षीनी तुल्य छे ॥ २६ ॥

जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २७ ॥

अर्थः—(विजितान्यतेजाः के०) विशेषें करी जींत्युं छे अन्यनुं तेज जे णें अने (सुराऽसुराधीश के०) सुर अने असुर, तेना जे इंद्रो तेमणें (से वितः के०) सेवेला छे जेमने, तथा वली केहवा छे? तो के (श्रीमान् के०) केवल ज्ञानरूपलक्ष्मीवंत छे. वली केहवा छे ? तो के (विमलः के०) नि र्मल छे, तथा (त्रासविरहितः के०) सप्तभयरूप त्रास ते थकी विशेषें करी रहित छे, तथा वली केहवा छे? तो के (त्रिभुन के०) त्रण भुवनने विषे (चूडामणिः के०) मुकुटसमान छे. एवा (भगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त प्रभु ते, (जयति के०) जयवंता वर्त्ते छे ॥ २७ ॥

वीरः सर्वसुराऽसुरेंद्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो, वीरे
श्रीधृतिकीर्त्तिकांतिनिचयः,श्रीवीर! भद्रं दिश॥२८॥

अर्थः—(सर्व के०) समग्र (सुर के०) वैमानिक देवता अने (असुर

के०) जवनपत्यादिक देवता, तेमना जे (इंद्र के०) इंद्रो ठे,तेमणें (महितः के०) पूजित एवा ठे, वली वीर जगवान् केहवा ठे? तो के (वीरः के०) वीरस्वामी ठे, अर्थात् वीर जेमनुं नाम ठे अने ए पूर्वोक्त विशेषणें युक्त जे (वीरं के०) वीरस्वामी ते प्रत्यें (बुधाः के०) पंमितो, (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला ठे. तथा (वीरेण के०) वीरस्वामीयें (स्वकर्मनिचयः के०) पोताना कर्मनो निचय जे समुदाय, ते (अजिहतः के०) समस्तप्रकारें हण्यो ठे. एवा (वीराय के०) वीरस्वामीने (नित्यं के०) निरंतर (नमः के०) नमस्कार थाउं. तथा (वीरात् के०) वीरथकी (इदं के०) आ (तीर्थ के०) प्रत्यक्ष चतुर्विधसंघरूप तीर्थ अथवा द्वादशांगीश्रुतरूप तीर्थ, (प्रवृत्तं के०) प्रवर्त्युं ठे. ते तीर्थ केहवुं ठे? तो के (अतुलं के०) नथी उपमा जेने एवुं ठे, तथा (वीरस्य के०) वीर जगवाननुं (तपः के०) तप ते (घोरं के०) कायर प्राणीयें आचरवुं घणुं कठिन ठे, तथा (वीरे के०) श्रीवीरस्वामीने विषे(श्री के०) केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, तथा (धृति के०) धैर्य, (कीर्त्ति के०) कीर्त्ति तथा (कांति के०) अद्भुतरूप, तेनो (निचयः के०) समूह ते वर्त्ते ठे, एवा (श्रीवीर के०) हे श्री वीर स्वामिन्! तमो (जद्रं के०) कल्याणप्रत्यें (दिश के०) आपो ॥ २८ ॥

हवे सर्व जिनचैत्यने नमन करवाने कहे ठे.

अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमानां,वरजुवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरजुवनानां जावतोऽहं नमामि ॥२९॥

अर्थः–(अवनितलगतानां के०) पृथ्वीना तलने विषे रहेलां एवां (कृत्रिमाऽकृत्रिमानां के०) कृत्रिम एटले करेलां अने अकृत्रिम एटले नहिं करेलां एटले अशाश्वतां अने शाश्वतां एवां जे चैत्य, तथा (दिव्यवैमानिकानां के०) वैमानिक देवो अने जवनपति व्यंतरादिक देवो, तेनां (वरजुवन के०)श्रेष्ठघर तेने विषे (गतानां के०) रह्यां एवां, तथा (इह के०) आ मनुष्यलोकने विषे (मनुजकृतानां के०) मनुष्य जे जरतादिक राजा प्रमुख तेमणें करावेलां एवां अने जेमने (देवराजार्चितानां के०) देवताना राजा जे

इंद्र तेणें अर्चित एटले पूजित कस्या एवा (जिनवर के०) सामान्य केवली, तेने विषे प्रधान एवा जे श्रीतीर्थंकर, तेमनां (जुवनानां के०) जुवन जे चैत्य एटले जिनप्रतिमाउं ठे, तेमने (जावतः के०) जावथकी (अहं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं बुं ॥ २ए ॥

सर्वेषां वेधसामाद्य,मादिमं परमेष्ठिनम् ॥ देवा
धिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥

अर्थः—(सर्वेषां के०) सर्व एवा (वेधसां के०) ज्ञाता पुरुषो ते मध्यें (आद्यं के०) प्रथम मुख्य एवा तथा (आदिमं के०) आदिम (परमेष्ठिनं के०) परमेष्ठिरूप एवा तथा (देवाधिदेवं के०) देवताउंना देव जे इंद्र तेना पण देव एवा तथा (सर्वज्ञं के०) सर्व पदार्थने जाणनारा एवा, (श्रीवीरं के०) श्रीवीर जगवान् तेमनुं (प्रणिदध्महे के०) प्रकर्षें करी ध्यान करीयें ठैयें ॥ ३० ॥

देवोऽनेकजवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो, देवः
सिद्धिवधूविशालहृदयाऽलंकारहारोपमः ॥ देवो
ऽष्टादशदोषसिंधुरघटानिर्जेदपंचाननो, जव्यानां
विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥

अर्थः—(श्री वीतरागः के०) श्रीवीतराग एवा (जिनः के०) जिन ते, (जव्यानां के०) जव्यजीवोने (वांछितफलं के०) वांछित एवा फलने (विदधातु के०) आपो. ते (देवः के०) वीतराग देव केहवा ठे? तो के (अनेक के०) अनेक एवा (जव के०) जवकोडाकोडीने विषे (अर्जित के०) संचेलां अने (ऊर्जित के०) घणां एवां जे (महापाप के०) महोटां पाप, तेने (प्रदीप के०) प्रकर्षे करी बालवाने अर्थें (अनलः के०) अग्निसमान ठे, वली ते केहवा ठे? तो के (देवः के०) देव ठे, एटले प्रकाशयुक्त ठे, तथा वली केहवा ठे? तो के (सिद्धिवधू के०) मोक्षरूप जे स्त्री, ते संबंधी (विशालहृदय के०) विशाल हृदय तेने विषे (अलंकारहारोपमः के०) अलंकारहारनी उपमा ठे जेमने एवा ठे., वली (देवः के०) देव केहवा ठे? तो के (अष्टा

दशदोष के०) अढार दोष तद्रूप जे (सिंधुरघटा के०) गजघटा तेहने (निर्भेद के०) भेदवाने (पंचाननः के० (केसरी सिंह समान छे ॥ ३१ ॥

ख्यातोऽष्टापदपर्वतोगजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमा
न् रैवतकःप्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंरूपः ॥ वैभारः कन
काचलोऽर्बुदगिरिःश्रीचित्रकूटादय,स्तत्र श्रीऋषभादयो
जिनवराः कुर्वंतु वोमंगलम् ॥ ३२ ॥ इति ॥ ५२ ॥

अर्थः–(ख्यात के०) प्रख्यातवंत एवो, (अष्टापदपर्वतः के०) अ ष्टापद पर्वत, तथा (गजपदः के०) गजपद पर्वत, वली (सम्मेतशैलाभि धः के०) सम्मेतशिखरनामा पर्वत, तथा (श्रीमान् के०) लक्ष्मीवंत एवो (रैवतकः के०) रेवताचल ते गिरनार पर्वत, तथा (प्रसिद्धमहिमा के०) प्रसिद्ध छे महिमा जेनो एवो (शत्रुंजयो मंरूपः के०) श्रीसिद्धगि रिमंरूप पर्वत, वली (वैभारः के०) वैभार पर्वत, तथा (कनकाचलः के०) मेरुपर्वत, तथा (अर्बुदगिरिः के०) आबू पर्वत, तथा (श्रीचित्र कूटादयः के०) श्रीचित्रकूटादिक पर्वतो जे छे (तत्र के०) तेने विषे (श्रीऋष भादयः के०) श्रीऋषभादिक (जिनवराः के०) जिनवरो छे, एटले सामान्य केवलीने विषे प्रधान एवा तीर्थंकरो छे, ते (वः के०) तमारुं (मंगलं के०) कल्याण तेने (कुर्वंतु के०) करो ॥ ३२ ॥ इति सकलार्हत्संपूर्णम् ॥५२॥

॥ अथ श्रीश्रावकपाक्षिकादिसंक्षेपातिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउं ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रा चार, तपाचार, वीर्याचार. ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे को अति चार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुउं हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्र तडुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान का लवेलायें भण्यो, गण्यो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हें भणी, अनेरो गुरु कह्यो. देववंदन वांदणें, पडिक्कमणे, सज्झाय कर

तां, ज्ञणतां, गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हा मात्रे, आगलो उंडो जण्यो सूत्र अर्थ बेहू कूडा कह्या, साधु तणे धर्मे काजो मांको, अणपडिलेह्यां. काजो अण उद्धरिउं, असज्झाइ अणोझामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जण्यो गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, पडिक्कमणासूत्र, उपदेशमाला प्रमुख कालवेला काजो अणउद्धरियें पढियो ज्ञानद्रव्य जक्षित, उपेक्षित प्रज्ञापराध विणासियो, विणसतां उवेखियो. सार संजाल न कीधी तथा ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी वही, उंलियाप्रत्यें पग लागो, थूंक लागो, थूंके करी अक्षर मांज्यो, कन्हे ठते आहार निहार कीधो, ज्ञानवंतप्रत्यें द्वेष, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी. आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १ ॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढ दिठ्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं. तपोधन तपोधनी प्रत्यें मलमलिन गात्र देखी डुगंठा कीधी. मिथ्यात्वी तणी पूजाप्रजावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अजक्ति कीधी. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य, जक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो. विणसतो उवेख्यो. ठती शक्तियें सार, संजाल न कीधी, तथा साधर्मिकशुं कलहकर्मबंध कीधो. अधोती अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी. वासकूंपी, धूपधाणुं, कलश तणो ठवको लागो, देहरा पोसालमांहि मलश्लेष्म लूह्यां. हास्य, केलि, कुतूहल कीधां. जिनजुवनें चोराशी आशातना गुरुप्रत्यें तेत्रीश आशातना. ठवणहारी हाथथकुं पड्युं, पडिलेहवुं विसार्युं. गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्ज्युं नहीं ॥ दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

चारित्राचार आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥४॥ ईर्यासमिति, जाषासमिति, एषणासमिति, आदानजंडनिक्खेवणासमिति, पारिठा

वणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचन माता तणे धर्मे, सदैव साधु श्रावक तणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडी पेरें चिंतव्युं नहीं. खंरूण, विराधना कीधी ॥ चारित्राचार व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बारव्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिन्हा० ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥१ ॥ आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रजाव देखी रोग आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या. बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, जरडा, जगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेराइ दर्शनीयानां कष्ट मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण जूलाव्या. मोह्या, कुशास्त्र शीख्यां. सांजल्यां. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माहीपूनम, आजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विणायगचोथ, नागपंचमी, जिल्लणा छठ, शीयलसतमी, ध्रुवअष्टमी, नोली नवमी, अहवदशमी, व्रत इग्यारसी, वत्स बारसी, धनतेरसी, अनंत चौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायन, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या. पींपले पाणी रेड्यां, रेडाव्यां. घर बाहिर, कूइ, तलाव, नदी, द्रह, कुंरू, वाव्य, समुद्रें, पुण्यहेतु स्नान कीधां ॥२॥ वितिगिन्हाः—धर्मसंबंधीयां फलतणो संदेह कीधो. जिनअरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी पूज्या नहिं. इहलोक परलोक संबंधीया जोगवांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या. महात्माना जात, पाणी, मलशोजा तणी निंदा कीधी ॥३॥ प्रीति मांमी ॥४॥ तेहनी दाक्षिण लगें, तेहनो धर्म मान्यो ॥ ५ ॥ श्रीसम्यक्त्व व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अ० प० ॥ ४ ॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्यें रीषवशें गाढो घाव घाल्यो. गाढ बंधन बांध्युं, घणे जारे पीड्यो, निर्लांछण कर्म कीधुं, चारा पाणी तणी वेलायें सार संजाल न कीधी. लेणे, देणे कुणहने उंढयुं, लंघायुं, तेणें जूखें आपण जम्या, शल्यां धान्य रूडी पेरें जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोल्युं, जीवाणी

शूकव्युं, गलतां ऊालक नाखी, गलणुं रूडुं न कीधुं. इंधण, ठाणां, अणशो ध्यां बाल्यां. तेमांही साप, खजुरा, विंछी, सरोला, मांकड, जूवा, गींगोडा साहतां मूआ, डुहव्या, रूडे स्थानकें न मूक्या कीडी, मंकोडी, उदेही, घी मेल, कातरा, चुडेल, पतंगीया, देडकां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, विणसतां उवेख्या, चांप्या, दुहव्या, हलावतां, चलावतां, पाणी ढांटतां, अनेराइ काम काज करतां, निर्ध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी ॥ पहेले स्थूलप्राणातिपातव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥५॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्स दारे० ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्यें अयुक्त आल दीधुं. स्वदारामंत्रन्नेद कीधो. अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी, कूडो लेख लख्यो, जूठी साख न्नरी, थापणमोसो कीधो. कन्या, ढोर, न्नूमि संबंधिया लेहणे, देहणे, वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या ॥ बीजे स्थूलमृषावादव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ० ॥पक्ष्दि०॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउंगे ० ॥ घर बाहिर, खेत्र, खले, परायुं अणमोकल्युं लीधुं, वावर्युं, चोराइ वस्तु लीधी, चोर प्रत्यें संबल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं. कूडां मान, माप कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. नवा जुना सरस नीरस वस्तु तणा न्नेल संन्नेल कीधा ॥ त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर० ॥ अपरिगृहीतागमन कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, कामन्नोगतणे विषे अति अन्निलाष कीधो, दृष्टिविपर्यास कीधो, आठम, चउदश तणा नियम लेइ न्नांग्या. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ ॥ चोथे मैथुनविरमणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू० ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरंत रखाव्युं. सोनुं, रूपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विसार्युं ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ९ ॥

छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे०॥ उर्द्ध दिशें, अहोदिशें, तिर्यग्दिशें, जावा आववा तणा नियम लेइ नांग्या. एक दिशि संक्षेपी, बीजी दिशि वधारी. विस्मृत लगें अधिक नूमि गया. पाठव णी आघी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकालें गामतरुं कीधुं ॥ छठे दिग्विरमण व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १० ॥

सातमे नोगोपनोगव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे ० ॥ सचित्तआ हारे, सचित्त प्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहिनरकणया, डुप्पोलसहिन रकणया, तुछोसहिनरकणया, सचित्तनरकणया, अपकाहारे, डुःपकाहारे तुछऔषधि कुली आंबली, उंला, उंबी, पहोंक, पापडी तणां नक्षण कीधां, अनंतकाय, अथाणां तणां नक्षण कीधां तथा रींगण, विंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, महूडां, वडबोर प्रमुख बहुबीज तणां नक्षण कीधां ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण वि लेवण, बंन दिसी नाणनत्तेसु ॥ १ ॥

ए चउद नियम दिनप्रत्यें लीधा नहीं, लेइ संक्षेप्या नहीं, सचित्तद्रव्य, विगय, खासडां, वाहन, तंबोल, फोफल, वेसण, शयन, पाणी, अंघोल णे, फल, फुल, नोजन, आछादनें, जे कोइ नियम लेइ नांग्या. बावीश अनक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आदूं, मूला, गाजर, पींरू, पींमालु, क चुरो, सूरण, खिलोडां, मोरड, सेलरां, कुंली आंबली, वाधरडां, गिरमर, नीली गलो, वाल्होल खाधी. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवस ना उदन, मधु, महुडां, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुंदां, बोर, अथाणुं, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां. लगबग वेलायें वालू कीधां. दिन उग्या विण शीराव्या. जे कोइ अनेरो अतिचार हुउ होय ॥ तथा कर्मतः इंगालकम्मे, वणकम्मे साडीकम्मे, नाडीकम्मे फोडी कम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लख्कवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवा णिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असईपोसणया ॥ ए पांच सामा न्य, ए पन्नरकर्मादानमांहि कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरां कांइ सावद्य कर्म समाचर्यां होय ॥ सातमे नोगोपनोग व्रतविषइयो अनेरो० ॥ प०॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंडव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ अनर्थ दंड

जे कहियें, काम काज पाखें मुधा पाप लाग्यां. मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी, निरर्थक लोकने कर्षण, गामां वाही, ग्रामांतरें कमावानी बुद्धि दीधी. कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां. अनेराइ पापोपदेश दीधा. कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मूशल, घर, घंटी प्रमुख सज्ज करी मेल्यां. माग्यां आप्यां. अंघोल नाहणे, पगधोयणें, खालें पाणी ढोल्यां. अथवा ऊीलणां ऊील्यां, जूवटुं रम्या, नाटक पेखणां जोयां, पुरुष स्त्रीना रूप, शृंगार वखाण्या. राजकथा, देशकथा, जक्तकथा, स्त्रीकथा, पराइ तांत कीधी. कर्कश वचन बोल्या, संजेडा लगाड्या. शरज, कूकडा प्रमुख जूऊता जोया. कलह करता जोया, खोक तणी उपार्जना कीधी, सुखकीर्त्ति देश लइ चिंतवी. लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविण चांप्या. ते उपरें बेठा, आली वनस्पति चूंटी, अंगीठा काष्ठ वणिज कीधां. ढाश पाणी, घी, तेल, गोल, आम्लवेतस, वेरंजा तणां जाजन उघाडां मह्लेल्यां. तेमां हे कीडी, मंकोडी, कुंथुआ, उदेही, घीमेल, घिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा. शूडा, सालही, क्रीडाहेतु पांजरे घाल्या ॥ अनेराइ जीवने राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांठी. एकने मृत्युहाणी वांठी ॥ आठमे अनर्थदंमव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिकमांहि मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. ठती शक्तियें सामायिक लीधो नहीं, उघाडे मुखें बोल्या, सामायिकमांहि उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी, विकथा कीधी. कण, कपाशिया, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ. मुहपत्ती संघट्टी, सामायिक अण पूगे पार्यो, पारवो विसार्यो ॥ नवमे सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाई, वहियापुग्गलखेवे ॥ नीमी जूमिकामांहिथी बाहिर अणाव्युं. आपण कन्हेथी बाहिर मोकल्युं, शब्द संजलावी, रूप देखाडी, कांकरो नाख्यो. आपणपणुं ठतुं जणाव्युं. पुद्गलतणो प्रक्षेप कीधो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रतविषइयो अनेरो० प० ॥१४॥

अग्यारमे पौषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ पो

सह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरलां थंडिलां संदीसे रूडां शोध्यां नहीं. पडिलेह्यां नहीं. थंडिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न कीधी. 'अणुजाणह जस्सुग्गो' न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरे, वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहे पेसतां, निसरतां,निसहि आवस्सहि कहेवी विसारी. पुढवी, अप्, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप,उपद्रव कीधा. संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो,अविधियें संथार्या. पारणादिक तणी चिंता निपजावी. कालवेलायें देव न वांद्या. पोसह असूरो लीधो, सवारो पार्यो, पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ अग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छतां असूजतुं दान दीधुं. वहोरवा वेला टली रह्यां मत्सर लगें दान दीधुं. देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अण कहे दीधी,अथवा आपणी करी दीधी. अणदेवातणी बुद्धें सूझतुं फेडी,असूझतुं कीधुं. गुणवंत आवे भक्ति न साचवी. अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तें उद्धर्यां नहीं. दीन, खीनप्रत्यें अनुकंपा दान दीधुं नहीं. देतां वार्युं ॥ बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १६ ॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे. इहलोकें धर्मतणा प्रभाव लगें राजऋद्धि भोग वांछ्या. परलोकें देव,देवेंद्र चक्रवर्त्तीतणी पदवी वांछी. सुख आवे जीववा तणी वांछा कीधी. दुःख आवे मरवा तणी वांछा कीधी. काम भोगतणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १७ ॥

तपाचारना बार भेद ॥ छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोअरिया०॥ अणसण भणी उपवासादिक पर्वतिथि तप न कीधुं. ऊणोदरी बे चार कवल ऊणा न उछ्या, द्रव्य भणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो. रसत्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादि कष्ट कर्यां नहीं. संलीणता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं, पच्चक्खाण भांग्यां, पाटलो डगतो फेडयो नहीं, गंठसही पच्चक्खाण भांग्युं, उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी घाल्युं, विमन हुउं ॥ बाह्यतपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प०॥१८॥

अभ्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणउं० ॥ सूधुं प्रायछित्त पडिवज्ज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधी टीप कीधी नहीं, सूधो तप पहोंचाड्यो नहीं, साते भेदें विनय न कीधो, दश भेदें वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्झाय न कीधो, कषाय वोसराव्यो नहीं, दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्मध्यान, ध्यायां नहीं. आर्त्त, रौद्र, ध्यान ध्यायां ॥ अभ्यंतर तप व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो० ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरियो० ॥ मनोवीर्य, धर्म ध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो. पडिक्कमणें देवपूजा धर्मानुष्ठान, दान, शील तप, भावना, छती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न कीधो, वेठां पडिक्कमणुं कीधुं, रूडां खमासमण न दीधां ॥ वीर्याचार विषइउ अनेरो० ॥२०॥

पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनंतकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य. ए अढार पापस्थानकमांहे कीधां कराव्यां, अनुमोद्यां हुए, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥२१॥

एवंकारें साधु श्रावकतणें धर्मे सम्यक्त्वमूल बार व्रत, एकशो चोवीश अतिचार पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुवो हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ २२ ॥ इति ॥ ५३ ॥

॥ अथ श्रावकपाक्षिकादिविस्तारातिचार प्रारंभः ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणियो ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे भणिउं गुणीउं नहीं, अकालें भण्यो. विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वांदणे पडिक्कमणे सज्झाय करतां, भणतां गुणतां. कूडो अक्षर काने

मात्रें अधिक ओछो जण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ कूडो कह्यो, तदुजय कूडां कह्यां. जणीनें विसाऱ्यां. साधु तणे धर्मकाजें काजो अणउद्धरये, मांडो अणपडिलेहे, वस्ती अणशोधे, अणपवेसे, असज्झाय, अणोज्झायमांहे श्रीदशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जण्यो, गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत जण्यो, गुण्यो, कालवेला काजो अणउद्धरये पढियो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडां, सांपडी, दस्तरी, वही, ओलियाप्रमुख प्रत्यें पग लाग्यो, थूंक लाग्यो थूंकें करी अक्षर मांज्यो, ओशीशें धऱ्यो. कन्हें छतां आहार निहार कीधो. ज्ञानद्रव्य जक्षतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधें विणसतों विणाश्यो. विणसतो उवेख्यो, छती शक्तियें सार संजाल न कीधी. ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष मत्सर चिंतव्यो, अवज्ञा, आशातना कीधी. कोईप्रत्यें जणतां, गुणतां, अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी. कोइ तोतडो, बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचारव्रतविषइउ अनेरो जे० ॥ पक्ष० ॥ १ ॥

दर्शनाचारें आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूहथिरीकरणे, वछलप्पजावणे अठ ॥३॥ देव, गुरु, धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्मसंबंधिया फलतणेविषे निःसंदेहबुद्धि धरी नहिं. साधु, साधवीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा निपजावी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर अजाव हुउ. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रजावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं, तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अजक्ति निपजावी. अबहुमान कीधो. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य, जक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधें विणाश्युं. विणसतां उवेख्युं, छती शक्तियें सार, संजाल न कीधी; तथा साधर्मिकसाथें कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपडमुखकोश पाखें देवपूजा कीधी, बिंबप्रत्यें वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उश्वास, निःश्वास लाग्यो. देहरे, उपाशरे, मलश्लेष्मादिक लूह्यां. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधा. पान सोपारी निवेदियां

खाधां.ठवणहारि हाथथकी पाडी. पडिलेहवुं विसार्युं,जिनजुवनें चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशातना कीधी होय.गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहिं॥दर्शनाचार व्रतविषइउं अनेरो जे कोइ अति० ॥ २ ॥

चारित्राचारें आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ ईर्यासमिति, ते अणजोये हिंम्या. जाषासमिति, ते सावद्यवचन बोल्या. एषणासमिति, ते तृण मगल अन्न, पाणी असूझतुं लीधुं.आदानजंमत्तनिक्खेवणासमिति, ते अशन, शयन, उपगरण, मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुलजूमिकायें मूक्युं, लीधुं. पारिष्ठापनिकासमिति, ते मलमूत्र,श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलजूमिकायें परठव्युं. मनोगुप्ति, मनमां आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्यायां. वचनगुप्ति, सावद्यवचन बोल्या. कायगुप्ति, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. अणपूंजे बेठा. ए अष्ट प्रवचनमाता, ते सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरें पाल्यां नहीं. खंमणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचारव्रतविषइउं अनेरो जे कोइ० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रत सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार ॥संकाकंखविगिच्छा० संकाः—श्रीअरिहंततणां बल.अतिशय ज्ञानलक्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु,महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता,गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह,इत्येवमादिक देश,नगर, गाम, गोत्र,नगरी, जूजूवा देवदेहेरांना प्रजाव देखी, रोग आतंक कष्ट आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या;मान्या. सिद्ध विनायक, जीराउलाने मान्युं;इच्छयुं, बौद्धसांख्यादिक, संन्यासी जरडा,जगत,लिंगीया,जोगिया,जोगी दरवेश,अनेरा दर्शनियातणो कष्ट, मंत्र,चमत्कार देखी,परमार्थ जाण्या विना जूलाव्या; मोह्या. कुशास्त्र शिख्यां; सांजल्यां. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माहिपूनेम. अजा पडवो, प्रेतबीज, गौरी त्रीज, विनायक चोथ, नागपंचमी, झिलणा उठी, शील सातमी,ध्रुव आठमी,नोली नोमी,अहवा दशमी,व्रत इग्यारसी,वत्स बारसी, धन तेरसी,अनंत चउदसी, अने अमावास्या,आदित्यवार,उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, नवोदक याग, जोग, उतारणां कीधां, कराव्यां. अनुमोद्यां. पिंपले

पाणी घाल्यां, घलाव्यां. घर बाहिरें क्षेत्रें खले, कूवे, तलावें, नदीयें, द्रहें वावें, समुद्रें, कुंडें, पुण्यहेतु स्नान कीधां कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां॥ ग्रहण, शनिश्चर, माहामासें नवरात्रि नाहाया, अजाणनां थाप्यां ॥ अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां॥ वितिगिञ्छाः—धर्मसंबंधीया फलतणे विषे संदेह कीधो, जिनअरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी न मान्या, न पूज्या. महासती माहात्मानी इह लोक, परलोकसंबंधिया जोगवांछित पूजा कीधी. रोग, आतंक, कष्ट आवे, खिन्न वचन जोग मान्या. महात्माना जात, पाणी, मलशोजा तणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुजाव हुउं. मिथ्यात्वी तणी पूजा, प्रजावना देखी प्रशंसा कीधी. प्रीति मांमी. दाक्षिण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो, श्रीसम्यक्त्वविषइउं अनेरो जे कोइ अतिचारपक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ०॥४

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए०॥ द्विपद, चतुष्पदप्रत्यें रीशवशें, गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधनें बांध्यां, अधिक जार घाल्यो, निर्लंछन कर्म कीधां, चारा पाणी तणी वेलायें सार, संजाल न कीधी, लेहणे, देहणे, किणहीप्रत्यें लंघाव्यो, तेणें जूखें आपण जम्या, कन्हें रही मराव्यो, बंधीखाने घलाव्यो, शल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दलाव्यां, जरडाव्यां, शोधी न वावर्यां, इंधण, छाणां, अणशोध्यां बाल्यां, तेमांहे साप, विंछी, खजूरा, सरवलां, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ, डुहव्या, रूडे स्थानकें न मूक्या. कीडी, मंकोडीनां इंमां विछोह्यां. लीख फोडी, उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरां, चूडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, मांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणठ्या. माला हलावतां, चलावतां, पंखी, चरकलां तथा काग तणां इंमां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणाश्या, चांप्या, डुहव्या. कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांइ काम काज करतां निर्ध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी. संखारो शूकव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं. अणगल पाणी वावर्युं. रूडी जयणा न कीधी. अणगल पाणीयें झीव्यां, लूगडां धोयां, खाटला तावडे नाख्या, झाटक्या. जीवाकूलजूमि लींपी वाशी गार राखी. दलणे, खांमणे, लींपणे, रूडी जयणा न कीधी. आछम

चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहेले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहे हुवो हुइ०॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सारहस्सदारे०॥ सहसात्कारें कुणहीप्रत्यें अजुगतुं आल, अन्याख्यान दीधुं. स्वदारामंत्रभेद कीधो. अनेरा कुणहीनो मंत्र आलोच, मर्म प्रकाश्यो. कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लख्यो, कूडी साख भरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, भूमि संबंधी लहेणें, देहेणें, व्यवसाय वाद वढवाड करतां मोटकुं भूठुं बोल्या. हाथ, पग तणी गाल दीधी, करकडा मोड्याः मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउ अने० ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउगे० ॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी, चोराइ वस्तु वहोरी, चोरधाडप्रत्यें संकेत कीधो. तेने संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी, विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो. नवा, पूराणा, सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा. कूडे काटले, तोलें, मानें, मापें, वहोर्यां. दाणचोरी कीधी. कुणहीने लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो- परवंचना कीधी. पासंग कूडा कीधा. दांडी चढावी. लहके, त्रहके कूडां काटलां, मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, कलत्र वंची कोइने दीधुं. जूदी गांठ कीधी. थापण उलवी. कुणहीने लेखे पलेखे भोलव्युं. पडी वस्तु उलवी लीधी ॥ त्रीजे स्थूलअदत्तादानवि०॥७

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर०॥ अपरिगृहीतागमन ॥ इत्वर परिगृहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेरा पर्वतिथें नियम भांग्या. घरघरेणां कीधां. कराव्यां, वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनंग क्रीडा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणाव्यां. कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुवा, कुस्वप्न लाधां, नट विट, स्त्रीशुं हांसुं कीधुं ॥ चोथा स्वदारासंतोषव्रतविषइउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष०॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धणधन्नखित्तवत्थू०॥ धन, धान्य, खेत्र, वास्तु, रुप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं. लेइने पढिउं नहिं, पढवुं विसार्युं, अलीधुं मेल्युं, नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ए ॥

छठे दिक्परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्स य परिमाणे० ॥ ऊर्ध्व दिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा, आववा तणा नियम लइ नांग्या. अनाजोगें विस्मृत लगें अधिक जूमि गया. पाठवणी आघी पाछी मोकली, वाहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकालें गामतरुं कीधुं. जूमिका एकगमां संक्षेपी, बीजी गमां वधारी॥ छठे दिक्परिमाणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अति० ॥१०॥

सातमे जोगोपजोगविरमणव्रतें जोजन आश्रयी पांच अतिचार अने कर्महूंती पंदर, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं. अपक्काहर, दुःपकार, तुष्छोषधि तणुं जक्षण कीधुं. उला, उंबी, पोंक, पापडी, कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगई, वाणह तंबोल वञ्च कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसी न्हाण जत्तेसु ॥ ए चौदनियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहीं. लेइने नांग्या. बावीश अजक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आडुं, मूला, गाजर, पिंरु, पिंमालु, कचूरो, सूरण, कुली आंबली, गलो तथा वाघरडां खाधां. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं उदन लीधुं. मधु, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुंदां, महोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस तथा कोठिंबडां खाधां. रात्रि जोजन कीधां. लगबग वेलायें वालुं कीधुं. दिवस विण उगे शीराव्या, तथा कर्मतःपन्नर कर्म्मादान॥इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीकम्मे, ए पांच कर्म। दंतवाणिज्जो, लख्कवाणिज्जो, रसवाणिज्जो, केसवाणिज्जो, विसवाणिज्जो. ए पांच वाणिज्ज॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलाय सोसणया, असईपोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पांच कर्म्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य. एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य महारंज, रांगणी, लीहाला कराव्या. इंट, निंजाडा पचाव्या. धाणी, चणा, पकान्न करी वेच्या,

वाशी माखण तपाव्यां, तिल वहोरया. फागुण मास उपरांत राख्यां. दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या. श्वान, बीलाडां, शूडा, सालहि, पोष्या. अनेरा जे कांइ बहुसावद्य खर कर्मादिक समाचर्यां. वाशी गार राखी, लींपणे, घूपणे, महारंज कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गोल तथा ठास तणां जाजन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंती उंदर, के गिरोली पडी. कीडी चडी. तेनी जयणा न कीधी ॥ सातमे जोगोपजोगविरमणव्रत विषइउं० ॥ ११

आठमे अनर्थदंडविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कंदर्पलगें विटचेष्टा. हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव, जाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राजकथा, जक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराइ तांत कीधी, तथा पैशुन्यपणुं कीधुं. आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्यायां. खांडां, कटार, कोश, कुहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घंटी, निसाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली, दाक्षिण्यलगें माग्यां आप्यां, पापोपदेश दीधो. अष्टमी, चतुर्दशीयें खांडवा, दलवा तणा नियम जांग्या. मूरखपणा लगें असंबंध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. अंघोले, नाहाणे, दातणे, पगधोअणे, खेलपाणी तेल ढांल्यां, झीलणे झील्या. जूवटे रम्या हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां, कर्कश वचन बोल्या, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा, करकडा मोड्या, मत्सर धर्यो, संजेडा लगाड्या, शाप दीधा, जेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक जूझार्यां, जूझतां जोया. खादि लगें अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं, कण कपाशीया काज विण चांप्या. ते उपर बेठा. आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक निपजाव्यां. घणी निद्रा कीधी. राग, द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानि वांछी ॥ ए आठमे अनर्थदंडविरमणव्रत विषइउं अने० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्यां, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती वेलायें सामायिक न लीधो. सामायिक लेइ उघाडे मुखें बोल्या. उंघ आवी, वात, विकथा, घर तणी चिंता कीधी, वीजदीवा तणी उजेहि हुइ, कण, कपाशिया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरवेटो पाषाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरिकाय, बीयकाय, इत्यादिक आजड्यां. स्त्री, तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ, मु

हपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे०॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्खेवे॥ नियमित ज्ञूमिकामांहि बाहेरथी कांइ अणाव्युं,आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी, आपणपणुं छतुं जणाव्युं॥ दशमे देशावगाशिक व्रतविषइउं अनेरो जे कोइ अति०॥१४॥

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार॥संथारुच्चारुविहि०॥ अप्पडिलेहिय,डुप्पडिलेहिय, सज्जासंथारए।अप्पडिलेहिय,डुप्पडिलेहिय,उच्चारपासवणज्ञूमि ॥ पोसह लिधे संथारातणी ज्ञूमि न पूंजी, बाहिरलां लहुडां वडां स्थंमिल, दिवसें शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं. मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं, अणपूंजी ज्ञूमिकायें परठव्युं. परठवतां, अणुजाणह जस्सग्गो, न कह्यो. परठव्या पूठें वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. पोसहशालामांहि पेसतां निसिहि, निसरतां आवस्सहि,वार त्रण जणी नहीं. पुढवी, अप्,तेउ, वाऊ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपद्रव हुआ. संथारा पोरिसीतणो विधि जणवो विसार्यो, पोरिसिमांहे उंघ्या, अविधें संथारो पाथर्यो, पारणादिक तणी चिंता कीधी, कालवेलायें देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न कीधुं पोसह असूरो लीधो,सवेरो पार्यो, पर्वतिथें पोसह लीधो नही॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥१५॥

बारमे अतिथिसंविजागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर छतां महात्मा महासतीप्रत्यें असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धें असूझतु फेडी सूझतुं कीधुं. देवानी बुद्धें परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धें आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेला टली रह्यां असूरें करी माहात्मा तेड्या, मत्सर धरी दान दीधुं गुणवंत आवे जक्ति न साचवी, छती शक्तें साहम्मिवात्सल्य न कीधुं अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तियें उद्धर्यां नहिं. दीन, क्षीणप्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं॥ बारमे अतिथिसंविजागव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ०॥१६॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंस

प्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे, कामनो गासंसप्पउंगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रनाव लगें राजरुद्धि, सुख, सौनाग्य, परिवार, वांब्यो. परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर,चक्रवर्त्तीतणी पदवी वांढी, सुख आवे जीवितव्य वांब्युं. दुःख आवे मरण वांब्युं. काम नोगतणी वांग किधी ॥ संलेषणाव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहे हुवो हुइ० ॥ १७ ॥

तपाचारना बार नेद; ढ बाह्य, ढ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोयरिआ०॥ अणसण नणी उपवास विशेष पर्वतिथें ढती शक्तें कीधो नहीं. ऊणोदरीव्रत कोलिया पांच, सात, ऊणा रह्या नहिं. वृत्तिसंक्षेप, ते द्रव्यनणी सर्ववस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं. रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो. कायक्लेश, लोचादिक कष्ट कस्यां नहीं. संलीनता ते अंगोपांग,संकोची राख्यां नहिं, पच्चरकाण नांग्यां.पाटलो रुगतो फेड्यो नहिं. गंठसी पोरिसी,साढपोरिसी,पुरिमढ, एकासणुं, वेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवुं विसाखुं.बेसतां नोकार न नण्यो, उठतां पच्चरकाण करवुं विसाखुं, गंठसीउं नांग्युं, नीवि, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं. वमन हुउं ॥ बाह्यतप विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे० ॥ १८ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायछित्तं विणउं० ॥ मनशुद्धें गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं. गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप, लेखाशुद्धें पहोंचाड्युं नहिं. देव, गुरु,संघ, साहम्मीप्रत्यें विनय साचव्यो नहिं. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं. वांचना, पृढना, परावर्त्तना. अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो. धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां. आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां: कर्मक्षय निमित्तें लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो॥अभ्यंतरतप विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां० ॥१९॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार॥ अणिगूहिअ बलविरीउं०॥ पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, नावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं ढतुं बल, वीर्य,गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न दीधां. वांदणांतणा आवर्त्तविधि साचव्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणे बेठा. उतावलुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं॥ वीर्याचार विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे हुवो होय ते स० ॥ २० ॥

नाणाइ अठ पइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु ॥ बारस तव वि रिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणेः–प्रतिषेध, अजक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजजक्षण, महारंजपरिग्रहादिक कीधां. जीवा जीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहिं. आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोज, राग, द्वेष, कलह, अज्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व शल्य. ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय. दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञाविरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउं होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं

एवंकारें श्रावकतणे धर्में श्रीसमकितमूल बार व्रत, एकशो चोवीश अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां, हुउं होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावक पक्खी चउमासी संवत्सरि अतिचाराः ॥५४॥

॥ अथ ॥

॥ नव स्मरणानि सार्थानि प्रारज्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम सर्वस्मरणमांहे प्रधान, सर्वमंगलमां जावमंगलमय एवा पंच परमेष्ठीनुं नमस्काररूप प्रथम स्मरण छे, ते लखीयें छे.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआ णं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च स व्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

अर्थः–(अरिहंताणं के०) विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (सिद्धाणं के०) सर्वसिद्धने महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (आयरियाणं के०) पंचविध आचारने पाले, एवा श्री आचार्य प्रत्यें महारो (नमो के०) नमस्कार हो. (उवज्झायाणं के०)

प्पज्जे, परलोरक एवा श्री उपाध्याय प्रत्यें महारो (नमो के०) नम गासंसप्पर्दू(लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे (सव्वसाहूणं रिवार, स्थविरकल्पादिक ज्नेदोवाला सर्वसाधुप्रत्यें महारो (नमो के०) सुख.स्कार हो. (एसो के०) ए जे अरिहंतादिक संबंधी (पंचनमुक्कारो के०) पांच नमस्कार बे, एटले ए नमस्कारपंचक जे बे, ते केहवुं बे? तो के (स व्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्वपापप्रत्यें (प्पणासणो के०) प्रकर्षे करी नाशनुं करनार बे, वली ए नमस्कारपंच ककेहवुं बे? तो के (मं गलाणंचसव्वेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य (मंगलं के०) मंगल (हवइ के०) बे. एटले ए ज्नावमंगल बे, ते मोक्षसु खनुं आपनार बे. आनो विस्तारार्थ आज ग्रंथना प्रारंज्नमां लख्यो बे ॥१॥

॥ अथ उवसग्गहरनामकद्वितीयस्मरणप्रारंज्नः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स ग्गहरोगमारी, डुठ जरा जंति उवसामं ॥२॥
चिठउ दूरे मंतो, तुज्न पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर
तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुक्क दोगच्चं ॥ दोहग्गं ॥
॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवप्नहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुउ महायस, ज्नत्तिप्नर निप्नरेण हिअएण ॥
ता देव दिज्ज बोहिं, ज्नवे ज्नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

ए उवसग्गहर स्तोत्रनो सविस्तर अर्थ, आज ग्रंथना चम्मोतेरमा पानामां आगल लखाई गयो बे, तेथी आहीं लख्यो नथी.

॥ अथ संतिकरस्तोत्र नामकं तृतीयं स्मरणं प्रारज्यते ॥

॥ प्रथम आ स्तोत्र उत्पन्न थवानुं किंचित् कारण लखीयें बेयें. तपो गडनायक श्रीसोमसुंदरसूरिना पट्टप्रज्नावक श्रीमुनिसुंदर सूरि मेदपाट

देश संबंधी देवकुलपाट गामने विषे चोमासुं रह्या हता. ते समय संघने विषे अकस्मात् मरकीनो महोटो उपद्रव उत्पन्न थयो. ते उपद्रव पीडित एवा संघनां लोकोने जोइ जेमने स्वगुरु सान्निध्यथी सद्धिया प्राप्त थयेली हती एवा अने करुणासहित हृदयवाला श्रीमुनिसुंदरसूरि, तेम णें श्रीसूरिमंत्रना आम्नायथी गर्जित एवुं आ संतिकरनामा स्तोत्र रच्युं,ए ना पठनपाठनथी तथा ए स्तोत्रमंत्रित जल छांटवाथी श्रीसंघने समस्त मरकीनो उपद्रव शांत थयो, त्यारथी आ स्तोत्रने पठनपाठनादिकनो सं प्रदाय चाल्यो छे, ते स्तोत्र, अर्थसहित लखीयें छेयें ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं॥
समरामि नत्त पालग, निवाणी गरुडकयसेवं ॥१॥

अर्थः—आ ठेकाणें अहं ए कर्तृपद अध्याहारथी लेवुं. एटले (अहं के०) हुं (संतिजिणं के०) वर्त्तमान चोवीशीना शोलमा तीर्थंकर श्रीशां तिजिन, ते प्रत्यें (समरामि के०) मनमां चिंतवन करुं छुं, एटले ध्यान करुं छुं. ते श्रीशांतिनाथ केहवा छे? तो के (संतिकरं के०) सर्व उपद्रवना निवारण करनारा छे,केम के? प्रज्ञु गर्जगत थया,तेवारें एमनी माताना पग धोयेला जलना छांटवाथकी लोकोने मरकीनो उपद्रव शांत थयो, तेथी माता, पितायें शांतिनाथ एवुं नाम पाडयुं. वली श्रीशांतिजिन केहवा छे? तो के (जगसरणं के०) जगन्निवासी लोक तेना शरण एटले नयनिवारण करनार छे,वली (जयसिरीइ के०) जय ते प्रधान एवी श्री जे लक्ष्मी, अथ वा जय ते जय अने लक्ष्मी जे शोन्ना तेने जयश्री कहियें, ए बेहु वानांना (दायारं के०) दातार छे. वली केहवा छे? तो के (नत्त के०) पोताने नजनारा एवा जे नक्तलोक तेमने (पालग के०) पालन करनारा छे,एटले तुष्टि, पुष्टिना देनारा छे, अर्थात् नक्तने विघ्नविनाशपणायेंकरी हितकार क छे, वली (निवाणी के०) निर्वाणी नामक देवी तथा (गरुड के०) गरुड नामक यक्ष, ए बेहुयें (कयसेवं के०) करेली छे सेवा जेमनी एवा छे ॥१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥
क्रौँ स्वाहामंतेणं, सवासिवडरिअहरणाणं ॥ २ ॥

अर्थः–(संतिसामिपायाणं के०) श्रीशांतिस्वामीपादने (ॐ सनमो के०) ॐकारें सहित नमस्कार थाओ. ते श्री शांतिस्वामीपाद केहवा ले ? तो के (विप्पोसहिपत्ताणं के०) विप्रोषधि लब्धिने प्राप्त थया एवा ले, तेमां वि जे विष्टा, अने प्र जे लघुनीति ते ओषधिरूपें ले जेमना एवा ले, वली केहवा ले? तो के (क्रौँ स्वाहामंतेणं के०) क्रौँ स्वाहा ए प्रकारनुं सूरियें कहेलुं जे मंत्रबीज,तेणें करी युक्त ले. वली केहवा ले? तो के "ॐस नमोविप्पोसहिपत्ताणं क्रौँ स्वाहा" एवा मंत्रना पदें करीने सकल जगतना (सव्वासिव के०) सर्व अशिव एटले मरकी अपस्मारादिक सर्व उपद्रवो,तेने तथा (दुरिय के०)-दुरित जे पाप तेने (हरणाणं के०) हरण करनार ले ॥२॥

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धिपत्ताणं ॥
सौँ ह्रीं नमो सव्वोसहि,पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥

अर्थः–(ॐ के०) अहीं ॐ जे ले, ते अन्युपगम अर्थमां जाणवो. अर्थात् ॐ एटले शोनायमान एवा (संति के०) शांतिस्वामीपादने (नमुक्कारो के०) नमस्कार थाओ. ते शांतिस्वामीपाद केहवा ले ? तो के (खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं के०) खेल जे श्लेष्मा कफ, ते आदि सिंघाणादिक, तेहीज परम ओषधिपणायें करीने प्राप्त थयां ले जेमने.अहीं माइ त्यां मकार जे ले, ते लाक्षणिक ले. (च के०) वली तेने (सौँ ह्रीं नमो के०) सौँ ह्रीं सहित नमस्कार हो. वली ते केहवा ले? तो के (सव्वोसहिपत्ताणं के०) सर्व जे दंत,केश,नख, रोमादिक अंगरूप जे अवयवो, ते सर्वौषधि पणाने पाम्या ले जेमने एवा ले. अने तेउने करेलो जे नमस्कार ले, ते नव्योने (देइसिरिं के०) लक्ष्मीने आपो. आहिं "ॐ ह्रीं नमोखेलोसहिलद्धिपत्ताणं, तथा ॐ ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताणं" ए बे सूरिमंत्रपदो जे ले, ते सर्वोपद्रवनाशकारक ले. वली ॐकारसहित शांतिजिननो नमस्कार जे ले, ते श्लेष्मौषध्यादि लब्धिप्राप्त एवा साध्वादिकने द्रव्यथी तथा नावथकी पण एवी बे प्रकारनी श्री जे लक्ष्मी तेने आपे ले ॥ ३ ॥

वाणी तिहुअणसामिणि, सिरि देवी जक्खराय गणिपिडगा ॥
गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणजत्ते ॥ ४ ॥

अर्थः—(वाणी के०) वाग्देवता, जे श्रुताधिष्ठायिनी, (तिहुअ णि के०) त्रिभुवनस्वामिनी एटले सूरिमंत्रपीठपंचकाधिष्ठायिनी एटले एनु ध्यान करनार जे जक्त जन, तेने प्रातिहार्य करनारी एवी, अने पद्मद्रह निवासिनी व्यंतरजातिवाली (सिरिदेवी के०) लक्ष्मीनामा देवी तथा (जरकरायगणिपिडगा के०) यक्षोनी मध्यें द्युतियें करीने जे राज एटले अधिक शोजे तेने यक्षराज कहियें, अने गणिपीटक जे द्वादशांग तेनो अधिष्ठायिक ठे, ए हेतुमाटें ते गणिपीटक नामा यक्षराज जाणवो, तथा (गह के०) सूर्यादि नवग्रह तथा (दिसिपाल के०) दश दिक्पाल तथा (सुरिंदा के०) सुरना इंद्र ते चोशठ इंद्र. ए सर्व सम्यग्दृष्टि देवो ठे, ते (सयावि के०) सदा निरंतर पण (जिणजत्ते के०) श्रीतीर्थंकरना जक्तिकारक जनोने (रस्कंतु के०) रक्षाने करो ॥ ४ ॥

रस्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥५॥

अर्थः—(मम के०) मने अने उपलक्षणथकी अन्य जीवोने पण सर्वोपद्रवोथकी (सया के०) निरंतर (रस्कंतु के०) रक्षण करो. आहिं सर्वोपद्रवोथकी ए पद अध्याहारथी लेवुं. हवे ते कोण रक्षण करो? तो के शोल देवीयो रक्षण करो. तेनां नाम कहे ठे. एक (रोहिणी के०) पुण्यरूप बीजने उत्पन्न करे ठे माटें रोहिणी कहियें, ते रोहिणीनामा देवी रक्षण करो. बीजी (य के०) वली (पन्नत्ती के०) प्रकृष्ट ठे ज्ञप्ति एटले ज्ञान जेने विषे माटे प्रज्ञप्तिदेवी एवुं नाम कहियें, तथा त्रीजी (वज्जसिंखला के०) वज्रनी पेठें डुर्भेद्य ठे, डुष्ट दमनार्थ एवी शृंखला ते ठे जेना हाथने विषे तेमाटे तेने वज्रशृंखला देवी कहियें. ए त्रणे देवीयो महारुं रक्षण करो. चोथी (वज्जंकुसि के०) वज्र अने अंकुश, ए बे अस्त्र ठे जेना हस्तने विषे माटें तेने वज्रांकुशी कहियें. तथा पांचमी (चक्केसरि के०) निरंतर चक्रनुं धारण करवापणुं ठे जेना हाथने विषे माटें तेने चक्रेश्वरी कहियें, तथा ठठी (नरदत्ता के०) नर जे मनुष्य तेने वरादिकनी देवावाली ठे. माटें तेने नरदत्ता देवी कहीयें. तथा सातमी (कालि के०) जेना शरीरने विषे श्यामवर्णत्व ठे, माटें काली देवी कहीयें. अथवा शत्रु

उंने विषे कालनी उपमा छे माटें काली देवी कहियें. तथा आठमी (म हाकाली के०) महाकाली देवी, आहिं महाशब्दें करीने विशेष जाणवुं॥५॥

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥
अछुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥

अर्थः—नवमी (गोरी के०) गौरवर्णपणुं छे माटें गौरी देवी कहियें. (तह के०) तथा वली दशमी (गंधारी के०) गा एटले सुरजि तेना वाहनने धा रण करे छे माटे गांधारी कहियें. तथा अगीयारमी (महजाला के०) सर्व अस्त्रोनी महोटी छे ज्वाला जेने तेने महाज्वाला कहियें. तथा बारमी (माणवी के०) मनुष्यनी जननी तुल्य, तेने मानवी कहियें. (अ के०) वली तेरमी (वइरुट्टा के०) अन्योऽन्य वैरोपशांत्यर्थ अव्य एटले आ ववुं छे जेनुं ते वैरुव्या कहियें. तथा चौदमी (अछुत्ता के०) पापने विषे जेने स्पर्श नथी तेने अछुत्ता कहियें. तथा पंदरमी (माणसिआ के०) ध्यान करनारना मनने सान्निध्य जेनाथकी थाय छे ते माटें मानसिका कहियें. तथा शोलमी (महामाणसियाउं के०) ते पण पूर्वोक्त मानसि कानी जेम जाणवुं. एक महा पद छे, ते महत्तावाचक छे, ए शोल (दे वीउं के०) देवियो जे छे, ते रक्षण करो. ए शोले देवीयोनुं विद्याप्रधानत्व छे ते माटें ए विद्यादेवीयो कहेवाय छे. ए शोल देवीयोयें करी मंत्रावर्णावलि ससाधन थाय छे. ए देवीयोनुं श्रीमंत्रपट्टमां पोतपोताना स्थानकोने विषे स्थापन थाय छे, अने तेनुं ध्यान करनारने ए ध्यान, सुखावह होय छे॥६॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

जरका गोमुह महज, रक तिमुह जरकेस तुंबुरू कुसुमो ॥
मायंगो विजयाजिय, बंनो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥

अर्थः—प्रथम (गोमुह के०) गोमुखनामा (जरका के०) यक्ष, बी जो (महजरक के०) महायक्ष, त्रीजो (तिमुह के०) त्रिमुख यक्ष चो थो (जरकेस के०) ईश्वरनामा यक्ष, पांचमो (तुंबुरु के०) तुंबुरुना मा यक्ष, छठो (कुसुमो के०) कुसुम नामा यक्ष, सातमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष, आठमो (विजय के०) विजयनामा यक्ष, नवमो (अजिय के०) अजितनामा यक्ष, दशमो (बंनो के०) ब्रह्मनामा

यक्ष, अगीयारमो (मणुउ के०) मनुजनामा यक्ष, बारमो (सुरकुमारो के०) सुरकुमारनामा यक्ष छे ॥ ७ ॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तहय जक्खिंदो ॥
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥

अर्थः—तेरमो (छम्मुह के०) षण्मुखनामा यक्ष, चौदमो (पयाल के०) पातालनामा यक्ष, पन्नरमो (किन्नर के०) किन्नरनामा यक्ष,शोल मो (गरुडो के०) गरुडनामा यक्ष, सत्तरमो (गंधव्व के०) गंधर्वनामा यक्ष, (तहय के०) तथा वली अढारमो (जक्खिंदो के०) यक्षेंद्रनामा यक्ष छे, उंगणीशमो (कूबर के०) कूबरनामा यक्ष, वीशमो (वरुणो के०) वरुण नामा यक्ष, एकवीशमो (भिउडी के०) भृकुटिनामा यक्ष, बावीशमो (गोमेहो के०) गोमेधनामा यक्ष, त्रेवीशमो (पास के०) पार्श्वनामा यक्ष, चोवीशमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष छे॥ ए प्रमाणें प्रत्येक तीर्थंकर नो प्रत्येक यक्ष अनुक्रमें जाणवो.ए चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोना वर्ण, वाहन, हस्त, आयुधो, तेमनुं सविस्तर वर्णन,श्रीप्रवचनसारोद्धारना मा ग्रंथना छवीशमा द्वारमां छपाइ गयाथी अहींयां लख्यां नथी ॥ ८ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी चोवीश देवीयोनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

देवीउ चक्केसरि,अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली॥
अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोय सिरिवछा ॥ ९ ॥

अर्थः—प्रथम (चक्केसरि के०) चक्रेश्वरीनामा देवी, बीजी (अजिआ के०) अजितानामा देवी, त्रीजी (दुरिआरि के०) दुरितारिनामा देवी, चोथी (कालि के०) कालीनामा देवी, पांचमी (महाकाली के०) महा कालीनामा देवी, छही (अच्चुअ के०) अच्युतनामा देवी, सातमी (संता के०) शांतानामा देवी, आठमी (जाला के०) ज्वालानामा देवी, नवमी (सुतारया के०) सुतारानामा देवी, दशमी (असोक के०) अशोका नामा देवी, अगीयारमी (सिरिवछा के०) श्रीवत्सानामा देवी, ए श्री तीर्थंकरनी (देवीउ के०) देवीयो छे ॥ ९ ॥

चंका विजयंकुसि प,न्नइत्ति निवाणि अञ्चुआ धरणी॥
वइरुट्ट छुत्त गंधा, रि अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥

अर्थः–बारमी (चंका के०) चंकानामा देवी, तेरमी (विजय के०) विजयानामा देवी, चौदमी (अंकुसि के०) अंकुशानामा देवी, पन्नरमी (पन्नइत्ति के०) पन्नगानामा देवी, शोलमी (निवाणि के०) निर्वाणी नामा देवी, सत्तरमी (अञ्चुआ के०) अच्युतानामा देवी, अढारमी (धर णी के०) धारिणीनामा देवी, उंगणीशमी (वइरुट्ट के०) वैरोट्यानामा देवी, वीशमी (छुत्त के०) अछुतानामा देवी, एकवीशमी (गंधारि के०) गांधारीनामा देवी, बावीशमी (अंब के०) अंबानामा देवी, त्रेवीशमी (पउमावई के०) पद्मावतीनामा देवी, चोवीशमी (सिद्धा के०) सिद्धाना मा देवी.ए प्रकारें चोवीश देवीयो अनुक्रमें चोवीश तीर्थंकरोनी जाणवी. ए चोवीश देवीयोना वर्ण,वाहन, हस्त,आयुधादिक सर्व प्रचनसारोद्धारनामा ग्रंथना सत्तावीशमा द्वारमां छपाइ गयाथी आहिं लख्यां नथी ॥ १० ॥

इअ तित्थ रक्कण रया, अन्नेवि सुरा सुरी चउहावि ॥
वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्कं सया अम्हं ॥ ११ ॥

अर्थः–(इअ के०) ए प्रकारें पूर्वोक्त यक्ष, यक्षिणी, तुमें (तित्थ के०) चतुर्विध संघरूप जे तीर्थ, तेनुं सर्वोपद्रवथकी जे (रक्कण के०) पालन करवुं, तेने विषे (रया के०) तत्पर थाउ. तथा (अन्नेवि के०) अन्य पण (चउहावि के०) चार प्रकारना एवा पण (सुरा के०) देवता, (सुरी के०) देवीयो जे नवनपत्यादिक चार निकायनां छे,ते (वंतर के०) घंटाक र्णादिक बावन वीरविशेष, अथवा माणिनद्रादि क्षेत्रपालविशेष जाणवा. तथा (जोइणिपमुहा के०) नद्रकाली प्रमुख चोशठ योगिनी व्यंतरीविशे ष, ते (रक्कं के०) रक्षाप्रत्यें (सया के०) निरंतर आ स्तोत्रनुं स्मरण क रनारा एवा (अम्हं के०) अमोने (कुणंतु के०) करो ॥ ११ ॥

एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिउ संघस्स संति जिणचंदो ॥
मज्झवि करेउ रक्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअ महिमा ॥ १२ ॥

अर्थः—(एवं के०) एम (सुदिठिसुरगण के०) पूर्वोक्त सम्यग्दृष्टि देव तानो समूह, तेणें (सहिउ के०) सहित एवा (संघस्स के०) श्रीसंघ जे तेने (संतिजिणचंदो के०) सामान्य केवलीने विषे आल्हादकारी माटें जिनचंद्र कहियें; ते श्रीशांतिजिनचंद्र, तमें (मज्झवि के०) मने पण सर्वो पद्रव निवारणरूप (रक्खं के०) रक्षा ते प्रत्यें (करेउ के०) करो. ए श्रीशांति जिनचंद्र केहेवा छे ? तो के (मुणि के०) मुनिने विषे (सुंदर के०) प्रधान एवा जे श्रुतकेवली,मनःपर्यवज्ञानीयो तेणें तथा (सूरि के०) पंडितो तेमणें (थुअ के०) स्तुति कस्यो छे (महिमा के०) माहात्म्य जेमनुं एवा छे. अथवा पक्षांतरें आ स्तोत्रकर्त्तानुं नाम पण श्रीमुनिसुंदर सूरि छे, एम जणाववाने आ छेल्लुं पद लख्युं छे ॥ १२ ॥

इअ संति नाह सम्म,दिठी रक्खं सरइ तिकालं जो॥
सवोवद्दवरहिउ,स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥

अर्थः—(इअ के०) ए प्रकारें (सम्मदिठी के०) रूडी छे दृष्टि जेनी एवो तत्त्वश्रद्धानवालो (जो के०) जे कोइ मनुष्य, (संतिनाह के०) श्री शांतिनाथ तेनी (रक्खं के०) रक्षा जे छे तेने (तिकालं के०) त्रणे कालें त्रिसंध्यायें (सरइ के०) स्मरण करे छे, मनें करी चिंतवन करे छे, ते म नुष्य, (सवोवद्दवरहिउ के०) सर्वोपद्रवें करी रहित थाय छे,अने (स के०) ते मनुष्य, (परमं के०) सर्वोत्कृष्ट एवा (सुहसंपयं के०) सुखसंपत् अ थवा सुखदायक संपदा तेने (लहइ के०) पामे छे ॥ १३ ॥

तवगछगयणदिणयर,जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं॥
सुपसायलद्धगणहर,विद्यासिद्धि भणइ सीसो॥१४॥
इति श्री संतिकरं नाम तृतीयं स्मरणम् ॥ ३ ॥

अर्थः—(तवगछ के०) श्री तपोगछरूप (गयण के०) गगन तेने विषे (दिणयर के०) दिनकर जे सूर्य ते समान (जुगवर के०) युगप्रधान पदवीना भोगवनार एवा (सिरिसोमसुंदरगुरूणं के०) श्रीसोमसुंदरसूरि नामा गुरु धर्माचार्य तेमना (सुपसाय के०) सुप्रसादें करीने (लद्ध के०) प्राप्त थइ एवी (गणहरविद्यासिद्धि के०) गणधर विद्यासिद्धिने (सीसो

के०) शिष्य जे श्रीमुनिसुंदरसूरि, ते (जणइ के०) जणे ले ॥१४॥इति॥३॥

॥ अथ तिजयपहुत्तनामकचतुर्थस्मरणस्य प्रारंजोऽयं ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेरजुत्ताणं ॥
समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं चिणंदाणं ॥१॥

अर्थः–हुं (जिणंदाणं के०) सामान्य केवलीने विषे इंद्र तुल्य मार्टे जिनेंद्र कहियें ते जिनेंद्रोनुं (चक्कं के०) चक्र एटले वृंद अथवा चक्र एटले यंत्र तेनुं (सरेमि के०) स्मरामि एटले ध्यान करुं लुं. ते जिनेंद्रो केहवा ले? तो के (तिजय के०) त्रण जगत् तेनुं (पहुत्त के०) प्रजुत्व जे ऐश्वर्य तेने (पयासय के०) प्रकाशना करनारा ले, वली (अठमहापाडिहेर के०) आठ जे महाप्रातिहार्य तेणें करी (जुत्ताणं के०) युक्त ले. वली केहवा ले? तो के (समय के०) कालविशेष उपलक्षणथी अहोरात्र ले प्रधान जेने विषे एवुं जे (क्खित्त के०) क्षेत्र एटले पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीप लक्षण जे समयक्षेत्र ले तेने विषे (ठिआणं के०) स्थित एटले वर्त्तता एवा उत्कृष्ट कालने विषे जेवारें कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह होतो नथी तेवारें पंदर कर्मजूमि क्षेत्रने विषे उत्कृष्टथी एकशो ने सीत्तेर तीर्थंकरो समकालें होय ले, तेनुं हुं स्मरण करुं लुं ॥ १ ॥

हवे ए एकशो ने सीत्तेर समय क्षेत्र स्थित जिनवृंदने एकशो सीत्तेर संख्याना अंकना प्रमाणवालो अने महोटुं ले माहात्म्य जेनुं एवो महा यंत्र ले, ते यंत्रनो उद्धारविधि सात गाथायें करी देखाडे ले.

ए यंत्रमां पांच कोष्टको ऊर्ध्व लखवां,अने पांच कोष्टको आडां लखवां,तेवारें पांच पचां पचास कोष्टको थाय. तिहां मध्यने विषे पांच आडां कोष्टको जे ले, तेमां "क्षिप ॐ स्वाहा" ए पंचाक्षरी पंचमहाजूतात्मिका महाविद्या लखवी, तेमज वली उजां मध्यनां जे पांच कोष्टको ले तेमां पण "क्षिप ॐ स्वाहा" ए पंचाक्षरी महाविद्याज लखवी, तेमां (क्षि) ए पृथ्वी बीज ले, (प) ए अप्बीज ले, (ॐ) ए तेजोबीज ले, (स्वा) ए पवनबीज ले, अने (हा) ए आकाशबीज ले.एम ए पांच बीजो मध्यनी आडी लीटीना तथा मध्यनी उजी लीटीना दरेक कोष्टकमां लखवां,अने बीजां कोष्टको जे ले

तेमां अंको लखवा. तिहां यंत्रना आरंभनी आडी पंक्तिनां जे पांच कोष्टको छे, तेमध्यें लखवा योग्य अंकोने गाथायें करी देखाडे छे.

पणवीसा य असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥
नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥

अर्थः—तिहां यंत्रनी आडी पंक्तिना पांच कोष्टको जे छे, तेना प्रथम कोष्टकमां (पणवीसा के०) पच्चीशनो अंक लखवो, (य के०) तथा बीजा कोष्टकमां (असीआ के०) एंशीनो अंक लखवो, तथा त्रीजुं कोष्टक तो मध्यमां छे, तेथी तेमां तो पूर्वें कह्या प्रमाणे (क्षि) अक्षर लखेलुंज छे, तथा चोथा कोष्टकमां (पन्नरस के०) पंदरनो अंक लखवो, तथा पांचमा कोष्टकमां (पन्नास के०) पच्चासनो अंक लखवो. ए प्रमाणें लखेलो (जिनवर के०) सामान्यकेवलीमां श्रेष्ठ एवा तीर्थंकरोनो (समूहो के०) समुदाय तेनो यंत्र, ते (भत्तिजुत्ताणं के०) भक्तियें करी युक्त एवा (भविआणं के० (भव्य जीवो जे छे, तेनां (सयल के०) समग्र एवा (दुरिअं के०) दुरित जे पापकर्म तेने (नासेउ के०) नाश करो ॥ २ ॥

हवे ए यंत्रनी बीजी आडी पंक्तिनां कोष्टकोने विषे जे अंक लखवा योग्य छे, ते अंको कहे छे.

वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥
गह भूअ रक्क साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥

अर्थः—प्रथम कोष्टकने विषे (वीसा के०) वीशनो अंक लखवो, तथा बीजा कोष्टकने विषे (पणयालाविय के०) पीस्तालीशनो अंक लखवो, तथा त्रीजा मध्य कोष्टकमां तो आगल कहेली रीतिप्रमाणें (प) अक्षर लखायेलुंज छे, तथा चोथा कोष्टकमां (तीसा के०) त्रीशनो अंक लखवो, तथा पांचमा कोष्टकने विषे (पन्नत्तरी के०) पंचोतेरनो अंक लखवो. ए प्रमाणें सर्व मली एकशो सीत्तेर (जिणवरिंदा के०) जिनवरो जे तीर्थंकरो थयां ते, (गह के०) मंगलादिक ग्रहो, (भूअ के०) व्यंतरविशेष (रक्क के०) राक्षसविशेष, (साइणि के०) शाकिनी ते यातुधानीविशेष,

ए. सर्वेयकी उत्पन्न थया एवा जे (घोरुवसग्गं के०) घोर उपसर्गो तेमने (पणासंतु के०) प्रकर्षे करीने नाशने पमाडो ॥ ३ ॥

हवे ते यंत्रना मध्यमां रहेली आडी पंक्तिनां पांच कोष्टकमां तो पूर्वोक्त रीति प्रमाणें "ह्रिप ॐ स्वाहा" ए पांच अक्षर लखेलाज छे, माटें ते पछीनी चोथी आडी पंक्तिमां जे लखवा योग्य अंको छे. ते कहे छे.

सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो॥
वाहि जलजलण हरि, करि चोरारिमहाजयं हरउ ॥४॥

अर्थः—प्रथम कोष्टकने विषे (सित्तिरि के०) सित्तेरनो अंक, बीजा कोष्टकने विषे (पणतीसाविय के०) पांत्रिशनो अंक,त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्त रीति प्रमाणें(स्वा) अक्षर लखेलुंज छे,ते पछी चोथा कोष्टकने विषे(सठी के०) शाठनो अंक, तथा पांचमा कोष्टकने विषे (पंचेव के०) पांचनो अंक लखवो. ए प्रमाणें (एसो के०) ए मनमां प्रत्यक्ष एवो (जिणगणो के०) तीर्थंकरसमूह, (वाहि के०) व्याधि, (जल के०) नदी समुद्रादि अथवा पाठांतरें (जर के०) ज्वर ते सन्निपातादिक, (जलण के०) अग्न्यादि, (हरि के०) व्याघ्र, (करि के०) दुष्टहस्ती, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु तेमनुं (महाजयं के०) महोटुं जे जय, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥४॥

हवे आ यंत्रनी आडी पांचमी पंक्तिना कोष्टकोमां लखवा योग्य जे अंको छे ते कहे छे.

पणपन्ना य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥

अर्थः—प्रथम कोष्टकने विषे (पणपन्ना के०) पच्चावन्ननो अंक, (य के०) वली बीजा कोष्टकने विषे (दसेव के०) दशनो अंक, (य के०) वली त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्तरीतिप्रमाणें (हा) अक्षर लखेलुंज छे, तथा चोथा कोष्टकने विषे (पन्नठी के०) पांशठनो अंक, (तहयचेव के०) तेमज निश्चें पांचमा कोष्टकने विषे (चालीसा के०) चालीशनो अंक, एम सर्व अंकोना मली शरवाले एकशो सीत्तेर जिनों ते (मे के०) महारुं (सरीरं के०) शरीर जे इंड्रियायतन, तेने (रक्खंतु के०)

रक्षा करो. ते जिनो केहवा छे ? तो के (देवासुर के०) देव जे देवता अने असुर जे दानव, तेणें (पणमिआ के०) प्रणाम कस्यो छे जेने एवा छे, तथा (सिद्धा के०) सिद्ध एटले जस्म करी नाख्यां छे ज्ञानावरणादि आठ कर्मो जेणें ते सिद्ध कहियें अर्थात् सिद्ध थया छे एवा छे ॥ ५ ॥

हवे पूर्वोक्त गाथाउमां कह्या प्रमाणें लख्या छे अंको जेमां एवा यंत्रने विषे बीजां पण बीजो लखवा योग्य छे,ते कयां बीजो? तथा ते बीजो कया कोष्टकमां केवी रीतें लखवां? तथा ते बीजोनो महिमा प्रमुख शुं छे?ते कहे छे.

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥
आलिहिय नाम गप्रं, चक्कं किर सवउनहं ॥ ६ ॥

अर्थः—आ गाथामां " हरहुंह " ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेणें करी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता,ए चार देवियोनां नाम अनुक्रमें प्रत्येक बीजें जाणवां. तथा वली आ गाथामां "सरसुंसः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, ते महोटा प्रजाववाला तथा व्यंतरादिक डुष्ट देवोयें करेलां उपसर्गोना निवारण करवाने अर्थें छे, तथा वली प्रथममां रह्या एवा "हरहुंहः" ए चार बीजाक्षरोने विषे (हा) अक्षर जे छे, ते सूर्यबीज छे ते डुरितनाशकारक छे, तथा (र) अक्षर जे छे,ते अग्निबीज छे,ते कल्मष एटले पापने दहनकारक छे, तथा (हुं) अक्षर जे छे,ते क्रोधबीज छे, तथा कवच पण छे,ते जूतादित्रासक छे, अने कवचत्वें करी आत्मरक्षक पण छे, तथा (ह) अक्षर जे छे, ते संपुटित छे. ते पछी आ गाथामां बीजा "सरसुंसः ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेमां (स) अक्षर जे छे, ते चंद्रबीज छे ते सौम्यताकारक तथा सर्वदा शिवकारक जाणवुं, तथा (र) अक्षर जे छे, ते अग्निबीज छे ते तेजोद्दीपन जाणवुं. तथा (सुं) अक्षर जे छे, ते शामक बीज छे, ते सर्वडुरितोपशामक छे, वली (सः) अक्षर जे छे, ते संपुटित बीज छे, एम जाणवुं. हवे ए आठे बीजो जे छे,ते कया कोष्टकमां कया अंकनी नीचें लखवां ? ते कहे छे.

तिहां गाथाना आरंजमां ॐ बीज जे छे, ते परमात्मवाचक तथा पंचपरमेष्ठिवाचक छे माटें ते पदनो उच्चार करीने ते यंत्रनी प्रथम पंक्तिमां लखेला जे पांच कोष्टको छे, तेना मध्य कोष्टकमां तो (क्षि) अक्षर पूर्वें लखेलुंज छे, ते

विना बाकीनां चार कोष्टकोमां जिहां (२५)(८०) (१५) (५०) एवा अंको, जरेला ढे, ते चारे अंकोनी नीचें अनुक्रमें (हरहुंहः के०) ह, र, हुं,हः, ए चार बीजो लखवां. तथा बीजी पंक्तिना मध्यना कोष्टकमां तो पूर्वें (प) अक्षर लखेलुंज ढे, पढी बाकीनां चार कोष्टकोमां जेमां (२०) (४५) (३०) (७५) एवा चार अंको लखेला ढे ते अंकोनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां. तथा त्रीजी पंक्तिना कोष्टकोमां तो पूर्वें "क्षिप ॐ स्वाहा" ए पांच बीजमंत्राक्षरो लखेलांज ढे,तथा वली चोथी पंक्तिना कोष्टकोमांहेला मध्यकोष्टकमां तो पूर्वें (स्वा) अक्षर लखे लुंज ढे, ते विनानां बीजां चार कोष्टको जेमां (७०) (३५) (६०) (५) एवा अंको लखेला ढे, ते अंकोनी नीचें वली बीजी वारनां पण (हरहुंहः के०) ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो अनुक्रमें लखवां.तथा पांचमी पंक्तिना कोष्टकमांहेला मध्यकोष्टकमां तो (हा) अक्षर पूर्वे लखेलुंज ढे ते वि नानां बीजां चार कोष्टकोमध्यें (५५) (१०) (६५) (४०) एवा चार अंको पूर्वें लखेलाज ढे ते अंकनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सु, सः, ए चार बीज लखवां, अने वली (आलिहिय के०) आलिखित ए टले (आ के०) समस्त प्रकारें करीनें (लिखित के०) लख्युं ढे (नाम के०) साधन करनार पुरुषनुं नाम ॐकारसहित, जे यंत्रना (गप्नं के०) गर्ज एटले मध्यजागना मध्य कोष्टकने विषे,एवो (किर के०) किल एटले निश्चें (सव्वउंजद्दं के०) सर्वतोजड़ एटले ऊर्ध्व पंक्तिनी गणनायें तथा आडी पंक्तिनी गणनायें तथा तीर्ञी पंक्तिनी गणनायें तथा कोणगत पं क्तिनी गणनायें सर्वतो एटले ए पंक्तिना सर्व प्रकारें अंको गणतां शरवाले (१७०) थाय ढे, तेमाटें सर्वतोजड़ एवुं (नाम के०) नाम ढे जेनुं, एवुं (चक्कं के०) चक्र ते यंत्र जाणवो, तथा वली (सर्वतः के०) सर्व प्रकारें जे थकी (जड़ के०) कल्याण थाय ढे. तेमाटें सर्वतोजड़ नाम जाणवुं॥६॥

हवे पढी ते यंत्रना चारे तरफना पार्श्व प्रदेशोने विषे रह्यां एवां जे शोल कोष्टको, तेने विषे शोल विद्या देवीउंनां नाम लखवां, ते कहे ढे.

ॐ रोहिणि पन्नत्ती,वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ॥
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरि ॥ ७ ॥

गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥
माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥

अर्थः—अहिं शोल देवीयोनां नाम जे लखवां, ते ॐ एटले प्रणवबीज, अने बीजुं ह्रीं एटले मायाबीज, त्रीजुं श्रीं एटले लक्ष्मीबीज. एवां ए त्रण बीज पूर्वक लखवां. तथा तेना अंतमां नमः पद पण लखवुं, जेम के प्रथम ॐ ह्रीं श्रीं रोहिण्यै नमः। एवी रीतें त्रण बीज आगल मूकीने सर्व शोल देवीयोनां नाम केहेवां, बीजी प्रज्ञप्त्यै नमः। एम त्रीजी वज्रशृंखलायै नमः। (तहय के०) तथा वली चोथी वज्रांकुश्यै नमः। पांचमी चक्रेश्वर्यै नमः। छठी नरदत्तायै नमः। सातमी काल्यै नमः। आठमी महाकाल्यै नमः। (तह के०) तथा नवमी गौर्यै नमः॥७॥ दशमी गांधार्यै नमः। अगीयारमी महाज्वालायै नमः। बारमी मानव्यै नमः। तेरमी वैरुट्यायै नमः।(तहय के०) तथा वली चौदमी अछुप्तायै नमः। पंदरमी मानस्यै नमः। शोलमी महामानस्यै नमः। ए शोल नाम (ॐकार) ते प्रणवबीज तथा (ह्रीं) ते मायाबीज तथा (श्रीं) ते लक्ष्मी बीज ए त्रण बीज पूर्वक अने अंतमां नमः पद सहित लखवां. एवो आम्नाय छे, तेवी (विद्यादेवीउ के०) हे विद्यादेवीउ! तमें (रक्खंतु के०) मारुं रक्षण करो.

हवे एकशो सीत्तेर जिनवरोनुं उत्पत्तिस्थानक कहे छे.

पंचदस कम्म भूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइं॥९॥

अर्थः—जंबूद्वीप, धातकीखंड, पुष्करार्द्ध लक्षण एवा सार्द्धद्वय द्वीपोने विषे पांच भरत क्षेत्रो, पांच ऐरवत क्षेत्रो अने पांच विदेह क्षेत्रो, ए (पंचदस के०) पन्नर, (कम्मभूमिसु के०) कृषिवाणिज्यादि कर्म ते छे प्रधान जेमां एवी जे भूमि तेने कर्मभूमि कहियें, ते कर्मभूमिउने विषे (उप्पन्नं के०) उत्पन्न थयुं, जे कारण माटे उत्कृष्ट कालने विषे पांच भरतने विषे पांच तीर्थंकर, पांच ऐरवतने विषे पांच तीर्थंकर, तथा एक महाविदेहने विषे बत्रीश विजयो, तेवा पांच महाविदेहोना एकशो ने शाठ विजयो छे, तेमां प्रतिविजयें एकेक तीर्थंकर थाय छे, एम जेवारें कोइपण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह न थाय? तेवारें उत्कृष्टा एकशो सीत्तेर तीर्थंकर थाय छे माटें कर्मभूमिउने विषे उत्पन्न थयुं एवुं (सत्तरिंजिणाणसयं के०) एक

शो सित्तेर जिनोनो समूह,ते श्रीअजितनाथ तीर्थंकरना समयने विषे होतो. हवो. तेउनां नाम तेउना अंगवर्ण,'ते मथुरास्थ स्तूपथकी उद्धार करेला पट्टिकायंत्रें करी जाणवा. ते जिनसप्तत्यधिकशत केहेवुं छे? तो के (विविह के०) विविध प्रकारना (रयणाइ के०) रत्नादिना (वन्न के०) वर्ण एटले श्वेत, पीत, रक्त, हरित, श्याम एवा वर्णोयें करीने (उवसोहिअं के०) उपशोभित एटले अतिशोभित एवुं छे. ते अमारां (डुरिआइं के०) डुरितो जे छे, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥ ए ॥

हवे ते केहेवा जिनोनुं ध्यान करवुं? ते कहे छे.

चउतीसअइसयजुआ, अठमहापाडिहेरकयसोहा ॥
तिबयरा गयमोहा, झाएअवा पयत्तेणं ॥ १० ॥

अर्थः–(चउतीस अइसय जुआ के०) चोत्रीश अतिशोयें करीने युक्त तथा वली केहेवा छे? तो के (अठमहापाडिहेर के०) आठ महाप्रातिहार्य तेणें (कयसोहा के०) करी छे शोभा जेमनी एवा,वली केहेवा छे? तो के (गयमोहा के०) गयो छे मोह जेमनो एवा (तिबयरा के०) तीर्थंकरो, (पयत्तेणं के०) प्रयत्नें करीने (झाएअवा के०) ध्यातव्य छे, अर्थात् हृदयनेविषे चिंतनीय छे, एटले तीर्थंकरोना एवा रूपनुं ध्यान करवुं ॥ १० ॥

हवे ए एकशो सीत्तेर तीर्थंकरोनो केहवो वर्ण छे? ते कहे छे.

ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं ॥
सत्तरिसयं जिणाणं, सबामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥

अर्थः–केटला एक तीर्थंकरोनो (वरकणय के०) श्रेष्ठकनक सरखो पीत वर्ण छे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (संख के०) शंखना सरखो वर्ण छे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (विद्दुम के०) प्रवालां सरखो वर्ण छे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (मरगय के०) मरकतमणिना सरखो वर्ण छे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (घण के०) मेघ तेना (सन्निहं के०) सरखो वर्ण छे, तथा (विगयमोहं के०) गयो छे मोह जेथकी तेने विगत मोह कहियें. एवुं, अर्थात् आ गाथामां कहेला विविध वर्णवालुं एवुं(सत्तरिसयंजिणाणं के०) जिनोनुं सप्तत्यधिकशत. ते केहवुं छे? तो के (सबा

मरपूइअं के०) सर्वामरपूजित छे, तेने हुं पण (वंदे के०) वंदन करुं छुं अने (स्वाहा के०) सुष्ठु. एटले रूडुं आह नाम कहे छे तेने स्वाहा कहियें. अर्थात् ए जिनेश्वरोने नमस्कार करवाथी शोजन सुखादिक थाय छे. अथवा बीजो अर्थ एम छे केः—"स्वाहा देवहविर्दाने" एम कहेलुं छे,तेथी देवताने हविनुं प्रदान छे. आ प्रदानें करीनें देवो परितुष्ट थाय छे ॥११॥ हवे आ यंत्रना प्रजावें करी सर्व देवो पण उपद्रव करता नथी,ते कहे छे.

ॐ जवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥
जे केवि डुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥१२॥

अर्थः—आहिं (ॐ के०) ॐ ते पंचपरमेष्ठिवाचक पद जाणवुं, ते महामंगलरूप छे, तेने आदिने विषे प्रयोजवुं. (जेकेवि के०) जे कोइ पण (डुठदेवा के०) डुष्ट देवो ते मिथ्यादृष्टि जैनशासनना द्वेषकारक अने जनोना अहितकारक देवो छे (तेसव्वे के०) ते सर्व पण आ स्तवनना प्रजाव थकी (मम के०) मने (उवसमंतु के०) उपशांत हो, अर्थात् विघ्नोने म करो. ते कया डुष्ट देवो? तो के (जवणवइ के०) जवनपति, (वाणवंतर के०) वाणव्यंतर, (जोइसवासी के०) ज्योतिष्कवासी देवो, (च के०) तथा (विमाणवासी के०) विमानवासी देवो छे. अने स्वाहापद जे छे, तेनो अर्थ पूर्वनी पेठें जाणवो ॥ १२ ॥

हवे ए यंत्रने फलकादिक जे काष्ठपट्टादिक तेने विषे लखीने
पीवानो पण प्रजाव छे, ते कहे छे.

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥
एगंतराइ गह जूअ साइणि मुग्गं पणासेइ ॥१३॥

अर्थः—(चंदण के०) चंदन, अगरु, कुंकुम, तथा (कप्पूरेणं के०) कर्पूरादिक तेणें करी (फलए के०) फलक ते काष्ठपट्टादिक तेने विषे(लिहिऊण के०) लखीने, तथा वली कोइक पुरुषो कहे छे जे पवित्र एवा कांस्यस्थालादिकने विषे कर्पूर, गोरोचन, कुंकुम, चंदन, अगरु, कस्तूरी प्रजृतिनो कर्दम करीने ते कर्दमें करी सात वखत प्रलेपन करीने छायायें करी शूकवीने तेनी उपर पूर्वोक्त यंत्रने लखी, पुष्पधूपादिकें पूजन करीने प्रातः

कालने विषे (खालिअं के०) क्षालन कर्यो एवो जे यंत्र, तेने जेणें (पी यं के०) पीधो होय, तेमना (एगंतराइ के०) एकांतरिक ज्वर आदि श ब्दथी द्व्यांतरिक, त्र्यांतरिक ज्वर पण ग्रहण करवा. ते सर्व जातिना ज्वर तथा (गह के०) ग्रह गोचर ते अशुभ भाववाला जे ग्रह, अथवा ग्रह ण करे तेमने ग्रह कहियें, एवा (भूअ के०) भूत ते व्यंतरविशेष अने (साइणि के०) शाकिनीविशेष (मुग्गं के०) मोगक, उपलक्षणथी अन्य पण दुष्टरोग, भूत प्रेतादि आवेशने तथा कृतकर्मादि जे छे, तेमने (प णासेइ के०) प्रनाश करे छे ॥ १३ ॥

वली वीजो पण प्रकार कहे छे.

इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं॥
दुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

अर्थः—(इअ के०) आ (सत्तरिसयं के०) सप्तत्यधिकशतनामा एवो (जंतं के०) यंत्र जे छे तेनुं (सम्मं के०) रूडे प्रकारें (निप्भंतं के०) निःसंदेहें करीने हे भव्य जीवो! (निच्चं के०) निरंतर, (अच्चेह के०) अर्चन करो. हवे ते यंत्र केहवो छे? तो के (मंतं के०) सर्वमंत्रमां गुह्य एटले रहस्य छे, वली केहेवो छे? तो के (दुवारि के०) गृह द्वारने विषे वा शुद्धि स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीतें (पडिलिहिर्यं के०) प्रतिलेखन करेलो छे. वली ते यंत्र केहे वो छे? तो के (दुरिअ के०) कष्टो अने (अरि के०) शत्रुउ, तेने(विजयवंतं के०) विजय एटले निराकरण करतो एवो छे. आहिं वली केटला एक तो एम केहे छे, जे रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने गृहमध्यने विषे पूजन करवुं, अने ज्यारें कार्य पडे, ते वखतें ते यंत्रनुं शुद्ध जलें प्र क्षालन करीने ते प्रक्षालित जलनुं पान करवुं ॥ १४ ॥ इति तिजयपहु त्तनामकं चतुर्थं स्मरणं समाप्तं ॥ ४ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं पंचमं स्मरणं लिख्यते ॥

तेमां प्रथम मंगलाभिधानपुरस्सर मंगलगाथा कहे छे.

नमिऊण पणयसुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणिणो॥
चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥

अर्थः–(मुणिणो के०) मुनि जे पार्श्वनाथ तेमनुं (चलणजुअलं के०) चरणयुगल एटले जे चरणारविंदनुं युगल तेने, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने हवे ते चरणयुगल केहवुं छे? तो के (पणय के०) प्रणत एटले नमस्कार करनारा एवा जे (सुरगण के०) देवताउंना समूह तेना मस्तकने विषे रहेला एवा जे (चूडा के०) मुकुट, ते मुकुटनेविषे रहेला जे (मणि के०) मणियो, तेना (किरण के०) किरणो, तेणें करीने (रंजिअं के०) रंजित एवुं छे. वली केहवुं छे? तो के (महाजय के०) रोग, जल, ज्वलनादि एवा शोल पदार्थथकी उत्पन्न थयुं एवुं जे महोटुं जय, तेने (पणासणं के०) प्रकर्षे करीने नाश करनारुं एवुं ते चरणयुगल छे, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारना (संथवं के०)संस्तव जे तेने (वुछं के०) कहीश ॥ १ ॥

हवे "रोग जल जलण" ए पूर्वोक्त शोल जय ते मध्यें आठ महाजय छे, तन्निवारणलक्षण प्रजुनुं अतिशय वर्णन, ते प्रत्येक जयआश्रयी बे बे गाथायें करी कहेतो छतो प्रथम रोगजयनिवारणलक्षण प्रजुनो अतिशय, गाथायुग्में करी कहे छे.

सडियकरचरणनहमुह, निबुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥
कुठमहारोगानल, फुलिंगनिद्दड्ढ सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह
चलणाराहण, सलिलंजलि सेय वुड्डिय छाया ॥ (उच्चाहा)
वण दवदड्ढा गिरिपा, यव व पत्ता पुणोलछीं ॥ ३ ॥

अर्थः–(सडिय के०) विशीर्ण छे एटले सडी गयेलां छे (करचरणनहमुह के०) हाथ, पग, नख अने मुख जेमनां एवा,तथा (निबुड्ड के०) निमग्न छे, एटले बेशी गयेली छे (नासा के०) नासिका जेनी एवा, तथा (विवन्न के०) विनष्ट थयुं छे (लायन्ना के०) लावण्य जेमनुं एवा, (कुठ के०) कुष्ठ प्रसिद्ध एवो कोढरूप (महारोग के०) महान् रोग तेनुं संतापजनकपणुं छे जेने ए हेतु माटें (अनल के०) अग्निसमान तेनां (फुलिंग के०) स्फुलिंगना सरखा एटले अंगारना तणखा ते समान पीडाकारक तेणें करी (निद्दड्ढ के०) बाळ्यां छे (सवंगा के०) सर्व अंग जेमनां एवा ॥२॥ (ते

के०) ते प्राणीयो पण हे पार्श्वनाथ ! (तुह के०) तव एटले तमारां (चलणाराहण के०) चरणोनुं आराधन जे सेवन तेज (सलिलंजलि के०) सलिलांजलि जे पाणी पीवानी अंजलि तेनुं (सेअ के०) सेक जे सेचन तेणें करी (वुड्ढियछाया के०) वृद्धिंगत थइ छे छाया शोजा जेमनी एवा छता (पुणो के०) फरीने (लछीं के०) लक्ष्मी जे आरोग्यरूप संपदा तेने (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे. तेने विषे उपमा कहे छे के,जेम (वणदव के०) वननो अग्नि तेणें करी (दड्ढा के०) दग्ध थयेला (गिरिपायव के०) गिरिपादप एटले पर्वतनां वृक्षो छे तेज (व के०) जेम (वुड्ढिअछाया के०) वृद्धि पामी छे शोजा जेमनी, एवा थाय छे वली वुड्ढिउछाहा एवो पण पाठ छे,तो तेनो अर्थ एम जाणवो जे वृद्धिंगतथयो छे उत्साह जेमनें एवा अर्थात् दवदग्ध वृक्षो जे छे,ते वृष्टिना जलें करी सिंचेला छता फरीने नवकोमलादि संपत्तिनो प्रादुर्जाव करे छे.तेम कुष्टादि महारोगोयें करीने विवर्णजावने पामेला एवा जनो, ते तमारा चरणारा धनामृतें सिंचायेला छता फरी पाछा मकरध्वजतुल्य रूपने पामे छे ॥३॥

हवे गाथाद्वयें करीने प्रजुनुं बीजुं जलजयापहरण लक्षण माहात्म्यने देखाडतो छतो कहे छे.

दुवायखुन्जियजलनिहि, उप्नडकल्लोलजीसणारावे ॥
संजंतजयविसंतुल, निद्यामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अ
विदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पा
सजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥

अर्थः–(दुवाय के०) दुष्टवात एटले प्रतिकूल पवन, तेणे (खुजिअ के०) क्षोजित कस्यो एवो (जलनिहि के०) जलनिधि जे समुद्र, तेना (उप्नड के०) उन्नट एटले उदार एवा (कल्लोल के०) कल्लोल जे लहेरीयो तेमना (जीसण के०) जयंकर छे (आरावे के०) शब्दो जेने विषे एवो तथा (संजंत के०) हवे शुं करवुं जोइयें? एवो विचार करवाने विषे मूढ थयेला तथा (जय के०) जय जे बीक तेणें करीने (विसंतुल के०) विव्हल थया एवा (निद्यामय के०) निर्यामक एटले खलासीयो तेणें (मुक्कवावारे के०) मूक्यो छे व्यापार जेने विषे ॥ ४ ॥ एवा पण समु

द्रने विषे (अविदलिय के०) नथी जांग्युं (जाणवत्ता के०) यानपात्र ते वहाण जेमनुं एवा छता (खणेण के०) क्षणें करीने एटले घडीना छठा जागें करी (इच्छिअं के०) इच्छित एवुं (कूलं के०) समुद्रतट एटले कांठो तेने (पावंति के०)प्राप्नुवंति एटले पामे छे. ते कया नर जाणवा? अर्थात् सर्वजन नहिं,परंतु (जे के०) जे (नरा के०) मनुष्यो (पासजिण के०) श्रीपार्श्वजिन तेनुं (चलणजुअलं के०) चरणकमलनुं जुगल तेने (चिअ के०) चिअ शब्द अवधारणार्थ छे (निच्चं के०) निरंतर (नमंति के०) नमन करे छे,अथवा (निच्चंचिअ के०) नित्य गंधादिकें करी अर्चन करीने जे (नमंति के०) नमस्कार करे छे, ते नरो समुद्रना पारने पामे छे ॥५

हवे गाथायुगलें करीने प्रजुनो त्रीजो दावानलजया
पहारातिशय कहे छे.

खरपवणुद्धुयवणदव, जालावलिमिलियसयलडुमगहणे ॥ डज्झंतमुद्धमयवहु, जीसणरवजीसणंमि वणे ॥६॥ जगगुरुणो कमजुअलं,निव्वाविअसयलतिहुअणाजोअं ॥ जे संजरंति मणुआ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं ॥७॥

अर्थः—आगल कहेशे ए प्रकारना (वणे के०) वनने विषे (जलणो के०) ज्वलन जे अग्नि ते जय करतो नथी. हवे ते वन केहवुं छे? तो के (खर के०) प्रचंड एवो जे (पवण के०) वायु,तेणें करी (उद्धुय के०) उद्धत सर्व दिशियोने विषे आणी तरफ पहेली तरफ प्रसारने पमाडेलो एवो(वणदव के०) वननो अग्नि,तेनी (जाला के०) ज्वाला तेनी(आवलि के०) श्रेणि तेणें करीने (मिलिय के०) परस्पर एकीजूत थया जे (सयल के०) समग्र (डुम के०) द्रुम एटले वृक्षो तेना (गहण के०) गहन जेने विषे,एटले आ आंबानुं वन, आ चंपकवन, इत्यादिक छे जे वनने विषे तथा वली ते वन केहवुं छे? तो के (डज्झंत के०)दाजती एवी(मुद्ध के०) मुग्ध एटले सरल एवी जे (मयवहु के०) मृगवधू एटले हरणीयो तेमनो (जीसण के०) जयंकर (रव के०) आक्रंद शब्द तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयप्रद थयेलुं अर्थात् जयंकर थयेलुं. अहीं जी एटले जय तेने सन केतां आपे,तेने जीषण कहियें एवा

(वणे के०) वनने विषे. वली आहीं केटलाएक तो एवो अर्थ करे वे के, (दह्यंत के०) दह्यांत एटले दहन थवा योग्य एवुं जे वन तेनो अंत ए टले अवसान वे जेमां, तेने दह्यांत कहियें ते दह्यांत जे दवाग्नि तेनी (मुरू के०) सरल एवी जे ज्वाला तेना आकुलितपणायें करीने मूढ एवा जे (मय के०) अरण्यवासी पशुउं तेनो (बहु के०) घणो अत्यंत (जीस ण के०) जयंकर एवो (आराव के०) आक्रंद तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयजीत थयेलुं एवुं (वणे के०) वनने विषे ॥६॥ (जगगुरुणो के०) स्वसा मर्थ्यथकी थयेला एवा जगतना गुरु जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेमनुं (कमजुयलं के०) चरणयुगल, ते चरणयुगल केहवुं वे ? तो के (निवावि अ के०) निर्वापित एटले आपत्तिना तापने प्रशमनें करी सुखीयो कस्यो वे (सयलतिहुअणाजोअं के०) समग्र त्रिजुवना जोग एटले परिपूर्ण त्रण जुवन जेणें एवुं चरणयुगल वे. आहीं आजोग शब्द जे वे, ते अनि र्वापणनिषेधार्थ वे, एवा प्रजुना चरणकमलने (जे के०) जे (मणुआ के०) मनुष्यो (संजरंति के०) स्मरण करे वे. (तेसिं के०) ते स्मरण करनार जनोने पूर्वोक्त जे (जलणो के०) दावाग्नि ते (जयं के०) जय प्रत्यें (नकुणइ के०) नथी करतो ॥ ७ ॥

हवे गाथायुग्में करीने जगवंतनो चोथो विषधरजयनिवारकत्व महिमाने देखाडतो वतो कहे वे.

विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥
उग्गजुअंगं नवजल, य सबहं जीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिछूढ विसम विसवेगा ॥
तुह नामरकर फुडसि, ६मत्तं गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥

अर्थः-(विलसंत के०) सुशोजित एवा (जोग के०) फणा वे जेना अथवा (विलसंत के०) सुशोजित वे (जोग के०) देह जेनो एवो तथा (जीसण के०) जयंकर अने (फुरिअ के०) स्फुरित एटले चपल अने (अरुण के०) आरक्त वे (नयण के०) चक्षु जेनां एवो तथा (तरल के०) चंचल वे (जीहालं के०) जिव्हा जेनी एवो (उग्गजुअंगं के०)

ऊग्र जुयंगम एटले जयंकर सर्प वली ते सर्प केहेवो ठे? तो के (नवजलय के०) नवीन जलद एटले आषाढ महिनानो वर्षाद, तेना (सहं के०) सदृश ठे, एटले मेघनी पेरें श्यामवर्णं ठे. वली केहेवो ठे? तो के (जीसणा यारं के०) जीषणाकार एटले जयंकर ठे आकार जेनो, अथवा जयंकर ठे आचार कहेतां वेष्टन एटले आंहिं त्यांहिं ज्रमण जेनुं एवो सर्प ॥७॥ ते ने (कीडसरिसं के०) कीटसदृश (मन्नंति के०) माने ठे. तेने कीटसदृ श कोण माने ठे? तो के (दूर के०) अत्यंत दूर कस्यो ठे (परिबूढ के०) चारे तरफ टाल्यो ठे (विसम के०) आकरो एवो (विसवेगा के०) वि षनो वेग जेणेयें. ते कोणें टाल्यो ठे? तो के हे श्रीपार्श्वनाथ! (तुह के०) तमारुं (नामरकर के०) नामाक्षर तेज (फुड के०) स्फुट ठे प्रजाव जेनो तेणें करीने (सिद्ध के०) सिद्ध थयेलो एवो (मंत के०) गारुडादिकनो मंत्र एटले तमारा नामना जे (पार्श्व) ए बे प्राजाविक अक्षरो ठे,ते अक्षरोयें करीने सिद्ध थयेलो एवो जे गारुडादिक मंत्र, तेणें करीने (गुरुआ के०) गरिष्ठ एटले महोटा एवा जे (नरा के०) मनुष्यो (लोए के०) लोकने विषे ठे, तेणें टाल्यो ठे. तेज पूर्वोक्त सर्पने कीटसदृश माने ठे ॥ ए ॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रजुनुं पांचमुं तस्करजयनिवारकत्व कहे ठे.

अडवीसु जिल्ल तक्कर, पुलिंदसद्दूलसद्दजीमासु ॥
जयविहुरवुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअसडासु ॥१०॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ॥
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥११॥

अर्थः–(अडवीसु के०) सर्व अटवीयोने विषे. ते अटवीयो केहवी ठे? तो के (जिल्ल के०) जिल्ल जे पल्लीवासी लोक, तथा (तक्कर के०) तस्क र एटले चोर, (पुलिंद के०) वनचर जीवो, (सद्दूल के०) शार्दूल सिं ह, तेना मारो, हणो, इत्यादिक जे (सद्द के०) शब्दो तेणें करीने (जी मासु के०) जयंकर बीहामणी एवी, तथा (जय के०) जय तेणें करीने (विहुर के०) विव्हल तथा (वुन्न के०) विषन्न एटले दुःखित एवा पुरु षोने (अकायर के०) अकातर एवा जिल्ल लोकोयें (उल्लूरिअ के०) लूंट्या

बे, (पहिअसब्बासु के०) पंथीयोना साथो जेने विषे एवी अटवीयो बे ॥ १० ॥ एवी अटवीयोमां पण हे श्रीपार्श्वनाथ! (अविलुत्त के०) नथी चोर्युं एवुं (विहवसारा के०) उत्कृष्टधन जेनुं,ते कोण पुरुषनुं उत्कृष्ट धन नथी चोर्युं? तो के (नाह के०) हे नाथ! (तुह के०) तमोने (पणाममत्त के०) प्रणाममात्र करवो, तेज बे (वावारा के०) व्यापार जेमने, एटले ते अवसरनेविषे तमोने प्रणाम करवानुं बे कृत्य जेमनुं एवा पथिको जे बे,तेना (सिग्घं के०) शीघ्र एटले उतावला (विग्घा के०) विघ्नसमूह, (वव गय के०) विशेषें करी गया बे जेथकी एवा पुरुष, (हिअइच्छिअं के०) पोताना हृदयने विषे इच्छित एवा (ठाणं के०) स्वनगरग्रामादिक जे मनोवांछित स्थानक, ते प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त थाय बे॥ ११ ॥

हवे गाथाछयें करीने बहुं सिंहनयनिरासकारक प्रजुनुं माहात्म्य कहे बे.

पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंनबलानोअं ॥ १२ ॥
पणयससंनमपत्थिव, नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ॥
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥

अर्थः–(पज्जलिअ के०) प्रज्वलित एवो जे (अनल के०) अग्नि, तेना सरखां बे (नयणं के०) नेत्र जेनां एवा, तथा (दूरवियारियमुहं के०) दूरथकी फाड्युं बे जक्षण करवाने अर्थें मुख, जेणें एवो, तथा (महा के०) महोटो बे (कायं के०) देह जेनो एवो, तथा (नहकुलिस के०) नखरूप कुलिश जे वज्र, तेना (घाय के०) घात, एटले जे प्रहार, तेणें करी (विअलिय के०)विदलित एटले विशेषें जिन्न कर्यां बे (गइंद के०) गजेंद्र जे हस्ती तेमनां जे (कुंजबल के०) कुंजस्थल तेना (आजोअं के०) आजोग एटले विस्तार जेणें एवो ॥ १२ ॥ अने (कुद्धंपि के०) क्रोधायमान थयो एवो पण (सीहं के०) सिंह जे बे तेने (नगणंति के०) नथी गणता,अर्थात् तेवा सिंहनेविषे पण जयहेतुतायें करी संजावना करता नथी. ते कोण संजावना करता नथी? तो के (पणय के०)नम

ता एवा (ससंजम के०) ससंभ्रम एटले आदरसहित जे (पत्थिव के०) पार्थिव जे राजाउं, ते संबंधीनुं अथवा पृथिवीने विषे विख्यात जे इंद्रो ते संबंधीनुं (नहमणिमाणिक्क के०) प्रभुना नखो तेहीज श्रेष्ठ मणिमाणिक्य तेने विषे (पडिय के०) पड्युं बे (पडिमस्स के०) प्रतिबिंब जेमने एवा तमें बो, ते (तुह के०) तमारा (वयणपहरण के०) वचनें करी जे नामग्रहण करवुं, ते रूप प्रहरण एटले शस्त्रो, ते शस्त्रोने (धरा के०) धारण कर्यां बे जेमणें एवा जनो, सिंहने गणता नथी॥१३॥

हवे गाथायुग्में करीने सातमो गजभयनिरासकारक प्रभुनो अतिशय देखाडतो बतो कहे बे.

ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउल्लाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥
भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न विगणंति॥ जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

अर्थः—(मुणिवइ के०) हे मुनिपते ! (ते के०) ते नरो, (अच्चासन्नंपि के०) अत्यासन्न एटले अतिशयेंकरीने निकटवर्त्ती एटले ढूकडो रहेलो एवो पण (महागइंदं के०) महोटो एवो गजेंद्र तेने (नविगणंति के०) नथी गणता. अर्थात् ते नरो गजभय हेतुनी संभावना करता नथी. हवे ते गजेंद्र केहेवो बे ? तो के (भीमं के०) बिहामणो अतिभयंकर एवो, वली केहेवो बे? तो के (ससि के०) चंद्रमा तेना सरखा (धवल के०) धोला बे (दंतमुसलं के०) बे दांत रूप मुशल जेनें एवो अने (दीह के०) दीर्घ एटले लांबो एवो (कर के०) शुंढादंम तेनुं (उल्लाल के०) उंचुं उमाडवुं, तेणें करीने (वुड्ढि के०) वृद्धिगत थयो बे (उल्लाहं के०) उत्साह जेने एवो, तथा (महु के०) मधु एटले मध तेना सरखुं (पिंग के०) पीतरक्त बे (नयणजुअलं के०) नेत्रनुं युगल जेनुं एवो, तथा वली केहेवो बे ? तो के (ससलिल के०) जलें करी पूर्ण एवो जे (नवजलहरारावं के०) नवीन मेघ, तेना सरखो बे आराव एटले गर्जनारूप शब्द जेनो एवो, अहिं जलधर शब्द जे बे, ते मेघवाची जाणवो, कदापि

तेम न कहियें, तो प्रथम सलिल शब्द ग्रहण करेलो बे,तेथी पुनरुक्ति दो षनी आपत्ति थाय बे माटें. वली ते नरो केहेवा बे? तो के (जे के०)जे नरो, (तुम्हचलणजुअलं के०) तमारा चरणयुगल तेप्रत्यें (समल्लीणा के०) सम्यग्रीतें आश्रयें करीने रह्या एवा बे. ते तमारुं चरणयुगल केहेवुं बे? तो के (तुंग के०) सर्वथकी गुणोयें करीने उन्नत एवुं बे. हवे ए सर्वनो नावार्थ एज बे जे, तमारा चरणाश्रित नरोने एतादृश गजनय होतुं नथी ॥ १५ ॥

॥ हवे गाथायुग्में करीने आठमो प्रजुनो संग्रामनयहरातिशयने कहेतो बतो कहे बे.

समरम्मि तिरकखग्गा, निग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे ॥
कुंतविणिन्निन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरंमि ॥१६॥
निज्जियदप्पुद्धररिउ,नरिंदनिवहा नडा जसं धवलं ॥
पावंति पाव पसमिण,पास जिण तुह प्पनावेण ॥१७॥

अर्थः-(पासजिण के०) हे पार्श्वजिन! तथा (पावपसमिण के०) हे पापना प्रकर्षें करी शमावनहार! (नडा के०) नट जे सुनटो ते,(समरम्मि के०) संग्रामने विषे (तुहप्पनावेण के०) तमारा प्रनावें करीने (धवलं के०) उज्ज्वल एवुं (जसं के०) यश जे बे तेने (पावंति के०) पामे बे. ते नटोयें तमारा प्रनावें करीने (निज्जिय के०) निर्जित एटले जींत्या बे (दप्पुद्धर के०) दर्प जे अहंकार तेणें करी मदोन्मत्त थयेला अर्थात् "अमें योद्धा बैयें."तेवा अनिमान धरनारा एवा (रिउनरिंद के०)शत्रु एवा जे राजाउ तेमना (निवहा के०) समूह जेमणें एवा थाय बे ॥ १७ ॥ हवे पूर्वोक्त संग्राम केहवो बे? तो के (तिरकखग्गा के०) तीक्ष्ण एवा जे खड्ग तेना (अनिग्घाय के) प्रहार तेणें करीने (पविद्ध के०) उबूंखल जेम तेमज (उद्धुय के०) आम तेम नाचवा लाग्यां बे (कबंधे के०) मस्तक रहित धड जेने विषे एवो, तथा वली केहवो ते संग्राम बे? तो के (कुंत विणिन्निन्न के०) कुंत जे नालां, तेमणें विशेषें करी नेदेलां बे अंग जेनां एवा जे (करिकलह के०) हस्तीना त्रीश वर्षना बालको, तेमणें (मु

क्कसिक्कार के०) मूकेला एवा जे सीत्कारो ते सीत्कारातिशयें करीने (पउ रम्मि के०) प्रचुर एवो संग्राम छे. एवा दारुण संग्रामने विषे तमारा प्रजावें करी ते सुजटो जयने पामे छे ॥ १६ ॥

हवे एटला स्तोत्रें करीने कवियें प्रजुनुं आठ जयनिवारणातिशयपणुं पृथक् पृथक् युग्मगाथायें करीने कह्युं, सांप्रत एक गाथायें करीनेज पूर्वे कह्यां एवां जे जयो, तेने निरास करतो छतो कहे छे.

रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण जयाइं॥
पासजिण नाम संकि, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १७ ॥

अर्थः–(रोग के०) रोग जे कुष्टादि, (जल के०) पाणी (जलण के०) अग्नि, (विसहर के०) सर्प, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु, (मइंद के०) सिंह, (गय के०) हस्ती, (रण के०) संग्राम, तेनां (सवाइं के०) सर्व (जयाइं के०) जय ते, (पासजिणनामसंकित्तणेण के०) पार्श्वजिननां श्रद्धा पूर्वक जे नाम,तेनुं जे कीर्त्तन, तेने करवे करीने (पसमंति के०) प्रकर्षे करी शांति पामे छे. अर्थात् प्रशब्दें करीने फरी ते जय उत्पन्न पण थाय नहिं. आ ठेकाणें मंत्र कहे छे. ते जेम केः–"ॐ नमिऊण पास विस विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रींरोग जल जलण विसहर चोरारि मइंद गय रण जयाइं पास जिण नाम संकित्तणेण पसमंति मम स्वाहा ॥" आ महामंत्र छे, ते आ स्तोत्रना वेराएला अक्षरोयें करी उत्पन्न करेलो छे ॥ १७ ॥

हवे आ गाथामां आ स्तोत्रनुं माहात्म्य कहे छे.

एवं महाजयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
जविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥१८॥

अर्थः–(एवं के०) ए पूर्वोक्त रीतें कह्युं एवुं, (पासजिणिंदस्स के०) श्री पार्श्वजिनेंद्रनुं (संथवं के०) स्तवन छे, ते केहेवुं छे? तो के (महाजयहरं के०) महोटुं एवुं जे जय तेने हरनारुं छे, अर्थात् अनर्थप्रतिघातक छे. आ पदें करीने आ स्तोत्रनुं नाम पण जयहर जाणवुं. वली ते केहवुं छे? तो के (उआरं के०) अर्थथकी अने शब्दथकी उदार छे. वली केहेवुं छे? तो के (जवियजणाणंदयरं के०) जव्य जे मुक्तिगमन योग्यजीव, तेने आनंद

करनारुं वे. आहिं कोइ शंका करे के, नवियानंदयरं एम न कह्युं अने नवियजणाणंदयरं एम कहेवानुं शुं कारण? अने कदाचित् पूर्वोक्त पाठ कह्यो हत, तो पण अर्थमां एमज आवत. ते जेम केः—नविकोने आनंद देनारुं वे. त्यां समाधान करे वे के, जो जन शब्दनुं ग्रहण करियें, तो अव्यवहारिक निगोदमां पण नविक जीव वे, तो तेने आनंद थवानो संनव वे नहीं, कारण के ते एकेंद्रिय वे माटें मध्यें जन शब्दनुं ग्रहण कर्युं वे. अहीं व्यवहारराशिमां जे उत्पन्न थाय, तेने जन कहियें माटें नविक एवा जनने आनंदकारक आ स्तवन वे, एम जाणवुं. वली आ स्तवन केहवुं वे? तो के (कल्लाणपरंपरनिहाणं के०) कल्याण जे श्रेय तेनी परंपरा जे संतति तेनुं निदानरूप एवुं वे. आहिं केटलाएक तो पदविनंजन करीने आम अर्थ करे वे, ते जेम केः—(नवियजणाणं के०) नविक जनोने (कल्लाणपरं के०) कल्याणैकस्थान एवुं वे. वली केहेवुं वे? तो के (परनिहाणं के०) परनिनानां एटले पर जे शत्रुउ तेनां निन जे कपट ते उच्चाटनादि तेने (अंदयरं के०) बांधनारुं वे, अर्थात् प्रकारांतरें करी एम जाणवुं जे क्षुद्र कर्मोने स्तंनन करनारुं वे ॥ १ए ॥

हवे आ गाथायें करीने जे कोइ नयस्थानको होय, ते वेकाणें आ स्तवन नणवुं, एवां नयस्थानकोने प्रगट करतो बतो कहे वे.

राय नय जरक रस्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिस्क पीडासु ॥
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥

अर्थः—(रायनय के०) राजनय, (जरक के०) यक्षनय, (रस्कस के०) राक्षसनय, (कुसुमिण के०) कुस्वप्ननय, तथा (डुस्सउण के०) डुःशकुन, एटले डुष्ट शकुननय तथा (रिस्क के०) अशुन ग्रह, ते सर्वनी (पीडासु के०) पीडाउने विषे, तथा (दोसुसंझासु के०) बे संध्या ते एक प्रातःकाल अने बीजी सायंकाल तेनेविषे, तथा (पंथे के०) पंथ जे अरण्यादिक मार्ग तेनेविषे, तथा (उवसग्गे के०) देव अने मनुष्यकृत उपसर्गोने विषे (तह के०) तथा (य के०) च ते समुच्चयार्थवाचक वे. (रयणीसु के०) रात्रियोने विषे ॥ २० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥
पासो पावं पसमेउ, सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

अर्थः–(जो के०) जे कोइ जन, ए उक्तप्रकारें करीने श्रीपार्श्वजिननुं आ स्तव जे छे, तेने (पढइ के०) जणे छे, तथा (जोअनिसुणइ के०) जे उपयोग पूर्वक सांजले छे, (ताणं के०) ते बेहु जननुं (य के०) वली (कइणो के०) आ प्रस्तुत स्तोत्रना कर्त्ता एवा (माणतुंगस्स के०) मानतुंग सूरि तेमना निजप्रजु एवा जे (पासो के०) पार्श्वनामा जिन. आहिं पार्श्व पदें करीने पार्श्वयक्ष ग्रहण करवो नहिं,कारण के ते यक्षने हवे केहेशुं एवां विशेषणोनी अनुपपत्ति छे माटें ते पार्श्वजिन,(पावं के०) पाप ते अशुज कर्म जे राजजयादिकनुं कारण, तेने (पसमेउ के०) विनाश करो. ते पार्श्वजिन केहेवा छे ? तो के (सयलजुवणच्चियचलणो के०) सकल एवुं जुवन जे जगत् तेणें, अहिं जुवनशब्दें करीने त्रिजुवनमां रहेनारा जनो ग्रहण करवा, तेणें अर्चित एटले पूजित छे चरण जेनां एवा छे ॥ २१ ॥

हवे ते पार्श्वजिन केहवा छे? तेनो अतिशय, आ गाथायें करी कहे छे.

उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिउ ॥
सुर नर किन्नर जुवइहिं, संथुउ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥

अर्थः–(उवसग्गंते के०) उपसर्गकारक एवो (कमठासुरम्मि के०) कमठासुर छते पण (जो के०) जे जगवान् (झाणाउ के०) षड्जीव निकाय हितचिंतनरूप एवा ध्यानथकी (नसंचलिउ के०) चलायमान थया नहीं. अर्थात् क्षोज पाम्या नही. वली ते केहवा छे ? तो के (सुर के०) देवो, (नर के०) मनुष्य, (किन्नर के०) किन्नर; (जुवइहिं के०) युवती एटले ते सर्वनी स्त्रीयो तेणें (संथुउ के०) रूडे प्रकारें एटले त्रिधा शुद्धियें करीने स्तुति करेला एवा (पासजिणो के०) श्रीपार्श्वजिन ते (जयउ के०) जयतु एटले उत्कर्षे जयवृद्धिने पामो ॥ २२ ॥

एअस्स मझयारे, अठारस अक्करेहिं जो मंतो ॥
जो जाणइ सो झायइ, परम पयछं फुडं पासं॥२३॥

अर्थः–(एअस्स के०) आ स्तोत्रना (मझयारे के०) मध्यनें विषे

वेरेला अक्षरोयें करी "नमिऊणपासविसहरवसहजिणफुलिंगं" ए (अठा रसअरकरेहिं के०) अढार अक्षरोयें करीने (जो के०) जे चिंतामणिनामा गुप्त (मंतो के०) मंत्र छे, तेने (जो के०) जे (जाणइ के०) गुरु उपदे शथकी जाणे छे, (सो के०) ते, तेवा मंत्रें करीने (पासं के०) पार्श्वनाथने (झायइ के०) श्रीमंत्रमय पार्श्वप्रभुनुं ध्यान करे छे, ते केहवा श्री पार्श्व नाथ छे? तो के (फुडं के०) प्रगटध्यान स्वरूपें करीने (परम के०) उ त्कृष्ट एवुं (पयछं के०) पद जे स्थानक तेने विषे रहेनारा छे ॥ २३ ॥

पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हियएण ॥ अठुत्त
र सय वाहि जय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥
इति श्रीमहाभयहरनामकं पंचमस्मरणंसंपूर्णम्॥५॥

अर्थः–(जो के०) जे जीवो, (संतुठेहियएण के०) संतुष्ट हृदयें क रीने (पासह के०) श्रीपार्श्वनाथनुं (समरण के०) स्मरण जे छे, तेने (कुणइ के०) करे छे, (तस्स के०) ते जीवोना (अठुत्तरसय के०) एक शो ने आठ एवा (वाहि के०) व्याधि संबंधि जे (भय के०) भय, ते (दू रेण के०) दूर प्रत्यें (नासइ के०) नासे छे ॥२४॥ इति नमि० ॥ ५ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अजितशांतिस्तवननाम्नः षष्ठस्मरणस्य प्रारंभः ॥

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥ जय
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

अर्थः–भगवान् गर्भस्थ छते तेमनी विजया देवी माताने पोताना स्वा मी जितशत्रु राजायें द्यूतक्रीडाने विषे न जींती, माटें (अजियं के०) अजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर, (च के०) वली (जिअसव्वभयं के०) जीत्युं छे, इह लोकादिक सप्तविध सर्व भय जेणें एवा, (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ भगवान् ते, जे वखत गर्भमां हता, ते समय पण जगत ना अशिवोनी उपशांतिने करता हवा, अने हमणां पण जे स्मरणथ की जीवने शांतिने करे छे. ते शांतिनामक शोलमा तीर्थंकर केहेवा छे? तो के (पसंत के०) अपुनर्भावें करी निवृत्त थया छे (सव्व के०)

सर्व एवा (गय के०) रोग अने (पावं के०) पाप एटले अशुन कर्म जे मनां एवा ठे, ते (दोवि के०) बेहु पण (जिणवरे के०) जिनवर तेने (पणिवयामि के०) प्रणिपतामि एटले नमस्कार करुं बुं. ते बेहु जिनवर केहेवा ठे? तो के (जय के०) जगत् जे देशनाई प्राणिवर्ग तेना (गुरु के०) तत्त्वोपदेष्टा एवा ठे,अथवा जगतना (गुरु के०) महोटा एवा तथा (संति के०)कषायनो अन्नाव, तथा (गुण के०) ज्ञानादिक गुण तेने (करे के०) करे ठे,अथवा शांतिरूप गुणना करनार ठे ॥१॥ आ,गाथानामक ठंद जाणवो.आ सर्वस्तोत्रना ठंदनुं लक्षण ठंदोरत्नाकरनामक ग्रंथथी जाणवुं ॥

ववगय मंगुल नावे, तेहं विउल तव निम्मल सहावे ॥
निरुवम महप्पनावे, थोसामि सुदिठ सप्नावे ॥२॥ गाहा ॥

अर्थः–(ववगय के०) व्यपगत एटले गयो ठे (मंगुलनावे के०) अशोनन नाव जेमनो एवा, आ कह्युं एवुं ववगयमंगुलनावत्व, तेनेविषे विशेषणद्वारायें करीने हेतु कहे ठे, ते जेम के:–(विउल के०) विस्तीर्ण ते बाह्याभ्यंतर द्वादशविध एवुं (तव के०) तप तेणें करीने (निम्मलसहावे के०) निःकर्मा ठे,स्वसत्तायें करी स्वनाव जेमनो एवा,ते पूर्वनी गाथामां कह्या जे श्री अजितनाथ तथा शांतिनाथ,ते बेहुनी हुं नंदिषेणनामा सूरि, (थोसामि के०) स्तुति करुं बुं. हवे ते बेहु जिन केहेवा ठे? तो के (निरुवम के०) निरुपम, उपमातीत ठे, (महप्पनावे के०) महान् एटले महोटो ठे प्रनाव एटले शक्ति जेनी एवा ठे.अथवा निरुपम एटले महोटो एवो ठे प्रनाव ते माहात्म्य जेनुं एवा ठे. वली केहेवा ठे? तो के (सुदिठ के०) रूडे प्रकारें करी, अर्थात् केवलज्ञान अने केवल दर्शनें करी दीठा ठे (सप्नावे के०) विद्यमान जीवाजीवादिक नावो जेमणें एवा ठे. आहिं ' तेहं' ए जे पाठठे, ते अप्रामाणिक ठे; कारण के तेनुं प्रावाहिकत्वें करीने आगमन ठे,तथापि ते पाठ सर्वजनो नणे ठे,तेथी आहिं लख्यो ठे ॥ २ ॥ आ पण, गाथानामा ठंद जाणवो.

सव्व डुक्क प्पसंतीणं, सव्व पाव प्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं,णमो अजिय संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥

अर्थः–(सव्व के०) सर्वे एवा जे जन्मजरादि विद्यमान कर्म, तेथकी उपनां जे (दुरक के०) दुःख तेनी (प्पसंतीणं के० (प्रशांति थइ छे जेउंने एवा छे, अथवा सर्व योग्य जंतुउंना दुःखनी प्रशांति करी छे जेमणें ए वा छे, तथा (सव्व के०) सर्वे एवां जे प्राणातिपातादिक (पाव के०) पापकर्मो छे, तेनी (प्पसंतिणं के०) प्रशांति थइ छे जेमने एवा छे, तथा वली (अजिअ के०) रागादिकें करी नथी पराजव पामेलो एवो (संति णं के०) शांति एटले उपशम छे जेमनो एवा, (अजिअसंतिणं के०) श्रीअजितनाथजी तथा शांतिनाथजी तेमने (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउं ॥३॥ आ गाथानो श्लोकनामा छंद जाणवो॥

अजिअ जिण सुह प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम
नाम कित्तणं॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव
य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥४॥ मागहिया ॥

अर्थः–(अजिअजिण के०) हे अजितजिन ! तथा (पुरिसुत्तम के०) पुरुष जे मर्त्यलोक तेने विषे उत्तम एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे पुरुषोत्तम ! (तव के०) तमारुं (नामकित्तणं के०) नामनुं जे कीर्त्तन, ते (सुहप्पवत्तणं के०) स्वर्गापवर्ग लक्षण जे सुख, तेनुं प्रवर्त्तन करनारुं एवुं वर्त्ते छे. (तहय के०) तथा वली (धिइ के०) धृति ते चित्तनी स्व स्थतारूप समाधि तथा (मइ के०) मति जे बुद्धि, तेनुं (प्पवत्तणं के०) प्रवर्त्तन एटले प्रकर्षे करीने वर्त्तन करनारुं छे, तथा (जिणुत्तम के०) जिन जे सामान्य केवली, तेने विषे श्रेष्ठ एवा हे (संति के०)श्री शांतिनाथ ! (तवय के०) वली तमारा नामनुं जे (कित्तणं के०)कीर्त्तन छे, ते पण पूर्वोक्तगुणयुक्त छे. कोइ ठेकाणें 'पवत्तण' एवो पाठ छे, तेनो अर्थ पण तेमज जाणवो ॥ ४ ॥ आ गाथानो, मागधिका नामा छंद जाणवो.

किरिया विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्क यरं,
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि गयं॥ अजि
अस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं म
म निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥

अर्थः—(किरियाविहि के०) कायिक अधिकरणीयादिक पच्चीश क्रिया, तेना विधि एटले भेद,तेणें करी (संचिअ के०) संचित करेलां एटले एकठां करेलां एवां जे (कम्म के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्म, तथा (किलेस के०) कषाय तेथकी (विमुक्कयरं के०) मूकावनारा छे, एटले तेथकी अत्यंत अभावना करावनारा छे. अहीं किलेस ते कषाय तेनुं पण कर्मने विषे अंतर्गतपणुं छे, तथापि संसारना कारणनेविषे कषायनुं मुख्यत्वपणुं छे, एवुं सूचन करावाने कषायनुं जूदुं ग्रहण कर्युं छे,तथा (अजिअं के०) तीर्थांतरीय एवा अन्यदर्शनीयो जे ईश्वरादिक देवो छे,तेने वांदवानुं जे पुण्य, तेणें नथी जीत्या जेह एवा छे. (च के०) वली केहवा छे? तो के (गुणेहिं के०) सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक गुणें करीने (निचियं के०) निचित एटले व्याप्त एवा छे. उपलक्षणथी ए गुणोनी प्राप्ति पण भगवानने नमस्कार करवाथकी होय छे. वली केहवा छे? तो के (महामुणि के०) महोटा मुनियो जे ऋषियो तेमनी (सिद्धि के०) अणिमादिक आठ सिद्धियो जे छे,तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थया एवा छे, उपलक्षणथकी ते अणिमादिक आठ सिद्धियोनी प्राप्ति पण भगवंतने नमस्कार करवाथकी थाय छे,एवा (अजिअस्स के०) अजित नामें बीजा तीर्थंकर तेमने अने (य के०) वली जे विघ्नोपशांतिने करे छे, एवा (संति के०) श्री शांतिनाथ नामा शोलमा तीर्थंकर, (महामुणिणोविअ के०) जे महामुनि छे,तेमने अथवा महामुनियोने शांतिना करनार श्रीशांतिनाथ तेमने जे(नमंसणयं के०) विशिष्ट प्रणमन करवुं, ते (मम के०) मुजने (सययं के०) निरंतर, (संतिकरं के०) विघ्नोपशांति करवानुं अने (च के०) वली (निवुइ के०) निर्वृत्ति जे मोक्षसुख तेनुं प्रशस्त, (कारणयंच के०) कारण, (भवतु के०) हो. अहीं भवतु ए पद अध्याहारथी लेवुं. कारण के ए पदमां जे छेल्लुं कारणकं,त्यां क जे छे, ते नमनप्रशंसाने विषे छे ॥५॥ आ, आलिंगनकनामा छंद छे॥

पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥

अर्थः–(पुरिसा के०) हे मनुष्यो ! (जइ के०) यदि एटले जो तमें (डुरकवारणं के०) डुःखनुं प्रतिषेधन करवुं,तेने (विमग्गह के०)विमार्गयथ, एटले खोलो बो,अर्थात् शोध वांबो बो,अने (अ के०) वली (जइ के०)यदि एटले जो (सुरककारणं के०) सुखनुं कारण एटले हेतु तेने पण विमग्गह एटले खोलो बो, शोधो बो, तो (अजिअं के०) श्रीअजितनाथनुं(च के०) तथा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ तेमनुं (सरणं के०) शरण जे त्राण तेने (नावर्ड के०) नाव नक्तियें करीने,परंतु ड्व्यें करीने नहीं,एवुं सूचन करवाने अर्थें नावर्ड ए शब्द ग्रहण कस्यो बे. (पवज्जहा के०)प्राप्त थार्ड. ए बेहु तीर्थंकर केहेवा बे? तो के (अजय के०) निर्जय तेंने (करे के०) करे एवा बे ॥ ६ ॥ आ, मागधिका नामा बंद जाणवो ॥

एम बेहु तीर्थंकरनी स्तवना करीने हवे अनुक्रमें एकेक तीर्थंकरनी स्तुति करे बे. तेमां पण प्रथम श्रीअजितनाथने स्तवे बे.

अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर
असुर गरुल नुयग वइ पयय पणिवइअं॥ अजिअ मह
मविअ सुनय नय निउण मनयकरं, सरण मुअसरिअ
नुवि दिविज महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं॥

अर्थः–(अरइ के०) संयमने विषे अरति अने (रइ के०) असंयमने विषे रति एटले समाधि तथा (तिमिर के०) अज्ञान, तेणें करी (विरहिअ के०) विरहित एवा, अथवा अरति ते मोहनीयउदयथकी उपन्यो जे चित्तोद्वेग अने रति ते मोहनीयोदयथकी उपनी जे चित्ताजिरति, ते बेहु सम्यक् ज्ञानने आबादन करनारी बे,ते रूप तिमिर जे अंधकार,तेणें करी विरहित बे, अने वली (उवरयजरमरणं के०) उपरत एटले निवृत्ति पाम्यां बे जरा अने मरण जेनां अथवा (उवरयजरं के०) उपरत बे जरा जेने तथा वली (अरणं के०) नथी रण ते युद्धादिक क्लेष जेने एवा, वली (सुर के०) वैमानिक देवो, (असुर के०) नवनपति, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, (नुयग के०) नागकुमार, तेना (वइ के०) पति जे इंड्रो उपलक्षणथकी अन्य देवोना पण इंड्रो लेवा. तेमणें (पय

थ के०) रूडे प्रकारें जेम थाय तेम (पणिवइयं के०) प्रणिप्रत्यं एटले नमस्कार कर्यो छे जेने एवा, अथवा (सुर के०) वैमानिक,(असुर के०) जवनपति, (गरुल के०) ज्योतिषी, (जुयगा के०) जुज जे वृक्ष तेने विषे, गा नाम वाले एवा जे व्यंतर, ते वनचर संज्ञायें करीने तेनुं रूढपणुं छे,ए हेतु माटें तेमना (वइ के०) पति तेमणें (पययं के०) शुद्धतायें करीने (पणिव इयं के०) प्रणिपत्य कर्युं छे जेमने एवा छे, वली केहवा छे ? तो के (अविश्र के०) अपिच एटले सर्व समीचीन एवां अन्य विशेषणोयें युक्त एवा तथा (सुनय के०) शोजन एवा जे अनेकांतरूप नैगमादिक नय, तेमनुं (नय के०) प्रतीतिनुं पामवुं, तेने विषे (निउण के०) निपुण माह्या छे, तथा (अजयकरं के०) निर्जयपणाना करनार अथवा जय रहित सुखना आपनारा, एवा जिनना (सरण के०) शरणने (उवस रिश्र के०) उपसृत्य एटले शरणतायें करी प्रतिपादन करीने (जुवि के०) जुविज जे मनुष्यो, (दिविज के०) देवो तेमणें (महिअं के०) पूजित छे एवा; (अजिअं के०) श्रीअजितनाथने (सययं के०) सततं एटले निरंतर (अहं के०) हुं स्तवन करनारो (उवणमे के०) उपनमे एटले सामीप्यें करीने नमस्कार करुं छुं ॥ ७ ॥ आ, संगतनामा छंद जाणवो.

हवे शांतिजिनने स्तवे छे.

तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं,
अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि
निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तम
तित्थयरं, संतिमुणी मम संति समा
हिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥

अर्थः—हुं (तं के०) ते जगत्प्रसिद्ध एवा (संतिमुणी के०) शांतिनामें जे मुनि, तेने (पणमामि के०) श्रद्धापूर्वक प्रणाम करुं छुं. (च के०) च छे ते पादपूर्णार्थ छे, ते शांतिमुनि केहवा छे ? तो के (जिण के०) सामान्य केवली तेने विषे (उत्तम के०) तीर्थंकरपणायें करीने श्रेष्ठ छे, अने (उत्तम के०) प्रधान (नित्तम के०) निस्तम एटले अज्ञानरहित छे,

अथवा निस्तम एटले कांक्षारहित छे, तथा (सत्तधरं के०) सत्र एटले व्यावयङ्क तेने धारण करनारा छे, वली (अज्जव के०) आर्जव, ते निर्मायिकपणुं (मद्दव के०) मार्दव, ते निरहंकारता, (खंति के०) क्षमा, (विमुत्ति के०) निर्लोजता तथा (समाहि के०) समाधि तेमना (निहिं के०)निधि एवा छे, तथा (संतिकरं के०) शांतिक जे विपत्तिनो उपशम, तेने रं एटले आपे छे एवा, वली केहेवा छे ? तो के (दमुत्तम के०) दम जे इंद्रिय दमन एटले इंद्रियनो जय, तेणेंकरीने उत्तम एटले प्रधान छे,वली (तिब्रयरं के०) तीर्थ करावानुं छे शील जेनुं तेने तीर्थंकर कहियें. एवा ते (मम के०) मुजने (संति के०) शांति अने (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि जे चित्तनी स्वस्थता, तेहीज वर एटले वांछितपणुं तेने (दिसउ के०) द्यो, आपो ॥ ८ ॥ आ, सोपानकनामा छंद जाणवो.

हवे श्री अजितनाथने गाथायुग्में करीने स्तवे छे.

सावछि पुव पछिवं च वर हछि मछय पसछ विछिन्न संथियं, थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंधहछि पछाण पछियं संथवारिहं ॥ हछिहछ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लरकणो वचिय सोम चारु रूवं,सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिद्य वर देव ंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ्ढ ॥

अर्थः–(सावछि के०) श्रावस्ति शब्दें करीने अहीं अयोध्या ग्रहण करवी, तेविषे आगमनुं प्रमाण छे,ते जेम केः–"इरकाग नूमिउंद्या,सावछे विणियं कोसलपुरं च" माटे ते अयोध्याने विषे (पुवपछिवं के०) पूर्व एटले दीक्षा ग्रहणथी पहेलां पार्थिव एटले राजा हता, अथवा पूर्वे कहेली एवी अयोध्या तेना पार्थिव एटले राजा, (च के०) चकार पादपूर्णार्थ छे. वली (वर के०) श्रेष्ठ एवो जे (हछिमछय के०) वनहस्ती तेनुं मस्तक तेना सरखुं (पसछ के०) प्रशस्त एटले प्रशंसा करवा योग्य अने (विछिन्न के०) विस्तीर्ण एवुं छे शरीरनुं (संथियं के०) शुज्नसंस्थान जेमनुं

एवा बे तथा (थिर के०) स्थिर कठिन (सरिछ के०) सरखुं अविष म एवुं (वछं के०) वक्ष एटले हृदय बे जेमनुं, अथवा (थिर के०) निश्चल एवुं (सिरिछ के०) श्रीवत्सनामा लक्षणविशेष ते बे (वछं के०) वक्षःस्थलने विषे जेने एवा, तथा (मयगल के०) मदोन्मत्त अने (लीलायमाण के०) लीला करतो एवो (वर के०) प्रधान (गंधहत्थि के०) गंधहस्ती तेनुं जे (पत्थाण के०) प्रस्थान एटले गमन तेनी पेरें (पत्थिअं के०) पदसंक्रमण एटले गति बे जेमनी एवा,तथा(संथवारिहं के०) संस्तव जे स्तुति ते वर्णन करवुं, तेने अर्हएटले योग्य तथा (हत्थिहत्थ के०) हस्तीनो हस्त जे शुंढादंम तेना सरखा सरल तथा लांबा बे (बाहुं के०) बाहु जेना एवा, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं जे (कणग के०) कनक एटले सुवर्ण तेनुं (रुअग के०) रुचक एटले भाजन अथवा आभरण विशेष तेना सरखुं (निरुवहय के०) निरुपहत एटले निष्कलंक एवो (पिंजरं के०) पीतवर्ण बे जेनो एवा, तथा (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवा शंख, चक्र, अंकुशादिक (लरकण के०) लक्षणो तेणें करीने (उवचिय के०) सहित बे व्याप्त बे, तथा (सोम के०) सौम्याकार एवुं अने देखनाराने (चारु के०) मनोहर सुखदायक बे (रूवं के०) रूप जेमनुं एवा, तथा (सुइ के०) श्रुति जे कान, तेने (सुह के०) सुख नी दायक तथा (मण के०) मनने) अभिराम के०) मनोहर आल्हा दकारी (परम के०) अत्यंत (रमणिज्ज के०) रमणिक, अथवा (प र के०) उत्कृष्ट बे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा श्रीमंत जनो तेने,अथ वा (पर के०) दूर बे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा दरिद्री जनो, ते बे हुने (रमणिज्ज के०) रमाडनार एटले संतोष पमाडनार एवी, तथा(व र के०) श्रेष्ठ एवी (देवदुंदुहि के०) देवदुंदुभि तेनो (निनाय के०)शब्द तेना सरखी (महुरयरसुह के०) मधुर तर शुभ कल्याणकारिणी एवी बे (गिरं के०) वाणी जेमनी एवा बे ॥ ए ॥ आ, वेष्टकनामा बंद जाणवो.

अजिअं जिआरिगणं, जिअसवभयं भवो
हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ
मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ ॥ युग्मं ॥

अर्थः—(जिश्रारिगणं के०) जीत्या छे, अष्टकर्मरूप शत्रुना समूह जेणें, तथा (जिअसवजयं के०) जीत्या छे सर्वजय जेणें, एम ए पदनो अर्थ, पूर्वें गयेला पदनी पेरें करवो. तथा तेना पुनरुक्तिदोषपरिहारने अर्थें आम पण अर्थ करवो, ते जेम केः—(जिय के०) जीव ते अहीं पंचेंद्रिय जीव लेवा तेने (सव के०) श्रव्य एटले सांजलवा योग्य छे(जयं के०) जग एटले जाग्य जेमनुं एवा, तथा (जवोहरिउं के०) जव एटले संसार तेनो उघ जे प्रवाह तेना रिपु एटले शत्रु छे. अर्थात् संसारनुं उछेदकपणुं छे जेमने एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ, ते प्रत्यें (पयउ के०) प्रयतः एटले मन, वचन अने कायायें करी उपयुक्त एवो छतो (अहं के०) हुं (पणमामि के०) प्रणाम करुं छुं.अने (जयवं के०) ते जगवान् (मे के०) महारुं (पावं के०) पाप जे छे, तेने (पसमेउ के०) प्रशमतु एटले प्रकर्षे करी शमावो, कारण के पापक्षय छतेज मोक्ष छे, ते विना नथी ॥ १० ॥ आ रासालुब्धकनामा छंद जाणवो.

हवे बे गाथायें करी श्रीशांतिजिनने स्तवे छे.

कुरु जणवय हत्थिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महा च
क्कवट्टि जोए महप्पजावो, जो बावत्तरि पुर वर सह
स्स वर नगर निगम जणवय वई, बत्तीसा राय वर
सहसाणुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानि
हि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी, छन्नवइ गाम कोडि
सामी आसिज्जो जारहम्मि जयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥

अर्थः—(कुरु के०) कुरुनामें (जणवय के०) जनपद एटले देश, तेने विषे (हत्थिणाउर के०) हस्तिनापुर नगर, तेना (नरीसरो के०)राजा ते (पढमं के०) प्रथम थया (तउ के०) तेवार पछी (महा के०) महोटा (चक्कवट्टि के०) चक्रवर्त्ती तेनो (जोए के०) जोग जे राज्य, तेने विषे वर्त्तता हवा, एटले छ खंमना राज्यना जोग जोगव्या (महप्पजावो

के०) महोटो जेनो प्रजाव एटले महिमा ठे, उत्सवोयें करी आत्माने प्रीति करनारी ठे, वली केहेवा ठे ? तो के (जो बावत्तरिपुरवरसहस्स के०) जे बहोंतेर हजार एवा पुरवर ते, जे घरोयें करीने श्रेष्ठ तेने पुरवर कहियें तथा (वरनगर के०) श्रेष्ठ नगर जे गजपुरादि, जेमां कर नहीं, ते नगर कहियें अने (निगम के०) ज्यां महोटा रुद्धिवंत वणिक्व्यवसाय कर नारानी डुकानो होय ते, तथा (जणवय के०) जनपद ते देशविशेष जाणवा तेना (वई के०) अधिपति स्वामी, अथवा प्रकारांतरें बत्रीश स हस्र पुरवर, नगर, निगम, जनपद, तेना स्वामी एवा, अने (बत्तीसारायव रसहसा के०) बत्रीश हजार एवा जे रायवर एटले मुकुटबद्ध राजा ते बत्रीश हजार देशना नायकें (अणुयायमग्गो के०) अनुयात मार्ग ठे जेमनो एटले ते बत्रीश हजार देशना मुकुटबद्ध बत्रीश हजार राजा ते सर्व श्रीशांतिनाथ नामा चक्रवर्त्तीनी पठवाडे चालनारा ठे. वली केहवा ठे? तो के (चउदस के०) चउद ठे (वर के०) श्रेष्ठ एवा (रयण के०) रत्न जेने एवा, तथा (नवमहानिहि के०) नव महोटा निधि एटले नि धान जंमार अखूट ठे जेने, वली (चउसठिसहस्स के०) चोशठ हजार (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवी (जुवईण के०) युवती जे स्त्री तेना (सुंदरवइ के०) सुंदर पति एटले जर्त्तार ठे, वली (चुलसी के०) चोरा शी (सयसहस्स के०) शत सहस्र एटले चोराशी शो हजार अर्थात् चोराशी लाख (हय के०) घोडा तथा चोराशी लाख (गय के०) गज ते हस्ती तथा चोराशी लाख (रह के०) रथ, तेना (सामी के०) स्वामी अधिपति जाणवा. वली कोइ ठेकाणें अढार क्रोड घोडा पण कह्या ठे तथा व ली (ठन्नवइगामकोडि के०) ठन्नुं क्रोड गाम तेना (सामी के०) स्वामी एवा (जयवं के०) जगवान् (जारहम्मि के०) जरतक्षेत्रने विषे (आसि ज्जो के०) होता हवा ॥ ११ ॥ आ वेष्टकनामा छंद जाणवो.

तं संतिं संतिकरं, संतिएं सव्वजया ॥ संतिं थुणामि
जिणं, संतिं वेहेउ मे ॥१२॥ रासानंदियं ॥ युग्मम्॥

अर्थः–(तं के०) ते पूर्वोक्त (संतिं के०) मूर्त्तिमान् उपशमरूप एवा तथा (संतिकरं के०) स्व एटले पोताना अंतिक जे समीप ते मोक्ष

लक्षण, तेने (र के०) आपनार एवा, अने (संतिसं के०) रूडे प्रकारें तखुं छे (सव्व के०) सर्वोयें (जया के०) मृत्यु जेयकी, अर्थात् जेयकी सर्व मृत्युजय तरे छे एवा, (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ (जिणं के०) तीर्थंकर तेने (थुणामि के०) स्तुति करुं बुं. श्या माटें स्तुति करुं बुं? तो के (मे के०) महारा उपसर्गनी (संतिं के०) शांति तेने (वेदेउं के०) विधातुं एटले करवाने अर्थे स्तुति करुं बुं ॥ १२ ॥ आ,रासानंदित छंद छे.

वली अजितनाथने स्तवे छे.

इस्काग विदेह नरीसर, नर वसहा मुणि वसहा ॥
नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअ
रया ॥ अजि उत्तम तेअ गुणेहिं, महा मुणि अ
मिअबला विउल कुला ॥ पणमामि ते नव नय
मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥

अर्थः—(इस्काग के०) इक्ष्वाकुकुलवंशमां उत्पन्न थया माटें हे इस्काग कुलवंश्य! तथा (विदेह के०) विदेहनामा देश तेना (नरीसर के०) नरेश्वर एटले राजा माटे हे विदेहनरेश्वर! तथा (नर के०) मनुष्य तेमां (वसहा के०) वृषन एटले श्रेष्ठ माटें हे नरवृषन! तथा (मुणिवसहा के०) मुनिमांहे एक अद्वितीय एटले मुनिधर्ममां धोरी, अथवा मुनींद्रोनी सजा तेने विषे छे नवो स्तव जेमनो एवा, तेना संबोधने हे मुनिवृषन! तथा (नव के०) नवो उग्यो एवो जे (सारय के०) शारद एटले शरद् ऋतु संबंधी (ससि के०) चंद्रमा तेनी पेरें (सकल के०) शोनावंत छे (आणण के०) आनन एटले मुख जेमनुं माटे हे नवशारदशशिसकला नन! वली (विगयतमा के०) गयुं छे तम ते अज्ञानरूप अंधकार जेना थकी माटे हे विगततम! तथा (विहुअरया के०) विधुत एटले गयुं छे फेडयुं छे निकाचित कर्मरूप रज जेणें माटें हे विधुतरज! तथा (अजित के०)रागादिकें न जीताय माटें हे अजित! तथा (गुणेहिं के०) बाह्य अभ्यंतर एवा गुणोयें करी (उत्तम के०) श्रेष्ठ छे, (तेअ के०) तेज जेमनुं एवा माटें हे उत्तमतेज ! तथा (महामुणि के०) महातपस्वीयो जे महोटा

मुनियो बे, तेउथी पण (अमिअ के०) प्रमाण थइ न शके एवुं बे (बला के०) सामर्थ्य जेमनुं एटले अपरिमितबल बे जेमनुं एवा माटें हे महामुन्यमितबल ! तथा (विउलकुला के०) विपुल एटले विस्तीर्ण बे कुल एटले वंश जेमनो माटें हे विपुलकुल ! तथा (जवजय के०) संसारनुं जय, तेने (मूरण के०) जांजनार माटे हे जवजयमूरण ! तथा (जग सरणा के०) जगतूना शरण एटले रक्षण करनार माटे हे जगच्छरण ! तमे (मम के०) मह्यारा पण (सरणं के०) रक्षण करनारा बो, अथवा (अमम के०) ममत्वरहित बो, माटे हे अमम (ते पणमामि के०) तमोने हुं प्रणाम करुं बुं ॥१३॥ चित्रलेखाबंद. हवे शांतिजिनने स्तवे बे.

देव दाणविंद चंद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम ॥
लठ रूव धंत रूप्प पट्ट सेय सुध्द निध्द धवल ॥
दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर ॥
दित्त तेअ वंद धेअ सव लोअ जाविअ प्पजाव ॥
णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

अर्थः–(देव के०) सुर, (दाणव के०) असुर, तेना (इंद के०) इंद्र, तथा (चंद के०) चंद्रमा अने (सूर के०) सूर्य, तेमने (वंद के०) वंद्यमान बे पग जेना, तथा (हठ के०) आरोग्यवंत (तुठ के०) प्रमोदवंत (जिठ के०) प्रशंसा करवा योग्य (परमलठ के०) अत्यंत कांतियुक्त बे (रूव के०) रूप जेमनुं, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं (रूप्प के०) रूपुं, तेनो (पट्ट के०) पाटो, तेनी पेरें (सेय के०) श्वेत ते घन (सुद्ध के०) निर्मल(निद्ध के०) स्निग्ध अरूक्ष एवी (धवल के०) उज्ज्वल बे (दंतपंति के०) दांतनी पंक्ति जेमनी, तथा (सत्ति के०) शक्ति ते पराक्रम जो सर्व देवता एकठा मले, तो पण परमेश्वरनी पगनी टचली आंगुली चलावी न शके, अथवा मेरु पर्वतने टचली आंगलीयें करी उपाडे, एटली शक्ति बे, (कित्ति के०) कीर्त्ति बे समुद्रांत जेहनी (मुत्ति के०) मुक्ति ते निर्लोजता (जुत्ति के०) युक्ति ते न्यायोपेत वचन, (गुत्ति के०) गुप्ति ते त्रण प्रसिद्ध बे, तेणें करीने (पवर के०) श्रेष्ठ बे तथा (दित्ततेअ के०) दीप्त बे तेजनुं (वंद के०)

वृंद जेमनुं अथवा (वंदधेय के०) सुरेंद्रादिकें वांदवा योग्य छे गणधरादि कने ध्यान करवा योग्य छे, अथवा वांदवा कोग्य जे महामुनियो तेमने ध्यान करवा योग्य स्मरण करवा योग्य एवा छे, तथा (सव्व के०) सर्व ए वा जे (लोअ के०) लोक तेणें (जाविअ के०) जावित छे, अवबुद्ध छे,जा णेलो छे (प्पजाव के०) प्रजाव जेमनो तेणें करी (णेअ के०) ज्ञेय एटले जाणवा योग्य एवा (संति के०) हे श्रीशांतिनाथ ! तमे (मे के०) मुजने (समाहिं के०) समाधिने (पइस के०) प्रदिश एटले आपो ॥ १४ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथायुग्में करीने अजितनाथने स्तवे छे.

विमल ससि कलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर
कराइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं,
धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥१५॥ कुसुमलया॥

अर्थः–(विमल के०) निर्मल एवी (ससिकला के०) चंद्रमानी कला ते थकी (अइरेअ के०) अतिरेक ते अधिक छे (सोमं के०) सौम्यता जेनी तथा (वितिमिर के०) गयो छे मेघनो अंधकार जेथकी एवा (सूरकर के०) सूर्यनांकिरणो, ते थकी पण (अइरेअ के०) अधिक छे (तेअं के०) तेज जेनुं एवा छे, तथा (तिअसवइ के०) त्रिदश जे देवता तेमना पति जे इंद्र तेमना (गण के०) समूह. ते थकी पण (अइरेअ के०) अधि क छे (रूवं के०) रूप जेनुं, जेमाटें सर्व देवना मली पोतानुं रूप एकत्र करी परमेश्वरनी टचली अंगुली पासें मूके, तो पण सुवर्ण अने त्रांबाना रूपमां जेटलो तफावत होय. तेटलो तफावत त्यां देखाय, एवुं तीर्थंकर नुं रूप वखाण्युं छे, तथा (धरणिधर के०) पर्वतो तेमांहे (प्पवर के०) प्र धान श्रेष्ठ एवो जे मेरुपर्वत, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधिक छे (सारं के०) स्थैर्य एटले धैर्य जेमनुं एवा छे ॥१५॥ आ, कुसुमलता नामा छंद जाणवो ॥ आ श्लोक तथा आवता श्लोकनो संबंध एकत्र छे ॥

सत्ते अ सया अजिअं,सारीरे अ बले अजि
अं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि

जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नुअगपरिरंगिअं ॥

अर्थः—तथा(सत्ते के०) सत्त्वने विषे (सया के०) निरंतर (अजिअं के०) अजित छे एटले नहीं पराजवने पामेला एवा छे. चकार पादपूर्णार्थ छे. तथा (अ के०) वली (सारीरे के०) देहसंबंधी जे (बले के०) बल जे सामर्थ्य तेने विषे पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीती शकाय एवा छे तथा (तव के०) बार प्रकारनुं तप (अ के०) वली (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो संयम तेनो समूह तेणें करीने पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीताय एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ नामें (जिणं के०) जिनवर तेमनी (एस के०) आ (थुणामि के०) स्तुति करुं बुं ॥ १६ ॥ आ नुजगपरिरंगितनामा छंद जाणवो ॥

हवे विमलससी इत्यादिक कहेला अर्थने नंग्यंतरें करीने कहे छे.

मोम गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय ससी॥ तेअ गु
णेहिं पावइ न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणेहिं पा
वइ न तं, तिअस गण वई ॥ सार गुणेहिं पावइ न
तं, धरणि धर वई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥

अर्थः—(सोमगुणेहिं के०) सौम्य जे शांतिगुण तेणें करीने (नव के०) नवो उदयमान थयेलो (सरय के०) शरद कालसंबंधी जे (ससी के०) चंद्रमा ते पण (तं के०) ते अजितनाथना सौम्यगुणने एटले सरखी सौम्यताप्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके तथा (तेअगुणेहिं के०) तेज एटले शरीरनी कांतिना गुणें करीने (नवसरयरवी के०) नवो उगेलो एवो जे शरद् कालनो सूर्य, एटले शरद ऋतुमां आकाश निर्मल होवाथी सूर्यनुं तेज श्रेष्ठ होय छे, ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथना कांतिगुणप्रत्यें तुलनाने (नपावइ के०) पामी न शके. तथा (रूवगुणेहिं के०) रूपगुणें करीने (तिअसगणवई के०) त्रिदश जे देवता तेना गण जे समूह, तेना पति जे इंद्र, ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथनुं अनुपमानरूपत्व छे, माटें रूपगुणनी तुलनाप्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (सारगुणेहिं के०) स्थिरताना गुणोयें करीने (धरणिधर के०)

पर्वतो तेनो (वई के०) पति एवो जे कनकाचल एटले मेरुपर्वत, ते पण (तं के०) ते जगवंतना स्थिरतागुणें करीने तुलनाप्रत्यें (न पावइं के०) पामी शके नहीं. अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व पदार्थो जगवंतना गुणनी बराबरी करी शकता नथी ॥ १७ ॥ आ, खिज्जितक नामा छंद जाणवो.

हवे श्री शांतिनाथजीने स्तवे छे.

तित्थवर पवत्तयं तम रय रहियं, धीर जण थुअ च्चिअं
चुअ कलि कलुसं ॥ संति सुह प्पवत्तयं तिगरण पयउ,
संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥

अर्थः—(तित्थवर के०) श्रेष्ठ तीर्थ जे चतुर्विध संघ अथवा प्रथम गणधर तेना (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तक अथवा तीर्थमां वर एटले श्रेष्ठ एवो जे धर्म तेने तीर्थवर कहियें ते धर्मरूप तीर्थना प्रवर्त्तक एवा तथा (तम के०) अज्ञान (रय के०) रज ते बध्यमान कर्म, उपलक्षणथी बंधातुं एवुं जे कर्म, तेणें करी (रहियं के०) रहित एवा तथा (धीर के०) बुद्धियें करी शोभे, तेने धीर कहियें, एवा (जण के०) जन जे छे, तेमणें (थुअ के०) वाणीयें करी स्तुति कस्या अने (अच्चिअं के०) फूलें करी अर्चन कस्या एवा तथा (चुअ के०) छांम्युं छे (कलि के०) वैर अथवा कलह तेनुं (कलुसं के०) कालुष्य एटले पाप जेणें एवा तथा (संति के०) मोक्ष, तेनुं जे (सुह के०) सुख तेने अर्थे (प्पवत्तयं के०) प्रवर्त्तता एवा जे साधु तेने दं एटले पालन करनार अथवा मोक्षसुखना प्रवर्त्तक एटले करनार एवा (महामुणिंसंतिं के०) महोटा मुनि जे श्रीशांतिनाथजी ते प्रत्यें (तिगरण के०) मन, वचन अने काया तेणें करी (पयउ के०) पवित्र छतो एवो (अहं के०) हुं (सरणं के०) शरणप्रत्यें (उवणमे के०) उपनमे एटले जाउं छुं ॥ १८ ॥ आ ललितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे त्रण श्लोकें करी श्री अजितनाथजीने स्तवे छे.

विणओणय सिरि रइ अंजलि रिसिगण संथुअं थि
मिअं ॥ विबुहाहिव धण वइ नर वइ थुय महि अच्चि
अं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर समहिअ

सप्पन्नं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ चार
ण वंदिअं सिरसा ॥१९॥ किसलयमाला ॥

अर्थः—(विणउणय के०) विनयें करी नत एटले नम्या एवा (सिरि के०) मस्तक तेने विषे (रइ के०) रची छे, जोडी छे (अंजलि के०) करसंपुट जेणें एवा (रिसिगण के०) ऋषियोना समूह तेमणें (संथुअं के०) रूडे प्रकारें स्तुति करी छे जेमनी एवा तथा (थिमिअं के०) स्तिमित एटले तरंग रहित एवो जे समुद्र तेनी पेरें निश्चल छे. कारण के कर्मकृत उंच नीचपणानो अनाव छे. तथा (विबुहाहिव के०) विबुधाधिप एटले विबुध जे देवता तेमना अधिप जे इंद्रो तथा (धणवइ के०) धनपति जे धनद कुबेर लोकपाल, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व लोकपाल जे छे, तेमणें तथा (नरवइ के०) नरपति जे राजाउ चक्रवर्त्ती तेमणें (बहुसो के०) घणी वार (थुय के०) वाणीयें करी स्तव्या, (महिअ के०) प्रणामादिकें करी पूजन कस्या एवा तथा (अच्चिअं के०) पुष्पादिकें करी अर्चित कस्या एटले पूज्या एवा तथा (तवसा के०) तपें करीने (अइरुग्गय के०) अचिरोजत एटले तत्कालनो उदय थयेलो एवो (सरय के०) शरद् ऋतुनो (दिवायर के०) दिवाकर एटले सूर्य, तेथकी पण (समहिअ के०) समधिक एटले अत्यंत अधिक छे (सप्पन्नं के०) पोतानी प्रना एटले कांति जेमनी एवा तथा (गयणंगण के०) गगनांगण जे आकाश, तेने विषे (वियरण के०) विचरण एटले विचरवुं, चालवुं, तेणें करीने (समुइअ के०) समुदित एटले एकठा थयेला एवा (चारण के०) जंघाचारणादिक मुनियो, तेमणें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदिअं के०) वंदन कस्युं छे जेमने एवा छे ॥ १९ ॥ आ, किसलयमाला नामा छंद जाणवो ॥

असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देवकोडिसय संथुअं, समण संघ परिवंदियं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥

अर्थः—वली केहेवा छे? तो के (असुर के०) असुर कुमार, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व निकायना नवनपति देवो जे छे, ते पण लेवा. तेमणें (परिवंदिअं के०) समस्त प्रकारें वंदन कस्या एवा

तथा (किन्नरोरग के०) किन्नर अने उरग जे व्यंतरविशेष, तेमणें (णमं सिअं के०) नमस्कार कर्यो डे जेमने एवा तथा (देव के०) वैमानिक दे वो तेमना (कोडिसय के०) कोटिशत एटले शेंकडा गमे कोटियो तेमणें (संथुअं के०) स्तुति करी डे जेमनी एवा, तथा (समणसंघ के०) यतिना संघ अथवा श्रमण एटले चतुर्विध संघ, तेणें (परिवंदिअं के०) परि समंतात् एटले चोतरफथावें करीने वंदन कर्युं डे जेमने एवा डे ॥२०॥ आ, सुमुखनामा छंद जाणवो ॥

अभयं अणहं, अरयं अरुयं ॥ अजियं अ
जिअं, पयर्ड पणमे ॥ २१ ॥ विद्धुविलसिअं ॥

अर्थः–वली केहेवा डे? तो के (अभयं के०) सात प्रकारना नयें क री रहित एवा, तथा (अणहं के०) अनघं एटले जेने अघ जे पाप. ते अ एटले नथी तेने अनघ कहियें एवा.तथा (अरयं के०) अरत एटले वैरागपणायें करीने विषयासक्तपणुं नथी अथवा अरत एटले मैथुन रहि त डे एवा. तथा (अरुयं के०) अरुज एटले रोगरहित डे, तथा (अजि यं के०) बाह्य अने अभ्यंतर वैरीयोयें जेने पराभव पमाड्या नथी एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ तेने (पयर्ड के०) सादरपणे (पणमे के०) प्रणाम करुं हुं ॥ २१ ॥ आ, विद्युद्विलसित नामा छंद जाणवो ॥

हवे चार श्लोकें करीने शांतिनाथजीने स्तवे डे.

आगया वर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं
हुलिअं ॥ ससंभमो अरण, खुभिअ लुलिअ चल कुंमलं
गय तिरीड सोहंत मउलि माला ॥ २२ ॥ वेढ्ढर्ड ॥

अर्थः–(आगया के०) आगता एटले आव्या जे सुरसमुदाय श्रीशां तिनाथनी समीपें ते केवी रीतें आव्या डे? तो के (वरविमाण के०) श्रे ष्ठ विमान तथा (दिव्व के०) मनोहर एवा (कणगरह के०) कनकमयरथ, (तुरय के०) तुरंग तेना (पहकर के०) समूह तेना (सएहिं के०) शेंकडा यें करीने (हुलिअं के०) शीघ्र उतावला वेगें तथा (ससंभम के०)

ससंज्रम एटले सत्वर (उअरण के०) आकाशथकी उतरवुं, तेणें करीने (खुजिअ के०) क्षुजित एटले संचलित बते (लुलिअ के०) लोलायमान अरहां परहां हालतां (चल के०) चंचल एवां (कुंमल के०) काननां आजरण तथा (अंगय के०) अंगद जे बाजुबंध (किरीड के०) किरीट जे मुकुट तेणें करी (सोहंत के०) शोजायमान थइ एवी बे (मउलिमाला के०) मस्तकनी माला जेमनी एवा देवो बे ॥ २२ ॥ आ, वेष्टकनामा बंद जाणवो.

जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेर विउत्ता ज्नत्ति सुजुत्ता॥
आयर जूसिअ संजम पिंमिअ, सुर सुविम्हिअ
सव्व बलोघा॥ उत्तम कंचण रयण रूपविअ,जासुर
जूसण जासुरिअंगा॥ गाय समोणय ज्नत्ति वसागय,
पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥२३॥ रयणमाला ॥

अर्थः—(जं के०) जे जगवंतनी समीपें (सुरसंघा के०) वैमानिकदेवसमूह आव्या बे. ते केहेवा बे? तो के (सासुरसंघा के०) असुर जे जवनपत्यादिक देव तेना संघ जे समूह तेणें करी सहित एवा बे, तथा (वेर विउत्ता के०) वैरविमुक्ता वैररहित बे तथा (ज्नत्तिसुजुत्ता के०) सद्भक्तियें करी बहुमानें करीने सहित एवा तथा (आयर के०) बाह्योपचार रूप आदर तेणें करी (जूसिय के०) जूषित एटले शोजित तथा (संजम के०) उतावलें करी (पिंमिअ के०) एकठा मल्या एवा (सुटु के०) सुष्ठु एटले अतिशयें करी (सुविम्हिअ के०) सुविस्मित जेम होय, तेनी पेरें (सव्व के०) सर्व जे (बल के०) गजतुरंगमादिक कटक, तेनो (उंघा के०) समूह तथा (उत्तम के०) श्रेष्ठ एवुं जे (कंचण के०) सुवर्ण अने (रयण के०) रत्न तेणें करीने (परूविअ के०) प्रकृष्ट रूपयुक्त कर्यां एवा (जासुर के०) दीतिमंत ऊलहलतां जे (जूसण के०) जुजबंध कटकादि आजरणो तेणें करी (जासुरिय के०) देदीप्यमान बे (अंगा के०) अंगो जेमनां एवा, तथा (गाय के०) गात्र ते शरीर, तेणें करीने (समोणय के०) समोन्नत एटले समवनत ते सम्यक् प्रकारें न

भीजूत थया थका तथा (जत्तिवसागय के०) जक्तिने वशें आवेला एटले जाक्तनी आधीनताने प्राप्त थया थका (पंजलि के०) बे हाथ ललाटें लगाडीने (पेसिय के०) प्रेशित एटले कस्यो छे(सीसपणामा के०) मस्तकें करीने प्रणाम जेणें एवा छे ॥ २३ ॥ आ रत्नमालानामा छंद जाणवो.

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो प
याहिणं ॥ पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ
सजवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः—एवी रीतें (वंदिऊण के०) वंदन करीने (तो के०) तेवार पछी (य के०) वली (तिगुणमेव के०) त्रण वारज करी छे (पयाहिणं के०)प्रदक्षिणा जेने अर्थात् त्रण प्रदक्षिणायें करीने उपासित एवा देवो ते,(जिणं के०) श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (य के०) वली (थोऊण के०) वाणीयें करी स्तुति करीने (पुणो के०) फरीने पोताना स्थानकप्रत्यें जवाने अवसरें (जिणं के०) श्रीशांतिजिनप्रत्यें (पणमिऊण के०) प्रणाम करीने एटले नमस्कार करीने (सुरासुरा के०) सुर अने असुर जे देवो छे,ते (पमुइआ के०) प्रमुदिता एटले हर्षित थया थका (सजवणाइं के०) पोताना जवन जे सौधर्मादिक ते प्रत्यें (तो के०) ते स्थानकथकी (गया के०) गता एटले जाता हवा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामा छंद जाणवो.

तं महामुणि महंपि पंजली, राग दोस जय
मोह वज्जिअं॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं,सं
तिमुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः—(तं के०) ते(संतिं के०) श्रीशांतिजिन तेने (अहंपि के०) हुं पण (पंजली के०) प्रांजलि एटले जोड्या छे हाथ जेणें एवो छतो (नमे के०) नमस्कार करुं छुं, ते शांतिजिन केहेवा छे? तो के (महा (मुणिं के०) महोटा मुनियो छे शिष्य जेमना एवा छे तथा (राग के०) माया लोजरूप राग, अने (दोस के०) क्रोध, मान रूप द्वेष,(जय के०) जीति ते उद्वेग. (मोह के०) अज्ञान, तेणें करी (वज्जियं के०) वर्जित छे.

तथा (देवदाणवनरिंद के०) देव, दानव अने नरेंद्र, तेमणें (वंदिअं के०) वंदित छे एटले वांद्या एवा छे, अथवा देव, दानव अने नरेंद्र तथा तदाश्रित लोकोने (वंदि के०) बंदीखानारूप जे संसार, तेने (अं के०) दं एटले खंमन करे एवा छे. तथा (उत्तम के०) प्रधान एवुं (महातवं के०) महोटुं छे तप जेमनुं एवा छे ॥ २५ ॥ आ, क्सिक नामा छंद छे.

हवे अजितनाथने चार श्लोकें करीने स्तवे छे.

अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंस वहु गामिणिआहिं ॥ पीणसोणिथण सालिणीआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥

अर्थः—आ आगलना छंदोमां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाउयें जेमनां चरणारविंदनुं वंदन कर्युं छे तेम छतां पण जेमनुं मन किंचित् पण विकारने पाम्युं नहीं, एवा जे श्रीअजितनाथ जगवान्, तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. हवे ते देवांगनाउ केहवीयो छे? तो के (अंबरंतर के०) आकाशमार्गना अंतरालने विषे (विआरणिआहिं के०) विचरवानुं छे शील जेमनुं तथा (ललिअ के०) रमणीय एवी जे (हंसवहु के०) हंसवधू जे हंसी तेनी पेरें (गामिणिआहिं के०) गमन करवानुं छे शील जेमनुं, तथा (पीण के०) पुष्ट एवो जे (सोणि के०) कटिप्रदेश तथा (थण के०) स्तन ते उरोज तेणें करीने (सालिणिआहिं के०) शोजती एवी तथा (सकल के०) संपूर्ण (कमल के०) पद्म तेनां (दल के०) पत्रो, ते समान छे (लोअणिआहिं के०) लोचन जेमनां एवीयो छे ॥ २६ ॥ आ दीपकछंद छे.

पीण निरंतर थणजर विणमिअ गायलआहिं ॥ मणि कंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वर खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विजूसणिआहिं ॥ रइ कर चउर मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्करा ॥

अर्थः—वली ते देवसुंदरीयो केहवीयो छे? तो के (पीण के०) महो

टा अने कामुक पुरुषना हृदयने आल्हाद कारक एवा अने (निरंतर के०) निर्व्यवधानपणुं ठे ए हेतु माटें निबिड गाढ एवा (थण के०) स्तन जे पयोधर तेनो (जर के०) जार तेणें करीने (विणमिश्र के०) विशेषे करीने नमेला ठे (गायलआहिं के०) गात्रो जेमनां अर्थात् सुकुमारपणुं तथा तनुपणुं ठे माटें लतावल्लीनी पेरें अत्यंत नमेलां ठे शरीर जेमनां एवीयो, तथा (मणि के०) मणियो, माणको अने (कंचण के०) सुवर्ण, तेनी करेली एवी अने (पसिढिल के०) प्रकर्षें करी शिथिल एवी जे (मेहल के०) मेखला, तेणें करीने (सोहिअ के०) शोजित ठे (सोणितडाहिं के०) कटिनो प्रदेश जेमनो एवीयो तथा (वर के०) श्रेष्ठ एवी (खिंखिणि के०) किंकिणी अने (नेउर के०) नेपुर वली (सतिलय के०) मनोहर तिलक तथा (वलय के०) कंकण, एवां जे आजूषण तेणें करीने (विजूसणिआहिं के०) विशेषें करीने सुशोजित एवीयो तथा (रइकर के०) रतिकर एटले प्रीति करनार एवुं तथा (चउरमणोहर के०) चतुर पुरुषना मनने हरण करनारुं एवुं (सुंदरदंसणिआहिं के०) सुंदर ठे दर्शन जेमनुं एवी देवीयो ठे ॥ २७ ॥ आ, चित्राक्षरानामा ग्रंद जाणवो.

देव सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते
सुविक्कमा कमा अप्पणो निडालएहिं मंमणोमण
पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंग तिलय पत्तलेह ना
मएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जत्ति संनिविठ वंद
णागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ नारायत्र ॥

अर्थः—(पायवंदिआहिं के०) पोताना शरीरने विषे पहेरेलां जूषणोनां अथवा शरीरनां पाद जे किरणो तेना वृंद जे समूह ते ठे जेमने एवीयो देवांगनाउ ठे. तेमणें (वंदिया के०) वंदन कस्यां (य के०) च पादपूर्णार्थे ठे. ते शुं वंदन कस्यां ठे? तो के (जस्स के०) जे जगवंतना (ते के०) तो एटले ते प्रसिद्ध एवां अने (सुविक्कमा के०) रूडुं ठे पराक्रम जेनुं अथवा गति जेमनी एवां (कमा के०) चरणारविंद, तेने वंदन कस्यां. ते चरणारविंद शोणें करी वंदन कस्यां? तो के (अप्पणोनिडालएहिं के०) पोतानां लला

टोयें करीने.ते देवीयो केहेवीयो बे? तो के जेमना शरीरने विषे (मंमण के०) आजूषण तेनी (उड्डण के०) रचना तेना (पगारएहिं के०) प्रकारो, ते (केहिंकेहिंवि के०) केहवा केहवा अपूर्व प्रकारो? ते कहे बे.(अवंग के०) अपांग जे नेत्र तेना प्रांतमां जे अंजननी रचना तथा (तिलय के०) तिलक एटले टीलां, (पत्तलेह के०) पत्रलेख ते कस्तूरिकादिकनां शरीरने विषे करेलां जे टबकां इत्यादिक (नामएहिं के०) नाम बे जेनां एवा (चिल्लएहिं के०) देदीप्यमान मंमननी रचनायें करी (संगय के०) संगत एटले मळ्या (अंगआहिं के०) शरीरना अवयव जेमना एवी देवांगना उं ते (जत्तिसन्निविठ के०) जक्तियें करीने व्यासथकी (वंदणा के०) वंदन ने माटें (आगयाहिं के०) आवेलीयो एवीयो बे. ते देवीयोयें (ते के०) ते पूर्वोक्त तमारां चरणारविंद अत्यातिशयें करीने (पुणोपुणो के०) वा रं वार (वंदिआ के०) वंदन करेलां एवां (हुंति के०) बे. अर्थात् तमा रां चरणारविंदने अत्यातिशयथकी (देवसुंदरीहिं के०) देवांगनाउं वा रं वार वंदन करे बे ॥ २७ ॥ आ, नाराचकनामा छंद जाणवो.

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव
किलेसं, पयउ पणमामि ॥ २ए ॥ नंदिअयं ॥

अर्थः–(तं के०) ते पूर्वोक्त (जिणचंदं के०) जिनोमध्यें चंद्रमा समान एवा तथा (जिअमोहं के०) जीत्यो बे मोह एटले अज्ञान जेम णें एवा तथा (धुअ के०)टाल्या बे (सव के०) समग्र एवा जे कर्मज नित शारीरिक अने मानसिक (किलेसं के०) क्लेश जेमणें एवा (अजि अं के०) श्रीअजितनाथनामा बीजा तीर्थंकर तेने (पयउ के०) प्रयत्न ते मन, वचन अने कायाना उद्यमें करी युक्त थको एवो (अहं के०) हुं पण (पणमामि के०) प्रणमन करुं बुं, एटले नमस्कार करुं बुं ॥ २ए ॥ आ, नंदितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथायुग्में करीने शांतिनाथने स्तवे बे.

थुअ वंदिअस्सा रिसीगण देवगणेहिं,तो देव व
हूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण

यस्सा, जत्ति वसागय पिंमिअयाहिं देव वर छरसा
बहुयाहिं सुर वर रइ गुण पंमियआहिं ॥३०॥ जासुरयं॥

अर्थः—श्रीशांतिनाथ जे तेनां चरणारविंदने देवनर्त्तकियो जे छे,तेणें नृत्य करी वंदन कस्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुं छुं. ते शांतिनाथ केहेवा छे? तो के (रिसीगण के०) रुषियोना समूह तथा (देवगणेहिं के०) देवताउंना समूह, तेणें (थुअवंदिअस्सा के०) स्तुति करेला अने वंदन करेला एवा अने (तो के०) तदनंतर (देववहूहिं के०) देववधू जे छे तेमणें (पयउ के०) प्रयत्नथकी (पणमिअस्सा के०) प्रणाम करेला एवा (जस्सजगुत्तमसासणय स्सा के०) जेथकी जगत् मुक्ति पामवाने शक्तिमान् थाय छे माटें उत्तम छे शासन जेमनुं एवा छे. हवे ते देवनर्त्तकीयो केहवी छे? तो के (जत्तिवसा गय के०) जक्तिवशें करीने देवलोकथकी जे आववुं तेणें करीने (पिंमि अयाहिं के०) एकठी मलेली एवीयो अने (देववर के०) नर्त्तक वादक देवो अने नृत्यकुशल एवी (छरसा के०) अप्सराउ तेमना (बहुयाहिं के०) घणाउयें मलेली एवीयो अने (सुरवररइ के०) देवताउने जेथकी प्रीति थाय एवा (गुण के०) गुणोने विषे (पंमियआहिं के०) पंमित एटले माही एवीयो छे ॥ ३० ॥ आ, जासुरकनामा छंद जाणवो.

वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउरकरा जिराम सद्द मीसए कए अ सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जाल घंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलाव ने उराजिराम सद्द मीसए कए अ देव नट्टिआहिं हा व जाव विब्भम प्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंग हार एहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलो य सव्व सत्त संति कारयं ॥ पसंत सव्व पाव दोसमे स हं नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायउ ॥

अर्थः—हवे ते देवनर्त्तकीयोयें केवा प्रकारनां गीत, नृत्य करते छते प्रजुना चरणनुं वंदन कर्युं? ते कहे छे. (वंससद्द के०) वांसनो शब्द एटले

वेणुध्वनि, (तंति के०) वीणा, (ताल के०) चपटी पटहादिक तेणें (मेलि ए के०) मले, एटले एकीकृत थये बते (च के०) वली (तिउरकर के०)त्रि पुष्करनामा वाजित्रविशेष तेना (अजिराम के०) मनोहर एवा (सद्द के०) शब्दो तेणें करीने (मीसए के०) मिश्रित (कए के०) करे बते, तथा व ली (सुइ के०) श्रुति जे कान तेनुं (समाणणे के०) समानन एटले ते सर्व शब्द सांजलवाने विषे काननुं समान करवुं, ते करे थके (सुऊ के०) अनुनासिकादि दोष रहित एवो (सज्ज के०) षड्ज ते मयूर, केका, शं खादिकना ध्वनिविशेषें करीने अथवा सज्ज एटले अधिक गुणयुक्त एवुं जे (गीय के०) गीत तेणें करीने सहित एवी जे (पायजाल के०)पगने विषे जालना आकार वाली एवी (घंटिआहिं के०) घंटिका एटले घू घरीयो तेणें करीने उपलक्षित बते तथा (वलय के०) सोनानां वलियां कंकण, (मेहला के०) मेखला ते कडनुं आजरण, (कलाव के०) अ लंकार विशेष, (नेउर के०) नेफुर तेमनो (अजिराम के०) मनोहर एवो जे (सद्द के०) शब्द तेणें करी (मीसएकए के०) मिश्रित करे बते, (अ के०) वली (हाव के०) बहु कामविकार, (जाव के०) अल्प विकार अजिप्राय, (विप्रम के०) विभ्रम एटले विलास तेमना (प्पगारए हिं के०) प्रकारो बे जेमने विषे एवा (अंगहारएहिं के०) जला अंगना विक्षेपें करीने (देवनट्टिआहिं के०) देवनर्त्तकीयो जे देवांगनाउ तेमणें पू र्वोक्त प्रकारें (नच्चिऊण के०) नृत्यें करीने, (सुविक्कमा के०) सुविक्रमा ए टले उत्तम जेमनुं पराक्रम बे एवा (जस्स के०) जे श्रीशांतिनाथजीना (ते के०) ते जगद्विदित पराक्रमें करी सहित एवा (कमा के०)चरणो तेने (वंदिआय के०) वंदन कस्यां बे. एमां चकार पादपूर्णार्थ बे. एवा (तयं के०) ते (तिलोय के०) त्रिजुवनना (सवसत्त के०) सर्व सत्त्व एटले प्राणीयो तेमने (संतिकारयं के०) शांतिना करनार एवा अने(पसंत के०) प्रशांत थया बे (सवपावदोस के०) सर्व पाप तथा रागादिक दोष जेथकी एवा (उत्तमं के०) उत्तम जे (संतिं के०) श्रीशांति नामा (जि णं के०) जिन तेप्रत्यें (एस के०) आ प्रत्यक्ष, (हं के०) हुं (नमा मि के०) नमस्कार करुं बुं ॥ ३१ ॥ आ, नाराचकनामा बंद जाणवो.

हवे त्रण श्लोकें करी अजितनाथ अने शांतिनाथने स्तवे छे.

छत्त चामर पडाग जूव जव मंमिआ,झय वर मगर
तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसा
गय सोहिआ,सत्थिअ वसह सीह रहचक्कवरंकिया
॥पाठांतर ॥ सिरिवछ सुलंछणा ॥३१॥ ललिययं ॥

अर्थः–(छत्त के०) छत्र, (चामर के०) चामर, (पडाग के०) पताका, (जूव के०) यूप, (जव के०) यव, एवां लक्षणोयें करीने (मंमिआ के०) मंमितसुशोजित एवा तथा (झयवर के०) सिंहादि रूपोपलक्षित ध्वजवर, (मगर के०) मगरमत्स्य, जलजंतु, (तुरय के०) अश्व, (सिरिवछ के०) श्रीवत्स, ते उत्तम पुरुषोना वक्षःस्थलनां होय छे, अने पगमां पण थवानो संजव छे. (सुलंछणा के०) ते सर्व शोजायमान छे लांछन जेमने एवा तथा (दीव के०) द्वीप ते जंबूद्वीपादिक, (समुद्द के०) समुद्र, ते लवणोदधि प्रमुख,(मंदर के०) मेरु पर्वत अथवा प्रासाद पण जाणवो. (दिसागय के०) दिग्गज, जे प्रधान हस्ती,एवा लक्षणें करी एटले आकारें करीने (सोहिआ के०) शोजित एवा छे तथा (सत्थिअ के०) स्वस्तिक, (वसह के०) वृषज, (सीह के०) सिंह, (रह के०) रथ (चक्क के०) चक्र (वर के०) श्रेष्ठ तेणें करी (अंकिया के०) अंकित एटले चिन्हित एवां.पाठांतरें (सिरि के०) लक्ष्मी, (वछ के०) वृक्ष, ते कल्पवृक्षादिक तेना (सुलंछणा के०) जलां शोजन लांछनो छे एटले लक्षणो छे, श्रीशांतिनाथना हाथ पगादिक अंगोने विषे एवा छे ॥३१॥ आ, ललितकनामा छंद जाणवो.

सहाव लठा सम प्पइठा, अदोस दुठा गुणेहिं जिठा ॥
पसाय सिठा तवेण पुठा,सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा
॥ ३२ ॥ वाणवासिया ॥

अर्थः–वली केहेवा छे? तो के (सहाव के०) स्वजावें करीने (लठा के०) ललित एटले शोजायमान छे, तथा (समप्पइठा के०) समा ते अस्थपुट एटले विषमोन्नत रहित एवी जूमिकाने विषे प्रतिष्ठित एटले रह्या छे अथवा असम एटले निरुपम छे प्रतिष्ठा जेमनी एवा छे तथा (अदोसदुठा

के०) रागादिक दोषें करी अडुष्ट छे, एटले रागादिक विकारें करी रहित छे, तथा (गुणेहिं के०) कूर्मोन्नतत्व रक्तादिक जे गुण, तेणें करीने (जिठा के०) ज्येष्ठ एटले महोटा छे, अथवा गुण जे सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षण तेणें करीने ज्येष्ठ एटले वृद्ध छे. तथा (पसाय के०) प्रसाद जे अनुग्रह अथवा रागादिकनो क्षय तेथी जे निर्मलपणुं तेणें करी (सिठा के०) श्रेष्ठ छे तथा (तवेणपुठा के०) बार प्रकारना तपें करीने पुष्ट छे. तथा (सिरीहिं के०) श्री जे लक्ष्मी तेणें करीने (इठा के०) इष्ट छे,अ थवा लक्ष्मीनामक देवीयें जेने पूज्या छे एवा छे. तथा (रिसीहिं के०) ऋषि जे मुनियो, तेमणें (जुठा के०) जुष्टा एटले निरंतर सेव्या छे जेमने एवा छे ॥ ३३ ॥ आ वानवासिका नामाछंद जाणवो.

ते तवेण धुय सव पावया, सव लोअ हिअ मूल
पावया ॥ संथुया अजिअ संति पायया, हुंतु मे
सिव सुहाण दायया ॥३४॥अपरांतिका ॥

अर्थः–(ते के०) ते पूर्वें वर्णन कस्या एवा तथा (तवेण के०) तपें करीने (धुय के०) टाल्युं छे अथवा नस्मीभूत कर्युं छे (सव के०) सर्व एवुं जे शुनाशुन कर्म रूप (पावया के०) पाप जेमणें एवा, वली केहेवा छे ? तो के (सवलोअ के०) सर्व लोक तेने (हिअ के०) हित कारक एवो जे मोक्ष, तेनुं (मूल के०) मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने (पावया के०) प्रापका एटले पमाडनारा छे, तथा जेने (सं थुया के०) पूर्वोक्त प्रकारें शं एटले सुख तेने अर्थें स्तवन कर्युं छे जेमनुं एवा जे (अजिअसंतिपायया के०) श्री अजितशांतिपाद आहीं पाद शब्द पूज्यवाचक छे ते पूज्य, (मे के०) मने (सिवसुहाणदायया के०) शिव सुखना देनारा एवा (हुंतु के०) थाओ ॥ ३४ ॥ आ, अपरांतिका नामा छंद जाणवो ॥

एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति
जिण जुअलं ॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं
गयं सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा ॥

अर्थः-(एवं के०) ए प्रकारें (तवबलविउलं के०) तपोबलें करीने विपुल विस्तीर्ण विशाल एवुं अने (ववगय के०) गयुं छे (कम्मरयमलं के०) कर्मरूप रज अने मल जेमनें एवुं तथा (सासयं के०) शाश्वती एवी तथा (विउलं के०) विपुल विस्तीर्ण छे सुख जेने विषे एवी (गइं के०) गति जे तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थयुं, एवुं (अजिअसंति जिणजुअलं के०) अजितशांतिजिनयुगल एटले बीजा अने शोलमा तीर्थंकरनुं युगल तेने (मए के०) में, (थुअं के०) स्तुति कर्युं छे ॥ ॥ ३५ ॥ आ, गाथा नामक छंद जाणवो.

तं बहु गुणप्पसायं,मुक्क सुहेण परमेण अविसायं ॥नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥३६॥गाहा ॥

अर्थः-वली (तं के०) ते पूर्वोक्त जिनयुगल केहवुं छे? तो के (बहु गुणप्पसायं के०) ज्ञानादिक अनेक गुणोनो छे प्रसाद जेमने एवुं तथा (पर मेण के०) परम उत्कृष्ट एवा (मुक्कसुहेण के०) मोक्षसुख जे तेणें करी (अविसायं के०) नथी विषाद जेमने एवुं जिनयुगल, ते (मे के०) म हारा (विसायं के०) विषाद जे छे तेने (नासेउ के०) नाशने (कुणउ के०) करो, (अ के०) वली (परिसावि के०) आ प्रस्तुत स्तव सांजलनारी जे विद्वानोनी सन्ना ते पण महारी उपर गुणनुं ग्रहण अने दोषनो त्याग ते रूप, (पसायं के०) प्रसादने करो ॥ ३६ ॥ आ पण गाथाछंद जाणवो.

हवे स्तवनना अंतमां मंगलशब्दोयें करीने प्रणिधान कहे छे.

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मन्निनंदिं ॥ परिसावि य सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥

अर्थः-(तं के०) ते अजितशांतियुगल ते,मने (मोएउ के०) मोद एटले हर्षतेने द्यो, आपो (अ के०) अने सर्व लोकोने (नंदिं के०) समाधिने (पा वेउ के०) प्राप्त करो. (अ के०) वली आ स्तवन करनार जे (नंदिसेण के०) नंदिषेण कवि तेने (अन्निनंदिं के०) सर्व प्रकारें समृद्धि सानंदने पमाडो. (य के०) तथा (परिसावि के०) आ स्तवन सांजलनार जे श्रोता जनोनी पर्षदा,

तेने पण (सुहनंदिं के०) सुखवृद्धिने (दिसउ के०) आपो. (य के०) वली (मम के०) मुजने (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो जे संयम तेने विषे (नंदिं के०) आनंदने (दिसउ के०) आपो ॥ ३७ ॥ आगाथा छंद छे.

अहींयां केटलाएक वृद्ध पुरुष एम कहे छे के श्रीशत्रुंजयनी गुफायें श्री अजित, अने शांति चोमासुं रह्या हता, पछी तेब न्ने तीर्थंकरना पूर्वाभिमुख देरां थयां. तिहां एकदा श्रीनेमिनाथना गणधर, श्रीनंदिषेण सूरि तीर्थयात्रायें आव्या थका श्रीअजित शांतिस्तवननी रचना कीधी, ते आहीं सुधी जाणवो.

हवे एना माहात्म्यनी आगली गाथाउ अनेरा बहुश्रुतें कीधी छे, ते वखाणीयें छैयें.

पक्खिअ चाउम्मासे, संवछरिए अवस्स भणिअवो ॥ सो अवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥

अर्थः–(पक्खिअ के०) पांखीना पडिक्कमणाने विषे तथा (चाउम्मासे के०) चोमासाना पडिक्कमणाने विषे तथा (संवछरिए के०) संवत्सरीना पडिक्कमणानी रात्रिने विषे (अवस्स के०) निश्चें (भणिअवो के०) भणवो, ते एक जणें भणेलो एवो जे आ स्तव, तेने (सवेहिं के०) सर्व संघें (सोअवो के०) सांभलवो. कारण के सर्व जनो जो एकज अवसरें एकठा पाठ भणे तो तेमां कोलाहल थवानो संभव छे माटें एकज जणें भणवो अने बीजा सर्व संघ जनोयें सांभलवो. (एसो के०) ए स्तव जे छे ते, (उवसग्गनिवारणो के०) उपसर्ग जे विघ्न, तेनुं निवारण करनारो छे ॥ ३८ ॥ गाथाछंद.

जो पढइ जो अ निसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संति थयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विना संति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥

अर्थः–(जो के०) जे कोइ पुरुष, (अजिअसंतियअं के०) श्रीअजितनाथ अने श्रीशांतिनाथ तेना स्तवनने (उभउकालंपि के०) प्रातःकाल तथा सायंकाल अने अपि शब्द थकी त्रणे काल लेवा तेने विषे (पढइ के०) भणे छे, तथा (जो अ के०) जे वली (निसुणइ के०) निरंतर श्रवण करे छे, तो (तस्स के०) ते पठन करनार अने सांभलनार पुरुषने

(रोगाः के०) रोगो जे छे ते, (नहुहुंति के०) निश्चें होता नथी अने (पु बुप्पन्ना के०) पूर्वोत्पन्न थयेला एवा जे रोगो, ते पण (विनासंति के०) विशेषें करीने नाश पामे छे ॥ ३९ ॥ आ पण गाथाछंद जाणवो.

जइ इच्छह परम पयं,अहवा कित्तिं सुविछडं भुवणे॥
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥४०॥ गाहा ॥

अर्थः-(जइ के०) यदि एटले जो (परमपयं के०) परमपद जे मोक्ष, तेनी (इच्छह के०) इच्छा करो छो, (अहवा के०) अथवा (भुवणे के०) त्रण भुवनने विषे (सुविछडं के०) सुविस्तृत एटले विस्तार पामेली एवी (कित्तिं के०) कीर्त्ति, तेनी इच्छा करो छो, (ता के०) तो (तेलुक्कुद्धरणे के०) त्रण लोकना उद्धार करनारां एवां (जिणवयणे के०) जिनवचनो जे छे, तेने विषे (आयरं के०) आदर सत्कार तेने (कुणह के०) करो ॥४०॥ आ, गाथाछंद छे ॥ इति अजितशांतिस्तवःसमाप्तः ॥६॥

॥ अथ ॥

॥ भक्तामरनामक सप्तम स्मरण प्रारंभः ॥

तेमां प्रथम बे काव्यें करीने देवतानुं नमस्कारात्मक मंगल करे छे.

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं द
लितपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जना
नाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबो
धा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रै
र्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि
तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥

अर्थः-(भक्तामर के०) भक्तिमंत एवा अमर जे देवताउं तेना (प्रणत के०) नमेला एवा जे (मौलि के०) मुकुट, तेने विषे रहेला जे (मणि के०) मणियो, तेनी (प्रभाणां के०) कांतियोने (उद्योतकं के०) प्रका

श करनारुं एवुं, तथा (दलित के०) दलन करी नाख्यो छे (पाप के०) पापरूप जे (तमो के०) अंधकार तेनो (वितानं के०) समूह जेणें एवुं तथा (नवजले के०) संसारसमुद्रने विषे (पततां के०) पडेला एवा (जनानां के०) नव्यजनोने (युगादौ के०) युगने आदें एटले त्रीजा आरा ना अंतमां (आलंबनं के०) आलंबन ते आधारनूत आश्रयरूप एवुं (जिनपादयुगं के०) श्री तीर्थंकरनुं पादयुग, तेने मन, वचन तथा काया यें करी (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (प्रणम्य के०) नमस्कार करीने ॥ १ ॥ (यः के०) जे नगवान् ते, (सकल के०) समस्त एवुं (वाङ्मय के०) शास्त्र तेनुं (तत्त्व के०) रहस्य तेना (बोधात् के०) जाणवाथकी (उद्भूत के०) उत्पन्न थइ एवी जे निपुण (बुद्धि के०) बुद्धि तेणें करी (पटुनिः के०) कुशल एवा (सुरलोकनाथैः के०) देवलोकना नाथ जे इंद्रो, तेणें (जगन्त्रितय के०) त्रण जगतना जे प्राणी तेनां (चित्तहरैः के०) चित्त ने हरण करनारां एवां तथा (उदारैः के०) अर्थथकी अने शब्दथकी उदार एवां निर्दोष (स्तोत्रैः के०) स्तोत्रोयें करीने (संस्तुतः के०) स्तुति करेला छे. (तं के०) ते चोविश जिननी अपेक्षायें सर्व जिनोमां (प्रथमं के०) आद्य एवा (जिनेंद्रं के०) सामान्य केवलीमां इंद्र सरिखा श्री रुषन स्वामी तेने (अहमपि के०) हुं पण (किल के०) निश्चें करी (स्तोष्ये के०) स्तुति करीश ॥ २ ॥ आ, सर्व स्तोत्रना वसंततिलकाछंद छे.

हवे स्तोत्रकर्त्ता श्री मानतुंगाचार्य, पोताना उद्धतपणानो त्याग करे छे.

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्य
तमतिर्विगतत्रपोऽहम्॥बालं विहाय जलसंस्थि
तमिंदुबिंब,मन्यःकइच्छति जनःसहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

अर्थः–(विबुध के०) देवताउं अथवा पंमितो तेणें (अर्चित के०) अर्चन एटले पूजन करेलुं एवुं छे (पादपीठ के०) पादासन एटले पग राखवानुं आसन जेनुं, तेना संबोधनने विषे हे विबुधार्चितपादपीठ! (बुद्ध्या विनापि के०) बुद्धिविना पण एटले पांमित्य विना पण (विगतत्रपः के०) विशेषें करीने गइ छे त्रपा एटले लज्जा जेनी अर्थात् अशक्य वस्तुने विषे

प्रवर्त्तनथकी गतलज्ज ठतो (स्तोतुं के०) स्तुति करवानी (समुद्यतमतिः के०) रूडे प्रकारें प्रयत्नवती करेली ठे बुद्धि जेनी अर्थात् उद्यमवती थइ ठे बुद्धि जेनी एवो (अहं के०) हुं बुं. अहीं दृष्टांत कहे ठे.ते जेम के (जलसंस्थितं के०) जलने विषे रूडे प्रकारें रह्युं एटले प्रतिबिंबित थयेलुं एवुं जे (इंडुबिंबं के०) चंड्रमानुं प्रतिबिंब तेने (सहसा के०) तत्काल (ग्रहीतुं के०) ग्रहण करवाने (बालंविहाय के०) बालक विना एटले बालक मूकीने(अन्यः के०) बीजो (कः के०) कयो (जनः के०) मनुष्य, (इछति के०) इछा करे ठे? अर्थात् बालक विना बीजो कोइ पण बुद्धिमान् जन, जलप्रतिबिंबित चंड्रने ग्रहण करवाने इछतो नथी. तेम हुं पण तमारुं स्तोत्र करवाने बालकनी पेरें अशक्य ठतो पण स्तुति करवाने अजिलाष करुं बुं. माटें मने गतलज्ज बालकज जाणवो ॥ ३ ॥

हवे जगवान्नी स्तुति करवामां बीजाउनी डुष्करता देखाडे ठे.

वक्तुं गुणान् गुणसमुड्! शशांककांतान्,कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजाज्याम्॥४॥

अर्थः–(गुणसमुड् के०) गुणसमुड् एटले हे गुणरत्नाकर! (ते के०) तमारा (शशांककांतान् के०) शशांक जे चंड्रमा,तेना सरखा मनोहर उज्ज्वल एवा (गुणान् के०) गुणो जे ठे तेने (वक्तुं के०) कहेवाने वर्णन करवाने (बुद्ध्या के०) बुद्धियें करीने (सुरगुरुप्रतिमोपि के०) बृहस्पति समान एवो पण (कः के०) कयो पुरुष, (क्षमः के०) समर्थ थाय ठे? अर्थात् कोई पण समर्थ थतो नथी. आहीं दृष्टांत कहे ठे, के जेम (कल्पांतकाल के०) प्रलयकाल जे संहारकाल, तेनो (पवन के०) वायु, तेणें करी (उद्धत के०) उडया एटले उठली रहेला एवा ठे (नक्रचक्रं के०) नक्र चक्र एटले मगरमत्स्यना समूह जेने विषे एवो जे (अंबुनिधिं के०) समुड् तेने (जुजाज्यां के०) बे हाथे करीने (अलं के०) परिपूर्ण (तरीतुं के०) तरवाने (कः के०) कोण (वा के०) वा ते दृष्टांतना अर्थमां ठे (क्षमः के०) समर्थ थाय? अर्थात् एतादृश समुड्ने बे हाथे करी तरवाने कोइ पण समर्थ थ

तो नथी. तेम तमारी स्तुति करवाने बुद्धियें करी बृहस्पति समान पुरुष पण समर्थ थतो नथी ॥ ४ ॥

हवे स्तवन रचनाने विषे प्रयत्न करवानुं कारण कहे छे.

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं वि
गतशक्तिरपि प्रवृत्तः॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो
मृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥५॥

अर्थः—(मुनि के०) मुनि जे मुमुक्षु तेमना (ईश के०) स्वामी, तेने मुनीश कहियें तेना संबोधनने विषे हे मुनीश! हुं तमारुं स्तोत्र करवाने असमर्थ छुं. (तथापि के०) तो पण (तव के०) तमारा (भक्तिवशात् के०) भक्तिना वशथकी एटले भक्तिवशपणायें करी अस्वतंत्र छतो (विगतश क्तिरपि के०) गइ छे शक्ति जेनी अर्थात् स्तोत्र करवामां क्षीण छे शक्ति जेनी एवो छतो पण (सः के०) ते पूर्वोक्त बुद्धिवृद्धिवर्जित एवो (अहं के०) हुं मानतुंगनामा आचार्य, ते (स्तवं के०) तमारी स्तुति तेने (क र्तुं के०) करवाने (प्रवृत्तः के०) प्रवृत्त थयो छुं. त्यां उपमान कहे छे. जेम (मृगः के०) हरिण ते, (प्रीत्या के०) स्नेहें करीनें (आत्मवीर्यं के०) पोतानुं बल तेने (अविचार्य के०) नहिं विचारीने (निजशिशोः के०) पोताना बालकना (परिपालनार्थं के०) रक्षण करवाने अर्थें (मृगेंद्रं के०) सिंहप्रत्यें (किं के०) शुं (नाभ्येति के०) सन्मुख यु द्ध माटें न जाय ? अर्थात् जायज छे. तेम कवि कहे छे के हुं पण त मारी भक्तिवशें करीने स्तुति करवाना सामर्थ्यने न विचारतोथको पण तमारी स्तुति करवाने प्रवर्त्तेलो छुं ॥ ५ ॥

हवे कवि स्तोत्र करवाने असमर्थ छतो पण स्तोत्र करवाने वाचालपणानुं कारण कहे छे.

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव
मुखरीकुरुते बलान्माम्॥ यत्कोकिलःकिल मधौ
मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥

अर्थः—(अल्पश्रुतं के०) अल्प छे श्रुत एटले शास्त्रज्ञान अवधारण जेनुं ए कारण माटें (श्रुतवतां के०) श्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषो एटले बहुश्रुत जनो तेमनें (परिहासधाम के०) हास्य करवानुं स्थानकरूप एवो (मां के०) मने (त्वद्भक्तिरेव के०) तमारी भक्तिज (बलात् के०) बलात्कारथकी स्तोत्र करवाने (मुखरीकुरुते के०) वाचाल करे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. (यत् के०) जे कारण माटें (मधौ के०) चैत्र मासने विषे (कोकिलः के०) कोकिल जे छे, ते (किल के०) सत्य (मधुरं के०) मनोज्ञमधुर स्वरने (विरौति के०) जल्पे छे, बोले छे (तत् के०) ते बोलवाने (चारुचूतकलिका के०) मनोहर एवी आम्रकलिका तेनो (निकर के०) समूह, तेज (एकहेतुः के०) एक कारण छे, तेम मने तमारी भक्तिज एक कारण छे ॥६॥

हवे स्तवन रचनामां जे गुण छे, ते कहे छे.

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षय
मुपैति शरीरभाजाम्॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशे
षमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥

अर्थः—हे जिन! (शरीरभाजां के०) देहने भजनारा एटले देहधारी जे जीवो छे, तेनुं (भवसंततिसन्निबद्धं के०) भव जे जन्म,जरा अने मरणरूप संसार तेनी परंपरायें करी बंधायेलुं एवुं जे (पापं के०) पाप ते,(त्वत्संस्तवेन के०) तमारा रूडा स्तवनें करीने (क्षणात् के०) घडीना छठा भागें करीने (क्षयं के०) क्षयने (उपैति के०) पामे छे. कोनी पेठें पामे छे? तो के (आक्रांतलोकं के०) लोकमां व्यापी रहेलो एवो अने (अलि के०) भ्रमराना सरखो (नीलं के०) श्याम कालो अने (शार्वरं के०) अंधारीरात्रिथकी उत्पन्न थयो एवो जे (अशेषं के०) समस्त (अंधकारं के०) अंधकार जे छे ते, (आशु के०) शीघ्र (इव के०) जेम (सूर्यांशु के०) सूर्यना अंशु जे किरणो तेनो जे प्रकाश तेणें करीने (भिन्नं के०) नाश पामेलो होय छे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले तिमिर नाशमां जेम सूर्यप्रकाश कारण छे, तेम पापक्षयमां तमारो स्तव छे ॥ ७ ॥

हवे स्तवनारंज सामर्थ्यने दृढ करतो बतो कहे बे.

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते त
नुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥ चेतोहरिष्यति सतां
नलिनीदलेषु,मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंडुः॥८॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ ! (इति के०) ए पूर्वोक्तप्रकारें पापनुं हरण करनारा एवा आ स्तोत्रने (मत्वा के०) मानीने (तनुधियापि के०) मंदबुद्धिवालो एवो पण (मया के०) हुं जे बुं, तेणें (तव के०) तमारुं (इदं के०) आ (संस्तवनं के०) स्तवन जे बे, ते करवाने (आरज्यते के०) आरंज कराय बे. ते (तव के०) तमारा (प्रज्ञावात् के०) प्रज्ञावथकी (सतां के०) संत पुरुषो एटले सज्जन पुरुषोनां (चेतः के०) चित्तने (हरिष्यति के०) हरण करशे, परंतु खल पुरुषोनां चित्तने हरण नहिं करे, एवी सूचना करवाने अर्थें (सतां) ए पद ग्रहण कर्युं बे. तिहां उपमान कहे बे, ते जेम केः–(नलिनीदलेषु के०) कमलपत्रने विषे पडेलो एवो जे (उदबिंडुः के०) उदकनो बिंडु, ते कमलना प्रज्ञावें करीने (मुक्ताफलद्युतिं के०) मुक्ताफलनी द्युति एटले कांति तेना जेवी शोजाने (ननु के०) निश्चें (उपैति के०) पामे बे, तेम तमारा प्रज्ञावथी आ महारुं करेलुं जे स्तवन, ते सत्कविविरचित काव्यनी बायाने पामशे ॥ ८ ॥

हवे सर्वज्ञ एवा जगवाननुं स्तवन, ते तो सकलदोष हरणकारक हो, परंतु ते श्रीसर्वज्ञसंबंधिनी कथा पण सकलडुरित हरे बे, ते कहे बे.

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां डुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्त्रकिरणः कुरुते
प्रनैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशनांजि ॥ ए ॥

अर्थः–हे देव ! (अस्त के०) नाश पाम्या बे (समस्तदोषं के०) समग्र दोष जेथकी एवुं (तव के०) तमारुं (स्तवनं के०) स्तवन जे बे, ते (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (त्वत्संकथापि के०) तमारी मात्र आ जव तथा परजवना चरित्रनी कथा जे करवी, ते पण (जगतां के०) जगन्निवासी लो

कोनां (दुरितानि के०) पाप जे छे, तेमने (हंति के०) हणे छे, तिहां उपमा कहे छे, के (सहस्रकिरणः के०) सूर्य जे छे, ते तो (दूरे के०) दूर रहो, परंतु तेनी (प्रजैव के०) प्रजा जे छे, तेज (पद्माकरेषु के०) पद्मना आकर, एटले समूह छे जेमां एवां सरोवरादिक तेने विषे रहेलां एवां जे (जलजानि के०) कमलो तेने (विकाशजांजि के०) विकस्वर एटले प्रकाशने जजनारां एवांने(कुरुते के०) करे छे. अर्थात् सूर्योदय थयाथी पूर्वे प्रवर्त्तनारी एवी सूर्यनी प्रजाज जेवारें कमलने विकस्वर करनारी थाय छे, तेवारें सूर्य पोतें तेनो विकाश करे, तेमां तो शुंज कहेवुं? तेम आहिंयां पण जगवंतनी कथाज जेवारें दुरितनाशिनी छे, तो जगवंतनुं स्तोत्र दुरित निवारण करे, तेमां तो शुंज कहेवुं? ॥ ए ॥

हवे जगवंतना गुणनी स्तुतिनुं फल कहे छे.

नात्यद्भुतं जुवनजूषणजूत ! नाथ, जूतैर्गुणैर्जुवि
जवंतमजिष्टुवंतः॥ तुल्यां जवंति जवतोननु तेन
किं वा, जूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥१०॥

अर्थः-(जुवनजूषणजूत के०) हे जगतने विषे जूषणरूप! अर्थात् हे जगदाजरणसमान! (जूतैः के०) सत्य एटले असत्य नहिं एवा तमारा (गुणैः के०) गुणोयें करीने (जुवि के०) जगतने विषे (जवंतं के०) तमोने (अजिष्टुवंतः के०) स्तुति करनारा एवा जे जनो छे, ते जनो, रूपें तथा गुणें करीने (जवतः के०) तमारी (तुल्याः के०) तुल्य एटले समान (जवंति के०) थाय छे. तेमां (नअत्यद्भुतं के०) अति आश्चर्य नथी. (ननु के०) प्रश्नमां, (नाथ के०) हे नाथ! (यः के०) जे कोइ धनवान् स्वामी, (इह के०) आ लोकने विषे पोताने (आश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो जे सेवक, तेने (जूत्या के०) संपत्तियें करीने, (लक्ष्मीयें करीने) महत्त्वें करीने, (आत्मसमं के०) पोतानी तुल्य (न करोति के०) नहीं करे, तो (वा के०) अथवा (तेन के०) ते स्वामीयें करीने (किं के०) शुं? अर्थात् कांहींज नहीं. तेम स्तवनकर्त्ता कहे छे, के हुं पण तमारी स्तुति करतो छतो तमारी पेठें तीर्थंकर नामकर्मने संपादन करनारो थाइश ॥ १० ॥

हवे भगवद्दर्शननुं फल कहे छे.

दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप
याति जनस्य चक्षुः॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध
सिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं कइच्छेत्॥ ११॥

अर्थः–हे नाथ! (अनिमेषविलोकनीयं के०) मिषोन्मिषरहितपणे करीने जोवा योग्य, एटले दर्शन करवा योग्य एवा (भवंतं के०) तमोने (दृष्ट्वा के०) जोइने (जनस्य के०) ते जोनारा लोकोनां (चक्षुः के०) चक्षुउं जे छे, ते (अन्यत्र के०) तमाराथी व्यतिरिक्त जे अन्य देवो छे, तेने विषे (तोषं के०) संतोषने (नउपयाति के०) न पामे छे, अर्थात् अनिमेषदृष्टियें करीने तमारा दर्शन करनारा एवा जे भव्य जनो, ते तमारे विषेज प्रीतिने पामे छे, परंतु अन्य हरिहरादिक देवोने विषे प्रीति पामता नथी. त्यां दृष्टांत कहे छे. के (शशि के०) चंद्रमा तेनां (कर के०) किरणो तेनी (द्युति के०) कांति तेना सरखी उज्ज्वल छे कांति जेनी एवो जे (दुग्धसिंधोः के०) क्षीरसमुद्र तेनुं (पयः के०) पाणी, तेने (पीत्वा के०) पान करीने (कः के०) कयो पुरुष, (जलनिधेः के०) लवणसमुद्र जे छे, तेनुं (क्षारं जलं के०) न पीवा योग्य एवुं अस्वादिम खारुं पाणी तेने (अशितुं के०) पान करवाने (इच्छेत् के०) इच्छा करे? अर्थात् क्षीरसमुद्रना पाणीसदृश एवुं जे तमारुं दर्शन, तेने त्याग करीने लवणसमुद्रना पाणी तुल्य एवुं जे अन्य देवोनुं दर्शन, तेने कोण करे? अर्थात् कोइ नज करे॥११॥

हवे भगवानना रूपनुं वर्णन करे छे.

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि
भुवनैकललामभूत!॥ तावंतएव खलु तेप्यणवः पृ
थिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति॥ १२॥

अर्थः–(त्रिभुवन के०) त्रण भुवनने विषे (एक के०) अद्वितीय एटले एकज (ललामभूत के०) सुंदरभूत तेना संबोधनने विषे हे त्रिभुवनैकललामभूत! (यैः के०) जे (शांत के०) शांतनामा जे नवमो रस, तेनो (राग के०) भाव तेनी (रुचिभिः के०) छाया छे जेमने विषे एवा (परमाणुभिः के०)

परमाणुउयें करीने (निर्मापितः के०) निर्माण करेला एवा शरीरवाला (त्वं के०) तमें बो. अने (तेपि के०) ते पण (अणवः के०) परमाणुउ (पृथिव्यां के०) जगतने विषे (तावंतएव के०) जगवन्निर्मितमात्रज बे,एट ले ते रागद्वेषनी शांतता रूप परमाणुउ पण (खलु के०) निश्चें जगतमां तेट लाज बे,तेने विषे हेतु कहे बे.(यत् के०) जे कारण माटें (पृथिव्यां के०) पृथिवीने विषे (ते के०) तमारा (समानं के०) सरखुं (अपरं के०) बीजुं कोइ (रूपं के०) रूप (नहि के०) नहिं (अस्ति के०) बे ॥ १२ ॥

हवे प्रजुना मुखनुं वर्णन करे बे.

वक्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेपनिर्जितजग
त्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकर
स्य, यद्वासरे जवति पांमुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

अर्थः–हे नाथ! (सुर के०) देवताउ, (नर के०) मनुष्यो, (उरग के०) जुवनपति अथवा नागकुमार प्रमुख जे देवो तेनां (नेत्र के०) चक्षु, तेने (हा रि के०) हरण करवानुं बे शील जेनुं एवुं बे. वली केहवुं बे? तो के (निः शेष के०) समस्त एवां जे (जगत्त्रितयोपमानं के०) त्रण जुवनने विषे जेनी उपमा देवाय एवा कमल, चंद्र, दर्पणादि पदार्थो ते सर्वना सौंदर्य ने (निर्जित के०) निःशेषपणायें करीने जीत्युं बे जेणें एवुं (ते के०) तमारुं (वक्रं के०) मुख, ते (क्व के०) क्यां? अने (कलंकमलिनं के०) लांबनें करी मलिन तथा (यत् के०) जे (वासरे के०) दिवसने विषे (पांमुपलाशकल्पं के०) खाखराना जाडनुं पांदडुं जेवुं पीलुं पडी जाय, तेना सरखुं (जवति के०) थाय बे. एवुं (निशाकरस्य के०) चंद्रमा तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (क्व के०) क्यां ? अर्थात् तमारा मुखनुं अने चं द्रबिंबनुं उपमेयत्व घटतुं नथी ॥ १३ ॥

हवे जगवजुणोनी व्याप्ति कहे बे.

संपूर्णमंमलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रि
जुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर! ना
थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥१४॥

अर्थः–(त्रिजगदीश्वर के०) त्रण जगतना ईश्वर एटले हे त्रिजगन्ना थ ! (संपूर्णमंडल के०) संपूर्ण छे मंडल जेनुं एवो जे पूर्णिमानो (शशांक के०) चंद्रमा तेनी (कला के०) कला तेनो (कलाप के०) समूह तेना सरखा (शुभ्राः के०) शुभ्र एटले उज्ज्वल एवा (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो ते (त्रिभुवनं के०) त्रण भुवनने (लंघयंति के०) उल्लंघन करे छे, एटले तमारा जे ज्ञान, दर्शनादिक गुणो छे, ते त्रण भुवनथी उपरांत छे, वली (ये के०) जे गुणो (एकं के०) अद्वितीय अने (नाथं के०) त्रण भुवनना स्वामी एवा जगवंतने (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला छे ते गुणो, (यथेष्टं के०) स्वेछायें यथाभिप्रायें (संचरतः के०) सर्वत्र प्रकारें अस्खलनपणे संचरता एटले विचरता एवा छे. (तान् के०) ते गुणोने (कः के०) कयो पुरुष, (निवारयति के०) निवारण करी शके? अर्थात् कोइ पण निवारण करी शके नहिं ॥१४॥

हवे जगवाननुं यथार्थ नामपणुं कहे छे.

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीतं मनागपि
मनोन विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिता
चलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

अर्थः–हे प्रभो! छद्मस्थ अवस्थायें विचरता एवा तमोने (यदि के०) जो (त्रिदश के०) देवताउ तेनी (अंगनाभिः के०) स्त्रीयो जे तेणें (ते के०) तमारुं (मनः के०) मन जे छे ते (मनागपि के०) किंचित् मात्र पण (विकारमार्ग के०) विकारना स्थानकप्रत्यें (न नीतं के०) न पमाड्युं एटले तमारुं मन, कोजने न पमाड्युं तो (अत्र के०) ए ठेकाणें (चित्रं के०) आश्चर्य (किं के०) शुं ? अर्थात् एमां कांइ पण आश्चर्य नथी. त्यां दृष्टांत कहे छे. के (चलिताचलेन के०) चलायमान कस्या छे अचल एटले मोटा महोटा पर्वतो जेणें एवो जे (कल्पांतकालमरुता के०) कल्पांत कालनो वायु एटले प्रलयकालनो वायरो ते वायुयें करीने (कदाचित् के०) क्यारें पण (मंदराद्रिशिखरं के०) मंदराचल एटले मेरुपर्वत तेनुं जे शिखर, ते (किं के०) शुं (चलितं के०) चलायमान थाय ? अर्थात् प्रलय कालना पवनें सर्व पर्वतोने तो चलाय मान कस्या, परंतु मेरुपर्व

तने चलायमान न कर्यो.तेम देवतानी स्त्रीयोयें पण बीजा हरिहरादिक देवोने तो चलायमान कर्या;परंतु तमोने क्षोज पमाडी शकीयो नही॥१५॥

हवे जगवानने दीपनी उपमानी व्यर्थता कहे ले.

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुता चलताचला नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

अर्थः—(नाथ के०) हे नाथ! (त्वं के०) तमें (अपरः के०) विलक्षण एवो बीजोज (जगत्प्रकाशः के०) जगत्प्रकाशक रूप (दीपः के०) दीपक (असि के०) लो. ते केवी रीतें लो ? त्यां कहे ले. (निर्धूमवर्त्तिः के०) निर्गत एटले गयो ले द्वेषरूप धूम्र अने वर्त्ति एटले कामवशतारूप वाट्य जेथकी एवा अपूर्वदीपक तमें लो. अने बीजा लौकिक दीपक जे ले. ते तो धूम्र अने बत्ती तेणें करी सहित होय ले, वली तमें केहवा दीपक लो? तो के (अपवर्जिततैलपूरः के०) अपवर्जित थयो ले स्नेह प्रकाशरूप तैलनो पूर जेथकी एवा दीपक लो अने बीजा लौकिक दीपक तो तैलपूरें करी सहित होय ले. वली तमें केहेवा दीपक लो? तो के (इदं के०) आ (कृत्स्नं के०) समग्र (जगत्त्रयं के०) त्रण जगतने (प्रकटीकरोषि के०) प्रगट करो लो, एटले केवलज्ञानरूप उद्योतें करी प्रकाश करो लो, अने लौकिक दीपक तो केवल गृहमात्रनेज प्रकाशकारक ले. वली तमें दीपक जे लो, ते केहवा लो? तो के (अचलानां के०) पर्वतोने (चलता के०) चलायमान करतो एवो (मरुता के०) वायरो जे ले, तेणें करीने (जातु के०) क्यारें पण (गम्यः के०) जावा योग्य (न के०) नहिं लो. अने लौकिक दीपक जे ले, ते तो पवनथकी जावा योग्य ले ॥ १६ ॥

हवे प्रजुने सूर्यसाथें उपमानी व्यर्थता कहे ले,

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति॥नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रजावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥

अर्थः–(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र ! तमो (लोके के०) जगतने विषे (सूर्यातिशायिमहिमा के०) सूर्यथकी अधिक महिमावाला एवा (असि के०) छो. ते केवी रीतें सूर्यातिशायि छो? तो के (कदाचित् के०) क्यारें पण (अस्तं के०) अस्तपणाने (नउपयासि के०) नथी पामता एवा छो. अने सूर्य तो अस्त पामे छे. तथा वली तमें (नराहुगम्यः के०) राहुयें ग्रसित होता नथी, अने सूर्य तो राहुग्रस्त थाय छे, वली तमें तो (युगपत् के०) समकालें (जगंति के०) त्रण जगतने (सहसा के०) साथेंज (स्पष्टी करोषि के०) प्रकाश करो छो, अने सूर्य तो एक जंबूद्वीपनेज प्रकाश करे छे. तथा तमो तो (अंजोधर के०) ज्ञानावरणादिक पांच आवरणरूप मेघ तेनो (उदर के०) मध्यजाग तेथकी (निरुद्ध के०) रोकायो छे (महाप्रजावः के०) महोटो महिमा जेनो एवा (न के०) नथी अने सूर्य तो मेघना वादलांनो मध्यजाग जे मेघघटा, तेणें रोकाय एवो छे ॥ १७ ॥

हवे विशेषें करी चंद्रोपमान व्यर्थ करतो छतो कहे छे.

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदन
स्य न वारिदानाम्॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प
कांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥

अर्थः–हे नाथ ! (तव के०) तमारुं (मुखाब्जं के०) मुखरूप कमल जे छे ते, (अपूर्व के०) विलक्षण एवुं (शशांक के०) चंद्रमा तेना (बिंबं के०) बिंबरूप (विभ्राजते के०) शोजे छे. ते केवी रीतें? तो के तमारुं मुखरूप कमल तो (नित्योदयं के०) निरंतर उदय पामेलुं छे अने चंद्रबिंब जे छे, ते तो निरंतर उदय थवावालुं थतुं नथी. तथा वली तमारुं मुखाब्ज केहवुं छे? तो के (दलितमोहमहांधकारं के०) मोह एटले अज्ञानरूप महोटा अंधकारने दली नाख्यो छे जेणें एवुं छे, अने चंद्रबिंब तेवा गुणवालुं नथी ते तो मात्र अंधकारनोज नाश करे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो, दुर्वादि जे कुतर्क करनारा वादियो तद्रूप (राहुवदनस्य के०) राहुनुं जे मुख तेनें (नगम्यं के०) ग्रसवा योग्य नथी अने चंद्रने तो राहुनुं मुख ग्रसे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो (अनल्पकांति के०) अल्पकांतिवालुं नथी थतुं अने चंद्रबिंब तो अल्पकांतिवालुं पण क्यारेंक थाय छे. तथा

वली तमारुं मुखाब्ज तो (नवारिदानां के०) मेघोने आछादन करवाने अशक्य छे अने चंद्रबिंबने तो मेघ आछादन करवाने शक्तिमंत छे अने तमारुं मुखकमल तो (जगत् के०) त्रण जगतने (विद्योतयत् के०) प्रकाश करे छे अने चंद्रबिंब तो एक जंबुद्वीपनेज मात्र प्रकाश करे छे,माटें हे प्रभो! अपूर्वशशांकबिंबपणुं ते तमारा मुखकमलने योग्यज छे ॥१८॥

हवे प्रभुना मुखेंदुपासें सूर्य, चंद्रमा पण निःप्रयोजन वाला छे, एवुं देखाडे छे.

किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ!॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥ १९ ॥

अर्थः—(नाथ के०) हेनाथ ! (युष्मन्मुखेंदु के०) तमारा मुखरूप इंदु जे चंद्रमा तेणें (तमस्सु के०) अज्ञानरूप जे अंधकारो ते (दलितेषु के०) दलन करे छते पछी (शर्वरीषु के०) रात्रियोने विषे उदय थनारा एवा (शशिना के०) चंद्रमा तेणें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे ? (वा के०) अथवा (अन्हि के०) दिवसने विषे उदय थनारा एवा (विवस्वता के०) सूर्यें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे? त्यां दृष्टांत कहे छे, के जेम (निष्पन्न के०) पाकेलां एवां जे (शालिवन के०) शालिनां वन, तेणें करी (शालिनि के०) शोभायमान थयेला एवा (जीवलोके के०) मृत्युलोक तेने विषे (जलभारनम्रैः के०) जलनो जे भार तेणें करी नम्र थयेला एवा (जलधरैः के०) मेघोयें करी (कियत्कार्यं के०) शुं प्रयोजन ? अर्थात् कांइ पण कार्यसिद्धि नहिं ॥ १९ ॥

हवे ज्ञानद्वारायें करी अन्यदेवोने तिरस्कार करतो छतो कहे छे.

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु॥तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥

अर्थः—हे नाथ ! (कृतावकाशं के०) अनंत पर्यायात्मक जे पदार्थो, तेने विषे कस्यो छे अवकाश एटले प्रकाश जेणें एवुं (ज्ञानं के०) केवल

ज्ञान ते (यथा के०) जेवी रीतें (त्वयि के०) तमारेविषे (विजाति के०) शोभे बे, (तथा के०) तेवी रीतें (नायकेषु के०) पोतपोताना शासन ना स्वामी एवा (हरिहरादिषु के०) हरि हरादिक जे देवो बे, तेने विषे (एवं के०) ए प्रकारनुं (न के०) नथी शोभतुं. त्यां दृष्टांत कहे बे, केः– (यथा के०) जेवी रीतें (तेजः के०) प्रकाश जे बे, ते (स्फुरन्मणिषु के०) देदीप्यमान जातिवंत मणियोने विषे (महत्त्वं के०) गौरवने (याति के०) पामे बे, (तु के०) वली (एवं के०) ए प्रकारें (किरणाकुले पि के०) कांतियें करीने व्याप्त एटले चलकता एवा पण (काचशकले के०) काचना जे कटका तेने विषे गौरवने (नैवं के०) प्राप्त नथीज थतुं. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान बे. तेवुं अन्य देवोमां नथी ॥ २० ॥

हवे भगवाननी निंदास्तुति कहे बे.

मन्ये वरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं
त्वयि तोपमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन
नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ! भवांतरेपि ॥२१॥

अर्थः–(मन्ये के०) हुं विचार करुं बुं के, (हरिहरादयः के०) हरिह रादिक देवो ते (दृष्टाः के०) दीठा ते (वरंएव के०) सारुंज थयुं. केम के? (येषु के०) जे देवो (दृष्टेषु के०) दीठे बते मारुं (हृदयं के०) हृदय जे चित्त, ते (त्वयि के०) तमारे विषे (तोषं के०) संतोषने (एति के०) पामे बे. अने प्रथम (वीक्षितेन के०) देखेला एवा (भवता के०) तमोयें करीने (किं के०) शुं थयुं? तो के (येन के०) जे तमारा दर्शनें करीने (भुवि के०) पृथ्वीने विषे (कश्चित् के०) कोइ (अन्यः के०) अन्यदेव, (नाथ के०) हे नाथ! (भवांतरेपि के०) अन्यभवने विषे पण (मनः के०) मारुं मन, (न हरति के०) हरण करतो नथी ॥ २१ ॥

हवे मातानी प्रशंसाद्वारायें करीने भगवद्वर्णन करे बे.

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वडपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति भानि
सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

अर्थः—हे नाथ! लोकने विषे (स्त्रीणांशतानि के०) स्त्रीउनो शङ्कडा एटले घणी स्त्रीयो ढे, ते स्त्रीयो, (शतशः के०) शङ्कडो गमे नाना प्रकारना स्वरूप वाला एवा (पुत्रान् के०) पुत्रोने (जनयंति के०) जन्म आपे ढे खरी, परंतु ते (अन्या के०) बीजी (जननी के०) माता जे ढे, ते (त्वडुप मं के०) तमारी उपमा देवाय एवा (सुतं के०) पुत्रने (नप्रसूता के०) उत्पन्न करी शकती नथी. त्यां दृष्टांत कहे ढे, के (सर्वादिशः के०) सर्वे मली आठ दिशाउं जे ढे, ते (जानि के०) अश्विन्यादिक नक्षत्रोने (दधति के०) धारण करे ढे, परंतु (प्राच्येवदिक् के०) एक मात्र पूर्वदिशाज (स्फुरदंशुजालं के०) देदीप्यमान ढे किरणजाल जेनां एवो अने (सह स्त्र के०) हजार ढे (रश्मिं के०) किरणो जेमनां एवा सूर्यने (जनयति के०) उत्पन्न करे ढे. अर्थात् जेम एक पूर्वदिशि सूर्यनी जननी ढे, तेम एक तमारी माताज तमारा सरखा सुपुत्रनी जननी ढे ॥ २२ ॥

हवे प्रजुनी परमपुरुषत्वें करीने स्तुति करे ढे.

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममल
लं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयं
ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र! पंथाः॥२३॥

अर्थः—(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र! जे (मुनयः के०) महर्षि एवा सा धु जनो ढे, ते (त्वां के०) तमोने (तमसः के०) अंधकाररूप डुरित, ते नी (परस्तात् के०) आगल (आदित्य के०) सूर्यना सरखा (वर्ण के०) कांतिवाला एवा अने रागद्वेष रहितपणें करीने (अमलं के०) निर्मल (परमंपुमांसं के०) परम पुमान् एटले निःकर्म सिद्ध एवाने (आमनंति के०) कहे ढे. तथा (त्वामेव के०) तमोने (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (उ पलभ्य के०) निश्चयत्वें करी जाणीने, ते महर्षियो (मृत्युं के०) मृत्युने (ज यंति के०) जींते ढे. माटें (अन्यः के०) बीजो कोइ (शिवःके०) निरुपद्रव एवो (शिवपदस्य के०) मोक्षपदनो (पंथाःके०) मार्ग,(न के०) नथी ॥ २३ ॥

हवे सर्व देवना नामें करीने जिनने स्तवे ढे.

त्वामव्ययं विजुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमी

श्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमने
कमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥

अर्थः—हे प्रजो! (त्वां के०) तमोने (संतः के०) संत पुरुषो जे ठे, ते (प्रव दंति के०) आ प्रमाणें कहे ठे. जे तमें (१) अव्ययं के०) क्षय रहित ठो एटले सदास्थिरैकस्वजावी ठो. वली (२) (विजुं के०) परम ऐश्वर्यें करीने विशेषें शोजो ठो, अथवा कर्मोन्मूलन समर्थ ठो. (३) (अचिंत्यं के०) चिंतवन थइ शके नहीं एवा महिमावंत ठो, अथवा तमारुं स्वरूप कोइथी कला य नहीं एवा ठो. (४) (असंख्यं के०) गुणोनी संख्या रहित ठो, एटले त मारा गुणोनी संख्या थइ शके नहीं एवा ठो. अथवा संख्य एटले युद्ध ते जेने (अ के०) नथी एवा ठो (५) (आद्यं के०) लोकसृष्टि हेतु पणायें करी आद्यमां ठो, अथवा आद्य तीर्थंकर ठो. अथवा पंच परमेष्ठिमध्ये आद्य ठो. (६) (ब्रह्माणं के०) अनंत आनंदें करी सर्वथकी अधिक वृद्धि वाला ठो, माटें ब्रह्म ठो, निवृत्तिरूप ठो. (७) (ईश्वरं के०), ईश्वरशील ठो, सर्व देवना ईश्वर ठो. (८) (अनंतं के०) ज्ञानदर्शनना योगथी अनंत ठो, अथवा अंत रहित ठो. (९) (अनंगकेतुं के०) कामदेवने ठेदवा पणायें क रीने केतु ठो. एटले जेम जगत्नो नाश करवाने केतु जे पूंठडीयो तारो ते कारणजूत ठे, तेम तमें पण कंदर्पना नाश करवाने कारणजूत ठो. (१०) (योगीश्वरं के०) योगी एटले मन, वचन अने कायारूप व्यापारने जीतनारा एवा जे सामान्यकेवली तेना ईश्वर ठो. (११) (विदितयोगं के०) विदित ए टले ज्ञात ठे, अवगत ठे ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप योग हस्तामलकवत् जेने अ थवा ज्ञानी पुरुषोयें तमारायकी अष्टविध योग जाण्यो ठे एवा ठो, तथा (१२) (अनेकं के०) ज्ञानें करी सर्वगत होवाथी सर्वव्यापक ठो, माटें पर्यायथी अनेक ठो, (१३) (एकं के०) अद्वितीय उत्तमोत्तम ठो, अथवा जीव द्रव्या पेक्षायें द्रव्यथकी एक ठो अने अनन्य स्वरूपपणुं ठे. (१४) (ज्ञानस्वरूपं के०) क्षायिक केवलज्ञान रूपत्व ठो, माटें क्षायिक स्वरूपी ठो. (१५) (अ मलं के०) अष्टादश दोषरूप पापमल रहित ठो ॥ २४ ॥

हवे बीजो अर्थ करी बीजा देवने नामें जिननी स्तुति करे ठे.

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि

जुवनत्रयशंकरत्वात्॥ धातासि धीर! शिवमार्गविधे
र्विधानात्,व्यक्तं त्वमेव जगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥२५॥

अर्थः—हे नाथ! (विबुधार्चितबुद्धिबोधात् के०) देवताउयें अर्चित एटले पूजित कस्यो ठे केवलज्ञाननो बोध जेमनो माटें (त्वमेव के०) तमेंज (बुद्धः के०) बुद्ध देवता ठो, एटले ज्ञाततत्त्वी ठो तथा (जुवनत्रयशंकरत्वात् के०) त्रण जुवनने सुखना करनार होवाथी (त्वं के०) तमें (शंकरोसि के०) शंकर देवता ठो. अन्यपक्षमां जे शंकर देवता ठे ते तो नग्न, कपाली, जैरव, संहारक, तेणें करीने ते यथार्थनामा शंकर नथी. तथा (धीर के०) हे धीर! तमेंज (शिवमार्ग के०) मोक्षमार्ग तेनो (विधेः के०) रत्नत्रययोगरूप क्रिया तेना (विधानात् के०) निःपादन करवाथकी (धाता के०) विधाता एटले संपन्न (असि के०) ठो. अर्थात् तमेंज ब्रह्मदेव ठो. अन्यपक्षमां जे ब्रह्मा ठे, ते तो जड ठे, अने तेणें तो वेदोपदेशथकी नरकपथ उघाड्यो ठे, ते माटें यथार्थ ते ब्रह्मा नथी. वली (जगवन् के०) हे जगवन्! (त्वमेव के०) तमेंज (व्यक्तं के०) प्रगटपणे (पुरुषोत्तम के०) पुरुषोत्तम ते नारायण देव, (असि के०) ठो. अन्यपक्षमां जे पुरुषोत्तम कृष्ण ठे, ते तो सर्वत्र कपटवशथकी यथार्थ पुरुषोत्तम नथी॥ २५॥

हवे वली फरीने जिनने नमस्कार करतो ठतो कहे ठे.

तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ, तुज्यं नमः क्षि
तितलामलजूषणाय॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुज्यं नमोजिन! जवोदधिशोषणाय॥ २६॥

अर्थः—(नाथ के०) हे नाथ! (त्रिजुवनार्त्तिहराय के०) त्रण जुवननी आर्त्ति जे पीडा तेने हरण करनारा एवा (तुज्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. तथा (क्षितितल के०) पृथिवीतल तेने विषे (अमल के०) निर्मल (जूषणाय के०) अलंकाररूप ठो अथवा पृथिवीतल जे पाताल अने अमल जे स्वर्ग तेना जूषणरूप एवा (तुज्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. तथा (त्रिजगतः के०) त्रण जगतना (परमेश्वराय के०) प्रकृष्ट प्रज्ञु एवा (तुज्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो.

तथा (जिन के०) हे श्रीवीतराग! (नवोदधि के०) संसाररूप समुद्र, तेने (शोषणाय के०) शोषण करनारा एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. अहींयां तुभ्यं ए एक वचन ग्रहण कर्युं बे, ते सर्व अन्य देवोना निषेध सूचनार्थ कर्युं बे ॥ २६ ॥

हवे निंदास्तुति कहे बे.

कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजा तगर्वैः, स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७॥

अर्थः-(मुनीश के०) हे मुनियोना ईश्वर ! (नाम के०) नाम ए प द जे बे, ते कोमलामंत्रणमां बे. (यदि के०) यदिशब्द अंगीकारार्थमां बे. (त्वं के०) तमें (अशेषैः के०) समग्र एवा (गुणैः के०) गुणोयें (निरवकाशतया के०) निरंतरपणे (संश्रितः के०) रूडा प्रकारें आश्र य करायेला बो (अत्र के०) एने विषे (कोविस्मयः के०) शुं आश्चर्य? अर्थात् कांहिं नहिं. अने (उपात्त के०) ग्रहण करेला एवा जे (विविधाश्र य के०) विविध आश्रयो, तेणें करीने (जात के०) उत्पन्न थया एवा (गर्वैः के०) गर्वरूप जे अवगुण तेना (दोषैः के०) दोषोयें करीने सहित एवा जनोयें तमो (स्वप्नांतरेपि के०) स्वप्नांतरने विषे पण (कदाचिदपि के०) क्यारें पण (नईक्षितोसि के०) जोयेला नथी ॥ २७ ॥

हवे केटलाएक प्रातिहार्यनें प्रगट करतो जिननी स्तुति करे बे.

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम लं नवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो वितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥

अर्थः-हे जिन! आठ प्रातिहार्यमांहेलो प्रथम प्रातिहार्य, (उच्चैरशो कतरु के०) प्रभुना अंगथकी बार गुणो उंचो एवो जे अशोकवृक्ष तेने विषे (संश्रितं के०) आश्रय करीने रहेलुं अर्थात् अशोकनी नीचें बेठे ला बो, ते समयें (उन्मयूखं के०) उंचा बे अधिक बे मयूख एटले कि रणो जेनां एवुं (नवतः के०) तमारुं (रूपं के०) शरीर ते (नितांतं

के०) अत्यंत (अमलं के०) निर्मल (आजाति के०) शोजे बे. त्यां दृष्टांत कहे बे, के (स्पष्टोल्लसत्किरणं के०) प्रगट उंचां गयेलां बे किरणो जेनां एवुं (रवेः के०)सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब जे बे, ते (पयोधर के०) मेघ, तेना (पार्श्ववर्त्ति के०) पार्श्वमां वर्त्ततुं एटले पासें रह्युं थकुं (इव के०) जेम होय नहिं ? एटले सूर्य पोतानां प्रकाशित किरणो वडे करीने (अस्ततमोवितानं के०) अंधकारना समूहने अस्त करी नाखीने एटले नाश करीने शोजाने पामे बे, तेम तमें अशोकवृक्षनी नीचें बेठा थका शोजाने पामो बो ॥ २८ ॥

हवे वली पण जगवंतना शरीरनुं वर्णन करे बे.

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव
वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलता
वितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

अर्थः—हे देव! (मणि के०) मणियो तेनां (मयूख के०) किरणो, तेनी (शिखा के०) पंक्तियो, तेणें करीने (विचित्रे के०) चित्र विचित्र एवुं (सिंहासने के०) सिंहोपलक्षित आसन, तेने विषे (कनक के०) सुवर्ण तेना सरखुं (अवदातं के०) मनोज्ञ एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोजे बे. त्यां दृष्टांत कहे बेः—(तुंगं के०) उंचो एवो जे (उदयाद्रि के० (उदयाचल पर्वत तेना (शिरसि के०) शिर उपर जे (वियत् के०) आकाश तेने विषे जेनां (विलसत् के०) उद्योत मान (अंशु के०) किरणो तेनी (लता के०) शाखाउ तेनो (वितानं के०) समूह बे जेने एवो (सहस्ररश्मेः के०) सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (इव के०) जेम शोजाने पामे बे, तेम प्रजुनुं शरीर सिंहासन उपर शोजाने पामे बे ॥ २९ ॥

हवे फरी पण प्रकारांतरें जगवानना शरीरनुं वर्णन करे बे.

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः
कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥

अर्थः—हे नाथ! (कुंद के०) मोघरानां पुष्प,तेना सरखां (अवदात के०) उ ज्ज्वल अने (चल के०) चंचल एटले इंद्रादिकें वींजेलां एवां जे (चामर के०)बे चामरो तेणें करीने (चारुशोभं के०) मनोहर छे शोभा जेनी एवुं, अने (कल धौतकांतं के०) सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोभे छे, त्यां दृष्टांत कहे छे. (उ द्यत् के०) उदय पामेलो एवो (शशांक के०) चंद्रमा तेना सरखुं (शुचि के०) निर्मल अने (निर्झर के०) निर्झरणानी (वारिधारं के०) जल धारा जेने विषे वही रह छे एवुं (शातकौंभं के०) सुवर्णमय जे (सुरगिरेः के०) मेरुपर्वत तेनुं (उच्चैः के०) उंचुं एवुं (तटं के०) तट एटले शिखर ते जेम शोभे छे (इव के०) तेनी पेरें तमारुं शरीर पण शोभे छे ॥ ३० ॥

हवे छत्रत्रयनामा प्रातिहार्यने वर्णन करतो छतो कहे छे.

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थ
गितभानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृ
द्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

अर्थः—हे प्रभो ! (शशांककांतं के०) चंद्रमाना सरखुं मनोहर एवुं (उच्चैःस्थितं के०) तमारी उपर रह्युं अने (स्थगितभानुकरप्रतापं के०)ढां की दीधो छे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणें एवुं तथा (मुक्ताफल के०)मो ती तेना (प्रकर के०) समूह तेनी (जाल के०) रचना, तेणें करीने (विवृ द्धशोभं के०) विशेषें करी वृद्धि पामी छे शोभा जेनी एवुं, (त्रिजगतः के०) त्रण जगत् जे छे तेनुं (परमेश्वरत्वं के०) परमेश्वरपणुं तेने (प्र ख्यापयत् के०) प्रकर्षें करीने जणावनारुं एवुं (तव के०) तमारुं (छत्र त्रयं के०) छत्रत्रय जे छे, ते (विभाति के०) शोभे छे एटले तमोने छ त्रातिछत्र एवां त्रण छत्र जे धराय छे, ते त्रण जगतनुं प्रभुत्व प्रख्यापन करे छे. तिहां एक छत्रें करी पाताल लोकनुं प्रभुत्व सूचन कराय छे, बी जा छत्रें करी मृत्युलोकनुं स्वामित्व सूचन कराय छे, अने त्रीजा छत्रें क री देवलोकनुं स्वामित्व सूचन कराय छे ॥ ३१ ॥

हवे अतिशय द्वारायें जिनने स्तुति करतो बतो कहे बे.

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयूख
शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र!
धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र! (उन्निद्र के०) विकसित (हेम के०) सुवर्णनां (नव के०) नवसंख्या बे जेनी अथवा नवीन एवां (पंकज के०) कमल, तेना (पुंज के०) समूह तेनी (कांति के०) द्युति तेणें करीने (पर्युल्लसत् के०) चारे तरफ उबलतां एवां, (नखमयूख के०) परमेश्वरना पगना नख तेनां जे किरणो तेनी (शिखा के०) प्रकाशपंक्ति जेने आसमंतात नागमां फेली रही बे तेणें करीने (अभिरामौ के०) मनोहर एवां (तव के०) तमारां (पादौ के०) चरणो ते, (यत्र के०) जे नूमिनेविषे (पदानि के०) गमननां स्थानकप्रत्यें (धत्तः के०) धारण करे बे, (तत्र के०) ते स्थलने विषे (विबुधाः के०) देवताउ (पद्मानि के०) कमलोने (परिकल्पयंति के०) रचना करे बे. एटले बे कमल चरणनी नीचें अने सात कमल मार्गमां रचे बे. अहीं नख कमलनी कांति दर्पण सदृश बे, अने देवताउयें रचेलां एवां सुवर्णकमलनी कांति पीत बे, ते बेहुना मलवाथी चरणोनो विचित्र वर्ण थयो ॥ ३२ ॥

हवे एक अतिशयें करीने बीजाउने उत्क्षेप करता उपसंहार करे बे.

इबं यथा तव विनूतिरनूज्जिनेंद्र!, धर्मोपदेशनवि
धौ न तथा परस्य॥ यादृक् प्रना दिनकृतः प्रहतांध
कारा, तादृकुतोग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे सामान्य केवलीने विषे इंद्र तुल्य! फुर्गतियें पडता प्राणीनें धरी राखे एवो जे श्रुत चारित्र लक्षण (धर्म के०) धर्म, ते धर्मना (उपदेशनविधौ के०) उपदेश विधिने विषे एटले उपदेश करवाना समयने विषे, (इबं के०) ए पूर्वें कही एवी (तव के०) तमारी (विनूतिः के०) अतिशयनी संपदा ते, (यथा के०) जे प्रकारें (अनूत् के०)

थइ (तथा के०) तेवी (परस्य के०) बीजा जे हरिहरादिक देवो छे, तेनी (न के०) नथी थती. त्यां दृष्टांत कहे छे. के जेम (प्रहत के०) प्रकर्षें करी हण्यो छे (अंधकारा के०) अंधकार जेणें एवी (दिनकृतः के०) सूर्य जे तेनी (यादृक्प्रभा के०) जेवी कांति छे, (तादृक् के०) तेवी कांति, (विकाशिनोपि के०) प्रकाशित थयेला एवा (ग्रहगणस्य के०) भौमादिक ग्रहना समूह तेनी प्रभा (कुतः के०) क्यांथी होय ? एटले सर्वथा नज होय. अर्थात् देशना समयें जे अशोक वृक्षादिक आठ महा प्रातिहार्य तथा चोत्रिश अतिशयवाली एवी तमारी जे समृद्धि छे, तेवी हरिहर ब्रह्मादिकनी क्यांथी होय? कारण के एमने सरागपणाने लीधे कर्मक्षयपणुं नथी ते कर्मक्षय विना उत्तमोत्तताने पमाय नहीं अने उत्तमोत्तमता विना प्रातिहार्यादित समृद्धिनो अभाव होय छे ॥ ३३ ॥

हवे जिनने गजभयहर दर्शावतो छतो कहे छे.

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रम
रनादविवृद्धकोपम्॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥

अर्थः–हे नाथ ! (श्च्योतत् के०) झरतो एवो (मद के०) मद तेणें करीने (आविल के०) कलुष थयेला एवा अने (विलोल के०) चंचल एवा जे (कपोलमूल के०) गंडस्थल जे गंडप्रदेश तेणें करीने (मत्त के०) मदोन्मत्त थयेलो एवो अने (भ्रमत् के०) अहिं तहिं भ्रमण करनारा एवा जे (भ्रमर के०) भमराउ तेना (नाद के०) झंकारशब्द तेणें करीने (विवृद्धकोपं के०) वृद्धि पाम्यो छे क्रोध जेने एवो अने (ऐरावताभं के०) ऐरावत हाथीना सरखी छे आभा एटले कांतिं जेनी एवो अने (उद्धतं के०) अविनीत एटले अंकुशादिक शस्त्रने अवगणना करतो एवो जे (इभं के०) हस्ती, तेने (आपतंतं के०) सन्मुख आवता एवाने (दृष्ट्वा के०) जोइने (भवत् के०) तमारा (आश्रितानां के०) आश्रय करीने रहेला एवा जनोने अर्थात् तमारा भक्तजनो जे छे, तेने (भयं के०) भय जे छे, ते (नोभवति के०) नथी थतुं ॥३४॥

हवे सिंहभयापहारी भगवानने दर्शावतो बतो कहे बे.

भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रक
रभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि
पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥

अर्थः—(भिन्न के०) भेदन करेला एवा जे (इभकुंभ के०) हस्तीनां कुंभस्थल, तेथकी (गलत् के०) नीचें खस्या, पड्या एवा (उज्ज्वल के०) उज्ज्वल ते रक्त श्वेत वर्ण युक्त एवा (शोणिताक्त के०) रुधिर व्याप्त एटले लोहीथी खरडायेला एवा (मुक्ताफलप्रकर के०) मुक्ताफलना समूह तेणें करीने (भूषित के०) शोभाव्यो बे (भूमिभागः के०) पृथिवीनो भाग जेणें तथा (बद्धक्रमः के०) कीलित बे क्रम एटले पाद जेना एवो (हरिणाधिपोऽपि के०) अरण्य पशुर्जनो अधिप जे सिंह ते पण (ते के०) तमारा (क्रमयुगाचल के०) चरणयुगरूप पर्वत तेने (संश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष, जो ते सिंहनी (क्रम के०) फाल तेने विषे (गतं के०) प्राप्त थयो होय तो पण तेने ते सिंह (नाक्रामति के०) प्रहार करवाने दोडतो नथी, एटले हे प्रभो! तमारा आश्रित जनोने पूर्वोक्त विशेषणवालो सिंह पण पराभव करतो नथी ॥३५॥

हवे दावानल भयने दलन करतो बतो स्तवे बे.

कल्पांतकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्व
लितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्॥३६॥

अर्थः—हे कर्मकाननाग्ने! (कल्पांतकाल के०) प्रलय कालनो जे (पवन के०) वायरो तेनी सहायतायें करीने (उद्धत के०) जोरमां आवी गयेलो एवो जे (वन्हि के०) अग्नि तेना (कल्पं के०) सदृश एवो अने (ज्वलितं के०) जाज्वल्यमान थयेलो अने (उज्ज्वलं के०) उज्ज्वल अने (उत्फुलिंगं के०) उंचा गया बे तणखा जेना एवो तथा (अशेषं के०) समस्त (विश्वं के०) जगत् तेने (जिघत्सुमिव के०) जाणे गली जवाने इछा करतो होय नहीं ? एवो जे (दावानलं के०) वनमां लागेलो अग्नि ते

अचानक (संमुखं के०) सन्मुख (आपतंतं के०) आवी प्राप्त थयो तेने (त्वन्नामकीर्त्तनजलं के०) तमारा नामनुं जे कीर्त्तन करवुं,ते रूप जल ते (अशेषं के०) निरवशेष एवा अग्निने (शमयति के०) शांत करी मूके ठे. एटले विश्वने बाली नाखवानी इन्ना करनारो एवो जे दावाग्नि,ते पण तमारा नाम स्मरणरूप जलें करीने शांतताने पामे ठे, एवो तमारा कीर्त्तननो प्रन्नाव ठे, तेवारें तमारी आज्ञादिक पालवाथी शुं सर्वोत्कृष्टता प्राप्त न थाय? ॥३६॥

हवे उरगनय निवारण करतो ठतो कहे ठे.

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोऽद्धतं फणिन
मुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्त
शंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥

अर्थः–(रक्तेक्षणं के०) रातां ठे नेत्र जेनां एवो अने (समद के०) मदोन्मत्त एवो तथा (कोकिल के०) कोकिल तेनो (कंठ के०) कंठ तेना सरखो (नीलं के०) श्यामवर्णवालो एवो अने (क्रोधोद्धतं के०) क्रोधें करीने उद्धत थयेलो तथा (उत्फणं के०) उंची करेली ठे फणा जेणें एवो जे (फणिनं के०) सर्प ते (आपतंतं के०) उतावलो सन्मुख आवतो होय तेने पण (निरस्तशंकः के०) शंका रहित थयो थको पोताना (क्रमयुगेन के०) चरणयुगलें करीने (आक्रामति के०) उल्लंघन करे ठे. ते कयो पुरुष उल्लंघन करे ठे? तो के (यस्य के०) जे (पुंसः के०) पुरुषना (हृदि के०) हृदयने विषे (त्वन्नाम के०) तमारा नाम रूप जे (नागदमनी के०) नागदमनीनामें औषधि नरेली ठे, ते तमारा नामरूप नागदमनी औषधियें करीने उग्र सर्पना नयथकी पण निःशंकित थाय ठे ॥ ३७ ॥

हवे रणनयापहरण करतो ठतो कहे ठे.

वल्गत्तुरंगगजगर्जितन्नीमनाद, माजौ बलं बल
वतामपि नूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखाप
विद्धं, त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु निदामुपैति ॥ ३८ ॥

अर्थः–जे (आजौ के०) संग्रामने विषे (वल्गत् के०) युद्ध करता

एवा (तुरंग के०) घोडा ते जेने विषे दोडी रह्या छे अने (गज के०) हस्ती तेनी (गर्जित के०) गर्जना तेणें करी (भीम के०) भयंकर छे (नादं के०) शब्दो जेने विषे एवुं (बलवतामपिभूपतीनां के०) अतिशय बलवान् राजाउं तेनुं पण (बलं के०) सैन्य ते (त्वत्कीर्त्तनात् के०) तमारा नामना कीर्तनथकी (आशु के०) शीघ्र (भिदां के०) भेदने (उपैति के०) पामे छे, एटले तरत नाशी जाय छे, ते कोनी पेठें? तो के (उद्यद्दिवाकर के०) उदय थयेलो एवो जे सूर्य, तेनां (मयूख के०) किरणो तेनी (शिखा के०) शिखाउं तेणें करीने (अपविद्ध के०) उत्क्षिप्त एटले भेदन थयेलुं एवुं (तमः के०) अंधकार तेज (इव के०) जेम होय नहीं ? अर्थात् सूर्यकिरणोयें करीने जेम अंधकार नाश पामे छे, तेम तमारा नाम ग्रहण प्रभावथकी शत्रुनुं सैन्य संग्रामने विषे पलायन थाय छे ॥ ३८ ॥ हवे वली पण प्रकारांतरें करीने संग्रामभयने निरास करतो छतो कहे छे.

कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणा
तुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा,
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३ए ॥

अर्थः–(कुंत के०) बरछी, तेमना (अग्र के०) अग्रभाग जे अणी तेणें करी (भिन्न के०) भेदेला एवा (गज के०) हस्ती तेना (शोणित के०) रुधिररूप (वारिवाह के०) जलना प्रवाह तेने विषे जे (वेगावतार के०) उतावलुं प्रवेश थवुं एटले रुधिररूप पाणीमां तणाइ जवाने तैयार थयेला तेमांथी (तरणातुर के०) फरी पाछा तरी नीकलवाने आतुर थयेला एवा जे (योध के०) सुभटो तेणें करीने (भीमे के०) भयंकर देखातुं एवुं (युद्ध के०) युद्ध तेने विषे पण (त्वत्पाद के०) तमारा चरणारविंद ते रूप जे (पंकजवन के०) कमलवन तेने (आश्रयिणः के०) आश्रय करीने रह्या एवा जे पुरुष, (दुर्जय के०) नहीं जीताय एवा जे (जेयपक्षाः के०) शत्रुना वर्गो ते जेमणें (विजित के०) जीत्या छे एवा छता (जयं के०) जयने (लभंते के०) पामे छे ॥ ३ए ॥

हवे समुद्रभय निरास करतो छतो कहे छे.

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभय

दोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयान
पात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥४०॥

अर्थः-(क्षुभित के०) क्षोभ पमड्या छे (भीषण के०) महाभयंकर एवा (नक्रचक्रपाठीनपीठ के०) नक्र चक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य विशेष जीव जेने विषे एवा तथा (भयद के०) भय उत्पन्न करनारो एवो उल्बण के०) भयंकर छे (वाडवाग्नौ के०) वाडवाग्नि जेने विषे एवा (अंभोनिधौ के०) समुद्रने विषे (रंगत् के०) उछलता एवा (तरंग के०)तरंगो तेनां (शिखर के०) शृंगो तेनी उपर (स्थित के०) रह्युं छे (यानपात्रा के०) वहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे छे, ते (भवतः के०) तमारा (स्मरणात् के०) स्मरणथकी (त्रासं के०) त्रासने (विहाय के०) त्याग करीने समुद्र पा रनें (व्रजंति के०) पामे छे. एटले इच्छित द्वीपांतरने विषे पहोंचे छे ॥४०॥

हवे रोगभयने निवारण करतो छतो स्तवे छे.

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामु
पगताश्च्युतजीविताशाः॥ त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदि
ग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

अर्थः-हे जगन्नाथ! (उद्भूत के०) उत्पन्न थयो एवो (भीषण के०) भयंकर (जलोदर के०) जलयुक्त होय छे उदर जेणें करीने तेने जलोदर रोग कहियें अने ते जलोदर रोगना (भार के०) भारें करीने (भुग्नाः के०) वक्र थया एवा अने (च्युतजीविताशाः के०) त्याग करी छे जीवितनी आशा जेमणें एवा अने (शोच्यां दशामुपगताः के०) शोक करवा योग्य एवी दशाने प्राप्त थया एवा अने (त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहाः के०) तमारां चरणकमलनुं जे रज ते रूप जे अमृत तेणें करी लिप्त छे अंग जेमनां एवा (मर्त्याः के०) जीवो जे छे ते, (मकरध्वजतुल्यरूपाः के०) काम देव समान छे रूप जेनुं एवा (भवंति के०) होय छे. अर्थात् जेम अमृत लिप्तदेही पुरुष सकल शारीरिक रोगनाशें करीने कामदेव समान थाय छे. तेम तमारा चरणारविंदनी रजें करी लिप्त अंग छे जेनां एवा जीव पण सकल रोगक्षयें करीने कामदेव तुल्यरूपवाला थाय छे ॥४१॥

हवे निगडादि बंधननुं जय टालतो बतो कहे बे.

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाःस्म रंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥

अर्थः—हे कर्मबंधनरहित! (आपादकंठं के०) जेना पगथी मांमीने गला पर्यंत (उरुशृंखल के०) महोटी शृंखलाउं तेणें करी (वेष्टितांगा के०) वेष्टित बे एटले निबद्ध बे सर्व अंगो जेमनां एवा अने (गाढं के०) अत्यंत (बृहन्निगडकोटि के०) महोटी बेडीयो तेनी कोटियो जे जीणी अणीयो तेणें करीने(निघृष्टजंघाः के०)निःशेषपणायें करीने घसाती बे जंघाउं जेमनी एवा डुःखित थयेला पुरुषो बतां (त्वन्नाम के०) तमारुं जे नाम ते रूप (मंत्र के०) मंत्र जे बे, तेने (अनिशं के०) रात्रि दिवस अर्थात् निरंतर (स्मरंतः के०) स्मरण करता एवा (मनुजाःके०) मनुष्यो, ते (सद्यः के०) तत्काल (स्वयं के०) पोतानी मेळें (विगतबंधजयाः के०) विशेषें करीने गयुं बे बंधनजय जेमनुं एवा (जवंति के०) थाय बे ॥४२॥

हवे पूर्वोक्त सर्व जयने त्याग करतो बतो संक्षेपथी कहे बे.

मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोबम्॥तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥ ४३ ॥

अर्थः—हे प्रजो! (यः के०) जे (मतिमान् के०) बुद्धिमान् पुरुष, (तावकं के०) तमारुं (इमं के०) आ (स्तवं के०) स्तवन जे बे तेने (अधीते के०) जणे बे, (तस्य के०) ते पुरुषने (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विपेंद्र के०) महान् हस्ती अने (मृगराज के०) सिंह, तथा (दवानल के०) वनाग्नि तथा (अहि के०) सर्प अने (संग्राम के०) संग्राम, अने (वारिधि के०) समुद्र, तथा (महोदर के०) जलोदरादि रोग, अने (बंधन के०) बंधीखानुं ए आठ वानां ते थकी (उत्थं के०) उत्पन्न थयुं एवुं जे (जयं के०) जय ते (जियेव के०) बीकें करीनेज जेम होय नहिं? तेम (आशु के०) शीघ्र उतावळुं (नाशं के०) नाशने

(उपयाति के०) पामे छे. अर्थात् आ तमारा स्तोत्रना पाठ करनारने पूर्वोक्त आठ प्रकारना भयनो नाश थाय छे ॥ ४३ ॥

हवे स्तवनप्रभाव सर्वस्वने कहे छे.

स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया
रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगता
मजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥
इति भक्तामर नामकस्तोत्रं सप्तमस्मरणम् ॥ ७ ॥

अर्थः—(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र! (तव के०) तमारी (इह के०) आ लोकने अपे (यः के०) जे (जनः के०) पुरुष, (स्तोत्रस्रजं के०) स्तोत्र तेज पद संदर्भितपणें करीने जाणे मालाज होय नहिं ? ते स्तोत्ररूप पुष्पमालाने (कंठगतां के०) पोताना कंठने विषे (अजस्रं के०) निरंतर (धत्ते के०) धारण करे छे, (तं के०) ते (मान के०) चित्तनी उन्नति तेणें करीने (तुंगं के०) अत्यंत उन्नत थयेलो एवो पुरुष अथवा स्तोत्रना कर्त्ता श्री मानतुंगाचार्य जे छे ते (अवशा के०) अस्वतंत्र एवी जे (लक्ष्मीः के०) स्वर्गापवर्ग अने सत्काव्यरूप लक्ष्मी तेने, (समुपैति के०) पामे छे. हवे ते स्तोत्र रूपस्रज केहवी छे? तो के मानतुंगाचार्यनामक एवो (मया के०) हुं जे तेणें (भक्त्या के०) भक्ति जे श्रद्धा, अथवा पुष्पमालापक्षें भक्ति जे विचित्र रचना तेणें करीने अने (गुणैः के०) प्रभुना गुणें करीने अथवा पुष्पमालापक्षें गुण जे सूत्र तेणें करीने (निबद्धां के०) बांधेली छे, गुंथेली छे. वली केहेवी छे? तो के (रुचिर के०) मनोहर एवा (वर्ण के०) बावन अक्षर तेज छे (विचित्रपुष्पां के०) चित्र विचित्र पुष्पो जेने विषे अने पुष्पमाला पक्षमां मनोहर छे वर्ण जेना एवां विचित्रपुष्पो छे जेमां एवी छे. आ स्तोत्रना अंतमां पुष्पस्रज शब्द जे छे ते अभीष्ट शकुनपणायें करी महोत्सवना आनंदनो कारणभूत छे अने लक्ष्मी शब्द जे छे, ते मांगल्यवाची छे, तेणें करी आ स्तोत्रना पाठ करनार तथा श्रवण करनार पुरुषने आ स्तोत्रनी समाप्ति पर्यंत कल्याण परंपरा थाशे, एवो भाव छे ॥४४॥ इति भक्तामर स्तोत्रनामक सप्तमस्मरणस्य बालावबोधः समाप्तः ॥ ७ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री कल्याणमंदिरस्तोत्रनामक अष्टमस्मरणं लिख्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम
निंदितमंघ्रिपद्मं ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु,
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्व
यं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोतुं सुविस्तृतमतिर्न
विभुर्विधातुम्॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो,स्त
स्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ युग्मम् ॥

अर्थः—(एषः के०) आ प्रत्यक्ष मूर्ख एवो (अहं के०) हुं सिद्धसेन दिवा करनामा आचार्य ते (तस्य के०) ते श्रीपार्श्वनाथ (तीर्थेश्वरस्य के०) तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वर तेनुं (किल के०) निश्चें (संस्तवनं के०) स्तवन जे तेने (करिष्ये के०) करीश, हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर केहवा छे? तो के (कमठ के०) दश जन्मनो छे वैरभाव जेने एवो जे कमठ नामा दैत्य तेनो (स्मय के०) अहंकार तेने विषे (धूमकेतोः के०) पूछडीया तारा सरखा छे एटले कमठ दैत्यनो गर्व नाश करवाने धूमकेतु सदृश छे, वली केहवा छे? तो के (सुविस्तृतमतिः के०) विस्तार पामी छे बुद्धि जेनी एवो (स्वयं के०) पोतें (सुरगुरुः के०) बृहस्पति जे छे, ते पण (यस्य के०) जे श्रीपार्श्वनाथना (गरिमा के०) महिमा जे तेनो (अंबुराशेः के०) समुद्र तेनुं जे (स्तोत्रं के०) स्तवन तेने (विधातुं के०) करवाने (नविभुः के०) समर्थ थतो नथी, एवा श्रीपार्श्वनाथनी हुं स्तवना करवाने क्यांथी समर्थ थाउं? तथापि स्तवना करुं छुं, ते शुं करीने स्तवना करुं छुं ? तो के (जिनेश्वरस्य के०) ते श्रीजिनेश्वर तेना (अंघ्रिपद्मं के०) चरणकमल तेने (अभिनम्य के०) नमस्कार करीने स्तवना करुं छुं. हवे ते चरणकमल केहवुं छे? तो के (कल्याणमंदिरं के०) कल्याण एटले मांगलिक तेनुं मंदिर एटले घर छे, वली केहवुं छे? तो के (उदारं के०)

महोटुं ले, अथवा जव्य जीवोना मनोवांछित अर्थ देवाने उदार ले,तथा वली केहेवुं ले ? तो के (अवद्य के०) अवद्य जे पाप तेने (जेदि के०) जेदनारुं ले, ते माटें अवद्यजेदि ले; वली केहेवुं ले? तो के (जीत के०) सं सारजयें त्रास पामता जे जीवो, तेने (अजय के०) मोक्ष तेने (प्रदं के०) प्रकर्षें करीने देनारुं एवुं ले, वली केहवुं ले? तो के (अनिंदितं के०) निंदा रहित ले अर्थात् जेने विषे अणुमात्र पण दोषनो संजव नथी, वली केहवुं ले? तो के (संसारसागर के०) संसाररूप जे समुद्र तेने विषे (निमज्जात् के०) बूडता एवा जे (अशेषजंतु के०) समग्र प्राणीयो तेने (पोतायमानं के०) वहाण सरखुं एवुं जिनेश्वरनुं चरणकमल ले. आ स्तोत्रना श्लोक सर्व वसंततिलकावृत्तें जाणवा. आ बे श्लोकनो एकठो अर्थ वखाण्यो ॥ २ ॥

हवे जगवाननी सर्व प्रकारें विशेषें करीने स्तुति करवाने तो हुं समर्थ नथी, परंतु सामान्यें करीने पण प्रजुनी स्तुति करवाने हुं असमर्थ छुं, एम देखाडे ले.

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,मस्मादृशाः क
थमधीश!जवंत्यधीशाः॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि
वा दिवांधो,रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः॥३॥

अर्थः–(अधीश के०) हे स्वामिन्! (अस्मादृशाः के०) माहारा सर खा मंदमति पुरुषो जे ले, ते (सामान्यतोपि के०) सामान्यपणे एटले विशेषविरहितत्वें करीने पण (तव के०) तमारुं (स्वरूपं के०) स्वरूप जे ले तेने (वर्णयितुं के०) वर्णन करवाने (कथं के०) केम (अधीशाः के०) समर्थ (जवंति के०) थाय ले? अर्थात् थाता नथी. त्यां दृष्टांत कहे ले, ते जेम केः–(यदिवा के०) जो पण (कौशिकशिशुः के०) घूडनो बालक, ते (घर्मरश्मेः के०) सूर्यबिंबना (रूपं के०) स्वरूपने (किं के०) शुं (प्ररूपयति के०) कहि शके? (किल के०) निश्चें. अर्थात् नथी कही शकतो. हवे ते कौशिकशिशु केहवो ले? तो के (धृष्टोपि के०) दृढ हृदय पणायें करीने प्रगल्ज ले तो पण (दिवांधः के०)दिवसने विषे अंध ले॥३॥

हवे हुं तो मंदमति छुं, तेथी महारामां स्तुति करवानुं सामर्थ्य न हो य ते योग्यज ले,परंतु केवलज्ञानी पुरुषो, केवलज्ञानें करीने सर्व जाण ता लता पण जिनगुणोने कहेवाने समर्थ थाता नथी, ते कहे ले.

मोहक्षयादनुजवन्नपि नाथ!मर्त्यो, नूनं गुणान् गण
यितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि
यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! (मोहक्षयात् के०) मोहनीयादिक कर्मना क्षयथकी अथवा अज्ञानक्षयथकी (अनुजवन्नपि के०) गुणोने अनुजव करतो एटले तमारा गुणोने जाणतो ठतो पण (मर्त्यः के०) मनुष्य जे ठे ते, (नूनं के०) निश्चें (तव के०) तमारा (गुणान् के०) गुणो जे ठे तेने (गणयितुं के०) गणवाने एटले संख्या करवाने (न क्षमेत के०) न समर्थ थाय. त्यां दृष्टांत कहे ठे,ते जेम केः–(ननु के०) आशंकाने विषे (यस्मात् के०) जे कारण माटें (कल्पांत के०) प्रलयकालने विषे (वांत के०) विक्षिप्त थयुं ठे (पयसः के०) जल जेने विषे एवो (जलधेः के०) समुद्र जे ठे तेनो (प्रकटोऽपि के०) प्रत्यक्ष एवो पण (रत्नराशिः के०) रत्ननो समूह ते (केन के०) कया पुरुषें (मीयेत के०) मापी शकाय ? अर्थात् कोईथी पण माप करी शकाय नहिं ॥ ४ ॥

हवे जो पण जगवानना गुणो तो असंख्य ठे,ते कहेवाने अशक्य ढुं, तो पण जक्तिवशथकी स्वशक्त्यनुसारें हुं स्तुति करुं ढुं.

अन्युद्यतोऽस्मि तव नाथ!जडाशयोऽपि,कर्त्तुं स्तवं लसद
संख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! हुं (जडाशयोऽपि के०) जडअंतःकरणवालो वा जडना सरखा अजिप्राय वालो ढुं तो पण(तव के०)तमारुं(स्तवं के०)स्तवन जे ठे तेने(कर्त्तुं के०) करवाने (अज्युद्यतोऽस्मि के०) उद्यम मुक्त थयो ढुं, एटले सावधान थयो ढुं. ते तमें केहवा ठो? तो के (लसत् के०) देदीप्यमान एवा जे (असंख्यगुण के०) अनंतगुणो तेना (आकरस्य के०) निधानरूप ठो. तेज अर्थने दृष्टांतें करीने दृढ करे ठे. (बालोपि के०) बालक पण (निजबाहुयुगं के०) पोताना बे हाथने (वितत्य के०) विस्तारीने (स्वधिया के०) पोतानी बुद्धियें करीने (अंबुराशेः के०) समुद्र जे ठे

तेनी (विस्तीर्णतां के०) विस्तारता जे बे तेने (किं. के०) शुं (न कथयति के०) नहिं कहे बे, अर्थात् कहे बेज.एटले जेम बालक पोताना बे हाथ पसारीने समुद्रनो विस्तार कहे बे,जे समुद्र आटलो महोटो बे, तेम बाल कनी पेरें हुं पण तमारुं स्तवन करवाने कस्यो बे उद्यम जेणें एवो बुं ॥५॥

फरी पूर्वें कहेला बे श्लोकोनाज अर्थने दृढ करतो बतो कहे बे.

ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भव
ति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारि
तेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

अर्थः–(ईश के०) हे स्वामिन्! (ये के०) जे (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो जे बे,ते (योगिनामपि के०) रत्नत्रयरूप योगाराधने करीने समुत्पन्न बे ज्ञान जेमने एवा योगींद्र पुरुषोनें पण (वक्तुं के०) कहेवाने (नयांति के०) आवी शकता नथी तो (तेषु के०) ते गुणोने विषे (मम के०) महारी (अवकाशः के०) बोलवानी शक्ति ते (कथं के०) केम (भवति के०) होय? (तत् के०) ते कारण माटें (एवं के०) ए प्रकारें (इयं के०) आ प्रस्तुतस्तुतिविषय ते(असमीक्षितकारिता के०)अविचार्यकारिता (जाता के०) थइ.केम के?अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते अविचार्यकारी ज कहेवाय बे.आहिं दृष्टांत कहे बे.(वा के०) अथवा (ननु के०) निश्चें(पक्षिणोपि के०) पक्षियो पण यद्यपि मनुष्य वाणीयें करी बोलवाने असमर्थ बे तो पण (निजगिरा के०) पोतानी जेवी तेवी वाणीयें करीने (जल्पंति के०) अर्थात् बोलेज बे ? तेम हुं पण स्तुति करवाने प्रवर्त्त्यो बुं ॥ ६ ॥

हवे भगवत्स्तोत्रनुं तथा भगवन्नामग्रहणनुं माहात्म्य कहे बे.

आस्तामचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पा
ति भवतो भवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजना
न्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिलोऽपि ॥ ७ ॥

अर्थः–(जिन के०) हे जिनेश्वर ! (अचिंत्यमहिमा के०) नथी चिंतन करवा योग्य बे महिमा जेनो एवो (ते के०) तमारो (संस्तवः के०) स्तव

जे छे; ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (जवतः के०) तमारुं (नामापि के०) श्रीपार्श्वनाथ एवुं नाम जे छे ते पण (जवतः के०) संसारथकी (जगंति के०) त्रण जगत्ने (पाति के०) रक्षण करे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. (पद्मसरसः के०) कमलोपलक्षित एवा तलावनुं जे पाणी ते तो (आस्तां के०) दूर रहो. परंतु ते पद्मसरोवरनो (सरसः के०.) सुंदर छंटो जलशीकर युक्त एवो (अनिलोऽपि के०) वायरो पण (निदाघे के०) ग्रीष्मकालने विषे (तीव्र के०) आकारो एवो (आतप के०) तडको तेणें करीने (उपहत के०) हणाणा एवा (पांथजनान् के०) पथिक जनोने (प्रीणाति के०) संतोष करे छे. अर्थात् पद्मसरोवरनो वायरो पण पथिकोने प्रसन्न करे छे, तेवारें जलनुं तो शुंज कहेवुं ? तेम हे प्रजो! तमारुं नाम पण त्रण जगत्ने पवित्र करे छे.तेवारें तमारा स्तोत्रनी तो शीज वार्त्ता कहेवी ? ॥ ७ ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे छे.

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विजो! शिथिलीजवंति, जंतोः क्षणेन
निविडाअपि कर्मबंधाः ॥ सद्योजुजंगममयाइव म
ध्यजाग, मज्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥

अर्थः—(विजो के०) हे स्वामिन् ! (त्वयि के०) तमो (हृद्वर्त्तिनि के०) हृदयने विषे वर्त्तते छते (जंतोः के०) प्राणीना (निविडाअपि के०) दृढ एवा पण (कर्मबंधाः के०) कर्मना जे बंधो ते पण (क्षणेन के०) क्षणमात्रें करीने (शिथिलीजवंति के०) शिथिल थइ जाय छे, एटले निविडताने छोडीने शिथिलताने जजे छे.अहीं दृष्टांत कहे छे.ते जेम केः—(वनशिखंमिनि के०) वननो मयूर ते (मध्यजागं के०) वनना मध्यजागप्रत्यें (अज्यागते के०) आवे छते (चंदनस्य के०) चंदनना वृक्षना जे (जुजंगममयाइव के०) सर्पमयबंधनो जे छे ते जेम (सद्यः के०) तत्काल शिथिल थइ जाय छे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले जेम वनमयूर वनना मध्यजागें आवे छते चंदनवृक्षनां सर्पवेष्टन शिथिल थइ जाय छे. तेम तमें पण प्राणीना हृदय मध्यें आवे छते ते प्राणीना दृढ कर्मबंध पण शिथिल थइ जाय छे ॥ ८ ॥

हवे स्वामीना दर्शननुं माहात्म्य कहे छे.

मुच्यंतएव मनुजाः सहसा जिनेंद्र!, रौद्रैरुपद्रवश
तैस्त्वयि वीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि
दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ए ॥

अर्थः-(जिनेंद्र के०) हे सामान्य केवलीना इंद्र ! (त्वयि के०) तमो (वीक्षिपिते के०) जोये छते पण (मनुजाः के०) मनुष्यो (सहसा के०) शीघ्रपणें करीने (रौद्रैः के०) भयानक बीहामणा एवा (उपद्रवशतैः के०) उपद्रवोना जे शेंकडा तेथकी (मुच्यंतएव के०) मुकाइ जाय छेज. आहीं दृष्टांत कहे छे. जेम केः-(स्फुरिततेजसि के०) देदीप्यमान छे तेज जेनुं एटले जगत्मां प्रकाश करवे करीने विस्तृत छे तेज जेनुं एवो (गो स्वामिनि के०) गो जे किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो जे पृथिवी तेनो स्वामी जे राजा ते पण स्फुरित छे प्रताप जेमनो एवो छे, अथवा गो एटले पशुउ तेनो स्वामी जे गोवालीयो ते पण बलरूप स्फुरित छे तेज जेनुं एवो छे. एवा ए त्रण जे छे ते. (दृष्टमात्रे के०) दृष्टमात्रें एटले जोवाये थके (प्रपलायमानैः के०) पलायन करता नासता एवा (चौरैः के०) चोरो थकी (इव के०) जेम (आशु के०) शीघ्र उतावला (पशवः के०) पशुउ जे गो महिष्यादि चोपगां जनावरो जेम मूकाय छे, तेम जीवो पण तमो जोवाये थके शेंकडो उपद्रवोथकी मूकाय छे. ए तात्पर्य छे ॥ ए ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे छे.

त्वं तारकोजिन! कथं भविनां तएव, त्वामुघहंति ह
दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनू
न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिनेश्वर! (त्वं के०) तमें (भविनां के०) संसारी जीवोना (कथं के०) केम (तारकः के०) तारक छो? (यत् के०) जे कारण माटें उलटा (तएव के०) ते संसारी जीवोज (उत्तरंतः के०) संसार समुद्रने उतरता छता (हृदयेन के०) हृदयें करीने (त्वां के०) तमोने (उ

द्वहंति के०) वहन करे छे, माटें तमें केवी रीतें संसारी जीवोना तारक छो ? कारण के वाह्य वाहकमां वाह्यने तारकपणानो असंजव छे, जेम नाव छे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषोने तारे छे परंतु नावमां रहेला पुरुषो कांइ नावने तारता नथी, तेम जव्य जीवो पण तमोने पोताना हृदयमां राखीने तारे छे, परंतु तमें ते जव्य जीवोने तारो, ते तो महोटुं आश्चर्य छे.हवे एवा तर्कनुं समाधान करे छे, के हे प्रजो! तमेंज जव्योने तारो छो.ते (यद्वा के०) युक्त छे. आहीं दृष्टांत कहे छे (यत् के०) जे कारणमाटे जेम (दृतिः के०) चर्ममयपात्र एटले चामडानी मसक जे छे ते (नूनं के०) निश्चें (जलं के०) नद्यादिकना पाणी प्रत्यें (तरति के०) तरे छे (सएष के०) ते आ प्रत्यक्ष (अंतर्गतस्य के०) ते मसकनी मध्यवर्त्तियें आव्यो एवो जे (मरुतः के०) पवन तेनोज (किल के०) निश्चें (अनुजावः के०) प्रजाव छे. एटले चर्मनी मसकना मध्यगत जे वायु छे ते जेम मसकनो तारक छे, तेम जव्य जीवोना हृदयस्थ तमें छो. माटें तमें पण जव्योना तारक छो, एमां शुं अयुक्त छे? ॥ १० ॥

हवे त्रण श्लोकें करीने जगवंतनुं राग द्वेष विरहितपणुं देखाडे छे.

यस्मिन् हरप्रजृतयोऽपि हतप्रजावाः, सोऽपि त्वया
रतिपतिः क्षपितः क्षणेन॥ विध्यापिता हुतजुजः पय
साथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११॥

अर्थः–(यस्मिन् के०) जे कामदेवने विषे (हरप्रजृतयोऽपि के०) हर हरि विरंचि प्रमुख पण (हतप्रजावाः के०) हणाणो छे प्रजाव जेमनो एवा थाय छे. अर्थात् जे कामदेवें हरहर्यादिक देवोने जीत्या छे. (सोपि रतिपतिः के०) ते कामदेव पण (त्वया के०) तमोयें (क्षणेन के०) क्षण मात्रें करीने (क्षपितः के०) क्षय पमाड्यो. ए अर्थ कह्यो. परंतु दृष्टांत विना प्रतीत थाय नहीं माटे आहीं दृष्टांत कहे छे.(अथ के०) अथ पद दृष्टांत उपन्यासार्थ छे. (येन के०) जे (पयसा के०) जलें (हुतजुजः के०) अग्नियो (विध्यापिताः के०) बूजावी दीधा (तदपि के०) तो पण ते पाणी जे छे ते (दुर्द्धरवाडवेन के०) दुस्सहवडवानलें (किं न पीतं के०) शुं न पीधुं ? अर्थात् पीधुंज. एटले जे जलें अन्य अग्नियो बूजा

व्या एवुं पण समुद्रगत जे जल, ते वडवानलें शोषण कर्युं,तेमज जे का मदेवें हरहर्यादिक जीत्या, तेज कामने तमोयें जीत्यो छे.आ श्लोक करे थके श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति प्रगट थइ; ते वात सर्वत्र प्रसिद्ध छे ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथ
महो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघ
वेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥

अर्थः-(स्वामिन् के०) हे स्वामिन् ! तमोने (प्रपन्नाः के०) स्वामी पणायें करी पाम्या एवा (जंतवः के०) प्राणीयो (अनल्पगरिमाणमपि के०) घणुं महोटापणुं छे जेमनुं एवा पण (त्वां के०). तमोने (हृदये के०) हृदयने विषे (दधानाः के०) धारण करता थका (अहो के०) आश्चर्य (अतिलाघवेन के०) थोडा पण भारना अभावें करीने (जन्मो दधिं के०) भवसमुद्रने (लघु के०) शीघ्रपणें जेम होय तेम (कथं के०) केम (तरंति के०) तरे छे? अर्थात् अत्यंत भारें करीने युक्त एवा तमें छो तेने हृदयने विषे धारण करता छता जाणे थोडा पण भारें करीने रहितज होय नहिं? एवा थका संसार समुद्रथकी भव्यजीवो केम तरे छे? केम के?जे अतिभार युक्त होय, ते तो तरवाने असमर्थ होय छे. अहीं (य दिवा के०) समाधान अर्थमां छे माटें समाधान कहे छे. (हंत के०)निश्चें (महतां के०) त्रण जगत्मां उत्तम महोटा पुरुषोनो ए (प्रभावः के०) महिमाज छे, माटें एमां (न चिंत्यः के०) चिंतवन करवा योग्य कांइ पण नथी,कारण के अत्यंत भार युक्त एवा जीवोने पण पोताना प्रभावथी जाणे सर्वथा भार रहितज होय नहिं? तेवी रीतें महोटा पुरुषो करे छे, माटें तमो भव्य जीवोने तारो छो, तेमां आश्चर्य नथी ? ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा ब
त. कथं किल कर्मचौराः॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा
पि लोके,नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

अर्थः-(विभो के०) हे स्वामिन् ! (त्वया के०) तमोयें (यदि के०) ज्यारें (क्रोधः के०) क्रोध जे छे, ते (प्रथमं के०) प्रथमज (निरस्तः के०) परास्त कर्यो एटले दूर कीधो, (तदा के०) त्यारें पछी क्रोध विना

(बत के०) आश्चर्य बे के (कर्मचौराः के०) कर्मरूप जे चोरो बें, ते (कथं ध्वस्ताः के०) केवी रीतें हण्या? (किल के०) निश्चें. अर्थात् तमें क्रोध विनाज कर्म चोरोने हण्या, ए महोटुं आश्चर्य? (यदिवा के०) समाधान अर्थमां जेम केः-(अमुत्र के०) आ (लोके के०) लोकने विषे (शिशिरापि के०) शीतल एवी पण (हिमानी के०) हिमसंहति जे बरफ ते (नीलद्रुमाणिं के०) नीलां बे वृक्षो जेने विषे एवां (विपिनानि के०) वन जे तेनें (किं के०) शुं (न प्लोषति के०) न बाले ठे? अर्थात् बाले बेज. एटले जे शीतल एवी हिमसंहति बे, ते नीलां वृक्षनां वनोने दहन करे बे,तेम क्रोध रहित एवा तमो पण कर्मचोरोने हणो बो, ते युक्तज बे ॥ १३ ॥

हवे योगियोयें ध्यान करवा योग्य एक जिनस्वरूपने कहे बे.

त्वां योगिनो जिन!सदा परमात्मरूप,मन्वेपयंति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य,दक्षस्य संजवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिन ! (योगिनः के०) महर्षियो जे बे ते (हृदयांबुजकोशदेशे के०) हृदयरूप जे कमल तेना कोश एटले कली तेना मध्यप्रदेशने विषे (परमात्मरूपं के०) सिद्धस्वरूप एवा (त्वां के०) तमोने (सदा के०) निरंतर (अन्वेषयंति के०) ज्ञानचक्षुयें करीने जोवे बे, ए अर्थ युक्त बे. (यदिवा के०) अथवा जेम (ननु के०) निश्चें (निर्मलरुचेः के०) निर्मल बे रुचि एटले कांति जेमनी एवुं अने (पूतस्य के०) पवित्र एवुं (अक्षस्य के०) कमलनुं बीज जे बे तेनुं (कर्णिकायाः के०) कर्णिकाथकी (अन्यत् के०) बीजुं एटले कमलमध्यप्रदेश टालीने बीजुं (पदं के०) स्थानक (किं संजवि के०) शुं संजवे बे ? ना संजवतुं नथी. त्यारें शुं संजवे बे? तो के कमलनी कर्णिकाज संजवे बे. तेम तमें पण निर्मलरुचि युक्त तथा सकल कर्ममलना अपगमथकी पवित्र थयेला एवा बो. ए माटें तमारुं पण योगींड्रोना हृदयकमलकर्णिकारूपस्थानकने विषे रहेवुं थाय बे, ते योग्यज बे ॥ ॥ १४ ॥

हवे तमारा ध्यान करनारा पण तमारी जेवाज थाय बे, ते कहे बे.

ध्यानाज्जिनेश!जवतोजविनः क्षणेन, देहं विहाय

परमात्मदशां व्रजंति॥तीव्रानलादुपलनावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुनेदाः ॥ १५ ॥

अर्थः–(जिनेश के०) हे जिनेश ! (नविनः के०) नव्य प्राणीयो जे ठे ते (नवतः के०) तमारा (ध्यानात् के०) ध्यानथकी अथवा स्मरणथकी (क्षणेन के०) एक क्षणमात्रें करीने (देहं के०) शरीरने (विहाय के०) त्याग करीने (परमात्मदशां के०) सिद्धावस्थाने (व्रजंति के०) पामे ठे. कहेलुं ठे के, " वीतरागं यतोध्यायन्, वीतरागोनवेद्भवी ॥ ईलिका भ्रमरीनीता, ध्यायंती भ्रमरीं यथा ॥ १ ॥" एनो अर्थ एम ठे जे, वीतरागनुं ध्यान करतो ठतो जीव, वीतरागरूप थाय ठे, केनी पेठें? तो के भ्रमरीथकी बीक पामती एवी जे ईल, तेम भ्रमरीनुं ध्यान करती ठतीज भ्रमरीरूप थाय ठे. आहिं दृष्टांत कहे ठे. ते जेम केः–(लोके के०) लोकने विषे (धातुनेदाः के०) मृत्तिका पाषाण विशेषो जे, ठे,ते (तीव्रानलात् के०) प्रबलअग्निथकी (उपलनावं के०) पाषाणनाव जे ठे, तेने (अपास्य के०) टालीने (अचिरात् के०) थोडा समयमां (चामीकरत्वमिव के०) सुवर्णपणानेज जेम (व्रजंति के०) पामे ठे, तेम प्राणीयो जे ठे, ते तमारा ध्यानथकी देहने त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे ठे ॥१५ ॥

अंतःसदैव जिन! यस्य विनाव्यसे त्वं, नव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुनावाः॥१६॥

अर्थः–(जिन के०) हेजिन! (नव्यैः के०) नव्य प्राणीयो जे ठे,ते मणें (यस्य के०) जे देह तेना (अंतः के०) मध्यनाग एटले जे हृदय तेने विषे (सदैव के०) निरंतर (त्वं के०) तमो (विनाव्यसे के०) विशेषें करी विचाराउ ठो, चिंतवन थाउ ठो, (तदपि के०) तो पण तमें ते नव्यना (शरीरं के०) शरीर जे तेने (कथं के०) केम (नाशयसे के०) दूर करो ठो? अर्थात् ते नव्य जीवोने मुक्ति पमाडीने शरीर रहित करो ठो,माटें जे स्थानमां नव्य जीव तमोने चिंतवन करे ठे ते स्थान तमारे नाश करवुं योग्य नहीं. आहीं दृष्टांत कहे ठे, जेम केः–(अथ के०) अथ शब्द अर्थो

पन्यासने माटें बे. (महानुजावाः के०) महोटो बे प्रजाव जेमनो एवा (म ध्यविवर्त्तिनः के०) मध्यस्थ अपक्षपाती पुरुष जे बे तेनुं (एतत्स्वरूपं के०) एवुंज स्वरूप बे, एटले स्वजाव बे के (यत् के०) जे कारण माटें (विग्र हं के०) वढवाड जे मांहोमांहे थता क्लेश, तेनो परस्पर विवाद तेने (प्रश मयंति के०) उपशमावे बे. तेम तमें पण शरीर अने जीवनो परस्पर विग्र ह टालवाने शरीरनो नाश करो बो, ते (हि के०) निश्चें युक्तज बे ॥१६॥

आत्मा मनीषिजिरयं त्वदजेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंड्र! जवतीह जवत्प्रजावः॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्य मानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

अर्थः–(जिनेंड्र के०) हे जिनेंड्र ! (मनीषिजिः के०) पंमितो जे बे ते मणें (अयं के०) आ (आत्मा के०) जीव ते, (त्वदजेदबुद्ध्या के०) तमारी साथें अजेदबुद्धियें करीने (ध्यातः के०) ध्यान कस्यो बतो (जव त्प्रजावः के०) तमारा सरखो बे महिमा जेनो एवो (इह के०) आ सं सारनेविषे (जवति के०) थाय बे. त्यां दृष्टांत कहे बे. जेम केः–(नाम के०) नामशब्द कोमलामंत्रणमां बे. अथवा प्रसिद्ध अर्थमां बे. (पानी यमपि के०) जल जे बे, ते पण (अमृतं के०) अमृत बे (इति के०) ए प्रकारें (अनुचिंत्यमानं के०) चिंतन कस्युं बतुं अथवा मणिमंत्रादिकें करी संस्कारित कस्युं बतुं (विषकारं के०) विषना विकारने (किं के०) शुं (नो अपाकरोति के०)नथी दूर करतुं?अर्थात् अमृत बुद्धियें चिंतवन कस्युं अथवा मंत्रित कस्युं एवुं जल पण अमृत तुल्य थइने विषविकारने टालेज बे ॥ १७॥

हवे अन्यदर्शनीयोयें पण नामांतर कल्पनायें करीने तमो श्रीवीत रागदेवज ध्यान करेला बो, ते कहे बे.

त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विजो! हरिह रादिधिया प्रपन्नाः॥ किं काचकामलिजिरीश! सितो पिशंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

अर्थः–(विजो के०) हे स्वामिन् ! (नूनं के०) निश्चें (परवादिनोपि

के०) परतीर्थिक पण (हरिहरादिधिया के०) विष्णु,महेश्वर अने ब्रह्मादिकनी बुद्धियें करीने (त्वामेव के०) तमोनेंज (प्रपन्नाः के०) आश्रय करीने रहेला छे,अर्थात् अन्यदर्शनी जे शैव,सांख्य,नैयायिकादिको जे छे,ते पण नामांतर परावर्त्त करीने तमारुंज आराधन करे छे.ते तमें केहेवा छो? तो के (वीततमसं के०) अज्ञान रहित छो.आहीं दृष्टांत कहे छे,के (ईश के०) हे ईश ! (काचकामलिभिः के०) काचकामलिनामें रोग छे जेनी आंखमां एवा पुरुषो जे छे, तेणें (सितोपि के०) श्वेत एवो पण (शंखः के०) शंख जे छे, ते (विविधवर्णविपर्ययेण के०) नील, पीतादिक विविध प्रकारना वर्णपरावर्त्त करीने(किं नो गृह्यते के०) शुं नथी ग्रहण करातो? एटले ग्रहण करायज छे. अर्थात् जेम कमलाना रोगवालो पुरुष उज्ज्वल शंखने पण जूदा जूदा वर्णे करी जूवे छे, तेम अन्यतीर्थी पुरुषोयें पण वीतराग एवा जे तमो ते आ हरि, आ हर, आ ब्रह्मा, एवी बुद्धियें करीने आराधन कराउं छो ॥ १० ॥

हवे आठ काव्योयें करी आठ महाप्रातिहार्य सूचनद्वारा भगवाननी स्तुति करे छे, तेमां प्रथम अशोकवृक्षातिशयने कहे छे.

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा, दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (धर्मोपदेशसमये के०) धर्मदेशनाना अवसरने विषे (ते के०) तमारा (सविधानुभावात् के०) समीपना प्रभावथकी (जनः के०) लोक जे छे ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (तरुरपि के०) वृक्ष जे छे ते पण (अशोकः के०) शोक रहित (भवति के०) थाय छे. हवे एज वातने दृष्टांतें करीने समर्थन करे छे. (वा के०) अथवा (दिनपतौ के०) सूर्य जे छे ते (अभ्युद्गते के०) उदय पामे थके (समहीरुहोपि के०) वृक्षादिकें सहित एवो पण (जीवलोकः के०) जीवलोक जे समस्त जगत् ते (विबोधं के०) विकाशत्वने (किं के०) शुं (न उपयाति के०) न पामे ? अर्थात् पामेज छे, एटले जेम सूर्योदय थयाथी केवल लोकज निद्रानो त्याग करीने विबोधने पामे छे एटलुंज नहीं परंतु वनस्पति जे छे ते पण पत्रसंकोचादि लक्षण निद्रानो त्याग करीने विकाश

पणाने गमे छे, तेम तमारा समीपथकी केवल नविक लोकज अशोक थाय छे एटलुंज नहीं, परंतु वृक्ष पण अशोक थाय छे ॥ १९ ॥

हवे सुरकृत पुष्पवृष्टिलक्षण द्वितीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

चित्रं विनो! कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्य
विरला सुरपुष्पवृष्टिः॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा
मुनीश, गछंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥

अर्थः–(विनो के०) हे स्वामिन्! (अविरला के०) निरंतर (सुरपुष्प वृष्टिः के०) देवताउयें करेली जे पुष्पनी वृष्टि ते (विष्वक् के०) चारे तरफ (अवाङ् के०) नीचुं छे (मुख के०) मुख जेनुं एवुं जे (वृंतं के०) बीट ते (एव के०) जेम होय तेमज (कथं के०) केम (पतति के०) आकाशथकी नूमिने विषे पडे छे. ए (चित्रं के०) आश्चर्य छे. हवे (यदिवा के०) एनुं दृष्टांतें करी समाधान करे छे. अथवा (मुनीश के०) हे मुनीश! (त्वद्गोचरे के०) तमो प्रत्यक्ष बते तमारा समीपने विषे (सुमनसां के०) शोनायमान छे मन जेमनां एवा नव्यजनो तथा देवताउ तेउनां (बंधनानि के०) निगडादिक बाह्य बंधन अने स्नेहादिक अन्यंतर बंधन ते (नूनं के०) निश्चें (हि के०) यस्मात् जे कारणमाटें (अधएव के०) नीचेंज (गछंति के०) जाय छे. अर्थात् तमारा समीपें सुमनस जे फूल तेनां बीट जे बंधन ते अधोमुख थाय छे, अने सुमनस जे नव्यजीव, तेनां बाह्यान्यंतर बंधन पण नीचां थाय छे ॥ २० ॥

हवे दिव्यध्वनिलक्षण तृतीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्थाने गनीरहृदयोदधिसंनवायाः, पीयूषतां तव
गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगना
जो, नव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

अर्थः–हे स्वामिन्! (गनीर के०) गंनीर एवो जे (हृदयोदधि के०) हृदय रूप समुद्र तेथकी (संनवायाः के०) उपनी एवी जे (तव के०) तमारी (गिरः के०) वाणी तेना (पीयूषतां के०) अमृतत्वने श्रोताउ (समुदीर

थंति के०) कहे छे, ते (स्थाने के०) युक्तज छे. कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्रथकीज छे. अने आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो हे प्रजो! तमारा हृदयरूपसमुद्रथकी थाय छे. हवे ए वाणीने अमृतपणुं केम घटे? त्यां कहे छे. (यतः के०) जे कारणमाटें (परम के०) उत्कृष्ट (संमद के०) हर्ष तेनो (संग के०) संयोग तेना (जाजः के०) जजनार एवा (जव्याः के०) जव्य प्राणीयो जे छे, ते तमारी वाणीने (पीत्वा के०) पान करीने एटले कर्णेंद्रियें करी आदर सहित सांजलीने (तरसापि के०) शीघ्रपणे एटले वेगें करीने पण (अजरामरत्वं के०) अजरामरपणाने (व्रजंति के०) पामे छे. अर्थात् जेम अमृतपान जे करे छे, ते अजरामर थाय छे, तेम तमारी वाणीना श्रवणथकी पण अजरामरपणुं प्राप्त थाय छे, माटें तमारी वाणीने अमृतपणुं कह्युं, ते योग्यज छे ॥ २१ ॥

हवे चामरलक्षण चोथो प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्वामिन्! सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो,मन्ये वदंति शु
चयः सुरचामरौघाः॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंग
वाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥ २२ ॥

अर्थः—वली स्तुति करतो छतो कहे छे,के (स्वामिन् के०) हे स्वामिन्! हुं (मन्ये के०) एम मानुं छुं जे (शुचयः के०) पवित्र एवा (सुरचामरौघाः के०) देवताउयें वींजेला एवा जे चामरोना समूह, ते (सुदूरं के०) अत्यंतपणे (अवनम्य के०) नीचा नमीने फरी (समुत्पतंतः के०) उंचा उछलता छता आ प्रकारें (वदंति के०) कहे छे. के (ये के०) जे मनुष्यो (अस्मै के०) आ प्रत्यक्ष एवा (मुनिपुंगवाय के०) मुनियोने विषे प्रधान जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेने (नतिं के०) नमस्कार तेने (विदधते के०) करे छे, (ते के०) ते मनुष्यो (खलु के०) वाक्यालंकारमां छे (नूनं के०) निश्चें (ऊर्ध्वगतयः के०) उंची छे गति जेनी एवा थाय छे. तथा (शुद्धजावाः के०) शुद्ध छे जाव जेमनो एवा थाय छे. अर्थात् चामरो कहे छे के अमो पण प्रजु आगल नीचां नमीने पछी उंचां चडीयें छैयें, तेम बीजा पण जे प्रजुने नमस्कार करनारा जव्य जीवो छे, ते ऊर्ध्वगतिने पामशे ॥ २२ ॥

हवे पांचमो सिंहासननामा प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम॥ आलोकयंति रभसेन नदंत मुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ ७३ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! आ संसारक्षेत्रने विषे (भव्यशिखंडिनः के०) भव्यरूप शिखंडी जे मोर छे, ते (इह के०) आ समवसरणनेविषे (त्वां के०) तमोने (उज्ज्वल के०) निर्मल देदीप्यमान (हेमरत्न के०) सुवर्ण तथा रत्न तेणें मिश्रित एवा (सिंहासनस्थं के०) सिंहासनने विषे बेठा थका अने (श्यामं के०) श्यामवर्णयुक्त तथा (गभीरगिरं के०) गंभीर छे वाणी जेमनी एवा तमोने (रभसेन के०) उत्सुकपणायें करीने (आलोकयंति के०) जोवे छे, ते केवी रीतें जोवे छे? तो के (चामीकराद्रि के०) मेरुपर्वतना (शिरसि के०) शिखर तेने विषे (उच्चैः के०) उंचे स्वरें करी (नदंतं के०) शब्द करतो एटले गर्जना करतो एवो (नवांबुवाहं के०) नवीन मेघनेज (इव के०) जेम. अर्थात् आहिं मेरुपर्वतने स्थानकें सिंहासन जाणवुं, अने मेघने स्थानकें प्रभुनुं श्याम शरीर जाणवुं, तथा गर्जनाने स्थानकें प्रभुनी वाणी समजवी ॥ २३ ॥

हवे भामंडलाख्यनामा छठ्ठो प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि॥ ७४ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (तव के०) तमारुं (उद्गच्छता के०) उंचुं जातुं एवुं अथवा प्रसरतुं एवुं (शितिद्युतिमंडलेन के०) श्याम जे प्रभा तेनुं जे मंडल अर्थात् भामंडल, तेणें करीने (लुप्त के०) लोपाणी छे एटले आछादित थइ छे (छद के०) पानडानी (छविः के०) छवि एटले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो (अशोकतरुः के०) अशोकवृक्ष ते (बभूव के०) होतो हवो. ए अर्थ युक्तज छे, केम के? (यदिवा के०) अथवा (वीतराग के०) गयो छे राग अने द्वेष जेथकी एवा हे वीतराग!

(तव के०) तमारा (सान्निध्यतोऽपि के०) सान्निध्यथकी पण एटले त मारुं वचनश्रवण तथा तमारुं रूपदर्शन तो दूर रहो, परंतु तमारा सान्नि ध्यथकी पण (सचेतनोपि के०) चेतनायें करी सहित एवो पण एटले अ चेतन अशोक तो दूर रहो, पण चेतना सहित जे होय ते पण (कः के०) कोण (नीरागतां के०) नीरागताने एटले निर्ममत्वने वैराग्यने (न के०) नहिं (व्रजति के०) पामे ? अर्थात् तमारा सांनिध्यथी जीव अवश्य नी रागीज थाय ॥ २४ ॥

हवे देवडुंडुभिलक्षण सातमा प्रातिहार्यातिशयने कहे छे.

भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृति
पुरिं प्रति सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जग
त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरडुंडुभिस्ते ॥ २५ ॥

अर्थः–(मन्ये के०) हुं एम मानुं छुं के, (देव के०) हे देव ! (ते के०) तमारो (सुरडुंडुभिः के०) देवडुंडुभि जे छे, ते (अभिनभः के०) आकाशने अभिव्यापीने (नदन् के०) शब्दायमान थयो छतो (जगत्रया य के०) त्रण जगत्ने (एतत् के०) आ प्रकारें (निवेदयति के०) निवेदन करे छे,जेम केः–(भोभोः के०) हे जगत्रयजनो ! तमें (प्रमादं के०) आ लस तेने (अवधूय के०) त्याग करीने (आगत्य के०) आवीने (एनं के०) ए जे श्रीपार्श्वप्रभु तेने (भजध्वं के०) भजो. ते केवा पार्श्वप्रभु छे? तो के (निर्वृतिपुरिंप्रति के०) निर्वृतिपुरि जे मोक्षपुरि ते प्रत्यें (सा र्थवाहं के०) मार्गवाहक एवा छे.अर्थात् ते सुरडुंडुभि कहे छे के हे लोको! तमें प्रमाद दूर करीने मोक्षदायक एवा पार्श्वप्रभुने भजो ॥ २५ ॥

हवे छत्रत्रयनामक आठमा प्रातिहार्यातिशयने कहे छे.

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुर
यं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितात
पत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे स्वामिन् ! (अयं के०) आ तमारा उपर जे त्रण छत्र छे, ते त्रण छत्र नथी, परंतु शुं छे? तो के (मुक्ता के०) मोती

तेना (कलाप के०) समूह, तेणें करी (कलित के०) सहित अने (उल्लसित के०) उल्लसित एवा जे (आतपत्र के०) त्रण छत्र तेना (व्याजात् के०) मीशें करीने (तारान्वितः के०) तारामंमल सहित छतो (ध्रुवं के०) निश्चयथकी (त्रिधा के०) त्रण प्रकारनुं (धृततनुः के०) धारण कस्युं छे शरीर जेणें एवो (विधुः के०) चंद्रमा जे छे, ते तमारी सेवा करवाने अर्थें जाणियें (अभ्युपेतः के०) तमारी पासें आव्यो होय नहीं? ते चंद्रमा केहवो थको आव्यो छे? तो के (विहताधिकारः के०) विशेषें करीने हणाणो छे जगत्ने विषे विद्योत करवारूप अधिकार एटले व्यापार जेनो एवो छे. ते व्यापार शा वास्ते हणाणो? तो के (भवता के०) तमोयें (भुवनेषु के०) त्रण भुवन जे छे ते (उद्योतितेषु के०) प्रकाशित करे छते एटले तमें जगत्नो प्रकाश कस्यो,तेवारें चंद्रमाने प्रकाश करवानो अधिकार विफलीभूत थयो ॥ २६ ॥

हवे रत्नादिनिर्मित वप्रत्रयने विषे मध्यस्थायिपणुं तथा देवेंद्रवंद्यत्व एवा लोकोत्तर अतिशयद्वयने काव्यद्वयें करीने कहे छे.

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंमितेन, कांतिप्रताप
यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रवि
निर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥२७॥

अर्थः–(भगवन् के०) हे भगवन्! तमें (अभितः के०) चारे पासें(माणिक्य के०) नील रत्न अने (हेम के०) सुवर्ण तथा (रजत के०) रूपुं. तेणें करीने (प्रविनिर्मितेन के०) प्रकर्षे करीने विनिर्मित करेलो एवो जे(सालत्रयेण के०) त्रण गढ,त्रिगडो गढ तेणें करीने (विभासि के०) शोभो छो,बिराजो छो, एटले एक गढ रत्नमय, बीजो सुवर्ण मय,अने त्रीजो रौप्यमय, एवा त्रण गढें करीने तमें शोभो छो, ते केनी पेठें शोभो छो ? तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे, ते जेम केः–(स्वेन के०) पोतानां एटले प्रभुनां (प्रपूरित के०) प्रकर्षें करीने पूस्युं छे (जगत्त्रय के०) त्रण जगत् जेणें तेणें करी (पिंमितेन के०) पिंमीभूत थइने रह्यां एवा (कांति के०) शरीरनो वर्ण अने (प्रताप के०) प्रताप तथा (यशसां के०) यश तेमना (संचयेन के०) संचयें करीनेज एटले समूहें करीनेज (इव के०) जा

णीयें होय नहीं? अर्थात् कांति, प्रताप अने यश तेना समूहेंज जाणे शोजे बे. केम के? नीलरत्नना गढने प्रजुना श्यामवर्णनी सदृशता बे तथा सुवर्णना गढने जगवानना प्रतापनी सदृशता बे, तथा रूपाना गढने जगवानना यशनी सदृशता बे, माटें ए उत्प्रेक्षा करी, ते योग्यज बे ॥ २७ ॥

दिव्यस्रजोजिन! नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्न
रचितानपि मौलिबंधान्॥पादौ श्रयंति जवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥

अर्थः–(जिन के०) हे जिन! (दिव्यस्रजः के०) मनोहर एवी जे पुष्पनी मालाउ बे ते (नमत्त्रिदशाधिपानां के०) तमारा चरणने विषे नमेला एवा जे देवेंद्रो तेमना (रत्नरचितानपि के०) वैडूर्य मणिरत्नोयें रचित एवा पण (मौलिबंधान् के०) मुकुटो जे बे तेने (उत्सृज्य के०) त्याग करीने (जवतो के०) तमारा (पादौ के०) चरणारविंदने (श्रयंति के०) आश्रय करे बे, एटले इंद्रोना मुकुटमां रहेलीयो जे पुष्पमालाउ बे,ते मुकुटनो त्याग करीने जगवानना चरणारविंदमां पडे बे. आहीं दृष्टांत कहे बे.–(यदि वा के०) अथवा (सुमनसः के०) पंमित अथवा देवताउ जे बे,ते (त्वत्संगमे के०) तमारा संगम बते (परत्र के०) अन्यस्थानकें (न रमंतएव के०) न थीज रमता. कारण के तेउ तमारा संग बतेज आनंद पामे बे, तेम पुष्पनुं नाम पण सुमनस बे माटें पुष्पमालायें जे तमारा चरणारविंदनो आश्रय कर्यो बे, ते युक्तज बे ॥ २८ ॥

हवे जिनोक्त मार्गने जे आश्रय करीने रह्या बे,तेने जिन तारे बे,ते कहे बे.

त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसु
मतो निजपृष्ठलग्नान्॥युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सत
स्तवैव, चित्रं विजो! यदसि कर्मविपाकशून्यः॥२९॥

अर्थः–(त्वं के०) तमें (नाथ के०) हे स्वामिन्! (जन्मजलधेः के०) जवसमुद्रथकी (विपराङ्मुखोपि के०) विशेषें करी पराङ्मुख थयेला बो ते बतां पण (निजपृष्ठलग्नान् के०) तमारी पोतानी वांसे लगेला एवा (असुमतः के०) प्राणीयो जे बे, तेने (यत् के०) जे [illegible]रण माटें

(तारयसि के०) तारो बो, ते (पार्थिवनिपस्य के०) विश्वना स्वामी अने (सतः के०) सुज्ञ एवा (तवैव के०) तमोनेज (हि के०) निश्चें (युक्तं के०) युक्त बे. त्यां दृष्टांत कहे बे. जेम पार्थिव जे पृथिविनी मृत्तिका तेथकी उत्पन्न थयेलो एवो (निप के०) घट बे ते पण पाणी उपर रह्यो बतो तेना पृष्ठदेशमां लागेला जनोने तारे बे, तेम तमें पण पार्थिवनिभ बो माटें तमारी पूंठें वलगेला जनोने संसारसमुद्रथकी तारो बो, ते युक्तज बे. परंतु अहींयां (चित्रं के०) एक आश्चर्य बे, ते शुं आश्चर्य बे? तोके (यत् के०) जे कारण माटें (विजो के०) हे स्वामिन् ! तमो (कर्मविपाकशून्यः के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मना विपाक जे फल तेथी शून्यः एटले रहित (असि के०) बो अने पार्थिवनिप जे माटीमय घट बे ते तो कुंजकारादिकृत पचनादिक क्रियायें करी युक्त बे, तेथी ते कर्मविपाकशून्य नथी, माटें एटलुंज तमारामां आश्चर्य बे ॥ २९ ॥

हवे विरोधालंकारगर्भित एवा जिनना अचिंत्यस्वरूपने कहे बे.

> विश्वेश्वरोऽपि जनपालक डुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

अर्थः–(जनपालक के०) जन जे लोक तेनुं पालन करे, तेने जनपालक कहियें. तेना संबोधनमां हे जनपालक ! (त्वं के०) तमें (विश्वेश्वरोपि के०) विश्व जे त्रण जगत् तेना ईश्वर बो तो पण (डुर्गतः के०) दरिद्री बो.अहीं जे विश्वनो ईश्वर होय ते दरिद्री केम होय? ए विरोधालंकार बे,ते विरोधनो परिहार करे बे,के तमें विश्वेश्वर बो, तो पण (डुर्गतः के०) डुःखें करीने ज्ञात बो जाणवा योग्य बो. अथवा "जनपालकडुर्गतः" ए शब्दनां आवी रीतें पद काहाडीने अर्थ करवो, जेम केः–(जनप के०) हे जनप ! तमें (अलक के०) केश तेणें करी (डुर्गतः के०) दरिद्री बो,एटले तमारे दीक्षाग्रहणानंतर केशवृद्धिनो अजाव बे (वा के०) अथवा पक्षांतरे (त्वं के०) तमें (ईश के०) हे स्वामिन् ! (किं के०) शुं (अक्षरप्रकृतिरपि के०) अक्षर एटले मोक्षस्वजावी बो, तो पण (अलिपिः के०) ब्राह्मी आदिक लिपियें करी रहित वर्त्तो बो, एटले जे अक्षर स्वजावी

होय, तेतो लिपिरूप होय, ए पण विरोध छे, ते विरोधनो परिहार करे छे. (अक्षर के०) स्थिर छे निश्चल छे (प्रकृतिः के०) स्वभाव जेनो ते अक्षरप्रकृति कहियें, अर्थात् शाश्वतरूप छो, अथवा अक्षर जे मोक्ष तेज छे प्रकृति एटले स्वभाव जेनो एवा तथा (अलिपिः के०) नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमें छो तथा (अज्ञानवत्यपि के०) अज्ञानवाला एवा पण (त्वयि के०) तमारे विषे निश्चेंथकी (विश्वविकाशहेतुः के०) त्रण जगत्ने प्रकाश करवानुं हेतुभूत एवुं जे (ज्ञानं के०) ज्ञान ते (सदैव के०) निरंतर (कथंचित् के०) केमज (एव के०) निश्चें (स्फुरति के०) स्फुरे छे ? एटले जे अज्ञानवान् होय, तेने ज्ञान स्फुरे नहीं, ए विरोध छे, ते विरोधना परिहारने माटें कहे छे. अज्ञान अने अवति ए बे पद जूदां करीने अर्थ करवो, त्यारे (अज्ञान् के०) ज्ञान रहित एवा जे मूर्खजन तेने (अवति के०) सम्यक् बोध करे छते (त्वयि के०) तमारे विषे ज्ञान स्फुरे छे ॥ ३० ॥

हवे जे जिननी अवज्ञा करे छे, तेने ते अवज्ञा अनर्थने माटें थाय छे, ते त्रण काव्यें करी कहे छे.

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि॥ छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥ ३१ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! (कमठेन के०) कमठासुर जे तेणें (रोषात् के०) कोपथकी एटले कषायना उदयथकी (यानि के०) जे (रजांसि के०) रजो, तमारा उद्देशें करीने (उत्थापितानि के०) उफाडीयो (तैः के०) ते रजोयें करीने (तव के०) तमारी (छायापि के०) शरीरनी छाया एटले कांति ते पण (न हता के०) न हणाणी, ते रज केवीयो छे? तो के (प्राग्भार के०) अधिकपणायें करीने (संभृत के०) भर्यां छे व्याप्यां छे (नभांसि के०) आकाशो जेणें एवी छे. हवे ते कमठासुर केहवो छे? तो के (शठेन के०) मूर्ख एवो छे. (परं के०) परंतु (हताशः के०) हणाणी छे आशा जेनी एवो (दुरात्मा के०) दुष्ट छे आत्मा जेनो एवो (अयमेव के०) एज कमठासुर ते पोतेंज (अमीभिः के०) एज रजोयें करीने (ग्रस्तः के०) व्याप्त थयो. अर्थात् रज जे पापरूप कर्म तेणें करीने पोतेंज व्याप्त थयो ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसल
मांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि
दध्रे, तेनैव तस्य जिन! दुस्तरवारिकृत्यम्॥ ३२ ॥

. अर्थः–(जिन के०) हे जिन! (दैत्येन के०) कमठासुर जे छे तेणें (दुस्तर के०) दुःखें तरवा योग्य एटले असह्य एवुं (वारि के०) पाणी ते (यत् के०) जे कारणें उपसर्ग करवाने माटें तमारा उपर (मुक्तं के०) मूक्युं वर्षाव्युं, (अथ के०) एटलाथकी अनंतर हवे (तेनैव के०) तेज पाणीयें (तस्य के०) ते कमठासुरने (दुस्तरवारिकृत्यं के०) भूंडी तरवारनुं कार्य (दध्रे के०) कीधुं एटले माठी तरवारें करी जेम छेदन भेदन थाय तेम संसारने विषे छेदन भेदनादिक लक्षण जे कार्य ते कर्युं. अर्थात् भगवाननी उपर जलप्रक्षेप जे कर्यो, ते सांसारिक दुःखहेतु छे माटें दुस्तर तरवारनी पेरें कमठासुरने पोतानेज छेदन भेदन वधादिकनो हेतु थयो, हवे ते दुस्तर पाणी वर्षाव्युं ते केहवुं छे? तो के (गर्जत् के०) गर्जना करतो अने (ऊर्जित के०) प्रबल बलवंत एवो छे (घनौघं के०) मेघनो समूह जेने विषे एवुं छे, तथा वली केहेवुं छे? तो के (अदभ्रभीमं के०) घणुं भयंकर एवुं छे, वली केहवुं छे? तो के (भ्रश्यत् के०) आकाशथकी पडती एवी (तडित् के०) विजली छे जेने विषे एवुं छे. वली केहवुं छे? तो के (मुसल के०) मुशलना सरखी (मांसल के०) पुष्ट छे अने (घोर के०) बीहामणी भयंकर एवी छे (धारं के०) धारा जेने विषे एवुं छे ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालंबभृद्भय
दवक्त्रविनिर्यदग्निः॥ प्रेतव्रजः प्रति भवंतमपीरितो
यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

अर्थः–हे स्वामिन् ! कमठनामा दैत्य जे छे, तेणें (यः के०) जे (प्रेतव्रजः के०) दैत्यनो समूह (भवंतं के०) तमारी (प्रति के०) प्रत्यें (ईरितः के०) प्रेर्यो (सः के०) ते दैत्यसमूह (अपि के०) पण (अस्य के०) ए कमठासुरनेज (प्रतिभवं के०) भव भवने विषे (भवदुःख हेतुः के०) संसारनां जे दुःख तेनुं कारण (अभवत् के०) होतो हवो.

हवे ते दैत्यसमूह केहवो छे? तो के (ध्वस्त के०) नीचें पड्या एवा जे (ऊर्ध्वकेश के०) उपरना केश तेणें करीने (विकृताकृति के०) विरूप थइ छे आकृतियो जेनी एवां जे (मर्त्यमुंरु के०) मनुष्यनां माथां तेनुं (प्रालंब के०) फूलतुं एटले हृदय पर्यंत अवलंबित थाय एवुं जे फुमणुं तेने (भृत् के०) धारण करे छे,एवो प्रेतव्रज छे, वली केहवो छे? तो के (भयद के०) भयने देनारां एवां जे (वक्र के०) मुख तेथकी (विनिर्यदग्निः के०) निकलेल छे अग्नि जेने एवो प्रेतव्रज छे ॥ ३३ ॥

हवे जे प्राणी जिननुं आराधन करे छे, तेनी प्रशंसा करे छे.

धन्यास्तएव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य,माराधयंति वि
धिवद्विधुतान्यकृत्याः॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदे
हदेशाः, पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥३४॥

अर्थः-(भुवनाधिप के०) हे त्रण जगतूना अधिपति! तथा (विभो के०) हे स्वामिन्! (तएव के०) तेज जनो (धन्याः के०) धन्य छे एटले प्रशंसनीय छे, ते कया जनो धन्य छे? तो के (ये के०) जे (जन्मभाजः के०) भव्य जनो (भुवि के०) पृथिवीने विषे (विधिवत् के०) विधिपूर्वक एटले भले प्रकारें करी (त्रिसंध्यं के०) त्रणे कालें (तव के०) तमारुं (पादद्वयं के०) चरणयुगल जे छे, तेने (आराधयंति के०) आराधन करे छे एटले सेवे छे, ते जन धन्य जाणवा. ते केवा जनो छे? तो के (विधुतान्यकृत्याः के०) विशेषें करी टाल्यां छे अन्यकृत्यो एटले बीजां कार्यो जेमणें एवा छे, वली केहवा छे? तो के (भक्त्योल्लसत् के०) भक्तियें करी उल्लास पामतो एवो जे (पुलक के०) रोमांच तेणें करी (पक्ष्मल के०) व्याप्त छे (देहदेशाः के०) शरीरना भाग जेमना एवा छे ॥ ३४ ॥

हवे आठ काव्यें करीने ग्रंथकर्त्ता पोतानी विज्ञप्तिने कहे छे.

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्र
वणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवि
त्रमंत्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

अर्थः-(मुनीश के०) हे मुनीश ! (मन्ये के०) हुं एम मानुं छुं, के

यरूर्ड) आ (अपारजववारिनिधौ के०) नथी पार जेनो एवो
मां पाणीनो समुद्र, तेने विषे तमें (मे के०) मह्वारा (श्रवण
के०) कानना विषय ते प्रत्यें (न गतः के०) न प्राप्त थयेला
(असि के०) बो,एटले में आ संसार समुद्रने विषे तमोने कोइ वारें
ए सांजव्या नथी. एज वातने समर्थन करे बे, ते जेम के:–(वा के०)
अथवा जो (तव के०) तमारा (गोत्रपवित्रमंत्रे के०) नामरूप जे पवित्र
मंत्र ते (आकर्णिते तु के०) श्रवण करे बतें पण (विपद्विषधरी के०) आ
पदारूप जे सर्पिणी बे ते (किं के०) शुं (सविधं के०) समीप (समे
ति के०) आवे ? अर्थात् तमारुं नाम सांजव्या पढी तो आपदा आवे
नही अने मने तो आ संसाररूप आपत्तियो आवेली बे, तेथी एम मानुं
बुं, के में पूर्वजवोने विषे क्यारें पण तमारुं नाम सांजब्युं नथी ॥ ३५॥

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव!, मन्ये मया महि
तमहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश! पराज
वानां, जातोनिकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

अर्थः–(देव के०) हे देव! (मन्ये के०) हुं मानुं बुं, संजावना करुं बुं
के (मया के०) में (जन्मांतरेपि के०) जन्मांतरने विषे पण (तव के०) तमा
रुं (पादयुगं के०) चरणयुगल जे बे तेने (न महितं के०) नथी पूज्युं, ते
चरणयुगल केहवुं बे? तो के (ईहित के०) वांबित तेनुं जे (दान के०)
देवुं तेने विषे (दक्षं के०) चतुर एवुं बे, हवे तेज कहे बे. जे (मुनीश
के०) हे मुनीश ! (तेन के०) तेकारण माटें (अहं के०) हुं (इह के०)
आ (जन्मनि के०) जन्मने विषे (मथिताशयानां के०) मथन कर्यो बे
चित्तनो आशय जेमणें एवा (पराजवानां के०) पराजवो जे तेमनुं (निके
तनं के०) स्थानक (जातः के०) थयो, अर्थात् तमारा चरणारविंदनो पू
जक, पराजवनुं स्थानक होतो नथी,परंतु में पूर्व जवोने विषे तमारां च
णारविंद क्यारें पण पूज्यां नथी, एम जासे बे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विजो! सकृ
दपि प्रविलोकितोऽसि॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मा
मनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

अर्थः–(विज्ञो के०) हे स्वामिन् ! (नूनं के०) निश्चें में (पूर्वं के०) प्रथम (सकृदपि के०) एक वार पण तमो (न के०) नहिं (प्रविलोकि तोऽसि के०) जोयेला छो, ते हुं केहवो ? तो के (मोहतिमिरावृतलोचनेन के०) मोहरूप तिमिर जे अंधकार तेणें आवृत थयां छे नेत्र जेनां एवो छुं. शा माटें नथी जोया ? तो के (हि के०) जे कारण माटें (अन्यथा के०) जो तमारुं दर्शन कर्युं हत तो (एते के०) आ, (अनर्थाः के०) अनर्थरूप कष्टो (मां के०) मुजने (कथं के०) केम? (विधुरयंति के०) पीडे छे, अर्थात् पूर्वें जो तमारुं दर्शन थयुं हत, तो आ अनर्थो मुने पी डत नही. हवे ते अनर्थो केहवा छे ? तो के (मर्माविधः के०) मर्मस्था नने छेदनारा छे तथा वली केहवा छे? तो के (प्रोद्यत्प्रबंधगतयः के०) प्रकर्षें करी प्राप्त थइ छे सविस्तर कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा छे॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव ! दुःख पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥

अर्थः–(जनबांधव के०) जन जे लोक तेना बांधव एटले हितकर्त्ता अर्थात् हे जनहितकारिन्! (मया के०) हुं जे तेणें कोइ भवने विषे तमो (आकर्णितोऽपि के०) सांभल्या पण तथा (महितोऽपि के०) पूज्या पण तथा (निरीक्षितोऽपि के०) दीठा पण परंतु (नूनं के०) निश्चें (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (चेतसि के०) चित्तने विषे (नविधृ तोऽसि के०) धारण करेला नथी. (तेन के०) ते कारण माटें (दुःखपात्रं के०) दुःखनुं पात्र, हुं (जातोऽस्मि के०) उत्पन्न थयेलो छुं. (यस्मात् के०) जे कारण माटें (क्रियाः.के०) आकर्णितादिक क्रियाउ जे छे, ते (भावशून्याः के०.) भावें करि रहित एवी छती (न के०) नहिं (प्रति फलंति के०) विशिष्टफल देवावाली थाय छे ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य!, कारुण्यपुण्यव सते! वशिनां वरेण्य! ॥ भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे स्वामिन्! (दुःखिजनवत्सल के०) दुःख छे जेने ते दुःखी कहियें, अने दुःखी एवा जे जनो तेने विषे वत्सल एटले कृपापर तेना संबोधनमां हे दुःखिजनवत्सल! (हेशरण्य के०) शरणें आवेला प्राणीने हितकारक तेना संबोधनमां हे शरण्य! तथा (कारुण्यपुण्यवसते के०) कारुण्य जे दयापणुं तेनी पुण्य एटले पवित्र वसति एटले स्थानक तेना संबोधनने विषे हे कारुण्यपुण्यवसते! अथवा कारुण्य जे दया अने पुण्य जे धर्म अर्थात् दया धर्मनी वसति एटले घर एवा तथा (वशिनां वरेण्य के०) वश छे इंद्रियो जेमने एवा जितेंद्रिय पुरुषोमां वरेण्य एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे वशिनां वरेण्य! तथा (महेश के०) महोटा एवा ईश जे स्वामी तेने महेश कहियें तेना संबोधनने विषे हे महेश! (त्वंम के०) (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (नते के०) नमस्कार कस्यो छे जेणें एवा (मयि के०) मारे विषे (दयां के०) कृपा जे तेने (विधाय के०) करीने (दुःखांकुर के०) दुःखनो अंकुर जे उत्पत्तिस्थानक, तेनुं (उद्दलन के०) खंरुन तेने विषे (तत्परतां के०) तत्परपणुं तेने (विधेहि के०) करो ॥ ३ए ॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादि
तरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधा
नवंध्यो,वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन! हा हतोऽस्मि॥४०॥

अर्थः-हे स्वामिन्! तथा (भुवनपावन के०) हे त्रण जगत्ने पवित्र करनार! (त्वत्पादपंकजं के०) तमारा चरणारविंदना (शरणं के०) शरण तेने (आसाद्य के०) पामीने (अपि के०) पण (प्रणिधानवंध्यः के०) प्रणिधान जे तमारुं ध्यान करवुं, तेणें करीने वांझियो थयो एटले शून्य थयो एवो (अस्मि चेत् के०) जो हुं छुं, तो (वध्यः के०) रागादिक शत्रुयें करी हणवा योग्य छुं, ए कारण माटें (हा के०) हा! इति खेदे (हतोस्मि के०) दुर्दैवें मारेलो छउं. हवे तमारुं पादपंकज केहवुं छे? तो के (निःसंख्य के०) असंख्य एटले अनंत एवुं जे (सार के०) बल तेनुं (शरणं के०) घर एवुं छे तथा (शरण्यं के०) शरण करवा योग्य छे, वली केहेवुं छे? तो के (सादित के०) क्षय पमाड्या छे (रिपु के०)

रागादिक वैरी जेणें, तेणें करीने (प्रथित के०) प्रसिद्ध छे (अवदात के०) प्रजाव जेनो एवुं छे ॥ ४० ॥

देवेंद्रवंद्य ! विदिताखिलवस्तुसार !, संसारतारक ! विजो ! जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव ! करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य जयदव्यसनांबुराशेः ॥४१॥

अर्थः–(देवेंद्र के०) देवतानो जे इंद्र तेणें (वंद्य के०) वंदन करवा योग्य तत्संबोधने हे देवेंद्रवंद्य ! वली (विदित के०) जाण्युं छे (अखिल के०) समग्र (वस्तु के०) वस्तुनुं (सार के०) रहस्य जेणें, तेना संबोधन मां हे विदिताखिलवस्तुसार ! तथा (संसारतारक के०) हे संसारसमुद्र थकी तारनार ! (विजो के०) हे समर्थ ! तथा (जुवनाधिनाथ के०) हे त्रिजुवनना नाथ ! तथा (देव के०) हे देव ! तथा (करुणाह्रद के०) करुणाना ह्रद, उपलक्षणथी हे करुणाना समुद्र ! (अद्य के०) हमणां (सीदंतं के०) सीदातो विषादने प्राप्त थयो एवो (मां के०) मुजने (जयद के०) जयनो देनारो एवो (व्यसनांबुराशेः के०) व्यसननो जे समुद्र तेथकी (त्रायस्व के०) रक्षण करो अने (पुनीहि के०) पापनो नाश करी पवित्र करो ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! जवदंघ्रिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! जूयाः, स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥४२॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ ! (यदि के०) जो (जवदंघ्रिसरोरुहाणां के०) तमारां चरणारविंदसंबंधी (जक्तेः के०) जक्तिनुं (किमपि के०) कांइ पण (फलं के०) फल (अस्ति के०) छे (तत् के०) तो (शरण्य के०) हे शरणागतवत्सल ! (त्वदेकशरणस्य के०) जेने तमारुंज एक शरण छे एवा (मे के०) मने (अत्र के०) आ (जुवने के०) लोकने विषे तथा (जवांतरेऽपि के०) जवांतरने विषे (त्वमेव के०) तमेज (स्वामी के०) स्वामी (जूयाः के०) थाउ. हवे पूर्वोक्त जक्ति केहवी छे ? तो के (संततिसंचितायाः के०) निरंतर संताननी परंपरायें संचेली

एटले वृद्धिंगत थइ एवी छे. तथा आहिं चरणनुं तो युगल छेतथापि "अंघ्रिसरोरुहाणां" ए बहु वचन लख्युं छे ते पुण्यत्वज्ञापनने माटें छे ॥४२॥

हवे कवि स्तवननो उपसंहार करतो छतो तथा पोताना नाम ने प्रकाश करतो छतो कहे छे.

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुल ककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्ध लक्षा, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः॥४३॥ जननयनकुमुदचंद्र,प्रभास्वराःस्वर्गसंपदो भुक्त्वा॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ युग्मम् ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरनामक मष्टमस्मरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थः-(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र ! तथा (विभो के०) हे स्वामिन् ! तथा (जननयनकुमुदचंद्र के०) जन जे मनुष्य तेना नेत्ररूप जे चंद्रविका सि कमल, तेने विषे चंद्रमा समान तेना संबोधनने विषे हे जननयनकु मुदचंद्र! आहिं अभ्यंतरमां कवियें श्रीसिद्धसेन दिवाकराचार्यें दीक्षा समय मां गुरुयें दीधेला कुमुदचंद्र एवा पोताना नामनुं पण सूचन कर्युं छे. (ये के०) जे (भव्याः के०) भव्यप्राणीयो (इत्थं के०) एम पूर्वोक्त प्रकारें (विधि वत् के०) विधिपूर्वक, (तव के०) तमारा (संस्तवं के०) स्तोत्रने (रचयंति के०) रचे छे (ते के०) भव्यप्राणीयो, (अचिरात् के०) थोडाएक कालमां (मोक्षं के०) अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, स्वरूप निःश्रेयसने (प्रपद्यं ते के०) पामे छे. शुं करीने पामे छे ? तो के (स्वर्गसंपदः के०) देवलोक नी संपदा सुखने (भुक्त्वा के०) भोगवीने, ते केवी स्वर्ग संपदा? तो के (प्रभास्वराः के०) प्रकर्ष एटले अत्यंत भास्वर नाम देदीप्यमान एवीयो, तथा ते भव्यो केहवा छे? तो के (समाहितधियः के०) समाधिवालीध्या नयुक्त निश्चल छे बुद्धि जेनी एवा छे, वली केहवा छे? तो के (सांद्रोल्ल सत् के०) आकरो, उल्लास पामतो एवो (पुलक के०) रोमांच तेणें (कं चुकित के०) कंचुकें करी सहित छे (अंगभागाः के०) शरीरनो देश

जेनो एवा, वली केहेवा छे? तो के (त्वद्बिंब के०) तमारुं जे प्रतिबिंब तेनुं (निर्मल के०) मलरहित एवुं जे (मुखांबुज के०) मुखकमल तेने विषे (बद्धलक्षाः के०) बांध्युं छे लक्ष एटले ध्यान जेमणें एवा, तथा व ली केहेवा छे ? तो के (विगलित के०) विशेषें करीने गली गयो छे (म लनिचयाः के०) कर्मरजोलक्षण मलसमूह जेमनो एवा छे. अर्थात् आ प्रकारना कहेला एवा, जे नव्यप्राणीयो तमारुं संस्तवन करे छे. ते स्व र्गलोकमां देवताउं थइने त्यां स्वर्ग सुखोने नोगवी फरी मनुष्य नव पामीने थोडाक कालमां शिवसुखने पामे छे ॥ आ स्तोत्रमां प्रायः दरेक श्लोकमां मंत्रो छे, परंतु रूडी रीतें आहीं कहेला नथी, माटें ते गुरुना आम्नायथी जा णवा ॥ ४४ ॥ इति श्री कल्याणमंदिरनामकं अष्टमं स्मरणं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

॥ अथ ॥

॥ बृहच्छांतिस्तवनामकं नवमस्मरणं प्रारभ्यते ॥

नो नो नव्याः श्रृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमे
तत्, ये यात्रायां त्रिनुवनगुरोरार्हतां नक्तिना
जः॥ तेषां शांतिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रनावा,
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥

अर्थः—(नोनोनव्याःके०) नोनो ए संबोधनें करी हे नव्याः एटले हे मुक्तियोग्य प्राणीयो ! तमो (प्रस्तुतं के०) प्रस्ताव एटले अवसरने योग्य एवुं अने (सर्वं के०) साद्यंत एवुं तथा (एतत् के०) आ समीपतरवर्त्ति एवुं (वचनं के०) वचन जे तेने (श्रृणुत के०) सांनलो. ते समीपतरवर्त्ति एवुं कयुं वाक्य ? तो के (आर्हतां के०) अर्हत जे वीतराग ते छे देव जेने एवा (तेषां के०) प्रसिद्ध (नवतां के०) तमें ते तमारी (शांतिः के०) शांति, (नवतु के०) हो. ते शांति शेणें करीने थाय ? तो के (अर्हदादिप्र नावात् के०) अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, तेमना माहात्म्य थकी, वली ते केहवा तमो नव्य प्राणीयो के जेने शांति थाय ? तो के (ये के०) जे नव्यप्राणीयो (त्रिनुवनगुरोः के०) त्रिनुवनना गुरु जे नगवान् ते

मनी (यात्रायां के०) यात्राने विषे (नक्तिनाजः के०) नक्तिना नजनारा बे. ते नव्य प्राणीयोने शांति थाय. हवे ते शांति केहेवी बे? तो के (आरोग्यश्रीधृतिमतिकरी के०) आरोग्य, श्री, धृति अने मति, ए चार वानांने करनारी एवी बे, तथा वली (क्लेशविध्वंसहेतुः के०) क्लेशना विध्वंसनी कारणनूत बे ॥ १ ॥

वली पण कहे बे.

॥गद्यं॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेह संनवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोपाघंटाचालनानंतरं सकलसुराऽसुरेंडैः सह समागत्य सविनयमर्हनट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माजिपेकः शांतिमुद्घोपयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पंथा इति नव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोपयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां नगवंतोऽर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥

अर्थः-(नोनोनव्यलोकाः के०) हे नव्यलोको! (हि के०) जेकारण माटें (इह के०) आ (नरतैरावतविदेह के०) नरत, ऐरावत अने महाविदेह तेने विषे (संनवानां के०) उत्पन्न थया एवा (समस्ततीर्थकृतां के०) समग्र तीर्थंकरो जे बे तेमना (जन्मनि के०) जन्म समयने विषे (आसन के०) सौधर्माधिपतिनां आसन, (प्रकंप के०) प्रकंपित थयां तेनी (अनंतरं के०) पबी (अवधिना के०) अवधिज्ञानें करीने

(विज्ञाय के०) जिनजन्मने जाणीने (सुघोषाघंटा के०) सुघोषानामा घंटा ना (चालनानंतरं के०) चलन एटले वगाड्या पछी (सौधर्माधिपतिः के०) सौधर्मेंद्र जे छे ते, (सकल के०) समग्र (सुर के०) देवता, (असुर के०) पातालवासी देवो तेना (इंद्रैःसह के०) इंद्रोनी साथें एटले असुरसुरेंद्रो यें युक्त छतो (समागत्य के०) त्यां आवीने (सविनयं के०) विनय जे स्तुति तेणें करीने (अर्हद्भट्टारकं के०) अर्हत्रूप भट्टारक तेने (गृहीत्वा के०) करसंपुटमां ग्रहण करीने (कनकाद्रिशृंगे के०) मेरुपर्वतना शिखर उपर (गत्वा के०) जइने (विहित के०) निर्माण कर्यो छे (जन्माभिषेकः के०) स्नात्र महोत्सव जेणें एवो छतो ते स्नात्रनी समाप्ति थये छते (शांतिमुद्घोपयति के०) महोटा एवा शब्दें करीने शांतिने पठन करे छे (ततः के०) ते कारण माटें (अहं के०) हुं पण (कृतानुकारं के०) तेमज अनुकृति (यथा के०) जेम थाय, (इति के०) ए प्रकारें (कृत्वा के०) करीने तथा विचारीने, शुं विचारीने? तो के (महाजनः के०) इंद्रादिक देव समूह (येन के०) जे मार्गें (गतः के०) प्रवर्त्त्यो (सः के०) तेज (पंथाः के०) मार्ग तेने आपणें पण अनुसरवुं. अर्थात् आपणें पण देवसमूहें कर्युं तेम करवुं. (इति के०) ए कारण माटें (भव्यजनैः के०) भव्य प्राणीयो जिनालयने विषे (सह समेत्य के०) रूडी रीतें एकठा मली साथें आवीने (स्नात्रपीठे के०) स्नात्र पीठने विषे (स्नात्रं विधाय के०) श्रीजिननो स्नात्र करावीने (शांतिं के०) शांतिना पाठने हुं जे (उद्घोषयामि के०) उद्घोषणा करुं छुं ते (तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरं के०) तेनी पूजा, यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवानंतर (इतिकृत्वा के०) ए प्रकारें करीने शांतिना महोत्सवनी उद्घोषणाने हे भव्यजनो! तमो (कर्णं दत्वा के०) सांभलवा माटें कानने सावधान करीने (निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा के०) सांभलो सांभलो. स्वाहा ए मंत्राक्षर पूर्वक अहिं द्विरुक्ति छे,ते अत्यादर ख्यापनने माटे छे.(ॐ के०) ॐकार जे छे,ते पंच परमेष्ठिवाचक मंगलने माटें उच्चारण करीने कहे छे, के हे भव्यप्राणीयो! (पुण्याहं पुण्याहं के०) आज पुण्यनो दिवस छे,पुण्यनो दिवस छे,तथा (भगवंतः के०) समग्र ऐश्वर्ययुक्त एवा (अर्हंतः के०) तीर्थंकरो ते (प्रीयंतां प्रीयंतां के०) अतिसंतुष्ट थाओ, अतिसंतुष्ट थाओ. ते अर्हंत भगवान् कहेवा छे? तो के (सर्वज्ञाः के०) सचराचर

जगत् जे तेने केवलज्ञानें करीने जाणे एवा छे. वली केहवा छे ? तो के (सर्वदर्शिनः के०) केवल दर्शनें करीने सर्वने जोवे छे, तथा (त्रिलोकनाथाः के०) लोकत्रय जे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल, तेना नाथ एवा, तथा (त्रिलोकमहिताः के०) पूर्वोक्त त्रण लोकें करी अर्चित एवा, अने वली (त्रिलोकपूज्याः के०) त्रण लोकने पूजन करवा योग्य एवा, तथा (त्रिलोकेश्वराः के०) त्रण लोकना ईश्वर एवा, तथा (त्रिलोकोद्योतकराः के०) अज्ञानतिमिरनाशकत्वें करी त्रण लोकना प्रकाशकारक छे.

ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ
सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य
विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत
नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाःशांताःशांतिकरा
भवंतु स्वाहा ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदु
र्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥

अर्थः—वली ते केहवा छे? तो के (शांताः के०) क्रोधादिकना अभाव थकी उपशांत थयेला एवा तथा (जिनाः के०) रागादिकना जय करनारा एवा श्री ऋषभदेवजी जेमां आदि छे तथा (वर्द्धमानांताः के०) श्रीवीरस्वामी छे अंतमां जेने एवा चोवीश तीर्थंकरो ते (शांतिकराः के०) शांतिना करनारा एवा (भवंतु के०) हो. (ॐ के०) ॐकार मंगलार्थ वाचक जाणवो, तथा (मुनिप्रवराः के०) मुनियोने विषे श्रेष्ठ एवा (मुनयः के०) साधुउ जे छे ते (रिपुविजय के०) शत्रुकृत पराभव, तथा (दुर्भिक्ष के०) दुष्काल तथा (कांतारेषु के०) चोर कंटकादिकें दूषितमार्गने विषे तथा (दुर्गमार्गेषु के०) अरण्यमार्गने विषे (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु के०) रक्षण करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी
मेधा विद्यासाधनप्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीत
नामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥

अर्थः—(ॐ के०) ॐकार परमात्मावाचक प्रणव बीज छे, (ह्रीं के०) ह्रींकार मायाबीज ते वश करनार छे, (श्रीं के०) श्रींकार लक्ष्मीबीज ते द्रव्यागमन कारण छे, तथा (धृति के०) धैर्य, (मति के०) बुद्धि, (कीर्त्ति के०) यश, (कांति के०) शोभा, (बुद्धि के०) वर्त्तमानें उपजती सांप्रतदर्शिनी बुद्धि, (लक्ष्मी के०) धनादि संपत्ति, (मेधा के०) धारण करवानी बुद्धि, (विद्यासाधन के०) चौद विद्यानुं साधन, तथा (प्रवेशन के०) गृहप्रवेश तथा (निवेशनेषु के०) निवेशन जे मुकाम तेने विषे (सुगृहीतनामानः के०) शोभन ग्रहवा योग्य छे नाम जेमनुं एवा (ते के०) ते पूर्वोक्त (जिनेंद्राः के०) तीर्थंकरो ते सदैव (जयंतु के०) जयवंता वर्तो ॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या अछुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥

अर्थः—वली रोहिणीथी आरंभीने मूलमां लखेली एवी महामानसी देवी पर्यंत (षोडश के०) शोल एवी (विद्यादेव्यः के०) विद्याधिष्ठात्री देवीयो (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु स्वाहा के०) रक्षण करो. ए ठेकाणें (स्वाहा के०) स्वाहा भणवुं. कारण के ते वृद्धनो आम्नाय छे. कोइ ठेकाणे ॐस्वाहा एवो पण पाठ छे. वली आदिं (ॐ के०) ॐकार ते मंगलार्थ बोलवो. पछी (आचार्योपाध्यायप्रभृति के०) आचार्य अने उपाध्याय प्रमुख (चातुर्वर्ण्यस्य के०) आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, ए चार प्रकारवाला एवा (श्रीश्रमणसंघस्य के०) सुशोभित एवा श्रमण जे श्रीवीर भगवान् तेना संघने (शांतिर्भवतु के०) शांति हो, (तुष्टिर्भवतु के०) तुष्टि थाओ (पुष्टिर्भवतु के०) धर्मनी पुष्टि थाओ ॥

ॐग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतुसहिताःसलोकपालाःसोम यम वरुण कु

बेर वासवादित्य स्कंद विनायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्रामनगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंता प्रीयंतां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च नवंतु स्वाहा ॥

अर्थः—हवे वली पण पूर्वोक्त श्रीसंघने (ॐ ग्रहाः के०) नव ग्रहो जे ठे तेनां नाम कहे ठे. चंड्र, सूर्य, अंगारक, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु अने केतु (सहिताः के०) परस्पर मब्या ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए (सलोकपालाः के०) चार लोकपालें सहित तथा वासव ते इंड्र, आ दित्य ते बार प्रकारना सूर्य, स्कंद अने विनायक जे गणेश, तेणेंकरी (उ पेताः के०) मब्या एवा सर्व देवताउं (ये च अन्येपि के०) वली अनेरा प ण जे ग्राम, नगर, क्षेत्रना (देवतादयस्ते सर्वे के०) देवतादिक ठे ते सर्वे (प्रीयंतां प्रीयंतां के०) प्रसन्न थाउं, प्रसन्न थाउं, तथा (अक्षीण के०) नथी क्षय पाम्या एवा (कोश के०) नंमार जेना तथा (कोष्ठागाराः के०) धान्यनां गृह जेमनां एवा (नरपतयः के०) राजाउं जे ठे ते प्रसन्न (न वंतु के०) थाउं, (स्वाहा के०) स्वाहानो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद स्वजन सं बंधि वंधुवर्गसहिता नित्यं चामोद प्रमोद कारिणः अस्मिँश्च नूमंमलायतननिवासिसाधु साध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधि डुःखडुर्निक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्नवतु ॥

अर्थः—पुत्र एटले सुत, मित्र एटले हितकारक, भ्रातृ एटले सहोदर कलत्र एटले स्त्री, सुहृद् एटले समान वयवाला, स्वजन एटले ज्ञाति, संबंधी एट ले श्वशुरपक्षवाला, बंधुवर्ग एटले सगोत्रीय ते (सहिताः के०) परस्पर मब्या, एवा ते सर्व (नित्यं के०) निरंतर (च के०)वली आमोद ए टले हर्ष अने प्रमोद एटले चित्तप्रसन्नता तेने कारिणः एटले करनारा हो, तथा (अस्मिन् के०) आ मृत्युलोकने विषे (नूमंमलायतन के०) पृथि वीमां पोताना स्थानकोने विषे (निवासि के०) निवास करनारा एवा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका तेमना रोग, उपसर्ग, व्याधि, डुःख, डुर्नि

क अने दुर्मनपणुं तेमना (उपशमनाय के०) उपशमने अर्थे शांति जे छे, ते (भवतु के०) हो.

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋध्धि वृध्धि मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥

अर्थः–(ॐ के०) ॐकार जे छे ते मंगलार्थज छे (तुष्टि के०) संतोष, (पुष्टि के०) शरीरादि तोष, अथवा पुरुषार्थसाधन सामर्थ्य, (ऋद्धि के०) संपत्ति, एटले धनधान्यादिबाहुल्य, (वृद्धि के०) पुत्रपौत्रादिक परिवारनो विस्तार, (मांगल्य के०) कल्याण अने (उत्सवाः के०) पुत्रजन्म विवाहादि महोत्सव ते सर्व थाउ,तथा (सदा के०) निरंतर (प्रादुर्भूतानि के०) उत्पन्न थयां एवां जे (पापानि के०) पापो,ते (शाम्यंतु के०) शांतिने पामो. (दुरितानि के०) अशुभफलागमरूप ते पण शांतिने पामो, अने तमारा (शत्रवः के०) वैरीयो जे छे, ते सर्व (पराङ्मुखाः के०) अवलुं छे मुख जेमनुं एवा भवंतु के०) थाउ, (स्वाहा के०) सुष्टु एटले रूडुं आह एटले कहे छे ॥

हवे शांतिने माटें श्री शांतिनाथने नमस्कार करतो छतो कहे छे.

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥

अर्थः–(शांतिनाथाय के०) श्रीशांतिनाथने (नमः के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीशांतिनाथ केहवा छे? तो के (श्रीमते के०) समवसरणादि ऋद्धि ते छे जेने एवा अने वली केहवा छे? तो के (शांतिविधायिने के०) शांति जे दुःख दुरितोपसर्गनिवृत्तिरूप, तेने करनारा एवा,ते कोने करनारा? तो के (त्रैलोक्यस्य के०) त्रणे लोकने, तथा वली ते केहवा छे ? तो के (अमराधीश के०) चोशठ इंद्रो तेमना (मुकुट के०) मुकुट तेमणें (अभ्यर्चित के०) पूजित छे (अंघ्रये के०) चरण जेमनुं एवा छे ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

अर्थः–(शांतिकरः के०) शांतिने करनार एवा (शांतिः के०) श्रीशांति

नाथ, (मे के०) मने (शांतिं के०) दुःखदुरितोपशांतिने (दिशतु के०) आपो. कारण के (येषां के०) जेमना (गृहे के०) घरने विषे (गुरुः के०) यथार्थोपदेशना करनार एवा (श्रीमान् के०) सुशोभित एवा (शांतिः के०) श्रीशांतिनाथनामा जे जिन तेनुं पूजन थाय छे, (तेषां के०) तेमना (गृहे के०) घरने विषे (सदा के०) निरंतर (शांतिरेव के०) शांतिज थाय छे ॥ २ ॥

हवे श्री शांतिनाथना केवल नामग्रहण मात्रनुं माहात्म्य कहे छे.

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥
संपादितहितसंप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥३॥

अर्थः—(शांतेः के०) श्रीशांतिनाथनुं (नामग्रहणं के०) नामग्रहण पण (जयति के०) उत्कृष्ट वर्त्ते छे. सेवातत्पर सेवकोने सुखश्रेयस्कारक एवुं वर्त्ते छे. हवे ते नामग्रहण केहवुं छे? तो के (उन्मृष्ट के०) दूर कर्यां छे (रिष्टदुष्टग्रहगति के०) उपद्रव तथा दुष्ट एवी अंगारकादि ग्रहनी गति, तथा (दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि के०) खर, उंट,महिषादिकनुं देखवुं तथा द्रह, नदी, समुद्रादिमां पडवुं तथा स्वशिरनुं पडवुं,इत्यादिक दुःस्वप्न जे दुखोनां कारण छे तेने, अने वली केहवुं छे ? तो के (संपादित के०) संपादन करी छे (हितसंपत् के०) हितनी संपत्ति जेणें एवुं छे ॥ ३ ॥

हवे शांतिनो उद्घोषविशेष कहे छे

श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम्॥
गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥

अर्थः—(श्रीसंघजगज्जानपदराजाधिपराज्यसन्निवेशानां के०) ए सर्वना (व्याहरणैः के०) नामग्रहणें करीने तथा (गोष्ठिकपुरमुख्यानां के०) गोष्ठिकपुरप्रमुख जे नगरना मुख्य पुरुष तेना पण (व्याहरणैः के०) उपकरण नामसंग्रह तेणें करीने एटले ए सहुना नाम लइ लइने (शांतिं के०) शांति जे तेने (व्याहरेत् के०) उंचे स्वरें करीने उद्घोषणा करे ॥४॥

हवे पूर्वें कहेला श्लोकमां नामग्रहण करीने उद्घोष करवो एम जे कह्युं, तेहीज नामो कहे छे.

श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु,श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु,श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

अर्थः—सुशोभित एवा श्रमणसंघनी विघ्ननिवृत्तिरूप शांति थाओ, तथा पुरने विषे वसनारां लोकोनी विघ्नोपशमरूप शांति थाओ, तथा जनपद जे देश तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाओ. तथा राजा अने अधिपति तेनी शांति थाओ, तथा राजाना उपदेशनस्थानक जे सन्निवेश,तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाओ, तथा गोष्ठिकानां एटले धर्मसभास्थजनो तेमनी कषायोदयोपशमरूप शांति थाओ, तथा पुरना मुख्य जे पुरुषो तेमनी विघ्नोपशमरूप शांति थाओ. ब्रह्मलोक जे छे तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाओ. पहेली वारनुं ॐ स्वाहा ए पद जे छे, ते मंगलार्थ छे,तथा बीजी वारनुं ॐ स्वाहा जे पद छे, ते रूडे प्रकारें देवोने कहे छे, तथा (ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा के०) कुंकुम, चंदन, विलेपन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपादिक, पूजांनां उपकरण श्रीपार्श्वनाथने संतोषने माटें थाओ ॥

हवे ते शांतिपाठ कइ वखतें भणवो? ते कहे छे.

एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

अर्थः—(एषा के०) आ (शांतिः के०) शांतिपाठ, ते (प्रतिष्ठा के०)

प्रतिष्ठाना तथा (यात्रा के०) यात्राना तथा (स्नात्र के०) स्नात्रना अव सानेषु के०) अवसान जे अंत तेने विषे जणवो. तथा (आदि के०) आदि शब्दें करी पाक्षिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो, तथा बीजा पण धर्मकार्योनी समाप्तिमां मंगलार्थ ते शांतिपाठ अवश्य उद्घोषण करवा योग्य बे. हवे ते केहवी रीतें उद्घोषण करवुं? ते कहे बे: कोइ पण विशिष्टगुणवान् श्रावक, उजो थइने (शांतिकलशं के०) शांतिने माटें शुद्धजलें जरेला शांतिकलशने डाबा हाथने विषे (गृहीत्वा के०) ग्रहण करीने तेनी उपर दक्षिण कर स्थापन करीने (कुंकुमचंदनकर्पूरागरु धूपवासकुसुमांजलिसमेतः के०) कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु धूप, वास, कुसुमांजलि, तेणें समेत एटले युक्त बतो (स्नात्रचतुष्किकायां के०) स्नात्र मंडपमां (श्रीसंघसमेतः के०) चतुर्विध संघयुक्त बतो (शुचिशुचिवपुः के०) बाह्याभ्यंतर मलिनतारहित बे वपु एटले शरीर जेनुं एवो (पुष्प के०) पुष्प, (वस्त्र के०) पवित्र देवपूजायोग्य जे वस्त्र, तथा (चंदन के०) चंदन, (आजरण के०) वलयमुद्रिकादिक, तेमणें (अलंकृतः के०) सुशोजित बतो (पुष्पमालां के०) पुष्पनी जे माला तेने (कंठे के०) पोताना कंठने विषे (कृत्वा के०) करीने एटले धारण करीने (शांतिमुद्घोषयित्वा के०) महोटा शब्दें शांतिनो उद्घोष करीने पठी ते महान् पुरुषें तथा बीजाउयें (शांतिपानीयं के०) शांतिकलशनुं जे जल तेने (मस्तके के०) मस्तक नेविषे (दातव्यं के०) क्षेपण करवुं. (इति के०) इति ए समाप्तिना अर्थमां बे.

हवे फरीने जव्यजनो स्नात्रप्रांतमां शुं करे बे? ते कहे बे.

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति
च मंगलानि॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मं
त्रान्, कल्याणजाजो हि जिनाजिषेके ॥ १ ॥

अर्थः-(जिनाजिषेके के०) जिनना अजिषेकने विषे एटले स्नात्रमहोत्सवने विषे जे जव्यजनो (नित्यं के०) निरंतर (नृत्यंति के०) नृत्य करे बे, (मणि के०) रत्न, उपलक्षणथी मोतीयो अने (पुष्पवर्षं के०) पंच वर्ण युक्त फूलो तेमनी वृष्टिने (सृजंति के०) करे बे. (च के०) वली (मंगलानि के०) मंगल एवां गीत अने धवल तेने (गायंति के०)

गान करे छे, तथा (स्तोत्राणिगोत्राणि के०) स्तोत्र जे तेमने तथा गोत्र जे तीर्थंकरना वंश तेमने (पठंति के०) पठन करे छे, वली (मंत्रान् के०) मंत्र गर्भित एवा पाठोने पठन करे छे, अने वली बीजा जनोयें पठन करेला एवा मंत्रोने सांजले छे, ते जव्य जीवो, (कल्याणजाजः के०) कल्याणने जजनारा एवा थाय छे. (हि के०) निश्चें ॥ १ ॥

हवे आ ठेकाणें आशीर्वाद कहे छे.

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः ॥
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीजवंतु लोकाः ॥ २ ॥

अर्थः–(सर्वजगतः के०) समग्र जगत् जे तेनुं (शिवमस्तु के०) कल्याण थाउ, तथा (जूतगणाः के०) प्राणिसमूह जे छे, ते (परहितनिरताः के०) परहित करवामां प्रीतियुक्त (जवंतु के०) सावधान थाउ,तथा (दोषाः के०) दोष जे आधि,व्याधि, दुःख दुर्मनपणुं ते (नाशं के०) विशेषें करीने नाशने (प्रयांतु के०) पामो, तथा (सर्वत्र के०) सर्वस्थानकने विषे (लोकाः के०) समग्रलोको, (सुखीजवंतु के०) सुखी थाउ ॥ २ ॥

अहं तिज्ञयरमाया, सिवा देवी तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं जवतु ॥ स्वाहा ॥३॥

अर्थः–(अहं के०) हुं, (तिज्ञयरमाया के०) तीर्थंकर जे श्री नेमिनाथ तेमनी माता,जे (सिवादेवी के०) शिवा देवी छुं, ते केवी छुं? तो के (तुम्ह के०) तमारा (नयर के०) नगरने विषे (निवासिनी के०) निवास करनारी छुं, एटले सान्निध्यकारी छुं. ए कारण माटें (अम्ह के०) अमारुं (सिवं के०) कल्याण हो, अने (तुम्ह के०) नामोच्चारमात्रें करी तमारुं (सिवं के०) कल्याण हो. (असिवोवसमं के०) अशिवनो छे उपशम जेमां एवुं(सिवं के०) कल्याण (जवतु के०) हो. स्वाहा ए पदनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो॥३॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे॥४॥

अर्थः–(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर ते (पूज्यमाने के०) पूज्ये उते (विघ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लियो जे छे, ते (छिद्यंते के०) छेदाय छे, अने (मनः

के०) मन जे छे, ते (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे छे, अने (उपसर्गाः के०) उपसर्गो (क्षयं यांति के०) क्षयने पामे छे ॥ ४ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ इति ॥ ए ॥

अर्थः–(सर्वमंगल के०) सर्व लौकिक मंगलपदार्थ तेने विषे (मांगल्यं के०) मंगल करनारुं तथा (सर्वकल्याणकारणं के०) संपूर्ण आरोग्यतानुं कारण, (सर्वधर्माणां के०) सर्वधर्मोने विषे (प्रधानं के०) श्रेष्ठ एवुं (जैनं के०) जिनसंबंधि (शासनं के०) शासन ते (जयति के०) सर्वोत्कृष्ट वर्त्ते छे ॥५॥ इति बृहच्छांतिनामकं नवमस्मरणं समाप्तम् ॥ ए ॥

॥ अथ प्रत्याख्यानाधिकारप्रारंभः ॥

हवे गुरुवंदनाना अधिकारमध्यें पच्चक्काण घणा विस्तार भणी कह्यां नहीं, ते भणी हमणां वखाणीयें छैयें. ते पच्चक्काण बे भेदें छे, एक मूलगुण पच्चक्काण, बीजुं उत्तरगुण पच्चक्काण. तिहां मूलगुण पच्चक्काण वली बे भेदें छे, एक देशथी, बीजुं सर्वथी, तेमां सर्वथी मूलगुण पच्चक्काण जे पंच महाव्रतरूप, ते तो साधुने होय, अने देशथी मूलगुण पच्चक्काण पंच अणुव्रतरूप श्रावकने होय, तेमज उत्तरगुण पच्चक्काण पण देशथी अने सर्वथी एवा बे भेदें छे, तिहां साधुने सर्वथी उत्तरगुण पच्चक्काण जे छे, ते पिंडविशुद्धि, पांच समिति, बार भावना, बार प्रकारनुं तप, बार प्रतिमा अभिग्रह, ए आदें देइने अनेक प्रकारें छे, तथा श्रावकने देशथी उत्तरगुण पच्चक्काण जे छे, ते सात शिक्षाव्रत प्रमुखरूप छे.

हवे पहेलुं पडिक्कमणुं करतां छ मासी तपना काउस्सगमांहे जे आज अमुक पच्चक्काण करशुं, पछी चौद नियम यथाशक्तियें लेइ गुरुमुखें पच्चक्काण उच्चरे, अने जो गुरु प्रत्यक्ष न होय तो स्थापनाचार्य समक्ष, अथवा देवपूजा करे, तेवारें देवनी समक्ष पच्चक्काण उच्चरे, अने जो प्रभातनुं पडिक्कमणुं गुरु मांडले, पोशालें न कीधुं होय, तो उपाशरे जइ गुरुने पगे बे वांदणां दइ गुरुमुखें अथवा गुरुने आदेशें कोइ साधुने मुखें पच्चक्काण करे.

अहींयां गुरु अने पच्चक्काणना लेनार श्रावक आश्री चार भांगा उपजे छे, ते कहे छे. एक तो गुरु पण पच्चक्काणनो जाण, अने श्रावक पण

पच्चरकाणनो जाण, ए प्रथम जांगो शुद्ध जाणवो. बीजो गुरु जाण अने श्रावक अजाण होय, तेवारें गुरु तेने पच्चरकाणनुं स्वरूप संक्षेपें समजावी ने करावे, तेथी ए जांगो पण शुद्ध जाणवो, त्रीजो गुरु अजाण छे, पण पच्चरकाणनो करनार श्रावक जाण छे, माटें ए जांगो पण जलो जाणवो, चोथो गुरु अजाण अने श्रावक पण अजाण. ए जांगो अशुद्ध जाणवो.

हवे ते पच्चरकाण संक्षेपी जोइयें तो त्रण जेदें छे,एक अद्धापच्चरकाण, बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण अने त्रीजुं अजिग्रह पच्चरकाण. हवे तिहां अ द्धा एटले काल तेनुं पच्चरकाण. ते पोरिसी, साड्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ अवड्ढ, पक्तक्षपण, मासक्षपणादिक, ए सर्व अद्धापच्चरकाणमां कहेवाय. तथा बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण, ते जिहां संकेत कीधो होय, जेम गंठसहिअं मुठिसहिअं,वींटीसहिअं प्रमुख एटले ए पच्चरकाण बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे.जेम के कोइ एक श्रावकें पोरिसी प्रमुख पच्चरकाण कीधुं होय, प छी क्षेत्रादिकें गयो,अथवा घेर वेगांज पोरिसी पूर्ण थइ,परंतु हजी जोज ननी सामग्री तैयार थइ नथी, तेवारें विचारे जे एटलो काल वचमां अप च्चरकाणी पणे श्रावकने रहेवुं नहीं? माटें अंगुठसहिअं पच्चरकामि एटले ज्यां सुधी मुठिमां अंगुठो राखुं छुं, तिहां सुधी महारे वली पण पच्चरकाण नी सीमा छे,एमज बीजी मूठि बांधी राखे, तेने मुठिसहिअं पच्चरकामि क हियें. त्रीजुं गांठ बांधवी ते गंठसहिअं कहियें, चोथुं घरसहिअं, पांचमुं अंगना परसेवानो बिंदु निकले,त्यां सुधी,ते सेजसहियं कहियें.छठुं उस्सास सहित, सातमुं पाणीना बिंदुआ जाजनादिकें शूके त्यां सुधी ते थिबुकसहि अं कहियें, तथा आठमुं दीवाप्रमुखनी ज्योतिसहित ते,जोइसहिअं कहि यें. ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे,तेम जो बीजा पोरि सीयादिक पच्चरकाण न करे, अने केवल एवो अजिग्रहज करे, के गांठ प्र मुख न छोडुं, तिहां सुधी महारे अमुक पच्चरकाण छे, एम अजिग्रहने विषे पण ए पच्चरकाण थाय छे,तथा साधुने पण कोइक स्थानकें मांड ल्यादिकें गुरु आदिक आव्या नथी,अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तो पण अजिग्रहें सांकेतिक पच्चरकाण थाय छे. एने सांकेतिक पच्च रकाण कहियें. अने त्रीजुं अजिग्रह प्रत्याख्यान ते विगय, नीवी, आयं बिल, प्रमुख करवां, ए सर्व अजिग्रह प्रत्याख्यान जाणवां.

हवे विस्तारें जोइयें, तो साधुने अने श्रावकने उत्तरगुण पच्चरकाण दश भेदें छे, एक नवकारसहिअ.बीजुं पोरिसी, त्रीजुं पुरिमड्ढ, चोथुं एकासण, पांचमुं एकलठाणुं, छट्ठुं विगइ, सातमुं आयंबिल, आठमुं उपवास, नवमुं दिवसचरिम, दशमुं अभिग्रह. ए दश पच्चरकाण तथा तेने लगता बीजा पपच्चरकाणना विचार अने आगारनी युक्ति कहीयें छेयें. बीजी पच्चरकाण संबंधि सविस्तर वातो प्रवचनसारोद्धार तथा बीजा ग्रंथांतरथी जाणवी.

॥ प्रथम नमुक्कारसहियनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चरकामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणा भोगेणं सहसागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

अर्थः—(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांमीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रिभोजननो दोष निवारवाने अर्थें,बे घडी पछी (नमुक्कारसहिअं के०) नवकार कहीने पारुं तिहां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण करुं छुं, एटले नियम लउं छुं.अहींयां नवकार कहीने पच्चरकाण पारवुं छे, माटें ए पच्चरकाणनुं नाम नवकारसी कहेवाय छे, तथा गुरु पच्चरकाइ कहे,अने शिष्य पच्चरकामि कहे, एम सर्व पच्चरकाणोने विषे जाणी लेवुं. ए नवकारसीनुं पच्चरकाण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारज होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिभोजननो नियम कस्यो हतो, तेना तीरण रूप एटले शिक्षारूप ए पच्चरकाण छे, अहीं कोइ पूछे जे नवकारसीनुं मान तो एक मुहूर्त्तज लीधुं छे, तेने बदले जो मुहूर्त्तद्वयादिक लीधां होय, तो शी हरकत छे? कारण के ते काल पण पोरिसीना कालथी अल्प छे. हवे तेने एम केहवुं जे सर्वथी स्तोक काल अद्धापच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज छे माटें एक मुहूर्त्तज लेवो. ए नवकारसी पच्चरकाण सूर्योदय पहेलां करवुं अने पंचपरमेष्ठि नमस्कारें करी पारवुं,अन्यथा भंगदोष लागे.ए नवकारसी कस्या पछी आगले पोरसियादिक थाय, परंतु नवकारसी विना पोरसीयादिक न थाय.तथा कोइ कहेशे के सायंकाल पर्यंतमां गमे ते वखत नवकार कहिने पारीयें, अथवा एक घडी पछी नवकार कहिने पारीयें,तो पच्चरकाण पहोंचे किंवा न पहोंचे? तेने कहियें के नव

कारसी ए शब्दनो अर्थज आवो बे,के बे घडी वीत्यां नवकार गणीयें त्यारेंज पहोंचे,परंतु बीजे वखतें न पहोचे,ए पच्चरकाणमां बे घडी सुधी चउविहार होय,माटें बे घडी वीत्या पबी नवकार गणे,तो पहोंचे, पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे,तो न पहोंचे. तथा जो दिवस उग्याथी पहेलां बे घडी नी अंदर अने पाबली बे घडीनी पबी जमे,तो तेने रात्रिजोजननो दोष लागे.

हवे शानुं पच्चरकाण करे? ते कहे बे. (चउविहंपिआहारं के०) चारप्र कारनो आहार न करवो, तेनुं पच्चरकाण करे, ते आहारनां नाम कहे बे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उंदन एटले जात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातना लोट,तथा मोदकादिक सर्व जातिनां पक्कान्न, तथा सूरणादिक सर्व जातिनां कंद,तथा मांमा प्रमुख सर्व जातिनी केलवेली वस्तु,ए सर्वने अशन कहियें. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ आदिक एने पण अशनज कहियें.

बीजुं (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमुख नां धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कही यें. तथा शाकरवाणी, डाक्षवाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्व,यद्यपि पाणीमांहे आवे बे,तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहियें.

त्रीजुं (खाइमं के०) खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, कोप रां, डाक्ष, तथा अखोडादिक सर्व जातिनो मेवो, तथा काकडी, आंबां,फ णस अने नालियेर प्रमुख सर्व जातनां फल, तथा शेकेलां धान्य, ते जेवां केः—धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख सर्व खादिम कहियें.

चोथुं (साइमं के०) स्वादिम ते दंतकाष्ठ, शुंठ, हरडे, पींपरी, मरी, अ जमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, ए लची, लविंग, जावंत्री, सोपारी, पान, बीडलवण, आजो, अजमोद, कलिं जण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीयो, कपूर, संचल, बहेडां, आमलां, हिंगलाष्टक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बाउलबाल, धवबाल, खेरबाल, खिजडाबाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरुं, ए जीराने पच्चरकाणजाष्य तथा प्रवचनसारोद्धारमां स्वादिम कह्युं बे,अ ने श्रीकल्पवृत्तिमांहे खादिम कह्युं बे, तथा अजमाने पण केटला एक

खादिम कहे छे. तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र,आंबा गोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना आहार कह्या.

हवे अनाहार वस्तु कहियें छेयें.तेमां लिंबडानां पांच अंग,ते मूल,छाल,पत्र, फूल, फल, तथा गोमूत्र,गलो,कडू, करियातुं,अतिविष, सुखड,राख,हलदर, रोहिणी, उपलेट,वज, त्रिफला, धमासो, नाही,आसंधि, रिंगणी,एलीयो, गुगल, वोणी, बदरी,कंथेरमूल, करीरमूल, पुआड, आठी, मजीठ,बोलबीउं, कुंआर, चित्रो, कुंदरू, तमाकु, बाउलछाल प्रमुख अनिष्ट स्वादवाली वस्तु तथा स्वाद विना रोगादिक कारणें चतुर्विध आहारादिक कल्पे, अफिण प्रमुख पण एमज जाणवां.एटले जे वस्तु खातां थकां जीवने अरुचि उपजे, अलखामणा लागे,ते सर्व अनाहार वस्तु जाणवी.ए वस्तु अहींयां प्रसंगें लखी. एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो हुं नियम लउं छुं.हवे ए नियमभंग थवाना भयने लीधे अहींयां नोकारसीना पच्चक्खाणने विषे बे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नछणाभोगेणं के०) अन्यत्रानाभोगात् एटले विसरवा थकी ते अहींयां पच्चक्खाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चक्खाण भंग न थाय,परंतु वचमां पच्चक्खाण सांभरे,तेवारें तरत मुखथी त्याग करे,थूंकी नाखे तो पच्चक्खाण न भांगे.अथवा अजाणपणे मुखथकी हेठुं उतस्युं पठी कालांतरें सांभस्युं,अथवा तुरत सांभस्युं,तो पण पच्चक्खाण न भांगे,पण शुरू व्यवहार माटें फरी निःशंक न थाय,तेमाटें यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं,ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

२ (सहसागारेणं के०) जे पच्चक्खाण कस्युं छे तेनो उपयोग तो विसस्यो नथी, पण कार्य करवामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वभावेंज मुखमध्यें प्रवेश थाय, जेम दधि मथतां छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय,भेंश प्रमुख दोहोतां थकां तथा घृतादिक मथतां तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक छांटो मुखमां पडे,अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना छांटा मुखमां पडे, तेथी पच्चक्खाण भंग न थाय. ए रीतें उक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) बे घडी सुधी चारे आहारने वोसिरावुं छुं,एटले अपच्चक्खाणी आत्माने छांडुं छुं. अहींयां 'वोसिरे' ए गुरुनुं वचन छे, अने 'वोसिरामि' ए शिष्यनुं वचन छे ॥ १ ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअंनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं ॥ अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थः—एना अर्थमां (मुठिसहिअं के०) मूठि सहित, एटले ज्यां सुधी मूठि होय, त्यां लगें पच्चरकाण अने नोकार गणी मूठी मोकली मूकुं, तेवारें पच्चरकाण मोकलुं थाय. एना आगारोनो अर्थ बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो ॥२॥

॥ अथ पोरिसि साड्ढपोरिसिनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुठिसहिअं पच्चरकाइ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥३॥

अर्थः—(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने (साड्ढपोरिसिं के०) साड्ढपोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चरकाइ के०) नियम लउं बुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी गया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरिसि कहियें, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं बिंब राखीने दक्षिणायनना प्रथम दिवसें ढीचणनी गया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय. जे माटें श्री उत्तराध्ययनमां कह्युं ठे के ॥ आसाढि पुस्सिमाए, डुपया पोसे चउप्पया चित्ता ॥ आसुए एसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसि॥१॥ हवे हानि वृद्धि ते आ प्रमाणें जाणवी, ते जेम केः—अंगुलं सत्त रत्तेणं, पक्खेणं तु डु अंगुलं॥ वड्ढए हाय एवा वि, मासेण चउरंगुलं॥१॥ अर्थः—बार अंगुलनुं एक पगलुं कहियें. हवे पुरुषें उभो रही जमणे काने सूर्यमंडलनुं बिंब राखीने ढीचणनी गया जोवी. तिहां आषाढी पूर्णिमायें कर्कसंक्रांतिना प्रथम दिवसें जे वखत ते गया

बे पग प्रमाण होय ते वखत पोरिसि कहीयें. तेवार पछी महीना पर्यंत मास मासनी संक्रांतियें चार चार आंगुल वधारता जइयें, तेवारें पोषमासनी मकर संक्रांतियें चार पगनी छायायें पोरिसि थाय. तेवार पछी वली मास मासनी संक्रांतियें चार चार आंगुलनी हानि करियें,तो फरीअषाढ महीने बे पगनी छाया थाय,तेमज आश्विन अने चैत्रमासें त्रण त्रण पगनी छाया जाणवी,तथा तेवीज रीतें अषाढनी संक्रांति थकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडे बे अंगुल छायानी वृद्धि करवी, अने पोषमासनी संक्रांतिथकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडीये बे अंगुल छायानी हानि करवी,तेमज महिने चार अंगुलनी हानी वृद्धि करवी, एटले पोरिसी एक प्रहरनी थइ. अने मुठिसहियंनो अर्थ तो पूर्वें लख्यो छे.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करुं छुं.हवे आगार कहे छे, एक (अन्नछणाजोगेणं के०) अनाजोगें ते अजाणते विसारवा थकी, बीजो (सहसागारेणं के०) सहसात्कारें. त्रीजो (पछन्नकालेणं के०) कालनी प्रछन्नता ते मेघादि, ग्रहादि, दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढंकाइ जाय तेणें करी वखतनी बराबर खबर न पडे एवां अजाण पणायें करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ,एवुं समजीने पच्चरकाण पालवामां आवे. तो तेथी नंग नहीं,अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसियें जमवा बेठा एटलामां तावडो जोयो, अने जाण्युं जे हजी सवार छे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीयो होय,ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पछी जमवा बेसे, तो पच्चरकाण नांगे नहीं.

चोथो (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविपर्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वहेलुं पलाय तो पच्चरकाण नंग नहीं. अने थोडुं जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे तो मुखमांनो कोलीयो थूंकी नाखे. ए रीतें दिङ्मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो बेसी रहे तो नंग नहीं.

पांचमो (साहुवयणेणं के०) 'उग्घाड पोरिसि' एवा साधुना वचनें करी पोरिसि नणी, सांनलीने पाले, तो पच्चरकाण नंग नहिं, पछी ज्यारें जाणवामां

आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसी जणे छे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज बे सी रहे, तो पच्चक्खाण जांगे नहीं. ए पाछला बे आगार भ्रमतानां छे.

छठुं (सव्वसमाहिवत्तियागारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीरमां असमाधि रहे, एटले पच्चक्खाण कस्या पछी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिकें रुस्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे,अथवा जेवारें अक स्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इंद्रियोनी समाधिने अर्थें अपूर्ण पच्चक्खाणे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्चक्खाण जंग न थाय,अने स माधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहां पण गुरु वोसिरे, कहे अने शिष्य जे पच्चक्खाणनो करनार ते वोसिरामि कहे.

ए पच्चक्खाणमां मुठिसहिअं साथें लीधुं छे,तेथी महत्तरागारेणं ए आगा र वध्यो छे, तेनो अर्थ आम छे, के (महत्तर के०) महोटे कार्यें एटले जेटलो पच्चक्खाणमां निर्ज्जरानो लाज थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महो टो निर्ज्जरानो लाज जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लान, प्रासाद, संघ अथवा देवना वैयावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ श कतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी मुठिसहियंनो वखत पूर्ण थया विना पण जो पालवामां आवे, तो पच्चक्खाणजंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ पुरिमड्ड अवड्डनुं पच्चक्खाण ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमड्ढं मुठिसहिअं पच्चक्खाइ. सूरे उग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागा रेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ४ ॥

अर्थः-(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी मांमीने (पुरिमड्ढं के०) प हेला बे प्रहर सुधी पुरिमार्द्ध कहियें,अने जो अवड्ढनुं पच्चक्खाण लेवुं होय,तो उपर सूत्रमां अवड्डनुं नाम कहियें. अवड्ड एटले त्रीजा प्रहर सुधी अशना दिक चार आहार पच्चक्खुं छुं,एना आगारोना अर्थ प्रथम लखाइ गया छे॥४॥

॥अथ विगइ निविगइनुं पच्चरकाण॥

॥ विगइउ निविगइअ पच्चरकामि अन्नबणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहबसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५॥

अर्थः–जोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय,तेने विगइ कहीयें,ते विगइ सर्व मली दश बे.तेमां मांस,मदिरा,माखण अने मध, ए चार तो अजक्ष्यज बे. बाकी जक्ष्य विगय ब प्रकारनां बे. एक दूध, वीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोथुं तेल, पांचमो गोल अने बहुं पक्कान्न. ए ब प्रकार नी विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने विगइउं पच्चरकाण कहियें,अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने (निविगइअ पच्चरकामि के०) निवि पच्चरकुं बुं. एटले निविनुं पच्चरकाण कहीयें.

त्यां श्रावकने निविमांहे निविआता लीधा कल्पे नहीं, जो लागठ तप मांड्युं होय, तो तेमांहे त्रण दिवस पठी निवियाता लीधा कल्पे.

तथा साधुने तो एक निविमांहे निवियाता लीधा कल्पे बे, अने विगइआता तथा जो निवियातानो नियम लीये तो,तेवारें आयंविल पच्चरके,तेथी आयंबिलमांहे जे कल्पे, ते वस्तु टालीने बीजी सर्व वस्तुनो नियम लीये. हवे पच्चरकाण जंगना जयथी जे आगार मोकलां मूके बे, ते कहे बे. एक अन्नबणाजोगेणं, वीजो सहसागारेणं. ए बेना अर्थ लखाइ गया बे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगइनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइथी गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय,पठी तेने लूंठी नाख्यो होय, तेवा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंठीने ते चाटुवाथी वहोरावे अथवा पीरसे, तो पच्चरकाण जंग न थाय.

चोथुं (गिहबसंसठेणं के०) गृहस्थनुं जे वाटकी प्रमुख जाजन ते विगइ प्रमुखें खरडयुं होय, तेवा जाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न विगइ प्रमुखें मिश्र होय,अने जो ते अन्न जमे. तो पच्चरकाण जांगे नहीं.

पांचमुं (उक्खित्तविवेगेणं के०)गाढी विगइ जे गोल पकान्नादिक बे तेना

कटका रोटली उपर नाखी करी पछी उपाडी परहा कस्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चरकाण जंग न थाय.

छठुं (पडुच्चमक्खिएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थे मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय,ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाण जंग न थाय.

सातमुं पारिठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं,नवमुं सवसमाहिवत्तिआगारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो॥५॥

॥ अथ बेआसणां तथा एकासणांनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं मुठिसहियं पच्चरकाइ॥उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं बेआसणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ एकासणांनुं पच्चरकाण करवुं होय तो बेआसणांने ठामें एकासणं पच्चरकाइ एवो पाठ कहेवो ॥ इति ॥ ६ ॥ ७ ॥

अर्थः–उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमनां पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे. अने ज्यां एक वार (असणं के०) जोजन करवुं तेने एकासणुं कहियें;अथवा ज्यां एकज आसन छे ते एकासणुं कहेवाय छे,अने बे वार अशन एटले जोजन करीयें, तेने बेआसणुं कहियें, ते (पच्चरकामि के०)

पच्चक्कुं बुं,एटले नियम लेउं बुं.इहां जो डुविहंपि आहारं करे तो बे आ हार ते एक अशन अने बीजुं खादिम ठांके, एटले जम्या पढी एक पाणी अने बीजुं सोपारी प्रमुख स्वादिम वस्तु लीये, तेवारें असणं खाइमंनो पाठ कहीयें,अने जो तिविहंपि आहारं करे,तो त्रण आहार ते अशन, खादिम अने स्वादिम,ए त्रण आहारनुं पच्चरकाण करे,अने जम्या पढी ए क पाणी मोकलुं राखे,तेवारें असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहियें. तथा च उविहंपि आहारं करे तो जम्या पढी चारे प्रकारना आहारनो त्याग करे. हवे एनां आगार कहे ढे.त्यां एक अन्नत्थणाजोगेणं अने बीजो सहसागा रेणं, ए बे आगारना अर्थ तो प्रथम लखाइ गया ढे.

त्रीजुं (सागारियागारेणं के०) साधु जमवा बेठा पढी त्यां कोइ सागा रिक जे गृहस्थ ते आव्यो,पढी ते चाल्यो जतो होय तो दाण एक सबूर करे, बेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहेतो जाणे, अने गृहस्थनी नजर प डे तो साधु त्यांथी उठीने बीजे स्थानकें जइ आहार लीये.केम के गृहस्थ नी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातादिक महादोष सिद्धांतमां कह्या ढे, ते लागे.ए साधु आश्री कह्युं, अनें गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा बेठा पढी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे, अ थवा सर्प आवे,चोर आवे,बंदीवान आवी उजो रहे,अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मांके तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणुं करतां पच्चरकाण जांगे नहीं.

चोथुं (आउट्टणपसारेणं के०) जमवा बेठा पढी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्च रकाण जंग न थाय. पांचमुं (गुरुअप्पुठाणेणं के०) पच्चरकाणें जमवा बेठां ढतां गुरु जे आचार्य,उपाध्याय तथा साधु ते आवे थके तेमनो विनय सा चववाने अर्थें बे पगने ठामें राखी उठवुं पडे. तो पच्चरकाण जंग न थाय,

ढठुं (पारिठावणियागारेणं के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें जुक्त कर्यां थकां कांहि उगर्युं एवुं पारिष्ठापन योग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे ढे, एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विग यादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणादिकथी मांकीने उपवास पर्यंत पच्च

रकाण वालाने ते वधेला आहारने जंमतां पच्चरकाण जंग न थाय, पण तिहां एटलुं विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय, अने तिविहार उपवासना पच्चरकाणें अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय. ए आगार यतिने होय पण श्रावकने न होय, तथापि आलावो त्रूटे माटें गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी. सातमुं महत्तरागारेणं, अने आठमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एना अर्थ लखाइ गया छे.

हवे पाणस्सना आगार कहीयें छैयें. जो तिविहारें तथा चउविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चरकाण कर्युं होय, तो अवश्य पाणस्सना आगार कहीयें, तथा जो डुविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चरकाण कर्युं होय, अने ते मां अचित्तजोजी अचित्तपाणी पीवामां लीये, तो पण पाणस्सना आगार कहीयें. अने डुविहार पच्चरकाणमांहे सचित्त आहार लीये, तथा सचित्त पाणी पीये, तेवारें पाणस्सना आगार न कहियें. (पाणस्स के०) पाणी, ते पाणी केहवुं? तो के (लेवेणवा के०) जे अन्नादिकें करी जाजनादिक खरडाय ते लेपकृत आचाम्ल, तथा उसामण गलीने पीये. आदिशब्द थकी द्राक्षादिक आम्लकादिक पानकादिक जाणवां. ते पीवाथकी पच्चरकाण जंग न थाय.

वीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपकृत पाणी ते सौवीर, कांजी, धोयण, आदिशब्दथकी गरूलजरवाणी प्रमुखने पीये तो पच्चरकाण न जांगे.

त्रीजुं (अछेणवा के०) अछ ते ऊष्णजल तथा बीजां पण निर्मल उकाळ्यां पाणी, नीतर्युं फलादिकनुं धोयण प्रमुख तेने पीये तो पच्चरकाण जंग न थाय,

चोथुं (बहुलेवेणवा के०) बहुलेप एटले रूहोळुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीये, तो पच्चरकाण न जांगे,

पांचमुं (ससिछेणवा के०) सिछसहित अन्नादिक दाणाना स्वाद विना धोवण तथा दाथरादिकनुं धोवण तेने गलीने पीये, तो पच्चरकाण न जांगे.

छठुं (असिछेणवा के०) सिछरहित कणक प्रमुखें हाथ खरड्यो होय, तेनुं धोवण गलीने पीये, तो पच्चरकाण जांगे नहीं, ए छ आगार पाणीना कह्या, ते टाली बीजा पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥ ६ ॥ ७ ॥

हवे एकलठाणानुं पच्चरकाण पण एकासणा प्रमाणें छे, परंतु तेमां सात आगार छे, माटें एक आउट्टणपसारेणं ए आगार न कहेवो ॥७॥

॥ अथ आयंबिलनुं पच्चक्काण लिख्यते ॥

उग्गए सूरे नमुकारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुठिसहिअं पच्चक्काइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्काइ. अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहडसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्काइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअप्भुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अडेण वा बहुलेवेण वा ससिडेण वा असिडेण वा वोसिरे॥ इति आयंबिल पच्चक्काण समाप्त ॥ ए॥

अर्थः—(आयंबिलंपच्चक्काइ के०) आंबिल पच्चक्कुं छुं. एक अन्नडणाभोगेणं बीजुं सहस्सागारेणं ए बे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया छे. त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) तेमां जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेहलें आंगुली तथा भाजनादिक खरडथुं होय, तेने लेप कहियें, पछी तेनेज घणी सारी रीतें लुंछी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ पण देखाय नहीं एवुं कखुं होय, तेने अलेप कहियें. एवां लेप अलेपवालां भाजन होय, अथवा हाथ लेपालेपवाला होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला भाजनें तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चक्काण भंग न थाय. एने लेपालेप आगार कहियें. चोथुं (गिहडसंसठेणं के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुवादिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंबिल भंग न थाय, पांचमुं (उक्खित्तविवेगेणं

के०) गाढी विगय जे गोल पक्वान्नादिक छे तेने रोटली उपर मूकीने फरी परहि करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां पच्चरकाण जंग न थाय

छठुं (पारिठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वहोर्युं होय पछी ते तेने परठववानुं होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगइ प्रमुखनुं पोताने पच्चरकाण पण होय,अथवा पोतें उपवासादिक तप कर्युं होय, तेम छतां पण, गुरुनी आज्ञायें तेवा आहारने लेवाथकी पण जंग न थाय.

सातमुं (महत्तरागारेणं के०) महोटी निर्ज्जराने लाजें पच्चरकाण जांगे नहीं. आठमुं (सव्वसमाहिवत्तियागारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें पच्चरकाण जांगे नहीं, वोसिरामि एनो अर्थ सुलज छे ॥ ए ॥

॥ अथ चउविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए अजत्तठं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः–सूर्यना उदयथी मांमीने (अजत्तठंपच्चरकामि के०) अजत्तार्थ एटले जात पाणीनो नियम लहुं छुं,(चउविहंपि आहारं के०)चारे आहारनो नियम लहुं छुं, ते चार आहारनां नाम कहे छे. एक अशन,बीजो पान, त्रीजो खादिम, अने चोथो स्वादिम, हवे एना आगार कहे छे. एक अन्नछणाजोगेणं,बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणियागारेणं,चोथो महत्तरागारेणं, अने पांचमो सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एना अर्थ लखाइ गया छे.

तथापि पारिठावणियागारेणंनुं विशेष एटलुं छे के, पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के? चउविहारमां पाणीनो नियम छे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय माटें पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो चउविहार उपवासमां लीधा कल्पे,अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं छे, माटें एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञायें लीधो कल्पे॥१०॥

॥ अथ तिविहार उपवासनुं पच्चक्काण ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नत्तठं पच्चक्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नचणाजोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणहार पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुठिसहिअं घरसहिअं पच्चक्काइ. उग्गए सूरे पुरिमड्ढं अवड्ढं पच्चक्काइ. अन्नचणाजोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण बहुलेवेण वा ससिचेण वा असिचेण वा वोसिरे ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंजीने (अजत्तठं के०) अजक्तार्थं एटले उपवास प्रत्यें (पच्चक्कामि के०) पच्चक्कुं छुं, ए त्रिविहारमां एक पाणीनो आहार मोकलो, बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहारं के०) त्रण आहार न करवा, तेनो नियम लउं छुं. हवे एना आगार कहे छे.

एक अन्नचणाजोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणियागारेणं, चोथो महत्तरागारेणं, पांचमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं. एनाअर्थलखाणाछे

ए पच्चक्काणमां (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे तेनो अवधि तथा आगार कहे छे. (उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी प्रारंजीने (पोरिसिं के०) प्रहर लगें (साड्ढपोरिसिं के०) दोढ प्रहर लगें (मुठिसहिअं के०) नोकार गणी मूठि मोकली मूके तेवारें पच्चक्काण मोकलुं थाय. (घरसहिअं के०) पोताने घेर जई नवकार गणी पच्चक्काण पारुं (उग्गएसूरे के०) सूर्योदयथी प्रारंजीने (पुरिमड्ढं के०) बे प्रहर लगें (अवड्ढं के०) अवड्ढ लगें (पच्चक्कामि के०) पच्चक्कुं छुं. हवे पाणी न पीवाना वखत सुधीना आगार कहे छे. एक अन्नचणाजागेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पच्छन्नकालेणं, चोथो दिसामोहेणं, पांचमो साहुवयणेणं, छठो महत्तरागारेणं, सातमो सवसमाहिवत्तियागारेणं. एना अर्थ लखाणा छे.

हवे (पाणस्स के०) पाणी पीवाना छ आगार छे, ते कहे छे, (लेवेण वा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आंबण,बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेप जल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अछेणवा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेणवा के०) रुहोलुं तांदूलनुं धोअण प्रमुख, पांचमुं (ससित्थेणवा. के०) सीथ सहित पीठनुं धोयण, छठुं (असित्थेणवा के०) सीथरहित फासू जल, एटलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥११॥

॥ अथ चउछ छठ नत्तादिकनुं पच्चरकाण आवी रीतें कहेवुं ॥

सूरे उग्गए चउछनत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ. सूरे उग्ग
ए छठनत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ, सूरे उग्गए अठम
नत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ. इत्यादिप्रकारें आगार
सहित कहेवुं. एना अर्थ सुलन छे ॥१२॥

हवे ए पच्चरकाणने प्रसंगें दश विगयमांहेला छ नक्ष विगय छे,ते प्रत्येकना पांच पांच निवियाता करतां त्रीश निवियाता थाय छे, ते कहे छे.

प्रथम दूध विगयना पांच निवियाता कहे छे.त्यां एक जे दूध घणुं होय, अने चोखा थोडा होय, तेनें पेया कहे छे, बीजो खाटी छाश सहित जे दूध, अर्थात् दूधमां खटाश नाखी पचावीयें अथवा त्रण दिवसनी प्रसूत गायनुं दूध उकालीयें तेने डुरूठी कहे छे.त्रीजुं द्राक्ष टोपरादिक नाखीने रांधेलुं जे दूध,तेने पयसाडी कहे छे.चोथुं चोखानो थोडो लोट नाखीने रांधेलुं जे दूध,तेने अवलेही कहे छे.पांचमो चोखा घणा अने दूध थोडुं,एरीते जे रांधेलुं होय तेने खीर कहे छे. नेदांतरें वली एना पण नेद थाय छे.

हवे दहींनां पांच निवियाता कहे छे.एक दहींने घोलीने अथवा उकालीने तेमां वडां नाखे, तेने घोलवडां कहे छे. बीजुं दहीं घोलीने वस्त्रमांथी गालीयें तेने मथ्युं अथवा छाण्युं दहीं कहे छे. त्रीजुं दहींने हाथथी मथन करी तेमां खांरु अथवा साकर नेलीयें तेने शिखरणी अथवा शिखंरु कहे छे.चोथुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठा करीयें तेने करबो कहे छे. पांचमुं लूण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहे छे.

हवे घृतना पांच निवियाता कहे छे.एक औषधियें करी पकावेलुं घृत तेने पकघृत कहे छे. बीजुं घृतनी कीटी जे मेल थाय छे ते वघारि प्रमुख, त्रीजुं

जे घृतमां कोइ औषधि पकाव्युं होय तेना उपरनी तरीनुं घृत, खंमादिकस हित तेने पक्वौषधि घृत कहे छे. चोथुं पकान्न तलतां वधेलुं घृत तेने निर्भंज न कहे छे.एटले त्रण घाण तल्या पछीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उ परनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहीनी तरीमां गहूंनो लोट नाखीने जे तावडे त पावीयें, तेने विसंदण कहे छे. एना पण नेदांतर नेद घणा थाय छे.

हवे तेलना पांच निवियाता कहे छे.एक तिलकुटी ते घाणीमांहे तिल पीलेलानी साडी तेमांहे खंमादिक नाखे ते. बीजी तेलनी मली, त्रीजी ला क्षादिक द्रव्यें करी पकावेलुं तेल,चोथुं पाकेला औषधनी तरी. पांचमुं घा ण पछवाडेनुं बलेलुं तेल, एना पण नेदांतरें नेद घणा थाय छे.

हवे गोल विगयना पांच निवियाता कहे छे.एक अर्द्धो काढेलो शेलडीनो रस,बीजुं गोलवाणुं,गोलनी राब,गोलना पाणीमां लोट नाखे ते, त्रीजो शा करनी जात, चोथो खांमनी जात सर्व जाणवी, पांचमो गोलनी पाती जा णवी. एना पण नेदांतरें नेद घणा थाय छे.

हवे कडाविगयना पांच निवियाता कहे छे. जो एक खाजांवडे कडाइ नराइ गइ होय तो तेथी वीजुं खाजुं निवियातुं थाय छे,पण तेमां मात्र बीजुं घृत नाखवुं न जोइयें,तेज घृत वडे पकावीयें, तेने प्रथम निवियातो कहीयें. बीजुं एकनी उपर एक नाखीयें एम त्रण घाण उपरांत तेज घृतमां जे चोथो पकावीयें,ते बीजो निवियातो जाणवो. त्रीजो गोलधाणी, गोलपाप डी प्रमुखनो निवियातो जाणवो. चोथो पाणी, गोल, घृत, एकठां उका ली पछी ते पाणीमां लोट नाखी रांधेली लापशी करीयें,ते निबियातो जा णवो.पांचमो निवियाते करी चोपडी काहाडेला तावडानी उपर पुडला प्र मुख करे,ते पांचमो निवियातो जाणवो. एना पण नेदांतर घणा थाय छे.

॥ अथ छठ अठमादिक तप करे अने बीजा दिवसादिकें पाणी वावरवुं होय, त्यारें पाणहारनुं पच्चरकाण करे, ते कहे छे.

॥ पाणहार पोरिसिं मुठिसहिअं पच्चरकाइ. अन्नछणा नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिव त्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे॥इति॥१३॥

॥ अथ गंठसहियं आदि अभिग्रहोनुं पच्चक्काण ॥

॥ गंठसहिअं वेढसहिअं दिवसहिअं थिबुगसहिअं मुठिसहिअं पच्चक्काइ. अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ १४ ॥

॥ अथ चउदनियम धारनारने देसावगासिकनुं पच्चक्काण ॥

देसावगासियं उवभोग परिभोगं पच्चक्काइ अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे इति १५

अर्थः-(देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा बधा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे, तेने देशावकाशिक व्रत कहियें. एटले इहां जे एकली दिशिनुंज पच्चक्काण करे, तेवारें उवभोग परिभोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पच्चक्कामिज कहियें. (उवभोग के०) एकवार भोगवीयें एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उपभोग कहियें. अने (परिभोगं के०) वारंवार भोगवियें एवी वस्तु जे आभरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे, एटले जे चौद नियम संभारे, तेने ए उपभोग परिभोगनो पाठ कहियें, एना आगारोनो अर्थ सुलभ छे ॥ १५ ॥

॥ अथ चउदनियमनी गाथा कहे छे ॥

॥ सचित्तदव विगई, वाणह तंबोल वड कुसुमेसु ॥
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि न्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥

अर्थः-पहेलुं (सचित्त के०) पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमुख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजुं (दव के०) जे वस्तुनो भिन्न स्वाद ते द्रव्य कहियें, तेनुं मान करे, त्रीजुं (विगइ के०) घृत प्रमुख छ विगय मां जेटली खावाने मोकली राखवी होय, तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथुं (वाणह के०) उपानह ते पगरखानुं मान करे. पांचमुं (तंबोल के०) पान सोपारी प्रमुख सर्वने तंबोल कहीयें, तेनुं मान करे. छठुं (वड के०)वस्त्र जे पोताना शरीरें वापरवानां वस्त्र होय, तेनुं मान करे. सातमुं (कुसुमेसु के०) फुलनुं मान करे. आठमुं (वाहण के०) वाहन ते अश्व, पालखी, कोली, गाडां प्रमुख जे वाहन, तेनुं मान करे. नवमुं (स

यण के०) शय्या तथा आसन प्रमुखनुं मान करे, दशमुं (विलेवण के०) चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. आगीयारमुं (बंज के०) ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमुं (दिसि के०) दिशिविदिशिनुं मान करे. तेरमुं (न्हाण के०) स्नान कंकोडी प्रमुखें नावुं, तथा अंघोलीनुं मान करे. चौदमुं (जत्तेसु के०) जात पाणीनुं मान करे. अहियां बीजा पण नियम छे, ते प्रसंगें लखीयें छैयें. पन्नरमुं पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीठुं, खडी प्रमुख पोताने निमित्तें वावरे, तो तेनुं प्रमाण करे. शोलमुं अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे, तेनुं प्रमाण करे. सत्तरमुं तेउकाय आश्री पोताना शरीरना जोगोपजोगमां चूला, चाडी, शघडी,अंगीठी प्रमुखनुं रांध्युं,नीपज्युं, तपाव्युं, शेक्युं तेनुं प्रमाण करे. अढारमुं वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, पडदा तथा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे. उंगणीशमुं वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल, फूल, शाक, दातण प्रमुख खावानुं तथा वावरवानुं प्रमाण करे. वीशमुं त्रसकाय जे त्रास पामे एवा जीव ते कीडी, कीडा, विंछी, गाय, मत्स्य, पक्षी, मनुष्य, देव नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधें संकल्प करी मारुं नहीं.तेनो नियम करे. एकवीशमुं असि ते तरवार, जालां, तीर, छुरी, कोश, कोदाल, पावडा, घंटी प्रमुख जीवघात करनारी वस्तुनो नियम करे. बावीशमुं मसी ते शाइना खडीया, कलम प्रमुख वापरवानुं प्रमाण करे. त्रेवीशमुं कृषि ते जमीन खोदवादिक घर, हाट, क्षेत्र प्रमुख तलाव कूपादिकने खोदवा,तथा तेना शस्त्रनो नियम करे, ए चौदे नियमादिक त्रेवीश बोल जे छे, ते जेवी रीतें पोताथी पले, तेवी रीतें अवश्य पाले ॥ १ ॥

॥ अथ सांजनां पच्चरकाण ॥

॥ बेआसण,एकासण, निविगइ, आयंबिल,उपवास, छठ अठमादि तप करनार ऊष्णजल वावरे, ते सांजे पाणहारनुं पच्चरकाण लीये ते कहे छे.

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चरकाण ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ रातें चउविहार करवो, तेनुं पच्चक्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्काइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

अर्थः—(दिवसचरिमं के०) दिवसना छेडाथी मांमीने नवो सूर्य उगे त्यां सुधी (पच्चक्कामि के०) पच्चक्कुं छुं. (चउव्विहंपि आहारं के०) चउविहार ते चार प्रकारना आहारने पच्चक्कु छुं. शेष अर्थ सुलज छे ॥ १७ ॥

॥ अथ रात्रें तिविहार ते एक पाणी मोकलुं राखे, तेनुं पच्चक्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागोरेणं वोसिरे ॥ १ए ॥

॥ अथ रात्रें डुविहार ते पाणी अने खादिम मोकलुं राखे, तेनुं पच्चक्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्काइ डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ अथ पच्चक्काणना आगारनी गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारे, आगारा छच्चेव पोरिसिए ॥ सत्तेवय पुरिमड्ढे, एकासणगंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेगठाणेसु अ, अठेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पंचेव य नत्तठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ ३ ॥ पंचचउरो अभिगहे, निव्वीए अठनव आगारा ॥ अप्पाउरणे पंचचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ४ ॥

॥ हवे छ प्रकारें पच्चक्काण शुद्ध थाय छे, ते कहे छे ॥

॥ फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥

अर्थः—पच्चरकाणविषें कह्युं, उचित वेलायें जे प्राप्त थयुं, तेने फासिअं कहियें. पच्चरकाण वारं वार उपयोग देइने संजारवुं,तेने पालिअं कहियें. प्रथम गुरुने आहार पाणी देइ थाकतुं जोजन करवुं,तथा अतिचार न ल गाडवो तेने शोजित कहियें. (तीरिअं के०) पच्चरकाण पूगा पठी पण थो डो अधिक काल थये पालवुं, निर्मल करवुं. (किट्टिअं के०) जोजन वे लायें अमुक माहारे पच्चरकाण ठे,एम संजारवुं. (आराहिअं के०) पच्चरका ण जे रीतें कीधुं, ते रीतें आराधवुं. ए ठ सुधी जाणवी. (जंचनाराहिअं के०) जे में पच्चरकाण न आराध्युं होय,अतिचार लगाड्या होय. (तस्स मिछामिछु क्कडं के०) ते महारुं पाप मिथ्या थाउ. एवा पच्चरकाणोने विषेज विवेकी पुरु षें उद्यम करवो; केम के? शुद्ध धर्मनें प्रजावें जीव मोक्ष प्रमुखनां सुख पामे.

॥अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी, ते कहे ठे॥

॥पच्चरकाण कस्या पठी बे ढींचण अने मस्तक जूमियें लगाडी, माबे हाथे मुखें मुहपत्ती देइ जमणो हाथ गुरुने पगें लगाडी आवी रीतें कहे.

॥ इछाकारि जगवन् पसाय करी फासुअं एसणि
ज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वह्व पडिग्गह कं
बल पायपुछणेणं पाडिहारिअ पीढ फलग सिद्या सं
थारएणं उसह जेसज्जेणं जयवं अणुग्गहो कायवो॥

अर्थः—इछाकारि जगवन्, पसाय करी प्राशुक एटले अचित्त (एसणि ज्जेणं के०) ऐषणिक ते सुजतो एटले जे साधुने कल्पे,एवो आधाकर्मादिक दोषें रहित अशन, पाणी, (खाइमं के०) सुखडी, (साइमं के०) शूंठ, हलदर प्रमुख (वह्व के०) वस्त्र ते चोलपटादिक, (पडिग्गह के०) पढगा दिक पात्रां प्रमुख, (कंबल के०) कांबली, (पायपुछणेणं के०) बेसवानुं पोठणुं, (पाडिहारि के०) अणवहोरी वस्तु जे गृहस्थनी थकां वाव रीने पठी गृहस्थने पाठी अपाय ठे, तेवी वस्तु (पीढ के०) बाजोठ, (फलग के०) पाटीयुं, (सिद्या के०) वस्ति, एटले रहेवानो उपाश्रय, (संथारएणं के०) पाट अथवा माज प्रमुख, वली (उसह के०) औषध जे काथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज वस्तु होय ते (जेसज्जेणं के०) त्रिगडू,

त्रिफला प्रमुख,ए पूर्वोक्त वस्तुयें करी (जयवं के०) हे जगवन् गुरुजी ! (अणुंग्गहोकायवो के०) अनुग्रह करवो, एटले जे जोइयें ते वहोरजो.

॥ अथ पच्चक्खाण पारवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें.यावत् जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं.पछी मन्हजिणाणंनी सद्याय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी.इछामि० इछाका० पच्चक्खाण पारुं,यथाशक्ति इछामि० इछाका० पच्चक्खाण पार्खुं,तहत्ति एम कही जमणो हाथ कटासणां चरवला उपर थापी,एक नवकार गणी पच्चक्खाण कर्खुं होय ते कही पारवुं, ते लखीयें छेयें.

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं गंठसहिअं मुठिसहिअं पच्चक्खाण कर्खुं चउविहार आंबिल,नीवी,एकासणुं बेआसणुं कर्खुं, तिविहार पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं,तीरिअं,किट्टिअं,आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं एम कही एक नवकार गणवो.

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि ॥

॥प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकीनें श्रावक,श्राविका कटासणुं,मुहपत्ती चरवलो लेइ,शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी,कटासणा उपर बेसी,मुहपत्ती डाबा हाथमां मुखपासें राखी,जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी,एक नवकार गणी पंचिंदिय कही, इछामि खमासमण देइ इरियावहिया, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ उससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इछाकारेण संदिसह जगवन्,सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं? इछं एम कहि मुहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचास बोल कही,मुहपत्ती पडिलेहियें.पछी खमासमण देइ० इछाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक संदिसाहुं ? इछं. वली खमासमण देइ, इछा० सामायिक ठाउं? इछं. एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी, इछाकारी जगवन्, पसाय करी सामायिक दंमकउच्चरावोजी. तेवारें वडिल करेमी जंते कहे.पछी खमासमण देइ इछा० बेसणे संदिसाहुं? ॥ इछं खमा०॥ इछा०॥ बेसणे ठाउं? खमा०॥ इछं इछा०॥ सद्याय संदिसाहुं॥ इछं खमा०॥ इछा० ॥ सज्ञाय करुं ॥ इछं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा, पछी बे घडी सज्ञाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावहि पडिक्कमवाथी जावत् लोगस्स सुधी कही खमा०॥ इच्छा०॥ मुहपत्ती पडिलेहुं कही, मुहपत्ती पडिलेहि, खमासमण देइ ॥ इच्छा०॥ सामायिक पारुं. यथाशक्ति वली खमासमण देइ, इच्छा० ॥ सामायिक पाखुं; तहत्ति कही, पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणां उपर थापी, एक नवकार गणी, सामाइयवयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखीने एक नवकार गणी ऊठवुं ॥इति॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पडिक्कमी स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं. पछी तस्सउत्तरीकही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही उन्ने पगें बेसी मुहपत्ती, कटासणुं, चवलो, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदें पडिलेहवां, पछी काजो काहाडी, जीव कलेवर सचित्त आदे जोवुं. पछी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उन्नो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या शोधी त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांमीने जावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नाखीने चैत्यवंदन नमुत्थुणं कही, आन्नवमखंमा सुधी अर्ध्दो जयवीअराय कहे. वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही जावत् चार थोयो कहीयें, वली नमुत्थुणं कही जावत् बीजी चार थोयो कहियें छेयें, त्यां सुधी बधुं कहेवुं: पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंती कही, एटले जावंति चेइआइं तथा जावंत केवि साहु ए बे कही. उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही अर्ध्दो जयवीयराय आन्नव मखंमासुधी कही, पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जयवीयराय कहेवा. प्रन्नाते देव वांदवा तेमां मन्हजिणाणंनी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजे देव वांदे तेमां सज्झाय न कहेवी ॥इति॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंन्नः ॥

॥ प्रथम सामायिक लीजें. पछी पाणी वावखुं होय तो मुहपत्ती पडिले

हवी, अने आहार वावर्यो होय तो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसीयाए ए पाठ न कहेवो. यथाशक्ति पच्चखाण करवुं. खमासमण दे इ इच्छाकारेण कही, वडेरा अथवा पोतें चैत्यवंदन कहीने पछी जंकिंचिन मुत्थुणं कही, उज्ञा थईने अरिहंतचेइयाणं कहीने एक नवकारनो काउस्स ग्ग करी नमोऽर्हत्० कहिने प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स,सव्वलोए,अ रिहंत चेइयाणं कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय क हेवी. पछी पुक्खरवरदी कही, सुअस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदण०ए क नवकारनो काउस्सग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी,नमोऽर्हत्० कही,चोथी थोइ कहेवी.पछी बेसी हाथ जोडी नमुत्थुणं कहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य;उपा ध्याय सर्वसाधु प्रत्यें थोज वंदन करियें. पछी इच्छाकारेण०॥ देवसि प्रति क्रमणे ठाउं, एम कही, जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीने इच्छं सव्वसवि देवसिअ० कहेवुं पछी उज्ञा थइ करेमि जंते इच्छामि ठामि काउ स्सग्गं जो में देवसिउ तस्सउत्तरी० कही,पछी आठ गाथानो काउस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो,ते पा रीने; पछी लोगस्स कहेवो.पछी बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडी लेहीने वांदणां बे देवां,पछी उज्ञा थइने इच्छाका० देवसिअ आलोउं इच्छं आलोएमि जो मे देवसिउ कहीनें,पछी सात लाख कहेवा. पछी अढार पाप स्थानक आलोइने सव्वस्सवि देवसिअ कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पछी करेमि जंते इच्छामि पडिक्कमिउं कहीने,वंदित्तु कहेवुं,पछी वांदणां बे देवां. पछी अप्भुठिउहं अप्भिंतर देवसिअ खामीने वांदणां बे देवां. पछी उज्ञा थइ आयरिय उवज्ञाए कहीने,करेमि जंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० तस्सउत्तरी० कही,पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवका रनो काउस्सग करी लोगस्स प्रगट कहेवो,पछी सवलोए,अरिहंत चेइयाणं, वंदणवत्तिआए कही,एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पा रीने,पुक्खरवरदी० सुअस्स जगवउ० करेमि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने,सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही,

पुरुषें सुअदेवयानी पहेली थोय कहेवी, अने स्त्रीयें कमलदलनी पहेली थोय कहेवी. पढी खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें बन्नेयें कहेवी. पढी प्रगट एक नवकार गणी बेसीने, बठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहि, बे वांदणां आपीयें, पढी सामायिक चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चक्काण ए ढ आवश्यक संजारवां. पढी इच्छामि अणुसहिं कही नमो खमासमणाणं कही, नमोऽर्हत्० कहीने पुरुष, नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पढी नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पढी वरकनक कही जगवान् आदें वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पढी देयसिअ पायच्छित्तनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करवो. पढी ते काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोग्गस्स कही, बेसीने खमासमण बे देइ सद्यायनो आदेश मागी एक नवकार गणी, सद्याय कहीयें, पढी वली एक नवकार गणीयें, पढी डुक्खक्खउ कम्मक्खउनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो. एक वडेरे अथवा पोतें पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशांति कहेवी, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी इरियावही तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. पढी चउक्कसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी. इच्छामि०॥ इच्छाका०॥ सामायिक पारुं. यथाशक्ति इच्छामि०॥ इच्छाका०॥ सामायिक पार्युं तहत्ति कही, पढी जमणो हाथ उपधी उपर थापी एक नवकार गणीने सामाइअवयजुत्तो कहेवो. पढी थापना होय तो एक नवकार गणी उठे॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि वडेराथी समजवो॥ इति देवसि प्रतिक्रमण विधि॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लीजें, पढी कुसुमिण डुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करी, पारी, प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पढी चार खमासमण पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु प्रत्यें वांदवा, खमासमण बे देइ, सज्झायनो आदेश मागी एक नवकार ग

थीने जरहेसरनी सज्झाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पढी इछकार सुहराइनो पाठ कहेवो. पढी इछाका० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जम णो हाथ उपधी उपर स्थापीने इछं सवस्सवि राइय डुच्चिंतिय० कही ॥नमु त्थुणं तथा करेमि जंते कही,इछामि ठामि काउस्सग्गं० जोमेराइयो तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही,सवलोए अरिहंत० कही,एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्स ग्ग पारी पुरकरवरदी० सुअस्स० वंदण कही, अतिचारनी आठ गाथानो अ थवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही वांदणां बे देवां. त्यांथी ते अप्रुठिउं खामि वांदणां बे दीजें, त्यां सुधी देवसीनी रीतें जाणवुं. पण जे ठामें देवसिअं आवे ठे ते ठामें राइयं कहेवुं. पढी आयरिअ उवज्झाए० करेमि जंते इछामि ठामि काउस्सग्गं तस्स उत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवडे तो चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, पढी ठठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते पढी तीर्थवंदन करवुं, पढी यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं. पढी इछाकारे ण संदिसह जगवन्! सामायिक,चउविसबो,वंदनक,पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण ए ठ आवश्यक संजारवां.पच्चरकाण कर्युं होय तो कर्युं ठे जी. कहेवुं, अने धार्युं होय तो धार्युं ठे जी? एम कहेवुं. पढी इछामो अणुसहिं, नमो खमासमणाणं० नमोऽर्हत्०, विशाल लोचन, नमुत्थुणं, अरिहंतचेइया णं एटलां कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने नमोऽर्हत्० कही कल्या णकंदनी प्रथम थोइ कहेवी. पढी लोगस्स, पुरकरवरदि, सिद्धाणं बुद्धाणं, कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें ठेयें त्यां सुधी सर्व कहेवुं.पढी नमुत्थुणं कही, जगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पढी श्रीसीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन,स्त वन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत करवुं. पढी खमासमण पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय,काउस्सग्ग थोय सुधी करवुं. पढी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधी कहेवुं॥इति॥

॥ अथ पक्खिप्रतिक्रमणनो विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कहियें ठेयें त्यां सुधी सर्व कहेवुं,पण चैत्य

वंदन सकलाऽर्हत्नुं कहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमासमण देइने इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, देवसिअ आलोइअं पडिक्कंता इच्छा का० पक्खि मुहपत्ती पडिलेहुं, एम कही मुहपत्ती पडिलेहियें. पछी वांदणां बे दीजें, पछी इच्छाका० संबुद्धा खामणेणं अप्भुठ्ठिओहं आभिंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचि अपत्तिअ० कही इच्छाका० कही पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ कही इच्छाका०कही पक्खि अतिचार आलोउं,एम कहीने अतिचार कहियें. पछी एवंकारें श्रावक तणे धर्मे श्रीसमकित मूल बार व्रत एकशो चोवीश अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार पक्ष, दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें कायें करी मिच्छा मि दुक्कडं.सव्वस्सवि,पक्खिअ,दुच्चिंतिअ,दुप्भासिअ, दुच्चिठ्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्,तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.इच्छाकारि भगवन्! पसाओ करी पक्खि तपःप्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियें. चउत्थेणं एक उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि,चार एकासणां,आठ बियासणा, बे हजार सज्झाय,यथाशक्ति तप करी प्रवेश कर्यो होय तो पइठ्ठि कहियें. अने करवो होय तो तहत्ति कहियें. तथा न करवो होय तो अण बोल्या रहियें. पछी बे वांदणां दीजें; पछी इच्छाका० पत्तेय खामणेणं अप्भुठ्ठिओहं अभिंतर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० पछी वादणां बे दीजें,पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, पक्खिअं पडिक्कमुं सम्मं पडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमि भंते सामाइयं कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ कह्या पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे,अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे,तिहां प्रथम सुअदेवयानी थोय कहेवी. पछी हेठा बेसी जमणो ढीचण उभो राखी एक नवकार गणी करेमि भंते इच्छामि पडिक्कमिउं कही, वंदित्तु, कहेवुं. पछी करेमि भंते,इच्छामि ठामि काउस्सग्गं,जो मे पक्खिओ,तस्स उत्तरी,अन्नत्थ०कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करीने पारवो. पारीने प्रगट लो

गस्स केह्वो. पछी मुहपत्ती पडिलेहीने, वांदणां बे दीजें. पछी इछाका० समात्त खामणेणं अप्पुठिर्उहं अप्निंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पख्काणं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जं किंचि अपत्तिअं० कही पछी खमासमण देइने इछाका० कही, पक्खि खामणा खामुं? एम कहीने खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कह्या पछी वांद णां बे देइने त्यांथी सामायिक पारियें, त्यां सुधी देवसिनी पेठें जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिकनी थोयो कहेवी, स्तवन अ जितशांतिनुं कहेवुं, सझायने ठेकाणें उवसग्गहरं तथा संसारदावानी चार थोयो कहेवी.अने लघुशांतिने ठेकाणें महोटी शांति कहेवी ॥इति॥

॥ अथ चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ ए उपर लखेला पक्खिना विधि प्रमाणेज छे, पण एटलो विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणें वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने पख्कीना आगारने ठेकाणें चोमासीना कहेवा. तथा तपने ठेकाणें छ ठेणं, बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणां, शोल बीआस णां, चार हजार सज्झाय,ए रीतें कहेवुं ॥ इति चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथ सांवत्सरी प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ ए पण उपर लखेला पख्कीना विधि प्रमाणें छे, तथापि बार लोग स्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकशो ने शाठ नवका रनो काउस्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणें अठ्ठम ज्ञत्तं एटले त्रण उपवा स, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणां, चोवीश बेआसणां, अने छ ह जार सज्झाय, ए रीतें कहेवुं तथा पख्कीना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति सांवत्सरी प्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ हवे छ आवश्यकनां नाम कहे छे ॥

॥ एक करेमि ज्ञंते ए सामायिकनामा पहेलुं आवश्यक, बीजुं चउविसच्छो नामा आवश्यक, त्रीजुं मुहदत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते वंदनावश्यक चोथुं 'देवसियं आलोइ' ए सूत्र कही यावत् अप्पुठिर्उ खामीयें,ते पडिक्कमणां आवश्यक, पांचमुं बे वांदणां देइने आयरिय उवच्छायना त्रण काउस्सग्ग कीधे काउस्सग्ग नामें आवश्यक थाय. छठ्ठुं पच्चख्काणनुं संज्ञारवुं. ते पच्च ख्काणनामा आवश्यक, ए छ आवश्यकनां नाम कह्यां. अहीं पख्की, चोमा

सी अने संवत्सरी, ए पडिक्कमणानामें चोथा आवश्यकमांहे अंतर्भूत थाय छे.

॥ हवे ए छ आवश्यकना संक्षेपें अर्थ कहे छे ॥

॥ जे अवश्य करवुं तेहने आवश्यक कहीयें, अने सर्वजीवो साथें जे समताभाव तथा सर्व सावद्य व्यापारथी विरमवुं, तेने सामायिक कहीयें, "समं आयाति सामायिकं" इति वचनात्. बीजुं चोवीश जिनना स्तवनथी दर्शन मोहनीयकर्मनो क्षयोपशम थइने समकेत शुद्ध थाय, ते चउविसन्थो. त्रीजुं गुरुवंदनथी ज्ञान, दर्शन निर्मल थाय, ते वंदनावश्यक. चोथुं पडिक्कमणाथी श्रावकने एकशो ने चोवीश अतिचारनी आलोयणा थाय. पांचमुं काउस्सग्गथी सबल कषायनुं जीतवुं थाय, अने ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिकनी शुद्धि थाय. छठुं पच्चरकाण आवश्यकथी तप पच्चरकाणनुं संभारवुं, तथा पच्चरकाणनुं लेवुं थाय. ए छ आवश्यकना संक्षेपें अर्थ कह्या, विस्तारें अर्थ ग्रंथांतरथी जाणवा.

हवे ए छ आवश्यकें सात नय फलावीयें छेयें.

॥ त्यां प्रथम सामायिक आवश्यकें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगमनये एक जीव अथवा घणा जीव तेने सामायिक कहीयें. अने मोक्षना कारण छे तेथी मोक्ष पण कहीयें; केम के? कारणे कार्योपचार छे माटे.

२ संग्रहनये जीवनो गुण तेज सामायिक, तदभेद आत्मा ए आश्री जे आत्मा, तेज सामायिक. ३ व्यवहारनये समता अने यत्नायें प्रवर्त्ते, तेवारें सामायिकवंत आत्मा जाणवो. ४ ऋजुसूत्रनये उपयोगरहित बाह्य यत्ना होय, ते समयनो जे सामायिकवंत आत्मा, ते स्थूल ऋजुसूत्रनयनो मत छे, अने उपयोगयुक्त बाह्य यत्नावंतने ते समय जे सामायिक कहेवुं, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत जाणवुं. ५ शब्दनयें पांच समिति तथा त्रण गुप्ति पाले, अने सावद्यथी निवर्त्ते, क्रोधादिकनो त्याग करे, तेवारें ते आत्माने सामायिक माने छे. ६ समभिरूढ नयमतें तो जीवने अप्रमादि थका जे जे गुण उत्पन्न थाय छे ते ते गुणने वाक्यभेदें करी ए नय भिन्न सामायिक माने छे. ७ एवंभूतनयमतें त्रिविध त्रिविधें मन, वचन, कायाना, अशुद्ध भाव जे सावद्ययोग, तेने निषेधीने जे निश्चल शुद्धस्वभाव ते सामायिक जाणवो.

॥ हवे बीजा चउविसछा नामा आवश्यक उपर सात नय फलावे छे.

१ नैगमनयमते अनुपयोगी सर्व द्रव्यात्मानी स्तुति कीधे मोक्ष होय ते सामान्य नैगमनुं मत छे, अने अरिहंतना चार निक्षेपाने स्तवने मोक्ष मानवो अथवा चउविसछो मानवो, ते विशेष नैगमनुं मत छे. २ संग्रहन यनेमतें आत्मानुं स्तवन कीधे मोक्षप्राप्ति छे. ३ व्यवहारनयमतें भूत भावि जे चोवीश जिनमांहे व्यक्त गुण छे, माटें तेहनी स्तवनायें मोक्ष होय. ४ ऋजुसूत्रनयमतें वर्त्तमानकालें चोवीश जिननां कीर्त्तन, वंदन, पूजन, जे समय करवां ते समय, मोक्षनुं कारण छे, ए स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत, तथा चोवीश जिन जे समय मोक्षें गया, ते समयनुं जे कालद्रव्य, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत छे. ५ शब्दनयमतें समवसरणें विराजमान अरि हंतने अथवा सिद्ध अवस्था पाम्या तेहने पण भाविजिन कहियें माटें तेनी स्तवनायें चउविसछो जाणवो. ६ समभिरूढ नयमतें जे जीव मोक्ष ना पर्याय अनुभवे, तेहनी स्तवना करवे चउविसछो जाणवो. ७ एवं भूतनय मतें अरिहंतपणुं तीर्थंकरनी ऋद्धि भोगवी, संसारथी नीकली आ घाति चार कर्म क्षय करी सिद्धशिलाउपर रह्या, तेमनी स्तुतियें मोक्ष छे.

॥ हवे त्रीजा वंदनावश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम अने संग्रह, ए बे नयने मते सर्व जीवमांहे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिकनी सत्ता छे माटें जीवने वांदवाथीज मोक्ष होय, ए विनयवा दीनुं मत छे. ३ व्यवहारनयमते जेहमां साधुनी आचारणा देखीयें, तेहने वांदवा. ते वंदन छे. ४ ऋजुसूत्रनयमते तो जे कायायें करी चारित्र पाले, ते वांदवा योग्य. ए स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत छे, अने जे समय श्रुतज्ञान सहित क्रिया पाले, ते समय वांदवाथी मोक्षप्राप्ति थाय, ए सूक्ष्म ऋजुसू त्रनुं मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें तो शुद्ध ज्ञान, दर्शनना अनुभव करनारने वांदवाथी मोक्षप्राप्ति छे.

॥ हवे चोथा प्रतिक्रमणावश्यक उपरें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहने मते जे जीव, ते पडिक्कमणुं. ३ व्यवहारनय मतें पडिक्कमणानी क्रिया करतो होय, ते जीवने पडिक्कमणुं कहियें. ४ ऋ जुसूत्रनयमतें उपयोग विना जे समय द्रव्य पडिक्कमणुं करवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रमतें पडिक्कमणुं छे, अने उपयोगसहित जे समयें पडिक्कमणानी

क्रिया करवी, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनयमते पडिक्कमणुं जाणवुं. ५ शब्दादिक त्रणे नयमते जे शुद्ध ज्ञान, दर्शन, तेज पडिक्कमणुं जाणवुं.

॥ हवे पांचमा काउस्सग्गनामा आवश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमते जीव ते काउस्सग्ग. ३ व्यवहारनयमते शुद्ध क्रियायें काया स्थिर मुद्रायें राखवी, तेने काउस्सग्ग कहे छे. ४ ऋजुसूत्रनयमतें जे समयें उपयोग विना काउस्सग्ग करवो, ते स्थूल ऋजुसूत्रनुं मत छे, अनें जे समयें उपयोगसहित काउस्सग्ग करवो. ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनुं मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें जे ज्ञान तेहीज काउस्सग्ग जाणवो.

॥ हवे छठा पच्चरकाण आवश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमतें जे आत्मा तेज पच्चरकाण. ३ व्यवहार नयमतें अशनादिक चारनुं लोकलाजें जे पच्चरकाण करवुं, तेने पच्चरकाण कहेवुं. ४ ऋजुसूत्रनयमतें जे उपयोग विना पच्चरकाण लेवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रना मतें पच्चरकाण छे, तथा उपयोगसहित शुद्ध पच्चरकाण, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रना मतें पच्चरकाण छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें तो ज्ञान, दर्शनरूप परिणाम, तेने पच्चरकाण कहियें.

॥ हवे ए षडावश्यकें कालादिक पांच कारण उतारे छे ॥

१ जे कालें छ आवश्यकनी क्रिया करवाथी छ आवश्यक निपजे, ते प्रथम कालकारण. २ जीवने पडिक्कमणुं करवानो स्वजाव छे. माटेज पडिक्कमणुं करे छे. ते बीजुं स्वजावकारण. ३ जेथकी आवश्यक कार्य थाय, ते त्रीजुं निश्चयकारण, एटले ए छ आवश्यक निश्चय थवानां होय तो थाय. ४ पुण्यपापादिक ते कर्म कहेवाय छे, ते अहीं मोहादिक कर्मनो क्षयोपशम होय तो छ आवश्यकनो उदय आवे: ते चोथुं कर्मनामा कारण. ५ ते बधां कारण मले पण ए छ आवश्यक मांहे जे उद्यम फोरववो, ते उद्यमनामा पांचमुं कारण छे.

॥ हवे छ आवश्यकें उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनुं द्वार देखाडे छे ॥

१ सामायिक करवाथी सावद्ययोगथी विरमवा पणानो गुण उपजे, चउविसत्थाथी सम्यक्त्वगुण उपजे, वंदनाथी विनयगुण उपजे, पडिक्कमणाथी पापथी उपरांठो थवारूप गुण उपजे, काउस्सग्गथी ज्ञान दर्शन रूप शुद्धगुण उपजे, पच्चरकाणथी आश्रय निरोधगुण उपजे, ए व्यवहारनयें करी गु

णनुं उत्पादकपणुं देखाड्युं. २ ए छए आवश्यकथी अशुजकर्मनो नाश थाय छे, ते माटे अहीं अशुज कर्मनो व्यय जाणवो. ३ ए छए आवश्य कथी जीव निर्मलस्वजावमांहे ध्रुवपणे रहे छे, ते अहीं ध्रुवपणुं जाणवुं.

॥ हवे षडावश्यकें हेय, ज्ञेय अने उपादेय देखाडे छे ॥

१ छ आवश्यकने विषे जे नय निक्षेपानुं ज्ञान ते ज्ञेय छे. एटले जा णवा योग्य छे. केम के ? क्षपक श्रेणी चढावाने अनुपयोगी छे, काम नावे माटे. २ नाम, स्थापना अने द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा मोक्षार्थें हेय छे, एटले छांमवा योग्य छे, ३ चोथो जावनिक्षेपो ते मोक्षार्थें उपादेय छे, माटे ते आदरवा योग्य छे.

॥ हवे छ आवश्यकें षड्द्रव्यनो व्यवहार आत्मा साथें अशु द्धनिश्चयनयमते युक्ति देखाडे छे.

॥ जे वेलायें जीव चाले, तेवारें धर्मास्तिकाय पोतानी साथें बांध्यो, आ यत्त कीधो, पण बीजां द्रव्य छूटां छे. एम अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा काल अने पुजल जाणवा. पण शुद्ध निश्चयनयमते तो आत्मा बंधाय, छो डाय नहीं, पुजल, बंधाय छोडाय छे.

हवे ए छ आवश्यकमांहे कयुं कयुं आवश्यक, नवतत्त्वमांहेला कया कया तत्त्वमां छे? ते देखाडवानुं द्वार कहे छे.

॥ सामायिकमांहे जे शुजाश्रव थाय, तेहनो संवर तत्त्वमांहे अंतर्जाव थाय छे, माटे सामायिक संवरतत्त्व छे. चउविसत्थो ते मोक्षतत्त्वमां अंत र्जूत छे, तथा वंदना, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण, ए चार आवश्यक यद्यपि शुजाश्रवमध्ये छे, तथापि विशेषें आत्मानी परिणतियें षडावश्य क साशवता निर्ज्जरातत्त्वमांहे अंतर्जूत थाय छे.

॥ हवे ए छ आवश्यकें सप्तजंगी कहे छे ॥

१ सामायिक संवररूपें अस्ति छे, चउविसत्थो किर्त्तनरूपें अस्ति छे, वांद णां गुणवंत प्रतिपत्तिरूपें अस्ति छे, पडिक्कमणुं आलोयणारूपें अस्ति छे, काउस्सग्ग, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, आराधनरूपें स्यात् अस्ति छे, अने पच्चरकाण ते व्रत धारणरूपें अस्ति छे, ए पूर्वोक्त गुणरूप षडावश्यक स्यात् अस्तिरूपें छे, ए प्रथम जंग जाणवो.

२ ए षडावश्यक अशुज्ञ बंधपणे नथी, माटे एमां अशुज्ञ बंधनी नास्ति ले, तेथी स्यात् नास्तिपणुं ले, ए बीजो ज्ञंग जाणवो.

३ ए षडावश्यक स्वकीय एटले पोताने ड्रव्य, क्षेत्र, कालज्ञावें अस्ति रूपें ले, ते अस्ति ज्ञांगो ले, अने एहीज ड्रव्य ते परड्रव्यनां ड्रव्य, क्षेत्र, काल ज्ञावपणे नथी, ते नास्तिनामें ज्ञांगो ले, माटे जे समये अस्ति ले ते समयेंज नास्ति ज्ञंग पण ले; ए स्यात् अस्ति नास्ति नामें त्रीजो ज्ञंग जाणवो.

४ ए पूर्वोक्त त्रिज्ञंगीयें करी ल आवश्यकनुं स्वरूप जाणीयें, पण ए समग्र समकालें कहेवाय नहीं, केम के? वचननुं तो क्रमें प्रवर्त्तन ले, तेथी एक समयमां सर्व धर्म कहेवाय नहीं, माटे ए अवक्तव्य नामा चोथो ज्ञंग जाणवो.

५ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे अस्तिपणाना अनंता धर्म रह्या ले, ते जाणे खरो, पण एक समयें कहेवाय नहीं, केम के एक अक्षरनो उच्चार करतां पण असंख्याता समय लागे ले; माटे ए स्यात् अस्ति अवक्तव्य एवे नामें पांचमो ज्ञंग जाणवो.

६ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे नास्तिपणाना अनंता धर्म रह्या ले, ते जाणे खरो, पण एक समयमांहे वचनें करी कह्या जाय नहीं; माटे ए स्यात् नास्ति अवक्तव्य नामा लहो ज्ञंग जाणवो.

७ ए षडावश्यकमां पोताना रूपें अस्तिपणे एक समयने विषे अनंता धर्म ले, अने पररूपें नास्तिपणें पण अनंताधर्म एक समयने विषे ले, पण ते एक समयें वचनें करी कह्या जाय नही; माटे ए स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति युगपत् अवक्तव्य नामा सातमो ज्ञंग जाणवो.

हवे ए प्रत्येक आवश्यकें चार नामादिक निक्षेपा तथा क्षेत्र अने काल ए ल वानां जूदां जूदां विवरीने कहे ले.

॥ त्यां प्रथम सामायिकावश्यकें ल वानां कहे ले ॥

१ सामायिक एहवुं नाम, ते नाम सामायिक. २ सामायिकनी क्रिया, रचना, विशेष, सूत्रनी स्थापना, ते स्थापना सामायिक ए वे ज्ञेदें ले. ३ सूत्रना शुद्ध अक्षरनो उच्चार, ते ड्रव्य सामायिक. ४ संकल्प विकल्प रहित शुद्ध ज्ञावना जे आत्माना अध्यवसाय तेहने ज्ञावसामायिक कहियें. ५ जे क्षेत्रें सामायिक करियें, ते क्षेत्र समायिक. ६ अने एनो अंतरमुहूर्त्त प्रमाण काल, ते कालसामायिक.

॥ हवे चउविसछा नामा बीजा आवश्यक उपर छ वानां ॥

१ ऋषन्नादिक चोवीश जिननां नाम ते नाम चउविसछो कहीयें. जीननी काष्ठमय चित्रित पुतली तथा पित्तलादिकनी मूर्त्ति ते स्थापना नामा चउविसछो; तेना बे नेद छे. एक जे स्थापनाना अंगोपांग तादृश देखाय ते सन्नावस्थापना जाणवी, अने बीजी शंका प्रमुखें जे गुरुनी स्थापना करीयें, ते असद्नावस्थापना, ए बे नेदें स्थापना चउविसछो जाणवो. ३ जीवजिन ते द्रव्य चउविसछो कहीयें. ४ समवसरणस्थ जिन ते नाव चउविसछो. ५ जे क्षेत्रें ते क्षेत्र चउविसछो. ६ जे कालें ते काल चउविसछो.

॥ हवे वंदनावश्यक नामा त्रीजां आवश्यक उपर छ वानां ॥

१ वांदणां एहवुं नाम, ते नाम वांदणुं. २ कोइक वांदणाने काष्ठ चित्रादिकने विषे स्थापे, जे आ में वांदणुं स्थाप्युं छे, ते स्थापना वांदणुं. ३ आवर्त्त बार तथा पच्चीश आवश्यकादिक शुरू उपयोग विना करवां,ते द्रव्यवंदन कहियें. ४ नावपूर्वक उपयोग सहित वांदवुं, ते नाववंदन. ५ जे क्षेत्रें वांदवुं, ते क्षेत्रवंदन. ६ जे कालें वांदवुं, ते कालवंदन.

॥ हवे पडिक्कमणां आवश्यक उपर छ वानां ॥

१ पडिक्कमण एवुं नाम, ते नाम पडिक्कमणुं. २ जीवाजीवनी इछायें काष्ठादिक स्थापीयें, ते स्थापनापडिक्कमणुं. ३ जे उपयोग विना करवुं, ते द्रव्य पडिक्कमणुं. ४ नावथी उपयोग सहित करवुं, ते नाव पडिक्कमणुं. ५ जे क्षेत्रें पडिक्कमणुं करवुं. ते क्षेत्रपडिक्कमणुं. ६ जे कालें पडिक्कमणुं करवुं, ते काल पडिक्कमणुं. ए पडिक्कमणानी परेंज काउस्सग्ग तथा पच्चक्खाण ए बन्ने आवश्यकना नामादिक छए बोल जाणी लेवां.

अथ वडी नीति लघुनीत्यादि परठवण, योग्य जग्या प्रतिलेषण निमित्तें पोसहमां चोवीश मंरूल करवां,ते कहे छे. त्यां प्रथम संथारा पासेंनी जग्यायें.

१आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेली तरफनां ॥

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ आघाडे आसन्ने पा

सवणे अहियासे. ३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे. ४ आघा डे मज्झे पासवणे अहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे.

॥ हवे उपाश्रयनां बारणां बाहिर नजिक रहीने करे ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियायासे. २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ आणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अण हियासे. ४ अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयथी शो हाथ आशरे दूरें रहे, ते करवां ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ अणाघाडे आस न्ने पासवणे अहियासे. ३ अणाघाडे मच्चे उच्चारे पासवणे अहियासे.४ अ णाघाडे मच्चे पासवणे अहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिया से.६ अणाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ इति मंम्कल बोल चोवीश समाप्त॥

अथ

श्री देवेंद्रसूरिविरचितं चैत्यवंदनादिभाष्यत्रयं बालावबोधसहितं प्रारभ्यते ॥

तत्र प्रथमं

श्री चैत्यवंदनभाष्यप्रारंभोऽयं,

ग्रंथकर्त्ता मंगलाचरण माटे गाथा कहे छे.

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइवंदणाइ सुवियारं ॥
बहु-वित्ति-भास-चुस्मी,सुयाणुसारेण वुच्छामि ॥१॥

बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरण कहे छे.

प्रणम्य प्रणतानंद, कारकं विघ्नवारकम् ॥ श्रीमद्विजयदेवाङ्कं, लसल्लावण्यधारकम् ॥ १ ॥ मेरुधीरं स्फुरद्धीरं, गंभीरं, नी रधीशवत् ॥ भाष्यत्रयार्थ बोधाय,बालबोधो विधीयते ॥२॥

अर्थः-(वंदणिज्जे के०) वंदनीयान् एटले वांदवा योग्य एव जो (सव्वे के०) सर्वे श्रीतीर्थंकर देव अथवा श्रीअरिहंतादिक (सव्वे के०) सर्वे

पांचे परमेष्ठी तेमने (वंदित्तु के०) वंदित्वा एटले वांदीने (चिइवंदणाइ के०) चैत्यवंदनादिक एटले चैत्यवंदन तथा आदिशब्दथी गुरुवंदन अने पच्चक्काण पण लेवां. ते रूप (सुवियारं के०) सुविचारं एटले रूडा विचारप्रत्यें (बहु के०) घणा एवा जे (वित्ति के०) वृत्ति, (जास के०) जाष्य अने (चुर्णी के०) चूर्णि तथा निर्युक्ति प्रमुख ग्रंथो तद्रूप (सुयाणुसारेण के०)श्रुतने अनुसारें करीने (वुढामि के०) कहीश. परंतु महारी मतिकल्पनायें नहीं कहीश. एटले धर्मरुचि जीवोने पंचांगी सम्मत चैत्यवंदनादिकनो विधि कहीश. कारण के समकेतनुं बीज तो शुद्ध देव,शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनुं स्वरूप जाणवुं, अने सद्दहवुं ढे ते माटें प्रथम अढार दोष रहित,निष्कलंक एवा जे श्रीअरिहंत देव ढे,ते शुद्ध देव ढे.तेना स्थापनादिक चारे निक्षेपा वांदवा योग्य ढे,तो इहां चैत्यशब्दें श्रीअरिहंत तथा श्रीअरिहंतनी प्रतिमा तेनी जे वंदना करवी, ते विधिसहित करवी ते विधि कहीश ॥ इति ॥ १ ॥

हवे ते चैत्यवंदननो विधि मूल तो चोवीश द्वारें सचवाय ढे,ते चोवीशना वली उत्तर जेद २०७४ थाय ढे. माटें चोवीश द्वारनां नाम, प्रत्येक द्वारना उत्तरजेदनी संख्या सहित चार गाथायें करी कहे ढे.

दहतिग अहिगम-पणगं,डुदिसि तिहुग्गह तिहा उ वंदणया ॥ पणिवाय-नमुक्कारा, वसा सोल-सय-सीयाला ॥२॥
इगसीइ सयं तु पया,सग-निउइ संपयाउ पण दंमा॥ बार अहिगार चउवं, दणिज्ज सरणिज्ज चउह जिणा ॥ ३ ॥
चउरो थुइ निमित्तठ, बारह हेऊअ सोल आगारा ॥ गुणवीस दोसउस्स, ग्ग माण थुत्तं च सगवेला ॥ ४ ॥ दस आसायण चाउ, सवे चिइवंदणाइं ठाणाइं ॥ चउवीस डुवारेहिं, डुसहस्सा हुंति चउ सयरा ॥५॥ इतिदारगाहा ॥

अर्थः–प्रथम देव वांदतां नैषेधिक आदिक (दहतिग के०) दश त्रिक साचववा जोइयें, तेनुं द्वार कहीश,बीजुं (अहिगमपणगं के०) अजिगम पंचक एटले पांच अजिगमनुं द्वार कहीश. त्रीजुं देव वंदन करतां स्त्रीने तथी दशायें अने पुरुषने कयी दशायें उना रहेवुं जोइयें,ते (डुदिसि के०)

द्विदिशि एटले बे दिशाउंनुं द्वार कह्नीश,चोथुं जघन्य,मध्यम अने उत्कृष्ट एवा (तिउग्गह के०) त्रण प्रकारना अवग्रहनुं द्वार कह्नीश, पांचमुं (तिहा उवंदणया के०) त्रिधातुवंदनया एटले त्रण प्रकारें वली (चैत्यवंदना करवी. तेनुं द्वार कह्नीश, ढह्नुं पंचांग एटले पांच अंगें (पणिवाय के०) प्रणिपात करवो, तेनुं द्वार कह्नीश, सातमुं (नमुकारा के०) नमस्कार करवानुं द्वार कह्नीश,आठमुं देववंदनना अधिकारें जे नवकार प्रमुख नव सूत्रों आवे ढे,तेना (वणा के०) वर्ण एटले अक्षर ते (सोलसयसीयाला के०) शोलशें ने सुडतालीश थाय. तेने गणी देखाडवानुं द्वार कह्नीश ॥ २ ॥

नवमुं देववंदनना अधिकारें नवकार प्रमुख नव सूत्रानां (इगसीइसयं के०) एकसोने एक्यासी (तु के०) वली (पया के०) पदो थाय ढे, ते देखाडवानुं द्वार कह्नीश, दशमुं एज नवसूत्रांनां (सगनउइ के०) सत्तनवति एटले सत्ताणुं (संपयाउ के०) संपदाउ थाय ढे, ते देखाडवानुं द्वार कह्नीश, अगीयारमुं नमुत्थुणादिक (पणदंका के०) पांच दंमकनुं द्वार कह्नीश, बारमुं चैत्यवंदनने विषे पांच दंमकमां (बारअहिगार के०) बार अधिकार आवे ढे,तेनुं द्वार कह्नीश,तेरमुं (चउवंदणिज्ज के०) चार वांदवा योग्य तेनुं द्वार कह्नीश,चौदमुं उपद्रव टालवा निमित्तें एक (सरणिज्ज के०) स्मरण करवा योग्य जे सम्यग्दृष्टि देवो तेमनुं द्वार कह्नीश, पन्नरमुं नामस्थापनादिक (चउहजिणा के०) चार प्रकारना जिननुं द्वार कह्नीश ॥ ३ ॥

शोलमुं (चउरोथुइ के०) चार स्तुति कहेवानुं द्वारं कह्नीश,सत्तरमुं देव वांदवामां पापक्षपणादिक (निमित्तठ के०) निमित्त आठ ढे, तेनुं द्वार कह्नीश, अढारमुं फल साधवा निमित्तें (बारहेउ के०) बार हेतुनुं द्वार कह्नीश, (अ के०) वली उंगणीशमुं अपवादें काउस्सग्गना (सोलसआगारा के०) शोल आगारनुं द्वार कह्नीश,वीशमुं काउस्सग्गमां (गुणवीसदोस के०) उंगणीश दोष उपजे तेनुं द्वार कह्नीश,एकवीशमुं (उस्सग्गमाण के०) काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार कह्नीश, बावीशमुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तवन केवा प्रकारें करवुं? तेनुं द्वार कह्नीश, त्रेवीशमुं (अ के०) वली दिन प्रत्यें चैत्यवंदन (सगवेला के०) सात वेला करवुं, तेनुं द्वार कह्नीश ॥ ४ ॥

चोवीसमुं देववंदन करतां देरासरमां तांबूल प्रमुख (दसआसायणचाउ के०) दश आशातनानो त्याग करवो,तेनुं द्वार कह्नीश,एम (सबे के०) सर्वे

(चिइवंदणाइंठाणाइं के०) चैत्यवंदननां स्थानक ते (चउवीसडुवारेहिं के०) चोवीशे द्वारें केरीनें(डुसहस्सा के०)बे हजारनी ऊपर(चउसयरा के०)चुम्मो तेर (हुंति के०) थाय ॥५॥ (दारगाहा के०) ए द्वारनी गाथाउं चार जाणवी॥

चोवीश द्वारनां उत्तरभेदसहित यंत्रनी स्थापना.

अंक	मुलद्वारनां नाम.	उत्तरभेदनी संख्या.	सरवालो.
१	नैषेधिकादिक दशत्रिकनुं द्वार.	३०	३०
२	पांच अभिगम साचववानुं द्वार.	५	३५
३	देववांदतां स्त्री पुरुषने उभा रहेवानीबे दिशाउंनुंद्वार.	२	३७
४	जघन्य, मध्यमादि त्रण अवग्रहनुं द्वार.	३	४०
५	त्रण प्रकारें वंदना करवी तेनुं द्वार.	३	४३
६	प्रणिपात पंचांगें करवानुं द्वार.	१	४४
७	नमस्कार करवानुं द्वार.	१	४५
८	नवकार प्रमुख नवसूत्रानां वर्णोनुं द्वार.	१६४७	१६९२
९	नवकार प्रमुख नव सूत्रानां पदसंख्यानुं द्वार.	१८१	१८७३
१०	नवकार प्रमुख नवसूत्रानी संपदानुं द्वार.	९७	१९७०
११	नमोत्थुणादि पांच दंमकनुं द्वार.	५	१९७५
१२	देव वांदवाना बार अधिकारनुं द्वार.	१२	१९८७
१३	चार वंदनीयनुं द्वार.	४	१९९१
१४	स्मरण करवा योग्यनुं द्वार.	१	१९९२
१५	नामादि चार प्रकारे जिननुं द्वार.	४	१९९६
१६	चार थुइ कहेवानुं द्वार.	४	२०००
१७	देव वांदवाना आठ निमित्तनुं द्वार.	८	२००८
१८	देव वांदवाना बार हेतुनुं द्वार.	१२	२०२०
१९	काउस्सग्गना शोल आगारनुं द्वार.	१६	२०३६
२०	काउस्सग्गना उगणीश दोषनुं द्वार.	१९	२०५५
२१	काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार.	१	२०५६
२२	स्तवन केम करवुं? तेनुं द्वार.	१	२०५७
२३	सात बार चैत्यवंदन करवानुं द्वार.	७	२०६४
२४	दश आशातना त्यागवानुं द्वार.	१०	२०७४

हवे ए चोवीशे द्वारना उत्तर भेदनुं स्वरूप अनुक्रमें देखाडतो थको प्रथम दश त्रिकोनुं द्वार कहेतो बतो बे गाथायें करी दश त्रिकोना नाम कहे छे.

तिन्नि निसिही तिन्निउ, पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ॥
तिविहा पूया य तहा, अवत्थ-तिय-भावणं चेव ॥ ६ ॥
तिदिसि-निरक्खण-विरई, पयभूमि-पमज्जणं च तिक्खुत्तो ॥
वन्नाइ-तियं मुद्दा, तियं च तिविहं च पणिहाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—प्रथम देरासरें जातां (तिन्निनिसिही के०) त्रणवार नैषिधिकी कहेवी, बीजुं देरासरें (तिन्निउ के०) त्रण वली (पयाहिणा के०) प्रद क्षिणा देवी, त्रीजी (तिन्नि के०) त्रण वार (चेवय के०) ए निर्धार वाच क शब्द छे (पणामा के०) प्रणाम करीयें, चोथो (तिविहा के०) त्रण प्रकारनी अंगपूजादिक (पूया के०) पूजा करवी, पांचमी (य के०) वली (तहा के०) तथा प्रभुनी पिंमस्थावस्थादिक (अवत्थतियभावणं के०) अवस्थात्रयनुं भाववुं जाणवुं, (चेव के०) निश्चें ॥

छठी चार दिशिमांथी मात्र भगवान् जे दिशियें बेठेला होय तेज एक दिशिनी सामुं जोवुं अने शेष (तिदिसिनिरक्खणविरई के०) त्रण दि शिनी सन्मुख जोवानुं विरमण करवुं, सातमी (पयभूमिपमज्जणं के०) पग मूकवानी भूमिनुं प्रमार्जन ते (च के०) वली (तिक्खुत्तो के०) त्र ण वार करवुं, आठमी (वन्नाइतियं के०) वर्णादिकना आलंबन त्रण कहेशे (च के०) वली नवमी (मुद्दतियं के०) त्रण मुद्रा कहेशे, दशमी (तिविहं के०) त्रण प्रकारें (च के०) वली (पणिहाणं के०) प्रणिधा न कहेशे, जे त्रण बोलनो समुदाय तेने त्रिक कहीयें, ए दश त्रिकनां नाम कह्यां ॥ ७ ॥

हवे प्रथम निसिही त्रण कये कये स्थानकें करवी? ते कहे छे.

घर-जिणहर-जिण-पूया, वावारच्चायउ निसिहि-तिगं ॥
अग्ग-दारे मज्जे, तइया चिइ-वंदणा-समए ॥ ८ ॥

अर्थः—जे सावद्य व्यापारनो मन,वचन अने कायायें करी निषेध करवो तेने निसिही कहीयें, ते एक पोताना (घर के०) घरनां बीजी (जिणह

र के०) जिनघर ते देरासरनां, त्रीजी (जिणपूआ के०) श्रीजिनेश्वरनी पूजानां जे (वावार के०) व्यापार एटले ए त्रणना जे व्यापार तेने (चाय‍ओ के०) त्यागवाथकी (निसिहीतिगं के०) नैषिधिकीत्रिक थाय ते मां प्रथम निसिहि ते पोताना घर, हाट, परिवारादिक संबंधी जे सावद्य व्यापार ते सर्व निवर्त्तावता माटे श्रीजिनमंदिरने (अग्गद्दारे के०) अग्र द्वारें कहे. एटले देरासरनां मूल बारणे दरवाजामां पेसतांज कहे, पण इहां श्रीजिनघरने पूंजवा समारवा संबंधि तथा पूजा संबंधि सर्व व्यापार आदरे, तथा बीजी निसिही ते जिनघर संबंधी व्यापारथी निवर्त्तवा रूप देरासरनी (मज्के के०) मध्य गंजारामां पेसतां कहे, तिहां देरासर पछ्या आखछ्यानी चिंतानो तथा देरासरमां पूंजवादिकनो त्याग करीने ड्रव्यपूजादिकनो प्रारंज करे, एम सर्व प्रकारनी पूजा विधिसहित साचवी रह्या पछी (तइया के०) त्रीजी निसिही जे जिनपूजा संबंधि व्यापारना त्याग रूप छे ते. जिनपूजा व्यापार त्याग तो (चिइवंदणासमए के०) चैत्य वंदन करवाना अवसरें कहे,इहां ड्रव्यपूजा व्यापार सर्व निवर्त्तावीने केवल जावपूजारूप चैत्यवंदन स्तवनादिकनो एकाग्र चित्तें करी पाठ करे, ए रीतें त्रण निसिही साचवे.

अथवा मन, वचन अने कायायें करी घरसंबंधी व्यापार निषेधवा रूप त्रण निसिही देरासरना अग्रद्वारमां कहेवी, अने तेज प्रमाणें मनादिक त्रणे योगें देरासर संबंधी व्यापार त्यागवा आश्रयी त्रण निसिही गंजारामां कहेवी, तथा वली चैत्यवंदनादि कहेवाने अवसरें पण मन वचन कायायें करी जिनपूजा व्यापार त्यागरूप त्रण निसिही कहेवी, ए रीतें दरेक वखतें मन, वचन अने कायाना योगें करी त्रण त्रण निसिही कहेवी, अथवा दरेक वखतें एकज निसिही कहेवी. परंतु घर संबंधी देरा संबंधी अने जिनपूजा संबंधी व्यापार निषेध करीयें छेयें, एम समजीनें देरासरमां पेसतांज त्रणे निसिही कही देवी नहीं. ए तात्पर्य छे. ए प्रथम निसिहीत्रिक कह्युं ॥ ८ ॥

हवे बीजुं प्रदक्षिणात्रिकनुं नाम प्रथम सामान्यें छठी गाथामां कहेलुं छे, तेनो प्रगट अर्थ छे,माटें जूदुं वखाएयुं नथी. तथापि चैत्यना दक्षिण जागथी त्रण प्रदक्षिणा देवी,एटले संसारना जवज्रमण टालवा रूप जाव

नायें श्रीप्रतिमाजी महाराजनी जमणी बाजुथी अनुक्रमें ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधना रूप त्रण फेरा फरवा. ए बीजुं प्रदक्षणात्रिक कह्युं.

हवे त्रीजुं प्रणामत्रिक कहे छे.

अंजलि-बंधो अद्धो, णउ अ पंचंगउ अ तिपणामा ॥
सवत्र वा तिवारं, सिराइ-नमणे पणाम-तियं ॥ ए ॥

अर्थः—श्रीजिन प्रतिमा देखी बे हाथ जोडी निलाडे लगाडी प्रणाम करीयें ते प्रथम (अंजलिबंधो के०) अंजलिबंध प्रणाम कहीयें, तथा कटिदेशथी उपरलुं अर्धुं शरीर तेने लगारेक नमाडी प्रणाम करीयें, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानकें रह्यां थकां कांइक शिर नमाडीयें, तथा शिर करादिकें करी नूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते एक अंगथी मांडीने चार अंग पर्यंत नमाडवुं ते बीजो (अद्धोणउ के०) अर्द्धावनत प्रणाम कहीयें, तथा (अ के०) वली बे जानु, बे कर अने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच अंग नमाडी खमासमण आपीयें, ते त्रीजुं (पंचंगउ के०) पंचांग प्रणाम जाणवो. ए (तिपणामा के०) त्रण प्रणाम जाणवा.

(वा के०) अथवा (सवत्र के०) सर्वत्र प्रणाम करवासमये (तिवारं के०) त्रण वार (सिराइनमणे के०) मस्तकादिक नमाडवे करी एटले शिर, कर, अंजली प्रमुखें करी जे त्रण वार नमन आवर्त्त करवुं ते (पणामतियं के०) प्रणामत्रिक जाणवुं. ए त्रीजुं प्रणामत्रिक कह्युं॥ ए ॥

हवे चोथुं पूजात्रिक कहे छे.

अंगग्गनावनेया, पुप्फाहार थुइहिं पूयतिगं ॥
पंचोवयारा अठो, वयार सवोवयारा वा ॥ १० ॥

अर्थः—(अंगग्ग के०) अंगने अग्र एटले पहेली अंगपूजा अने बीजी आगल ढोवारूप अग्रपूजा, तथा त्रीजी चैत्यवंदनरूप (नाव के०) नावपूजा ए त्रण (नेया के०) नेदथकी अनुक्रमें (पुप्फाहारथुइहिं के०) पुष्पाहारस्तुतिनिः एटले पहेली पुष्प केसरादिके अने बीजी आहार फलादि ढोकनें तथा त्रीजी स्तुति करवे करीने (पूयतिगं के०) पूजा त्रिक थाय छे.

तेमां प्रथम अंगपूजा ते श्रीवीतरागनी पूजा अवसरे मनःशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, नीतिनुं धन,पूजाना उपकरणनी शुद्धि, भूमिशुद्धि,ए सातवाना शुद्ध करी धवल निर्मल सुपोत धोतीयां पुरुष पहेरे, अने जेनो आठपडो मुखकोश थाय एहवी एक साडी उत्तरासंगनी धरे, एवी रीतें पुरुषें पूजा अवसरें बे वस्त्र राखवां अने स्त्रीनें तो विशेष वस्त्रादिकनी शोभा जोइयें तथापि हमणां संप्रदायें त्रण वस्त्र पहेरी पूजा करे, ए रीतें वस्त्र पहेरी आशातना टालतो थको प्रथम पुंजणीयें करी श्रीजिनबिंबनें पूंजे, पूंजवाथी मांमी पर्वनेविषे त्रण, पांच, सात, कुसुमांजलि प्रक्षेप करे. न्हवण, अंगलूहणां धरतो, विलेपन, भूषण, अंगीरचन, पुष्प चडावतो जिनहस्तमां नारिकेरादिक, धूपाक्षेप,सुगंधवासक्षेपणादिक करतो पूजा करे. ए सर्व अंगपूजा जाणवी.

बीजी अग्रपूजा; तेमां धूप, दीप, नैवेद्यादि शब्दें आहार ढोकन पुष्प प्रकर, गंथिम, वेढिम, पूरिम, संघातिमादि भेदें जल,लवणोत्तारण, आरती, मंगलदीपक, अष्टमंगलभरण, ए सर्व बीजी अग्रपूजा जाणवी.

त्रीजी भावपूजामध्यें स्तुति, गीत, गान, नाटक, छत्र, चामर, विंजवादि तथा देवद्रव्य वधारवा प्रमुख सर्व भावपूजा जाणवी.ए पूजात्रिक कह्युं. अथवा करवा, करावचा अने अनुमोदवा रूप ए पण त्रिविध पूजा जाणवी.

अथवा एक विघ्नोपशामिनी, बीजी अभ्युदयसाधनी, त्रीजी निवृत्तिदायिनी, ए पूजात्रिक जाणवुं. यडुक्तं ॥ विग्घोवसामिगेगा, अप्भुदयसाहणि भवे बीया ॥ निवुइकरणी तइया, फलयाउ जहत्थ नामेहिं ॥ १ ॥ इत्यावश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥

(वा के०) अथवा (पंचोवयारा के०) पंचोपचारा पूजा ते १ गंध, २ माल्य, ३ अधिवास, ४ धूप, ५ दीप. अथवा १ कुसुम, २ अक्षत, ३ गंध, ४ धूप, ५ दीप ए पांच प्रकारें पण प्रथम अंगपूजा जाणवी.

बीजी (अठोवयार के०) अष्टोपचार एटले १ कुसुम २ स्कइ ३ गंध ४ पईव ५ धूव ६ नैवेज्ज ७ जल ८ फलेहिं पुणो ॥ अठविह कम्ममहणी, अठुवयारा हवइ पूया ॥ १ ॥ इति आवश्यकनिर्युक्तिवचनं ए आठ प्रकारें पूजा जाणवी.

त्रीजी (सव्वोवयारा के०) सर्वोपचारा ए सर्वोपचारपणे पूजा प्रते

णाम मात्रादिक सर्व लोकोपचार विनय ते सर्वपूजा जाणवी. अथवा जेटली वस्तु मले तेणें करीने पूजा करवी, ते सर्वोपचारपूजा जाणवी. तिहां १ न्हवण, २ विलेपन, ३ देवडुष्यवस्त्र, तथा चक्षुयुगल, ४ वासपूजा, ५ फूलपगर, ६ फूलमाल, ७ बूटां फूल, ८ चूर्णघनसारादि, तथा आंगी रचनादि, ए ध्वजारोपण, १० आजरण, ११ फूलघर, १२ फूलनो मेघ, १३ अष्टमंगल रचना, १४ धूप दीप आरती मंगल दीपादिक नैवेद्य ढोकन, १५ गीतगान, १६ नाटक, १७ वाजित्र. ए सत्तर प्रकारें पूजा, तथा वली २१ प्रकारें पूजा, तेनां नाम कहे बे. १ स्नात्र, २ विलेपन, ३ जूषण, ४ फल, ५ वास, ६ धूप, ७ दीप, ८ फूल, ए तंडुल, १० पत्र, ११ पूगी, १२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ बत्र, १६ चामर, १७ वाजित्र, १८ गीत, १ए नृत्य, २० स्तुति, २१ देवड्व्यकोशवृद्धि, एवं एकवीश जेद, तथा एकशो आठ प्रकारादि ए सर्व बहुविध पूजा जाणवी. ए रीतें पंचोपचार, अष्टोपचार अने सर्वोपचार मली त्रण जेदें पूजा जाणवी. ए चोथुं पूजात्रिक कह्युं ॥ १० ॥

हवे पांचमुं, अवस्थात्रिक कहे बेः–

जाविज्ज अवबतियं, पिंम्ब पयब रूवरहियत्तं ॥
बउमब केवलित्तं, सिध्दत्तं चेव तस्सबो ॥ ११ ॥

अर्थः–हे जव्यजीव! तुं (जाविद्य के०) जाव्य. श्रीजगवंतनी (अवबतियं के०) त्रण अवस्था प्रत्यें एटले त्रण अवस्थानी जावना जावियें, ते कहे बे. प्रथम (पिंम्ब के०) पिंमस्थावस्था जावीयें, बीजी (पयब के०) पदस्थ अवस्था जावीयें, त्रीजी (रूवरहियत्तं के०) रूपरहितत्वं एटले रूपरहित एवी रूपातीत अवस्था जावीयें, तिहां जे पिंमस्थावस्था ते (बउमब के०) बद्मस्थावस्थायें जावियें, तीर्थंकर पदनां पिंम जे शरीर तीर्थंकर नामाकर्मयोग्य बे, ते पिंमस्थावस्था बे अने पदस्थावस्था ते (केवलित्तं के०) केवलज्ञान अवस्थायें जावीयें एटले केवल ज्ञान पाम्या पढी प्रजुपदस्थ थया ते, तथा रूपातीतावस्था ते (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्वं एटले सिद्धपणानी अवस्थायें जाववी, कारण के सिद्धपणुं जे बे, ते रूपथकी अतीत बे, माटे सिद्धरूपपणुं जावतां रूपातीत जावना कही

यें. ए (चेव के०) निश्चें (तस्सत्रो के०) ते पिंमस्थादिक त्रण अवस्था नो अर्थ जाणवो ॥ ११ ॥

॥ हवे ए त्रणे अवस्था क्यां क्यां जाववी ? तेनां ठाम कहे ठे.

न्हवणच्चगेहिं ठउम, ठवछ पडिहार गेहिं केवलियं ॥
पलियं कुस्सग्गेहिय, जिणस्स जाविज्ज सिद्धत्तं ॥ १२ ॥

अर्थः–(न्हवणच्चगेहिं के०) स्नपनार्चकैः एटले न्हवण, पखाल, अर्चादि पूजाना अवसरें, पूजा करनारा पूजक पुरुषोयें (जिणस्स के०) श्रीजिनेश्वरनी (ठउमत्नवत्र के०) उद्मस्थावस्थाने जाववी, ते उद्मस्थावस्थाना त्रण जेद ठे, एक जन्मावस्था, बीजी राज्यावस्था अने त्रीजी श्रमणावस्था, तेमां प्रजुने न्हवण अर्चादिक प्रक्षालन करतां जन्मावस्था जाववी, अने मेरुपर्वतनी उपर जे जन्म महोत्सव जाववो ते पण जन्मावस्थाज जाणवी.

तथा मालाधारादि, पुष्प, केशर, चंदन अने अलंकारादि चढावतां राज्यावस्था जाववी. वली जगवंतने अपगत शिरकेश, शीर्ष, श्मश्रु कूर्च रहित एवा मुख मस्तकादिक देखीने श्रमणावस्थानी जावना जाववी.ए प्रथम उद्मस्थावस्था त्रण जेदें विवरीने कही.

तथा किंकली, कुसुमवृष्टि अने दिव्यध्वनि प्रमुख (पडिहारगेहिं के०) आठ महाप्रातिहार्यें करीने एटले प्रातिहार्य युक्त जगवानने देखीने बीजी पदस्थावस्था एटले (केवलियं के०) केवली पणानी अवस्था जावीयें.

तथा (पलियंक के०) पर्यंकासने करी सहित एटले पलोंठी वालीने बेठा एवा (उस्सग्गेहि के०) काउस्सग्गीयाने आकारें (य के०) वली (जिणस्स के०) जिननुं बिंब देखवे करीने (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्व एटले सिद्धपणानी अवस्था अर्थात् रूपातीतपणानी अवस्था प्रत्यें (जाविज्ज के०) जाववी. केम के ? केटलाएक तीर्थंकरो पर्यंकासने काउस्सग्ग मुद्रायें मुक्ति गया ठे माटें ज्योतिरूप अवगाहना जाववी. आ गाथामां जाविज्ज ए क्रियापद सर्वत्र संगत करवुं, ए पांचमुं अवस्थात्रिक कह्युं ॥ १२ ॥

हवे छठुं त्रणे दिशि जोवाथी निवर्त्तवानुं त्रिक कहे छे.

उड्ढाहो तिरिआणं,तिदिसाण निरक्कणं चइज्जहवा॥
पच्छिम दाहिण वामण,जिण मुह न्नछ दिठि जुउ ॥१३॥

अर्थः—श्रीजिनप्रतिमा जुहारतां प्रभु उपर एकांत ध्यान राखवा निमित्तें एक (उड्ढा के०) ऊर्ध्वदिशि, बीजी (अहो के०) अधोदिशि अने त्रीजी (तिरिआणं के०) तीर्छी दिशि. ते आडुं अवलुं ए (तिदिसाण के०) त्रण दिशिनुं (निरक्कणं के०) जोवुं (चइज्ज के०) छांडवुं एटले वर्जन करवुं. (अहवा के०) अथवा (पच्छिम के०) पाछली पूंठनी दिशियें (दाहिण के०) जमणी दिशियें तथा (वामण के०) डाबी दिशियें एटले जे दिशायें श्रीभगवंतनी प्रतिमा होय, ते दिशि टालीने शेष पूंठनी बाजु तथा जमणी बाजु अने डाबी बाजु, ए त्रण दिशायें जोवानुं वर्जन करवुं, मात्र (जिणमुह के०) श्री जिनेश्वरना मुखनेविषे पोतानी (दिठि के०) दृष्टिने (न्नछ के०) न्यस्त एटले स्थापी राखेली होय.तेणे करी (जुउ के०) युक्त एटले सहित एवो थको वंदन करे. एटले जिनप्रतिमा उपरपोतानां लोचन थापी एकाग्र मन करे, परंतु आडुं अवलुं अरहुं परहुं जूवे नहीं. ए छठुं त्रण दिशि निरखण वर्जवानुं त्रिक कह्युं ॥ १३ ॥

हवे सातमुं पदभूमिप्रमार्जनत्रिक कहे छे, ते आवी रीतें केः—श्रीजिन वंदनायें इरियावहि पडिक्कमतां तथा चैत्यवंदन करतां जीवयत्नने अर्थे रूडे प्रकारें दृष्टिवडे जोइने पद स्थापवानी भूमि त्रण वार पूंजवी. तिहां गृहस्थ होय तो वस्त्रांचलें करी पूंजे, अने साधु होय तो रजोहरणें करी पूंजे. ए सातमुं त्रिक थयुं.

हवे आठमुं आलंबनत्रिक अने नवमुं मुद्रात्रिकनुं स्वरूप कहे छे.

वन्नतियं वन्नछा, लंबणमालंबणं तु पडिमाई ॥
जोग जिण मुत्तसुत्ती,मुद्दाभेएण मुद्दतियं॥१४॥

अर्थः—(वन्नतियं के०) वर्णत्रिकं एटले वर्णत्रिक ते, कयुं ते कहे छे. (वन्नछालंबणं के०) वर्णार्थालंबनं एटले एक वर्णालंबन, बीजुं अर्थालंबन, तिहां नमोत्थुणादिक सूत्र भणतां तेमां आवेला जे हलवा भारे अक्षर ते

न्यूनाधिकरहित पणे यथास्थित बोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं बराबर चिंतन राखवुं, ते प्रथम वर्णालंबन जाणवुं, अने जे नमोत्थुणं प्रमुख सूत्रो जणतां तेना अर्थ हृदयमां भाववा, ते बीजुं अर्थालंबन जाणवुं, तथा (आलंबणं तु के०) आलंबन ते वली शुं कहीयें? तोके (पडिमाई के०) प्रतिमादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदिशब्दथकी भाव अरिहंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं पण ग्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप आलंबन धारवुं, ते त्रीजुं प्रतिमालंबन जाणवुं. ए आठमुं आलंबनत्रिक कह्युं.

हवे नवमुं मुद्रात्रिक कहे छे. एक (जोग के०) योगमुद्रा, बीजी (जिण के०) जिनमुद्रा अने त्रीजी (मुत्तसुत्ती के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रा, ए (मुद्दाभेएण के०) योग मुद्रादिकना भेदें करीने (मुद्दतियं के०) मुद्रात्रिक जाणवुं ॥ १४ ॥

हवे प्रथम योगमुद्रानुं स्वरूप कहे छेः–

अन्नुन्नंतरिअंगुलि, कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ॥
पिट्टोवरि कुप्परि सं, ठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥१५॥

अर्थः–(अन्नुन्नंतरिअंगुलि के०) अन्योन्यांतरितांगुलि एटले बे हाथनी दशे अंगुलिने अन्योन्य ते मांहोमांहो अंतरित करीछे जिहां एवी अने (कोसागारेहिं के०) कमलना कोशाने आकारें जोडीने कीधा एवा (दोहिंहत्थेहिं के०) बे हाथे करीने, ते बेहु हाथ केहवा? तो के(पिट्टोवरि के०) पेट उपरें (कुप्परि के०) कोणी ते (संठिएहिं के०) संस्थित एटले रही छे जेनी एवा प्रकारें रहेवे करी (जोगमुद्दत्ति के०) योगमुद्रा इति एटले योगमुद्रा एम होय. ए पहेली योगमुद्रानुं स्वरूप कह्युं ॥ १५ ॥

हवे बीजी जिनमुद्रानुं लक्षण कहे छे.

चत्तारि अंगुलाइं, पुरउ ऊणाइं जब पच्छिमउ ॥
पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥१६॥

अर्थः–(जब के०) यत्र एटले जिहां (पायाणं के०) पगना जे (पुरउ के०) आगलना अंगुलिनी बाजु तरफना पहोचाने मांहोमांहे (चत्तारि अंगुलाइं के०) चार आंगुलनो आंतरो राख्यो होय, अने पगना (पच्छिमउ के०)

पाछलनी पानीनी बाजुना जागमां मांहोमांहे चार आंगुलथी कांइक (ऊणाइं के०) ऊणो आंतरो राख्यो होय. ए रीतें पग राखीने (उस्सग्गो के०) काउस्सग्ग करीयें (एसा के०) एप्रकारें (पुण के०) वली (जिणमुद्दा के०) जिनमुद्रा (होइ के०) होय ॥ १६ ॥

हवे त्रीजी मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहे छे.

मुत्ता सुत्ती मुद्दा, जछ समा दोवि गप्निआ हछा ॥
ते पुण निलाडदेसे, लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति॥१७॥

अर्थः—(जछ के०) जिहां (दोवि के०) बेहुए पण (हछा के०) हाथ ते (समा के०) सरखा बराबर (गप्निआ के०) गर्भित पणे राखी (ते के०) ते बे हस्त (पुण के०) वली (निलाडदेसे के०) ललाटना देश एटले ललाटनां मध्य जागने विषे (लग्गा के०) लगाड्या होय, वली (अन्ने के०) अन्य एटले बीजा केटलाएक आचार्यो कहे छे के (अलग्गत्ति के०) अलगाडया होय एटले ललाटदेशथी दूर राख्या होय. इति एटले ए प्रकारें (मुत्तासुत्तीमुद्दा के०) मुक्ताशुक्तिनामे मुद्रा कहीयें. एमां अंगुलिनां छिद्र विना जेम मोतीना छीपनो जोडो मलेलो होय, तेवा आकारें हाथ राखवा, ए मुद्रानुं ए लक्षण छे ॥ १७ ॥

हवे ए त्रण मुद्रा मांहेली कइ मुद्रायें कइ क्रिया करवी.ते कहे छे.

पंचंगो पणिवाउ, थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ॥
वंदण जिणमुद्दाए, पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥ १८ ॥

अर्थः—एक इछामि खमासमणनो पाठ तेने (पंचंगो पणिवाउ के०) पंचांग प्रणिपात कहीयें. बीजो (थयपाढो के०) स्तवपाठ ते श्रीजिनेश्वरना गुणनी स्तुति जे स्तवनादिकनो पाठ करवो ते (जोगमुद्दाए के०) योगमुद्रायें करीने (होइ के०) होय, तथा (वंदण के०) वांदणा देवां अने काउस्सग्ग जे अरिहंतचेइयाणं इत्यादि सर्व (जिणमुद्दाए के०) जिनमुद्रायें करीने थाय, तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहु अने जयवीयराय ए त्रणे (पणिहाणं के०) प्रणिधान संज्ञामां आवे. पण इहां ते संप्रदायगत एकज जयवीयरायने कहीयें छैयें, ते (मुत्तसुत्तीए के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रायें कहीयें॥ १८ ॥ इहां श्रीसंघाचार

भाष्यमध्ये मुक्ताशुक्ति मुद्रायें स्त्रीने स्तनादिक अवयवो प्रगट देखाय तेम न थवुं जोइयें, एवा हेतु माटे स्त्रीने उंचा ललाटदेशें हाथ लगाडवा कह्या नथी. ए नवमुं मुद्रात्रिक कह्युं ॥

हवे दशमा प्रणिधानत्रिकनुं स्वरूप कहे छे.

पणिहाणतिगं चेइय, मुणिवंदण-पत्नणा-सरूवं वा ॥
मण-वय-काएगत्तं,सेस-तियत्नो उ पयडुत्ति॥१ए॥दारं॥१॥

अर्थः-(पणिहाणतिगं के०) प्रणिधानत्रिक, ते कयुं? ते कहे छे. तिहां जावंति चेइआइं ए गाथा (चेइय के०) चैत्यवांदवा रूप ते प्रथम प्रणिधान जाणवुं. तथा जावंत केवि साहु ए गाथा (मुणिवंदण के०) मुनि वांदवा रूप, ते बीजुं प्रणिधान जाणवुं. तथा जयवीयराय आ नव मखंमा पर्यंत ए गाथा (पत्नणासरूवं के०) प्रार्थनास्वरूप ते त्रीजुं प्रणिधान जाणवुं. (वा के०) अथवा एक (मण के०) मननुं बीजुं (वय के०) वचननुं अने त्रीजुं (काय के०) कायानुं (एगत्तं के०) एकत्व एटले एकाग्र पणुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहीयें. इहां शिष्य पूछे छे के चैत्यवंदनायें प्रणिधान आवे छे, अने बीजी शेष वंदना तो प्रणिधान विनाज थाय छे. तिहां ए बोल सचवाता नथी ते केम ? तेने गुरु कहे छे, के तिहां मन, वचन अने कायानी एकाग्रता छे ए मुख्य प्रणिधान छे ए दशमुं प्रणिधान त्रिक कह्युं.

हवे (सेस के०) शेष रह्या जे (तिय के०) त्रिक एटले आहीं गाथायें करी जेनुं स्वरूप नही वखाण्युं एवुं बीजुं अने सातमुं त्रिक, तेनो (अत्नो के०) अर्थ ते (तु के०) वली (पयडुत्ति के०) प्रकट छे, माटे तेनुं स्वरूप मूल गाथामां लख्युं नथी, एम जाणवुं. तथापि बालावबोधकर्त्तायें ते त्रिकोना अनुक्रमें संक्षेप अर्थ ते ते स्थानकें लख्या छे, एटले दशत्रिकनुं ए प्रथम मूल द्वार थयुं अने उत्तर बोल त्रीश थया ॥ १ए ॥

हवे बीजुं पांच प्रकारना अत्निगमनुं द्वार कहे छे.

सचित्त दव मुद्धण, मचित्त मणुद्धणं मणेगत्तं ॥ इग
साडि उत्तरासं,ग अंजलि सिरसि जिण दिठे॥२०॥

अर्थः-चैत्यादिकने विषे प्रवेश करवानो विधि तेने अत्निगम कहीयें. ते

पांच प्रकारें छे. तिहां देहरे जातां (सचित्तदव्वं के०) सचित्तद्रव्य जे पोताना अंगे आश्रित कुसुमादिक, फलादिक होय, तेनुं (उज्झणं के०) छांमवुं, ते प्रथम अभिगम, तथा (अचित्तं के०) अचित्त पदार्थ जे द्रव्यनाणादिक तथा आजरणादिक वस्त्रादिक वस्तु तेनुं (अणुज्झणं के०) अणछांमवुं एटले पोतानी पासें राखवानी अनुज्ञा ते बीजो अभिगम. तथा (मणेगत्तं के०) मननुं एकाग्रपणुं करवुं, ते त्रीजो अभिगम. तथा (इगसाडि के०) एकपडुं वस्त्र बेहु छेडायें सहित होय तेनो (उत्तरासंग के०) उत्तरासंग करवो, ते चोथो अभिगम. तथा (जिणदिठ्ठे के०) श्रीजिनेश्वरने दूरथकी नजरें दीठे थके (अंजलि के०) बे हाथ जोडीने (सिरसि के०) मस्तकनेविषे लगाडवा एटले अंजलिबद्ध प्रणाम करवो, ते पांचमो अभिगम जाणवो ॥२०॥

इय पंचविहाभिगमो, अहवा मुच्चंति रायचिन्हाइं ॥ खग्गं छत्तोवाणह, मउडं चमरे अ पंचमए ॥ ११ ॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थः–(इय के०) पूर्वली गाथामां कह्या जे (पंचविहाभिगमो के०) पांच प्रकारें अभिगम ते देव तथा गुरु पासें आवतां साचववा (अहवा के०) अथवा वंदना करनार श्रावक जो पोतें राजादिक होय तो ते ए पांच अभिगम साचवे. अने वली बीजां (रायचिन्हाइं के०) राजानां पांच चिन्ह छे ते प्रत्यें (मुच्चंति के०) मूके एटले छांमे. तेनां नाम कहे छे, एक (खग्गं के०) खड्ग, बीजुं (छत्त के०)छत्र, त्रीजुं (उवाणह के०) उपानह, एटले पगनी मोजडी, चोथो माथानुं (मउडं के०) मुकुट अने (पंचमए के०) पांचमुं (चमरेअ के०) चामर, ए पण पांच अभिगम जाणवा ॥२१॥ एटले पांच अभिगमनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं ॥ उत्तर बोल पांत्रीश थया॥

॥ हवे बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार, तथा त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे॥

वंदंति जिणे दाहिण, दिसिठ्ठिआ पुरिस वा
मदिसि नारी ॥दारं॥३॥ नवकर जहन्नु सठ्ठि,
करजिठ्ठ मझुग्गहो सेसो ॥२२॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थः–(जिणे के०) श्रीजिनने (दाहिण दिसिठ्ठिआ के०) दक्षिणदिशिस्थिता एटले मूल नायकनी जमणी दिशायें रह्या थका (पुरिस के०) पुरुषो (वं

दंति के०) वांदे एटले चैत्यवंदना करे,अने मूल नायकने (वामदिसि के०) डाबे पासें रही थकी (नारी के०) स्त्री जनवांदे,एटले चैत्यवंदना करे. इहां चैत्यवंदना पूजाना अधिकार माटें प्रसंगथी जमणी पासें दीपक थापवो, अने डाबी पासें धूपादिक नाणुं, फलादिक, जिन आगलें तथा हस्तें आपीयें. ए बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार थयुं. अने उत्तर बोल साडत्रीश थया.

हवे त्रण अवग्रहनुंचोथुं द्वार कहे छे. तिहां नगवंतथकी (नवकर के०) नव हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी,ते प्रथम (जहन्नु के०) जघन्य अवग्रह जाणवो, तथा नगवंतथकी (सहिकर के०) षष्ठिकर एटले शाठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते बीजो (जिठ के०) ज्येष्ठ एटले उत्कृष्ट अवग्रह जाणवो, अने (सेसो के०) शेष जे नव हाथथी उपर अने शाठ हाथनी मांहेली कोरें एटली वेगलाईयें रही चैत्यवंदना करवी, ते सर्व त्रीजुं (मद्युग्गहो के०) मध्यम अवग्रह जाणवो. तथा केटलाएक आचार्य बार प्रकारना अवग्रह कहे छे के ॥ उक्कोस सहि पन्ना, चत्ता तीसा दसठ पणदसगं ॥ दस नव ति डु एगऊं, जिणुग्गहं बारस विन्नेयं ॥ १ ॥ एटले ६०,५०,४०,३०,१८,१५, १०,९,३,२,१,०॥ ए बार अवग्रह थया एटले अर्द्धा हाथथी मांडीने शाठ हाथ पर्यंत श्रीजिनगृहें तथा गृहचैत्यादिकें श्वासोश्वासादि आशातना वर्जवा निमित्तं ए अवग्रह जाणवां ॥ २२ ॥ ए चोथुं त्रण अवग्रहनुं द्वार कह्युं, इहां सुधी सर्व मली उत्तर बोल ४० थया ॥ २२ ॥

हवे त्रण प्रकारें चैत्यवंदना करवी, तेनुं पांचमुं द्वार कहे छे.

नमुक्कारेण जहन्ना, चिइवंदण मद्य दंम थुइ जुअला ॥
पण दंम थुइ चउक्कग, थय पणिहाणेहिं उक्कोसा ॥२३॥

अर्थः—(नमुक्कारेण के०) एक नमस्कार श्लोकादिक रूप तथा नमो अरिहंताणं कहीनें अथवा हाथ जोडी मस्तक नमाडवे करी अथवा नमो जिनाय कही नमवे करी अथवा एक श्लोकादि केहेवे करी अथवा हमणां देहरे चैत्यवंदन कहियें छेयें, इत्यादि रूपें सर्व प्रथम (जहन्ना के०) जघन्य (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन जाणवुं. तथा (दंमथुइजुअला के०) दंमक युगल ते अरिहंत चेइयाणंनुं युगल तथा स्तुतियुगल ते चार थुइ एटले एक नमस्कार श्लोकादिरूप कही, शक्रस्तव कही, उना थइ, अरि

हंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी, थुइ कहेवी, ते बीजी (मद्य के०) मध्यम चैत्यवंदना जाणवी. तथा (पणदंम के०) पांच नमोत्थुणा रूप पांच दंमकें करी अने (थुइचउक्कग के०) स्तुतिचतुष्क एटले आठ थुइयें करीने, (थय के०) स्तवनें करीने तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहु अने जयवीयराय, ए त्रण (पणिहाणेहिं के०) प्रणिधाने करीनें त्रीजी (उक्कोसा के०) उत्कृष्टी चैत्यवंदना जाणवी ॥ २३ ॥

अन्ने बिंति गेणं, सक्कउएणं जहन्न वंदणया ॥ तद्दुग तिगे
ए मऊा, उक्कोसा चउहिं पंचहिं वा ॥ २४ ॥ दारं ॥ ५ ॥

अर्थः-(अन्ने के०) अन्य एटले बीजा वली केटला एक आचार्य एम (बिंति के०) ब्रुवंति एटले कहे ने के (इगेणं के०) एकेन एटले एक (सक्कत्र एणं के०) शक्रस्तवें करीनें देव वांदीयें ते (जहन्न के०)जघन्य (वंद णया के०) चैत्यवंदना जाणवी. अने (तद्दुगतिगेण के०) तद्द्विकत्रि केण एटले तेहीज बे तथा त्रण शक्रस्तवें करी (मद्या के०) मध्यम चैत्य वंदना जाणवी. तथा (चउहिं के०) चार शक्रस्तवें करी (वा के०) अ थवा (पंचहिं के०) पांच शक्रस्तवें करीने प्रणिधान युक्त करीयें ते (उ क्कोसा के०) उत्कृष्ट चैत्यवंदना जाणवी, अने न्नाष्यादिकने विषे स्तुती युगल कह्यां ने, ते त्रण थुइ स्तुतिरूप एक गणीयें नेयें. अने चोथी थुइ शिक्कारूप समकेतदृष्टिनी सहायरूप जूदी गणी ते माटें स्तुति युगल कहे ने, तेनो विचार आवश्यकवृत्तिथकी जाणवो ॥ २४ ॥ एटले त्रण न्नेदें चैत्यवंदनानुं पांचमुं द्वार कह्युं. सर्व मली उत्तर बोल त्रेंतालीश थया ॥

हवे नहुं प्रणिपातद्वार तथा सातमुं नमस्कार द्वार कहे ने.

पणिवाउ पंचंगो,दो जाणू करडुगुत्तमंगं च॥ दारं ॥ ६ ॥ सुम
हब नमुक्कारा, इग डुग तिग जाव अठसयं॥२५॥ दारं॥७॥

अर्थः-जिहां प्रकर्षें करी न्नक्ति बहुमानपूर्वक नमवुं तेने (पणिवाउ के०) प्रणिपात कहीयें. ते (पंचंगो के०) पांच अंग न्नूमियें लगाडवा रूप जाणवो, तेनां नाम कहे ने (दोजाणू के०) बे जानु, एटले बे ढींचण, अने (करडुग के०) बे हाथ, (च के०) वली पांचमुं

(उत्तमंगं के०) उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच अंग जिहां खमासमण आ पतां भूमियें लागे, ते पंचांग प्रणिपात कहीयें. एणें करी " इच्छामि खमा समणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि " ए पाठ कहे. ए छठुं प्रणिपात द्वार कह्युं. उत्तर बोल चुम्मालीश थया ॥

हवे सातमुं नमस्कार द्वार कहे छे. (सु के०) भला एवा (महत्थ के०) अत्यंत महोटा गहन अर्थ छे जेहना एटले भक्ति, ज्ञान, वैराग्य दिशाना दीपक एवा (नमुक्कारा के०) नमस्कार कहेवा ते (इग के०) एक तथा (डुग के०) बे, तथा (तिग के०) त्रणथी मांमीनें (जावअ ठसयं के०) यावत् एकशो ने आठ पर्यंत कहे ॥ ए सातमुं नमस्कार द्वार कह्युं. उत्तर बोल पीस्तालीश थया ॥ २५ ॥

हवे देववंदनना अधिकारें जे नवकार प्रमुख नव सूत्रों आवे छे,तेमने एक वारनां उच्चर्यां हलवां तथा भारे मलीने सर्व गणीयें तेवारे १६४७ अक्षर थाय अने १८१ पद थाय तथा ९७ संपदा थाय, ए अक्षर, पद तथा संपदा मली त्रणे द्वार एकठां कहे छे. तेनी साथें संपदानां नाम तथा अर्थ पण कहेशे. यद्यपि इच्छामि खमासमणो तथा जे अईयासिद्धा ए गाथा तथा तस्स उत्तरी,अन्नत्थ, इत्यादि अपर ग्रंथांतरें तो ए सूत्रमां संकलित नथी तथापि भाष्यमांहेला देववंदनाधिकारें बोल्या छे, अन्यथा जे पूर्वें उत्तरद्वार कह्यां,ते पूर्ण न थाय,तेमाटें ते सर्व द्वार एकठां कहेछे.

अडसट्ठि अट्ठवीसा,नवनउयसयं च दुसय सग नउया॥ दो
गुणतीस दुसट्ठा,दु सोल अडनउयसय दुवन्नसयं ॥ २६ ॥

अर्थः-१ प्रथम " पंच मंगल महासुयक्खंध" एहवुं नाम नवकारनुं छे, तेनां अक्षर (अडसट्ठि के०) अडशठ ते हवइ मंगलं एवो पाठ भ णतां थाय, केम के श्रीमहानिशीथ सूत्रमध्ये प्रकटाक्षरें हवइ मंगलं ए हवो पाठ छे ॥ यडुक्तं ॥ पंच पयाणं पणतिस, वन्नचूलाइ वन्न तित्तीसं ॥ एवं सम्मे समप्पइ, फुड मक्खर मट्ठसठीए ॥ इति ॥ १ ॥ तेमाटें जो नम स्कारनो एक अक्षर ओछो करे, तो चोशठ विधानें नमस्कार साधवो ते न्यून थाय, तेथी ज्ञाननी आशातनानो अतिचार लागे, एवुं श्रीभद्रबाहु स्वामीयें नमस्कारकल्पें प्रकाश्युं छे, माटें हवइ मंगलं एवो पाठ कहेवो.

२ बीजुं " प्रणिपात " एवुं नाम इछामिखमासमणनुं छे, ते थोजसूत्रमां गुरुवंदनाधिकारें वांदणामां आवशे, पण इहां चैत्यवंदन माटें जेलुं कह्युं छे. तेना अक्षर (अठवीसा के०) अठावीश छे.

३ त्रीजुं "पडिक्कमणा सुयखंध " एवुं नाम इरियावहियानुं छे, ते सूत्रना इछामि पडिक्कमउं इहांथी मांकीने यावत् ठामि काउस्सग्गं लगें अक्षर (सयंच के०) एकशोने वली उपरें (नवनउ य के०) नवाणुं छे.

४ चोथुं " शक्रस्तव" एवुं नाम नमोत्थुणंनुं छे. तेना अक्षर (डुसयसगनउया के०) बशें ने सत्ताणुं जाणवा.

५ पांचमुं "चैत्यस्तव " एवुं नाम अरिहंतचेइयाणंनुं छे, तेना अक्षर (दो गुणतीस के०) बशें ने उंगणत्रीश छे.

६ छठुं "नामस्तव" एवुं नाम लोगस्सनुं छे, वर्त्तमान जिन चोवीशीना नामनुं गुणोत्कीर्त्तनरूप तेना अक्षर (डुसठा के०) बशें ने शाठ छे.

७ सातमुं " श्रुतस्तव" एवुं नाम पुस्करवरदीनुं छे तेना अक्षर (डु सोल के०) बशेनें शोल छे.

८ आठमुं " सिद्धस्तव " एवुं नाम सिद्धाणं बुद्धाणंनुं छे तेना अक्षर, (अडनउयसय के०) एकशो ने अठाणुं छे.

९ नवमुं " प्रणिधान त्रिक " एवुं नाम जावंति चेइयाइं, जावंत के वि साहु अने सेवणा आभवखंडा पर्यंत जयवीयराय ए त्रणेनुं छे. तेना अक्षर (डुवन्नसयं के०) एकशो ने बावन छे ॥ २६ ॥

इअ नवकार खमासण, इरिअ सक्कइआइ दंडेसु ॥ प
णिहाणेसु अ अडुरु,त्त वन्नसोलसय सीयाला ॥२७॥

अर्थः–(इअ के०) ए पूर्वें कह्या जे अक्षर ते अनुक्रमें अडशठ अक्षर (नवकार के०) नवकारने विषे जाणवा, अठावीश अक्षर (खमासण के०) खमासमणने विषे जाणवा, तथा एकशो नवाणुं अक्षर (इरिय के०) इरियावहियाना ठामि काउस्सग्गं लगें जाणवा, (१२००) अक्षर (सक्कइ आइ दंडेसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंडकने विषे अनुक्रमें जाणवा. तेमां नमुत्थुणना सव्वे तिविहेणवंदामि लगें २९७, तथा अरिहंतचेइयाणंना अप्पाणं वोसिरामि लगें २२९, तथा लोगस्सना सव्वलोए लगें २६०, तथा पुस्करवर

दीना सुअस्सजगवउं लगें २१६, तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना वेआवच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिठि समाहिगराणं लगें १९७, ए सर्व मली पांच दंरूक ना १२०० अक्षर थया. तथा १५२ अक्षर जावंति चेइ आइं, जावंत के वि साहु अने जयवीयराय सेवणा आज्जव मखंरूा लगें ए त्रण (पणिहाणेसु के०)प्रणीधानने विषे जाणवा .ए रीतें ए नव सूत्रांना अक्षरो एकठा करियें. त्यारे (अडुरुत्त के०) अद्विरुक्त एटले बीजी वार अण उच्चस्या एवा (वन्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते सर्व मली (सोलसयसीयाला के०) शोलशें ने सुडतालीश थाय ॥ २७ ॥

हवे पदसंख्या कहे ढे.

नव बत्तीस तित्तीसा, तिचत्त अडवीस सोल वीसपया ॥
मंगल इरिया सक्क, त्थयाइसु इगसीइ सयं ॥ २८ ॥

अर्थः—नवकारनां (नव के०) नव पद ढे, इरियावहिनां (बत्तीस के०) बत्रीश पद, नमोत्थुणंनां (तित्तीसा के०) तेत्रीश पद, अरिहंतचेइयाणंना (तिचत्त के०) त्रेंतालीश पद, लोगस्सनां (अडवीस के०) अठावीश पद, पुक्खरवरदीनां (सोल के०) शोल पद, सिद्धाणंबुद्धाणंनां (वीसपया के०) वीश पद, एम (मंगल के०) नवकार, (इरिया के०) इरियावहि अने (सक्कत्थयाइसु के०) शक्रस्तवादिक पांचे दंरूक ए सात सूत्रांने विषे सर्व मली (इगसीइसयं के०) एकशो ने एक्याशी पदनी संख्या जाणवी. अने प्रणिपातनां पद तो वांदणां ज्ञेलां गुरु वंदनमां कहेशे, तथा प्रणिधानत्रिकनी पद संपदा अनुक्रमें ढे, तेमाटें न कह्युं "वारिज्जइ" इत्यादि गाथा ज्ञक्तिनी योजना ढे,ते इहां गणी नही ॥२८॥

हवे संपदानी संख्या कहे ढे.

अठ्ठ नवठ्ठ अठ वी, स सोलसय वीस वीसामा ॥
कमसो मंगल इरिया, सक्कथयाईसु सगनउई ॥ २९ ॥

अर्थः—प्रथम नवकारनी (अठ के०)आठ संपदा,तथा इरियावहिनी (अठ के०)आठ संपदा,तथा नमोत्थुणंनी(नव के०)नव संपदा,तथा अरिहंत

चेइयाणंनी (अठ के०) आठ संपदा, (य के०) वली लोगस्सनी (अ ठवीस के०) अठावीश संपदा, तथा पुरकरवरदीनी (सोलस के०) शो ल संपदा, (य के०) वली सिद्धाणंबुद्धाणंनी (वीस के०) वीश संपदा जाणवी. ए लगारेक रहेवानुं स्थान तथा अर्थनो (वीसामा के०) वी सामो लेवानुं स्थान तेने संपदा कहीयें. ते (कमसो के०) अनुक्रमें(मंग ल के०) नवकारने विषे, (इरिया के०) इरियावहिनेविषे अने (सक्कथ याईसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकनेविषे ए सर्व मली सात सूत्रांने विषे सर्व संपदा (सगनउई के०) सप्तनवती एटले सत्ताणुं थाय ॥ २९ ॥

हवे नवकारना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

वण्णठसठि नव पय, नवकारे अठसंपया तञ्च॥सग संपय पय तुल्ला, सतरक्कर अठमी डु पया॥३०॥"नवक्करअठमी डुपयछठी" इत्यन्ये

अर्थः-(नवकारे के०) नवकारने विषे (वण्णठसठि के०) अडशठ वर्ण होय, तथा नमोअरिहंताणं आदिक (पय के०) पद तें (नव के०) नव होय, अने (संपया के०) संपदा तो (अठ के०) आठ होय, (तञ्च के०) तिहां ते आठ संपदामांहे प्रथमनी "सव्वपावप्पणा सणो " सुधीनी जे (सगसंपय के०) सात संपदा छे, ते तो (पयतुल्ला के०) पदने तुल्य जाणवि एटले जेटला पद तेटली संपदा पण जाण वी. तथा (अठमी के०) आठमी संपदा तो " मंगलाणं चसव्वेसिं " प ढमं हवइ मंगलं ए बे पदने एकठां कहीयें माटे ए (डुपया के०) बे पद नी जाणवी, तथा अन्य केटलाएक आचार्य एम कहे छे, के " पढमं ह वइ मंगलं " ए (नवक्करअठमी के०) नव अक्षरनी आठमी संपदा त था " एसोपंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो " ए (डुपय के०) बे प दनी अने शोल अक्षरनी (छठी के०) छठी संपदा जाणवी ॥ ३० ॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

पणिवाय अक्खराइं, अठावीसं तहाय इरियाए ॥ नव नउ अ मक्खर सयं, डुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थः-(पणिवाय के०) प्रणिपात दंमकने विषे (अठावीसं के०) अठावीश

(अक्कराइं के०) अक्षर छे, (तहाय के०) तथाच एटले तेमज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे (नवनउअमक्करसयं के०) नवनव ति अक्षरशतं एटले नवाणुयें अधिक एकशो अक्षर जाणवा अर्थात् एक शो ने नवाणुं अक्षर जाणवा, तथा (डुतीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां अने (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ जाणवी ॥३१॥

ए आठ संपदाना पदनी संख्या तथा संपदाना आदि पद कहे छे.

डुग दुग इग चउ इग पण,इगार छग इरिय संपयाइ पया॥
इछा इरि गम पाणा, जे मे एगिंदि अनि तस्स ॥ ३२ ॥

अर्थः—पहेली संपदा (डुग के०) बे पदनी, बीजी संपदा पण (डुग के०) बे पदनी, त्रीजी (इग के०) एकपदनी, चोथी (चउ के०) चार पदनी, पांचमी (इग के०) एकपदनी, छठी (पण के०) पांच पदनी, सातमी (इगार के०) अगीयारपदनी, आठमी (छग के०) छ पदनी जाणवी ॥

हवे ए (इरिय के०) इरियावहीनी सर्व (संपया के०) संपदाउना (आइपया के०) आदिपद एटले प्रथमना पद जे संपदाना धुरियां ते कहे छे. तिहां प्रथम (इछा के०) इछामि ए पहेली संपदानुं पहेलुं पद,(इरि के०) इरियावहियाए ए बीजी संपदानुं पहेलुं पद, (गम के०) गमणागमणे ए त्रीजी संपदानु पहेलुं पद, (पाणा के०) पाणक्कमणे ए चोथी संपदानुं पहेलुं पद, (जेमे के०) जेमेजीवाविराहिआ ए पांचमी संपदानुं पहेलुंपद, (एगिंदि के०) एगिंदिया ए छठी संपदानुं पहेलुं पद, (अनि के०) अनिहया ए सातमी संपदानुं पहेलुं पद, (तस के०) तस्सउत्तरी करणेणं ए आठमी संपदानुं पहेलुं पद जाणवुं ॥ ३२ ॥

॥ हवे ए इरियावहिनी आठ संपदानां नाम कहे छे ॥

अप्नुवगमो निमित्तं, उहे अरहेउ संगहे पंच ॥
जीवविराहण पडि,क्कमण नेयउ तिन्नि चूलाए॥३३॥

अर्थः—अन्युपगम एटले अंगीकार करवुं ते आहीं पापना क्षयनुं जे आलोचना लक्षण कार्य तेनो अंगीकार करवो ते स्वरूप एटला माटे इछामि पडिक्कमिउं ए बे पदनी प्रथम (अप्नुवगमो के०) अन्युपगम संपदा जाणवी.

२ ते अंगीकार कृत वस्तुनें उपजाववाना कारण रूप इरियावहियाए विराहणाए बे पदनी बीजी (निमित्तं के०) निमित संपदा जाणवी.

३ सामान्य प्रकारें प्रायश्चित्त उपजाववा रूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी (उहे के०) उंघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीव हिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन छे.

४ जीवहिंसाना विशेष हेतु रूप एटले विशेषपणे प्राण बीजादिक आक्रमण रूप ते पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग पणग दगमट्टीमक्कडा संताणा संकमणे, ए चार पदनी चोथी (इअरहेउ के०) इतरहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय; माटे विशेष हेतु एवुं नाम जाणवुं.

५ समस्त जीवना परिताप रूप जीवविराधना संग्रह रूप ते जे मे जीवा विराहिया ए एकपदनी (पंच के०) पांचमी (संगहे के०) संग्रह संपदा.

६ एकेंद्रियादिक पांच जीवने देखाडवा रूप जीवभेद ५६३ प्रमुख कथन रूप एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, ए पांच पदनी छठी (जीव के०) जीव संपदा जाणवी.

७ ते जीवादिक भेदने परितापना विराधना रूप ते अभिहयाथी मांडीनें तस्स मिछामि डुक्कडं लगें अगीयार पदनी सातमी (विराहण के०) विराधना संपदा जाणवी.

८ प्रायश्चित्तविशोधनकरण रूप ते तस्सउत्तरी करणेणंथी मांडीने ठामि काउस्सग्गं लगें छ पदनी आठमी (पडिक्कमण के०) प्रतिक्रमण संपदा.

(भेयउ के०) ए भेदथकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी, अने पाछलनी (तिन्नि के०) त्रण संपदा ते इरियावहिनी (चूलाए के०) चूलिकारूप जाणवी ॥ ३३ ॥

हवे नमुत्थुणंनी प्रत्येक संपदाना पदनी संख्या तथा आदिपद कहे छे.

दु ति चउ पण पण पण दु, चउ तिपय सक्कथय संपयाइपया ॥
नमु आइग पुरिसो, लोग अभय धम्मऽप्प जिण सवं ॥ ३४ ॥

अर्थः—पहेली (दु के०) बे पदनी, बीजी (ति के०) त्रण पदनी, त्रीजी (चउ के०) चार पदनी, चोथी (पण के०) पांच पदनी, पांचमी (पण

के०) पांच पदनी, छठी (पण के) पांच पदनी,सातमी (दु के०)बे पदनी, आठमी (चउ के०) चार पदनी अने नवमी (तिपय के०) त्रण पदनी ए (सक्कथय के०) नमुत्थुणंने विषे संपदानां पद कह्यां,ते सर्व मली तेत्रीश जाणवां.

हवे नमुत्थुणंनी (संपया के०) संपदाना (आइपया के०) आदिना एटले पहेला धुरियांनां पद कहे छे. (नमु के०) नमोत्थुणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद जाणवुं,(आइग के०) आइगराणं ए बीजी संपदानुं प्रथम पद, (पुरिसो के०) पुरिसुत्तमाणं ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (लोग के०) लोगुत्तमाणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (अजयके०) अजयदयाणं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (धम्म के०) धम्मदयाणं ए छठी संपदानुं प्रथम पद, (अप्प के०) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद,(जिण के०) जिणाणं जावयाणं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद, अने (सव्व के०) सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं ए नवमी संपदानुं प्रथम पद.

हवे ए शक्रस्तवनी नव संपदाउंनां नाम कहे छे.

थोअव्व संपया उह, ईयरहेऊ वउग तप्हेऊ ॥ सविसेसु
वउग सरूव, हेउ नियसमफलय मुक्खे ॥ ३५ ॥

अर्थः—श्रीअरिहंत जगवंत ते विवेकी जनोयें स्तववा योग्य छे एटला माटे नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवताणं ए बे पदनी पहेली (थोअव्व संपया के०) स्तोतव्य संपदा जाणवी. पछी ते स्तववा योग्यनुं सामान्य हेतु कहेवा माटे आइगराणंथी मांमीने सयंसंबुद्धाणं लगें त्रण पदनी बीजी (उह के०) उघ एटले सामान्यहेतु संपदा जाणवी. पछी ए बीजी संपदाना अर्थने विशेषें दीपावे तेमाटे सामान्यहेतुथी (इयरहेऊ के०) इतरहेतु ते विशेषहेतुरूप त्रीजी संपदा जाणवी, पछी आद्य संपदाना अर्थने विशेषे दीपावे एटले सामान्य स्तवनानो उपयोग तेनुं कहेवुं ते चोथी (उवउग के०) उपयोग संपदा जाणवी. पछी ए उपयोग संपदाना ज अर्थ ने हेतु सद्भावें करी दीपावे ते पांचमी (तद्धेऊ के०) तत् हेतु संपदा जाणवी, अथवा उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पछी एज उपयोग हेतु संपदाना अर्थ गुण दीपाववा निमित्तें अर्थ विशेषें जणावे एटले कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कहेवुं ते [illegible] (सविसेसुवउग के०)

सविशेष उपयोग हेतु संपदा जाणवी,पछी यथार्थ पोताना स्वरूपनुं हेतु प्रकटार्थ देखाडवा रूप सातमी (सरूवहेउ के०) स्वरूप हेतु संपदा जाणवी, तथा पोताने समान फलदायक प्रकटार्थ रूप एटले स्तवना करनारने आपतुल्य करे एवी परम फलदायिनी एटले पोतानी समान परने फलनुं करण एटला माटे आठमी (नियसमफलय के०) निज समफलदनामे संपदा जाणवी,तथा मोक्ष स्वरूप प्रकटार्थ रूप मोक्षपदनुं स्वरूप, एटला माटे नवमी (सुक्खे के०) मोक्ष संपदा जाणवी. जे माटे कह्युं छे के "सवन्नूआइ पढमो, बीउ सिवमयल माइ आलावो ॥ तइउ नमोजिणाणं जिय जयाणं तन्निदिठ्ठो ॥ १ ॥ इत्यावश्यके ॥ ३५ ॥

हवे नमोत्थुणंना अक्षरादिकनी एकंदर सरवाले संख्या कहे छे.

दो सगनउआ वन्ना, नवसं पय तित्तीस सक्कथए ॥
चेइयथयठ संपय, तिचत्त पय वन्न दुसयगुणतीसा ॥ ३६ ॥

अर्थः–(सक्कथए के०) शक्रस्तव जे नमोत्थुणं तेने विषे सर्व मलीने (दोसगनउआ के०) बशेंने सत्ताणुं (वन्ना के०) वर्ण जाणवा अने (नवसं पय के०) नव संपदा जाणवी,तथा (पयतितीस के०) पद तेत्रीश जाणवां.

हवे (चेइयथय के०) चैत्यस्तव एटले अरिहंत चेइयाणंने विषे सर्व मली (अठसंपय के०) आठ संपदा जाणवी अने (तिचत्तपय के०) तेंतालीश पद जाणवां, तथा (वन्न के०) वर्ण एटले अक्षर ते (दुसयगुणतीसा के०) बशें ने उंगणत्रीश जाणवा ॥ ३६ ॥

हवे चैत्यस्तव जे अरिहंत चेइयाणं तेनी प्रत्येक संपदाना पदनुं मान तथा प्रत्येक संपदाना आदिपद एटले धुरियां कहे छे.

दु छ सग नव तिय छ चउ,छप्पय चिइ संपया पया पढमा॥
अरिहं वंदण सिध्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥

अर्थः–पहेली (दु के०) बे पदनी, बीजी (छ के०) छ पदनी, त्रीजी (सग के०)सात पदनी, चोथी (नव के०) नव पदनी, पांचमी (तिय के०) त्रण पदनी, छठी (छ के०) छ पदनी, सातमी (चउ के०) चार पदनी, आठमी (छप्पय के०) छ पदनी जाणवी.

हवे ए (चिइ के०) चैत्यस्तवनी प्रत्येक (संपया के०) संपदानां (पढमा के०) प्रथमना एटले आदिनां धुरीयांनां (पया के०) पद कहे छे. तिहां (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद (वंदण के०) वंदणवत्तियाए ए बीजी संपदानुं प्रथम पद (सिद्धाए के०) सिद्धाए ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (अन्न के०) अन्नत्थऊससिएणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (सुहुम के०) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (एव के०) एवमाइएहिं आगारेहिं ए छठी संपदानुं प्रथम पद, (जा के०) जाव अरिहंताणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, (ताव के०) तावकायं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद ॥ ३७ ॥

हवे ए चैत्यस्तवनी संपदाउनां नाम कहे छे.

अप्नुवगमो निमित्तं, हेउ इग बहु वयंत आगारा ॥
आगंतुग आगारा, उस्सग्गावहि सरूवठ ॥ ३८ ॥

अर्थः—जे अंगीकार करवुं तेने अभ्युपगम कहीयें माटे इहां अरिहंत वांदवानी अंगीकाररूप प्रथम (अप्नुवगमो के०) अभ्युपगम संपदा जाणवी, तथा काउस्सग्ग कया निमित्तें करी करीयें? ते बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी. तथा श्रद्धादिक हेतु वधते वधते करी करियें, केम के श्रद्धादिक कारण विना निष्फल थाय माटें त्रीजी (हेउ के०) हेतु संपदा जाणवी. तथा आगार राख्या विना निरतिचारपणे काउस्सग्ग न थाय, एटला माटें आगार राखवानी अन्नत्थऊससीएणं इत्यादि उश्वासादिकने करवे करी चोथी (इगवयंत के०) एकवचनांत आगार संपदा जाणवी. तथा "सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं" एटले सूक्ष्मनेत्रादिकफुरकवादि मात्र आदिकें करी पांचमी (बहुवयंत आगारा के०) बहुवचनांत आगार संपदा जाणवी. इहां आगारा पद बेहुने जोडवुं, तथा एक सहज बीजो अल्पबाहुल्य एटले एवमाइएहिं एणे करी अग्निस्पर्श, पंचेंद्रिय छेदन, चौरादिनय, सर्पादि, कदाचित् आवी मले तो इत्यादि आगार कह्यां, माटें बहुहेतु आगंतुक नावरूप अथवा अग्न्यादिक उपघात रूप छठी (आगंतुग आगारा के०) आगंतुकागार संपदा जाणवी. तथा जाव अरिहंताणं इत्यादिक काउस्सग्गनो अवधि मर्यादा रूप जे संपदा, ते सात

मी (उस्सग्गाविहि के०) कायोत्सर्गविधि संपदा जाणवी, तथा कायो त्सर्गनुं यथावस्था रूप स्वरूप ते आठमी (सरूव के०) स्वरूप संपदा जा णवी. ए (अठ के०) आठ संपदानां नाम कह्यां ॥ ३७ ॥

हवे नामस्तव एटले लोगस्सादिकने विषे पद आदिकनी संख्यादिक कहे छे.

नामथयाइसु संपय, पयसम अडवीस सोल वीस कमा ॥
अडुरुत्त वन्न दो सठ, डुसय सोलठ नउअ सयं ॥ ३ए ॥

अर्थः–(नामथयाइसु के०) नामस्तवादिकने विषे एटले नामस्तव ते लोगस्स तथा आदिशब्दथकी पुरकरवरदी ते श्रुतस्तव जाणवुं अने सिद्धस्तव ते सिद्धाणं बुद्धाणं जाणवुं. ए त्रण सूत्रने विषे (पयसम के०) पद समान (संपय के०) संपदा जाणवी. एटले जेटलां ए सूत्रोनां पद छे, तेटलां विशामानां स्थानक जाणवां. तिहां लोगस्सनां पद पण (अ डवीस के०) अठावीश अने संपदा पण अठावीश जाणवी. अने पुरकर वरदीनां पद पण (सोल के०) शोल अने संपदा पण शोल जाणवी. त था सिद्धाणं बुद्धाणंना पद पण (वीस के०) वीश अने संपदा पण वी श जाणवी. ए (कमा के०) अनुक्रमें संपदा तथा पद कहेवां. तथा लोग स्सने विषे (अडुरुत्त के०) बीजी वार अणउच्चस्या एवा, (दोसठ के०) बशें ने शाठ (वन्न के०) वर्ण एटले अक्षर जाणवा. तथा पुरकरवरदीना सुअस्स जगवठ पर्यंत (डुसयसोल के०) बशें ने शोल अक्षर जाणवा, अने सिद्धाणं बुद्धाणंना करेमि काउस्सग्गं पर्यंत (अठनउअसयं के०) एकशो ने अठाणुं अक्षर जाणवा ॥ ३ए ॥

पणिहाण डुवन्नसयं, कमेण सग ति चउवीस तित्तीसा ॥ गुणतीस अठवीसा, चउतीसिगतीस बार गुरु वन्ना ॥४०॥ दारं ॥७॥ए॥१०

अर्थः–हवे जावंतिचेइआइं तथा जावंत केवि साहू अने सेवणा आ जवमखंमा लगें जयवीयराय, ए त्रण (पणिहाण के०) प्रणिधान सूत्र छे, तेने विषे (डुवन्नसयं के०) एकशो ने बावन अक्षर जाणवा.

हवे (कमेण के०) अनुक्रमें संयोगीया गुरु एटले जारे अक्षर सर्व सू

आंना कहे छे. तिहां प्रथम नवकारनें विषे ऊा, प्रा, व, हू, क्का, व, प्प, ए (स ग के०) सात अक्षर गुरु एटले जारे जाणवा.

तथा खमासमणने विषे ब्बा, ज्जा, ब, ए (ति के०) त्रण अक्षर गुरु जाणवा. तथा इरियावहिने विषे ब्बा, क्क, क्क, क्क, क्क, त्तिं, ट्टि, क्क, त्ति, द्दि, द्द, स्स, ब्बा, क्क, स्स, त्त, ब्बि, त्त, ब्बी, म्म, ग्घा, ठा, स्स, ग्गं, ए (चउ वीस के०) चोवीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा नमुत्थुणंने विषे त्थु, ब, ऊा, त्त, ब्बि, त्त, ज्जो, क्खु, ग्ग, म्म, म्म, म्म, म्म, म्म, क्क, ट्टी, प्प, ट्ट, न्ना, ऊा, त्ता, व, न्तु, व, क्के, वा, त्ति, द्धि, त्ता, ऊा, स्सं, ट्ट, वे, ए (तित्तीसा के०) तेत्रीश अक्षर गुरु जाणवा. केटला एक ब्बउमाणं पदना बकारने गुरु कहेता नथी अने केटलाएक ट्ट ब, म्म, ए त्रणने गुरु गणीने तेत्रीश गुरु अक्षर करे. तिहां चूलिकानी गाथा गुरु नथी गणता. इत्यादिक बहु मतांतर छे, पण इहां तो संप्रदायागत एक टकार जारे गणीयें छैयें.

तथा अरिहंत चेइयाणं रूप चैत्यस्तवने विषे स्स, ग्गं, त्ति, त्ति, क्का, त्ति, म्मा, त्ति, त्ति, ग्ग, त्ति, ऊा, प्पे, ह्न, स्स, ग्ग, न्न, ब, ड्ड, ग्गे, त्त, ब्बा, ठि, ग्गो, ज्जि, स्स, ग्गो, क्का, प्पा, ए (गुणतीस के०) उंगणत्रीश अक्षर गुरु छे.

तथा लोगस्सरूप नामस्तवने विषे स्स, ज्जो, म्म, ब, त्त, स्सं, प्प, प्प, प्फ, ज्जं, ज्जं, म्मं, ल्लिं, व, ठ, ऊ, ब, त्ति, स्स, त्त, ऊा, ग्ग, त्त, म्म, व्वे, ऊा, द्धि, व, ए (अठवीसा के०) अठावीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा पुरकरवरदीरूप श्रुत स्तवने विषे क्ख, द्धे, म्मा, ऊं, स्स, स्स, स्स, प्फो, स्स, स्स, ल्ला, क्क, स्स, च्चि, स्स, म्म, स्स, प्र, ऊे, न्न, न्न, स्स, द्ध, च्चि, ब, ठि, क्क, चा, म्मो, ट्ट, म्मु, त्त, ट्ट, स्स, ए (चउतीस के०) चोत्रीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा सिद्धाणंबुद्धाणंरूप सिद्ध स्तवने विषे ऊा, ऊा, ग्ग, व, ऊा, क्को, क्का, स्स, ऊ, स्स, ज्जिं, क्खा, स्स, म्म, क्क, ट्टिं, ठ, त्ता, ठ, वी, ठ, ठि, ठा, ऊा, द्धिं, च, म्म, द्दि, ठि, स्स, ग्गं, ए (इगतीस के०) एकत्रीश अक्षर गुरु छे.

तथा प्रणिधान त्रिकनेविषे ट्ट, वा, ब, वे, ग्गा, ट्ठ, द्धि, ऊ, चा, ब, ब, ए(बार गुरुवन्ना के०) बार गुरुवर्ण एटले जारे अक्षर जाणवा ॥

एटले वर्ण संख्या, पदसंख्या अने संपदा मली त्रण द्वार कह्यां, तेनी सा थैंपूर्वें कहेलां सात द्वार मेलवतां मूल दश द्वार कहेवाणां, अने उत्तर जेद १९७० थया. ए सूत्रांना अर्थ सर्व श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी जाणजो. इहां घणो ग्रंथ वधे माटें अर्थ लख्यो नथी ॥ ४० ॥

ए आठमो, नवमो अने दशमो मली त्रणे द्वारना यंत्रनी स्थापना.

सूत्र.	सूत्रांनां नाम.	पदसंख्या.	संपदा	सर्वाक्षर.	गुरुअ	लघुअ
नवकार.	पंचमंगलसुअ०	९	८	६८	७	६१
इच्छामिखमासम०	प्रणिपातछोजसूत्र		०	२८	३	२५
इरियावहि.	पडिक्कमणासूत्र.	३२	८	१९९	२४	१७५
नमोत्थुणं.	शक्रस्तव.	३३	९	२९७	३३	२६४
अरिहंतचेइयाणं.	चैत्यस्तवाध्ययन.	४३	८	२२९	२९	२००
लोग्गस्स.	नामस्तव.	२८	२८	२६०	२८	२३२
पुक्खरवरदीवड्ढे.	श्रुतस्तव.	१६	१६	२१६	३४	१८२
सिद्धाणंबुद्धाणं.	सिद्धस्तव.	२०	२०	१९८	३१	१६७
जावंतिचेइयाइं.	प्रणिधानत्रिक.	अनुक्रमें.	अनु०			
जावंतकेविसाहु.	....					
जयवीयराय.				१५२	१२	१४०
सर्वमली सरवाले....	....	१८१	९७	१६४७	२०१	१४४६

	इरियावहिनीसंपदा	संपदानां पद.	धुरियांनां पद.
१	अभ्युपगमसंपदा.	२	इच्छामि.
२	निमित्तसंपदा.	२	इरियावहियाए.
३	उघसंपदा.	१	गमणागमणे.
४	इतरहेतुसंपदा.	४	पाणक्कमणे.
५	संग्रहसंपदा.	१	जेमेजीवाविराहिया.
६	जीवसंपदा.	५	एगिंदिया.
७	विराधनासंपदा.	११	अभिहया.
८	पडिक्कमणसंपदा.	६	तस्स उत्तरि.

	चैत्यस्तवनीसंपदा.	संपदानांपदसंख्या.	धुरियांनां पद.
१	अभ्युपगमसंपदा.	२	अरिहंतचेश्याणं.
२	निमित्तसंपदा.	६	वंदणवत्तिआए.
३	हेतुसंपदा.	७	सिद्धाए.
४	एकवचनांतसंपदा.	ए	अन्नड़ऊससीएणं.
५	बहुवचनांतसंपदा.	३	सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं
६	आगंतुगागारसंपदा.	६	एवमाइएहिंआगारेहिं
७	कायोत्सर्गावधिसंपदा.	४	जावअरिहंताणं.
०	स्वरूपसंपदा.	६	तावकायं.

	शक्रस्तवनी संपदा.	संपदानां पद,	धुरियांनां पद.
१	स्तोतव्य संपदा.	२	नमोत्थुणं.
२	उंघसंपदा.	३	आइगराणं.
३	इतरहेतुसंपदा.	४	पुरिसुत्तमाणं.
४	उपयोगसंपदा.	५	लोगुत्तमाणं.
५	तद्धेतुसंपदा.	५	अजयदयाणं.
६	सविशेषोपयोगसंपदा.	५	धम्मदेसियाणं.
७	स्वरूपहेतुसंपदा.	२	अप्पडिहयवर०
०	निजसमफलदसंपदा.	४	सवन्नूणं०
ए	मोक्षसंपदा.	३	जिणाणंजावयाणं.

हवे अगीयारमुं पांच दंमकनुं द्वार अने बारमुं पांच दंमकने विषे देव वांदवाना जे बार अधिकार बे, तेनुं द्वार कहे बे.

पणदंमा सक्कड़य, चेइअ नाम सुअ सिद्धड़य इड़ ॥दारं॥११॥
दो इग दो दो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥

अर्थः-(पणदंमा के०) पांच दंमकनां नाम कहे बे. तेमां पहेलुं नमोत्थुणंने (सक्कड़य के०) शक्रस्तव दंमक कहियें. बीजुं अरिहंत चेइयाणंनें (चेइअ के०) चैत्यस्तव दंमक कहियें. त्रीजुं लोग्गस्सने (नाम के०) नामस्तव दंमक कहियें. चोथुं पुक्खरवरदीने (सुअ के०) श्रुतस्तव

दंरूक कहियें. पांचमुं सिद्धाणंबुद्धाणंने (सिद्धत्रय के०) सिद्धस्तव दंरू क कहियें. ए पांच दंरूकना नामनुं अगीयारमुं द्वार कह्युं. सर्व मली उत्तर बोल १०७५ थया ॥

हवे (इत्र के०) ए पांच दंरूकने विषे देव वांदवाना
बार अधिकार छे, तेमनुं बारमुं द्वार कहे छे.

तिहां प्रथम शक्रस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार छे, तथा बीजा अरिहंतचेइयाणंरूप चैत्यस्तवमध्यें (इग के०) एक अधिकार छे, तथा त्रीजा नामस्तव एटले लोगस्सने विषे (दो के०) बे अधिकार छे, तथा चोथा श्रुतस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार छे. पांचमा सिद्धस्तव मध्ये (पंचय के०) पांच अधिकार छे. ए (कमेण के०) अनुक्रमें कहेवा.. सर्व मली चैत्यवंदनने विषे (बारसअहिगारा के०) बार अधिकारो छे. ४१

हवे ए बार अधिकारनां धुरियानां पद एटले आद्यनां पद कहे छे.

नमु जेइअ अरिहं,लोग सव्व पुरक तम सिद्ध जो देवा॥ उ
ज्जिं चत्ता वेआ, वच्चग अहिगार पढम पया ॥ ४२ ॥

अर्थः-(नमु के०) नमोत्थुणं ए पहेला अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जेइअ के०) जेअ अईआ सिद्धा ए बीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, तथा (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए त्रीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (लोग के०) लोगस्स उज्जोयगरे ए चोथा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं. (सव्व के०) सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं ए पांचमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (पुरक के०) पुरकरवरदीवड्ढे ए छठा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (तम के०) तमतिमिर पमल विद्धंसणस्स ए सातमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सिद्ध के०) सिद्धाणं बुद्धाणं ए आठमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जोदेवा के०) जो देवाणविदेवो ए नवमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (उज्जिं के०) उज्जिंत सेलसिहरे ए दशमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं (चत्ता के०) चत्तारि अठ दस दोय, ए अगीयारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (वेआवच्चग के०) वेआवच्चगराणं ए बारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, ए बार (अहिगार के०) अधिकारोना (पढमपया के०) पहेलां पद एटले आदिनां पद धुरियां जाणवां ॥ ४२ ॥

ए बार अधिकार मांहेला कया अधिकारें कोने वांदवा? ते कहे छे.

पढम अहिगारे वंदे, भावजिणे बीयएउ दव्वजिणे ॥
इगचेइय ठवणजिणे, तइय चउत्थंमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

अर्थः—नमुत्थुणंथी मांमीने जियभयाणं पर्यंत (पढमअहिगारे के०) पहेला अधिकारने विषे जे तीर्थंकर थया, केवलज्ञान पाम्या छे, एवा (भाव जिणे के०) भावजिनने एटले भावतीर्थंकरने (वंदे के०) हुं वांदुं छुं, तथा जे अईआ सिद्धा ए गाथायें (बीयएउ के०) बीजो अधिकार छे, तेने विषे वली जे आगल थाशे एवा (दव्वजिणे के०) द्रव्यजिनने हुं वांदुं छुं. ए बे अधिकार नमुत्थुणंना जाणवा. तथा (तइय के०) त्रीजा अधिकारें (इगचेइय ठवणजिणे के०) एक चैत्यना स्थापनाजिनने हुं वांदुं छुं, एटले एक देरासरमांहेली सर्व प्रतिमाउंने वंदन करवुं ए अरिहंत चेइयाणंने पाठें जाणवो. ए सूत्रांमां एकज अधिकार छे. तथा लोगस्स उज्जोयगरे रूप (चउत्थंमि के०) चोथा अधिकारने विषे (नामजिणे के०) श्रीऋषभादिक नाम जिनने हुं वांदुं छुं ॥ ४३ ॥

तिहुअण ठवणजिणे पुण, पंचमए विहरमाण जिण छट्ठे ॥
सत्तमए सुयनाणं, अट्ठमए सव्व सिद्ध थुई ॥ ४४ ॥

अर्थः—(पुण के०) वली सव्वलोए अरिहंतचेइयाणंरूप (पंचमए के०) पांचमा अधिकारने विषे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप (तिहुअण के०) त्रण भुवनने विषे जे शाश्वता अने अशाश्वता एवा (ठवणजिणे के०) स्थापना जिन छे ते प्रत्यें हुं वांदुं. तथा पुक्खरवरदीवड्ढेनी पहेली गाथा रूप (छट्ठे के०) छठ्ठा अधिकारने विषे अढीद्वीपमध्यें श्रीसीमंधर स्वाम्यादि (विहरमाणजिण के०) विचरता भाव जिनप्रत्यें वांदुं छुं. तथा तमतिमिरपडल इहांथी मांमीने सुअस्स भगवउ पर्यंत (सत्तमए के०) सातमा अधिकारने विषे (सुअनाणं के०) श्रीश्रुतज्ञानप्रत्यें हुं वांदुं. तथा सिद्धाणं बुद्धाणं ए गाथा रूप (अट्ठमए के०) आठमा अधिकारने विषे तीर्थ अतीर्थादिक पन्नर भेद वाला एवा (सव्वसिद्धथुई के०) सर्व सिद्धनी स्तुति जाणवी ॥ ४४ ॥

तिह्नाहिव वीरथुइ, नवमे दसमे य उज्जयंत थुई ॥ अठवा
याइ इगदिसि, सुदिठि सुर समरणा चरिमे ॥ ४५ ॥

अर्थः–तथा जो देवाणविदेवो अने इक्कोवि नमुक्कारो ए बे गाथा रूप (नवमे के०) नवमा अधिकारने विषे आ वर्त्तमान (तिह्नाहिव के०) तीर्थना अधिपति ठाकुर जे श्री (वीर के०) वीर जगवान् तेनी (थुइ के०) स्तुति जाणवी. तथा उज्जितसेलसिहरे ए गाथा रूप (दसमे के०) दशमा अधिकारने विषे (अ के०) वली (उज्जयंत के०) श्रीरैवतकाचल पर्वतने विषे श्रीनेमिनाथ जगवाननी (थुई के०) स्तुति जाणवी. तथा "चत्तारि अठदस दोय वंदिया" ए गाथा रूप (इगदिसि के०) अगीयारमा अधिकारने विषे (अठवायाइ के०) अष्टपादादिकने विषे श्रीजरतेश्वरें करावेली चोवीश जिन प्रतिमानी स्तुति जाणवी. तथा वेयावच्चगराणं ए गाथारूप (चरिमे के०) ठेला बारमा अधिकारने विषे (सुदिठि के०) सम्यग्दृष्टि (सुर के०) देवताने (समरणा के०) स्मरवारूप स्तुति जाणवी ॥ ४५ ॥

आ ठेकाणें अगीयारमा अधिकारने विषे चत्तारि अठदस इत्यादि गाथामां घणा प्रकारें देव वांद्या ठे ते मांहेला केटला एक इहां लखीयें ठेयें. संजवादिक चारजिन दक्षिणदिशें, तथा सुपार्श्वादिक आठ जिन पश्चिमदिशें, तथा धर्मादि दशजिन उत्तरदिशें, तथा श्रीरुषज्ञ अने अजित ए बे जिन पूर्वदिशें. एवं चोवीश जिन वांद्या ठे. तथा बीजे अर्थें प्रथमना चारने आठ गुणा करीयें, तेवारें बत्रीश थाय. अने वचला दशने बे गुणा करियें, त्यारें वीश थाय, ए बे आंक मेलवीयें तेवारें बावन थाय, ते बावन चैत्य, नंदीश्वरद्वीपें ठे, तेने वांद्या ठे.

तथा त्रीजे अर्थें (चित्त के०) ठांड्या ठे (अरि के०) वैरी जेणें एवा अठदस एटले अढार अने बे पाठला मेलवीयें त्यारें वीश तीर्थंकर थाय ते श्रीसमेतशिखरें सिद्ध थया तेने वांद्या. अथवा विचरता जिन उत्कृष्टे कालें एक समयें जन्मथी वीश होय तेमने वांद्या.

तथा चोथे अर्थें अठने दश अढार थाय, तेनी साथें वीशनो चोथो जाग पांच थाय, ते मेलवीयें, तेवारें त्रेवीश थया. ते एक श्रीनेमीश्वर विना त्रेवीश जिन श्रीशत्रुंजयें समवसख्या ठे, माटें तेने वांद्या.

पांचमे अर्थें दशने आठ गुणा करीयें, तेवारें एंशी थाय, तेने बमणा करतां एकशो ने साठ थाय,ते उत्कृष्टकालें पांच महाविदेहें विचरे,तेने वांद्या.

बठे अर्थें आठ अने दश मली अढार थाय, तेने चार गुणा करतां ब होंतेर थाय. ए त्रैकालिक त्रण चोवीशी नरतादिक क्षेत्रनी वांदी.

सातमे अर्थें चारने आठ युक्त करीयें, तेवारें बार थाय तेने दश गुणा करीयें, तेवारें एकशोने वीश थाय, तेने बमणा करतां बशें ने चालीश थाय ते नरतादिक दश क्षेत्रनी दश चोवीशी वांदी.

आठमे अर्थें मूल चार बे, तथा वली आठने आठ गुणा करतां चोशठ थाय, तथा दशने दश गुणा करतां एकशो थाय. तेनी साथें पाबला बे मेल वतां १७० जिन थाय. ते उत्कृष्ट कालें विचरता जिनने वांद्या.

नवमे अर्थें अनुत्तर, ग्रैवेयक, विमानवासी अने ज्योतिषी ए चार स्था नक ऊर्ध्वलोकें बे तिहांनां चैत्य तथा आठ व्यंतरनिकाय,दश नवनपति,ए अधोलोकनां चैत्य तथा मनुष्यलोकमां तो शाश्वती अने अशाश्वती प्र तिमा ए त्रण लोकनां चैत्य वांद्यां. एवी रीतें ए गाथा मध्ये सर्व तीर्थ वंदना लक्षण अर्थ घणा बे, ते सर्व वसुदेव हिंम प्रमुख ग्रंथोथी जोइ ले वा. अहींयां विस्तार घणो थाय माटें लख्या नथी ॥४५॥

नव अहिगारा इह ललि, अविबरा वित्तिआइ अणुसारा ॥
तिन्नि सुयपरंपरया, बीयउ दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥

अर्थः–(इह के०) ए बार अधिकारमांथी पहेलो, त्रीजो, चोथो, पां चमो, बहो, सातमो, आठमो, नवमो, अने बारमो, ए (नव अहिगारा के०) नव अधिकार ते (ललिअविबरा के०) ललितविस्तरा नामें नाष्य नी (वित्तिआइ के०) वृत्ति आदिकना (अणुसारा के०) अनुसारथकी जाणवा. अने (बीयउ के०) बीजो अधिकार, जेअ अईआ सिद्धा तथा (दसमो के०) दशमो अधिकार उज्जिंतसेल ए गाथोक्त तथा (इगार समो के०) अगीयारमो अधिकार चत्तारि अठदस ए गाथोक्त एटले जेअ अईआ, उद्यंत अने चत्तारि, ए (तिन्नि के०) त्रण अधिकार, ते (सुयपरंप रया के०) श्रुतनी परंपराथी एटले जेम सिद्धांतनुं व्याख्यान बे, तेम तथा गीतार्थ संप्रदायथी जाणवा ॥ ४६ ॥

आवस्सय चुस्मीए, जं नणियं सेसया जहिज्ञाए ॥
तेणं उयंताइवि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥

अर्थः-(जं के०) जेम (आवस्सयचुस्मीए के०) आवश्यक सूत्रनी चूर्णीने विषे तथा प्रतिक्रमण चूर्णीमध्ये (नणियं के०) कह्युं ठे. जे उद्यंतादिक (सेसया के०) शेष अधिकार ते (जहिज्ञाए के०) यथेज्ञायें जाणवा. (तेणं के०) ते कारण माटें ए (उद्यंताइवि के०) उद्यंतसेलसिहरे इत्यादिक गाथायें जे पण (अहिगारा के०) अधिकारो ते सर्व (सुयमया के०) श्रुतमय जाणवा. (चेव के०) चकार पादपूर्णार्थ ठे अने एव शब्द निश्चयवाचक ठे ॥ ४७ ॥

बीउ सुयज्ञयाइ, अठ्ठ वन्निउ तहिं चेव ॥ सक्क
ज्ञयंते पढिउ, दव्वारिहवसरि पयडज्ञो ॥ ४८ ॥

अर्थः-अने "जे अईआसिद्धा जे नविस्संति"इत्यादि गाथायें जे द्रव्य जिन वंदन रूप (बीउ के०) बीजो अधिकार ते पण (सुयज्ञयाइ के०) श्रुतस्तवादि एटले श्रुतस्तवनी आदिमां आवेली पुस्करवरदी नामनी गाथाने विषे ठे ते (अठ्ठ के०) अर्थथकी तो (तहिं के०) ते श्रुतस्तव मांहेज (चेव के०) निश्चे श्रीआवश्यकचूर्णीने विषे (वन्निउ के०) वर्णितो एटले वर्णव्यो ठे. जेम के उक्कोसेणं सत्तरिएणंजिणयर सयं जहन्न एणं वीसं तिज्ञयराए, एताय एगकालेणं नवंति अईआ अणागया अणंता ते तिज्ञयरा नमंसंति ॥ ए पाठ ठे. अहीं कोइ शंका करे, के त्यां नले तेम नणो, परंतु आंही लखेला पाठें करीने शुं? तो त्यां कहे ठे,के (सक्कज्ञयंते के०) शक्रस्तवना अंतने विषे जे (पढिउ के०) पठितः एटले कह्यो ठे अर्थात् पूर्वाचार्योंयें शक्रस्तवना अंतमां स्थापन करेलो ठे,ते (दव्वारिहवसरि के०) द्रव्य अरिहंत वांदवाना अवसरें एटले नाव अरिहंत वंदनानंतर द्रव्य अरिहंत वंदनानुं अनुक्रमें प्राप्तपणुं ठे,माटें ए आद्य अधिकारमां पण नवमी संपदाने विषे कांइक नणवाथकी तेनुं विस्तारार्थपणुं ठे तेम (पयडज्ञो के०) प्रकटार्थो एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवो. आ प्रकारें निर्युक्ति अने चूर्णीनां वचन ते प्रमाणज ठे, जे माटें कह्युं ठे ॥ ४८ ॥

असढाइन्नण वज्जं, गीअब अवारिअंति मज्झबा ॥ आ
यरणा विहु आण, त्ति वयणाउ सु बहु मन्नंति ॥ ४९ ॥

अर्थः—जे आचारणा (अणवज्जं के०) अनवद्य होय एटले पापर हित होय, अने वली ते (गीअबअवारिअं के०) गीतार्थें अवारित होय एटले बीजा कोइ गीतार्थ पुरुषें तेने वारी नहीं होय (इति के०) एवा (मद्यबा के०) मध्यस्थ राग द्वेष रहित (असढाइन के०) अशठ पंडित, गीतार्थ, पुरुषो तेणे जे आचस्यो होय तो तेवा गीतार्थनी करेली जे (आयरणावि के०) आचारणा ते पण (हु के०) निश्चें श्रीभगवंतनी (आण के०) आज्ञाज कहीयें (इति वयणाउ के०) एवुं वचन छे, ते माटे (सु के०) सुष्ठु एटले भला अथवा सुविहित अशठ गीतार्थनी करेली आचरणाने पण (बहुमन्नंति के०) गीतार्थ जन घणुं माने ॥४९॥ ए वार अधिकारनुं बारमुं द्वार कह्युं, इहां सुधी उत्तर बोल १९७७ थया ॥

हवे चार वांदवा योग्यनुं तेरमुं आदे देइने बीजां पण द्वार कहे छे.

चउ वंदणिज्ज जिण मुणि,सुय सिद्धा ॥ दारं (॥१३॥)
इह सुराइ सरणिज्जा ॥ दारं ॥ १४ ॥ चउह
जिणा नाम ठवण, दव भाव जिण भेएणं ॥ ५० ॥

अर्थः—(चउवंदणिज्जा के०) चार वंदनीयक एटले चार वांदवा योग्य कह्या छे, ते कया कया? तेनां नाम कहे छे. एक (जिण के०) जिन तीर्थंकर अरिहंत, बीजा (मुणि के०) मुनिराज साधु, त्रीजो (सुय के०) श्रुत सिद्धांत प्रवचन अने चोथा (सिद्धा के०) सिद्ध भगवान् जे मोक्ष प्राप्त थया ते जाणवा. ए चार वंदनीकनुं तेरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १९९१ थया ॥ १३ ॥

हवे एक स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कहे छे. (इह के०) ए श्रीजिन शासनमांहे सम्यग्दृष्टि अधिष्ठायिक (सुराइ के०) देवताप्रमुख (सरणिज्जा के०) स्मरणीय छे एटले स्मरवा योग्य जाणवा. ए स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १९९२ थया ॥ १४ ॥

हवे चार प्रकारना जिननुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

(चउह जिणा के०) चार प्रकारना जिन कह्या छे ते कहे छे. एक (नाम के०) नामजिन, बीजा (ठवण के०) स्थापना जिन, त्रीजा (दव्व के०) द्रव्यजिन, चोथा (भाव के०) भावजिन ए चार (जिणभेएणं के०) जिनना भेदें करीने चार जिन जाणवा ॥ ५० ॥

हवे ए चार प्रकारना जिननुं स्वरूप चार निक्षेपे कहे छे.

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंद पडिमाउ ॥ दव्व जिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था॥५१॥ दारं ॥१५॥

अर्थः—प्रथम (जिणनामा के०) श्रीऋषभादिक जिननां जे नाम छे ते मने ते ते नामें बोलावीये छैयें तेने (नामजिणा के०) नाम थकी जिन कहीयें, (पुण के०) वली बीजा (जिणंदपडिमाउ के०) श्रीजिनेंद्रनी जे शाश्वती अशाश्वती प्रतिमाउ छे तथा पगलां छे ते सर्वने (ठवणजिणा के०) स्थापना जिन कहीयें, त्रीजा जेणे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे एवा श्रीकृष्ण,श्रेणिकादिक ए सर्व तथा जे तेज भवमां तीर्थंकर पदवी पामशे पण दीक्षा लइने ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी पाम्या त्यांसुधी तेपण (जिणजीवा के०) जिनना जीव कहेवाय, तेने (दव्वजिणा के०) द्रव्यथकी जिन कहियें. चोथा जे केवल ज्ञान पामीने (समवसरणत्था के०) श्रीसमवसरणने विषे स्थित थया, बेठा थका धर्मोपदेश आपे तेने (भावजिणा के०) भावथकी जिन जाणवा ॥५१॥ (दारं के०) ए चार प्रकारें जिनना नामनुं पन्नरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १०७६ थया ॥

हवे चार थोयोनुं शोलमुं द्वार कहे छे.

अहिगय जिण पढमथुई, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स ॥ वेयावच्च गराणउ,उवउगत्थं चउथ थुई ॥५२॥ दारं ॥१६॥

अर्थः—जेनी आगल देव वांदीयें एवी जे नामे मूलनायकनी प्रतिमा होय एटले प्रस्तुत अंगीकर्यो जे चोवीश जिन मांहेलो कोइ श्रीऋषभादिक एक जिन तेने (अहिगयजिण के०) अधिकृतजिन कहीयें तेनी (पढमथुई के०) प्रथम स्तुति ते एक जिननीज जाणवी. तथा (बीया

के०) बीजी स्तुति तो (सवाण के०) सर्व तीर्थंकरोनी साधारण भक्ति रूप जाणवी. तथा (तइअ के०) त्रीजी स्तुति ते (नाणस्स के०) ज्ञाननी एटले श्रुत सिद्धांत प्रवचननी जाणवी. तथा श्रीजिनशासनना रखवाला (वेयावच्चगराण के०) वैयावृत्यना करनार एवा सम्यग्दृष्टि देवताउनी (तु के०) वली (उवउगहं के०) उपयोग मनःस्मरणने अर्थे (चउत्थथुई के०) चोथी स्तुति जाणवी ॥ ५२ ॥ ए चार थुइनुं शोलमुं द्वार कह्युं ॥ उत्तर बोल २००० थया ॥

हवे आठ निमित्तनुं सत्तरमुं द्वार कहे छे.

पाव खवणह इरिआई, वंदणवत्तिआइ छ निमित्ता ॥ पवयण
सुर सरणत्थं, उस्सग्गो इअ निमित्तठं ॥५३॥ दारं ॥ १७ ॥

अर्थः—गमनागमनथी उपना जे (पाव के०) पाप ते (खवणह के०) खपाववाने अर्थे (इरिआई के०) इरियावहि प्रथम पडिक्कमवी ते प्रथम निमित्त जाणवुं. तथा श्रीतीर्थंकरने (वंदणवत्तिआइ के०) वंदणवत्तियादि (छ के०) छ (निमित्ता के०) निमित्तें काउस्सग्ग करवो, जेम के प्रथम वंदणवत्तिआए एटले श्रीजिनराजने वांदवाथी जे लाभ थाय, ते काउस्सग्गमां मुजने लाभ थाउ. बीजो पूअणवत्तिआए एटले केशर चंदनादिक धूप प्रमुखें परमेश्वरने पूजवाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ. त्रीजो सक्कारवत्तिआए एटले सत्कार ते श्रीजिनेश्वरने आभरणादि चढाववाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ. चोथो सम्माणवत्तिआए एटले सन्मान ते श्रीजिनना स्तवनगुण कहेवाथी जे लाभ थाय, ते मुझने काउस्सग्गमां लाभ थाउ, पांचमो बोहिलाभवत्तिआए एटले आगले भवें समकेतनो लाभ थाय, ते निमित्तें काउस्सग्ग करुं. छठुं निरुवसग्ग एटले निरुपसर्ग ते जन्म जरा मरणादि उपसर्ग टालवा निमित्तें काउस्सग्ग करुं. ए छ निमित्त अने एक प्रथम कह्युं एवं सात थयां. तथा आठमुं (पवयणसुर के०) प्रवचनना अधिष्ठायक सुर एटले देवता तेने (सरणहं के०) स्मरवाने अर्थे (उस्सग्गो के०) एक नवकारनो काउस्सग्ग चैत्यवंदनने विषे करवो (इअ के०) ए (निमित्तठं

के०) निमित्त आठ जाणवां. ते देववंदनने विषे होय. ए आठ निमित्तनुं सत्तरमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २००८ थया ॥ ५३ ॥

हवे बार हेतुनुं अढारमुं द्वार कहे छे.

चउ तस्स उत्तरीकरण, पमुह सद्धाइ आय पण हेउ ॥ वेया वच्चगरताइ, तिन्नि इअ हेउ बारसगं ॥ ५४ ॥ दारं ॥ १८ ॥

अर्थः—तिहां प्रथम देव वांदतां पाप टले छे (तस्स के०) ते पाप टालवाना (उत्तरीकरण के०) उत्तरीकरण (पमुह के०) प्रमुख (चउ के०) चार छे, ते कहे छे. एक तस्सउत्तरीकरणेणं एटले पापने आलोववे करीने अर्थात् पापकर्म निर्घातन करवे करी, बीजो पायछित्तकरणेणं एटले अन्नि हया पदथी उपन्युं जे प्रायश्चित्त ते लेवे करी, त्रीजो विसोहिकरणेणं एटले राग द्वेषनुं टालवुं अतिचार टालवानी विशुद्धि करवे करी, चोथो विसल्ली करणेणं एटले माया मात्सर्यादि वर्जवे करी मन वचन कायानी निःश ल्यत्व त्रिकाल अतीत अनागत वर्त्तमानने विषे अरिहंतादिक पट्पद साथें पापकर्म टालवे काउस्सग्गनुं फल आपे ए चार उत्तरीकरणादि निमित्त क ह्यां तथा (सद्धाइआ के०) श्रद्धादिक (य के०) वली (पणहेउ के०) पांच हेतु छे तेनां नाम कहे छे, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणु प्पेहाए एटले एक श्रद्धा, बीजी मेधा एटले बुद्धि, त्रीजी धृति एटले चित्तस्वस्थता, चोथी धारणा ते यथा किंचित् शिक्षा ग्रहणता पांचमी अनुपेक्षा ते तदेकाग्रता, ए सर्व पांचे वानां वधते थके पांचहेतु जाणवा तथा (वेयावच्चगरताइ के०) वेयावच्चकरत्वादिक वेआवच्चगराणं, संतिग राणं, सम्मदिठिसमाहिगराणं ए (तिन्नि के०) त्रण हेतु करे, ते कहे छे. एक वैयावच्चकर सम्यग्दृष्टि देव, बीजो संतिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने रोगादिकनी शांति करवे करीने, त्रीजो समाहिगराणं एटले सम्यक्दृष्टिने समाधि उपजाववे करीने ए त्रण हेतुयें देव संजारवा एटले चार उत्तरीक रण तथा पांच श्रद्धादिक अने त्रण वैयावच्चकर (इअ के०) ए (बारसगं के०) द्वादशकं एटले बार (हेउ के०) हेतु चैत्यवंदनने विषे जाणवा एटले बार हेतुनुं अढारमुं द्वार पूरुं थयुं अने उत्तर बोल २०२० थया ॥५४॥

हवे शोल आगारनुं उंगणीशमुं द्वार कहे छे.

अन्नबयाइ बारस, आगारा एवमाइया चउरो ॥ अगणि पणिंदि छिंदण, बोही खोभाइ ड्क्कोय ॥५५॥ दारं ॥ १९ ॥

अर्थः-(अन्नबयाइ बारस आगारा के०) अन्नबयादि बार आगार एटले अन्नबउससिएणंथी मांमीने सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं पर्यंत बार आगार जाणवां. तेनां नाम कहे छे. पहेलो उंचो श्वास लेवे, बीजुं नीचो श्वास लेवे, त्रीजुं खांसी ऊध्रस आवे, चोथुं छींक आवे, पांचमुं बगासुं आवे, छठुं उड्कार ते ऊर्ध्ववात आवे,सातमुं अधोवात आवे,आठमुं भमरि आवे,नवमुं वमन पित्त मूर्छा आवे,दशमुं सूक्ष्म अंगस्फुरकणथी,अगीयारमुं खेलसिंघाण नामक मेल संचारथी, बारमुं दृष्टि प्रमुख संचारथी काउस्सग्ग न भांगे.

तथा (एवमाइया चउरो के०) एवमादिक चार आगार कहे छे एक (अगणि के०) अग्निनो उपद्रव उपने थके तिहांथी पूंजतो अलगो जाय अथवा दीवा प्रमुखनी उजेई थातां तथा अग्निनो स्पर्श थतो होय तेवारें काउस्सगमांहे कपडाथी शरीर ढांके, अथवा पूंजतो अलगो जइ रहे, बीजुं (पणिंदिछिंदण के०) पंचेंड्रियछिंदन पंचेंड्रियनुं छेदन थतुं होय अथवा मूषकादिक पंचेंड्रिय जीव, ते स्थापनाचार्य अने पोतानी वचमां जाता होय, तेवारें पूंजतो अलगो जइ रहे, तो काउस्सग्गभंग न थाय. त्रीजुं (बोहीखोभाइ के०) बोधिक्षोभादि ते जिहां राजा अथवा चोरादिक मनुष्य तेना पराभवें करी पछी धर्मनी क्षोभणा थाय माटें काउस्सग्गमांहे तिहांथी अलगो जइ रहे तो काउस्सग्ग भंग न थाय, चोथुं (ड्क्कोअ के०) ड्क्क ते साप प्रमुखना डंकना भयें करी अथवा साप प्रमुख पासें आवतो होय तो तेना भयथी अलगुं जवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग भंग न थाय, ए शोल आगारनुं उंगणीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०३६ थया ॥ ५५ ॥

हवे काउस्सग्गना उंगणीश दोष त्यागवा, तेनां नामनुं वीशमुं द्वार कहे छे.

घोडग लय खंभाई,मालु ड्डी निअल सबरि खलिण वहू॥ लंबुत्तर थण संजइ, भमुहंगुलि वायस कविठे ॥ ५६ ॥

अर्थः—प्रथम घोडानी परें एक पग ऊंचो राखे, वांको पग राखे, ते (घोडग के०) घोटक दोष, बीजो जेमवायराथी वेलडी कंपे तेम शरीर ने धूणावे, ते (लय के०) लता दोष, त्रीजो थांभा प्रमुखने ओठिंगे रहे, ते (खंभाई के०) स्तंभादि दोष,चोथो मेडा उपरने माले माथुं लगावी रहे ते (माल के०) माल दोष, पांचमो गाडानी ऊधिनी पेरें अंगुठा तथा पानी मेलवी पग राखे, ते (उद्धी के०) उधि दोष, छठो नेउलमां पग नाख्यानी परें पग मोकला राखे, ते (नियल के०) निगड दोष, सातमो नागी भिल्लडीनी परें गुह्यस्थानकें हाथ राखे ते (सबरि के०) शबरि दोष, आठमो घोडाना चोकडानी परें हाथ रजोहरणें राखे, ते (खलिण के०) खलिण दोष, नवमुं नवपरिणीन वहूनी पेरें माथुं नीचुं राखे ते (वहू के०) वधूदोष, दशमो नाभिनी उपरें अने ढीचणथी नीचे जानुं उपरें लांबुं वस्त्र राखे ते (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर दोष, ए. दोष यति आश्रयी जाणवो. केमके डुंटीथी चार अंगुल नीचें अने ढीचणथी चार अंगुल उपर यतिने चोलपट पहेरवो कह्यो छे. अगीयारमुं डांस म साना भयें अथवा अज्ञानथी लज्जाथी स्त्रीनी परें हैयुं ढांकी राखे, हृदय आछादे, ते (थण के०) स्तनदोष, बारमो शीतादिकने भयें साधवीनी परें बेहु खंभा ढांकी राखे एटले समग्र शरीर आछादी राखे ते (संजइ के०) संयतिदोष, तेरमो आलावो गणवाने अर्थें संख्या करवाने अंगुली तथा पांपणना चाला करे, ते (भमुहंगुलि के०) भमुहंगुली दोष, चउद मो वायसनी पेरें आंखना डोला फेरवे, ते (वायस के०) वायस दोष, पंदरमो पहेरेलां वस्त्र ते यूकां तथा प्रस्वेदें करी मलिन थवाना भयने लीधे कोठनी परें लुगडुं गोपवी राखे ते (कविठ्ठे के०) कपित्थ दोष ॥५६॥

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चइऊ दोस उस्सग्गे ॥ लंबुत्तर थण संजइ, न दोस समणीए सवहु सड्डीणं ॥ ५७ ॥ दारं ॥२१

अर्थः—शोलमो यक्षावेशितनी परें माथुं धूणावे, ते (सिरकंप के०) शिरःकंपदोष, सत्तरमो मुंगानी पेरें हू हू करे, ते (मूअ के०) मूकदोष, अढारमो आलावो गणतो थको मदिरानी परें बडबडाट करे, ते (वारुणि के०) मदिरा दोष, ओगणीशमो वानरनी पेरें अरडुं परडुं जोवे, ओष्ठ पुट

चलावे, ते (पेह के०) प्रेष्य दोष (इति के०) ए प्रकारें ए उंगणीश दोष ते (उस्सग्गे के०) काउस्सग्गने विषे जाणवा. तेने (चइज्ज के०) ठांमे. ए उंगणीश दोषमां केटलाएक भमूह अने अंगुली बे जूदा दोष करे बे, तेवारें वीश थाय, तथा एक (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर, बीजो (थण के०) स्तन अने त्रीजो (संजइ के०) संयति ए त्रण (दोस के०) दोष ते (समणीण के०) श्रमणीने (न के०) न होय, केम के एनुं वस्त्रावृत शरीर होय, पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करते मस्तक उघाडुं राखे एटले शोल दोष साधवीने लागे, अने ए त्रण दोषने (वहु के०) वधू दोषें करी (स के०) सहित करियें तेवारें लंबुत्तरादि चार दोष थाय. ते (सड्ढीणं के०) श्राविकानें न होय, शेष पंदर दोष श्राविकाने लागे ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो एटले काउस्सग्गना दोषनुं वीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५५ थया ॥ ५७ ॥

हवेकाउस्सग्गना प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार तथा स्तवननुं बावीशमुं द्वार कहे

इरि उस्सग्ग पमाणं, पणवीसुस्सास अठ सेसेसु ॥ दारं ॥२१॥
गंभीर महुर सद्दं, महत्थजुत्तं हवइ थुत्तं ॥ ५८ ॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थः-(इरिउस्सग्ग के०) इरियावहिना काउस्सग्गनुं (पमाणं के०) प्रमाण (पणवीसुस्सास के०) पच्चीश श्वासोश्वासनुं जाणवुं. एटले संप्रदायें "चंदेसु निम्मलयरा" पर्यंत यावत् पच्चीश पदनुं काउस्सग्ग कराय बे, अने (सेसेसु के०) शेष काउस्सग्ग जे देव वांदता स्तुति काउस्सग्ग ते (अठ के०) आठ श्वासोश्वास प्रमाण जाणवो. केम के संप्रदायें एक नवकारनी संपदा आठ बे माटें. ए काउस्सग्ग प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५६ थया.

हवे श्रीवीतरागनुं स्तवन केहवा प्रकारें कहेवुं? तेनुं बावीशमुं द्वार कहे बे. (गंभीर के०) मेघनी पेरें गंभीर अने (महुरसद्द के०) मधुर शब्द बे जिहां अने वली (महत्थजुत्तं के०) महाअर्थयुक्त भक्ति, ज्ञान, वैराग्य अने आत्मानंदादि दशायुक्त एवुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तुत एटले स्तवन (हवइ के०) होय. ए स्तवन भणवानुं बावीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५७ थया॥ ५८ ॥

हवे चैत्यवंदन एक दिवसमां केटलीवार करवुं ? तेनुं त्रेवीशमुं द्वार कहे छे.

पडिक्कमणे चेइय जिमण, चरिम पडिक्कमण सुअण पडिबो
हे ॥ चिइवंदण इअ जइणो,सत्तउ वेला अहोरत्ते ॥ ५ए ॥

अर्थः–एक (पडिक्कमणे के०) प्रजातने पडिक्कमणे पच्चरकाण करतां देव वांदवाने विषे विशाललोचन कही चैत्यवंदन करे, बीजुं (चेइअ के०) चैत्यगृहमां जगवंत आगले चैत्यवंदन करे, त्रीजुं (जिमण के०) जमती वखत पच्चरकाण पारे, तेवारें चैत्यवंदन करे, चोथुं (चरिम के०) छे हे लो जमीने उठ्या पछी एटले आहार करी रह्या पछी दिवसचरिम पच्चरकाण करतां चैत्यवंदन करे, पांचमुं (पडिक्कमण के०) संध्याने पडिक्कमणे नमोस्तु वर्द्धमानादि चैत्यवंदन करे, छहुं (सुअंण के०) सूती वखतें शयन संथारा पोरिसी जणावतां चैत्यवंदन करे, सातमुं (पडिबोहे के०) पाछली रात्रे जाग्या पछी कुसुमिण डुसुमिणकाउस्सग्ग कस्या पछी किरियानी वेलायें चैत्यवंदन करे, (इअ के०) ए कह्या जे (सत्तउवेला के०) सात वखतना (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करवां, ते (अहोरत्त के०) एक अहोरात्रमध्ये (जइणो के०) यतिने होय ॥ ५ए ॥

हवे श्रावकने एक अहोरात्रमां केटलां चैत्यवंदन होय ? ते कहे छे.

पडिक्कमिउ गिहिणोवि हु, सगवेला पंचवेल इअरस्स ॥
पूआसु ति संझासु अ, होइ ति वेला जहन्नेणं ॥ ६० ॥

अर्थः–एक प्रजाते अने बीजो सांझे ए बे वार (पडिक्कमिउ के०) पडिक्कमणुं करता एवा (गिहिणोवि के०) गृहस्थने पण (हु के०) निश्चें यतिनी पेरें (सगवेला के०) सात वार चैत्यवंदन थाय. तथा जे एक वार पडिक्कमणुं करता होय एवा गृहस्थने (पंचवेल के०) पांचवार चैत्यवंदन थाय, तेमां एक पोरिसि सांजलतां, एक क्रिया करतां अने त्रणवार देव वांदता मली पांच थाय. अने तेथी (इअरस्स के०) इतर एटले जे पडिक्कमणुं नथी करता एवा गृहस्थने तो प्रजात, सांज अने मध्यान्हे ए (तिसंझासुअ के०) त्रण संध्यायें (पूआसु के०) पूजाने विषे (जहन्नेणं के०) ए जघन्यथी पण गृहस्थने माटें (तिवेला के०) त्रणवार चै

स्ववंदना (होइ के०) होय. ए सात प्रकारना चैत्यवंदननुं त्रेवीशमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २००६४ थया ॥ ६० ॥

हवे ए पूर्वोक्त सर्व बोल जो आशातनानो परिहार करे, तो सफल थाय, माटें चोवीशमुं दश आशातनानुं द्वार कहे छे.

तंबोल पाण नोयण,वाणह मेहुन्न सुअ्रण निठवणं॥
मुत्तुच्चारं जूअं, वज्जे जिणनाह जगई ए॥ ६१ ॥

अर्थः–प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे छे. जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो आय एटले लाज तेनी शातना एटले खंमना करवी, तेने आशा तना कहीयें ते जिनघरमां न करवी ते आशातना जघन्यथी दश प्रकारें छे, तेनां नाम कहे छे. प्रथम (तंबोल के०) तांबूल ते सोपारी, नागरव ल्लीना पान अने पंचसुगंधादिकनुं खावुं, बीजी (पाण के०) पाणी पीवुं, त्रीजी (नोयण के०) नोजन करवुं, चोथी (उवाणह के०) उपानह एटले मोजडी पगरखादिक पहेरवां, पांचमी (मेहुन्न के०) मैथुन ते का मचेष्टा करवी, बही (सुअ्रण के०) सुवुं ते शयन करवुं, सातमी (निठव णं के०) थूंकवुं, श्लेष्म नाखवुं आठमी (मुत्त के०) मात्रा एटले लघु नीत करवी, नवमी (उच्चारं के०) उच्चार ते वडीनीतिनुं करवुं, दशमी (जूअं के०) जूवटे रमवुं, ए दश आशातना ते (जिणनाह के०) जिन नाथ एटले नगवानना देरासरनी (जगईए के०) जगतीनेविषे एटले देरा सरनी कोटडीमांहे पेसतां ए दशवानां (वज्जे के०) वर्जवां ए जघन्यथी दश आशातना महोटी छे, तेनां नाम कह्यां ॥ ६१ ॥

हवे उत्कृष्टथी चोराशी आशातना त्यजवी जोइयें तेनां नाम इहां प्रसंगें लखीयें बेयें. १ खेलश्लेष्म, २ द्यूतादिक्रीडा,३ कलह, ४ धनुर्वेदादिक क ला, ५ कोगला नाखवा, ६ तांबूल पूगीफल पत्रादि नक्षण, ७ तांबूल खावाना कूचा, तथा उजार नाखवो, ८ गालो देवी, विरुद्ध बोलवुं, ९ लघुनीत वडीनीत करवी, वातनिर्गमनादि पवित्र करणादि, १० शरीर धोवन, ११ केश समारवा, १२ नख समारवा, १३ रुधिरादि नाखवा, १४ शेकेला धान्य प्रमुख खावां, १५ त्वचाचामादिक नाखवां, १६ औषधा दिकें करी पित्त वमन करे,१७ वमन करे, १८ दंतधावनादि करे,१९ बीसा

हवे चैत्यवंद,२० बकरी,गज,अने अश्वादिकनुं दमन बंधन करे,२१ दांत, २२ ...२ नख, २४ गंडस्थल, २५ नासिका, २६ कान, २७ मस्तका पडिते सर्वनो मेल ढांके, २८ सूवे, २९ मंत्र जूतादि ग्रह तथा राजादि कार्येना आलोच विचार करे, ३० वृद्ध पुरुषनो समुदाय तिहां आवी म ले, ३१ नामां लेखां करे, ३२ धनना जाग प्रमुख मांहोमांहे वहेंचे, ३३ पोतानुं द्रव्यजंमार करी तिहां थापे, ३४ पग उपर पग चडावीने बेसे, ३५ ढाणां थापे, ३६ वस्त्र सुकवे. ३७ दाल ढंढणीयादिक उगवे, ३८ पा पड शालेवां करे,३९ वडीआदि देइ कचर चीजडी प्रमुख सर्व शाक जाति उगवे, ४० राजादिकना जयथी देरासर मध्यें नासीने ढुपी रहे. ४१ शो कादिकें रुदन आक्रंद करे. ४२ स्त्री,जक्त, राज्य,देशादिकनी विकथा करे, ४३ शर, बाण, तथा बीजा पण अधिकरण शस्त्र घडे, ४४ गाय, बलद, प्रमुख थापे, ४५ टाढें पीड्यो अग्नि सेवे, ४६ अन्नादिकनुं रांधवुं करे, ४७ नाणादिक पारखे, ४८ अविधियें निसिही कह्या विना प्रवेश करे, ४९ ढत्र, ५० उपानह, ५१ शस्त्र, ५२ चामर न मूके. एटले ए चार वानां साथें लइ प्रवेश करे, ५३ मननी एकाग्रता न करे, ५४ अ ज्यंग एटले शरीरें तैलादिक चोपडे, ५५ सचित्त पुष्पफलादिक न मूके,५६ अजीव वस्तु जे हार मुद्रादिक वस्त्रादिक ते बाहेर मूकी कुशोजावंत थइ देरासरमां प्रवेश करे,५७ जगवंत दीठे अंजलि न जोडे,५८ एक शाटक उत्तरासंग न करे ५९ मुकुट मस्तकें धरे, ६० मैली पाघडी उपर वस्त्र बो कानी घोस पेच प्रमुख न ढोडे,६१ कुसुमना सेहरा,ढोगां प्रमुख माथाथी न मूके, ६२ होड पाडे, ६३ गेडीदडे रमत करे, ६४ प्राहुणादिकने जु हार करे, ६५ जांड चेष्टा, गाल; काख पूंठ वजावे, ६६ रेकार तुकारादि तिरस्कारनां वचन बोले, ६७ लेवा देवा आश्रयी धरणुं मांडे, ६८ रण संग्राम करे, ६९ वाल बूटा होय ते समा करे, जूआ करे, माथुं खणे, ७० पलांठी पग बांधे, ७१ चांखडीयें चडे, ७२ पग पसारी बेसे, ७३ पुड पुडी देवरावे, ७४ पगनो मेल जाटके, ७५ वस्त्रादिक जाटके, ७६ माकड यूकादिक वीणे, तथा तेने त्यांज नाखे, ७७ मैथुनक्रीडा करे, ७८ जमण करे, ७९ व्यापार क्रयविक्रय करे, ८० वैदुं करे, ८१ शय्या समारे, ८२ गुह्य लिंगादिक उघाडे, तथा समारे,८३ बाहुयुद्ध करे तथा कुकडादिकना

थुंकू करावे, ७४ वर्षाकालादिकने विषे प्रणालीथी पाणी संग्रहे अंघोल स्नान करे, तथा पाणी पीवाना जाजन मूके, ए उत्कृष्टथी चोराशी आशा तना जिन जुवनमां वर्जवी.

हवे मध्यम बहेंतालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहे छे. १ मूत्र, २ पुरीष, ३ पाणी, ४ उपानह, ५ शयन, ६ अशन, ७ स्त्रीप्रसंग, ८ तंबोल ए थुंकवुं, १० जूवटुं रमवुं, ११ जूवटादिकनुं जोवुं, १२ पलांठी वालवी, १३ पग पसारवा, १४ परस्पर विवाद, १५ परिहास, १६ मत्सर, १७ सिंहासन परिजोग, १८ केश शरीर विजूषा, १ए छत्र, २० खड्ग, २१ मुकुट, २२ चामरनुं राखवुं, २३ धरणुं करवुं, २४ हास्यादि विलास परि हास, २५ विटसाथें प्रसंग करवो, २६ मुखकोश न करवो, २७ मलिन शरीर राखे, २८ मलिन वस्त्र पहेरे, २ए अविधियें पूजा करे, ३० मननुं एकाग्रपणुं न करे, ३१ सचित्त द्रव्य बाहिर न मूकी आवे, ३२ उत्तरा संग न करे, ३३ अंजलि न करे, ३४ अनिष्ट, ३५ हीन, कुसुमादि पूजो पकरण राखे, ३६ अनादर करे, ३७ जिनेश्वरना प्रत्यनीकने वारे नहीं, ३८ चैत्यद्रव्य खाय, ३ए चैत्यद्रव्यनी उपेक्षा करे, ४० छती सामर्थ्यें पूजावंदनादिकें मंदता करे, ४१ देवद्रव्यादि जक्षक साथें व्यापार मित्राइ सगाइ करे, ४२ तेहवा वडेरानी मुख्यता करे, तथा तेनी आज्ञायें प्रवर्त्ते, ए बहेंतालीश मध्यम आशातना वर्जवी. एटले ए चोवीशमुं आशातनानुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल २०७४ पूर्ण थया ॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे छे.

इरि नमुक्कार नमुत्थुण, अरिहंत थुई लोग सव्व थुइ पुक्ख ॥
थुइ सिद्धा वेआ थुइ, नमुत्थु जावंति थय जयवी ॥ ६७ ॥

अर्थः—प्रथम (इरि के०) इरियावहि संपूर्ण पडिक्कमि पछी चैत्यवंदननो आदेश मागी (नमुक्कार के०) नमस्कार कही पछी (नमुत्थुण के०) नमु त्थुणं कहे. पछी उन्नो थइ (अरिहंत के०) अरिहंत चेइयाणं कही काउ स्सग्ग करी एक तीर्थंकरनी (थुई के०) स्तुति कहे. पछी (लोग के०) लोगस्स कहीयें पछी (सव्वथुइ के०) सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी सर्व तीर्थंकरनी बीजी स्तुति कहियें, पछी (पुक्ख

के०) पुक्करवरदी कही काउस्सग्ग करी श्री सिद्धांतनी त्रीजी (थुइ के०) स्तुति कहेवी पछी (सिद्धा के०) सिद्धाणं बुद्धाणं (वेश्रा के०) वेयाव च्चगराणं इत्यादिक कही काउस्सग्ग करी अधिष्ठायिक देवोनी चोथी (थुइ के०) स्तुति कही पछी नीचें बेसीने (नमुत्थु के०) नमुत्थुणं संपूर्ण क हीने (जावंति के०) जावंति चेइआइं जावंत केवि साहु कही नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कही (थय के०) स्तवन कहीने, संपूर्ण (जयवी के०) जयवीयराय कहीयें. ए देव वांदवानो विधि कह्यो ॥ ६२ ॥

हवे यद्यपि कोइ प्राणी एटला बोल तथा एवो विधि न जाणतो होय तो पण आ कहेला आठ बोल तेमां होय तेने नक्तिवंत कहीयें. जेमाटे सं बोध प्रकरणमध्यें कह्युं छे ॥ नत्ति बहुमाणोवन्न, संजलण आसायणाइ प रिहारो ॥ पडिणीय संगवज्जण, सइ सामत्ते तउज्जुणणं ॥१॥ विहिजुंजण मस्स वण, मवही वायाण विहि पडिसेहो ॥ सिद्धाए इय अडगुण, जुत्तो संपुन्न विहिजुत्तो ॥ २ ॥

ए बे गाथानो नावार्थ कहे छे. एक नक्ति ते अंतरंग राग, वीजुं बहु मान ते बाह्य लोकोपचार विनयादि गुण. त्रीजो वर्णवाद यशोवादनुं बो लवुं. चोथो आशातनादिकनो परिहार, पांचमो तेमना प्रत्यनीकनी साथें संग वर्जवो. छठ्ठो छती सामर्थ्यें विघ्ननुं टालवुं, सातमो आगलाने विधि मां जोडवुं, आठमो अवर्णवाद न सांनलवापूर्वक अविधिनो निषेध क रवो अने विधिनो प्रतिसेवन करवो, एवा आठ गुण विशुद्धयुक्त ते सर्वो पाधि विशुद्ध संपूर्ण विधि युक्त कहीयें ॥ २ ॥

सव्वोवाहि विसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे ॥
देविंदविंद महिअं, परमपयं पावइ लहुसो ॥ ६३ ॥

अर्थः—एम (सव्वोवाहिविसुद्धं के०) सर्वोपाधि विशुद्ध जेम होय (ए वं के०) एम एटले सर्व श्रीजिनधर्म संबंधिनी चिंता तेणे करी निर्दोष प्रकारें शुद्ध श्रद्धायें करी (जो के०) जे नव्य प्राणी (देवे के०) श्रीदे वाधिदेवने (सया के०) सदा सर्वदा (वंदए के०) वांदे ते नव्य प्राणी नवनयरूप पद जिहां नथी एवो (परमपयं के०) परमपद एटले मोक्ष रूप पद ते प्रत्यें (लहुसो के०) शीघ्र उतावलो (पावइ के०) पामे. ते

परम पद कहेवुं छे? तो के (देविंद के०) देवना इंद्र तेमना (विंद के०) समूह एटले इंद्रोने समूहें जेने (महियं के०) अर्चितं एटले पूज्युं एवुं छे. एमां ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरियें पोतानुं नाम पण सूचव्युं छे ए श्रीचैत्यवंदनभाष्यनुं वार्त्तिक संक्षेपथी कह्युं,अने विस्तारथी तो श्रीआवश्यकनिर्युक्ति तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्त्यादिकथी जाणवुं. इति श्रेयः ॥ इति श्रीदेववंदनभाष्यं बालावबोधसहितं संपूर्णम् ॥ ६३ ॥

हवे ए श्रीदेवाधिदेवने विधि वांदवाना फलना कहेवावाला ते श्रीगुरु छे माटे तेमने पण भक्ति विनयें करी विधि पूर्वक वंदना करवा थकी सकल आगमनां रहस्य पामीयें. ए श्रीगुरुनें वांदवानां पण घणां फल आगममांहे कह्यां छे ॥ यदुक्तं ॥ वंदणएणं भंते जीवे किं जणइ, गोयमा वंदणएणं जीवे नीयागोयं खवेइ,उच्चागोयं णिबंधइ. साहग्गंचणं अपडिलेहियं आणाफलं निवित्तेइ दाहिण भावच्च जणय इति ॥ तेणे प्रसंगें आव्यो जे गुरुवंदनाधिकार ते हवे कहे छे.

अथ

बालावबोध सहित श्रीगुरुवंदन भाष्य प्रारंभः

गुरुवंदण मह तिविहं, तं फिट्टा छोभ बारसावत्तं ॥
सिर नमणाइसु पढमं, पुन्न खमासमण दुगि बीअं ॥१॥

अर्थः–(अह के०) अथ शब्द ते मंगलादिकारें छे,तथा प्रथम प्रारंभने कारणे अथ शब्दें करी चैत्यवंदनभाष्य कह्या पछी हवे गुरुवंदन भाष्य कहीयें छैयें. (तं के०) ते (गुरुवंदणं के०) गुरुवंदन (तिविहं के०) त्रण प्रकारें छे तेमां पहेलुं (फिट्टा के०) फेटा वंदन,बीजुं (छोभ के०) थोभवंदन, त्रीजुं (बारसावत्तं के०) द्वादशावर्त्त वंदन, तिहां (सिरनमणाइसु के०) मस्तक नमाडवादिकने विषे आदि शब्द थकी अंजलिकरण ते हाथ जोडवादिक जाणवा. ते (पढमं के०) पहेलुं फेटा वंदन जाणवुं. तथा (पुन्नखमासमणदुगि के०) पूर्ण पंचांग बे खमासमणा देवे करीने एटले बे हाथ, बे गोठण अने एक मस्तक ए पांच अंग नमाववा रूप ते (बीयं के०) बीजुं थोभवंदन जाणवुं ॥ १ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के थोभवंदनें तथा द्वादशावर्त्त वंदने प्रथम एक वार वांदीने फरी बीजी वार शे हेतुयें वांदीयें छेयें? त्यां आचार्य उत्तर आपे छे.

जह दूउ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पछा ॥
वीसज्जिउवि वंदिअ, गछइ एमेव इछ दुगं ॥ २ ॥

अर्थः–(जहदूउ के०) जेम दूत पुरुष छे ते (रायाणं के०) राजाने. (नमिउं के०) नमिने (कज्जंनिवेइउं के०) कार्य निवेदन करे वली (पछा के०) पाछो राजायें (वीसज्जिउवि के०) विसर्ज्यो थको पण (वंदिअ के०) वांदीने (गछइ के०) जाय (एमेव के०) एनी पेरें (इछ के०) इहां गुरुवंदनने विषे पण वंदननुं (दुगं के०) द्विक जाणवुं ॥ २ ॥ अने द्वादशावर्त्त वंदनें तो बेहु वांदणे मलीने आवश्यक आवर्त्तादि बोल नीपजे छे, ते माटें बेहु वांदणानी जोडीयें एकज वंदन कहेवाय छे ॥

हवे वांदणां देवानुं कारण शुं? ते कहे छे.

आयरस्सउ मूलं, विणउ सो गुणवउ अ पडिवत्ती॥
सा य विहि वंदणाउ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ३ ॥

अर्थः–जे माटे श्रीसर्वज्ञप्रणीत जे (आयरस्स के०) आचार तेनो (उ के०) वली (मूलं के०) मूल जे छे, ते (विणउ के०) विनय छे (सो के०) ते विनय केवी रीतें होय ? ते कहे छे. (गुणवउ के०) गुणवंत गुरुनी (अ के०) वली (पडिवत्ती के०) प्रतिपत्ति एटले सेवा करवी जाणवी (सा के०) ते भक्ति (च के०) वली (विहिवंदणाउ के०) विधियें करीने वांदवाथकि थाय ते (विही के०) विधि (इमो के०) आ आगल (बारसावत्ते के०) द्वादशावर्त्त वंदनने विषे कहेशे ॥ ३ ॥

हवे ए त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन केम होय? ते कहे छे.

तइयं तु छंदण दुगे, तछ मिहो आइमं सयल संघे॥
बीयं तु दंसणीण य, पयठिआणं च तइयं तु ॥४॥

अर्थः–(तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन ते (तु के०) वली (छंदणदुगे के०) बे वांदणां देवे करीने होय,एटले बे वांदणां देवे करी थाय, इहां छंदण शब्द वंदनवाचक जाणवो. (तछ के०) ते पूर्वोक्त त्रण वांदणां

मां (आइमं के०) आदिम एटले पहेलुं फेटावंदन जे छे, ते साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध (सयलसंघे के०) समस्तश्रीसंघें म ली (मिहो के०) मिथो एटले मांहोमांहे परस्पर तेवा तेवा अवसरने विषे करवुं होय त्यारें थाय, अने (बीयं के०) बीजुं जे थोजवंदन छे, ते (तु के०) निश्चें वली सुसाधु एवा (दंसणीए के०) दर्शनीयनेज अर्थें होय, एटले एक गछगत, बीजो अनुयोगी, त्रीजो अनियतवासी, चोथो गुरुसेवी. पांचमो आयुक्त जे संयममार्गमां सावधान एवा गुणवंत यतिने ए वांदणुं देवाय, तथा (य के०) चकारथी, तथा विधिविशिष्ट कार्यने विषे लिंगमात्रधारी पण जो सम्यक्त्वदर्शनवंत होय, तो ते पण छोजवंदने वंदनीय होय. तथा (तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन जे छे ते (तु के०) वली आचार्य, उपाध्याय, गुणवंत गीतार्थादिक एवा (पयछिआ णं के०) पदप्रतिष्ठित जे होय तेमने (च के०) निश्चें होय ॥ ४ ॥

हवे ए वांदणांनां पांच नाम छे, ते कहे छे.

वंदण चिइ किइ कम्मं, पूआकम्मं च विणयकम्मं च ॥
कायवं कस्स व के,ण वावि काहेव कइ खुत्तो ॥ ५ ॥

अर्थः—एक (वंदण के०) वंदन कर्म अने अभिवादन स्तुतिरूप, अर्द्धावन तकाय करवी, ते शरीर मस्तकादिकें अवनत तथा कर्मथकी जलां कर्म बंधाय एटला माटें बीजुं (चिइ के०) चितिकर्म, त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म वांदणुं, (च के०) वली जलां मन, वचन अने कायानी चेष्टानुं जे कर्म क रवुं, ते माटें चोथुं (पूआकम्मं के०) पूजाकर्म कहियें, तथा विनयनुं करवुं ते माटें पांचमुं (विणयकम्मं के०) विनयकर्म कहीयें, ए पांच प्रकारें वंदन (च के०) वली (कायवं के०) करवुं एटले पांच प्रकारें वांदणां देवां ते (कस्स के०) केने अर्थें देवां? (व के०) वली (केणवावि के०) केहने वादणां देवां? अपि शब्द निश्चयार्थमां छे. (काहेव के०) केवारें वांदणां देवां? (कइखुत्तो के०) केटली वार वांदणां आपीयें? ॥ ५ ॥

कइउणयं कइसिरं, कइहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं ॥
कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस किरईवा ॥ ६ ॥

अर्थः—वांदणाने विषे (कइउणयं के०) केटला अवनत करवा, (क

इसिरं के०) केटली वार मस्तक नमाडवुं, (कइहि के०) केटला (व के०) वली (आवस्सएहिं के०) आवश्यकें करीने (परिसुद्धं के०) प रिशुद्ध थको तथा (कइदोसविप्पमुक्कं के०) केटला दोषें करी विप्रमुक्त एटले रहित थके (कीस के०) शामाटें (किरई के०) करी (किइक म्मं के०) कृतिकर्म वांदणां दीजें? वा शब्द पुनर्वाचक छे ॥ ६ ॥ ए पां चमी अने छठी बे गाथा आवश्यक निर्युक्तिमां कही छे ते इहां कही ॥

हवे त्रण गाथायें करी वंदनानां बावीश द्वार कहे छे.

मूलदार गाहा ॥ पण नाम पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गप ण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेहठ कार णया ॥७॥ आवस्सय मुहणंतय, तणुपेह पणिस दोस ब त्तीसा ॥छ गुण गुरु ठवण दुग्गह, छवीसस्कर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥ पय अडवन्न छठाणा, छ गुरु वयणा आसायण ति त्तीसं ॥ दुविहि दुवीसदारेहिं, चउसया बाणउइठाणा ॥ ए ॥

अर्थः–(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी गाथाउ जाणवी. पहेलुं वांदणां नां (पणनाम के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (पणाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां पांच उदाहरण दृष्टांत द्रव्य अने ज्ञावथी कहेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०) अयोग्य एवा पांच पास छादिक कहेशे, चोथुं वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा आचार्या दिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासें वांदणां न देवरावीयें एवा (चउअ दाया के०) चार जण वांदणांना अदाता कहेशे, छठुं जेनी पासें वांद णां देवरावीयें एवा (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेशे, सा तमुं (पणनिसेहा के०) पांच स्थानकें वांदणानो निषेध करवो एटले वांद णां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअणिसेह के०) चार स्थानकें वांदणा नो अनिषेध करवो एटले चार स्थानकें वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांद णां देवानां (अठकारणया के०) आठ कारण कहेशे ॥ ७ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक साचववां, अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुखनंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडिलेहणा करवी, ए त्रणे बानां (पणिस के०)

पच्चीश पच्चीश करवां ते कहेशे,पणिस शब्द सर्वने जोडवो.तेरमुं वांदणां दे तां (दोसबत्तीसा के०) बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां देतां (बगुण के०) ब गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात् गुरु न होय तेवारें सद्भाव अने असद्भाव रूप (गुरुठवण के०) गुरुनी स्था पना करवी ते कहेशे, शोलमुं वांदणां देतां (डुग्गह के०) बे अवग्रह सा चववा,ते कहेशे,सत्तरमुं वांदणाना सूत्रने विषे (डुबवीसस्कर के०) बशें ने बवीश अक्षर बे, तेम (गुरुपणीसा के०) गुरु अक्षर पच्चीश बे ते कहेशे ए

अढारमुं वांदणानां सूत्रांने विषे (पयअडवन्न के०) पद अठावन बे ते कहेशे, उंगणीशमुं वांदणां देतां शिष्यने प्रश्न पूबवालक्षण वीशामानां (बठाणा के०) ब स्थानक बे ते कहेशे, वीशमुं वांदणां देतां प्रश्नोत्तर रूप (बगुरुवयणा के०) ब गुरुनां वचन बे,ते कहेशे, एकवीशमुं वांद णां देतां गुरुनी (आसायणतित्तीसं के०) तेत्रीश आशातना न करवी ते नां नाम कहेशे, बावीशमुं वांदणाने विषे (डुविहि के०) बे प्रकारनो वि धि कहेशे. एम वांदणाना (डुवीसदारेहिं के०) बावीशद्वारें करीने सर्व मली (चउसयाबाणउश्ठाणा के०) चारशेंने बाणुं स्थानक थाय ॥ए॥

अंक	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर नेद.	शर वालो	अंक	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर नेद.	शर वालो.
१	वंदननाम.	५	५	१२	शरीरपडिलेहण.	२५	१२०
२	दृष्टांत.	५	१०	१३	वांदणांना दोष.	३२	१५२
३	वांदवानेअयोग्य.	५	१५	१४	वांदणांना गुण.	६	१५०
४	वांदवानेयोग्य.	५	२०	१५	गुरु स्थापना.	१	१५ए
५	वांदणांना अदाता.	४	२४	१६	अवग्रह.	२	१६१
६	वांदणांना दाता.	४	२०	१७	अक्षरनी संख्या.	२२६	३०७
७	निषेधनां स्थानक.	५	३३	१०	पदनी संख्या.	५०	४४५
०	अनिषेधनांस्थानक	४	३७	१ए	स्थानक.	६	४५१
ए	वांदणांनां कारण.	०	४५	२०	वांदणांमांगुरुवचन.	६	४५७
१०	आवश्यक.	२५	७०	२१	गुरुनी आशातना.	३३	४ए०
११	मुहपत्तिपडिलेहण.	२५	एए	२२	विधि.	२	४ए२

हवे पूर्वोक्त बावीश द्वारमां पहेलुं पांच नामनुं द्वार कहे छे.

पडिदार गाहा ॥ वंदणयं चिइकम्मं, किइकम्मं विणयकम्म पुअ कम्मं ॥ गुरु वंदण पण नामा, दवे भावे डुहोहेण॥१०॥ दारं ॥१॥

अर्थः–(पडिदारगाहा के०) प्रतिद्वारनी गाथा कहे छे.प्रथम(वंदणयं के०) वंदनकर्म ते अभिवादन स्तुति रूप जाणवुं. बीजुं(चिइकम्मं के०) चितिकर्म ते रजोहरणादि उपकरण विधि सहितपणे कुशलकर्मनुं करवुं जाणवुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिकें अवनमन करवुं. चोथुं (पुअकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारें विशेष उद्यमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दवेभावे के०) एक द्रव्यथकी वांदणां अने बीजां भावथकी वांदणां एम (डुह के०) बे प्रकारें (उहेण के०) उंघेन एटले सामान्यप्रकारें जाणवां ॥१०॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे छे.

सीयलय खुड्डुए वीर, कन्ह सेवग डु पालए संबे ॥
पंचे ए दिठंता, किइकम्मे दव भावेहिं॥११॥दारं ॥२॥

अर्थः–प्रथम वंदन कर्मउपर द्रव्यवंदन अने भाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर (खुड्डुए के०) खुल्लकाचार्यनो दृष्टांत जाणवो. त्रीजा कृतिकर्म उपर (वीरकन्ह के०) वीरा शालवीनो अने कृष्ण महाराजने दृष्टांत जाणवो. चोथा पूजाकर्म उपर (सेवग डु के०) राजाना बे सेवकोनो दृष्टांत जाणवो.पांचमा विनयकर्म उपर (पालए संबे के०) श्रीकृष्णमहाराजना पुत्र पालक अने साम्बनो दृष्टांत जाणवो (ए के०) ए (पंचे के०) पांच (दिठंता के०) दृष्टांत ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणाने विषे (दवभावेहिं के०) द्रव्य भावें करीने जाणवा ॥११॥ हवे ए पांचे दृष्टांतोनी कथा कहे छे.

हस्तिणाउर नयरना वज्रसिंह राजानी सौभाग्यमंजरी राणीने शीतलनामा पुत्र हतो,अने शृंगारमंजरी नामे पुत्री हती. ते कंचनपुर नगरें विक्र

मसेन राजाने परणावी, अनुक्रमें शीतलपुत्र राजा थयो, तेणें धर्मघोष सूरि पासेंथी दीक्षा लीधी, पढी विज्ञातसिद्धांत गीतार्थ थइ, आचार्यपद पाम्या. हवे तेनी जगिनीनें चार पुत्र सकलकलामां निपुण थया जाणी तेमनी माता निरंतर पोताना पुत्र आगल जाइनी प्रशंसा करे अने कहे के धन्य कृतपुण्य पृथिवीमांहे एक तमारो मातुल ढे, के जेणें राज जार ढांमी दीक्षा लीधी? एवी प्रशंसा सांजली ते चारे पुत्र संवेग पणुं पाम्या. पढी स्थविरपासें दीक्षा लइ बहुश्रुत थइ गुरुने पूढी पोताना मामा शीतलाचार्यने एक पुरें आव्या सांजली तेने वांदवाने अर्थें गया. तिहां जातां विकाल वेलायें गाम बाहेर एक देवलमां रह्या. मांहे पेसतां एक श्रावकने जणाव्युं के अमारा मातुलने कहेजो जे जाणेज साधु आव्या ढे. हवे ते चारे जाणेजने रातें शुजध्यानथी केवलज्ञान उपज्युं. प्रजातें तेमनुं अनागमन जाणी मातुल आव्या, तेहने अनादर करता जाणी कषाय दंमकमां आवते दंमक थापी इरियापथिका प्रतिक्रमी इव्यथी वंदन कीधुं, तेवारें ते बोल्या अहो इव्यवंदने कषाय कंमक वधते वांद्या, परंतु जाववंदने कषायोपशांतियें वांदो, ते सांजली मामोजी बोल्या तमें केम जाण्युं? तेवारें जाणेज बोल्या के अमें अप्रतिपाती ज्ञानें करी जाण्युं. ते सांजली मामोजी मनमां विचारवा लाग्या के अहो में केवलीनी आशातना करी, एम विचारी कषायस्थानकथी निवर्त्त्या अने ते चारे केवलीने वांदवा लाग्या, अनुक्रमें चोथा केवलीने वांदतां मामाने पण केवलज्ञान उपनुं. ए शीतलाचार्यने प्रथम इव्यवंदन पढी जाववंदनकर्म थयुं. ए प्रथम उदाहरण ॥

हवे बीजा चितिकर्म उपर क्षुल्लकनो दृष्टांत कहे ढे. जेम एक क्षुल्लक जला लक्षणवालानें, आचार्यें अंत समयें पोताने पदें स्थाप्यो, गीतार्थ साधु पासें जणे, ते पण विशेषथी जक्ति साचवे. एकदा समयें मोहनीय कर्मना उदयथी जग्नपरिणामी थयो; पढी साधु जिक्षायें गये थके बाहेर जूमिनेविषे निकल्यो पढी एक वनने विषे एक दिशें जातां थकां, तिलक, अशोक चंपकादि विविधवृक्ष तिहां हता तेम ढतां एक शमी एटले खीजडीनो वृक्ष तेनुं कोइक पूजन करतो हतो ते देखी पूजक प्रत्यें पूढ्युं, के तमे ए कंटकवृक्षनें केम पूजो ढो? तेणे कह्युं के अमारा वडिलोयें पूर्वें ए वृक्षने पूज्युं ढे माटें अमें पण पूजीये ढैयें. ते वचन सांजलीने क्षुल्लकें विचार्युं जे आ

शमी एटले जांखरांना वृक्ष सरिखो हुं बुं; तेने उत्तम वृक्ष समान गुण वंत लोक पूजे ठे. अने महारामां श्रमणपणुं नथी; मात्र रजोहरणादि चितिकर्मगुणे करी मुझने पूजे ठे, एम विचारी, पाठो आवी, साधुनी पासें आलोयणा लई, उजमाल थयो. एम एने पूर्वें द्रव्य चितिकर्म हतुं, पठी नावचितिकर्म उत्पन्न थयुं. ए बीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे त्रीजा कृतिकर्म उपर वीरा शालवी अने श्रीकृस्नुं उदाहरण कहे ठे. श्रीनेमिनाथ नगवान् द्वारिकायें समोसस्या तेवारें श्रीकृस्नें सर्वसाधुउने द्वादशावर्त वांदणे वांद्या, एने नावकृतिकर्म कहीयें, अने श्रीकृस्नने रूडुं मनववानें अर्थें वीरा शालवीयें पण वांद्या एने द्रव्यकृतिकर्म कहीयें. एना संबंधनो विस्तार आवश्यकवृत्तिथी जाणवो. ए त्रीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे चोथा पूजाकर्म उपर बे सेवकनो दृष्टांत कहे ठे. जेम एक राजाना बे सेवक हता ते गामनी सीमा निमित्तें विवाद करता राजपंथें जातां हता, मार्गमां साधु देखीने प्रशस्त मन, वचन अने कायायें करी एकें कह्युं के "साधौ दृष्टे ध्रुवा सिद्धिः" एटले साधु दिठे ठते निश्चयें कार्यसिद्धि थाय, एमां संशय नथी, एम कही एकाग्र चित्तें साधुने वांद्या. अने बीजे सेवकें उलटी हांसी रूपें व्यवहार मात्रें तेने अवनमन कस्युं, पठी राजद्वारें गये थके पहेला सेवकनो जय थयो, अने बीजानो पराजय थयो एम एकनें द्रव्यथी पूजाकर्म अने बीजानें नावथी पूजाकर्म थयुं; ए चोथुं उदाहरण.

हवे पांचमा विनयकर्मने विषे पालक अनव्य अने सांबनो दृष्टांत कहे ठे. श्रीनेमिनाथ नगवान् द्वारिका नगरीयें समोसस्या, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के जे श्रीनेमीश्वर नगवाननें सर्वथी पहेलुं जई वंदन करशे, तेने महारो पट्ट तुरंगमविशेष आपीश, ते सांजली तुरंगमने लोनें प्रथम रात्रि ठतां पण पालकें आवीने वांद्या, ते द्रव्यथकी वंदन जाणवुं. अने त्यां सांब कुमारें नावथकी वांद्या ठे, ते नाववंदन जाणवुं. ए पांचमुं उदाहरण कह्युं. ए पांच दृष्टांतनुं बीजुं द्वार थयुं, उत्तर बोल दश थया ॥ ११ ॥

हवे पासत्थादिक पांच अवंदनीयनुं त्रीजुं द्वार कहे ठे.

पासत्थो उस्सन्नो, कुसील संसत्तउ अहाठंदो ॥ दुग दुग ति दुगणेग विहा, अवंदणिज्जा जिण मयंमि॥१२॥दारं॥३॥

अर्थः—जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी पासें रहे ते प्रथम (पासन्नो के०) पासन्नो जाणवो तथा जे साधु सामाचारीने विषे प्रमाद करे ते बीजो (उस्सन्नो के०) उस्सन्नो जाणवो. तथा जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी विराधना करे ते त्रीजो (कुसील के०) कुशीलीयो जाणवो. तथा जे वैरागी मले तो तेनी साथें पोतें पण वैरागी जेवो बनी बेसे अने जो अनाचारी मले तो तेनी साथें पोतें पण अनाचारी बनी बेसे, ते चोथो (संसत्तउ के०) संसक्त जाणवो तथा जे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा विना पोतानी इछायें प्रवर्त्ते, पोतानी इछायें प्ररूपणा करे, ते पांचमो (अहाछंदो के०) यथाछंदो जाणवो. ए पोताने छंदे प्रवर्त्ते माटे एने छंदो कहीयें. तिहां एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे नेद पासन्नाना, तथा एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे नेद उस्सन्नाना, तथा ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील मली (ति के०) त्रण नेद कुशीलीयाना, तथा संक्लिष्ट चित्त अने असंक्लिष्ट चित्त मली (डुग के०) बे नेद संसक्तना, तथा (अणेगविहा के०) अनेक प्रकार, छंदाना जाणवा, एटले यथाछंदा अनेक नेदना थाय छे ए पासन्नादिक पांच जे कह्या ते (जिणमयंमि के०) श्रीजिनमतने विषे (अवंदणिज्जा के०) अवंदनीय जाणवा ॥ १२ ॥

हवे ए पांचेनुं कांइक विशेष स्वरूप लखीयें छेयें. तिहां मिथ्यात्वादिक बंध हेतुरूप पास तेने विषे जे रहे, तेने पासन्नो कहीयें. अथवा ज्ञानादिकनें पोतानी पासें करी मिथ्यात्वादिक पासमां रहे एटले ज्ञानादिकने पासें राखे पण सेवे नही, अथवा पासनी परें पोतानुं पासुं मलिन राखे ते पासन्नो कहीयें. तेना बे नेद छेः—एक देशपासन्नो अने बीजो सर्वपासन्नो. तेमां जे कारणविना शय्यांतर पिंड, अन्याहृत एटले साहामो आण्यो पिंड, राज्यपिंड, नित्यपिंड अने अग्रपिंडादिक नुंजे. तथा गाम, देश, कुल श्रावकनी ममता मांडे, जेम के "आ महारा वासित नाव्या छे" ते कुलादिकनी निश्रायें विचरे, तथा गुर्वादिकने जे विशेष नक्तियोग्य रहस्यनूत थापना कुल छे, ते कुलमांहे निष्कारणे प्रवेश करे, तथा "नित्यप्रत्यें तमने एटलुं देइशुं तमें नित्य आवजो" एवी रीतनी जे निमंत्रणा करे तेनी पासें ते पिंड लीये तेने नित्य पिंड कहीये. तथा नाजनमांहेथी वापस्या विना छेदन नक्तादिकनी शिखा उपरितन नाग लइण लीये, ते

ने अग्रपिंम कहियें. केटलाएक एम कहे ले के कारण विना प्रधान सरस आहार लीये तेने अग्रपिंम कहियें. तथा बहेंतालीश दोष आहारना न राखे,वारं वार आहार लीये तथा जमणवार, विवाह अने प्राहुणामां शिखंमि जोतो फरे, आहारनी लालचें मुखें कहे. तिहां निमित्त दोष न होय,सूजतो होय ते माटे. तथा सूर्य आथमता उगताथी मांमी जमे, मांम लीये आहार न करे, सन्निधि राखे, पोतानी निश्रायें औषधादिक अलगु गृहस्थने घरे मूकावे, इव्यादिक सहित विचरे, तथा ज्ञानइव्यादिक मिषें करी स्वनिश्रायें ज्ञानादि जंमारनां नाम लेई, पुस्तकादि संग्रहे, इव्यादि सहित विचरे, मुखें कहे अमें निर्ग्रंथ लैयें पूर्व साधु समान गर्व राखे. इत्यादिक अनेक प्रकारें साधु लक्षणथी विपरीत होय ते देश पासलो जाणवो.

तथा जे सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी अलगो रहे, केवल लिंगधारी, वेषविमंबक, गृहस्थाचार धारी होय, ते सर्वथी पासलो जाणवो.

बीजो जे क्रियामार्गने विषे शिथिलता करे, अथवा खेद पामे तेने उस्सन्नो कहीयें; तेना बे जेद ले. एक देशथी अवसन्नो अने बीजो सर्वथी अवसन्नो. तिहां जे आवश्यक,प्रतिक्रमण,देववंदनादि,सज्जाय ते पठन पाठनादि, पडिलेहण, मुखवस्त्रिका, वस्त्रपात्रादि, जिक्षा ते गोचरी कालादि, ध्यान ते धर्मध्यानादि, अजक्तार्थ ते तप नियम अजिग्रहादि, आगमन ते बाहेरथी उपाश्रयमां प्रवेशलक्षण, निसिहिया ते पग पूंजवादि, निर्गमन ते प्रयोजनविना उपाश्रयथी बाहेर निकलवा लक्षण, स्थान ते कायोत्सर्गादि, निषीदन ते बेसवुं, तुयट्ठण ते त्वग्वर्तन एटले शयन इत्यादिक, दशविध चक्रवाल साधु समाचारी, तथां उंघ पद विजाग सामाचारी प्रमुख विधि संयुक्त न करे, अथवा उठी अधिकी करे अथवा कषाय कंमक सहित करे, अथवा राजवेठनी परें करे जय मानीने करे, तथागुर्वादिकना वचन सांजले, डुमणो थइने वचनखंमन करे,आक्रोश करे,इत्यादिक लक्षणें करी देश अवसन्नो जाणवो.

अने सर्वथकी अवसन्नो तो चोमासा विना शेषकालें पाट, बाजोठ, निष्कारण संथारे, सेवे, स्थापना पिंम जमे. संथारो पाथस्यो राखे, प्राजृतिकादि दोष जमे. इत्यादिक लक्षणें सर्व अवसन्नो जाणवो.

त्रीजो जेनुं कुत्सित, निंदनीय मातुं शील एटले आचार होय, तेने कु

शील कहीयें. तेना त्रण नेद डे. ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील, तिहां ज्ञानकुशील ते अकाल, अविनय, अबहुमान, गुरुनिन्हवता, योग उपधान हीन सूत्र, अर्थ अने तडुनय हीन, इत्यादिक आशातनायुक्त थको ज्ञान नणे तथा आजीविकाहेतें पठन पाठन संनलाववुं, लखवुं, लखाववुं, नंमार करावववा, नंदी समारचनादि स्वार्थना उपदेश देवा, तथा आजीविका हेतें धर्मकथा कहे, नणे, घरघर धर्म संनलाववा जाय, पोताना थवाने हेतें स्त्रीबालकादिकने नणावे, अनेरा ज्ञानना नंमार उलवे ज्ञानने उलवे, लखवां लखाववां, क्रयविक्रय पुस्तकादिकोनो करे, करावे, इत्यादिक लक्षणें ज्ञानकुशील जाणवो.

बीजो दर्शनकुशील ते शंका कांक्षा विचिकित्सा व्यापन्न, दर्शननिन्हव, अहाछंदा, कुशीलिया वेषविडंबनादिक साथें परिचय करे, एटले तेनी साथें आलाप संलाप पठनादिक करे, ते दर्शनकुशील जाणवो.

त्रीजो चारित्रकुशील ते ज्योतिष, निमित्त, अक्षरकर्म, यंत्र, मंत्र, नूतकर्म, बलिपिंम, उज्जोणी, दानादि, सौनाग्य दौर्नाग्यकारी, जडी, मूली, विद्यारोहणादिक, पादलेप, आंख अंजन, चूर्ण, स्वप्नविद्या, चिपुटीदान प्रमुख, अतीत अनागत वर्त्तमान निमित्तकथन, पोतानी जाति कुल विज्ञानादिक स्वार्थकार्यें प्रकाश करे, नख, केश, शरीर, शोना करे, वस्त्र पात्र दंमादिक बहुमूल्यवाला सुंदर सुकोमलनी वांछा करे, शिष्यादिक परिग्रहनी विशेष तीव्रता धरे, निष्कारण अपवाद पद सदूषण मार्ग प्रकाशे, तथा सेवे, इत्यादिक लक्षणें चारित्रकुशील जाणवो.

चोथो संसक्त, ते पासबा अथवा संविज्ञादिक जन जेवानी साथें मले त्यां तेवो थई प्रवर्त्ते, अथवा मूलोत्तर गुण दोष सर्व एकठा प्रवर्त्तावे, जेम गायनी आगल सुंमलो मूक्यो होय तेमां सरस, नीरस, कपाशिया, खोल, घृत, डुग्धादिक एकठुं मेल्युं होय तो ते सर्वने एकठांज खाई जाय पण तेनुं विवेचन न करे. तेम ए पण गुण अने दोष सर्वने एकठा प्रवर्त्तावी देखाडे तेने संसक्तो कहीयें, ते एक संक्लिष्टचित्त संसक्तो अने बीजो असंक्लिष्टचित्तसंसक्तो एवा बे नेदें जाणवो.

तिहां जे प्राणातिपातादिक पांच आश्रवनो सेवनार, ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव ए त्रण गारवें करी सहित, स्त्रीगृहादिक सेवनने

विषे प्रसक्त, अपध्यानशील, परगुणमत्सरी, इत्यादि गुण युक्त ते संक्लिष्ट चित्तसंसक्तो जाणवो. तथा पोताना आत्माने जेवारें जेवो प्रसंग मले ते वारें तेवो थाय एटले प्रियधर्मी साधु मले तेवारें साधुंना आचार पाले अने अप्रियधर्मी पासह्रो मले तेवारें तेवो थाय लिंबूना पाणीनी पेरें त द्रूप थइ जाय ते असंक्लिष्टचित्तसंसक्तो जाणवो. इति ॥

पांचमो यथाछंदो ते यथा रुचियें प्रवर्त्ते,यथा तथा लवे,उत्सूत्र नाषे, पोताना स्वार्थना उपदेश आपे,स्वमति विकल्पित करे, परजातिने विषे प्रवर्त्ते, पारकी तांत करे, उपकारी धर्माचार्यादिकनी हेलना करे,आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद बोले, जेनाथी ज्ञानादिक पामे तेवा बहुश्रुत नी निंदा करे, गारव प्रतिबंधि होय, कारणविना विगय खाय,इत्यादिक अनेक नेदें यथाछंदो जाणवो. ए पांचेनां विशेष लक्षण श्रीप्रवचनसारो द्धारवृत्ति तथा आवश्यकवृत्ति तथा उपदेशमालावृत्ति प्रमुख ग्रंथोथी जा णवा. ए पांचेने अवंदनीय जाणवा. एमने वांदवाथी कर्मनिर्ज्जरा न थाय,केवल क्लेश अने कर्मबंध उपजे तथापि ए कहेलां लक्षणवालो जो ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना सहाय कारणे सेव्यो होय तो वंदनीय जाण वो. जे माटे श्रीआगममांहे कह्युं छे के पासह्रादिक चारित्रना असंनवी होय पण दर्शनना असंनवी न होय ते कारणे ते सेव्य जाणवो पण इ हां तो चारीत्रीयो वंदनीय कह्यो छे ते अधिकार माटे चारित्रवंत ते वं द्य छे अन्यथा जो अचारित्रीयाने वंद्य कहीयें तो जेटला तेना प्रमादनां स्थानक छे ते सर्व अनुमोदनीय थाय तेथी तेने वांदतो थको प्रवचन बाधाकारी थाय, ए रीतें वांदणां देवाने पासह्रादिक पांच अयोग्य तेमनुं त्रीजुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल पन्नर थया ॥ १२ ॥

हवे पांच वांदवाने योग्य तेमनुं चोथुं द्वार कहे छे.

आयरिअ उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ॥ किइ
कम्मनिज्जरहा, कायव मिमेसि पंचन्हं ॥ १३ ॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थः–पहेला ज्ञानादिक पांच आचारें करी युक्त ते (आयरिय के०) श्रीआचार्य कहीयें, बीजा (उवज्झाए के०) श्रीउपाध्यायजी, त्रीजा जे तप संयमने विषे प्रवर्त्तावे, गछनी चिंता करे ते (पवत्ति के०) प्रवर्त्तक

कहीयें, चोथा जे चारित्रथी पडता होय तेने प्रतिबोध आपीने पाछा ठेकाणें आणे तेने (थेरे के०) थिविर कहीयें (तहेव के०) तथैव एट ले तेमज वली पांचमा गछने अर्थे क्षेत्र जोवा माटे विहार करे, सूत्र अर्थना जाण तेने (रायणिए के०) रत्नाधिक गणाधिप कहीयें, (इमे सिपंचन्हं के०) ए कह्या जे आचार्यादिक पांच जण तेने (किइकम्म के०) कृतिकर्म एटले वांदणानुं कर्म (कायवं के०) करवुं एटले वांदणां दे वां ते केवल (निज्जरठा के०) कर्मनिर्जराने अर्थे जाणवुं ॥ १३ ॥ ए आचार्यादिक पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप नीचें लखीयें छैयें.

आचार्य ते सूत्र अने अर्थ उन्नयना वेत्ता, प्रशस्त समस्त लक्षणें लक्षि त. प्रतिरूपादि गुणयुक्त शरीर होय, जाति कुल गांनीर्य धैर्यादि अनेक गुणमणियुक्त. आठ प्रकारनी गणिसंपदायें करी युक्त. पंचाचार पालकं, पलाववाने समर्थ. छत्रीश छत्रीशी गुणें करी बिराजमान, आर्य पुरु षें सेववा योग्य, गछमूलस्तंनजूत गछचिंतारहित अर्थनाषी, एटले जेमां गछचिंता न उपजे एवा अर्थ नाषे एवा गुण युक्त ते आचार्य जाणवा.

तथा उपाध्याय ते जेनी पासें अगीयार अंग, बार उपांग, चरणसित्तिरी, करणसित्तिरी नणीयें, आचार्यने युवराज समान, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप रत्नत्रयी युक्त, सूत्र अर्थना जाण, आचार्यने हितचिंतक, ते उपाध्याय

तथा प्रवर्त्तक ते यथोचित प्रशस्त योग जे तप संयम तेने विषे साधुसमुदा यने प्रवर्त्तावे, गछने योगक्षेम करवानी योग्यतानी संनालना करनार जाणवा.

तथा थिविर ते ज्ञानादिकगुणोने विषे सीदाता साधुने इहलोक तथा परलोकना अपाय दृष्टांत देखाडी संयममार्गमां स्थिर करे, ते स्थविर त्रण प्रकारें छे. एक शाठवर्षना ते वयःस्थविर, बीजा वीश वरसदीक्षा प र्याय जेने थया होय ते पर्यायस्थविर, त्रीजा जे निशीथादिक छेदग्रं थना रहस्य जाणे, जघन्यथी समवायांगादि श्रुत जाणे, ते श्रुत स्थविर पण इहांतो जेने आचार्यादिकें स्थविर कीधा होय ते स्थविर जाणवा.

तथा रत्नाधिक ते गछने कार्यें शिष्य उपधि प्रमुख लानने अर्थे विहारक रणशील सूत्रार्थवेत्ता एनुं गणावछेदक एवुं पण नाम कहीयें एवा गुणवंत ते पर्यायें ज्येष्ठ अथवा लघु होय तो पण तेने रत्नाधिक कहीयें. एटले पां च वंदनिकनुं चोथुं द्वार थयुं. उत्तर बोल वीश थया ॥

णां देवाय, सातमा पच्चक्काण करतां अथवा मासखमणादिक विशेष तप रूप (संवरणे के०) संवरने विषे वांदणां देवाय आठमा (उत्तमठे के०) उत्तमार्थे एटले अंतसमये अनशन करवाने विषे संलेषणाने विषे (य के०) वली वांदणां देवाय, अथवा वांदवुं थाय. ए आठ कारणे (वंदणयं के०) वांदणां देवाय. तेनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल पिस्तालीश थया ॥१७॥

हवे अवश्य साचववा माटे आवश्यक कहीयें, ते वांदणां देतां पच्चीश आवश्यक सचवाय, तेनुं दशमुं द्वार कहे छे.

दोवणय महाजाय, आवत्ता बार चउसिरतिगुत्तं ॥
डुपवेसिग निक्कमणं, पणवीसावसय किइकम्मं ॥१८॥

अर्थः–(दोवणयं के०) बे अवनत वांदणाने विषे जाणवां एटले बे वार उपरितन शरीर भाग नमाडवो तिहां एक तो जेवारें "इच्छामि खमा समणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एम कहीने नमे तेवारें छंदेणनी अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन भाग नमाडे त्यारे गुरु छंदेण कहे. ए एक अवनत थयुं, एम बीजी वार वांदणां देतां बीजुं अवनत थाय. ए बे अवनत रूप बे आवश्यक थयां.

तथा (अहाजाय के०) एक यथाजात एटले जे रूपें दीक्षानो जन्म थयो हतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति चोलपट्टमात्रपणे श्रमण थयो हतो तेटलाज भेला थई हाथ जोडे अथवा योनिथी बालक निकलते जेम रचितकर संपुट होय तेम करसंपुट कस्या हाथ जोडेलाने ललाटे लगाडे ते यथाजात कहीयें एम बे अवनत अने त्रीजुं यथाजात मली त्रण आवश्यक थयां.

हवे शरीरना व्यापार रूप (बार के०) बार (आवत्ता के०) आवर्त्त सूत्राभिधान गर्भित कायव्यापारविशेष जाणवां. तेमां प्रथम वांदणे छ आवर्त्त थाय, ते आवी रीतेंः–प्रथम त्रण आवर्त्त तो "अहो" "कायं" "काय" ए बे बे अक्षरें नीपजे एटले पोताना हाथनां तलां बे उंधा गुरुचरणे लगाडे तथा उत्तान हाथें पोतानो ललाटदेश फरसे अने "१ अहो २ कायं ३ काय संफासं" कहेतो मस्तक नमाडे तेवार पछी "खमणिज्जोथी मांकीने वइक्कंतो" पर्यंत यावत् कर संपुटे कहीने वली त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना कहे तेमां एक अक्षर गुरुचरणे हाथ

लगाडतां कहे,बीजो अक्षर उत्तान हाथे वचाले विशामा रूप कहे अने त्री जो अक्षर ललाटदेशे हाथ लगाडतां कहे, जेम " ज त्ता भे " " ज व णि" " ज्जं च भे " एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना कहेतो खामे मि खमासमणो कही बीजी वार मस्तक नमाडे. ए रीतें ए प्रथम वांदणे ठ आवर्त्त थयां तेम वली बीजे वांदणे पण एज रीतें ठ आवर्त्त थाय, बे वार मली बार आवर्त्त रूप बार आवश्यक थाय. सर्व मली पंदर थयां.

तथा (चउसिर के०) चतुःशिरः एटले चार वार शिर नमाडवुं तिहां पहेले वांदणे बे वार मस्तक नमाडवुं अने बीजे वांदणे पण बे वार मस्तक नमाडवुं मली चार वार शिर नमन थाय.एवं उगणीश आवश्यक थयां.

तथा (तिगुत्तं के०) त्रण गुप्ति ते मन, वचन अने काया ए त्रण ने अन्यव्यापारथी गोपवी राखे ए त्रणने इव्यथी तथा नावथी अयत्नायें न प्रवर्त्तावे, एवं बावीश आवश्यक थयां.

तथा (डुपवेस के०) द्विप्रवेश एटले बे वार आवश्यकें बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रहमांहे प्रवेश करवा रूप बे आवश्यक अने (इग निरकमणं के०) एक वार अवग्रहथी बाहेर निकले एटले पहेले वांदणे आज्ञा मागी निसीहि कहेतो पग पूंजतो थको एकवार अवग्रह मांहे प्रवेश करे अने पठी आवस्सियाए कहेतो पाठल पूंजतो एकवार पहेले वांदणे अवग्रहथी बाहेर निकले, अने बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण फ री पाठो बाहेर निकले नही माटे बे वार पेसवुं अने एकवार निकलवुं मली त्रण आवश्यक थयां ते पूर्वोक्त बावीश साथें मेलवतां (पणवीसा के०) पच्चीश (आवसय के०) आवश्यक ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणांने विषे थाय ॥ १० ॥

किइ कम्मंपि कुणंतो,न होइ किइकम्म निज्जरा भागी ॥
पणवीसामन्नयरं,साहु ठाणं विराहंतो ॥१ए॥ दारं॥१०॥

अर्थः—हवे ए (पणवीसां के०) पच्चीश आवश्यक जे ठे, तेमां (अ न्नयरं के०) अनेरुं एक पण (ठाणं के०) स्थानक प्रत्यें (विराहंतो के०) विराधतो एवो जे (साहु के०) साधु तेमज साधवी श्रावक,श्राविका होय, ते (किइकम्मंपिकुणंतो के०) कृतिकर्मने करतो ठतो पण एटले वांदणां

देतो ठतो पण (किइकम्म के०) कृतिकर्म थकी जे कर्मपरिशाटनरूप (नि ज्जरा के०).निर्ज्जरा थाय तेनो (नागी के०) संविनागी (न होइ के०) न थाय एटले ते वांदणांनुं जे निर्ज्जरारूप फल, ते न पामे ॥ १ए ॥ ए दशमुं द्वार थयुं उत्तर बोल सित्तेर थया ॥

यंत्र स्थापना.

अवनत नमवुं.	यथाजात मुद्रा.	आवर्त्त.	शिरो नमन.	गुप्ति.	प्रवेश.	निकलवुं.
२	१	१२	४	३	२	१

हवे मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणानुं अगीयारमुं द्वार कहे ठे.

दिठि पडिलेह एगा, ठ उड्डपप्फोड तिग ति अंतरिआ ॥
अक्खोड पमज्जणया, नवनव मुहपत्ति पणवीसा ॥ ७० ॥

अर्थः—प्रथम मुहपत्तिने पहेले पासें सूत्र अने बीजे पासें अर्थ तेनुं तत्त्व, सम्यक् प्रकारें हृदयने विषे धरुं एम चिंतवीने मुहपत्ति उखेली तेना बेहु पासां सर्वत्र दृष्टियें करी जोवां ते (दिठिपडिलेह के०) दृष्टि पडिले हणा (एगा के०) एक जाणवी. तेवार पठी (ठ के०) ठ (उड्डपप्फोड के०) उंचा पखोडा करवा एटले मुहपत्तिने फेरवी बे हाथें साहीने एकेका हाथें नचाववा रूप त्रण त्रण उंचा पखोडा करवा तिहां डावे हाथे करतां स म्यक्त्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीय ए त्रण मोहनीय परिहरुं एम चिंतवीयें तथा जमणे हाथे करतां कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग, ए त्रण राग परिहरुं. एम चिंतवीयें ए ठ खंखेरवा रूप ठ पडिलेह णा थइ तेनी साथें प्रथमनी एक दृष्टि पडिलेहणा मेलवीयें तेवारें सात थाय.

तेवार पठी (तिग के०) त्रण (अक्खोड के०) अखोडा अने (ति के०) त्रण (पमज्जणया के०) प्रमार्ज्जना एटले पूंजवुं ते अनुक्रमे एक बीजा केडे त्रणवार (अंतरिआ के०) एकेकने अंतरे करवा एटले मुहपत्तियें एक पड वाली मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथनी अंगुलीना आंतरानी वचमां नरावीने त्रण अखोडा पसली नरीयें त्रणवार मुह पत्ति उंची राखी डाबा हाथना तलाने अण लागते खंखेरीयें पण हाथने तले लगाडीयें नहीं पठी त्रण प्रमार्ज्जना पशलीमांहेथी घसी काढा

डीयें एम एकेकने आंतरे त्रण वार त्रण त्रण अरकोडा करवा अने त्रण वार त्रण प्रमार्ज्जना करवी. एवी रीतें त्रण वार करतां (नव के०) नव अरकोडा खंखेरवा रूप थाय. अने (नव के०) नव परकोडा प्रमार्ज्जना एटले पूंजवा रूप थाय मली अढार पडिलेहणा थाय तेनी साथें पूर्वोक्त सात मेलवीयें, तेवारें सर्व मली (मुहपत्ति के०) मुहपत्तिनी पडिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २० ॥ हवे अढार पडिलेहणा करतां एकेका त्रिकें शुं शुं मनमां चिंतवियें ? ते कहे डे.

पहेला त्रण अरकोडामां सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्व आदरुं, पढी त्रण प्रमार्ज्जनामां कुदेव, कुगुरु अने कुधर्म, ए त्रण परिहरुं, बीजा त्रण अरकोडामां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण आदरुं, पढी त्रण प्रमार्ज्जनामां ज्ञानविराधना दर्शनविराधना अने चारित्रविराधना, ए त्रण परिहरुं, त्रीजा त्रण अरकोडामां मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्ति आदरुं, पढी त्रण प्रमार्ज्जनामां मनोदंरु, वचनदंरु अने कायदंरु, ए त्रण दंरु परिहरुं, एवी रीतें मनमां चिंतववुं, ए क्रिया करवानी मुहपत्ति एक वेंत ने चार अंगुल आत्म प्रमाणनी जोइयें अने रजोहरण तथा चरवलो बत्रीश अंगुलनो जोइयें तेमां चोवीश अंगुलनी दांडी अने आठ अंगुलनी दशी जोइयें अथवा न्यूनाधिक करी होय तो पण सरवाले बत्रीश अंगुल जोइयें, ए पच्चीश पडिलेहणा स्त्री पुरुष बेहुयें करवी. ए अगीयारमुं द्वार थयुं, अने उत्तर बोल पच्चाणुं थया ॥

हवे शरीरनी पच्चीश पडिलेहणानुं बारमुं द्वार कहे डे.

पायाहिणेण तिअ तिअ, वामेअर बाहु सीस मुह हिय
ए ॥ अंसुड्ढाहो पिठे, चउ डप्पय देह पणवीसा ॥ २१ ॥

अर्थः-(पायाहिणेण के०) प्रदक्षिणायें एटले प्रदक्षिणावर्त्ते करी एक (वाम के०) डाबे (बाहु के०) बाहुयें अने बीजुं (इअर के०) इतर ते जमणे बाहुयें तथा त्रीजुं (सीस के०) मस्तकें, चोथुं (मुह के०) मुखें अने पांचमुं (हियए के०) हीयाने विषे ए पांच ठामे (तिअतिअ के०) त्रण त्रण वार पडिलेहणा करवी एटले मुहपत्तिने वधूटकनी पेरें ग्रहण करीने वामभुजादिक पांच स्थानकें फेरववी तेवारें पन्नर पडिलेहण थाय, अने (अं

सुड्डाहो के०) अंसुड्ड एटले बे खंजानी उं ध्वर अने ते बे खंजानी अहो एट ले नीचें काखमां (पिठे के०) पिठ एटले बे वांसानी बाजुयें (चउ के०) चार पडिलेहण करवी एटले बे खंजा उपर प अने बे काखने विषे. एमज (ठ प्पय के०) ठ पडिलेहण बे पगनी उपर कर त्री तेमां त्रण वाम पगे अने त्रण दक्षिण पगे करतां ठ थाय, एवी रीतें सर्व म ली (देह के०) शरीरनी पडिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २१ ॥

इहां यद्यपि श्रीआवश्यक वृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादिकें प डिलेहणा नो विशेष विचार कह्यो नथी तो पण इहां परंपराथी संप्रदाय समाचारीयें स्त्रीनुं शरीर वस्त्रें आवृत होय माटें एने शरीरनी पडिलेहणा पच्चीशमां थी त्रण मस्तकनी,त्रण हृदयनी अने बे पासाना खंजानी चार,एवं दश प डिलेहणा न होय शेष पन्नर होय तथा वली साध्वीने तो उघाडे माथे क्रि या करवानो व्यवहार ठे माटें तेने मस्तकनी त्रण पडिलेहणा होय शेष सात न होय बाकी अढार पडिलेहणा होय.

ए पडिलेहणा जे ठे, ते यद्यपि जीवरक्षानी कारणजूत जव्य जीवनें ठे एम तीर्थंकरनी आज्ञा ठे तो पण मनरूप मांकडाने नियंत्रवा सारु बोल धारीयें ते यद्यपि आवश्यकवृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथें कह्युं नथी तोपण अल्पमतिने मन स्थिर राखवा माटें " सुत्तब तत्तदिठि " इत्यादि पांच गाथानुं कुलक कह्युं ठे, ते इहां वांदणामां अधिकार नथी तोपण ते पांच गाथानो अर्थ लखीयें ठैयें.

जमणा फेरथी मुहपत्तिने वधूटकनी पेरें ग्रहण करीने पडिलेहण क रीयें ते कहे ठे. मावा हाथनी जुजायें त्रण वार पुंजियें त्यां हास्य, रति अने अरति, ए त्रण परिहरुं. एम चिंतवीयें. जमणा हाथनी जुजायें त्रण वार पुंजीयें त्यां जय, शोक अने डुगंडा, ए त्रण परिहरुं, एम चिंतवीयें. मस्तक त्रण वार पुंजीयें तेमां कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण माठी लेश्या ठांकुं,एम चिंतवियें. मुखनी त्रण पडिलेहण करीयें त्यां रुद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण परिहरुं, एम चिंतवीयें. हृदयनी त्रण पडिलेहणा करीयें त्यां मायाशल्य, नियाणाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य ठांकुं, एम चिंनवीयें. मावा खंजा अने जमणा खंजानी नीचें उपर बे पासानी पडिलेहणा चार करीयें त्यां क्रोध,मान, माया अने लोज ए चार

कषायने ढांकुं; एम चींतवीयें. नावे जमणे पगे अनुक्रमें त्रण पडिलेहणा करीयें, तिहां अनुक्रमें पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय वायुकाय, वनस्प तिकाय अने त्रसकाय, ए ७ काय जीवोनी रक्षा करुं, एम चींतवीयें ॥

तथा वली पडिलेहणना अधिकार माटें वस्त्र, पात्र, पाट, बाजोठ, पाया वाला पाटला, पाटली, स्थापनाना नवा, ढाकणां, अने नाजन प्रमुखनी प चीश पडिलेहण तथा कणदोरा, नांना अने नांनीनी दश पडिलेहण तथा थापनानी तेर, पायानी तेर इत्यादिक सर्व परंपरागतें जाणवी ॥

आवस्सएसु जह जह, कुणइ पयत्तं अहीण मइरित्तं ॥
तिविह करणोवउत्तो, तह तह से निक्करा होई ॥ २२ ॥

अर्थः—ए (आवस्सएसु के०) आवश्यकने विषे तथा मुहपत्ति अनें श रीरनी पडिलेहणाने विषे (जहजह के०) जेम जेम उजमाल चित्त थको (पयत्तं के०) प्रयत्न एटले उद्यमप्रत्यें (अहीण के०) हीन हीन परंतु जेम कह्यो छे तेमज करे, पण तेथकी उंगे करे नही तेमज (अइरित्तं के०) अतिरिक्त ते तेथकी जूदो एटले जेम हीन न करे, तेम अधिक पण न करे एवी रीतें नली बुद्धियें सहित थको (तिविहकरण के०) त्रिविध करण ते मन, वचन अने काया, ए त्रण करणे करी (उवउत्तो के०) उपयुक्त थको एटले शुद्ध उपयोगी थयो थको एकाग्रचित्त ठतो (कुणइ के०)करे (तहतह के०) तेम तेम (से के०) ते उद्यम करनार पुरुषने (निक्करा होई के०) विशेषें कर्मोनी निर्जरा थाय अने जो अविधियें प्रतिलेखना दिक करे तो ते ७ कायनो विराधक कह्यो छे. एटले पडिलेहणानुं बारसुं द्वार थयुं. उत्तर बोल एकशो वीश थया ॥ २२ ॥

हवे चार गाथायें करी बत्रीश दोष त्यागवानुं तेरमुं द्वार कहे छे.

दोस अणाढिअ थद्धिअ, पविद्ध परिपिंमिअं च ढो लगई ॥ अंकुस कच्छन रिंगिअ, मछुवत्तं मणपउठं ॥२३॥ वेइयबद्ध नयंतं, नय गारव मित्त कारणा तिन्नं ॥ पडिणीय रुठ तज्जिअ, सढ हिलिअ विप लिय चिअयं ॥ २४ ॥ दिठमदिठं सिंगं, कर तम्मो

अण अणिऽण्णालिऽं ॥ ऊणं उत्तर चूलिअ, मूअं ढढ्ढर चुडलिअं च ॥ ७५ ॥ बत्तीस दोस परिसुऽं, किइकम्मं जो पउंजई गुरूणं ॥ सो पावइ निवाणं, अचिरेण विमाणवासं वा ॥ ७६ ॥ दारं ॥ १३ ॥

अर्थः—जे अनादार पणे संभ्रांत थको वांदे, ते पहेलो (अणाढिय के०) अनादृत (दोस के०) दोष. तथा जे जात्यादिकें करी धीठो थको स्तब्ध पणुं राखतो वांदे, अथवा द्रव्य नावादिक चउनंगीयें करी स्तब्ध थको वांदे ते बीजो (थद्धिअ के०) स्तब्ध दोष. तथा जे वांदणां आपतो नाडु तनी परें तुरत नासे, अथवा वांदणां देतो अरहो परहो फरे ते त्रीजो (अपविद्ध के०) अपविद्ध दोष. तथा जे घणा साधु प्रत्यें एकज वांदणे वांदे अथवा आवर्त्त, व्यंजन, अने आलाप ए सर्व एकठा करे, ते चोथो (परिपिंडियं के०) परिपिंडित दोष. (च के०) वली जे तीडनी परें उछल तो एटले उपडी उपडी विसंष्ठुल वांदे, ते पांचमो (ढोलगई के०) ढो लगति दोष. तथा जे अंकुशनी परें रजोहरणने बे हाथे ग्रहीने वांदे ते बठो (अंकुस के०) अंकुश दोष. तथा जे काछबानीपरें रिंगतो रींगतो वांदे, ते सातमो (कछभरिंगिय के०) कछभरिंगित दोष. तथा जे उनो थइ बेसीने जलमांहेला माछलाती परें एकने वांदीने उतावलो छपी फरी बीजाने वांदे, अथवा पाठ प्रछन्न करे अथवा रेचकावर्त्ते अनुलोम प्रति लोम वांदे, ते आठमो (मछुवत्तं के०) मत्स्योद्धर्त्त दोष. तथा कोइ साधु पोताथी एकादे गुणें हीन होय ते दोषने मनमां चिंतवतो ईर्ष्यासहित थको वांदे, ते नवमो (मणपउठं के०) मनःप्रदुष्ट दोष जाणवो ॥ २३ ॥

तथा जे बे ढींचणनी उपर तथा हेठे हाथ राखीने अथवा बे हाथ विचा लें बे ढींचण राखीने अथवा बे हाथनी वचमां एक ढींचण राखीने अथवा खोले हाथ मूकीनें वांदे, ते दशमो (वेश्यबद्ध के०) वेदिकाबद्ध दोष जाणवो. तथा ए कांइक अमने नजशे एटले विद्यामंत्रादिक शीख वशे इत्यादिक लालचनी बुद्धियें वांदे,अथवा नही वांदीश तो रीश करशे एवुं जाणीने वांदे, ते अगीयारमो (नयंतं के०) नजंत दोष जाणवो.

तथा एमने नही वांदीश तो मुजने गह्यादिकथी बाहिर काढीमूकशे,अ थवा शापादिक आक्रोश करशे,इत्यादिक नयें करी वांदे, ते बारमो (नय के०) नयदोष जाणवो. तथा जो हुं नली रीतें वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल ठे, डाह्यो ठे, विधिप्रवीण ठे, एवी रीतें जाणपणाना गारवें करी वांदे, ते तेरमो (गारव के०) गारव दोष जाणवो. तथा एमनी साथें मह्यारे पूर्वे मित्राइ ठे, एवुं जाणी मित्रादिक नी अनुवृत्तियें वांदे, ते चौदमो (मित्त के०) मित्रदोष जाणवो. तथा जे ज्ञानदर्शनादिक कारण विना बीजा अन्य कारण जे वस्त्रादिक पदा दिक मुऊने देशे, एम उद्देशीने जे वांदे, ते पन्नरमो (कारणा के०) कारण दोष जाणवो. तथा जे चोरनी परें ठानो रह्यो थको वांदे एटले परथी पोतानी आत्माने ठानो राखे, रखे कोइ मुऊने उलखी लेशे तो माहारी लघुता थशे. एवी रीतें पोतानें बुपावतो वांदे, ते शोलमो (तिन्नं के०) स्तैन्यदोष जाणवो. तथा आहारादिकनी वेलायें प्रत्यनीकपणे अनवसरें वांदे, ते सत्तरमो (पडिणीय के०) प्रत्यनीक दोष जाणवो. तथा क्रोधें धमधम्यो थको वंदना करे, अथवा क्रोधांतप्रत्यें वांदे, ते अढारमो (रुठ के०) रुष्टदोष जाणवो. तथा जे घणीये वार वांद्या, तो पण प्रसन्न थता नथी तेम कोपमां पण थता नथी काष्ठनी पेरें देखाय ठे,एम तर्ज्ज ना करतो वांदे,अथवा तर्ज्जनी अंगुलियादिकें तर्ज्जना देतो थको वांदे,एटले कहे केएने रूषेथी शुं? अने तुठेथी पण शुं? एम तर्ज्जतो थको वांदे,ते उं गणीशमो (तज्जिय के०) तर्ज्जित दोष जाणवो. तथा जे मायादिक कपटें करी वांदे, अथवा ग्लानादिक व्यपदेश करी सम्यक् प्रकारें न वांदे, ते वीशमो (सढ के०) शठ दोष जाणवो. तथा हे गणि! हे वाचक! तमने वांदवाथी शुं फल थाय? एवी रीतें जात्यादिकनी हेलना करतो थको वांदे, ते एकवीशमो (हिलिय के०) हिलित दोष जाणवो. तथा अर्द्धां वांदणां देइने वचमां वली देशकथादिक विकथाउ करतो करतो अनियाने वांदे, ते बावीशमो (विपलियचिअयं के०) विपलतचित्तकं एटले विपलि तचित्त दोष जाणवो ॥ २४ ॥

जे मुंगो रही ठानो मानो बेसे तेने कोइ बीजो जाणी जाय जेआ ठा नो बेसी रह्यो ठे तो वांदे तथा कोइ अपरनुं वचमां अंतर ठते न वांदे,ए

म दीठुं अणदीठुं करे,एटले कोइयें दीठुं,कोइयें न दीठुं एम लाजतो थको अंधारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो (दिठमदिठं के०) दृष्टादृष्ट दोष जाणवो. तथा जे पोताना मस्तकने एक देशें करी एटले मस्तकनुं एक पासुं गुरुने पगे लगाडे तथा मुद्राहीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राखतो थको वांदे, ते चोवीशमो (सिंगं के०) शृंग दोष जाणवो. तथा जे राजादिकना कर वेठनी पेरें जाणीने वांदे, पण कर्मनिर्जराने अर्थें वांदे नही, ते पच्चीशमो (कर के०) करदोष जाणवो. तथा जे गुरुने वांदणां दीधां विना बुटको नथी,केवारें एथी बुटशुं? एम चिंतवतो वांदे, ते ढवीशमो (तम्मोअण के०) तन्मोचन दोष जाणवो. तथा सत्तावीशमा आश्लिष्टानाश्लिष्टदोषनी चउनंगी थाय ते आवी रीतें के, हाथें करी रजोहरण अने मस्तक फरसे ए प्रथम नांगो ते शुद्ध जाणवो,तथा रजोहरणने हाथ लगाडे पण मस्तकें हाथ न लगाडे,ए बीजो नांगो, तथा मस्तकें हाथ लगाडे पण रजोहरणे हाथ न लगाडे ते त्रीजो नांगो, तथा रजोहरण अने मस्तक बेहुने हाथ फरसे नही एटले लगाडे नहीं, आश्लेषे नही, ते चोथो नंग जाणवो. ए चार नांगामां प्रथम नांगो शुद्ध ठे अने पाठला त्रण नांगा अशुद्ध दोषावतार जाणवा. ए त्रण नांगे करी वंदन करे ते सत्तावीशमो (अणिद्धणालिद्धं के०) आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष जाणवो. तथा जे आवश्यकादिकें पाठ आलावा असंपूर्ण कहेतो थको वांदे, ते अठावीशमो (ऊणं के०) ऊण दोष जाणवो. तथा जे वांदणे वांदीने पठी महोटे शब्दें करी 'मत्थएण वंदामि' एम कहे, ते उंगणत्रीशमो (उत्तरचूलिअ के०) उत्तरचूलिका दोष जाणवो. तथा जे आलाप आवर्त्तादिकने मूकनी परें अणउच्चरतो वांदे, ते त्रीशमो (मूअं के०) मूकदोष जाणवो. तथा जे आलावाने अत्यंत महोटे स्वरें उच्चार करतो वांदे, ते एकत्रीशमो (ढढ्ढर के०) ढढ्ढर दोष जाणवो. तथा जे अंबुअडानी परें रजोहरण ठेहडे ग्रहण करी रजोहरणने नमाडतो थको वांदणां आपे, ते (च के०) वली बत्रीशमो (चुडलियं के०) चुडलिक दोष जाणवो ॥ २५ ॥

ए पूर्वोक्त (बत्तीसदोस के०) बत्रीश दोष तेणे करीने रहित थको (परिसुद्धं के०) परिशुद्ध निर्दोषपणे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म जे वांदणां तेने (गुरूणं के०) गुरुना चरणप्रत्यें (जो के०) जे नव्यप्राणी (पउंजइ

के०) प्रयुंजे, एटले आपे बे (सो के०) ते प्राणी (अचिरेण के०) थोडा कालमां (निव्वाणं के०) निर्वाण एटले कर्मरूपदावानलनो उपशम जे मोक्ष ते प्रत्यें (पावइ के०) पामे (वा के०) अथवा (विमाणवासं के०) वैमानिक देवपणाना वासप्रत्यें पामे ॥ २६ ॥ एटले ए तेरमुं बत्रीश दोषनुं द्वार पूरुं थयुं, उत्तर बोल १५२ थया ॥

हवे वांदणां देतां ब गुण उपजे,तेनुं चौदमुं द्वार कहे बे.

इह बच्च गुणा विणउ, वयारमाणाइजंग गुरुपूआ ॥ तिब्र
यराणय आणा,सुअधम्माराहणा किरिया ॥२७॥दारं॥१४॥

अर्थः–(इह के०) ए वांदणाने विषे (बच्च के०) ब वली (गुणा के०) गुण उपजे ते कहे बे. तेमां एक तो (विणउवयारं के०) विनयोपचार करवो ते गुण उपजे एटले जे विशेषें करी सर्वकर्मनो नाश करे तेने विनय कहीयें. तेहिज उपचार एटले आराधवानो प्रकार जाणवो. बीजो (माणाइजंग के०) पोताना अजिमानादिकनो जंग थाय एटले पोताना माननुं गालवुं थाय. त्रीजो (गुरुपूआ के०) गुरु जे पूज्यजन तेमनी पूजा सेवा जक्तिनुं साचववुं थाय. चोथो समस्त कल्याणनुं मूलरूप एवी (तिब्रयराणय के०) श्रीतीर्थंकर देवनी (आणा के०) आज्ञा तेनुं आराधन थाय एटले आज्ञानुं पालवुं थाय केम के जगवंते विनयमूल धर्म कह्यो बे, तथा पांचमो (सुयधम्माराहणा के०) श्रुतधर्मनी आराधना थाय, केम के श्रुतज्ञान जे गुरु पासेंथी जणवुं ते पण वंदनपूर्वक जणवुं कह्युं बे. तथा बठो गुण तो परंपरायें एथी (अकिरिआ के०) अक्रियारूप फल एटले सिद्धपणुं पामीयें ए ब गुण वांदणां देवाथी उपजे, तेनुं चौदमुं द्वार पूर्ण थयुं, उत्तर बोल १५८ थया ॥ २७ ॥

हवे त्रण गाथायें करी गुरुस्थापनानुं पन्नरमुं द्वार कहे बे.

गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तब अरकाइ ॥
अहवा नाणाइतिअं,ठविज्ज सक्कं गुरुअजावे॥२८॥
अरके वराडए वा,कठे पुबे अ चित्तकम्मे अ ॥ स
ब्रावमसब्रावं, गुरुठवणा इत्तराव कहा ॥२९॥ गुरु

विरहंमी ठवणा, गुरुवएसोव दंसणठं च ॥ जिणवि
रहंमी जिणबिं, ब सेवणा मंतणं सहलं ॥३०॥दारं॥१५॥

अर्थः-(गुरु के०) महोटा विशेष प्रतिरूपादि बत्रीश (गुणजुत्तं के०) गुणें करी युक्त एवा (तु के०) निश्चें (गुरुं के०) गुरुने (ठाविज्जा के०) स्थापन करीने तेनी आगल प्रतिक्रमणादि क्रिया करीयें (अहवा के०) अथवा (सरकं के०) साक्षात् पूर्वोक्त गुणयुक्त एवा (गुरुअन्नावे के०) गुरुनो अन्नाव उते (तत्र के०) तत्र एटले ते गुरुने स्थानकें (अरकाई के०) अक्षादिक स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीयें ते अक्षादिक स्थापनाचार्य न होय तो (नाणाइतियं के०) ज्ञानादिक त्रण एटले एक ज्ञान, बीजुं दर्शन, त्रीजुं चारित्र, ए त्रणेना उपकरण जे पोथी नोकरवाली प्रमुख बे तेने (ठविज्ज के०) स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीयें. परंतु अगुरुने विषे गुरुबुद्धि आणीने तेनी आगल क्रिया करवी नहीं. केमके आगममां अगुरुने विषे जे गुरुबुद्धि आणवी तेने अत्यंत आकरुं लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं बे ॥ २७ ॥

हवे अक्षादिक जे कया ते कहे बे. एक (अरके के०) अक्ष ते चंदन प्रसिद्ध मालानी स्थापना जाणवी, तेना अन्नावे (वराडए के०) वराटकें एटले त्रण लीटीना कोमानी स्थापना करवी, (वा के०) अथवा (कठे के०) काष्ठ मांमा मामी प्रमुख चंदनादिकनी पाटी आदिकनी स्थापना करवी, (पुत्ते के०) पुस्तकनी स्थापना करवी, (अ के०) वली तेना अन्नावें (चित्तकम्मे के०) चित्रकर्म ते गुरुनी मूर्तिनां चित्राम आलेख, अथवा गुरुनी काष्टनी प्रतिमा ए पाठ श्रीअनुयोगद्वार सूत्रथी लखीयें बेयें, "से किंतं ठवणाणुस्ता जणं वा अरके वा वराडए वा कठकम्मे वा पोत्तकम्मे वा लेपकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा संघातिकम्मे वा एगे अणेगे वा सप्नाउ वा असप्नाउ वा ठवणा ठविज्जत्ति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना करवी. ते बे प्रकारें जाणवी ते कहे बे. (सप्नावमसप्नावं के०) एक सद्भावस्थापना अने बीजी असद्भाव स्थापना तिहां गुरुनी मूर्ति तथा प्रतिमादिकनी आकार सहित जे स्थापना ते सद्भाव स्थापना जाणवी, अने आकारविना अक्षादिकनी जे स्थापना करवी ते

असद्भाव स्थापना जाणवी, वली (गुरुठवणा के०) गुरुनी स्थापना ते ए क (इत्तर के०) इत्वर अने बीजी (यावकहा के०) यावत् कथिका तेमां इत्वर ते थोडा काल लगें स्थापना रहे, जेम नोकरवाली अने पुस्तकादिक नी जे स्थापना बे, ते स्थापना क्रिया करवाने वखतें थापे बे, माटें ज्यां सुधी ते क्रिया करीयें, तिहां सुधी ते स्थापना रहे, जो दृष्टि तिहांनी तिहां राखीयें, तो रहे, नही तो वली फरी बीजी स्थापना स्थापवी पडे, ते इत्वर कालनी स्थापना जाणवी. अने बीजी यावत्कथिक स्थापना ते घणा काल पर्यंत रहे, ते प्रतिमादिक तथा अक्षादिकनी बे प्रकारनी स्थापना करीयें बेयें. ए स्थापनानी आशातना पण गुर्वादिकनी पेरें टालवी ॥ २९ ॥

हवे स्थापना शा कारण माटें स्थापवी? ते कहे बे. जेवारें साक्षात गुणवंत (गुरुविरहंमि के०) गुरुनो विरह एटले अजाव होय, तेवारें (गुरुवदेसोवदंसणबं के०) गुरूपदेशोपदर्शनने अर्थे एटले गुरुनो उपदेश देखाडवाने माटें (ठवणा के०) स्थापना स्थापवी जोइयें (च के०) इहां जावार्थ ए बे जे, स्थापनानी आगल क्रिया करतां ते एवुं जाणे जे गुरुज मुऊने आदेश आपे बे, ते महारे इन्नाकारि कही प्रमाण करवुं. केम के? गुरुना अजावें जे धर्मानुष्ठान करवुं, ते शून्यजाव गणाय. हवे दृष्टांत कहे बे. जेम (जिणविरहंमी के०) हमणां श्रीजिनेश्वरनो विरह बतां (जिण बिंब के०) श्रीतीर्थंकरना बिंब एटले प्रतिमानी (सेवण के०) सेवन करीने (आमंतणं के०) आमंत्रण करवुं. जे हे जगवंत! तमें मुजेनें संसार समुद्रथकी तारो, मोक्ष आपो इत्यादिकजे कहेवुं, ते (सहलं के०) सकल थाय बे. ए दृष्टांतें इहां पण श्रीगुरुना विरहें गुरुनी स्थापना पण सफल होय बे. ए गुरु स्थापनाना एकज बोलनुं पन्नरमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १५९ थया ॥ ३० ॥

हवे बे प्रकारना अवग्रहनुं शोलमुं द्वार कहे बे.

चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुठ तेरस करे सपरपक्खे ॥
अणणुन्नायस्ससया, न कप्पए तब पविसेउ ॥३१॥ दारं ॥१६॥

अर्थः–(इह के०) ए श्रीजिनशासनमांहे (गुरुग्गहो के०) गुरुथकी अवग्रह (चउदिसि के०) चारे दिशाने विषे (सपरपक्खे के०) स्व अने परपक्ष आश्रयी अनुक्रमें केटलो केटलो होय? ते कहे बे. तिहां एक (अ

हुठ के०) साडा त्रण अने बीजो (तेरस के०) तेर (करे के०) हाथनुं जा णवुं. तेमां स्वपक्ष ते पोतामां साधु साधुमां अने बीजा श्रावक जाणवा. त था परपक्ष ते साधु अने साध्वी तथा श्राविका जाणवी. तेमां साधु साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे साडा त्रण हाथ वेगलो अवग्रह होय अने गुर्वा दिकथी साध्वी तथा श्राविकाने तेर हाथ वेगलो अवग्रह होय. तेमज सा ध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनो अवग्रह होय (तद्ध के०) तेटला अवग्रहमांहे (अणणुन्नायस्स के०) गुरुनी अनुज्ञा लीधा विना (सया के०) सदा निरंतर (पविसेउं के०) प्रवेश करवाने वली (नकप्पए के०) न कल्पे. ए बे अवग्रहनुं शोलमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १६१ थया ॥३१॥

हवे वांदणांना सूत्रांना अक्षरनी संख्यानुं सत्तरमुं द्वार तथा पदनी संख्यानुं अढारमुं द्वार कहे छे.

पण तिग बारस डुग तिग, चउरो छठाण पय इगुणतीसं ॥ गुण तीस सेस आव,स्सयाइ सव पय अडवन्ना ॥३२॥ दारं ॥१७॥१८॥

अर्थः–प्रथम वंदनक सूत्रना अक्षर (२२६) छे. तेमां लघु अक्षर (२०१) छे, अने गुरु अक्षर तो इच्छामिथी मांडीने वोसिरामि पर्यंत पच्चीश छे ते लखे छे, च्छा ज्जा ग्ग ज्जो प्प क्कं त्ता ज्जं क्क क्क त्ती न्न च्छा क्क क्क क्क व्व व्व च्चो व्व म्मा क्क स्स क्क प्पा. ए पच्चीश अक्षर गुरु जाणवा एटले सत्त रमुं वंदनक सूत्रना अक्षरोनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल (३०७) थया.

हवे अढारमुं वंदनक सूत्रना पदनी संख्यानुं द्वार गाथाना अर्थ कहे छे. तिहां 'विभत्त्यंतं पदं' एटले विभक्ति जेना अंतमां होय तेने पद कहीयें ते इहां वंदनक सूत्रना छ स्थानक मध्ये सर्व मली अठावन पदनी संख्या छे, तिहां प्रथम स्थानकमां इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहियाए, ए (पण के०) पांच पद जाणवां.

तथा बीजा स्थानकमां अणुजाणह, मे. मिउग्गहं, ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक मध्यें निसीहि, अहो, कायं, काय संफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसोभेण, भे, दिवसो, वइ क्कंतो. ए (बारस के०) बार पद जाणवां, तथा चोथा स्थानकमां जत्ता, भे, ए (डुग के०) बे पद जाणवां. तथा पांचमा स्थानकमां जवणिज्जं, च, भे,

ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा छठा स्थानकमां खामेमि, खमास मणो, देवसियं, वइक्कमं, ए (चउरो के०) चार पद जाणवां, एम (छठाण के०) छ स्थानकने विषे (पय इगुणतीसं के०) ओगणत्रीश पद जाणवां.

तथा (सेस के०) शेष रह्यां जे (गुणतीस के०) ओगणत्रीश पद ते (आवस्सियाइ के०) आवस्सिआएथी मांमीने वोसिरामि पर्यंत थाय, तेवारें (सव्व के०) सर्वे मलीने (पय के०) पद (अडवन्ना के०) अठा वन्न थाय छे. हवे ए पाछला ओगणत्रीश पद कही देखाडे छे. आवस्सि याए पक्किडमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए मणडुक्कडाए वयडुक्कडाए कायडुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोजाए सव्वकालियाए सव्वमिछोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अश्यारो कर्ज तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि. ए ओगणत्रीश पद थयां. आ ठेकाणें केट लाएक जंकिंचिमिछाए ए एक पद माने छे तथा केटलाएक आवस्सियाए ए अनिश्चित पद छे माटे नथी गणता. तेमाटे बहुश्रुत कहे ते प्रमाण जाणवुं. ए अठावन पदनुं अढारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल ४४५ थया ॥ ३१ ॥

हवे वांदणांना दायकना स्थनकनुं ओगणीशमुं द्वार कहे छे.

इछाय अणुन्नवणा, अव्वाबाहं च जत्त जवणा य ॥ अवराह खामणावि य, वंदण दायस्स छठाणा ॥३२॥ दारं ॥ १ए ॥

अर्थः–(इछाय के०) इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नि सीहिआए लगें पांच पदनुं प्रथम स्थानक जाणवुं, तथा (अणुन्नवणा के०) अणुजाणह मे मिउग्गहं ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक, तथा (अव्वा बाहं च के०) अव्याबाध एटले निराबाध पणुं पूछवा अर्थे निसीहिथी मां मीनें दिवसो वइक्कंतो पर्यंत बार पदोनुं त्रीजुं स्थानक जाणवुं, तथा (जत्त के०) जत्ता भे ए बे पदोनुं चोथुं स्थानक, तथा (जवणाय के०) जव णिज्जं च भे ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक, तथा (अवराहखामणाविय के०) अपराधनुं खमाववुं एटले खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं ए चार पदोनुं छठुं स्थानक जाणवुं. अपिच एटले वली ए (वंदणदायस्स के०) वांदणानो जे देवावालो तेनां (छठाणा के०) छ स्थानक जाणवां.

॥ ३३ ॥ ए ७ स्थानकनुं ओगणीशमुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल ४५१ थया.

हवे ए ७ स्थानकमां ७ गुरु वचन होय तेनुं वीशमुं द्वार कहे छे.

छंदेणणुजाणामि, तहत्ति तुप्नंपि वट्टए एवं ॥ अहम
वि खामेमि तुमं, वयणाइं वंदणरिहस्स ॥ ३४ ॥

अर्थः—जिहां इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए एटलो पाठ शिष्य कहे, तेवारें गुरु जो वांदणां देवरावे तो (छंदेण के०) छंदेण ए पाठ कहे, अने वांदणां न देवरावे तो "तिविहेण" एवो पाठ कहे, ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं, तथा ' अणुजाणह मे मिउग्गहं ' ए पाठ शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे (अणुज्जाणामि के०) आज्ञा आपुं छुं. ए बीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा निसीहि इत्यादिक जेवारें शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे (तहत्ति के०) तथेति ए त्रीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारें जत्ता ने इत्यादि शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे (तुप्नंपिवट्टए के०) तुम ने काजें पण वर्ते छे. ए चोथुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारें जवणिज्जं च ने शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे (एवं के०) एमज, तुं पूछे छे तेमज. ए पांचमुं गुरुवचन जाणवुं. तथा जेवारें खामेमि खमासमणो शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे (अहमविखामेमितुमं के०) हुं पण खमावुं छुं तुम प्रत्यें. ए छठुं गुरुवचन जाणवुं. ए ७ (वयणाइं के०) वचन ते (वंदण के०) वांदणां देवा योग्य (आरिहस्स के०) आचार्यादिकनां जाणवां, एटले वीशमुं ७ गुरुना प्रतिवचननुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ४५७ थया ॥ ३४ ॥

हवे त्रण गाथायें करी तेत्रीश आशातनानुं एकवीशमुं द्वार कहेछे. तिहां प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे छे. जिहां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेनो (आय के०) लाभ थाय ते लाभने (शातना के०) पाडवुं नाश करवो तेने आशातना कहियें ते इहां शिष्यादिक जो अविनयथी प्रवर्त्तता होय, गुरु आदिकनी आशातना करे, ते तेत्रीश प्रकारें छे तेनां नाम गाथाना अर्थथी कहे छे.

पुरउ पख्कासन्ने, गंता चिठ्ठण निसीअणायमणे ॥ आलोयण पडिसुणणे, पुव्वालवणे अ आलोए ॥ ३५ ॥ तह उवदंस निमंतण, खध्दा ययणे तहा अपडिसुणणे ॥ खध्दत्ति य त

छगए, किं तुम तज्ञाय नो सुमणे ॥ ३६ ॥ नो सरसि कह छित्ता, परिसंभित्ता अणुठिवाइ कहे ॥ संथार पायघट्टण, चिठ्ठु च्च समासणे आवि ॥ ३७ ॥ दारं ॥ ११ ॥

अर्थः–प्रथम गुरुने (पुरर्ज के०) आगल चालतां शिष्यने विनयभंगादिक लागे माटे ए अकारणें आशातना थाय परंतु जो मार्गादिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग देखाडवा माटे जो गुरुथी आगल चालवुं पडे तो ते अकारणमां गणाय नही. बीजी (पक्क के०) गुरुने पडखे बेहु पासें गमन करे गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय,त्रीजी (आसन्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्ने एटले अडकतो गंता एटले चाले पछवाडे हूकडो चाले तो श्वास, छींक, श्लेष्म, उध्रसादि दोष रूप आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जेटले भूमिभागें गुरुनी साथें चालतां थकां थाय, तेटलेज भूमिभागें गुरुनी पासें (चिठ्ठण के०) उजा रहेवाथकी पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय. एम त्रणे स्थानकें गुरुनी पासें (निसिअ णा के०) बेसता थकां पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय.एवं नव थइ. दशमी (आयमणे के०) आचमने एटले गुरुनी साथें उच्चार भूमियें गयां थकां शिष्य जो आचार्यथकी पहेला आचमन लीये अथवा गुरुनी पहेलां चलु करे अथवा हाथवाणी लीये तो आशातना थाय. अगीयारमी उच्चारादिक बहिर्दिशीगुर्वादिक साथें आव्या पछी गमणागमणाथी जो गुरुथकी प्रथम (आलोयण के०) आलोये, तो आशातना थाय, बारमी गुर्वादिक वडेरा तथा रत्नाधिक जे होय ते रात्रियें बोलावे जे कोण सूतो छे? कोण जागे छे? एम वचन सांजलतो जागतो थको पण (अपडिसुणणे के०) अण सांजलतानी पेरें पाछो प्रत्युत्तर नहीं आपे तो आशातना थाय, तेरमी गुरुआदिकने आलाववा बोलाववा योग्य एवा कोइ श्रावकादिक आव्या होय अथवा आवेला जे तेने आवर्जवा माटे गुरु बोलाव्यानी (पुव्वालवणेय के०) पूर्वेज पोते बोलावे तो आशातना थाय, (अ के०) वली चौदमी अशन पान खादिम स्वादिम ए चारे आहार रूप जे भिक्षा आणी होय ते प्रथम कोइ बीजा शिष्यादिक आगल आलोईने पछी गुरु आगले (आलोए के०) आलोचे तो आशातना थाय ॥ ३५ ॥

पन्नरमी (तह के०) तेमज वली अशनादिक चार जे लाव्या होय ते प्रथम बीजा यतिने देखाडीने पछी गुरुने (उवदंस के०) देखाडे तो आ शातना थाय, शोलमी तेमज अशनादिक चार लाव्या होय तेनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करे के आ जात पाणी लेशो? पछी गुरुने (निमं तण के०) निमंत्रणा करे तो आशातना थाय. सत्तरमी अशनादिक चार सूरि प्रमुख साथें जिक्षायें आणीने पछी गुर्वादिकने पूछ्या विना जेनी साथें पोतानुं मन माने तेने मधुर जाणीने (खद्ध के०) खवरावे तो आशातना लागे, अढारमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक साथें जमतो थको (आयणेण के०) अशनादिक स्निग्ध सरस होय ते पोतेंज वावरे, ते आशातना जाणवी. यदुक्तं दशाश्रुतस्कंधसूत्रे ॥ सहेअसणं वा राइणिए सेहिं भुंजमाणे तत्र सेहे खद्धं खद्धं मायं मायं उसढं उसढं मणुसं मणुसं मणा मं मणामं निद्धंनिद्धं लुखं लुखं आहारित्ता हवइ आसायणा सेहस्सत्ता ॥ (तहा के०) तेमज उंगणीशमी गुरु जेवारें साद करे तेवारें (अपडिसु णणे के०) अप्रतिश्रवणे एटले अणसांजलतानी पेरें गुरुने पाछो जुवाब आपे नही, ते आशातना जाणवी. ए आशातना पूर्वें कही छे, परंतु ते रात्रिसंबंधी शयन करवा पछीनी जाणवी,अने आ ते दिवससंबंधि धिठाइ पणे तथा अनाजोग पणे जाणवी. वीशमी रत्नाधिक तथा गुर्वादिक जे वारें साद करे,तेवारें तेने (खद्धत्तिअ के०) खर एटले अत्यंत कर्कश महोटे स्वरें करी पडुत्तर घणा वाले,कहे के अरे जाइ खाधो रे जाइ खाधो! केम केड मूकता नथी. इत्यादिक कठिन वचन बोले, अथवा आक्रोश गाढस्वरादिक गुरुने करावे. ते आशातना जाणवी, वली एकवीशमी गुर्वादिकें बोला व्यो थको (तत्थगए के०) त्यांथीज एटले पोताने ठेकाणें बेठो थकोज उत्तर आपे, परंतु गुरुनी समीपें आवीने जबाप न आपे तो आशातना थाय. बावीशमी वली गुर्वादिकें बोलाव्यो थको कहे के (किं के०) शुं छे ते? (तुम के०) तमें कहो. कोण कहेवरावे छे? शुं कहो छो? इत्यादिक विनयहीन वचन बोले, ते आशातना जाणवी, तथा त्रेवीशमी वली गुर्वा दिकें बोलाव्यो थको कहे के तूंज कां नथी करतो? एवी रीतें पोताना पूज्यने एक वचनांत बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थका मुजने प्रेर णा करो छो? इत्यादिक वचन कहे, ते आशातना जाणवी. चोवीशमी

गुर्वादिक तथा रत्नाधिक शिष्यने कहे के तमें समर्थ गो, पर्यायें लघु गो, माटे वृद्धनुं तथा ग्लाननुं वैयावच्च करो तेवारें ते पाठो जबाप आपे के जो तमेंज लाभ जाणो गो, तो तमे पोतें केम नथी करता? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार छे ते शुं लाभनो अर्थी नथी? तो तेमनी पासें करावो. तेवारें वली गुर्वादिक तेने कहे के हे शिष्य! तमें आलसु न थाउ. तेवारें वली गुरुने कहे के तमे ते शुं अमनेज दीठा छे? एवी रीतनां वचन बोलीने गुरुनी (तज्जय के०) तर्जना करे ते आशातना जाणवी. पच्चीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कहेता होय तेवारें शिष्य डुमणो थाय परंतु (नोसुमणे के०) सुमनो न थाय, गुर्वादिकना गुणनी प्रशंसा करे नही अने कहे के तमें गृहस्थने विशेष प्रकारें समजावो गो, कहो गो, तेरीतें अमने समजावता नथी अथवा गुर्वादिक तथा रत्नाधिकनो जे रागी होय तेने देखीने डुमणो थाय ते आशातना जाणवी ॥ ३६ ॥

छवीशमी जेवारें गुरु कथा करता होय तेवारें कहे के तमने ए अर्थ (नोसरसि के०) नथी सांभरतो? आ अमुकनो अर्थ एम न होय. एवी रीतें कहेतां आशातना लागे. सत्तावीशमी गुर्वादिक कथा करता होय तेनी वचमां पोतानुं डाहापण जणाववाने अर्थे सभ्य लोकने कहे के ए कथा हुं तमने पठी समजावीश एम कही (कहछित्ता के०) कथानो छेद करे, ते आशातना जाणवी, अठ्ठावीशमी गुरु कथा कहेता थका होय अने तेने सभ्य लोक हर्षवंत हृदयथी सांभलतां होय ते सभ्यजनोने देखतां छतां गुरुने कहे के एवडी शी कथा कहो गो? हमणां भिक्षानो अवसर छे, भोजनवेला पोरिसि वेला छे, एम कही (परिसंभित्ता के०) पर्षदानो भंग करे तो आशातना थाय, उंगणत्रीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कही रह्या पठी पर्षदा (अणुठिवाइ के०) अणउठे थके तेज कथाने पोतानुं डाहापण जणाववाने हेतुयें जे गुरुयें अर्थ कह्यो होय तेहिज अर्थ वली विशेषथी विस्तारी चर्चा देखाडीने (कहे के०) कहे तो आशातना थाय, त्रीशमी (संथारपायघट्टण के०) गुरुनी शय्या तथा संथाराने पोताना पादादिकें करी संघट्टे तेने खमावे नही तो आशातना थाय, इहां शय्या ते सर्वांग प्रमाण जाणवी, अने संथारो ते अढी हाथ प्रमाण जाणवो, अथवा शय्या ते कर्णादिवस्त्रमय जाणवी, अने संथारो ते दर्भादिक तृणमय जाण

वो. एकत्रीशमी गुरुनी शय्या संथारो तथा बेसणादिकने विषे (चिठ के०) तिष्ठेत् एटले बेसे,अथवा आलोटे असज्यशरीरनें अवयवे करी फरसे,तो आशातना थाय, बत्रीशमी गुरुथी (उच्च के०) उंचे आसनें बेसे, अथ वा अधिक बेसणे बेसे तथा गुरु जेवां वस्त्र पहेरे, तेथकी अधिक मूल्य वालां वस्त्रादिकनो परिज्ञोग करे, तो आशातना थाय, तेत्रीशमी (समा सणेयावि के०) गुरुने समान आसने बेसे, अथवा गुरुना जेवां वस्त्रा दि होय, तेवांज समान वस्त्रादिकनो परिज्ञोग करे तो आशातना थाय ठे. इहां अपिशब्द निश्चयवाचक ठे.तथा गुरुने आगल अने पाठल तथा बे बाजुयें बेसवादिकनी आशातना तो पूर्वे कहेली ठे. ए तेत्रीश आशातना टालतो थको शिष्य विनयी कहेवाय,ते शिष्य वांदणां देवा देवराववाने योग्य जाणवो, ए प्रवचनपात्र थाय ॥ ३७ ॥ ए तेत्रीश आशातनानुं एकवी शमुं द्वार संपूर्ण थयुं. सर्व बोल (४७०) थया ॥

हवे वे विधिनुं बावीशमुं द्वार कहे ठे. एटले पडिक्कमणुं करवानी सा मग्रीना अज्ञावें तथा वे प्रतिक्रमण करणादि पर्याप्तिने अज्ञावें प्रज्ञातें अ ने संध्यायें वांदणां बे देवां, ते वेहु विधिनो अनुक्रम जाणवो,ते कहे ठे.

इरिया कुसुमिणुस्सग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणालोयं ॥
वंदण खामण वंदण, संवर चउ ज्ञोज्ञ डु सज्जाउ ॥ ३८ ॥

अर्थः—तिहां प्रथम प्रज्ञातनो वंदनक विधि कहे ठे. इहां पहेली १ (इ रिया के०) इरियापथिकी प्रतिक्रमीने, पठी २ (कुसुमिणुस्सग्गो के०) कुसुमिण डुसुमिणि उज्ञाविणी निमित्तें चार लोग्गस्सनो काउस्सग्ग करे,ते वार पठी ३ आदेश मागीने, (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, पठी ४ आदेश मागीने, (पुत्ति के०)मुहपत्ति पडिलेहे, पठी (वंदण के०)वांदणां बे आपे, तेवार पठी ६ (आलोयं के०) राइयं आलोए, तेवार पठी ७ (वं दण के०) बे वांदणां आपे. पठी ८ (खामण के०) अप्नुठिउमि अप्नि तर राइउं खामवुं, पठी ए (वंदण के०) बे वार वांदणां आपे, पठी १० (संवर के०) पच्चक्काण करे. पठी ११ (चउज्ञोज्ञ के०) चार ख मासमण पूर्वक ज्ञगवन् आचार्यादिक चारने थोज्ञ वंदन करे, पठी १२ (डुसज्जाउ के०) सद्यायसंदिसाहुं,सद्याय करुं,ए बे खमासमणें बे आ

देश मागी सझाय संदिसाउं सझाय करे. ए प्रभातवंदनकविधि जाणवो॥३८

हवे संध्यावंदनकविधि अथवा लघुप्रतिक्रमणविधि कहे छे.

इरिया चिइवंदण पु, त्ति वंदणं चरिमवंदणालोयं ॥ वंदण खा
मण चउछो, भ दिवसुस्सग्गो डुसझाउ ॥ ३९॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थः—प्रथम १ (इरिया के०) इरियावहि पडिक्कमीने पछी आदेश मागी२ (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, तेवार पछी ३ (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पछी ४ (वंदणं के०) बे वांदणां दीये, ते देइने पछी ५ (चरिम के०) दिवसचरिम पच्चरकाण करे,पछी ६ (वंदण के०) बे वांदणां देइने ७ (आलोयं के०) देवसियं आलोए. पछी ८ (वंदण के०) बे वांदणां देइने, ए (खामण के०) देवसियं खामवुं करे, पछी १० (चउछोभ के०) चार खमासमणां देइ भगवानादिक चारने वांदी पछी आदेश मागीने ११ (दिवसुस्सग्गो के०) देवसियपायछित्तविसोहणछं चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी आदेश मागीने १२ (डुसझाउ के०) बे खमासणे सद्याय करे,एटले एक खमासमणे सद्याय संदिसाउं, बीजे खमासमणे सद्याय करुं. इति संध्यावंनकविधिः समाप्तः ए बावीशमुं द्वार प्राभातिकवंदन तथा संध्यावंदन मली बे विधियें करी बे प्रकारनुं कह्युं. उत्तर भेद ४७२ थया ॥ ३९॥

एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरण करण माउत्ता ॥
साहू खवंति कम्मं, अणेगभवसंचियमणंतं ॥४०॥

अर्थः—(एयं के०) ए पूर्वे कही आव्या जे बोल, तेणें करी (किइकम्म के०) कृतिकर्म जे वांदणां, तेनो जे (विहिं के०) विधि जे व्यवहार ते प्रत्यें (जुंजंता के०) प्रयुंजतां थकां (चरणकरणं के०) चरणसित्तरी अने करणसित्तरी तेना गुणें करी (आउत्ता के०) आयुक्त एटले सहित एवा (साहू के०) जे साधु निर्ग्रंथ चारित्रीया ते (अणेगभवसंचियं के०) अनेक भवनां संचित एटले कोटि जन्मनां उपार्जन करेलां अने जेनो (अणंतं के०) डुरंत विपाक छे एटले अनंता काल पर्यंत भोगवाय एवां अछेहपणे रहेनारां जे कर्म अथवा अनंत कालनां उपार्जन करेलां एवां जे (कम्मं के०) कर्म छे ते कर्मो प्रत्यें तुरत शीघ्रपणे (खवंति के०) क्षेपवी निराकरण करे छे, अर्थात् क्षय पमाडे छे ॥ ४० ॥

अप्पमइ नवबोहत्थं, नासियं विवरियं च जमिह मए॥ तं सोहंतु गीयत्था, अणन्निनिवेसि अमह रिणो॥ ४१ ॥ इति गुरु वंदनकनाष्यं समाप्तम्॥

अर्थः–आ वांदणांनो विचार ते (अप्पमइ के०) अल्प ले मति जेहनी एवा जे (नव के०) नव्यप्राणी तेमना (बोहत्थं के०) बोध ज्ञानने अर्थें (नासियं के०) नांख्यो परंतु आवश्यक बृहद्वृत्त्यादिक ग्रंथने विषे एनो अत्यंत विस्तार ले त्यांथी विशेषें जोवुं, इहां संक्षेपथी कह्यो ले. तेमांहे जे अनानोगें (विवरिअं के०) विपरीतपणे (च के०) वली (जं के०) जे (इह के०) ए नाष्यमांहे (मए के०) महाराथी कहेवाणुं होय (तं के०) तेने वली (अणन्निनिवेसि के०) अकदाग्रही एटले हठवादरहित एवा अने (अमहरिणो के०) मत्सरपणाना परिणामें रहित, गुणना रागी एवा जे (गीयत्था के०) गीतार्थ एटले गीतना अर्थ तेना जाण अर्थात् सूत्रार्थना जाण तथा निश्चय व्यवहारने विषे कुशल होय ते (सोहंतु के०) शोधजो, अर्थात् शुद्ध करजो. ए ४९२ बोलें करी श्रीगुरुने वांदणां देवानो विधि कह्यो॥ आंहीं "इन्नामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" इत्यादिक गुरुवंदन सूत्र जो पण ग्रंथकारें मूल पाठमां गाथारूपें कह्युं नथी, तो पण प्रसंगथी तेनो अर्थ लखवो जोइयें, परंतु आ प्रतिक्रमणने विषे प्रथम सुगुरु वांदणांमां ते अर्थ सविस्तर लखाइ गयेलो होवाथी आ ठेकाणें लख्यो नथी. इति श्रीगुरुवंदनक नाष्य अर्थ सहित संपूर्ण॥ ४१ ॥

हवे एवा गुणवंत गुरुप्रत्यें वांदणां देइने तेमना मुखथी यथाशक्तियें पच्चरकाण लेवुं, केम के 'ज्ञानस्य फलं विरतिः' एवुं वचन ले. वली आगम मध्यें कह्युं ले के, "पच्चरकाणेणं नंते जीवे किं जणयइ पच्चरकाणेण य आसव दाराइनिरुंनंति" तेमाटें पच्चरकाण करवानो महोटो लान ले. ते पच्चरकाण शुं? अने ते केटला प्रकारनां पच्चरकाणो ले? इत्यादिक जाणवा माटें त्रीजुं पच्चरकाण नाष्य कहे ले.

॥ अथ ॥

॥ तृतीयपच्चरकाणज्ञाष्यप्रारंज्ञः ॥

तिहां प्रथम पच्चरकाणनां नवद्वार एक गाथायें करी कहे बे.

दस पच्चरकाण चउविहि, आहार डुवीसगार अडुरुत्ता ॥
दस विगई तिस विगई, गय डुहज्ञंगा ब सुद्धि फलं ॥ १ ॥

अर्थः– प्रथम (दसपच्चरकाण के०) पच्चरकाणना दश ज्ञेद बे, तेनुं द्वार कहेशे. बीजुं पच्चरकाण करवाने विषे पाठ विशेषरूप (चउविहि के०) चार प्रकारनो विधि बे तेनुं द्वार कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना (आहार के०) आहारना स्वरूपनुं द्वार कहेशे, चोथुं पच्चरकाणमां (अडुरुत्ता के०) अद्विरुक्त एटले बीजी वारनां अण उच्चरयां अर्थात् एकवार कह्यां तेनां ते फरी जुदां जुदां पच्चरकाणमां आवे, ते न लेवां एवा (डुवीसगार के०) बावीश आगारनुं द्वार कहेशे, पांचमुं (दसविगई के०) दश विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं द्वार कहेशे. बहुं (तिसविगईगय के०) त्रीशविकृतिगत एटले ब मूल विगयना त्रीश निर्वीयाता थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे, सातमुं एक मूल गुण पच्चरकाण तथा बीजुं उत्तरगुण पच्चरकाण एम (डुहज्ञंगा के०) बे प्रकारना ज्ञांगा पच्चरकाणना थाय, तेनुं द्वार कहेशे. आठमुं पच्चरकाणनी (ब सुद्धि के०) ब शुद्धिनुं स्वरूप निश्रेंथी, कहेवुं तेनुं द्वार कहेशे. नवमुं पच्चरकाण कस्याथी इहलोक तथा परलोक मली बे ठेकाणे (फलं के०) फल थाय तेनुं द्वार कहेशे ॥ १ ॥ ए मूल नवद्वारनां नाम कह्यां. एनां उत्तरद्वार आंहीं विवस्यां नथी, पण ग्रंथांतरें नेवुं कह्यां बे, अने अहीं पण शरवालो आपतां नेवुं थाय बे, ते आगल विस्तारें कहेशे.

इहां प्रथम पच्चरकाण शब्दनो अर्थ करे बे. तिहां एक प्रति, बीजुं आ, अने त्रीजुं आख्यान, ए त्रण पद मलीने प्रत्याख्यान शब्द थयो बे. तेमां अविरतिपणानां स्वरूपप्रत्यें प्रति एटले प्रतिकूलपणे करी आ एटले आगार मर्यादाकरणस्वरूपें करी आख्यान एटले कहेवुं कथन करवुं ते बे जेने विषे, तेने प्रत्याख्यान कहीयें.

अथवा प्रति एटले आत्मस्वरूप प्रत्यें आ एटले अभिव्यापीने करण एटले करवुं एटले अनाशंसारूप गुण आत्माने उपजे एम करे तेनुं जे आख्यान एटले कथनरूप ते छे जेने विषे तेने प्रत्याख्यान कहीयें.

अथवा (प्रति के०) परलोकें (आ के०) क्रिया योगाथैं शुभाशुभ फल कथनरूप जेने विषे छे तेने प्रत्याख्यान कहीयें. एम घणां व्याख्यान छे.

ते प्रत्याख्यान एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तरगुणरूप एवा बे भेदें छे. तेमां मूलगुणनुं पच्चरकाण यतिने पंचमहाव्रतादि रूप छे अने उत्तरगुण प्रत्याख्यान तो यतिने पिंमविशुद्ध्यादिक छे तथा श्रावकने मूल गुण तो पांच अणुव्रतादिकनुं छे अने उत्तर गुण तेशिक्षाव्रतादिकनुं छे. तथा सामान्य प्रकारें जे अविरतिपणानुं प्रतिपक्ष ते सर्व पच्चरकाण कहीयें.

हवे प्रतिदिन उपयोगीपणा माटे उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकारें होय, ते आ ग्रंथना प्रथम द्वारना भेद रूपें कहे छे.

अणागय मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटि अणगारं॥
सागार निरवसेसं, परिमाणकडं सके अध्धा ॥ १ ॥

अर्थः–प्रथम जे कारण विशेपें आगलथी करे पण ते दिवसें न करी शके ते (अणागयं के०) अनागत पच्चरकाण ते पर्यूषणादिक पर्व आव्या नी पहेलांज एवुं विचारे जे गुरु, ग्लान, शिष्य अने तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च महारे करवुं पडशे, तेवारें व्याकुलताने लीधे महाराथी अष्टम्यादिक तपश्चर्या थइ शकशे नही, तो मने लाजनी हानि थशे माटें ते पर्व आव्या नी पहेलांज गुरुपासें पच्चरकाण लइने तप करे ते अनागत भावी पच्चरकाण.

बीजुं (अइक्कंतं के०) अतिक्रांत पच्चरकाण ते पूर्वोक्त रीतें पर्यूषणादिक पर्व अतिक्रम्या पछी तेहिज कार्यादिकने हेतुयें जे पाछलथी अष्टम्यादिक तप गुरुपासें पच्चरकाण लइने करे, तेने अतिक्रांत अतीत पच्चरकाण कहीयें.

त्रीजुं (कोडीसहियं के०) कोटिसहित पच्चरकाण ते प्रभातें उपवास प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिवसना प्रभात समये पण तेहिज उपवासादिकनुं पच्चरकाण करे, एम छठादिकनी पण कोटि एटले संधि मेलवे एटले छठादि एक पच्चरकाण पूर्ण थयानी वखतें बीजुं पच्चरकाण पच्चरके. एवा कोटिक्रमें जे तप करवुं, ते कोटिसहित तप अथवा नीवी, एकाशनादि

कने विषे पच्चक्खाण पार्या पहेलां आंबिलादिक करवुं ते, एटले एकनो अंत अने बीजा पच्चक्खाणनी आदि ते कोटिसहित पच्चक्खाण जाणवुं.

चोथुं (नियंटि के०) नियंत्रित तप ते पुष्ट नीरोगी तथा ग्लानपणे होय तो पण एवुं चिंतवे जे अमुक दिवसें महारे अमुक छठ अठमादिक तप करवुं. पछी गमे तेवुं कारण उपजे तो पण ते निर्धारेला दिवसें ते तप अवश्य करे, पण मूके नही. एम नियतकालें ते पच्चक्खाण चौदपूर्वी दशपूर्वी, जिनकल्पीने विषे प्रथम वज्र रुषजनाराच संहननने विषे हतुं. हमणां व्युछिन्न थयुं छे. थिविर पण ते वेलायें ते तप करता हता, परंतु हमणां ते पच्चक्खाण नथी. ए नियंत्रित पच्चक्खाण जाणवुं.

पांचमुं (अणगारं के०) अनागार तप ते "अन्नछणाजोगेणं" तथा "सहसागारेणं" ए बे आगार तो सर्वत्र होयज छे,परंतु महत्तरागारादिक आगार जे पच्चक्खाणने विषे न होय, ते आगार रहित पच्चक्खाण कहीयें. ए पण पहेला संघयणनी साथें व्युछेद थयुं.

छठुं (सागार के०) आगार सहित ते महत्तरागारादि आगारसहित पच्चक्खाण करवुं, ते आगार सहित पच्चक्खाण जाणवुं.

सातमुं (निरवसेसं के०) निरवशेष तप ते समस्त अशनादिक चार आहार वस्तु अने अनाहार वस्तु प्रमुख सर्वेनुं पच्चक्खाण करीयें. चउविहार प्रमुख करीयें अनशन करियें ते निरवशेष पच्चक्खाण जाणवुं.

आठमुं (परिमाणकडं के०) परिमाणकृत तप पच्चक्खाण ते दातीनी संख्या करे तथा कवलनी संख्या करे तथा घरनी संख्या करे, एटले दातीनुं परिमाण तेमज कोलीयानुं परिमाण तथा घरनुं परिमाण जे भिक्षादिकें करवुं, अथवा मग अडद प्रमुख द्रव्यादिकें जे भिक्षानो परित्याग ते सर्व परिमाणकृत पच्चक्खाण जाणवुं.

नवमुं (सके के०) सांकेतिक पच्चक्खाण ते इहां (केत के०) गृह तेणें करी जे सहित वर्त्ते तेने गृहस्थ कहीयें, ते संबंधी प्रायः ए पच्चक्खाण गृहस्थने होय अथवा (संकेत के०) चिन्ह जे अंगुष्ठादिक तेणें करी होय ते संकेत कहेवाय एटले कोइएक श्रावक पोरिसी आदिक पच्चक्खाण करीने बाहेर कोइ कामें अथवा क्षेत्रादिकें गयो होय तिहां पोरिसीनो काल पूर्ण थयो अथवा घरमांज बेठो छे अने पोरिसीनो काल पूर्ण थयो

बें, परंतु जोजन सामग्री तैयार थइ नथी ते वखत विचार करे जे एटलो काल वचमां म्हारो अपच्चरकाणपणे रहेशे, ते श्रावकने योग्य नथी. एम चिंतवी एक अंगुठ सहिअं पच्चरकामि एटले जिहां सुधी मुठीमां अंगुठो राखुं त्यांसुधी म्हारे पच्चरकाणनी सीमा बे. एमज बीजुं मुठसहियं पच्चरकामि एटले मुठी बांधी राखुं तिहां सुधी. त्रिजुं गंठसहियं पच्चरकामि एटले गांठ बांधी राखुं तिहां सुधी. चोथुं घरसहिअं पच्चरकामि. पांचमुं प्रस्वेदसहियं ते ज्यां सुधी अंगना परसेवाना बिंदु निकले, त्यां सुधी. बठुं उस्साससहियं पच्चरकामि. सातमुं थिबुकसहियं पच्चरकामि एटले स्तिबुक ते ज्यां सुधी पाणीना बिंदूआ जाजनादिकें तथा करादिक सूके तिहां पर्यंत जाणवुं. आठमुं जोइरकसहियं पच्चरकामि एटले ज्योतिष्क जे दीवा प्रमुखनी ज्योति रहे तिहां सुधी संकेत करे. ए आठ प्रकारें नवमुं सांकेतिक पच्चरकाण कहेवाय बे जेमाटें कह्युं बे के ॥ अंगुठ मुठी गंठी, घर सेउ उस्सास थिबुक जोइरको ॥ पच्चरकाण विचाले, किच्च मणजिग्गहे सुचियं ॥ १ ॥ तथा कोइ पोरिसी आदि पच्चरकाण न करे अने केवल अजिग्रहज करे तो गांठ प्रमुख न बोडे त्यां लगें पच्चरकाण तेने थाय, तेथी ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्चरकाणोनी वचमां थाय बे, तेम अजिग्रहने विषे पण थाय बे. तथा साधुने पण कोइक स्थानकें ज्यां सुधी मंकल्यादिकें गुर्वादिक न आव्या होय त्यां लगें अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तेवारें पण ए अजिग्रह संकेत पच्चरकाण थाय.

दशमुं (अद्धा के०) अद्धा ते काल मुहूर्त्त पौरुष्यादिक प्रमाणने पण उपचारथी जाणी लेवो. ते काल पच्चरकाण जाणवुं ॥ २ ॥

हवे ए दश पच्चरकाण कह्यां, तेमां बेहलुं अद्धा पच्चरकाण कह्युं, तेना दश जेद बे, ते एक गाथायें करी कहे बे.

नवकार सहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढ गासणेगठाणे अ ॥
आयंबिल अनत्तठे, चरिमे अ अजिग्गहे विगई ॥ ३ ॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थः—प्रथम (नवकारसहिअ के०) नवकारसहित एटले नवकार कहीने पारीयें ते बे घडी प्रमाण नोकारसी पच्चरकाण कहीयें, बीजुं पहोर दिवससुधी पच्चरकाण ते (पोरिसि के०) पोरिसि कहीयें, एमां साढ्

पोरिसी साऊं एटले दोढ पहोरनुं पच्चरकाण पण जाणवुं. त्रीजुं (पुरिमड्ढ के०) पुरिमाऊं, ते बे पहोर प्रमाणनुं पच्चरकाण. चोथुं (एगासण के०)एकाशननुं पच्चरकाण (अ के०) अने पांचमुं (एगठाणे के०) एकलठाणुं. ए त्रणेनुं बे पहोर प्रमाण पच्चरकाण जाणवुं. ठछुं जिहां एक हाथ विना बीजुं अंग हाले नही ते (आयंबिल के०)आयंबिल पच्चरकाण.सातमुं(अजत्तठे के०) अजक्तार्थे एटले उपवासनुं पच्चरकाण.आठमुं (चरिमे अ के०) दिवसचरिम अथवा जवचरिमादिरूप जाणवुं. नवमुं (अजिग्गहे के०) अजिग्रह पच्चरकाण ते अमुक वस्तु तेवारेंज खाउं जेवारें अमुक करुं? इत्यादिक अजिग्रह करे ते. तथा दशमुं (विगई के०) विगई निविगइनुं पच्चरकाण जाणवुं. ए दशे पच्चरकाणोने कालनी मुख्यता ठे माटें अद्धा पच्चरकाण कहीयें॥३॥

इहां शिष्य पूछे ठे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चरकाण कह्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं कालमान न कह्युं माटें नोकारसी जे ठे, ते अजिग्रह पच्चरकाण कहेवाय पण कालपच्चरकाण थइ शके नहीं?

त्यां गुरु उत्तर कहे ठे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द आव्यो माटें सहित शब्दें कालप्रमाण जाणवुं, अने अल्प आगार ठे माटें अल्पकाल जाणवो.

तेवारें शिष्य पूछे ठे के पोरिसी तो एक प्रहरकाल प्रमाण ठे माटें ए नवकारसीने विषे मुहूर्त्तछ्यादिक काल केम न लीधो ? केम के मुहूर्त्तछ्यादिक काल पण पोरिसीथी अल्प ठे माटें बे घडीनुंज मान शा वास्ते लीधुं?

गुरु उत्तर कहे ठे, के हे शिष्य! तें कह्युं ते सत्य ठे, परंतु सर्वथी स्तोक काल अद्धापच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज ठे, मुहूर्त्तद्धा अद्धा इति वचनात् तेमाटें एनुं एक मुहूर्त्तज कालमान जाणवुं.

हवे ए नवकारसी पच्चरकाण, सूर्योदय पहेलांज करवुं अने नमस्कारें करी पारवुं, अन्यथा जंग लागे, नोकारसी कस्या पठी आगल पोरिसीयादिक थाय, परंतु ते विना न थाय अने यद्यपि नोकारसी विना पोरिसीयादिक करे तो काल संकेत रूप जाणवो. तथा वली वृद्ध संप्रदायें एम कहे ठे जे नोकारसी पच्चरकाण जे ठे, ते रात्रें चउविहारादिक पच्चरकाणना तारण रूप ठे एटले शिक्षा रूप ठे. इत्यादिक घणो विचार ठे ते प्रवचनसारोद्धारग्रंथनी वृत्तिथी जाणवो. अहींयां विशेषें करी लख्यो नथी.

हवे पुरुष प्रमाण बाया जेहने विषे थाय ते पोरिसी जाणवी "आसा ढमासे डुपया" इत्यादिक पाठ श्रीउत्तराध्ययनादि सूत्रथी जाणवो.

ए रीतें नोकारसी, पोरिसी, दिननुं पूर्वार्द्ध ते पुरिमड्ढ, एकासण, एक लठाणुं, आयंबिल, उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह अने विगइ एवं दश पच्चरकाणना नामनुं ए प्रथमद्वार थयुं. उत्तर भेद दश थया ॥ ३ ॥

हवे बीजे द्वारें पच्चरकाण करवानो पाठरूप विधि चार प्रकारें कहे छे.

उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चरक उग्गए सूरे॥
सूरे उग्गए पुरिमं, अभत्तठं पच्चरकाइत्ति ॥ ४ ॥

अर्थः—प्रथम नवकारसीनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे (अ के०) वली (नमो के०) नमुक्कार सहिअं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सा गारेणं वोसिरई ए उच्चार करवानो प्रथम विधि जाणवो.

बीजो (पोरिसि के०) पोरिसीनुं (पच्चरक के०) पच्चरकाण उच्चरीयें, तेवारें (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे पोरिसियं पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं ए उच्चार करवानो बीजो विधि जाणवो.

त्रीजो पूरिमार्द्धनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (सूरेउग्गएपुरिमं के०)सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं ए उच्चार करवानो त्रीजो विधि.

चोथो अभक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चरकाण उच्चरीयें तेवारें (अभ त्तठं पच्चरकाइ के०) अभत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं चउविहंपि आहारं (इति के०) एम उच्चार करीयें, ए चोथो विधि जाणवो.

अहींयां पुरिमार्द्ध ते दिवसनुं पूर्वार्द्ध समजवुं एटले नोकारसी आदि पच्चरकाण जो पूर्वें सूर्योदयथी न कर्खुं होय तो पण पुरिमड्ढ थाय, एम उपवासादिक पण थाय. तथा सूर्योदयथी मांमीने यावत् आगला दिव सनो सूर्योदय थाय,त्यां सुधी अभक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चरकाण कहेवाय छे,एम जणाववाने तथा रात्रिनो चउविहार कर्यो होय अने बीजे दिवसें एक उपवासनुं पच्चरकाण करे, तेहने चोथभत्तनुं पच्चरकाण थाय. तथा रात्रियें चउविहारनुं पचरकाण न कर्खुं होय अने बीजे दिने उपवास करे,

तेने अन्नत्तठनुं पच्चरकाण कहीयें, पण चोथन्नत्तनुं पच्चरकाण न कहीयें. अने उन्नयकोटि एकासणादिकें तो चोथन्नत्तनुं पच्चरकाण होयज. इत्यादिक जणाववा माटें चारे विधि देखाड्या ॥ ४ ॥

हवे बीजा पण चार विधि ठे, ते देखाडे ठे.

नणइ गुरु सीसो पुण, पच्चरकामित्ति एव वोसिरई ॥
उवनगिब पमाणं, न पमाणं वंजणबलणा ॥ ५ ॥

अर्थः—प्रथम (गुरु के०) गुरु जे पच्चरकाणनो करावनार होय, ते पच्चरकाइ एम (नणइ के०) नणे, एटले कहे; ए प्रथम विधि जाणवो. (पुण के०) वली (सीसो के०) शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते (पच्चरकामि के०) पच्चरकामि (इति के०) एम कहे. ए बीजो विधि जाणवो. अने (एव के०) एम संपूर्ण पच्चरकाणे गुरु (वोसिरई के०) वोसिरई कहे. ए त्रीजो विधि जाणवो अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे, ए चोथो विधि जाणवो. ए चार विधि कह्या.

(इब के०) इहां पच्चरकाणने विषे करतां तथा करावतां थकां पोताना मननो जे (उवउग के०) उपयोग एटले मननी धारणा ठे तेज (पमाणं के०) प्रमाण ठे एटले मनमांहे जे पच्चरकाण धार्युं होय तेज प्रमाण ठे. परंतु (वंजण के०) अक्षर तेनी (बलणा के०) ठलना ठे एटले स्ख लना ठे. अर्थात् अनान्नोगने लीधे धारेला त्रिविहार पच्चरकाणथी बीजो कोइ चउविहार पच्चरकाणनोज पाठ उच्चरीयें, ते वंजण ठलना जाणवी ते (न पमाणं के०) प्रमाण नथी ॥ ५ ॥

हवे तेहीज उच्चारनो विशेष विधि कहे ठे.

पढमे ठाणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइअंमि ॥
पाणस्स चउबंमि, देसवगासाइ पंचमए ॥ ६ ॥

अर्थः—हवे एनां पांच स्थानक ठे तेमां (पढमेठाणे के०) प्रथम स्था नकने विषे कालपच्चरकाणरूप नोकारसी प्रमुख (तेरस के०) तेर पच्च रकाण जाणवां, तेनां नाम आगली गाथायें कहेशे, तथा (बीए के०) बीजा स्थानकने विषे विगइ, नीवी अने आयंबिल ए (तिन्निउ के०) त्रण पच्चरकाण जाणवां. तथा (तइअंमि के०) त्रीजा स्थानकने विषे (तिगाइ

के०) त्रिकादिक एटले एकासण, बीयासण ने एकलठाणादिक, ए त्रण पच्चख्काण जाणवां, तथा (चउत्थंमि के०) चोथा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा इत्यादि अचित्त पाणीनां ब आगार जाणवां, तथा (पंचमए के०) पांचमा स्थानकने विषे (देसवगासाइ के०) देशावकाशिकादि पच्चख्काण करवा जाणवां ॥ ६ ॥

ए पांचस्थानक मांहेला प्रथमादि स्थानकना पृथक् पृथक् नेद कहे बे.

नमु पोरिसीसड्ढा, पुरिमवड्ढ अंगुठ माइ अड तेर ॥ निवि
विगइ अंबिल तिय, तिय डु इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥

अर्थः–प्रथम स्थानकें तेर नेदनां नाम कहे बे. एक (नमु के०) नमुक्कारसी, बीजुं (पोरिसी के०) पोरिसि, त्रीजो (सड्ढा के०) सार्द्धपोरिसि ते दोढ पहोर पर्यंत, चोथो (पुरिम के०) पुरिमड्ढ ते बे पहोर, पांचमो (अवड्ढ के०) अवड्ढ ते त्रण पहोरनुं पच्चख्काण. ए पांचनी सार्थे पूर्वोक्त (अंगुठमाइ के०) अंगुष्ठ सहितादिक (अड के०) आठ नेद मेलवीयें तेवारें (तेर के०) तेर नेद थाय. तथा बीजा स्थानकें एक (निवि के०) निवी, बीजो (विगइ के०) विगइ अने त्रीजो (अंबिल के०) आयंबिल ए (तिय के०) त्रण पच्चख्काण जाणवां, तथा त्रीजा स्थानकने विषे एक (डु के०) बेआसणुं, बीजुं (इगासण के०) एकासणुं अने त्रीजुं (एगठाणाई के०) एकलठाणादिक ए (तिय के०) त्रण पच्चख्काण जाणवां ॥७॥

हवे वली प्रकारांतरें उपवासादिक विधियें उपवासने दिवसें
पांच स्थानक केवी रीतें करवां? ते कहे बे.

पढमंमि चउब्भाई, तेरस बीयंमि तइय पाणस्स ॥
देसवगासं तुरिए, चरिमे जहसंनवं नेयं ॥ ८ ॥

अर्थः–(पढमंमि के०) पहेले स्थानकें (चउब्भाई के०) चोथादिक एटले एक उपवासथी मांमीने चोथ बठ इत्यादि यावत् चोत्रीश नक्त पर्यंत पच्चख्काण करवां, तथा (बीयंमि के०) बीजा स्थानकने विषे नोकारसी, पोरिसी, सार्द्धपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ अने गंठसहियं, मुठसहियं, अंगुठसहियं, घरसहियं, प्रस्वेदसहियं, श्वासोश्वाससहियं, जलबिंडुसहियं, दीपसहियं, ए (तेरस के०) तेर पच्चख्काण मांहेलुं हर कोइ पच्च

स्काण करवुं, तथा (तइय के०) त्रीजा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणीना छ आगारनुं पच्चरकाण करवुं तथा (तुरिए के०) चोथा स्थानकने विषे (देसवगासं के०) देसावगासिकनुं पच्चरकाण करवुं तथा पांचमा स्थानकने विषे (चरिमे के०) छेहेडानुं पच्चरकाण जे दिवसच रिमं एटले रात्रिनुं डुविहार, त्रिविहार, चउविहार पाणहार प्रमुखनुं पच्च रकाण ते (जहसंजवं के०) यथासंजवें जे पोताने करवानी इछा होय ते यथाशक्तियें करवुं तथा जवचरिमादि जे छे, ते पण यथासंजवें करवुं. एम (नेयं के०) जाणवुं. ए पांच मांहेलुं जे कोइ करवुं ते पच्चरकाण कहीयें ॥८॥

वली ए पच्चरकाण करवाना पाठनोज विशेष कहे छे.

तह मञ पच्चरकाणे,सु न पिहु सूरुग्गयाइ वोसिरई ॥
करण विहीउ न जन्नइ, जहावसीयाई बिअछंदे ॥ ए ॥

अर्थः-(तह के०) तथा ए पद विशेष देखाडवावाची छे (मञप च्चरकाणेसु के०) मध्यनां बे स्थानक जे विगइ, नीवी अने आयंबिलनुं तथा एकासण,बियासण अने एकलठाणानुं ए बेनां छ पच्चरकाणोने विषे पृथग् पृथग् पच्चरकाणे (सूरुग्गयाइ के०) सूरे उग्गए विगइउ पच्चरकाइ इत्या दिक पाठ (नपिहु के०) वारंवार न कहेवो, एटले प्रथम जे पच्चरकाण मां रुे,तिहां सूरे उग्गए कहेवो,परंतु पच्चरकाण पच्चरकाण प्रत्यें न कहेवो,तेमज (वोसिरई के०) वोसिरइ तथा वोसिरामि ए पाठ पण अंतने विषे एक वार कहीयें,पण वारं वार न कहीयें ए (करणविहीउ के०) करवानो विधि एटले पूर्वाचार्य परंपरायें एमज कहेता आव्या छे करवानो एहज विधि छे. मार्टे महोटा पुरुष पण (नजन्नइ के०) नथी जणता. (जहा के०) जेम (आवसीयाई के०) आवस्सियाए ए पाठ (बिअछंदे के०) बीजा वांदणाने विषे कहेता नथी, ए पण पूर्वाचार्यनी परंपरा छे तेम इहां पण जाणी लेवुं ॥ ए ॥

तह तिविह पच्चरकाणे, जन्नंति अ पाणग छ आगारा ॥
डुविहाहारे अचित्त, जोइणो तहय फासु जले ॥ १० ॥

अर्थः-(तह के०) तेमज वली (तिविहपच्चरकाणे के०) त्रिविहारना

पच्चरकाणने विषे तथा एकासणादि पच्चरकाणे प्रासुक निर्जीव जलपान सं बंधि (पाणग के०) पानक एटले पाणीना (छ आगारा के०) छ आगार (जसंतिअ के०) जणे छे कहे छे. तेनां नाम कहे छे. पाणस्स लेवेण वा, अले वेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेण वा, असिछेण वा. ए छ आगा रनां नाम जाणवां. तथा (डुविहाहारे के०) द्विविधाहार पच्चरकाणने विषे (अचित्तनोइणो के०) अचित्तनोजी होय सचित्तनोज्य परिहारें तेने तथा (तहय के०) तेमज जे एकासणा बियासणाविना (फासुजले के०) फासु पाणी लेतो होय एवा सचित्त परिहारीने पण पच्चरकाणने विषे पा णीना छ आगार कहेवा. ए प्रथम विकल्प.

तथा अचित्तनोजी होय अने फासु निर्जीव पाणी पीतो न होय तेने पाणस्सना आगार न कहेवा. ए बीजो विकल्प. तथा जे सचित्तनोजी होय पण फासु पाणी पीये छे तो तेने पाणस्सना आगर छ कहेवा. ए त्रीजो विकल्प तथा सचित्तनोजी छे अने फासु पाणी पीतो नथी तो तेने पाण स्सना छ आगार न कहेवा. तथा सचित्तनोजी छे अने केवलखादिम, अ शन अने स्वादिम रूप त्रण आहारना पच्चरकाणने उद्देशें रात्रिप्रमुखें ति विहारं करे छे, तिहां पण पाणस्सना आगार न कहेवा. ए चोथो विकल्प. ए चार विकल्प आगारना कह्या, अहीं तथा शब्दथी विशेष जाणवुं ॥१०॥

इत्तुच्चिय खवणंबिल, निवियाइसु फासुयं चि य जलं तु ॥
सड्ढावि पियंति तहा, पच्चरकंति य तिहाहारं ॥ ११ ॥

अर्थः-(इत्तुच्चिय के०) एटलाज माटें अचित्तनोजी होय तेने (खवण के०) क्षपण एटले उपवासने विषे (अंबिल के०) आयंबिलने विषे, तथा (निवियाइसु के०) निवि आदिक एटले निवि एकासणादिक तिविहार पच्चरकाण तथा आदिशब्दथी सचित्त परिहारने विषे (चिय के०) निश्चयथकी (फासुयं के०) फासुक अचित्त (जलं के०) जल ते (तु के०) जेम यति फासुक निर्जीव पाणी पीये (तहा के०) तेनी परें (सड्ढावि के०) श्रावक पण फासुक पाणी (पियंति के०) पीये तेने पण एहिज आगार कहीयें, परंतु ते (य के०) वली (तिहाहारं के०) तिविहार पच्च रकाण (पच्चरकंति के०) पच्चरके तेवारेज होय पण डुविहारें न होय.

सचित्तभोजीने पण उपवास, आयंबिल, निविनुं पच्चरकाण तिविहारें होय ते ऊष्ण पाणी पीये अने एकासणादि पच्चरकाणनो नियम नथी. ए मां तो डुविहार, त्रिविहार, चउविहार यथासंभवें होय ॥ ११ ॥

चउहाहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिह चउहा ॥
निसि पोरिसि पुरिमे गा,सणाइ सड्ढाण डुतिचउहा ॥१२॥७

अर्थः–(नमो के०) नोकारसीनुं पच्चरकाण तथा (रत्तिंपि के०) रात्रिनुं पच्चरकाण पण (मुणीण के०) मुनिने, यतिने (तु के०) वली नियमा (चउहाहारं के०) चउविहारज होय अने (सेस के०) शेष पोरिसी आदिक पच्चरकाण ते मुनिने (तिहचउहा के०) त्रिविहारा तथा चउविहारा यथासंभवे होय. हवे श्रावक आश्रयी कहे छे. (निसि के०) रात्रिनुं पच्चरकाण, (पोरिसि के०) पोरिसीनुं पच्चरकाण, (पुरिम के०) पुरिमड्ढनुं पच्चरकाण अने (एगासणाइ के०) एकासणादिक पच्चरकाण जे छे, ते (सड्ढाण के०) श्रावकने अर्थें (डु ति चउहा के०) डुविहार,तिविहार अने चउविहार, ए त्रण प्रकार यथायोग्यें होय,तिहां नवकारसी अने पोरसी तो श्रावकने चउविहार पच्चरकाणेज होय,अने शेष पूरिमड्ढादि पच्चरकाण तथा रात्रिनुं दिवस चरिमादि पच्चरकाण ते डुविहार तिविहार अने चउविहारें यथायोग्यें होय,परंतु ग्रंथांतरें एटलो विशेष छे जे एकासणादि त्रिविहार पच्चरकाणीने रात्रें पाणहार होय अने डुविहार पच्चरकाणे एकसणादिकने विषे रात्रें चउविहार होय तथा केटलेएक स्थानकें श्रावकने पण पोरिसी तिविहारें बोली छे. अने डुविहार पच्चरकाणे रात्रें तिविहार होय परंतु ते कारणिक जाणवुं,व्यवहारें समजवुं नही. इत्यादि बीजी विशेष वात ग्रंथांतरथी जाणवी, एटले चार विधिनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चौद थया ॥ १२ ॥ २ ॥

हवे चार प्रकारना आहारनुं त्रीजुं द्वार कहे छे.

खुहपसम खमेगागी, आहारिव एइ देइ वा सायं ॥
खुहिउ वि खिवइ कुठे,जं पंकुवम तमाहारो ॥१३॥

अर्थः–प्रथम सामान्य प्रकारें आहारनुं लक्षण कहे छे. जे (खुहपसम के०) क्षुधाने उपशमाववाने अर्थे (खम के०) समर्थ होय एवो जे

(एगागी के०) एकाकी द्रव्य होय तथा वली (आहारिव के०) आहा रने विषे पण (एइ के०) एति एटले आवे एवा लवण हिंग्वादिक जे आहा रमांहे (सायं के०) स्वाद प्रत्यें (देइ के०) आपे ते,(वा के०) वली (जं के०) जे (पंकुवम के०) पंकोपम एटले कादवनी परें असार होय कादवनी उपमा धारण करे एवुं कादव सरखुं द्रव्य होय परंतु (खुहिउवि के०) क्षुधितोपि ए टले क्षुधित थको पण (कुठे के०) कोठामां उदरमां (खिवइ के०) क्षिपति एटले क्षेपवे छे तो (तं के०) ते सर्व (आहारो के०) आहार जाणवो ॥ १३ ॥

हवे ए आहारना मूल चार भेद छे, ते कहे छे.

असणे मुग्गोयण स, तु मंफ पय खक्क रब्ब कंदाई ॥
पाणे कंजिय जव कयर, कक्कोडोदग सुराइजलं ॥१४॥

अर्थः–तिहां एक (असणे के०) अशन ते, आशु एटले शीघ्र जे क्षुधाने उपशमावी नाखे तेने अशन कहीयें,तेने विषे (मुग्ग के०) मगादि सर्व कठोल जाति जाणवी. तथा (उयण के०) उदन ते चावल जात प्रमुख सर्व उदन जाति जाणवी. तथा (सत्तु के०) साथुउ (मंफ के०) मांफा, रोटली, पक्वान्न, रोटला पूडा प्रमुख. (पय के०) दूध, दही, घृत, तेल. माखण विगयादि प्रमुख (खक्क के०) खाजलां पक्वान्न खीर सुकुमारिका लापसी दहींथरां प्रमुख पक्वान्न. (रब्ब के०) रावडी घेंस प्रमुख (कंदाई के०) कंदादिक ते सूरणकंदादिक जाणवां. तथा तेमज, तुलसी नागरवल्ल्यादि पत्र विना सर्व जातिनां फल फूल पत्र सर्वकंद सर्व वनस्पतिविकार शाकादि कूल्हरी चूरिम पर्पिटिकादि सर्व वस्तुनी जाति अशनमांहे आवे, तथा लवण, हिंग, सूया, अजमो, वरीयाली, धाणा दिकें तव्यां एक वेसण पण अशनमां आवे,इत्यादि सर्व अशनजाति समजवी.

हवे बीजो (पाणे के०) पानने विषे तिहां जेने पीजीयें ते पाणी क हीयें तेमां अप्काय ते नदी, तलाव, द्रह, समुद्र इत्यादि पाणीना आ श्रय संबंधि सर्व स्थलोनुं पाणी जाणवुं. तथा (कंजिय के०) कांजीनुं पाणी छासनी आछ, तथा (जव के०) यवनुं धोयण, (कयर के०) केरनुं धोयण, आमलादिकनुं धोयण, द्राक्षनुं धोयण, तथा (कक्कडोदग के०) काकडी प्रमुख सर्व फलनां धोयणनुं उदक एटले पाणी, तथा

(सुराइजलं के०) सुरादि जल ते मदिरादिकनां पाणी जाणवां, ए अन्न द्रव्यमां भले छे. एमां आदिशब्दथी द्राक्षादिकना आसव, नालिकेरादिकनां पाणी, इक्षुरस, सौवीर, तक्र ते छाश इत्यादि सर्व पदार्थ पाणीने विषे कल्पे छे, तथापि इक्षुरस, तक्र ते छास अने मदिरादि तथा नालिकेरादिकनां जलने सांप्रत जितव्यवहारें अशनमां गणीयें छेयें ॥ १४ ॥

खाइमे भत्तोस फलाइ,साइमे सुंठि जीर अजमाई ॥ महु गुड तंबोलाई, अणाहारे मोय निंबाई ॥१५॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे त्रीजो खादिम आहार कहे छे. (ख के०) आकाश एटले मुखनुं विवर कहियें. तेने पूरवाने लगारेक भूख मात्र भांजे, पण अन्नादिकनी परें तृप्ति न करे, परंतु कांइएक अशनसमान थाय ते खादिम वस्तु कहीयें. ते (खाइमे के०) खादिमने विषे तिहां प्रथम (भत्तोस के०) भक्तोष एटले शेकेलां धान्य चणा प्रमुख तथा अखोड सुखाशिका सर्व जाणवा, तथा आंबा केलां प्रमुख सर्व (फलाइ के०) फलादिक जाणवां, तथा फलजातिनी सुखडी मेवा सर्व कयरी पाकादिकनी जातियो, गुंदपाकादिक, द्राक्ष, चारोली प्रमुख मेवा जातिनुं सर्व पकान्न खांड शाकरादि तेना विकार जे खांड कातली प्रमुख ते सर्व खादिमने विषे लीधा कल्पे. परंतु जीतव्यवहारें प्रसिद्ध पणे अशन मध्ये लेपकृत्य उत्तम द्रव्यमां गण्या छे. परंपरायें इत्यादिक सर्व खादिम "भत्तासं दंताइं, खजुर नालिकेर आइं दरकाइं ॥ कक्कडि अंबग फणसाइ, बहुविहं खाइमे नेयं ॥ १ ॥ इत्यादिक विचार सर्व प्रवचनसारोद्धार ग्रंथथी जाणवो ॥ ए त्रीजो खादिम आहार कह्यो ॥

हवे चोथो (साइमे के०) स्वादिमने विषे शुं कल्पे? ते कहे छे. तिहां प्रथम ते जे आस्वादें करी लइयें अथवा आहारादिक जे कीधां होय ते सर्व तेना स्वादमां विनाश पामे, लयलीन थाय ते स्वादिम कहीयें तेमां (सुंठि के०) सूंठ, (जीर के०) जीरुं, (अजमाइं के०) अजमादिक, आदि शब्दथकी पीपर, मरिच, हरडे, बेहेडां, आमलां, मरी, पींपलीमूल, पीपर, अजमोद, आजो, काजो, काथो, कुलिंजर, कसेलो, कयसेलियो, मोथ, जेठीमध, पुष्करमूल, एलची,वावची, चिणिकबाब, कर्पूर, तज,

तमालपत्र, नागकेसर, केशर, जायफल, लविंग, हिंगुलाष्टक, हिंगुत्रेवीसो, संचल, सैधव, यवखार, खयरसार, कोठवली, गोली सर्व जातिनी अशना दिमां न त्रले तेवी जाणवी, सर्व जातिनां दातण, तुलसी पत्र, श्रीपत्र, खार, सया, मेथी, गोमूत्रादिकना कीधा अन्नमेलादिकनी गोलीयो, चित्रो, पिंकार्थ, कोइएक तो पिंकार्थने खजुर कहे छे. परंतु ग्रंथांतरें एने जे सूरणादि कंदनां खारचूंदां करे छे, तेने कहे छे. कर्पूर, कचूरो, त्रिगडु, पंच पटोल, बिडलवण, इत्यादिक अनेक जातिना स्वादिम आहार जाणवा.

तथा (महु के०) मधु एटले मध अने (गुड के०) गोल, खांरु, साकर तथा (तंबोलाई के०) तंबोलादिक ते विविध जातिनो तंबोल नागरवेलीनां पान तथा सोपारी प्रमुख ए पण स्वादिम जाणवा.

हवे अणाहार वस्तु कहे छे. अने पूर्वे कहेला चारे आहारमांहेला कोइ पण आहारमां न आवे, परंतु चउविहार उपवासें तथा रात्रिने चउविहारें वावरी कल्पे, ते अणाहार वस्तु जाणवी. तेनां नाम कहे छे.

(अणाहारे त्ने०) अनाहारने विषे कल्पे ते वस्तु कहे छे. (मोय के०) लघु नीति जाणवी, अने (निंबाई के०) निंबादिक ते निंबनी शली पानडा प्रमुख पांचे अंग ए सर्व अनाहार वस्तु जाणवी, आदि शब्दथकी त्रिफला, कडू, करियातुं, गलो,नाहि, धमासो, केरडामूल, बोरछालि मूल, बावलछालि, कंथेर मूल, चित्रो, खयरसार, सूखड, मलयागरु, अगरु, चीड, अंबर, कस्तूरी, राख, चूनो, रोहिणी वज, हलिद्रा, पातली, आसगंधी, कुंदरु, चोपचीनी, रिंगणी, अफिणादिक सर्वजातिनां विष, साजीखार, चूनो, जाको, उपलेट, गूगल, अतिविष, पूंयाड, एलीउं, चूणीफल सूरोखार, टंकणखार, गोमूत्र आदें देइने सर्व जातिनां अनिष्ट मूत्र, चोल, मंजीठ, कणयरमूल, कुंआर, थोहर, अर्कादिक पंचकूल, खारो, फटकडी, चिमेड इत्यादिक वस्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान् छे, अने इछा विना जे चीज मुखमां प्रक्षेप करीयें ते सर्व अणाहार जाणवी. ए उपवासमां पण लेवी सूजे, अने आयंबिल मध्ये पाणहार पच्चरकाण कस्या पछी सूजे ए आहारनुं त्रीजुं द्वार थयुं, उत्तर त्नेद अढार थया ॥ १५ ॥

हवे नवकारसी प्रमुखना आगारनी संख्यानुं चोथुं द्वार कहे छे.

दो नवकार छ पोरिसि, सग पुरिमड्ढ इगासणे अठ ॥
सत्तेगठाण अंबिल, अठ पण चउत्थि छ प्पाणे ॥१६॥

अर्थः— जे मूलगुण उत्तरगुण रूप पच्चक्खाण राखवाने अर्थें वाडी रूप होय ते आगार जाणवा. तिहां अपवाद पदें द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावादिकें विचारतां मूलगुण पच्चक्खाणने विषे अन्नछणादिक चार आगार जाणवा. अने उत्तरगुण पच्चक्खाणने विषे यथोक्त रीतें आगल कहेशे ते प्रमाणें सर्वत्र आगार जाणवा. ते सर्व मली एकवार उच्चस्या थका बावीश आगार थाय. यद्यपि अन्नछउससिएणादिक शोल आगार काउस्सग्गना छे तथा समकितना रायाभिउगेणादिक छ आगार छे, तेमज एक चोलपट्टागारेणं छे, एवं सर्व मली (४५) आगार थाय छे, परंतु अहीं यां तो दश पच्चक्खाणने विषे बावीश आगारनुंज काम छे, माटें ते कहे छे.

(नवकार के०) नोकारसीना पच्चक्खाणने विषे (दो के०) बे आगार जाणवा. (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चक्खाणने विषे (छ के०) छ आगार, तेम सार्द्ध पोरिसिना पच्चक्खाणे पण छ आगार, (पुरिमड्ढ के०) पुरिमार्द्ध ना पच्चक्खाणने विषे (सग के०) सात आगार, (इगासणे के०) एकास णाना पच्चक्खाणने विषे (अठ के०) आठ आगार, (एगठाण के०) ए कलठाणाना पच्चक्खाणने विषे (सत्त के०) सात आगार,(अंबिलअठ के०) आयंबिलना पच्चक्खाणने विषे आठ आगार जाणवा. (चउत्थि के०) चो थभक्तें एटले उपवासना पच्चक्खाणने विषे (पण के०) पांच आगार, (प्पा णे के०) पाणस्सना पच्चक्खाणने विषे (छ के०) छ आगार जाणवा॥१६॥

चउ चरिमे चउभिग्गहि, पण पावरणे नवठ निव्वीए॥
आगारुक्खित्तविवेग, मुत्तु दव्व विगइ नियमिठ॥१७॥

अर्थः—(चरिमे के०) दिवसचरिमना पच्चक्खाणने विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा, (अभिग्गहि के०) अभिग्रहना पच्चक्खाणने विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा. (पावरणे के०) प्रावरण एटले वस्त्र मूकवाना पच्चक्खाणने विषे (पण के०) पांच आगार जाणवा, (नवठ

निवीए के०) निवीयाना पञ्चरकाणने विषे नव आगार पण होय अने आठ आगार पण होय, तिहां जे पिंम अने ड्रव्य रूप बेहु विगइनुं पञ्चरकाण करे तेने नव आगार जाणवा, अने जे एकली (दव्वविगइ के०) ड्रव्य विगइमात्रनो (नियमिए के०) नियम करे तेने (उक्खित्तविवेग के०) उक्खित्तविवेगेणं ए (आगार के०) आगार तेने (मुत्तु के०) मूकीने बाकीना (अठ के०) आठ आगार होय ॥ १७ ॥ तेना यंत्रनी स्थापना आगल करी छे.

हवे प्रत्येक आगार संबंधी आगारोनां नाम कही देखाडे छे.

अन्न सह दु नमुक्कारे, अन्न सह पञ्च दिसय साहु सव्व॥
पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ सत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥

हवे प्रत्येक पञ्चरकाण संबंधी आगारोनां नाम कही देखाडे छे.

अर्थः–(नमुक्कारे के०) नवकारसिना पञ्चरकाणने विषे एक (अन्न के०) अन्नज्ञणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं ए (दु के०) बे आगार जाणवा. तथा एक (अन्न के०) अन्नज्ञणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहसागारेणं, त्रीजो (पञ्च के०) पञ्चन्नकालेणं, चोथो (दिसय के०) दिसामोहेणं, पांचमो (साहु के०) साहुवयणेणं, छठो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए (छ के०) छ आगार ते (पोरिसि के०) पोरिसीना पञ्चरकाणने विषे जाणवा. तेमज (सड्ढपोरिसी के०) सार्द्ध पोरिसीना पञ्चरकाणने विषे पण एहिज छ आगार जाणवा. तथा वली एज पोरिसीना छ आगारने एक (महत्तरा के०) महत्तरागारेणं ए आगारें करी (स के०) सहित करीयें तेवारें (सत्त के०) सात आगार थाय. ते (पुरिमड्ढ के०) पुरिमड्ढ तथा अवड्ढना पञ्चरकाणने विषे जाणवा ॥१८॥

हवे एकासणा तथा एकलठाणाना आगार कहे छे.

अन्न सहस्सागारिय, आउंटण गुरुअ पारि मह सव्व ॥
एग बिआसणि अठउ, सग इगठाणे अउंट विणा॥१९॥

अर्थः–एक (अन्न के०) अन्नज्ञणाजोगेणं, बीजो (सहस्सा के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (सागारिय के०) सागारियागारेणं, चोथो (आउंटण के०) आउंटणपसारेणं, पांचमो (गुरुअ के०) गुरुअब्भुठाणेणं, छठो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, सातमो (मह के०) महत्तरा

गारेणं, आठमो, (सव्व के०) सव्व समाहिवत्तियागारेणं, ए (अठ्ठ के०) आंठ आगार ते (एगबिआसणि के०) एकासण अने बियासणना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तथा एज आठमांथी एक (अउटविणा के०) आउट्टणपसा रेणं ए आगार विना शेष एकासणाने विषे जे कह्या छे तेज (सग के०) सात आगार ते (इगठाणे के०)एकलठाणाना पच्चरकाणने विषे होय॥१ए॥जिहां जमणा हाथे जमे,मात्र कोलीया लेवानेज हाथ फेरवे, परंतु अंगोपांगने तो खरज खणवादिकने कामे पण हलावे नही ते एटलठाणुं जाणवुं ॥१ए॥

हवे विगइ, नीवि तथा आयंबिलना आगार कहे छे.

अन्न सह लेवा गिह, उक्खित्त पडुच्च पारि मह सव्वे॥
विगइ निव्विगए नव, पडुच्च विणु अंबिले अठ ॥२०॥

अर्थः—एक (अन्न के०) अन्नछणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (लेवा के०) लेवालेवेणं, चोथो (गिह के०) गिहत्थ संसठेणं, पांचमो (उक्खित्त के०) उक्खित्तविवेगेणं, छठो (पडुच्च के०) पडुच्चमक्खिएणं, सातमो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, आठमो (मह के०) महत्तरागारेणं नवमो (सव्वे के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (नव के०) नव आगार ते (विगइ के०) विगइ तथा (निव्विगए के०) निविगइ मली बे पच्चरकाणने विषे जाणवा, तथा ए नवमांहेथी एक (पडुच्चविणु के०) पडुच्चमक्खिएणं ए आगार विना शेष (अठ के०) आठ आगार जे विगइ अने नीविना कह्या तेज (अंबिले के०) आयंबिलना पच्च रकाणने विषे जाणवा. जिहां आम्ल एटले खाटो चोथो रस तेहथी निव र्त्तवुं ते आयंबिल कहीयें,तेना त्रण प्रकार छे,एक उदन, बीजो कुल्माष, त्रीजो साथुआदिक ए त्रण नेदं छे. अथवा (आचाम्ल के०) उसामणनी पेरें जिहां अन्नादिक नीरस थइ निकले तेने आयंबिल कहीयें ॥ २० ॥

हवे उपवासना आगार कहे छे.

अन्न सह पारि मह सव, पंच खवणे छ पाणि लेवाई ॥
चउ चरिमंगुठाइ, निग्गहि अन्न सह मह सव्वे ॥२१॥

अर्थः—एक (अन्न के०) अन्नछणाजोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागा रेणं, त्रीजो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं,चोथो (मह के०)महत्तरा

गारेणं, पाचमो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (पंच के०) पांच आगार (खवणे के०) उपवासना पच्चक्खाणनेविषे जाणवा. तथा एमां अचित्त पाणी पीये माटे (पाणि के०) पाणस्सना पच्चक्खाणने विषे लेवेणवा अलेवेण वा, अछेण वा बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, ए (लेवाइ के०) लेपादिक (छ के०) छ आगार जाणवा, तथा एक (अन्न के०) अन्नत्थणाभोगेणं, बीजो (सह के०)सहस्सागारेणं, त्रीजो(मह के०)महत्तरागारेणं, चोथो (सव्वे के०) सव्वे समाहिवत्तियागारेणं ए (चउ के०)चार आगार ते(चरिम के०)दिवस चरिमना पच्चक्खाणने विषे तथा (अंगुठाइ भिग्गहि के०) अंगुठमुठिसहियादिक अभिग्रहना पच्चक्खाणने विषे जाणवा॥२१॥

पच्चक्खाणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना.

अंक.	पच्चक्खाणनाम.	संख्या.	आगारोनां नाम.
१	नोकारसी.	२	अन्न० ॥ सह० ॥
२	पोरिसी.	६	अन्न०॥ सह०॥ पछन्न० ॥ दिसामो० ॥ साहु०सव्व०
३	साड्डपोरिसी.	६	” ” ” ” ” ”
४	पुरिमड्ड.	७	अन्न० सह० पछ० दिसा० साहु० सव्व० महत्त० ॥
५	अवड्ड.	७	” ” ” ” ” ” ”
६	एकासणुं.	८	अन्न० सह० सागा०आउ०गुरु० पारि० मह०सव्व०
७	बियासणुं.	८	” ” ” ” ” ” ” ”
८	एकलठाणुं.	७	अन्न० सह० सागारि० गुरु० पारि० मह० सव्व०
९	नीवी.	९	अन्न० सहस्सा० लेवा० गिहछ०उक्खित्त० पडुच्च०
१०	विगइ.	९	पारि० महत्त० सव्व०
११	आयंबिल.	८	अन्न० सह० लेवा० गिह० उक्खि०पारि०मह० सव्व०
१२	उपवास.	५	अन्न०सह०पारि०मह० सव्व० चोलपट्टागारयतिने.
१३	पाणहार.	६	लेवे० अले० अछे० बहु० ससित्थे० असित्थे०
१४	अभिग्रह संकेत	४	अन्न० सह० मह० सव्व०
१५	दिवसचरिमं.	४	” ” ” ”
१६	भवचरिमं.	४	” ” ” ”
१७	देसावगासिक.	४	” ” ” ”
१८	समकेतना.	६	राया० गणा० बला० देवा० गुरुनि० वित्ति०

इहां उक्खित्तविवेगेणं ए जे आगार बे, ते आगार पिंमविगइ आश्रयी बे, ते पिंम विगय जणाववा माटें विगयना जेद कही देखाडे बे. परंतु विगयना जेदो कहेवानुं द्वार तो आगल आवशे हाल आंहीयां तो मात्र पिंम विगय उंलखाववाने निमित्तेंज कहे बे.

दुध्ध महु मद्य तिल्लं, चउरो दवविगइ चउर पिंमदवा ॥
घय गुल दहियं पिसियं, मरकण पक्कन्न दो पिंमा ॥२२॥

अर्थः—एक (दुद्ध के०) दुग्ध, बीजो (महु के०) मधु त्रीजो (मद्य के०) मद्य एटले मदिरा अने चोथो (तिल्लं के०) तैल ए (चउरो के०) चार (दवविगइ के०) द्रव्य विगय बे ए चार ते ढीलुं विगय होय रस रूप होय, माटें एने रसविगय कहीयें अने एक (घय के०) घृत, बीजो (गुल के०) गोल, त्रीजो (दहियं के०) दधि एटले दही अने चोथो (पिसियं के०) पिशित ते मांस ए (चउर के०) चार विगय जे बे ते (पिंमदवा के०) पिंमद्रव्यरूप रसरूप जाणवा. ए चार पिंम होय एनुं द्रव्य कोइ वेला द्रव्य होय, तथा कोइ वेला पिंम रूप थीणो पिंम होय. तथा एक (मरकण के०) माखण, बीजो (पक्कन्न के०) पक्वान्न ए (दो के०) बे कडाविगय जाणवां. ते स्वजावें करीने (पिंमा के०) पिंम रूप होय कठिन होय, माटें एने पिंमविगय कहीयें. ए दस विगय कह्यां. इहां उक्खित्तविवेगेणं ए आगार जे बे ते पिंमविगयनो बे ते जणाववा माटें आ गाथा कही ॥ २२ ॥

हवे केटलांएक पच्चरकाण मांहोमांहे आगार तथा पाठ उच्चार विशेषें करी सरखा बे एटले तेना आगार पण मांहो मांहे सरखा बे, अने पाठ पण सरखो बे, ते कहे बे.

पोरिसि सड्ढमवड्ढं, दुन्नत्त निविगइ पोरसाइ समा ॥
अंगुठ मुठि गंठी, सचित्त दवाइ जिग्गहिअं ॥ २३ ॥

अर्थः—(पोरसाइसमा के०) पोरिसि आदें देइने पच्चरकाण जे बे, ते सरखां जाणवां, एटले एक पोरिसि अने बीजी (पोरिसिसड्ढं के०) सार्द्ध पोरिसि ए बे सरखां जाणवां एटले पोरिसीने सार्द्ध पोरिसीना पच्चरकाणना पा

ठनो उच्चार तथा आगार पण सरखा छे तेमज पुरिमड्ढ ने (अवड्ढं के०) अवड्ढनुं पच्चरकाण पण सरखुं जाणवुं, तथा एकासणुं अने (डुन्नत्त के०) द्विजक्त एटले बीआसणानुं पच्चरकाण अने आगार पण सरखा जाणवा, तथा विगइ ने (निव्विगइ के०) नीविनुं पच्चरकाण अने आगार पण सरखा जाणवा. तथा (अंगुठ के०) अंगुठसहियं, (मुठि के०) मुठिसहियं, (गंठी के०) गंठिसहियं, (सचित्तदवाइं के०) सचित्त ड्रव्यादिकनुं पच्चरकाण एटले स चित्त ड्रव्यादिक एटले सचित्त ड्रव्यादिकना पच्चरकाण जे देसावगासिक ते मज दिवसचरिमादिनां पच्चरकाण ए सर्वे (जिग्गहियं के०) अजिग्रह प च्चरकाण कहेवाय, तेना पण मांहोमांहे पाठ तथा आगार सरखा जाणवा. परंतु कालप्रमाणादिकें तथा स्थानकें तो फेर फार होयज ॥ २३ ॥

हवे ए सर्व आगारोना अर्थ कहे छे.

विस्सरण मणाजोगो, सहसागारो सय मुहपवेसो ॥
पच्चन्नकाल मेहाई, दिसि विवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥

अर्थः—जे (विस्सरणं के०) विस्मरण थइ जाय ते (अणाजोगो के०) अनाजोगथी थाय एटले पच्चरकाणनो उपयोग अनाजोग थकी वीसरी जाय तेवारें अजाणपणे कांइ मुखमां प्रक्षेप करे तो तेथी पच्चरकाण जंग न थाय. ए प्रथम अणाजोगेणं आगार कह्युं एनी सार्थे अन्नब शब्द जोडीयें ते वारें अन्नबणाजोगेणं एवुं नाम थाय माटें तेनुं कारण समजवाने नीचें अर्थ लखीयें बैयें, अन्नबणाजोगेणं एटले अन्यत्र अने अनाजोगात् तिहां अन्यत्र एटले जे आगार कह्यां होय ते आगार वर्जीने बीजा सर्वत्र स्थानकें पच्चरकाण पालवानी यत्ना राखवी. अन्नब ए पद सर्वे आगारें जोडवुं, एम जाणवुं तथा अनाजोगात् एटले वीसरवाथकी अर्थात् पच्च रकाणनो उपयोग वीसरते अजाणतां कांइ मुखमां प्रक्षेप कराइ जाय पछी पच्चरकाण सांजरी आवे तेवारें तरत मुखथकी त्याग करे तेथी पच्चरकाण जंग थाय नही अथवा अजाणे मुखथकी हेठे उतर्युं पछी कालांतरें अ थवा तुरत स्मरणमां आवे तो पण पच्चरकाणनो जंग थाय नही परंतु शु ऊव्यवहार छे तेथी फरी निःशंक न थाय ते माटें यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए वात सर्व आगारोने विषे जाणवी. माटें आहीं पीठिकारूपें लखी.

बीजो (सहसागारो के०) सहसात्कार ते (सयमुह के०) पोतानी मेलें आवी मुखमांहे (पवेसो के०) प्रवेश करे ते जाणवुं. एटले पच्चरकाण कीधुं छे तेनो उपयोग तो वीसर्यो नथी पण कार्य करवाना प्रवर्त्तनयोग लक्षण सहसात्कारें स्वनावेंज पोताना मुखमां कांइ प्रवेश थइ जाय जेम दधि मथतां थकां छांटो उडीने मुखमां पडी जाय अथवा अन्नादिकनो कण मुखमां पडी जाय तथा चउविहार उपवास होय अने वर्षाकालमां मेघनो छांटो मुखमां पडी जाय तो पच्चरकाण नांगे नही.

त्रीजो (पन्नन्नकाल के०) प्रन्नन्नकाल ते कालनी प्रन्नन्नता जाणवी. जेम (मेहाइ के०) मेघादि एटले मेघना वादले करीने ढंकाइ गयेला सूर्यनी खबर न पडे तथा आदिशब्दथकी दिग्दाह, ग्रहादिक, रजोवृष्टि, पर्वत प्रमुख सर्व जाणी लेवुं. तिहां पर्वत अने वादला प्रमुखें अंतरिक्ष, सूर्य देखाय नही अथवा रज उरुवे करी न देखाय तेवारें पोरिसीयादिकना कालनी खबर न पडतां अपूर्ण थयेलीने संपूर्ण थयेली जाणीने जमवा बेसी जाय तो पच्चरकाण नंग न थाय परंतु जाणवामां आवे तो पछी अर्द्धो जम्यो थको होय तो पण एमज बेशी रहे,अने पोरिसी आदि पूर्ण थाय पछी जमे तो नंग न थाय, परंतु हजी पूर्ण थइ नथी एवुं जाणवामां आवे तो पण पडखे नही अने जमे तो पच्चरकाण नंग थइ जाय ॥

चोथो (दिसिमोहो के०) दिसामोहेणं ते (दिसिविवज्जासु के०) दिशिना विपर्यासपणाथकी जेवारें दिङ्मूढ थइ जाय तेवारें पूर्वने पश्चिम करी जाणे अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे एम खबर न पडवाथी अपूर्ण पच्चरकाणे पण पूर्णकाल थयो जाणीने जमे तो पच्चरकाण नंग नही अने दिङ्मोह मटी गया पछी जेवारें जाणवामां आवे तेवारें पूर्वनी पेठें अर्द्धो जम्यो थको होय तो पण पच्चरकाण पूर्ण थाय तिहां सुधी एमज बेशी रहे अने काल पूरो थया पछी जमे ॥ २४ ॥

साहुवयण उग्घाडा, पोरिसि तणु सुख्या समाहित्ति ॥
संघाइ कऊ महत्तर, गिहब बंदाइ सागारी ॥ २५ ॥

अर्थः-पांचमुं (उग्घाडापोरिसि के०) उग्घाड पोरिसी एवो (साहुवयण के०) साधुनुं वचन एटले बहुपडिपुन्ना पोरिसि एवुं सांनलीने जो

अपूर्ण पच्चरकाणे जमे तो पण पोरिसी ज्ञंग न थाय, पठी कोइकना क हेवा उपरथी जाणवामां आवे के हजी लगण पोरिसीनो काल पूर्ण थयो नथी तेवारें पूर्वोक्त रीतें अरूजुक्त रहे अने पोरिसीनो काल पूर्ण थया पठी जमे ए साहुवयणेणं नामें आगार जाणवो.

ठठो (तणु के०) शरीर तेनुं (सुब्रया के०) स्वस्थता जे निराबाध पणुं तेने (समाहि के०) समाधि (इति के०) एम कहीयें एटला माटे ए सवसमाहिवत्तियागारेणं कहेवाय इहां तीव्रशूलादिक रोग उपने थके, आर्त्त रौद्रनी सर्वथा निराशें जे शरीरनी स्वस्थता ते सर्व समाधि कहीयें तत्प्रत्ययिक जे कारण ते सर्वसमाधिवर्तिताकार कहीयें. ते समाधिने नि मित्तें जे औषध पथ्यादिकनी प्रवृत्तिने विषे अपूर्ण प्रत्याख्याने जमतां पण पच्चरकाण ज्ञंग थाय नहीं.

सातमुं (संघाइकज्ञ के०) संघादिकनुं कोइ कार्य उपने थके वडेरानी आज्ञा पाले तेने (महत्तर के०) महत्तरागार कहीयें, ते आवी रीतें के जे पच्चरकाण कीधुं ठे तेनी अनुपालनाथकी पण जो निर्ज्ञरानी अपेक्षायें विचारीयें तो महोटुं निर्ज्ञरा लाज हेतु कार्य ठे, अने अन्य पुरुषांतरें ते कार्य असाध्य ठे,बीजा कोइ पुरुषथी थाय तेम नथी एवुं कोइ संघनुं तथा आदि शब्दथकी चैत्य ग्लानादिकना कार्यें प्रयोजन ठे तेहिज आकार ते महत्तराकार कहीयें. तिहां अपूर्ण कालें जमतां पच्चरकाण ज्ञंग न थाय.

आठमुं (गिहब के०) गृहस्थनी नजर पडे तथा (बंदाइ के०) सर्प बंदि वानादिकनी नजर पडे तेने (सागारी के०) सागारिआगारेणं कहियें. तिहां आगार एटले घर तेणे करी सहित ठे जे तेने सागारि कहीयें तेनी नजरें देखतां साधुने आहार करवो कल्पे नही. केम के एथकी प्रवचनोपघातादिक बहु दोषनो संज्ञव थाय माटें साधुने जमतां थकां जो सागारी आवी पडे अने ते जो चल होय एटले तरत जवावालो होय तो क्षणेक बेसी रहे अने तेने स्थिर रहेतो जाणे तो स्वाध्यायादिकना ज्ञंगपातकना ज्ञयथकी अन्यत्र जइने तेहिज आसने जमे तो पच्चरकाण ज्ञंग न थाय. ए जेम गृह स्थने सागारी कहीयें तेमज जेहनी दृष्टें देखतां अन्न खाइयें ते पचे नही तेने पण सागारिक कहीयें तथा उपलक्षणें आदि शब्दथकी सर्प, अग्नि, प्रदीप, नरेली, पाणीनी रेल आवे तथा गृहपातादिक एटले घर पडतुं होय

ए आगार पण लेवा. इत्यादिक उपद्रवोना कारणें अन्यस्थानकें जइ ज मतां पण पच्चक्खाण भंग न थाय ॥ २५ ॥

आउंटण मंगाणं, गुरु पाहुण साहु गुरुअभुठाणं ॥
परिठावण विहि गहिए, जइण पावरण कडिपट्टो ॥ २६ ॥

अर्थः–नवमो (अंगाणं के०) पग प्रमुख अंग तेनुं (आउंटण के०) आकुंचन एटले संकोचवुं तथा पसारवुं ते अणखमते करवुं पडे एटला माटें एने आउट्टणपसारेणं आगार कहीयें तेथी जमतां थकां कांइक पोतानां आसनादिक चलायमान थाय तो पच्चक्खाण भंग न थाय.

दशमो (गुरु के०) पोताना दीक्षागुरु आवे अथवा कोइ महोटो (पाहुणसाहु के०) प्राहुणो साधु आवे थके जमतां उठवुं पडे तो (गुरुअ भुठाणं के०) गुरुअभुठाणेणं आगार थाय एटले ते आवेला आचार्यादिक गुरुनां विनयादिक करवा माटे अभ्युत्थानादिक साचववा सारु उठवुं पडे, फरी तेमज बेसीने जमे तो पच्चक्खाण भंग न थाय ॥

अगीयारमो (परिठावण के०) जे अन्न परठवातुं होय ते (विहिगहिए के०) विधियें ग्रहण करेलुं होय ते उपवासादिक पच्चक्खाणमां पण लेवुं पडे तेने पारिठावणियागारेणं कहीयें एटले जे विधियें करी निर्दोष पणे ग्रहण कर्युं अने विधियें वहेंची आप्युं होय पछी अन्य साधुयें विधियें भुक्त कर्या थकी कांइक आहार उगर्यो ते पारिष्ठापन योग्य थयुं परंतु ते अधिक आहारने परठवतां दोष उपजे छे एवुं जाणीने तेहवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें आहारतां पच्चक्खाण भंग न थाय. तिहां एटलुं विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय तथा तिविहार उपवासना पच्चक्खाणमां अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय, परंतु विगयादिकनुं पारिठावणियागारेणं न थाय, अने बीजा सर्व पच्चक्खाणोने विषे थाय. ए आगार यतिने होय परंतु पाठ संलग्न छे माटे गृहस्थने पण पाठमां कहेवाय छे.

बारमो (जइण के०) यतिने अर्थें आगार जाणवो ते यतिने अर्थें (पावरण के०) प्रावरणना पच्चक्खाणे (कडिपट्टो के०) चोलपट्ट तेहनो आगार जाणवो, एटले वस्त्र मूकी नग्न थइ बेठो होय अने गृहस्थ आवे

एटले लज्जाने माटें उठीने चोलपट्ट पहेरे, तेने चोलपट्टागारेणं कहीयें एथी पच्चरकाणभंग न थाय. ए आगार पण यतिने होय ॥ २६ ॥

खरडिय लूहिअ झोवा, इ लेव संसठ्ठ कुच्च मंमाई ॥ उक्खि त्त पिंम विगई, णं मक्खियं अंगुलीहिं मणा ॥ २७ ॥

अर्थः—तेरमो, प्रथम (खरडिय के०) खरड्यो होय अने पढी तेने (लूहिअ के०) लुंठी नाख्यो होय एटले खरड्यो ते लेप अने लूंछ्युं ते अलेप एवो (झोवाइ के०) झोयो चाटुवो प्रमुख होय ते (लेव के०) लेवालेवेणं आगार जाणवो, एटले भोजननुं भाजन अथवा चाटुवा प्रमुख होय ते अकल्पनीय एवा विगय अने शाक प्रमुख अन्नादिकें खरड्या होय, पढी ते कडछी प्रमुखने लूंठीने अलेप कीधां होय तो पण कांइक विगयादिक अवयवना सद्भावें सहित छे तेवा भाजने करी आयंबिलादिक पच्चरकाण वालाने जमतां लेतां पच्चरकाण भंग थाय नही.

चौदमो गिहत्थसंसठ्ठेणं एटले भक्तदायक गृहस्थसंबंधि विगयादिकें व घारादिकें (संसठ्ठ के०) संसृष्ट एटले मिश्र कीधुं एवुं (कुच्च के०) शाकादिक केरंबादिक तथा (मंमाई के०) मांमादिक ते लगारेक हाथे गोल प्रमुखें चोपड्या कीधा होय तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीयें ते निविना पच्चरकाणे लेवा कल्पे तथा आयंबिलमां पण किंचिन्मात्र तैलादिकें स्निग्ध हाथे लगाडेला एवा मंमकादिक होय ते पण यतिने लेतां पच्चरकाण भंग न थाय.

पन्नरमो (पिंम विगईणं के०) पिंमरूप विगयनुं (उक्खित्त के०) उत्क्षिप्त एटले पाछुं लेवुं एटला माटे एने उक्खित्तविवेगेणं नामें आगार कहीयें. एटले ए भाव जे मांमा प्रमुख अन्न तथा पूपिकादिक ऊपर गोल प्रमुख तथा माखणादिक मूक्यां होय, ते फरी पाछा तेना उपरथी उपाडी पण लीधा होय एटले ए गोल माखणादिक जे पिंम विगय छे ते एवां छे के जे पदार्थ उपर राखेलां होय तेने फरी जेवारें तेना उपरथी पाछां उद्धरी लइयें तेवारें ते निःशेषपणे एटले बधां पाछां लेवाइ शकाय नही कांइक पण रोटला प्रमुखने लागेलां थकांज रही जाय माटे जेना उपरथी पिंमविगइ अलगी करी लीधी होय एवा रोटला प्रमुखने विगइना पच्चरकाण वालो, जो गृहस्थना घरथी वहोरीने भुंजे, तो पच्चरकाणभंग न थाय.

शोलमो (मक्खियं के०) मसल्युं (अंगुलीहिं के०) अंगुलीयें करीने (मणा के०) लगारेक एटले ए भाव जे अंगुलियें घृतादिक चोपडी ते अंगुलीयें चोपडीने मांडा प्रमुख करे तेने पडुच्चमक्खिएणं कहीयें. ते सर्वथा रूक्ष एवा मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत सुकुमारता उपजाववाने अर्थे लहुचूइ प्रमुख अंगुलीयें करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि पच्चक्काणमां लेतां पच्चक्काण भंग न थाय, परंतु घृतादिकनी धारायें करी म्रक्षित करे, तो लेवुं कल्पे नही. ए शोल आगार अशन आश्री कह्या ॥२७॥

हवे पाणस्सना छ आगारनो अर्थ कहे छे.

लेवाडं आयमाई, इअर सोवीरमच्छ मुसिणजलं ॥ धोअण बहुल ससिच्छं, उस्सेइम इअर सिच्छविणा ॥२८॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थः–प्रथम (लेवाडं के०) लेपकृत पाणी ते कोने कहीयें ? के (आयमाई के०) आचाम्लादि उसामण आदिशब्द थकी आंबली तथा द्राक्षनुं पाणी पण जाणवुं. एटला माटे ए आगारनुं नाम लेवेणवा कहीयें.

बीजो (इअर के०) इतर एटले पूर्वोक्त लेपथकी उलटुं अलेपकृत पाणी लेवुं ते माटे ए आगारनुं नाम अलेवेण वा जाणवुं. ते (सोवीरं के०) सौवीर कांजी धोयण आदिशब्दथी गडूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं.

त्रीजो (अच्छं के०) अच्छ ते निर्मल पाणी (उसिणजलं के०) उष्ण पाणी एटले त्रिदंडोत्कालित उष्ण जल अथवा बीजुं पण निर्मल पाणी नितर्खुं फलादिकनुं धोयण जाणवुं एटला माटें अच्छेणवा नाम कहीयें.

चोथो (धोअण के०) चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने (बहुल के०) बहुलेप कहीयें एटला माटें एनुं बहुलेवेणवा एवुं नाम छे ए तंडुलधावनादिक गडुल पाणी जाणवुं.

पांचमो (ससिच्छं के०) सीथ सहित पाणी ते (उस्सेइम के०) आटाथी खरड्या हाथनुं धोयण एटले उत्सेदिम एवुं पिष्टजलनुं नाम छे एटला माटे ससिच्छेणवा एवुं ए आगारनुं नाम छे.

छठो ए पूर्वोक्त पांचमा ससिच्छेण वा ए आगारथी (इअर के०) इतर ते आटावाला हाथनुं धोयण तेने वस्त्रादिकें करी गल्युं होय तेथी ते (सिच्छविणा के०) सीथ विनानुं जाणवुं, एटले अन्नादिक आटाना दाणाना स्वाद

विनानुं थाय, एटला माटे तेनुं नाम असित्थेण वा कहेवाय. ए छ आगार पाणीना कह्या. तेनी साथें पूर्वें कहेला शोल आगार मेलवीयें, तेवारें सर्व मली बावीश आगारोनी संख्या थाय ॥ २८ ॥

आंहीयां प्रत्येक आगारें वा शब्द मूकेलो छे ते एक एकथी बीजा बीजामां विशेष देखाडवाने माटे छे, एटले लेपथी अलेप विशेष, अलेपथी अछ विशेष, अछथी बहुलेप विशेष, बहुलेपथी ससित्थ विशेष, ससित्थथी असित्थ विशेष जाणवो, परंतु लेपादिकनुं पाणी लीये तो पण उपवासादिकनो भंग थाय नही. इति भावः ॥ ए प्रकारें अपुनरुक्त एटले फरी न उच्चरीयें एवा बावीश आगारोना अर्थनुं व्याख्यान लेशथी देखाडयुं. ए आगारोना अर्थनुं चोथुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चालीश थया ॥

हवे दश विगइना स्वरूपनुं पांचमुं द्वार कहे छे.

पण चउ चउ चउ दु दुविह, छ भक्ख दुध्धाइ विगइ इगवीसं॥
ति दु ति चउविह अभक्खा, चउ महुमाई विगइ बार ॥२९॥

अर्थः—जे इंद्रियादिकने पुष्ट करे, मन, वचन अने कायाना योगने अप्रशस्त विकार उपजावे, ते विगइ कहीयें, ते विगइ दश भेदें छे. तेमांथी चार विगइ तो साधु अने श्रावक बेहुने अभक्ष्यज छे एटले भक्षण करवा योग्य नथी, अने छ भक्ष्य विगइ साधु अने श्रावक बेहुने भक्ष्य करवा योग्य छे माटे एने भक्ष्य विगइ कहीयें, तेना उत्तर भेद बार थाय ते कहे छे.

प्रथम दुध विगइ (पण के०) पांच भेदें छे, बीजी दधि विगइ (चउ के०) चार भेदें छे, त्रीजी घृतविगइ (चउ के०) चार भेदें छे, चोथी तेल विगइ (चउ के०) चार भेदें छे, पांचमी गोलविगइ (दु के०) बे भेदें छे. छठी पक्वान्नविगइ (दुविह के०) द्विविध एटले बे भेदें छे, ए (दुध्धाइ के०) दुग्धादिक (छ के०) छ (भक्ख के०) भक्षण करवा योग्य (विगइ के०) विगइ छे तेना सर्व मली उत्तरभेद (इगवीसं के०) एकवीश थाय छे.

हवे चार अभक्ष्य विगइना उत्तर भेद कहे छे. प्रथम मधु विगइ (ति के०) त्रण भेदें छे, बीजी मदिरा विगइ (दु के०) बे भेदें छे, त्रीजी मांस विगइ (ति के०) त्रण भेदें छे, चोथी माखणविगइ (चउविह के०) चार भेदें छे. ए (महुमाई के०) मधु आदिक (चउ के०) चार (अभक्खा के०)

अभक्ष्य (विगइ के०) विगइ छे, तेना सर्व मली उत्तर भेद (बार के०) बार थाय ते सर्व नामपूर्वक आगल कहेशे ॥ २९ ॥

हवे प्रथम छ भक्ष्य विगइना एकवीश भेद व्यक्तें करी कहे छे.

खीर घय दहि अ तिल्लं, गुड पक्कन्नं छ भक्क विगईउ ॥
गो महिसी उंटि अय ए, लगाण पण डुध्द अह चउरो ॥३०॥

अर्थः—प्रथम छ भक्ष्य विगयनां नाम कहे छे. एक (खीर के०) दूध, बीजो (घय के०) घृत, त्रीजो (दहि के०) दधि, (अ के०) वली चोथो (तिल्लं के०) तैल, पांचमो (गुड के०) गोल, छठो (पक्कान्नं के०) पकान्न. ए (छ के०) छ (भक्कविगईउ के०) भक्ष्यविगय जाणवा. एटले ए छ विगइ जे छे ते साधु तथा श्रावकने भक्षण करवा योग्य छे माटें एने भक्ष्य विगय कह्या, हवे ए छ भक्ष्य विगयना उत्तर भेदनां नाम कहे छे.

तिहां प्रथम दूधविगयनुं नाम कह्युं छे माटें दूधना उत्तर भेद कही देखाडे छे. एक (गो के०) गायनुं दूध, बीजुं (महिसी के०) भेंषनुं दूध, त्रीजुं (उंटि के०) उंटडीनुं दूध, चोथुं (अय के०) अजा एटले छालीनुं दूध, पांचमुं (एलगाण के०) एडका ते गाडरीनुं दूध ए (पण के०) पांच जातिनां (डुध्द के०) दूध ते सर्व विगई जाणवां, अने शेष मनुष्यणी तथा बीजा पशुआदिकनां जे खीर थाय छे ते विगइमां गणाय नही. (अह के०) अथ एटले हवे (चउरो के०) चार जातिनुं घृत तथा चार जातिनुं दहीं कहे छे ॥ ३० ॥

घय दहिआ उट्टि विणा, तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चऊ ॥
दवगुड पिंडगुडा दो, पक्कन्नं तिल्ल घय तलियं ॥३१॥ दारं ॥५॥

अर्थः—प्रथम (घय के०) घृत जाणवुं, बीजी (दहिआ के०) दधि जाणवुं, ए बे विगइना एक (उट्टिविणा के०) उंटडीना दूध विना बाकी चार चार भेद जाणवा. केम के उंटडीनुं दूध जमाय नही माटे ते विना बाकी चार, एक गायना दहीनुं घी बीजुं भेंषना दहीनुं घी, त्रीजुं छालीना दहीनुं घी, अने चोथुं गाडरना दहीनुं घी, ए चार भेद घृतना जाणवा तथा दहीना पण एज चार भेद. एक गायना दूधनुं दही, बीजुं भेंषना

दूधनुं दही, त्रीजुं डालीना दूधनुं दही अने चोथुं गाडरना दूधनुं दही, ए चार दहीना भेद विगइरूप जाणवा.

हवे तेल विगयना चार भेद कहे छे. एक (तिल के०) तिलनुं तेल, बीजुं (सरिसव के०) सरशवनुं तेल, त्रीजुं (अयसि के०) अलसीनुं तेल अने चोथुं (लट्ट के०) काबरी कसुंबा धान्य खसखसना दाणानुं तेल, ए (तिल्ल के०) तेल विगइना (चउ के०) चार भेद विगइयाता रूपें जाणवा. अने बीजा एरंडीयानां फूलां, डिंगोल, मधुकफल, नालियेर, खदिर, शिंशपादिक यावत् लाक्षापाकादिक सर्व जातिनां तेल ते नीवियातां जाणवां.

हवे गोल विगइना बे भेद कहे छे. एक (दवगुड के०) द्रव्यगोल ते ढीलो राबडीयो रसरूप गोल जाणवो, बीजो (पिंडगुडा के०) पिंड रूप गोल ते काठो विविध जातिनो गोल जाणवो. ए (दो के०) बे प्रकारना गोल जाणवा.

हवे (पक्कन्नं के०) पकान्न विगइना बे भेद कहे छे, तेमां एक तो पूर्वें जे चार जातिनां तेल कह्यां छे, तेमां तल्युं होय तेने (तिल्लतलिय के०) तेलमां तलेलुं पकान्न कहीयें, बीजुं पूर्वें जे चार जातिनां घृत कह्यां छे, तेमां तल्युं होय तेने (घयतलियं के०) घृतमां तलेलुं पकान्न कहीयें. तलियं शब्द बे स्थानकें जोडवो. ए रीतें दूधना पांच, घृतना चार, दहीना चार, तेलनां चार, गोलना बे अने पकान्नना बे, मली एकवीश भेद भक्ष्य विगयना कह्या. ए विगयना नामनुं पांचमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल पच्चास थया॥ हवे ए भक्ष्य विगयना निवीयाता त्रीश कराय छे तेना भेदोनुं छठुं द्वार कहे छे.

पयसाडि खीर पेया, वलेहि दुध्दट्टि दुध्द विगइगया ॥
दक्ख बहु अप्प तंडुल, तच्चुन्नंबिल सहिअ दुध्दे ॥३७॥

अर्थः—प्रथम दूधना पांच निवियाता थाय ते कहे छे. एक (दक्ख के०) द्राख अने टोपरादिक नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पयसाडि के०) पयसाडी कहीयें, बीजुं (बहुतंडुल के०) घणा चोखा नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (खीर के०) खीर कहीयें, त्रीजुं (अप्पतंडुल के०) अल्पतंडुल एटले थोडा चोखा नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पेया के०) पेया कहियें, चोथुं (तच्चुन्न के०) ते चोखाना चूर्ण करी सहित एटले ते चोखानो आटो लोक भाषायें फूकरणुं कहे छे, ते नाखीने, दूध पचाव्युं होय, रांध्युं होय

तेने (अवलेहि के०) अवलेहिका कहियें, पांचमुं (अंबिलसहिअडुद्धे के०) खाटो रस करी आब कांजीप्रमुख खटाशें सहित डुध ऊष्ण करे, अथवा ए लोक नाषायें दूधमां खटाश होय तेमाटें एने फेदरी कहे ठे अथवा त्रण दिवस प्रसूत गोडुग्ध बलही बलहटां ते (डुद्धट्टी के०) डुद्धट्टी कहीयें. ए पांच (डुद्ध के०) डुग्धना (विगइगया के०) विकृतिगता एटले निवीयाता जाणवा. नेदांतरें एना पण बीजा नेदो थाय ठे ॥ ३२ ॥

हवे घृतविगइ तथा दहीविगइना पांच पांच निवियाता कहे ठे.

निप्लंजण वीसंदण, पक्कोसहि तरिय किट्टि पक्कघयं ॥ द
हिए करंब सिहरिणि, सलवण दहि घोल घोलवडा ॥३३॥

अर्थः—एक पकान्न तल्या पठी उतर्युं जे बलेलुं घृत तेने (निप्लंजण के०) निर्प्लंजण एटले निर्ञ्जजनघृत, पकान्ननुं तलण घृत कहीयें, बीजुं दहीनी तरी अने धान्यनी कणक बेहु एकठा मेलवीने नीपजाव्युं जे ड्रव्य विषे कुल्लर इति नाषा सपादलक्ष देशप्रसिद्ध ते (वीसंदण के०) विसंदन एटले विस्पंदन कहीयें, त्रीजुं (पक्कोसहितरिय के०) पक्कोषधितरित एटले औषधिने घृत सार्थे पचावीयें तेनी उपर जे घृतनी तरिका वले ठे, एवुं कूरिया सरिखुं घृत पचीने थाय ते घीनी उपरली तरी कहीयें, चोथुं घृतनो मेल उतरे तेने (किट्टि के०) घृतनो मेल ते कीटुं कहीयें, पांचमुं(पक्कघयं के०) पाकुं घृत ते औषधियें पचावेलुं घृत जाणवुं, खयर आमलादिक ब्राह्मी प्रमुख औषधियें करी पचाव्युं होय ते जाणवुं एना नेदांतर घणा थाय.

हवे दहीना पांच निवियाता कहे ठे. प्रथम (दहिए के०) दहीने विषे उदन एटले कूर एकठुं मेलवीने कीधुं ते दधि सीधोरो इत्यादि लोक नाषायें कहे ठे, तेने (करंब के०) करंबो कहीयें, बीजुं खांड नाखीने हाथथी मथन करेलुं दही तथा खांडयुक्त बांधेलुं दही तेने (सिहरिणी के०) शिखरिणी कहीयें, त्रीजुं लूणना कण नाखीने मथेलुं वस्त्रें अणगल्युं जे दही, ते (सलवणदहि के०) लवणसहित दधि कहीयें, चोथुं लुगडाथी गणेलुं मथेलुं दही तेने (घोल के०) घोलेलुं दही कहीयें, पांचमुं दहीना घोलयुक्त वटक करवां कांजीवडां, दहीवडां तथा दही गणीने तपावे, पठी मांहे वडां नाखे, तेने (घोलवडा के०) घोलवडां क

हीयें, इहां विवेकीने एटलुं विशेष के जिहां विदलयुक्त करवुं पडे, तिहां दही तथा ठास जे वडामांहे नाखवी होय तेने ऊष्ण करी नाखीयें तेवारें श्रावकने नक्षण करवा योग्य थाय, अन्यथा घोलवडां बावीश अन्नक्ष्यमां गणाय ते नक्षण करवा योग्य नथी. अकल्पनीय जाणवां ॥ ३३ ॥

हवे तेल तथा गोल विगइना पांच पांच निवीयाता कहे बे.

तिलकुट्टी निप्रंजण, पक्कतिल्ल पक्कुसहितरिय तिल्ल मली ॥
सक्कर गुलवाणय पा,य खंम अधकढिय इक्कुरसो ॥ ३४ ॥

अर्थः-प्रथम (तिलकुट्टी के०) तिल तथा गोल कूटीने खांमीने एकठां करियें, ते तिलवट कहीयें, बीजुं तव्या पक्वान्नथी उतरेलुं दाजेलुं बलेलुं तेल एटले पक्वान्ननुं तलण जाणवुं, अथवा केरी प्रमुखादिकना सरसीयादिक तेल ते (निप्रंजण के०) निप्रंजण एटले निर्नंजन जाणवुं. त्रीजुं सर्व औषधवाला तेल एटले लाक्षादिक द्रव्यथी पकावेलां तेलने (पक्कतिल के०) औषधपक तेल कहियें, चोथुं तेलमांहे नारायणादिक औषधी पचाव्या पठी औषध उपर तरी वले ते (पक्कुसहितरिय के०) पक्वौषधिथी तरित तेल एटले पक्वौषधिथी वलेली तरि कहीयें. पांचमुं (तिल्लमली के०) तेलनी मली एटले तेलनो मेल कीटी जाणवी. ए पांच नीवियाता तेलना जाणवा. एना पण नेदांतरें घणा नेदो थाय.

हवे गोलना नीवियाता कहे ठे. एक (सक्कर के०) साकर मिश्री, बीजो (गुलवाणय के०) गोलवाणी तथा रांधेलुं गलमाणुं अखात्रीजें कराय ते देशप्रसिद्ध ठे, त्रीजो (पाय के०) गोलनी पांति ते पाकगुड जेणें करी खाजादिक लेपीयें ठैयें एने मालवादिक देशने विषे काकबपांति एम नापायें कहे ठे, चोथो (खंरू के०)खांमनी सर्वजाति, पांचमो (अधकढिय इक्कुरसो के०) अर्द्धो काढेलो इक्कु एटले सेलडी तेनो रस, ए पांच नीवियाता गोलना जाणवा. एना पण नेदांतर घणा थाय ठे ॥ ३४ ॥

हवे कडाविगइना पांच नीवियाता कहे ठे.

पूरिअ तव पूआ बिय, पूअ तन्नेह तुरिय घाणाई ॥ गुल
हाणी जल लप्पसि, य पंचमो पूत्तिकय पूठ ॥ ३५ ॥

अर्थः-(पूरिअतवपूआ के०) पूरयो एटले ढांक्यो सर्व तावडो ठे जेणें

एवा पूडला उपर (विअपूअ के०) बीजो पुडलो तली काढीयें, ते बीजो पूडलो नीवीयातो जाणवो, एटले घृतादिकें पूरित एवो जे तवो तेने विषे एक पूपें करी पूर्‍यो समस्त तवो तेहमां एक वार तली वली तेहिज पूपिकादिक पर्पटकादिकें अपूरित स्नेह एवा तवामां बीजी वार तथा त्रीजी वार क्षेपवीने तली काढीयें जे पक्वान्न ते निवीयातुं जाणवुं.

बीजुं (तन्नेह के०) तेथी अन्य एटले त्रण घाण तली काढ्या पछी उपरांत बीजुं घृत क्षेपव्युं नथी एवुं जे तवामांहेलुं मूलगुं घृत तेहि त्रण घाणनां तलणमांहे तल्या जे अने (तुरियघाणाइ के०) चोथा घाणवा आदिक ते सर्व बीजुं नीवीयातुं जाणवुं, तथा त्रीजुं (गुलहाणी के०) गोलधाणी करवी, ते त्रीजुं निवीयातुं जाणवुं.

चोथुं सुकुमारिकादिक काढ्या पछी एटले पक्वान्न तली काढ्या पछी उद्धृत जे घृतादिक एटले वधेलुं जे घृतादिक तेणें करी खरडेलो जे तवो तेने विषे पाणी साथें रांधी एवी जे लापसी गहूंनुं उरण गोलनुं पाणी घृतादिकें जेलीने सीजवे छे, एने मरुदेशें प्रसिद्धपणे लापसी तथा लहगटु कहे छे ते (जललप्पसिअ के०) जललापसी निवीयातुं जाणवुं. एटले तावडीनी चीगट टालवा सारु मांहे लोट नाखी पाणीसाथें लापसी करीयें ते जाणवी. (पंचमो के०) पांचमुं (पुत्तिकयपूर्उ के०) पोतकृत पूडलो ते घृत तेलें खरडेला एवा स्नेहदिग्ध तवाने वीषे गुडादिकनुं पोतुं आपी गल्या पुडा करे छे एटले पक्वान्न तल्या पछी खरड्या तावडा मांहे गोलादिकनुं पोतुं देइने पुरूलो साजवीयें ते निवीयातुं जाणवुं ॥ ए छ जक्ष्य विगयना त्रीश निवीयाता कह्या.

जिहां घी अने तेलमां पाणीनो जाग आवे ते नीवियाता तल्या चिणादि सर्व जाणवा, अने जे कडाहमांहेथी घी तथा तेल उपर फरी वले नही,चिलमिलाट न थाय एवुं तलेलुं होय ते पण विगयातुं नही कहेवाय. इत्यादिक परंपरागत लेवानो विचार बहु प्रकारें छे, ते गछसमाचारीगत प्रसंगथी योगादिकमांहे कल्पाकल्प विजागें लखीयें छैयें.

लहचूई, पूपिकादि, पोतकृतपूपक, वेडमी तद्दिनकृत,करंब, घोल, फूल, वघारित पूरण, वघारिका, पटीरडी, मथित अगलित तक्रादिक, 'कस्मिन्नपि योगे' कोइ पण योगने विषे न कल्पे अनेरी योग विना निवीमां कल्पे.

लहिगडुं,छेठरा,वघारिक वडां,घारवडां,साज्यपक खीचडी,सेवतिका,

वघारित चणकादिक, उत्तराध्ययन योगने विषे आचारांग मध्यगत सप्त सप्तकाध्ययनने विषे चमरोद्देशक अनुज्ञा यावत् जगवतीयोगने विषे न कल्पे, बीजा सर्व योगमध्यें कल्पे.

अने पढोगरी, फूंकरणुं, उकलधुं, वाशी करंब, तिलवटी, कुल्लर, निवी यातां, विगइ, गांठीयाना घारा, दलिया, गुंदविना मगीयादि, औषधादि, मोदक, पेटक, खंमा, सितावर, सोलां, वासी, गुंरूपाक, गुदपाक, वगर तल्यां कांकरियां, अनुत्कालित इक्षुरस, दिनत्रयावधि प्रसूत गोडुग्ध, बलहट्टी, अंगाराथी उतारी आज्यादि मिश्रित खीचडी तथा सेवइका पाछला दिवसनी पचावेली तिलवटी. पर्पटकादि, गुडादिकें मिश्रित न करेली तिलवटी, इत्यादिक नीवीयातां श्रीआवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययनादि सर्व योगने विषे प्रायः कल्पे. एवो विचार प्रसंगथी जाणवा माटें लख्यो छे ॥३५॥

हवे गिहबसंसठेणं ए आगारथकी नीवीनां पच्चरकाणमांहे जे नीवियातां साधुने कल्पे, ते संसृष्ट डव्य कहीयें, ते संसृष्ट डव्य जाणवाने कहे छे.

डुद्ध दही चउरंगुल, दव गुड घय तिल्ल एग जत्तुवरिं ॥
पिंमगुल मरकणाणं, अद्दामलयं य संसठं ॥ ३६ ॥

अर्थः-(डुद्ध के०) डुग्ध अने (दही के०) दधिमांहे कूर प्रमुख नाखीयें एटले दूध दहीमिश्रित कूरादिक होय, ते जो दूध तथा दही कूरथी (चउरंगुल के०) चार अंगुल उपर चडे तेने संसृष्ट डव्य कहीयें, ते नीवियातुं नीवीमां कल्पे एटले जात रोटी उपर दूध, दही, चार अंगुल प्रमाण उंचुं चड्युं होय तो नीवीप्रमुख मांहे साधुने कल्पे अने चार अंगुलथी अधिक पांच आदिक अंगुलना प्रारंजथी जेवारें उंचुं चडे, तेवारें ते विगइ जाणवुं. माटें ते न कल्पे.

अने (दवगुड के०) डव्यगोल एटले ढीलो नरम गोल अने (घय के०) घृत (तिल्ल के०) तेल ए त्रणे ज्यां सुधी (जत्तुवरिं के०) जक्त जे जात अथवा रोटी ते उपरें (एग के०) एक अंगुल प्रमाण उंचां चढ्यां होय त्यां सुधी संसृष्ट डव्य कहेवाय, एटले नीवियातुं कहेवाय ते लेवुं कल्पे अने बीजा अंगुलथी प्रारंजीने उंचा चडता देखाय, तेवारें विकृत डव्य एटले विगयडव्य जाणवां, ते लेवां कल्पे नही.

(पिंगुल के०) पिंगोल एटले काळो गोल सार्थे (मरकणाणं के०) मसळ्युं जे चूरमुं प्रमुख तेमांहे (अद्दामलयं के०) आर्द्रामलक एटले शण पीलूना महोर ते समान नहाना कणीयाना जेवा प्रमाणवाला एवा गोलना बहु खंम रहे तो पण तेने (च के०) वली (संसठं के०) संसृष्ट ऽव्य कहियें. ते नीवीयातामांहे लेवा कल्पे परंतु एथी महोटा खंम गोलना रहे तो ते विकृतिगत जाणवा, ते कल्पे नही ॥ ३६ ॥

हवे वली एहिज नीवियातानुं स्वरूप दर्शाववा कांइक विशेष कहे छे.

दवहयविगइ विगइ, गयं पुणो तेण तं हयं दवं ॥
उद्धरिए तत्तमिय, उक्किठ दवं इमं चन्ने ॥ ३७ ॥

अर्थः—(दव के०) ऽव्य जे कलम शाल चोखा प्रमुख तेणें (हय के०) हणी निर्वीर्य करी एवी जे क्षीरादिक (विगइ के०) विगइ तथा वणिका दिकें हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने (विगइगयं के०) विकृतिगत एटले नीवियातुं कहीयें. (तेण के०) ते कारण माटें (पुणो के०) वली ते तंडुला दिकें हण्युं एवुं जे विकृतिगत (तं के०) तेने (हयं दवं के०) हत ऽव्य कहीयें. तथा सूखडी तावडामांहेथी (उद्धरिए के०) उद्धस्या पछी एटले सूखडी काहाडी लीधा पछी उगर्युं जे घृत (तत् के०) ते टाहाडुं थया पछी तेमां लोट नाखीने हलावियें (तम्मिय के०) ते घृत तावडो हेठो उतास्या पछी (उक्किठदवं के०) उत्कृष्ट ऽव्य कहेवाय एटले विगय जाणवुं (इमं चन्ने के०) एम अनेरा आचार्य कहे छे. इति गाथार्थः ॥ ३७ ॥

इहां जावार्थ ए छे जे अन्न प्रमुख ऽव्यें विगइना पुजल हण्या तेवारें विगयनो स्वाद फरी गयो तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय. परंतु विगइ तथा निवृत्तिक न कहेवाय, एटला माटे ते नीवीना पच्चरकाण वालाने लेवी कल्पे.

अने सुकुमारिकादिक सुखडीने तावडामांहेथी काढया पछी उगर्युं जे घृतादिक तेने विषे चूला उपर छते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे क्षेपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने उत्कृष्ट ऽव्य कहीयें, ते विकृतिगत जाणवुं. ते केम के? चूरिम पूर्वें कडाह विगइ थई जन्म कणिका कीधी ते क्षण घृत गोल परस्परें ऽव्य हत थइने पछी ते कणिका क्षेप करी मोदक बांध्या एवुं जे चूरमादिक ते विकृतिगत जाणवुं, पण विगय समजवी

नहिं, एवुं नाम उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एम केटलाएक आचार्य कहे छे. नामां तरे गीतार्थाभिप्रायें तो एम के जो चुल्हाना माथाथी उतर्या पछी शीत थया केडें जे कणिकादिक रूपवीयें, ते तथाविध पाकाभावथी विकृतिगत कहीयें अन्यथा परिपक्क विशेष थये द्रव्यगत कहीयें पण विगइ तथा निर्विकृतिक न कहीयें एवुं व्याख्यान प्रवचनसारोद्धारवृत्तिना अभिप्राय थी लख्युं छे, पण तिहां एम कह्युं छे जे सुधियें भली परें विचारवुं, जे माटे निर्विकृतिक अनेक भेदें छे. ते बहुश्रुतनी आचरणा परंपराथी जाणवां ॥३७॥

हवे केटलीएक वस्तुनां नाम उत्तम द्रव्य कह्यां छे, ते देखाडे छे.

तिल सकुलि वरसोलाई, रायणंबाइ दरकवाणाई ॥
डोली तिल्लाईया, सरसुत्तम दव्व लेवकडा ॥ ३८ ॥

अर्थः—(तिल के०) तेलथी नीपनी एवी (सकुलि के०) तिल सांकली तथा खारेक, टोपरां, सिंगोडां प्रमुख नाह्रोलाना हारडा तेने (वरसोलाई के०) वरसोलां कहीयें अने आदिशब्दथकी साकर खांडना विकार साकरीया पापड, नालिकेर, खांड, कातली, पाक, सर्व मेवा प्रमुख, राजदना आदिक, तथा (रायण के०) रायण (अंबाइ के०)आंबादिक एटले आम्रादिक फल सर्व अचित्त कह्यां पाकादिकें नीपजाव्यां मधुका दिकनां, नालिकेरादिकनां, (दरकवाणाइ के०) द्राखवाणी प्रमुख, नालेरवाणी प्रमुख (डोलीतिल्लाईया के०) डोली तेल आदि शब्दथकी नालिकेर सरशव प्रमुखनुं तेल, एरंड प्रमुखनुं तेल जाणवुं. अखोडादिक मेवा हलवा प्रमुख ए सर्व (सरसुत्तमदव्व के०) सरस उत्तम द्रव्य कहीयें तथा एने (लेवकडा के०) लेपकृत पण कहीयें. ए नीवीमां कल्पनीय जाणवां ॥ ३८ ॥

हवे ए सर्व पदार्थ कारणे लेवां कल्पे, पण सहज पणे रसगृध्रतायें लेवां कल्पे नहीं, ते कहे छे.

विगइगया संसठा, उत्तमदव्वाइ निव्विगइयंमि ॥
कारणजायं मुत्तुं, कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥ ३९ ॥

अर्थः—एक (विगइगया के०) विकृतिगता एटले दूध प्रमुख विगइथी उत्पन्न थया जे नीवीयाता जे संख्यायें त्रीश पूर्वे कह्या छे ते, बीजा (संसठा के०) संसृष्ट द्रव्य जे करंबादिक, मगदल, पापडी पिंडादिक, त्रीजा (उत्तम

दवाइ के०) उत्तम ड्रव्यादिक ते तिलसांकली, साकर, मेवादिकसरसोत्तम ड्रव्य जे पूर्वे कही आव्या ते ए त्रण प्रकारनी वस्तु ते (निव्विगइयंमि के०) नीवीना पच्चरकाणने विषे कोइ (कारणजायं के०) कारणजातं एटले पुष्टालंबन विशेष प्रयोजनरूप वातादिक कारण (मुत्तुं के०) मूकीने, साधुने (जुत्तुं के०) जोगववुं लेवुं (न के०) नही (कप्पंति के०) कल्पे. जेने जावजीव सुधी छ विगयनां पच्चरकाण होय, किं वा तथाविध विशेष तपें उजमाल होय, किंवा वैयावच्च करवाने उजमाल होय, ज्ञानादिकनो उद्यमी होय, तेवारें शरीरें ग्लानादिक निमित्तें औषधादिक कारणें लेवां कल्पे, अन्यथा कारणविना लेवां कल्पे नही. (जं के०) जेमाटे (वुत्तं के०) कह्युं छे ते आगली गाथायें कहे छे ॥ ३ए ॥

विगइं विगइं जीउ, विगइगयं जो अ जुंजए साहू॥
विगइ विगई सहावा, विगई विगइं बला नेइं॥४०॥

अर्थः—(विगइं के०) दूध प्रमुख जे विगइ छे ते प्रत्यें अने (विगइगयं के०) विकृति गत जे क्षीरादिक त्रिविध ड्रव्य नीवीयाता कह्या छे ते प्रत्यें (विगइं के०) विगति एटले विरूद्धगति ते नरक, तिर्यंच, कुदेव, कुमाणसत्व रूप जे माठी गतियो छे तेनाथकी (जीउ के०) जीती राखतो एटले बीहीतो अथवा संयम ते गति अने तेनो प्रतिपक्षी जे असंयम ते विगति जाणवी. तेवी विरूद्धगतियकी बीहितो एवो (जो के०) जे (अ के०) वली (साहू के०) साधु ते (जुंजए के०) जुंजे एटले खाय ते साधुने (विगई के०) विगइ ते (विगइं के०) विगति जे नरकादिकनी विरूद्धगति तेने विषे (बला के०) बलात्कारें एटले ते साधु जो पण डुर्गतिमां जवाने नथी वांछतो तो पण बलात्कारें तेने माठी गति प्रत्यें (नेई के०) पहोंचाडे. ते (विगइ के०) विगइ केहेवी छे ? तो के (विगइसहावा के०) विकृतिस्वजाव, एटले विकार उपजाववानो छे स्वजाव जेने एवी छे. केम के ए विकृत ते अवश्य शब्दादिक कामजोगने वधारे एवी छे माटें कारण विना विगयादिक न लेवां, अने श्रावकने पण निवी प्रमुखने पच्चरकाणे कोइ महोटा कारण विना तथा विशेष तप विना नीविता लेवा कल्पे नहीं, एनो विस्तार श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी तथा प्रवचनसारोद्धारनी

वृत्तिआदिक ग्रंथथी जाणवो. आंहीं संक्षेप मात्र लख्यो छे ॥ ४० ॥

हवे चार अजक्ष्य विगय छे, तेना उत्तरजेद कहे छे.

कुत्तिय मच्छिय जामर, महु तिहा कठ पिठ मद्य डुहा ॥ जलथल खग मंस तिहा, घयव्व मक्कण चउ अजक्का ॥४१॥ दारं ॥६॥

अर्थः—तिहां प्रथम मधुविगयना जेद कहे छे. एक (कुत्तिय के०) कुत्तां बगतरां जंगलमध्यें थाय छे. तथा वर्षाकालें विशेष थाय छे, तेहनुं मध, बीजुं (मच्छिय के०) माखीनुं मध, अने त्रीजुं (जामर के०) जमरानुं मध एवं (तिहा के०) त्रण प्रकारनुं (महु के०) मधु एटले मध जाणवुं तथा एक (कठ के०) काष्ठ ते धाउडी प्रमुख काठथी महुडादिकथी नीपन्युं मद्य, बीजुं (पिठ के०) पिष्ट ते ज्वारप्रमुखना आटादिकथी नीपनी मदिरा ए (मद्य के०) मद्य एटले मदिरा ते (डुहा के०) बे प्रकारनी जाणवी. हवे मांसना जेद कहे छे. एक (जल के०) जलचर जीव जे मत्स्यादिक तेनुं, बीजुं (थल के०) थलचर जीव जे द्विपदचतुष्पदादिक तेनुं, त्रीजुं (खग के०) खेचर जीव जे पक्षीयादिक तेनुं, ए (तिहा के०) त्रिधा एटले त्रण प्रकारनुं (मंस के०) मांस जाणवुं, तथा (घयव्व के०) घृतवत् एटले जेम घृत, गाय जेंष गांडरी अने बाली ए चार प्रकारें कह्युं तेम (मक्कण के०) माखण पण एहज चार प्रकारनुं जाणवुं, पण एटलुं विशेष छे जे माखण छे ते सर्व (चउअजक्का के०) चारे प्रकारनुं अजक्ष्यज छे अने घृत जे छे ते चारे प्रकारनुं जक्ष्य विगयमां कह्युं छे, जेमाटें बोद थइ खटासें चलित रसपणुं पामीयें एवी एक मदिरा, बीजुं छासथी बाहेर नीकल्युं एवुं माखण, त्रीजुं जीवित शरीरथी अलगुं थयुं एवुं मांस, रुधिर तेपण एमज जाणवुं, तथा चोथुं मधुपुडाथी उपन्युं मधु, ए चारे पदार्थोने विषे अंतर मुहूर्त्तमध्यें असंख्याता बे इंद्रिय जीव उपजे, तेमां मांसपेशी मध्यें तो पक्व तथा अपक्व तथा अग्नि उपरें पच्यमान एवो थको पण तेमांहे असंख्य बेंद्रिय तथा पंचेंद्रिय तथा निगोद जीव अनंता पण पोतें पोतानी मेले उपजता कह्या छे, तेमाटें ए चार विगय जे छे, ते सर्वथा अजक्ष्य वर्जनीय कह्यां छे. ए त्रीश निविगइनुं छठुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ७० थया ४१

हवे पच्चक्काणना बे जांगानुं सातमुं द्वार कहे छे.

पच्चक्काण बे जेदें छे, एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तर गुणरूप तिहां

साधुने मूलगुण ते पांच महाव्रत अने उत्तरगुण ते पिंमविशुद्ध्यादिक जाणवां, तथा श्रावकने मूलगुण ते पांच अणुव्रत अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत जाणवां, तिहां सर्व पच्चरकाणादिक तेहना नांगा जे रीतें थाय, ते रीतें कहे बे.

तेमां सर्व उत्तरगुण पच्चरकाण अनागतादिक दश प्रकारें पूर्वें कह्यां, अने देशोत्तर गुण पच्चरकाण सात प्रकारें ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मली थाय, तथा वली एक इत्वर अने बीजुं यावत्कथिक, ए बे नेदें उत्तरगुण प्रत्याख्यान तेमां साधुने इत्वरगुण पच्चरकाण ते कांइक अनिग्रहादिक जाणवां अने यावत्कथिक ते पिंमविशुद्ध्यादिक तथा अनियंत्रितादिक जे दुर्निक्षादिकें पण अनग्न होय नंग न थाय ते सर्व यावत्कथिक जाणवां अने श्रावकने तो इत्वर ते चार शिक्षाव्रतादिक बे अने यावत्कथिक त्रण गुणव्रतादिक बे. ते श्रावक बे नेदें बे, एक अविरति सम्यग्दृष्टि ते केवल सम्यग्दर्शन युक्त कृष्ण श्रेणिकादिकनी परें जाणवा अने बीजा विरति सम्यग्दृष्टि ते वली बे नेदें एक सानिग्रही अने बीजा निरनिग्रही.

ते वली विनज्यमान थका आठ नेदें थाय, ते केवी रीतें? तो के एक दुविध, त्रिविध, बीजो द्विविध द्विविध, त्रीजो द्विविध एकविध, चोथो एकविध त्रिविध, पांचमो एकविध द्विविध, बहो एकविध एकविध, ए ब नांगा पांच व्रत आश्रयी थाय अने कोइएक उत्तरगुणमांहेलुं कोइएक व्रत लीये ते सातमो नांगो जाणवो, अने आठमो नांगो कोइ नियम मात्र नज लीये ते जाणवो. ए रीतें पूर्वोक्त पांच अणुव्रतादिकने तेने ब नांगे गुणीयें तेवारें त्रीश नंग थाय, तेनी साथें एक उत्तरगुणनो नांगो मेलवीयें, तेवारें एकत्रीश नांगा थाय, तेनी साथें वली कोइ नियम मात्र व्रत न लीये, तेनो एक नांगो मेलवीयें तेवारें बत्रीश नेदें श्रावक सम्यग्दर्शनी शंका कांक्षादि रहित अमूढदृष्टिपणे जाणवा. इत्यादिक नेदनी वक्तव्यता बहु बे, पण इहां मुख्यतायें उंगणपच्चास नांगा थाय, ते नांगा गाथाना अर्थें कहे बे.

मण वयण काय मणवय, मणतणु वयतणु तिजोगि सग सत्त ॥
कर कारणुमइ डु ति जुय, तिकालि सीयाल नंगसयं ॥ ४७ ॥

अर्थः—एक प्राणातिपातादिकने (मण के०) मने करी न करुं, बीजो (व

यण के०) वचनें करी न करुं, त्रीजो (काय के०) कायायें करी न करुं, चोथो (मणवय के०) मन अने वचनें करी न करुं. पांचमो (मणतणु के०) मन अने कायायें करी न करुं, बहो (वयतणु के०) वचन अने कायायें करी न करुं, सातमो (तिजोगि के०) मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगें करी न करुं, ए एक संयोगी (सग के०) सात जांगा थया.

ते सात जांगा (कर के०) करवा आश्रयी जाणवा. तेमज (सत्त के०) सात जांगा (कार के०) करावववा आश्रयी जाणवा अने सात जांगा (अणुमइ के०) अनुमति आपवाना एटले अनुमोदन देवाना पण जाणवा

ते आवी रीतें केः–प्राणातिपातादिकने एक मने करी न करावुं, बीजो वचनें करी न करावुं, त्रीजो कायायें करी न करावुं, चोथो मन अने वचनें करी न करावुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करावुं, बहो वचन अने कायायें करी न करावुं, सातमो मन, वचन अने कायायें करी न करावुं. ए सात करावववाना जांगा कह्या. हवे सात अनुमोदवाना कहे बे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न अनुमोडुं, बीजो वचनें करी न अनुमोडुं. त्रीजो कायायें करी न अनुमोडुं, चोथो मन अने वचने करी न अनुमोडुं, पांचमो मन अने कायायें करी न अनुमोडुं, बहो वचन अने कायायें करी न अनुमोडुं, सातमो मन. वचन अने कायायें करी न अनुमोडुं, ए सात जांगा अनुमोदन देवाआश्री कह्या, एम सात करवाना, सात करावववाना अने सात अनुमोदवाना मली एकवीश जांगा थया.

हवे (डुति जुअ के०) द्विक त्रिक योग सहित सात सात जांगा करीयें, ते आवी रीतें के एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न करावुं. बीजो वचनें करी न करुं, न करावुं, त्रीजो कायायें करी न करुं नकरावुं. चोथो मन अने वचने करी न करुं न करावुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करुं, न करावुं, बहो वचन अने कायायें करी न करुं, न करावुं, सातमो मन, वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न करावुं, ए करवा करावववा आश्री सात जेद कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न अनुमोडुं, बीजो वचनें करी न करुं, न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करीन करुं, न अनुमोडुं, चोथो मन अने वचनें करी न करुं न

अनुमोडुं, पांचमो मन अने कायायें करी न करुं न अनुमोडुं, बहो वचन अने कायायें करी न करुं, न अनुमोडुं, सातमो मन वचन अने काया, ए त्रणें करी न करुं, न अनुमोडुं, ए सात नंग, न करवा, तथा न अनुमोदवा आश्री कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मनें करी न करावुं, न अनुमोडुं, बीजो वचनें करी नकरावुं, न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, चोथो मनें करी वचनें करी न करावुं, न अनुमोडुं, पांचमो मनें करी कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, बहो वचनें करी कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, सातमो मन, वचन अने कायायें करी न करावुं, न अनुमोडुं, ए न कराववा न अ नुमोदवा आश्री सात नंग कह्या. एम सात न करवा न कराववा आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न कराववा न अनु मोदवा आश्री. एवं सर्व मली द्विकसंयोगें एकवीश नंग थया. तेनी साथें पूर्वोक्त एक संयोगना एकावीश मेलवतां, बहेंतालीश नांगा थया.

हवे त्रिक संयोगें सात नंग थाय, ते कहे बे. एक प्राणातिपातादिकने मनें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं, बीजो वचनें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं, त्रीजो कायायें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं, चोथो मन अने वचनें करी न करुं, न करावुं अने न अनु मोडुं, पांचमो मन, अने कायायें करी न करुं, न करावुं, अने न अनु मोडुं. बहो वचन अने कायायें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं. सातमो मन, वचन अने कायायें करी न करुं, न करावुं अने न अनुमो डुं. ए त्रिकसंयोगी सात नांगा थया. ते पूर्वोक्त बहेंतालीश साथें मेलवतां सर्व मली उंगणपचास नांगारूप ते अणुव्रत, गुणव्रत अने अनिग्रहादिक ना नेद उपजे, तेने (तिकालि के०) त्रण काल ते अतीत, अनागत अने वर्त्तमान, ए त्रण कालें करी गुणीयें, तेवारें (सीयालनंगसयं के०) एकशो ने सुडतालीश (१४७) नांगा थाय. माटें जे एटला नांगा जाणे, ते पच्च रकाणनो कुशल कहीयें. यडुक्तं ॥ सीयालं नंगसयं, जस्स विसुद्धिए होइ उ वलद्धं ॥ सो खलु पच्चरकाणे, कुशलो सेसा अकुसलाय ॥१॥ इति ॥ एना वि शेषें नांगा षड्नंगीना श्रावकना व्रतसंबंधी थाय ते कहे बे. गाथा ॥ तेर सकोडी सयाइं, चुलसीइं जुयाइं बारसय लरका ॥ सत्तासीइ सहस्सा, दोय

सया तह डुरप्रहिया ॥ १ ॥ तेरशें कोडाकोडी, चोरासी कोडी, बार लाख सत्यासी हजार वशें ने बे थाय. एमज नवभंगीना नवाणुं हजार नवशे ने न वाणुं कोडी, उपर नवाणुं लाख नवाणुं हजार, नवशें ने नवाणुं एटला भांगा थाय ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए एमज एकवीश भंगी तथा उंगणप चास भंगीना विशेष भांगा थाय, ते सर्व आवश्यकबृहद्वृत्तिथी, तथा दीपि काथी तथा प्रवचनसारोद्धारवृत्तिथी, तथा श्रावकव्रतभंगप्रकरणवृत्तिथी, तथा देवकुलिकाथकी जाणवा. ते पच्चरकाणनो कुशल होय, तेणे विचारवा.

हवे ए पच्चरकाणनुंज स्वरूप कहे छे.

एयं च उत्तकाले, सयं च मण वयण तणूहिं पालणियं ॥ जा
णगजाणग पासि,त्ति भंग चउगे तिसुअणुन्ना ॥४३॥ दारं ॥७॥

अर्थः-(एयं च के०) ए पूर्वोक्त वली (उत्तकाले के०) उक्तकाल जे पोरिसीयादिक काल प्रमाण रूप ते (सयं च के०) पोतानी मेलें जेवी रीतें बोल्युं होय यथोक्तरूपें जे भंगादिकें लीधुं होय ते भंगादिकें (मणवयणत णूहिं के०) मन, वचन अने कायायें करी (पालणियं के०)पालवा यो ग्य ते (जाणगजाणग पासि के०) जाणगजाणग पासें करी एटले जाण अजाण्या पासें करे (इत्ति के०) एम (भंगचउगे के०) भंगचतुष्के ए टले चार भांगाने विषे करे तेमां (तिसुअणुन्ना के०) पहेला त्रण भांगाने विषे अनुज्ञा एटले आज्ञा छे एटले ए पच्चरकाणने करवा कराववा रूप च उभंगी थाय ते कहे छे. एक पच्चरकाणनो करनार शिष्य पण जाण होय, अने बीजो पच्चरकाण करावनार गुरु पण जाण होय, ए प्रथम भंग शुद्ध जाणवो. बीजो पच्चरकाण करावनार गुरु जाण होय अने पच्चरकाण कर नार शिष्य अजाण होय, ए बीजो भांगो पण शुद्ध जाणवो. त्रीजो पच्च रकाण करनार शिष्य जाण होय अने पच्चरकाणनो करावनार गुरु अजाण होय, ए त्रीजो भांगो पण शुद्ध जाणवो. चोथो पच्चरकाण करनार शिष्य अने पच्चरकाण करावनार गुरु, ए बेहु अजाण होय ते चोथो भांगो अशुद्ध जाणवो. ए रीतें चार भांगामांहेथी त्रण भांगे पच्चरकाण करवानी आज्ञा छे, अने चोथा भांगाने विषे आज्ञा नथी ॥ ए मूलगुण, उत्तरगुणरूप प च्चरकाणनुं सातमुं द्वार थयुं. उत्तर भेद ब्याशी थया ॥ ४३ ॥

हवे पूर्वोक्त जंगादिकें विचारीने पण जेम संयमयोग हीन थाय नही, ते रीतें पच्चरकाण कीधुं थकुं पण ठ प्रकारनी शुद्धियें करी सफल थाय, माटें पच्चरकाणनी ठ विशुद्धिनुं आठमुं द्वार कहे छे.

फासिय पालिय सोहिय, तिरिय किट्टिय आराहिय ठ सुद्धं॥
पच्चरकाणं फासिय, विहिणोचिय कालि जं पत्तं ॥ ४४ ॥

अर्थः—एक (फासिय के०) फासित एटले पच्चरकाण फरश्युं, बीजुं (पालिय के०) पालित एटले पच्चरकाण पाल्युं, त्रीजुं (सोहिय के०) शोजित एटले पच्चरकाण शोजाव्युं, चोथुं (तिरिय के०) तीर्ण एटले पच्चरकाण तीर्युं, पांचमुं (किट्टिय के०) कीर्त्तित एटले पच्चरकाण कीर्त्युं, ठहुं (आराहिय के०) आराधित एटले पच्चरकाण आराध्युं ए (ठ सुद्धं के०) ठ प्रकारें शुद्धें करी शुद्ध एवुं (पच्चरकाणं के०) पच्चरकाण, फलदायक होय. हवे ए ठ विशुद्धिना अर्थ कहे छे.

तिहां प्रथम सम्यक् प्रकारें (विहिणोचियकालि के०) विधियें करी उचित कालें एटले उचितवेलायें (जं पत्तं के०) जे पच्चरकाण प्राप्त थयुं एटले सूर्योदयथी पहेलां पच्चरकाण उचितकालें जे पाम्युं एटले जे पच्चरकाण कीधुं ते यावन्मात्र जेटला काल लगण ग्रहण कर्युं, तावन्मात्र तेटला काल लगें पहोंचाडवुं तेने (फासिय के०) फरश्युं कहीयें ॥ ४४ ॥

पालिय पुण पुण सरियं, सोहिय गुरुदत्त सेस जोयणउं ॥
तिरिय समहिय कालो,किट्टिय जोयण समय सरणे॥४५॥

अर्थः—बीजुं ज्यां लगें पच्चरकाण पूरुं न थाय, तिहां लगें (पुणपुण के०) वारंवार उपयोग देइने सावधानतायें (सरियं के०) संजार्युं जे महारे अमुक पच्चरकाण आजे छे, ए रीतें पच्चरकाणने स्मरणमां राखवुं, ते (पालिय के०) पाल्युं कहीयें.

त्रीजुं (सोहिय के०) शोजित एटले शोजाव्युं, ते आहारादिक लाव्या होइयें ते प्रथम (गुरुदत्त के०) गुर्वादिकने निमंत्री आपीने पछी (सेस के०) शेष रह्युं होय जे (जोयणउं के०) जोजन तेने पोतें लेवायकी एटले पच्चरकाण कीधुं छे ते पूरण थया पछी ते वस्तु लावी पहेला गुरुने आपी पछी

पोतें वावरे ते (सोहियं के०) पच्चरकाण शोजाव्युं कहीयें. चोथुं (समहियकालो के०) समधिककाल ते पच्चरकाणनो काल पूर्ण थया पढी पण थोडोसा अधिक काल लगे पडखीने सबुर करीने पढी पच्चरकाण पारे, तेने (तिरिअ के०) पच्चरकाण तिरित एटले तीर्खुं कहीयें. पांचमुं (जोयणसमय के०) जोजनना समयने विषे जोजननी वेलायें (सरणे के०) संजारवुं जे फलाणुं अमुक पच्चरकाण हतुं, ते आज महारुं पूर्ण थयुं ढे. हवे अशन करुं? आरोगुं? निस्तारुं? इत्यादिक विनय जाषा साचवीने जमवुं, तेने (किट्टिय के०) पच्चरकाण कीर्युं कहीयें ॥ ४५ ॥

इअ पडिअरिअं आरा, हियं तु अहवा ढ सुध्दि सद्दहणा ॥
जाणण विणयणु जासण, अणुपालण जावसुध्दत्ति॥४६॥दारं॥८

अर्थः—ढहुं (इअ के०) ए सर्व प्रकारें करी (पडियरियं के०) प्रतिचरितं एटले आचर्खुं जे पच्चरकाण एटले ए सर्व प्रकारें संपूर्ण निश्रायें पमाड्युं निराशंसपणे श्रीजिनाज्ञा पालन पूर्वक संयमयात्रा निर्वाहक षटकारण साधनपूर्वक अप्रमादपणे महोटा कर्मक्ष्यने कारणे थयुं तेने (आराहियं के०) आराधितं एटले आराध्युं कहियें (अहवा के०) अथवा प्रकारांतरें करी (तु के०) वली पण पच्चरकाणनी (ढसुध्दि के०) ढ शुध्दि प्रकारांतरें बीजी ढे ते कहे ढे. प्रथम सम्यग्दर्शनी श्रध्धावंतना मुखथी पच्चरकाण करवुं अने निःशंकता आचारयुक्त शुध्द सद्दहणा पूर्वक करवुं एटले करेला पच्चरकाण उपर शुध्द जाव होय ते (सद्दहणा के०) सद्दहणा शुध्दि जाणवी, बीजी पच्चरकाणने ड्व्य, क्षेत्र, काल अने जावथी जाणीने तथा मूल उत्तरगुणे जेद जंगादिकें जाणीने वली जाणनी पासें पच्चरकाण करे, ते (जाणण के०) जाणवापणुं ए बीजो अधिकार शुध्द जाणवो. त्रीजी सुज्ञानादिक आचारसंयुक्त अतिचार अविधि रहित गुरुनी पासें वांदणां देवा प्रमुख विनय साचवीनें पच्चरकाण करवुं, ते (विणय के०) विनयशुध्दि जाणवी. चोथी गुर्वादिक कहेता होय ते प्रत्यें आगारादिकनुं पोतें जांखवुं, एटले गुरु पच्चरकाण करावे, अने पाढलथी पोतें आगार उच्चरे, ते (अणुजासण के०) अनुजाषणशुध्दि जाणवी. पांचमी निराशंसपणे रूडी रीतें पाले जो विषम जय कष्ट आवी उपजे

तो पण दृढ रहे परंतु पच्चक्खाण नंग न करे, पच्चक्खाणथी चूके नहीं, ते (अणुपालण के०) अनुपालणा शुद्धि जाणवी. बही पूर्वोक्त सर्वप्रकार थी निर्जरारूप इहलोक परलोकनी वांबारहितपणे आशंकादि दोषें करी रहित ते (नावसुद्धत्ति के०) नावशुद्धि बे इत्ति एटले एम जाणवुं. ए ब शुद्धि पण समस्त सर्वे पच्चक्खाणोनेविषे जाणवी. एम नंगादि विशुद्धिना विस्तारनां बीजक ग्रंथांतरथी जाणवां. एटले ए आठमुं ब शुद्धिनुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल अठाशी थया ॥ ४६ ॥

हवे पच्चक्खाणनुं फल बे प्रकारें थाय, तेनुं नवमुं द्वार कहे बे.

पच्चक्खाणस्स फलं, इह परलोएय होइ डुविहं तु ॥
इहलोए धम्मिल्लाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥४७॥दारं॥ए॥

अर्थः—(पच्चक्खाणस्सफलं के०) पच्चक्खाणनुं फल ते (इहपरलोएय के०) इह लोक तथा परलोक आश्री (डुविहं तु के०) बे प्रकारनुं वली (होइ के०) होय, तेमां कोइएक प्राणीने इहलोकें एज नवमां तुरत फल थाय, अने कोइएकने परलोकें एटले परनवें फल थाय, तिहां (इहलोए के०) आ लोकआश्रयी तो (धम्मिल्लाई के०) धम्मिलादिकनो दृष्टांत वसुदेवहिंमीग्रंथथी जाणवो, एटले धम्मिल्लें उत्तरगुण पच्चक्खाण चारित्ररूप ब महीना पर्यंत आयंबिल प्रमुख तप कस्युं, तेथी तेहीज नवें घणी लब्धि उपनी, शरीरना मल मूत्र सर्व औषधरूप थयां, राजसंपदा नोगवी मोक्षपदवी पाम्यो, अने (परलोए के०) परलोकनेविषे एटले परनवमां (दामन्नगमाइ के०) दामन्नकादि प्रमुखना एटले दामनक नामें व्यवहारीयाना बेटानो दृष्टांत श्रीआवश्यकनिर्युक्तिप्रमुख ग्रंथथकी जाणवो. एटले पच्चक्खाण फलनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल नेवुं थया ॥ ४७ ॥

एमां आ नव आश्रयी पच्चक्खाणना फलसंबंधी धम्मिल्लकुमारादिकनो दृष्टांत कह्यो बे, तेनी कथा संक्षेपथी लखवी जोइयें, परंतु ए धम्मिल्लनो रास उपाइ गयो बे, तेमां एमनी संपूर्ण कथा घणा सज्जनोने वांचवामां आवी गयेली बे, माटें आंहीं लखी नथी, जे सज्जनोने वांचवानी अनिलाषा होय तेमणें रास वांची लेवो.

अने परनवें दामन्नकादिकने फल थयुं बे ते दामन्नकनो दृष्टांत संक्षेप

मात्रें लखीयें ढेयेंः—राजपुर नगरें एक कुलगर रहेतो हतो तेनो जिनदास श्रावक मित्र हतो तेनी संगतथी कोइक दिवसें साधु पासें गयो, त्यां मत्स्य ना मांसनो नियम लीधो, अनुक्रमें डुर्जिक्ष थयुं तेवारें घणा लोक मत्स्या हारी थके शालिकादि पुरुषें बलात्कारें द्रह समीपें आण्यो, तिहां ते जाल मां नाखेला मत्स्यने जोइने मूकी आपे. एम त्रण दिवस सुधी बलात्कार कराव्यो, तेवारें एक मत्स्यनी पांख त्रूटी देखी बलात्कारें तेथी निवर्त्यो, पढी अणसण लेइ मरण पामी राजगृह नगरें शेठनो पुत्र थयो, दामन्नक नाम दीधुं, ते आठ वर्षनो थयो तेवारें तेनुं कुल मरकीना रोगथी मरण पाम्युं, उ छिन्न थयुं, तेवारें ते दामन्नक कोइ सागरदत्त व्यवहारीने घरे डुःखित थको रह्यो. एकदा साधुनुं युगल जिक्षाने अर्थे ते व्यवहारीने घेर आव्युं, तिहां ते बालकने देखीने परस्पर साधु बोल्या जे ए बालक ए घरनो स्वामी थ शे, ते प्रछन्नप्रवृत्ति घरना अधीशें जाणी तेवारें अमर्षपणे करी ते बाल कने मारवा जणी अंत्यजने आप्यो, तेणें अजिज्ञान देखाडवा निमित्तें ते नी टचली अंगुली छेदी परं तेने नीर्विषय जय देखाडी परहो काढ्यो, पढी ते बालक अनुक्रमें नाठो थको ते शेठनुं जिहां गोकुल ढे, ते ग्रामें आव्यो, तिहां ते गोकुलना स्वामीयें तेने स्वरूपवान् तथा विनीत देखी पुत्रपणे थाप्यो, यौवन पाम्यो. पढी अनुक्रमें केटलाएक वर्षांतरें तिहां सागरदत्त शेठ आ व्यो, तेणें तेने देखीने उंलख्यो, तेवारें कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखी ने आप्यो, तेमां शेठें पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष आपजो. एवो लेख आपी पोताने नगरें मोकल्यो, ते श्रांत थयो थको उद्यानमांहे का मदेवना प्रासादें आवी सूतो, तिहां वरार्थिनी एवी शेठनी पुत्री कामदे व पूजवा आवी, तिहां तेणें तेने सूतो देखी कागलमां पोताना पिताना अक्षर देखी कागल वांच्यो, तेमां विष देवानुं लख्युं जोइने पोतानुं नाम विषा ढे तेथी तेनी इछक थइ मनमां विचार्युं जे महारा पितायें सुंदर स्व रूपवान् जाणी वर मोकल्यो ढे, पण विष देजो एवुं लख्युं ढे ते महारा पिता कागल लखतां जूली गया ढे विषाने स्थानकें विष लखाइ गयुं ढे, अने कामदेवें पण महारा उपर प्रसन्न थइने ए वर मुजने आप्यो, माटें काग लमां विष लख्युं हतुं तिहां विषा देजो. एम कन्यायें अंजनशलाकायें ल खीनें पाछो लेख तेने ठेकाणे मूकी दीधो. अनुक्रमें ते घेर आव्यो, तिहां त

रत लग्न लेइ कन्या परणावीने जामाता कीधो. एवी वात सांजलीने शेठ घरे आव्यो क्रोधाध्मांत थको कहेवा लागो जे मातृपूजन निमित्तें पाणि ग्रहण मांगलिक वधाववा जणी जमाइने मोकलो अने शेठें मारवा सारु अत्यंजने संकेत कराव्यो हतो. हवे ते मातृपूजन निमित्तें जाय एटलामां विकालवेला जाणी नवपरणीत हतो माटे शेठनो पुत्र कहेवा लाग्यो के तमारीवती हुं मातृपूजन करवा जाउं बुं, एम कही ते गयो एटलामां वच्चे रस्तामां अंत्यजें तेनो संकेत जाणी ते शेठना पुत्रने जमाइ समजी मारी नाख्यो. जवितव्यताथी बलवत्तर कोइ नथी. पठी ते पुत्रमरणनुं वृत्तांत सांजलीने हृदयस्फोट थइ शेठ पण मरण पाम्यो. अनुक्रमें घरनो स्वामी दामन्नक थयो. ऋषिजाषित वचन अन्यथा न थाय.

अनुक्रमें एकदा पाठले पहोरे पाहरी देतो तेणे एक मंगल पाठक गाथा कही. तद्यथा ॥ अणुपुंखमावहंतावि, अन्नत्रा तस्स बहु गुणा हुंति ॥ सुह डुरककम्म पुडंतो, जस्स कयंतो वहइ पक्कं ॥१॥ ए गाथानो अर्थ सांजली एक लक्षनुं दान दीधुं, एम त्रण वार गाथा सांजली त्रण लक्ष दान दीधुं. राजायें ते वात सांजलीने पोतानी पासें तेडाव्यो. पठी सर्व वीतक वात राजा आगल कही, राजा हर्ष पाम्यो थको तेने नगरशेठनी पदवीयें स्थाप्यो. एकदा गुरु आव्या सांजली वांदवा गयो, तिहां धर्मदेशना सांजली अने पुरातन जव मत्स्य मांस पच्चरकाणादिक सर्व सांजल्युं, बोधिलाज पाम्यो, धर्मानुष्ठान साचवी देवलोकें गयो. तिहांथी महाविदेहमां सुकुलमां उपजशे, तिहां बोधिलाज पामी चारित्र लही केवलज्ञान पामी परंपरायें मोक्षसुख पामशे, अने केटलाएक तेहीज जवें सिद्धि पामे. ए बे प्रकारें फलनुं नवमुं द्वार थयुं ॥

एटले सर्व मूलगुण प्रत्याख्यान सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान तथा अजिग्रहादिक देश उत्तरगुण पण होय अने श्रावकनें देश मूलगुण प्रत्याख्यान ते अणुव्रत तथा देश उत्तर गुणप्रत्याख्यान ते गुणव्रत अने शिक्षाव्रत जाणवां. ते वली बे बे जेदें एक इत्वर ते अल्पकालि अनागतादि पच्चरकाण मूल उत्तर गुण पच्चरकाण अने देश उत्तरगुण पच्चरकाण ते शिक्षाव्रतादि तथा देशे मूलगुण पच्चरकाण अने सर्वेथी उत्तरगुणपच्चरकाण अने मूलगुण क्रियारूपें एवुं पच्चरकाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चरकाणना जंग विकल्प

घणा छे, ते गुरुना विनयथी जाणीयें, माटे यथागृहीत नंगें पच्चक्काण आ राधवां, तेनुं गमन संपूर्णद्वारायें कहे छे ॥ ४७ ॥

हवे ग्रंथ समाप्ति अर्थें गाथा कहे छे.

पच्चक्काणमिणं से, विऊण नावेण जिणवरुद्दिठं ॥
पत्ता अणंत जीवा, सासय सुक्कं अणाबाहं ॥४८॥
॥ इति प्रत्याख्याननाष्यं संपूर्णम् ॥

अर्थः–(पच्चक्काणं के०) पच्चक्काण ते (इणं के०) ए यथोक्त कह्युं ते प्रत्यें (नावेण के०) नावें करीने एटले नावसहित, श्रद्धायें करी निःशंकित सम्यगदर्शन सहित जे रीतें (जिणवर के०) जिनेश्वर नगवानें ज्ञान क्रिया सहित उनयनयसम्मत (उद्दिठं के०) कह्युं छे, प्रकाश्युं छे ते प्रकारें एवा गुणधारण रूप पच्चक्काणने (सेविऊण के०) सेवीने, आद रीने, पालीने त्रिकालापेक्षायें (अणंत जीवा के०) अनंत जीव नव्यप्राणी ते (सासयसुक्कं के०) शाश्वतां सुख (अणाबाहं के०)अनावाध अव्या बाध निराबाध, एटले नथी कोइ वाधा जिहां एवुं जे मोक्षस्थानक ते प्रत्यें (पत्ता के०) पाम्या, पामे छे, अने पामशे ॥ ४८ ॥

ए अर्थ संक्षेपमात्रथी लख्यो छे, वली जे विशेषार्थना खपी होय तेणें आवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्ति, प्रवचनसारोद्धारवृत्ति, कल्पाकल्पशतक प्रकरण, इत्यादि ग्रंथ जोवा. आ बालावबोध श्रीज्ञानविमल सूरि महा राजें करेलो हतो, पण तेनुं लखाण संकोचमां होवाने लीधे वीजी केटली एक टबा प्रमुखनी प्रतो साथें मेलवी पदोना अर्थ कांइक खुलासा पूर्वक लखेला छे, तथापि महारी मंदमतिने लीधे तथा छापवानी उतावलने लीधे जे नूलो रही गयेलीयो होय ते चतुर पुरुषोयें शोधीने वांचवी. हुं महाराथी थयेली अशुद्धतानुं मिछा मि डुक्कड सर्व वांचनार साहेबोनी साथें करुं छुं.

इति प्रत्याख्याननाष्यं वालाववोधसहितं समाप्तम् ॥ शुनं नवतु ॥

॥ इति नाष्यत्रयं बालावबोधसहितं समाप्तम् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनानि लिख्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरम् ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदिजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडन, प्रवर गुणगणभूधरम् ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करित नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरम् ॥ निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो०॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरम् ॥ श्री विमल गिरिवर शृंगसिद्धा ॥ नमो०॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वस्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोकमांही, विमल गिरिवर तोपरम् ॥ नहिं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो०॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंडन, दुःखविहंडण ध्याइयें ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योतिने पाइयें ॥७॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरम् ॥८॥इति॥१॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजयचैत्यवंदनं ॥

श्री शत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीने जे चडे, तेने भव पार उतारे ॥१॥ अनंत सिद्धनुं एह ठाम, सकल तीर्थनो राय ॥ पूर्व नवाणुं रिखभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥२॥ सूरजकुंड सोहामणो, कबिड यक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥३॥इति॥२॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदनं ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजितनाथ, आबू रिखभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि ऊपरें, जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, भरतें भरावी सोय ॥३॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारगिरि ऊपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजियो, नामें देव सुपास ॥ रिखभ कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चोवीश जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीयें ॥ चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दोय

उज्ज्वल लहीयें ॥१॥ मल्लीनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या॥मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥२॥ शोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश॥धीरविमल पंम्नित तणो, ज्ञानविमल कहे शिष्य॥३॥इति॥४॥

॥ अथ श्रीचोविश जिन समकितनवगणतीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, नव तेर कहीजें ॥ शांतितणा नव बार सार, नव नव नेम लहीजें ॥१॥ दश नव पासजिणंदने, सत्तावीश श्री वीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं नवें, पाम्या नवजल तीर॥ २ ॥ ज्यांथी समकित फरसियुं, त्यांथी गणीयें तेह ॥ धीरविमल पंम्नित तणो, ज्ञानविमल गुणगेह ॥ ३ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥१॥ शत सुमति ने गणधरा, एकसय अधिका सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडसी इगसी व्रात ॥ २ ॥ ठोहोंतेर ठाशठ सगवन, पचास त्रेतालीश ॥ ठत्तिस पणतिस कुंथुने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखनादिक चोवीशना, एक सहस सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरिया सवे ए, सादि अनंत निवास ॥ करियें शुन्न चित्त वंदना, जब लग घटमां श्वास॥ ६ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ पंच परमेष्ठिचैत्यवंदनं ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें नावें ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥१॥ आचारज गुण ठत्रीस, पंचवीश उवज्ञाय ॥ सत्तावीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंम्नित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥७॥

॥ अथ सीमंधरजिन चैत्यवंदनं ॥

॥ श्री सीमंधर वीतराग, त्रिनुवन तुमें उपगारी ॥ श्री श्रेयांसपिताकुलें, बहु शोना तुमारी ॥१॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणें जायो जयकारी ॥ वृषन लंछनें विराजमान, वंदे नर नारी ॥२॥धनुष पांचशें देहडी ए, सोहीयें सोवन वान ॥ कीर्त्तिविजय उवज्ञायनो, विनय धरे तुम ध्यान॥३॥

॥ अथ सीमंधर जिन चैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुक्कलवइ विजयें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंडरिगिणी, नयरीयें शोहे ॥ श्रीश्रेयांस राजा तिहां, भवियणनां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, स त्यकी राणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अ नुक्रमें प्रभु जनमीया, वली यौवन पावे ॥ मात पिता हरखें करी, रूकमि णी परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां, संयम मन लावे ॥ मुनिसु व्रत नमि अंतरें, दीक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ रिखभ लंछनें शोभता, सर्व भावना जाण ॥ ६ ॥ चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकशो कोड ॥ त्रण भुवनमां जोयतां, नहीं कोय एहनी जोड ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एक स मय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उदयपेढाल जिनांतरें ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जसविजय गुरु प्रणमतां, शुभवांछित फल लीध ॥९॥९॥

॥ अथ सीमंधरचैत्यवंदनं ॥

॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरतें आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमं ने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमो धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवो भव हुं छुं ताहरो, नहिं मेहेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेईशुं ॥ पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव ॥ इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥

॥ अथ वीश स्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, अचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमो थेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए सव्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भा वो ॥ विनय करी गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभवयधा रिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चउदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥४॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तिछस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वीशस्थानकतपना काउस्सग्गनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करीयें ॥ दश पचवीश सत्ता वीशनो, काउस्सग्ग मन धरीयें ॥ १ ॥ पंच सडसठ दश वली, सीत्तेर नव पणवीश ॥ बार अडवीस लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥२॥ वीश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये जव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ वीश स्थानक एम जाणीयें, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ जाव धरी मनमां घणो ए, जो एकपद आराधे ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, नमी निज कारज साधे ॥५॥

॥ अथ रोहिणीतपचैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणी तप आराधीयें, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ दुःख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजें वासक्षेप, प्रह ऊठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी धोतीयां, मन वच काया क्षेम ॥२॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ जावें जावना जावीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहु कालें लेइ धूप दीप, प्रजु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी जक्तिशुं, अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिनस्तवन, जिननो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइयें, जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दिये, उत्तर उत्तर जेद ॥ मान कहे ए विध करो, ज्युं होवे जवनो छेद ॥ ६ ॥ १३ ॥

॥ अथ विचरता जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ रिखजादिक वली वंदीयें, संपइ जिन चोवीश ॥१॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोकें जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर जांख ॥३॥ एक शो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुम्माली सात शें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनजवन नमुं, सात कोड बोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठलाख चित्त राख ॥५॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जिनजवन अपार ॥ ते जवि! नित्य वंदन करो, जेम पामो जवपार ॥ ६ ॥ तीर्छा लोकें शाश्वतां, श्रीजिनजुवन विशाल ॥ बत्रीशशें ने ओगणशाठ, वंदूं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य

करुं जुहार ॥ ८ ॥ अण भुवनमांही वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजें जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, ते चवियां बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहनें भवि तजीयें ॥ मुझ परें शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव भजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जन आगल कहियें ॥५॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीजदिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन, भांखे भविजन आगें ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो भली भातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥३॥ ज्ञान रहित किरिया कही,काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोडी वरसां लगें, अज्ञानें करे तेह ॥५॥ देश आराधक क्रिया कही,सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो,अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो भावशुं, टाले भव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरें पंचमी आराहीयें ए, आणी भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदी आठमने दिनें,विजयासुत जायो ॥ तेम फागुणशुदि

आठमें, संजव चवि आयो ॥ १ ॥ चैत्र वदनी आठमें, जनम्या ऋषज जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥२॥ माधव शुदि आठम दिनें, आठ कर्म कर्यां दूर ॥ अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥ आठ जाति कलशें करी, नवरावे सुरविंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनि सुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ शुदि आठमें, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें, नमि जन्म्या जगजाण ॥ तिम श्रावणशुदि आठमें, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ जाद्रवा वदि आठमदिनें, चविया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तमपद पद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रजु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्रजूति आदें मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउ गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए,एकादश गणधार ॥ वीरें स्थाप्या वंदीयें, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर मल्ली पास, वर चरण विलासी ॥ ऋषज अजित सुमति नमी, मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिववास पास, जवजावना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी,ऋद्धि सघली जोडी ॥६॥ दश क्षेत्र त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें, एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मषी कागल काठां ॥८॥ अगीयार अव्रत छांरुवां ए, वहो पडिमा अगीयार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥१८॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरनी राशियोनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे, कुंथु अजित वृष जाति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशी वृश्चिक धन ऋषजदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥२॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥इति ॥ १ए ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणारससिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, निःकारण बंधु ॥२॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, कि मही कथ्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय॥३॥२०॥

॥ अथ श्रीजिनपूजानुं चैत्यवंदन ॥

॥ निजरूपें जिननाथके, द्रव्यें पण तिमही ॥ नाम थापना भेदथी, प्रगट जगमांही ॥ १ ॥ अध्यातमथी जोडीयें, निख्खेपा चार ॥ तो प्रभुरूप समान भाव, पामे निरधार ॥२॥ पावन आतमनें करे ए, जन्म जरादि दूर ॥ ते प्रभु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुख पूर ॥ ३ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन.

॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेसर जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमें पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुयण भवियणजन मन वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं भालें, कर जोडीने त्रिकाल नमो ॥ अ०॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक,सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अ० ॥४॥ तूं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत भविने हितवत्सल, तुंही कृपारससिंधु नमो ॥ अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शें दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशितसकलकलंककलुषगण, दुरित उपद्रवभाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार भवोदधितारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीयो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनछंद ॥

॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुद्धें, नमो नाथ निश्चें करी एक बुद्धें ॥ देवी देवलां अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्यलोको भुलां कां भमो छो ॥१॥

त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो, पड्या पाशमां भूतने कां भजो छो ॥ सुरधेनु छंडी अजा शुं अजो छो, महापंथ मूकी कुपंथें व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणि काचमाटें, ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटें ॥ सुरद्रुम उपाडी कुण आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं, किहां केशरी ने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथ किहां अन्य देवा, करो एकचित्तें प्रभु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करे छे सनाथं ॥ महा तत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेनां दुःख दारिद्र दूरें पलावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो, कुशीलें करी देहनें कां दमो छो ॥ नहीमुक्तवासं विना वीतरागं, भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥६॥ उदयरत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजें प्रभु दास जाणी ॥ आज माहरे मोतीडे मेह वुठा, प्रभु पास शंखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ कल्याणकेलिसदनाय नमोनमस्ते, श्रीमत्सरोजवदनाय नमोनमस्ते ॥ रागारिवारकदनाय नमोनमस्ते, वज्राभिरामरदनाय नमोनमस्ते ॥ १ ॥ अंभोधराभकरणाय न० ॥ लोकातिरिक्तवरणाय न० ॥ संसारवाद्धितरणाय न० ॥ त्रैलोक्यसारशरणाय न० ॥ २ ॥ सन्निर्मितांघ्रिमहनाय न० ॥ रागोरुदारुदहनाय न० ॥ विध्वस्तकृत्स्नकुहनाय न० ॥ पुण्यद्रुमालिगहनाय न० ॥ ३ ॥ संसारतापशमनाय न० ॥ निर्दाक्ष्यदाक्ष्यदमनाय न० ॥ सुव्यक्तमुक्तिगमनाय न० ॥ रूपाभिभूतकमनाय न० ॥ ४ ॥ पापौघपांसुपवनाय न० ॥ सेवापरत्रिभुवनाय न० ॥ क्रोधाशुशुक्षणिवनाय न० ॥ संसृत्युदन्वदवनाय न० ॥ ५ ॥ नेत्राभिभूतकमलाय न० ॥ शक्रार्चितांघ्रियमलाय न० ॥ निर्नाशिताखिलमलाय न० ॥ पद्मोल्लसत्परिमलाय न० ॥ ६ ॥ श्री अश्वसेनतनयाय न० ॥ सर्वाद्भुतैकविनयाय न० ॥ विख्यातनिश्चितनयाय न० ॥ निर्णीतभूर्युपनयाय न० ॥ ७ ॥ श्रीसंघहर्षसुविनेयकधर्मसिंह, पादारविंदमधुलिएमुनिरत्नसिंहः ॥ पार्श्वप्रभोर्जगवतः परमं पवित्रं, स्तोत्रं चकार जनताभिमतार्थसिद्ध्यै ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥

संतोष वृत्ति धरो चितमांहि, राग द्वेषथी दूर थाउं उछाहिं ॥१॥ पड्या मोह ना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंडी जुलां कां जमो छो ॥२॥ अलोजी अमानी नीरागी तजो छो, सलोजी समानी सरागी जजो छो ॥ हरि हरादि अन्य थी शुं रमो छो, नदी गंग मूकी गलीमां पडो छो ॥३॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंढमाला ॥ केइ देव उत्संगें राखे छे वामा, केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जापमाला, केइ मांसजक्षी महावीकराला ॥ केइ योगिणी जोगिणी जोग रागें, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥५॥ इस्या देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिनां सु खने केम चाखे ॥ जदा लोजना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुउं मन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंडने मन्नशुं लेय चाखे ॥ दीन हीननी जीड ते केम जांजे, फुटो ढोल होये कहो के म वाजे ॥ ७ ॥ अरे! मूढ ज्राता जजो मोक्षदाता, अलोजी प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंड शुं मत्त राचो ॥८॥ मंदबुद्धिशुं जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व जू लो जमे छे ॥ किहां सर्षवा ने किहां मेरु धीरं, किहां कायरा ने किहां शूरवी रं ॥९॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंजखंडं, किहां कोद्रवा ने किहां खीर मंडं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी, किहां रंकनारी किहां राय राणी ॥ किहां नारकी ने किहां देवजोगी, किहां इंद्र देही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्मघाती किहां कर्मधारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वा मी ॥१२॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरोषी, सजो पुण्य पोषी जजो ते अ रोषी ॥१३॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आश धारी प्रजु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रजु परमरागी, जव फेरनी शृंखला मोह जांगी ॥१४॥ मानियें वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजें दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥१५॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिस ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामें गिरिवर चढे, मनोवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संयोग ॥ २ ॥ जे वेरी विरुआ वंकडा, तस नामें नावे ढूकडा ॥ जूत प्रेत नवि खंके प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामें जयजयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनोवांछित कापड तंबोल ॥ घर सुगृहिणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥५॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ महोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पहोंचे वांछित कोड ॥ महियल माने महोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दुहा ॥ वांछित पूरे विविध परें, श्री जिनशासन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयंमुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥२॥ एकज अक्षर एक चित्त, समर्यां संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सद्गुरु जाषित सार ॥ सो जवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीयें नवकार ॥ ४ ॥ छंद ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेश्वर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ स्मशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे जवनो पार ॥ सो जवियां जत्तें चोखे चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वडशाखा शिंके बेसी, हेठल कुंम हुताश ॥ तस्करने मंत्र समप्यों श्रावकें, ऊड्यो ते आकाश ॥ विधिरीतें जपंतां विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शिख्यो मुनिवरपासें, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते रायसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपासकुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाले ॥ संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानथकी कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्तपित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहे कृष्ण भुजंगम घाल्यो, गृहिणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावें हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीनें, पाडी बाण प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही, विलसे जैनविहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें, समरे संपति थाय ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सद् गुरु सन्मुख विधें समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलि कारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रिद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्या, सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सद्घाय महाव्रत पंचह, पंच समिति समकित ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीयें नवकार, सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र शाश्वतो, जपे एम श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य गणीजें ॥ श्री उवद्याय सुसाधु, पंच परमेष्ठी थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशललाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध ऋद्धि वांछित लहे ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहे जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीयशिरोमणि, सुंदरी नामें ऋषजसुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिजुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥३॥ चंदनबाला बालपणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिलाज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लजा ए॥जोबन वेशें कामने जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजा ए ॥५॥ पंच जरतारी पांरुव नारी, डुपद तनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शीयलमहिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परणालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर गृहिणी मृगावती सती, सुरजुवनें जस गाजीयो ए ॥८॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहिं विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाये, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीलथी ए॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सती सुजडा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥११॥ सुरनर वंदित शीयल अखंकित, शिवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांरुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांरुवमाता दसे दसारनी, बहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥१३॥ शीयलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाये, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥१४॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुप्फचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्वविख्याता कामितदाता, शोलमी सती पद्मावती ए ॥१६॥ वीरें जांखी शास्त्रें साखी, उदयरतन जांखे मुदा ए ॥ वहाणुं वातां जे नर जणशे, ते लहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥इति॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति सोहे क्षत्रियकुंडें, तस घेर त्रिशला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढिय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक ॥ जामिनी मध्यें शोजतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल वृषज ने केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्मसर जलनिधि उत्तम, अमरविमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्वल, बन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ चौद सुपन सूचित विश्वपूजित, सकल सुखदातार ॥ मंगल पहेलुं बोलीयें ए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोबर गाम वसे तिहां, वसुजूति विप्र मनोहरु ए ॥त्रुटक॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथ्वी नामें नार ॥ इंद्रजूति आदें अछे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणें आदस्युं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणे समे तिहां समोसस्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो संयम जार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें तेणी वार ॥ इंद्रजूति गुरुजगतें थयो, महा लब्धिनो जंकार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकडाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलिजद्र जग विख्यात ॥ मोहवशें वेश्यामंदिर, वस्या वर्षज बार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संयम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्याआवासें रह्या निश्चल, डग्यो नहिं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीयें, श्री थूलिजद्र अणागार ॥ ३ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजें झगे ए ॥ सुरपतिनिर्मित त्रण गढ शोजित, मध्ये सिंहासन झगमगे ए ॥त्रुटक॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडा कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बेहु कर जोड ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोजे श्री जगवंत ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी ते पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप जावना रे, टाले सघलां

कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रनातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मंगल पामशे, उदयरत्न नांखे एम ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं ॥ नुजंगप्रयातछंद ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेष्ठा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न नोगं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न माया न लोनं ॥ चि० ॥ २ ॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्रं न निद्रा ॥ न स्वामी न नृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चि० ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोदं न चिंता, न क्षुद्रो न नीतो न कृश्यं न तंद्रा ॥ न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुद्रा ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वनाथ, हृषीकेश विध्वस्त कर्मारिजालं ॥ न पुण्यं न पापं न चाक्षादि प्रायं ॥ चि० ॥ ५ ॥ न बालो न वृद्धो न तुछो न मूढो, न खेदं न नेदं न मूर्त्तिर्न मेहा ॥ न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न अंतं न मन्या, न द्रव्यं न क्षेत्रं न दृष्टो न नावा ॥ न गुरुर्न शिष्यो न हीनं न दीनं ॥ चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञान रूपं स्वयं तत्त्ववेदी, न पूर्णं न शून्यं न चैत्यस्वरूपी ॥ न चान्योऽन्य निन्नं न परमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ आत्माराम गुणाकरं गुणनिधिं चैतन्यरत्नाकरं, सर्वे नूतगतागते सुखदुःखे ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यतम् ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ स्तुतयोलिख्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री सीमंधरजिन थोय ॥

॥ सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहंत सकलनी, नाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर नांखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ए थोय चार वखत पण कहेवाय छे.

॥ अथ सीमंधरजिननी थोय ॥

॥ श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसा जी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या, तिहुअण जस परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरी दीक्षा, शिक्षा जगत निरासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रनु, जाशे शिववहू

पासें जी ॥१॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया, इगसठि उक्किठा जी ॥ चउ अड अड मली मध्यम कालें, वीश जिनेश्वर दिठा जी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायइ पुक्कर मोझारें जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगें, प्रव चनसार उद्धारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्तें जी ॥ अर्थनिदेशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वा दश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसियां जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्कर पदना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणारंगी समकितसंगी, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चउव्विह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारी जी ॥ पंचांगुली सूरि शासनदेवी, देती तस जस ऋद्धि जी ॥ श्रीशुनवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धि जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया, केवल सिरीराया, मोक्ष नगरें सिधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, दुरगति दुःख भारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानंतधारी, नमियें नर नारी, जेह विश्वोपकारी ॥२॥ समवसरण बेठा, लागे जे जिन मीठा, करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दिठा ॥ द्वादशांगी वरिठा, गुंथतां टाले रिठा, नविजन होय हिठा, देखि पुण्यें गरिठा ॥३॥ सुर समकितवंता, जेह ऋद्धे महंता, जेह सुजनसंता, टालियें मुझ चिंता ॥ जिनवर सेवंतां, विघ्न वारे दुरंता, जिन उत्तम थुणंता, पद्मनें सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शाश्वतजिनस्तुति ॥

॥ ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजें, वारिषेण दुःख वारे जी ॥ वर्द्धमान जि नवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारे जी ॥ नरतादिक क्षेत्रें मली होवे, चार नाम चित्त धारे जी ॥ तेणें चार ए शाश्वत जिनवर, नमीयें नित्य सवारें जी ॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो तीर्छे लोकें थइ, कोडी पन्नरशें जाणो जी ॥ उपर कोडी बहेंतालीश प्रणमो, अडवन्न लख मन आणो जी ॥ छत्रीश सहस एंशी ते उपर, बिंब तणो परिमाणो जी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योति षीमां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायपश्रेणी जीवाभिगमें, नगवती सूत्रें नांखी जी ॥ जंबूद्वीपपन्नत्ती ठाणांगें, विवरीने घणुं दाखी जी ॥ वलीय

अशाश्वती ज्ञाताकल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पाखी, जिहां बहु सूत्र छे साखी जी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशानइंद्र कहाया जी ॥ तिम सूरियाज प्रमुख बहु सुरवर, देवी तणा समुदाया जी ॥ नंदीश्वर अठाइ महोत्सव, करे अति हर्ष जराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसें, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रस्तुति ॥

॥ जिन शासन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ नावें नवि नणीयें, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं कालें एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमर पद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारिज उवज्झाय, मुनि दरिसण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्यानें नविनां, नव कोटि दुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चैत्रीमां, शुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगें कीजें, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साडा चार ॥ एकाशी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपालतणी परें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रस्तुति ॥

॥ अरिहंत नमो वलि सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वलि नाव निखेपे गुण गाशे ॥ पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरिपाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परें नव तरशे ॥ सिद्धचक्रने कुण आवे तोलें, एहवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साडाचारे वरसें तप पूरूं, ए कर्म विदारण तप शूरूं ॥ सिद्धचक्र मनमंदिर थापो, नयविमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सु विशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्रविमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीतल शीतलनाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म

ज्ञान निर्वाण ॥ हुं बीजतणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ १ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमला कमला, विउल नयनविकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजें, पातक नो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्के सरी केशरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवर्ण तन शोजतुं ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आउखुं ए, ब्रह्मचा री जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणी ए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टा पद आदि जिन ए, पहोता मुक्तिमझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वलि ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुणवेलडी ए, कीजें तास जत न्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें यक्ष जलो ए, देवीश्रीअं बिका नाम तो ॥ शासन सांनिध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ त पगछनायक गुणनिलो ए, श्री विजयसैन्य सूरिराय तो ॥ ऋषजदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति श्री पंचमीस्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, कर तां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥१॥ अष्ट करम वैरी गजगंजन, अष्टापदपरें बलीया जी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गतिपरें पहोता जि नवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिन राजे जी ॥ आठडे आठ शो आगम जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारें,

जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्टप्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजें जी ॥ आठ मनुं तप करतां लीजें, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोडि कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व महोटुं, कहो मुऊशुं तेम ॥ जिनवर कल्याणक अति घणां, एकशो ने पंचास ॥ तिण कारण ए पर्व महोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेव,ो वनगजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अगीयार अंग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविधरंगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम ऊजवो, जेम पामियें जवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजदंम चंम अखंम जेहने, समरंतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वसी, गणि हर्ष पंमित शिष्य ॥ शासनदेवी विघन निवारो, संघ तणां निश दिस ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी स्तुति ॥

॥ पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सूरिंदा ॥ केम निकाचे पद जिनचंदा, किणविध तप करतां जवफंदा, टाले डुरितह दंदा ॥ तव जांखे प्रजुजी गतनिंदा, सुण गौतम वसुजूतिनंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदायें वृंदा, तिम ए सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठवीजें ॥ उपाध्याय ने साधु ग्रहीजें, नाण दंसण पद विनय वहीजें, अगीयारमे चारित्र लीजें ॥ बंजवयधारिणं गणीजें, किरियाणं तवस्स करीजें, गोयम जिणाणं लहीजें ॥ चारित्र नाण श्रुत तिज्ञस्स कीजें, त्रीजे जव तप करत सुणीजें, ए सवि जिन तप लीजें ॥ २ ॥ आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वली बत्रीश, दश पणवीस सगवीस ॥ पांच ने सडशठ तेर गणीश, सत्तर नव कि

रिया पच्चवीश, बार अठावीश चउवीश ॥ सीत्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नोकरवाली वीश ॥ एक एक पदें उपवासज वीश, मास खटें एक उली करीश, इम सिद्धांत जगीश ॥ ३ ॥ शक्तें ए कासणुं तिविहार, उठ अठम मास खमण उदार, पडिक्कमणां दोय वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन जव पार, उजमणुं वि विध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाई शासन रखवाल, सं घविघन अपहार ॥ खिमाविजय जस ऊपर प्यार, शुज जवियण धर्मी आधार, वीरविजय जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजें जी ॥ ढोल दवा मा जेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजें जी ॥ वीरजिन आगल जावना जा वी, मानवजव फल लीजें जी ॥ पर्व पजूसण पूर्व पुण्यें, आव्यां इम जा णीजें जी ॥१॥ मास पास वली दसम डुवालस, चत्तारी अठ कीजें जी ॥ उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजें जी ॥ वडा कल्पनो उठ करीने, वीर वखाण सुणीजें जी ॥ पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मं गल वरतीजें जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमारि पलावी, अठमनुं तप कीजें जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहीयें, जो शुजजावें रहीयें जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक, गणधर वाद वदीजें जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, कृषज चरित्र सुणीजें जी ॥ ३ ॥ बारशें सूत्रने सामाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिशुं कीजें, सकल जंतुने खामी जें जी ॥ पारणाने दिन साहम्मीवत्सल, कीजें अधिक वडाई जी ॥ मानवि जय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनी स्तुति ॥

॥ नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत पोषध करी शुज जावें, च उविहार मन लावे ॥ वासुपूज्यनी जक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरस सत्तावीश लीजें ॥ थोडी शक्तें वरस ते सात, जावजीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्म घात ॥ निजशक्ति ऊजमणुं आवे, वासुपू ज्यनुं बिंब जरावे, लाल मणिमय ठावे ॥ १ ॥ इम अतीत अने वर्त्तमा न, अनागत वंदे जिन बहुमान, कीजें तस गुण गान ॥ तपकारकनी

नक्ति आदरीयें, साधर्मिक वली संघनी करियें, धर्म करी नव तरीयें ॥ रोग सोग रोहिणीतपें जाय, संकट टले तसु जस बहु थाय, तस सुर नर गुण गाय ॥ नीराशंसपणे तप एह, शंका रहित पणे करो तेह ॥ नवनिधि होय जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान थानक जिनकल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ पडिमातप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार,मुक्तावली मनोहार ॥ आठम चउदश ने वर्द्धमान,इत्यादिक तपमांहे प्रधान, रोहिणी तप बहु मान ॥ इणीपरें नांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमिय समाणी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥३॥ चंडा यक्षणी यक्ष कुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावन हार ॥ रोहिणीतप करता जिन जेह, इह नव परनव सुख लहे तेह, अनुक्रमें नवनो छेह ॥ आचारी पंडित उपकारी, सत्य वचन नांखे सुखकारी, कपूरविजय व्रत धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिन गुरु राय, तस शिष्य गुरु मुऊ उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनोनो समुदाय लिख्यते ॥

॥ तत्र श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥पुक्खलवइ विजयें जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार ॥ जिणंदराय ॥ धरजो धर्म सनेह ॥१॥ ए आंकणी ॥ महोटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वासियें रे, छाया सवि आधार ॥ जि०॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशी सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि०॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमें छो महाज ॥ मुऊशुं अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषनलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमिणी कंत ॥ वाचकजस एम वीनवे रे, नयनंजन नगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज विनतडी, प्रेम

धरीने एणी परें तुमें संभलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य भुवननो नायक
बे, जस चोशठ इंद्र पायक बे, नाण दरिसण जेहने खायक बे ॥ सुणो०
॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया बे, जस धोरी लंबन पाया बे, पुंमरी
गिणि नगरीनो राया बे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि बिराजे बे,
जस चोत्रीश अतिशय बाजे बे, गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे बे ॥ सुणो०
॥ ३ ॥ नविजननें ते पडिबोहे बे, तुम अधिक शीतल गुण शोहे बे, रूप
देखी नविजन मोहे बे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो बुं, पण
नरतमां दूरें वसीयो बुं, महामोहराय कर फसीयो बुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥
पण साहिब चित्तमां धरियो बे, तुम आणाखड्ग कर ग्रहियो बे, पण
कांइक मुजथी मरीयो बे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो,
कहे पद्मविय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री तीर्थमालास्तवनं लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रुषन समोसस्या, नला गुण नस्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत ॥
तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीश्वर
गिरनार ॥ ती०॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥ नरतें नराव्यां
बिंब ॥ ती०॥ आबु चौमुख अति नलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसे वस्तु
पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थं
कर वीश ॥ ती०॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्री वासु
पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रुद्धें नरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर
॥ती०॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ती०
॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती०॥
सोरिसरो संखेश्वरो पंचासरो रे, फलोधी थंजण पास ॥ती०॥५॥ अंतरिक
अंजावरो, अमीजरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक
देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जाद
वो, गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती०॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन
नलां रे ॥ रुचककुंमलें चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती,
प्रतिमा बती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ यात्रा फल तिहां,
होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आंखडीयें रे में आज शत्रुंजय दीठो रे, सवा लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ सफल थयो रे माहारा मननो उमाहो,वाहाला महारा जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रजुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुंजय दीठो रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ मानव जवनो लाहो लीजें ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजें रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखाली ने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप मेवासी धूज्या रे ॥ शत्रुं० ॥३॥ श्रीमुख सौधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण्य जुवनमां तीरथ महोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजय तोलें रे॥ शत्रुं० ॥४॥ इंद्रसरीखा ए तीरथनी ॥वा०॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे॥ कायानी तो कायर काढी,सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटें ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शत्रुं० ॥६॥ नाजिराया सुत नयणें जोतां ॥ वा०॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदयरत्न कहे आज महारे पोतें, श्री आदीश्वर तूठा रे ॥ शत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचल नित्य वंदीयें, कीजें एहनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा ॥ वि० ॥१॥ उज्जल जिनगृहमंरुली, तिहां दीपे उत्तुंगा ॥ मानुं हिमगिरि विज्रमें, आई अंबरगंगा ॥ वि० ॥२॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोलें ॥ एम श्रीमुख हरि आगलें, श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥३॥ जे सघलां तीरथ कस्यां, यात्रा फल कहीयें ॥ तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥वि०॥५॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो जविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥ घेर बेठां पण बहु फल पावो जविका, बहु फल पावो ॥ ए आंकणी ॥ नंदीसर यात्रायें जे फल होवे, तेथी बमणेरुं फल पुंमरगिरि होवे ॥ ज० ॥ पुं० ॥ १ ॥ तिगणुं रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु महंता ॥ ज० ॥

जं० ॥ खटगणुं धातकी चैत्य जुहारें, छत्रीच गणेरुं फल पुष्कल विहारें ॥ ज० ॥ पु० ॥ २ ॥ तेथी तेरशगणुं फल मेरु चैत्य जूहारें, सहस गणेरुं फल समेतशिखरे ॥ ज० ॥ स० ॥ लाख गणेरुं फल अंजन गिरि जूहारें, दश लाख गणेरुं फल अष्टापद गिरनारें ॥ ज० ॥ अ० ॥३॥ कोडि गणेरुं फल श्रीसिद्धाचल नेटें, जेम रे अनादिनां दुरित उमेटें ॥ ज० ॥ दु० ॥ जाव अनंतें अनंत फल पावे, ज्ञानविमल सूरि एम गुण गावे ॥ज०॥ए०॥४॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥ क्रीडा करी घेर आवियो ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीरथ एह रे॥ पार पमाडे नव तणो, तीरथ कहीयें तेह रे ॥स०॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगें, सहस मुनि परिवार रे॥ पद्मप्रजु शिव सुख वर्या, त्रणशें अड अणगार रे॥ स०॥२॥ पांचशें मुनिपरिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रजु श्रेयांस लगें, साथें सहस मुणिंद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सिद्धा रे ॥ सात सहसशुं चउदमा, निज कारज वर कीधां रे॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांच शुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिव सुख सार रे ॥स०॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपर उगणपंचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरि, सिद्धा अणसण लेई रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीनें, पास शामलनुं चेई रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

॥ जइ पूजो लाल, समेत शिखरगिरि उपर पासजी शामला ॥ जिन ज क्ति लाल, करतां जिनपद पावे टले नव आमला ॥ ए आंकणी ॥ छरी पाली दर्शन करीयें, नव नव संचित पातक हरियें, निज आतम पुण्यरसें नरि यें ॥जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य सेवा कीजें, जिम शिव सुखडां करमां लीजें, चिदानंद सुधारस नित्य पीजें ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवरमणी वरवा आव्या, अजितादिक वीशे जिनराया, बहु मुनिवर युत शिव व धू पाया ॥ जइ० ॥ ३ ॥ तेणें ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम

करी शाणो, ए फरी फरी नहिं आवे टाणो ॥जइ०॥ ४ ॥ तुमें धन कण कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, किम तरशो विण ए गिरिराया ॥ जइ० ॥ ५ ॥ एम शुनमति वचन सुणी ताजां, ए नजो जगगुरु आतम राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥ जइ० ॥ ६ ॥ संवत्सरऋषि गज चंद समे, फागुणशुदि त्रीज बुधवार गमे, गिरिदर्शन करतां चित्त रमे ॥ जइ० ॥ ७ ॥ प्रनु पदपद्म तणी सेवा, करतां नित्य लहियें शिव मेवा, कहे रूपविजय मुऊ ते हेवा ॥ जइ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारनूषण नेमनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ गो वाछरडां चारवां, आहिरनो अवतार ॥ रूडुं गोकुलीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल उनी मालीये, जंपे जोडी हाथ ॥ साहेब शामलीया ॥ कामणगारा कंथजी, उंरा आवो नाथ ॥ सा० ॥ १ ॥ मुख मटकालुं ताहरुं, अणियालां लोचन्न ॥सा०॥ मोहनगारी मूरतें, मोह्युं माहरुं मन्न ॥ सा० ॥ २ ॥ वहाला केम रह्या वेगला, तोरण उना आय ॥सा०॥ पुरव पुण्यें में लह्यो, एवो आज बनाव ॥सा०॥३॥ एहवे सहु पशुयें मली, कीधो सबलो शोर ॥सा०॥ ठोडावी पाठा वल्या, राजुल चित्तडुं चोर ॥सा०॥४॥ सहसा वनमांहे जइ, सहस पुरुष संघात ॥सा०॥ सर्व विरति नारी वरी, आपण सरखी जात ॥सा०॥ ५ ॥ पंचा वनमें दहाडले, पाम्या केवल नाण ॥ सा० ॥ लोकालोकप्रकाश तुं, जाणे ऊग्यो नाण ॥सा०॥६॥ राजुल आवी रंगशुं, लागी प्रनुने पाय ॥सा०॥ मुजने मूकी एकली, केम शिवमंदिर जाय ॥सा०॥७॥ वीतराग नावें वस्या, संयम लइ जिनहाथ ॥ सा० ॥ शिवमंदिर नेलां थयां, अविचल बेहुनो साथ ॥ सा० ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे, सुण स्वामी अरदास ॥ सा० ॥ राजुल जेम तारी तुमें, तेम तारो हुं दास ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापदजीनुं स्तवन ॥ कुंअर गंनारो नजरें ॥ देखतां जी ॥ ए देशी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीयें जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि ऊपरें जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥च०॥१॥ नरत नरतपति जिनमुखें जी, उच्चरियां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणें रे, चोवीश प्रनुनो विहार रे ॥च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्युं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान नरावीयां जी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजि

तादिक चउ दाहिणें जी, पश्चिमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदें दश उत्तरें जी, पूर्वें रिखज वीर पाठ रे ॥ च०॥ ४ ॥ रिखज अजित पूर्वें रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आत्म शक्तें करे जातरा जी, ते जवि मुक्ति वरे इणी आठ रे ॥च०॥५॥ देखो अचंजो श्री सिद्धाचलें जी, हुवा असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिनें पण इणें गिरि जी, ऊगमग चैत्य उदार रे ॥च०॥ ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगें जी, देवमहिमा गुण दाखि रे ॥ सिंहनि षद्यादिक थिरपणें जी, वसुदेवहिंमीनी साख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिन मुख में सुण्युं जी, इणे विधें पाठ पठाय रे ॥ श्री शुजवीर वचन रसें जी, गायो रिखज शिवठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीआबुजीनुं स्तवन ॥ चित्त चेतो रे ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिणेसर पूजतां, डुःख मेटो रे ॥ आबू गढ दृढचित्त ॥ जवि जइ नेटो रे ॥ देलवाडे देहरां नमी ॥ डु० ॥ चार परिमित नित्य ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ वीश गज बल पद्मावती ॥ डु० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ ज० ॥ शंख दिये अंबी सुरि ॥ डु० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ ज० ॥ २ ॥ बार पातसा ऊीतीने ॥ डु० ॥ विमलमंत्री आह्लाद ॥ ज० ॥ द्रव्य जरी धरती कीयो ॥ डु० ॥ रुषज देव प्रासाद ॥ ज०॥ ३ ॥ बिहुंतर अधिकां आठशें ॥ डु० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ ज० ॥ पन्नरशें कारीगरें ॥ डु० ॥ वर्ष त्रिकें ते थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचियुं ॥ डु० ॥ लाख त्रेपन बार कोड ॥ ज० ॥ संवत दश अठ्याशीयें ॥ डु० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होड ॥ ज० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा ॥ डु० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ ज० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ डु० ॥ ए दोइ कांता जाण ॥ज०॥६॥ मूल नायक नेमीश्वरु ॥ डु० ॥ चारशें अडशठ बिंब ॥ ज० ॥ रुषज धातुमयी देह रे ॥ डु० ॥ एकशो पीस्तालीश बिंब ॥ ज० ॥ ७ ॥ चौमुख चैत्य जूहारियें ॥ डु० ॥ काउस्सग्गीया गुणवंत ॥ज०॥ बाणुं मित्त तेहमां कहुं ॥ डु० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ज०॥८॥ अचल गढें प्रजुजी घणा ॥डु०॥ यात्रा करो हुशियार ॥ज०॥ कोडितपें फल जे लहे ॥ डु० ॥ ते प्रजु जक्ति विचार ॥ ज० ॥ ए ॥ सालंबन निरालंबनें ॥ डु० ॥ प्रजु ध्यानें जव पार ॥ ज० ॥ मंगललीला पामियें ॥ डु० ॥ वीरविजय जय कार ॥ ज० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

॥ चालो चालो ने राज, गिरिधर रमवा जइयें ॥ ए देशी ॥

॥ आवो आवो ने राज, श्री अर्बुद गिरि जइयें ॥ श्री जिनवरनी जक्ति करीने, आतम निर्मल थइयें ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसहिना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठें टोरुर ठवीयें ॥आ०॥१॥ जमणे पासे लूणग वसहि, श्री नेमीश्वर नमीयें ॥ राजिमती वर नयणें निरखी, दुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रुषज जिनेश्वर, रेवत नेम समरीयें ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ मंरुप मंरुप विविध कोरणी, निरखी हियडे ठरीयें ॥ श्रीजिनवरनां बिंब निहाली, नर जव सफलो करीयें ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी, अशुज कर्म सवि हरीयें ॥ पास शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्युं रुंगरीये ॥ आ० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां ऊजम वाधे, जेम घोडे पाखरीये ॥ सकल जिनेश्वर पूजी केसर, पाप पम्ल सवि हरियें॥आ०॥६॥एकज ध्यानें प्रजुने ध्यातां, मनमांहें नवि रुरियें॥ ज्ञानविमल कहे प्रजु सुपसायें, सकल संघ सुख करियें ॥ आ० ॥७॥

॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राकपुर रलीयामणुं रे ॥ लाल ॥ श्री आदीश्वर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तुंग तोरण देहरुं रे ॥ ला० ॥ नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥१॥ चउविश मंरुप चिहुं दिशें रे ॥ ला०॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरुं रे ॥ ला०॥ समोवड नहिं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥२॥ देहरी चोराशी दीपती रे ॥ला०॥ मांरुयो अष्टापद मेर ॥म०॥ जलें जुहार्यां जो यरां रे ॥ ला० ॥ सूता उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री०॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे ॥ला०॥ महोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लरक नवाणुं लगावीयुं रे ॥ला०॥ धन धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥४॥ खरतर वसइ खांतशुं रे ॥ला०॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म०॥ पांच प्रासाद बीजां वलीरे ॥ला०॥ जोतां पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे ॥ला०॥ आज थयो आनंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे ॥ला०॥ दूरें गयुं दुःख दंद ॥ म० ॥श्री०॥ ६ ॥ संवत शोल ने छोंतेर रे ॥ ला० ॥ मागशिर मास मकार ॥म०॥ राणकपुरें यात्रा करी रे ॥ला०॥ समयसुंदर सुखकार॥म०॥७॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥ आठेलालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्ध चक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥आ०॥ ते नणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥आ०॥ समरयां संकट उपशमे जी ॥ लहियें वांछित जोग, पामी सवि संजोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी बहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालनें जी ॥३॥ ए सम अवर नहिं कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥आ०॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥आ०॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ०॥ स्नान करी निर्मल पणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥आ०॥ जिनवर जन आगें नणे जी ॥५॥ ए सेवो निश दीस, कहियें वीशवा वीश ॥आ०॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें यत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नहिं एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर यक्ष, होजो मुझ प्रत्यक्ष ॥आ०॥ हुं किंकर बुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहीज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं बुं एह, धरजो मुझशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहीयें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुझ लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संनवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संनव अरज हमारी ॥ नवोनव हुं नम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु नव नमियो ॥ तुम विना दुःख सह्यां रे, अहोनिश क्रोधें धमधमियो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत चित्त नवि धर्युं रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥२॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संयम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नीरस

पिंक जवेरूयो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर जव दोहिलो रे, पामी मोह वश पडी
यो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज मन तिहां जई अडियो ॥ काम न को सख्यां
रे, पापें पिंक में जरीयो ॥ सुध बुध नवि रही रे, तेणें नवि आतम तरीयो
॥ सा० ॥४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि
मली रे, मली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अजिलसे रे, ते तो तेहथी
नासे ॥ तृणसम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासें ॥ सा० ॥ ५ ॥ धन
धन ते नरा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां
जोडी ॥ अजक्ष्य ते में जख्यां रे, रात्रिजोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पालि
यां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत जव हुं जम्यो रे, जम
तां साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दिये रे, बोध रयण मुज बलियो ॥
संजव आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम वीनरे रे, सुणजो
देवाधिदेवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ सहजानंदी शीतल सुख जोगी तो, दुःख हरियें सतावरी ॥
केशर चंदन घोली पूजो रे कुसुमें ॥ अमृतवेलिना वैरीनी बेटी तो, कंत
हार तेहनो अरि ॥ के० ॥ १ ॥ तेना स्वामीनी कांतानुं नाम तो, एक
वरणें लक्षण जरी ॥ के० ॥ ते धुर थापीने आगल ठवियें तो, ऊष्माण
चंद्रक खंधारी ॥के०॥ २ ॥ फरसनो वरण ते नयन प्रमाणे तो, मात्रा सुंदर
शिर धरी ॥के०॥ वीसराज सुत दाहक नामें तो, तिगवरणादि दूरें करी
॥ के० ॥ ३ ॥ एकवीशमे फरसे धरी करण तो, अर्थाजिध ते सम हरी
॥ के०॥ अंतस्थें बीजो स्वर टाली तो, शिवगामी गति आचरी ॥ के० ॥
॥ ४ ॥ वीश फरस वली संयम माने तो, आदिकरण धरी दिल धरी ॥
के०॥ ईणें नामें जिनवर नित्य ध्याउं तो, जिनहर जिनकुं परिहरी ॥के०॥
॥५॥ त्र्यंबकें दाह्यो वृष जन बोले तो, वात ए दिलमें न उतरी ॥ के० ॥
अज ईश्वर पण सीतानी आगें तो, जास विवश नटता धरी ॥के०॥६॥
ते जिनतस्कर तूं जिनराजा तो, हरि प्रणमे तुज पाउं परी ॥के०॥ बाल
पणे उपगारें हरिपति, सेवन ठल लंछन हरि ॥ के० ॥ ७ ॥ प्रजु प्रत्य
यिक जशलीहोत रहियें तो, जव जवमां नहीं शली कली ॥ के० ॥ मन
मंदिर महाराज पधारे तो, हरि उदयें न विजावरी ॥ के० ॥ ७ ॥ सा

रंगमां संपा जीउं जरकत, ध्यान अनुजव लेहरी ॥ के० ॥ श्री शुजवीर विजय शिववहूने तो, घर तेडंतां दोय घरी ॥ के० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांजलीनें आव्यो हुं तीरें, जनम मरण दुःख वारो ॥१॥ सेवक अरज करे ठे राज, अमने शिवसुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवांछित पूरी, चिंता स हुनी चूरो ॥ एहवुं बिरुद ठे राज तुमारुं, केम राखो ठो दूरो ॥ से० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहे वाशो, जो उपकार न करशो ॥ से० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नहीं ठे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजें ॥ धुंआडे धीजुं नही साहिब, पेट पड्यां पती जें ॥ से० ॥४॥ श्री शंखेश्वर मंरुण साहिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, जवसायरथी तारो ॥ से० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सजनी मोरी पास जिणेसर पूजो रे ॥ स० ॥ जगमां देव न दूजो रे ॥ स० ॥ सारंग पूर शणगार रे ॥ स० ॥ पूजा दोय प्रकार रे ॥ १ ॥ स० ॥ जिनपडिमा जयकार रे ॥ स० ॥ वारी जाउं वार हजार रे ॥ ए आंकणी ॥ ॥ स० ॥ गणधर सूत्रें वखाणी रे ॥ स० ॥ सिद्धनी उपमा आणी रे ॥ स० ॥ समकितनी वृद्धिकारी रे ॥ स० ॥ ते केम जाशे निवारी रे ॥ स० ॥२॥ ॥ स० ॥ जगवइ अंगें धारो रे ॥ स० ॥ चारण मुनि अधिकारो रे ॥ स० ॥ जिनपडिमा जिनसरखी रे ॥ स० ॥ सूत्र उववाई निरखी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ॥ स० ॥ रायपसेणी जांखी रे ॥ स० ॥ जीवाजिगमें दाखी रे ॥ स० ॥ व्यवहारें पण आखी रे ॥ स० ॥ शुद्धि पडिमा साखी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ॥ स० ॥ जंबूपन्नत्ति ठाणंग रे ॥ स० ॥ बोले दशमुं अंग रे ॥ स० ॥ माहा निशीथें विचारो रे ॥ स० ॥ पूजानो अधिकारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥ सातमे अंगें विख्यात रे ॥ स० ॥ आणंद श्रावक वात रे ॥ स० ॥ अन उठी पडिमा वारी रे ॥ स० ॥ सूधा समकित धारी रे ॥ स० ॥६॥स०॥ ज्ञाता पाठ देखावे रे ॥ स० ॥ कुमति जरम न जावे रे ॥ स० ॥ एम अने क सूत्र साख रे ॥ स० ॥ कहो हवे केहनो वांक रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ अर्चा अरोचक थाशे रे ॥ स० ॥ नव दंरुकमां जाशे रे ॥ स० ॥ जीव

करम वश जाणो रे ॥ स० ॥ कुण ङुमक कुण राणो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ जिनवर सेवा सारो रे ॥ स० ॥ विषय करो परिहारो रे ॥स०॥ सेवा अबंधक नाव रे ॥ स० ॥ नवजल तरवा नाव रे ॥ स० ॥ए॥स०॥ मणि उद्योत प्रनु साचो रे ॥ स० ॥ जेहवो हीरो जाचो रे ॥ स० ॥ शंका मन नवि लावो रे ॥ स० ॥ शुं ऊाजुं कहेवरावो रे ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥१॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण उल्लासें ॥ स० ॥ २ ॥ कटि लंकें वाद वदाय रे, पण जिनसाथें न घटाय रे, तेणें हरिलंबन प्रनु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सवि सुरवहू थेइ थेइकारा रे, जलपंकजनी परें न्यारा रे, तजी तृष्णा नोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रनुदेशना अमृतधारा रे, जिनधर्म विषे रथकारा रे, जेणें तार्या मेघकुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल आली रे, वर्या खांतियें शिव वरमाली रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलछ निवारी रे, शुन सज्ञानने उपगारी रे, कहे वीर विनु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीरस्वामीनी जन्मकुंमलीनुं स्तवन ॥ देशी केरबानी ॥

॥ सेवधी संचउ घेरियां, अलबेले सांइं, क्युं रे लगाउं अति बेरियां ॥ए आंकणी ॥ दीये बिनां न चले, ठेरु न पीठे वले, बाबत आप उनेरियां ॥ अलबे० ॥ क्युं० ॥ नाग्य अतुल बली, मागत अटकली, जन्म बलि ग्रह चारीयां ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १ ॥ संवत पास ईश, दो शत अडतालीश ॥ उज्ज्वल चैतर तेरशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ शाठ घडी न ऊणी, उत्तराफाल गुणी, मंगल वार निशावशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ २ ॥ सिद्धियोग घडी, पन्नर चारें चरी, वेला मुहूर्त्त त्रेवीशमे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ लग्न मकर वहे, स्वामी जनम लहे, जीव सुखी सहु ते समे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥३॥ त्रिशला राणीयें जायो, देव देवीयें गायो, सुत सिद्धारथ नूपको ॥ अ० ॥ क्युं०॥ मंगल केतु लग्नें, रवि बुध चोथे नवनें, दशमे शनैश्चर उच्चको ॥अ०॥क्युं० ॥४॥ पंचमें जीव राहु, सातमे वेद साहु, केंद्र नुवन ग्रह मंमली ॥ अ० ॥

॥क्युं०॥ भाग्य भुवन शशी, शुक्र संतान वसी, मेघ धुआ एक वीजली ॥अ०॥ क्युं० ॥ ५ ॥ चंद्रदिशो विपाकी, मास भुवन बाकी, जन्म दशा शनी संयमी ॥अ०॥क्युं०॥ गुरु महादशामें, केवल ज्ञान पामे, तामुख बानी मेरे दिल रमी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ थावर विगलमें, काल अनंत भमे, मेंबी निकलीया साथमें ॥अ०॥क्युं०॥ नारक तिरि गति, सुख न एक रति, काल निगमियो अनाथमें ॥अ०॥ क्युं० ॥ ७ ॥ बहोत में नाच नचे, चिहुंगति चोक बिचें, नेक न मेलियें नाथ जी ॥अ०॥क्युं०॥ पोतप्रकाश दिये, आश निराश किये, अलग किया में आजथी ॥अ०॥क्युं०॥८॥ मानव गण लही, तुम सन्मुख रही, बेर बेर शिव मागते ॥अ०॥क्युं०॥ बात न ओर कहुं, लीये बिना न रहुं, बाल हव्यो रस लागते ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ए ॥ नाथ नजर करी, बेर न एक घडी, सदा मगन सुख लहेरसें ॥अ०॥क्युं०॥ मंगल तुरवरा, गावत अपछरा, श्री शुभवीर प्रभु महेरसें ॥अ०॥क्युं०॥१०॥

॥ अथ श्री सिद्धभगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोभा रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध जगत शिर शोभता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लहेरमां, सुखिया छे शिव ठाम ॥सि०॥ ॥१॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धिकैवल्य नाम ॥ अपुनर्भव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥सि० ॥२॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा, दुःख समस्तनी हाण ॥ निर्वृत्ति अपवर्गता, मोक्षमुक्ति निर्वाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लह्युं, जोतां जगतना ठाठ ॥ निज निज रूपें रे जूजुआ, वीत्यां कर्म ते आठ ॥सि० ॥४॥ अगुरु लघु अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री शुभवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्द्धमान स्वामीजीनुं स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ गीरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनराया रे ॥ सुणतां श्रवणें अमी झरे, म्हारी निर्मल थाये काया रे ॥गी० ॥१॥ तुम गुण गण गंगाजलें, हुं झीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निशि दिन तोरा गुण गाउं रे ॥गी०॥२॥ झील्या जे गंगाजलें, ते छील्लरजल नवि पेसे रे ॥ जे मालतीफूलें मोहिया, ते बावल जइ नवि बेसे रे ॥ गी० ॥ ३ ॥ एम अमें तुम गुण गोठशुं ॥ रंगें राच्या ने वली माच्या रे ॥ ते किम पर सुर आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गी० ॥४॥ तुं गति तुं मति आ

शरो, तुं अवलंबन मुज प्यारो रे ॥ वाचक जस कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समकितनुं स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ते मुज मिछामि डुक्कडं ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल रे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेशो ॥ मानव जव दोहिलो लह्यो, उत्तमकुल एसो ॥ १ ॥ सां० ॥ देवतत्त्व नवि उंलख्यो, गुरुतत्त्व न जाण्यो ॥ धर्मतत्त्व नवि सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥ २ ॥ सां० ॥ मिथ्यात्वी सुर जिनप्रत्यें, सरखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि उंलख्या, वयणें वखाण्या ॥ ३ ॥ सां० ॥ देव थया मोहें ग्रह्या, पासें रहे नारी ॥ कामतणे वश जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ ४ ॥ सां० ॥ केइ क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोईथी बीहता, हथीयार सवाह्या ॥ ५ ॥ सां० ॥ क्रूर नजर जेहनी घणुं, देखंतां ऊरियें ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीयें ॥ ६ ॥ सां० ॥ आठ करम सांकल जड्यां, जमे जवही मझारो ॥ जन्म मरण जव देखीयें, पाम्या नहिं पारो ॥ ७ ॥ सां० ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगें ॥ वेष करी राधा कृष्णनो, वली जिक्षा मागे ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुखें करी वाये वांसली, पहेरे तन वाघा ॥ जावंतां जोजन करे, एहवा ज्रम लागा ॥ ९ ॥ सां० ॥ देखो दैत्य संहारवा, थयो उद्यमवंतो ॥ हरि हिरणाकशिपु मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥ १० ॥ सां० ॥ मत्स्य कछ अवतार लइ, सहु असुर विदार्या ॥ दश अवतारें जूजुआ, दश दैत्य संहार्या ॥ ११ ॥ सां० ॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो ॥ फरि फरि अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ १२ ॥ सां० ॥ स्वामी सोहे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परिहरो, जिनहर्ष विचारो ॥ १३ ॥ सां० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ उंधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ जगनायक जिनराजने, दाखवियें सही देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ १ ॥ ज० ॥ क्रोध मान माया नहिं, नहिं लोज अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहिं, छांड्यां मद स्थान ॥ २ ॥ ज० ॥ निद्रा शोक चोरी नहिं, नहिं वयण अलीक ॥ मत्सर जय वध प्राणनो, न करे तहकीक ॥ ३ ॥ ज० ॥ प्रेमक्रीडा न करे कदी, नहिं नारी प्रसंग ॥ हा

स्यादिक अढार ए, नहिं जेहने अंग ॥ ४ ॥ ज० ॥ पद्मासन पूरी करी, बेठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण तेहनां, नासाग्र रहंत ॥ ५ ॥ ज० ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठां परम उल्लास ॥ समकित थाये निर्मलुं, तपे ज्ञान उजास ॥ ६ ॥ ज० ॥ गति आ गति सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ मनःपर्याय सवी तणा, केवलज्ञान आलोक ॥ ७ ॥ ज० ॥ मूर्त्ति श्रीजिनराजनी, समताजंडार ॥ शीतल नयन सुहामणां, नहिं वांक लगार ॥ ८ ॥ ज० ॥ हसत वदन हरखे हैयुं, देखि श्रीजिनराय ॥ सुंदर उबि प्रजुदेहनी, शोजा वरणी न जाय ॥ ए ॥ ज० ॥ अवर तणी एहवी उबि, किहां एम दीसंत ॥ देवतत्त्व ए जाणीयें, जिनहर्ष कहंत ॥१०॥ज०॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जत्तणीनी देशी ॥

॥ श्री जिनवर प्रवचन जांख्या, कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासत्थादिक पांचेइ, पापश्रमण कह्या साचेइ ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणी, आहार करे जात पाणी ॥ सुवे उंघे निश दीस, प्रमादी विशवा वीश॥२॥ किरिया न करे किणि वार, पडिक्कमणुं सांऊ सवार ॥ न करे पच्चरकाण सच्चाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाये न करे पच्चरकाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां सुपवित्र ॥ ४ ॥सुविहित मुनि सामाचारी, पाले नहिं ते अणगारी ॥ आहारना दोष बायाल, टाले नहिं किणही काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जलें देह पखाले ॥ अर्चा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शोजा वनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली जाजा राखे, वली वली अधिकाने धाखे ॥ माठी करणी जे कहीयें, ते सघली जिणमें लहियें ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरंजी, मुनि साधु कहेवाये दंजी ॥ किइकम्म प्रशंसा करीयें, जवजव गृहमां अवतरियें ॥ ८ ॥ लोहानी नावा तोले, जवसायरमां जे बोले ॥ जिनहर्ष जलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कर जोडी आगल रही ॥ ए देशी ॥

॥ गुण गिरुआ गुरु उलखो, हियडे सुमति विचारी रे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहिली, जूल पडे नर नारी रे ॥१॥ गु० ॥ पांच इंद्रिय जे वश करे, पांच महाव्रत पाले रे ॥ चार कषाय तजी जेणें, पांचे किरिया टाले रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पांच समिति समिता रहे, तिन गुप्ति जे धारे रे ॥ दोष बहेंतालीश टालीने,

पाणीजात आहारे रे ॥३॥ गु० ॥ ममता छांकी देहनी, निर्लोजी निर्मायी रे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंते न कांइ रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ धर्मतणां उपकरण धरे, संयम पालवाकाजें रे ॥ जूमि जोई पगलां जरे, लोक विरोधथी लाजें रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ पडिलेहण निरति विधें, करे प्रमाद निवारी रे ॥ कालें शुद्धक्रिया करे, इछा जोग निवारी रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशेषें रे ॥ काल प्रमाणें खप करे, दूषण टलतां देखे रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ कुख्की संबल जे कह्यां, सान्निध्य केमही न राखे रे ॥ दे उपदेश यथास्थितें, सत्यवचन मुख जांखे रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ तन मझेलां मन ऊजलां, तप करी खीणी देही रे ॥ बंधन बे छेदी करी, विचरे जन निःस्नेही रे ॥ ९ ॥ गु० ॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरीयें शुज जावें रे ॥ बीजुं तत्त्व सुगुरुतणुं, ए जिनहर्ष कहावे रे ॥ १० ॥ गु० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ जवसायर तरवा जणी, धर्म करे हो सारंज ॥ पछर नावें रे बेसीने, तरवो समुद्र डुर्लंज ॥ १ ॥ ज० ॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्या रे दान ॥ आपे क्षेत्र पुण्यार्थें, ब्राह्मणने देइ मान ॥२॥ ज० ॥ लूंटावे घाणी वली, पृथिवी दान सुप्रेम ॥ गोला कलशा रे मोरिया, आपे हल तिल हेम ॥३॥ ज० ॥ वली खणावे रे खांतशुं, कूआ सुंदर वाव ॥ पुष्करिणी करणी जली, सरोवर सखर तलाव ॥ ४ ॥ ज० ॥ कंद मूल मूके नहीं, अग्यारशने हो दीस ॥ आरंज ते दिन अति घणो, धर्म किहां जगदीश ॥ ५ ॥ ज० ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नर ने रे छाग ॥ होमे जलचर मींऊकां, धर्म किहां वीतराग ॥ ६ ॥ ज० ॥ करे सदाये रे नोरतां, जीवतणा आरंज ॥ हणे महिष ने बोकडा, जेहथी नरक सुलंज ॥ ७ ॥ ज० ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजनां रे शराध ॥ तेडी पोषे रे कागडा, देखो एह उपाधि ॥ ८ ॥ ज० ॥ तीरथ जाय गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ॥ न्हाये अणगल नीरमें, धर्म तणो नहिं लाग ॥९॥ ज० ॥ इत्यादिक करणी करे, परजव सुखने रे काज ॥ कहे जिनहर्ष मले नहीं, एहथी शिवपुरराज ॥१०॥ ज० ॥

॥ ढाल छही ॥ रे जाया तुऊ विण घडी रे छ मास ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म खरो जिनवर तणो जी, शिव सुखनो दातार ॥ श्री जिनराजें प्रकाशियो जी, जेहना चार प्रकार ॥१॥ जविक जन, ज्ञान विचारी रे जोय ॥

दुर्गति पडता जीवने जी, धारे ते धर्म होय ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, दशविध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवर कह्यां जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ २ ॥ ज० ॥ पंचुंबर चारे विगय जी, विष सहु माटी रे हीम ॥ रात्रिजोजनने कह्यां जी, बहुबीजांनो नीम ॥ ३ ॥ ज० ॥ घोलवडां वली रींगणां जी, अनंतकाय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूल डां जी, संधाणां निश दीस ॥ ४ ॥ ज० ॥ चलित अन्न वासी थयुं जी, तुब सहु फल दक्ष ॥ धर्मी नर खाये नहीं जी, ए बावीश अजक्ष्य ॥५॥ ज०॥ न करे निद्धंधसपणे जी, घरना आरंज धीर ॥ जीवतणी जयणा घणी जी, न पिये अणगल नीर ॥ ६ ॥ ज० ॥ घृत परें पाणी वावरे जी, बीये करतां पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधें जी, टाले जवना ताप ॥ ७ ॥ ज०॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी जी, सेवा जक्ति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकां जी, समजे कोमल जीव ॥ ८ ॥ ज० ॥ मास मासने आंतरे जी, कुश अग्र जुंजे बाल ॥ कला न पहोंचे शोलमी जी, श्री जिनधर्म विशा ल ॥९॥ ज० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरी दीये जी, चउगति ज्रमण मिथ्यात्व ॥ एम जिनहर्ष प्रकाशियेंजी, त्रीजुं तत्त्व विख्यात ॥ १० ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ मधुकर आज रहो रे मत चलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनधर्म आराधियें जी, करी निज समकित शुद्ध ॥ जवियण॥ तप जप किरिया कीधली जी, लेखे पडे विशुद्ध ॥ १ ॥ ज० ॥ श्री०॥ कंचन कशी कशी लीजीयें जी, नाणुं लीजें परीख ॥ज०॥ देव धर्म गुरु जोइनें जी, आदरियें सुणी शीख ॥ २ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने जी, पर हरियें विष जेम ॥ ज० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनें जी, ग्रहीयें अमृत तेम ॥ ३ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ मूलधर्म तो जिन कह्यो जी, समकित सुरतरु एह ॥ ज० ॥ जव जव सुख संपत्तिथकी जी, समकितशुं धरि नेह ॥ ४ ॥ ॥ज०॥ श्री०॥ सत्तरशें बत्रीश समे जी, नज शुदि दशमी दीस ॥ ज० ॥ स मकितसीत्तरी ए रची जी, पुर पाटण सुजगीश ॥५॥ ज० ॥ श्री० ॥ जण जो गुणजो जावशुं जी, लेशो अविचल श्रेय ॥ज०॥ शांतिहर्षवाचक तणो जी, कहे जिनहर्ष विनेय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्री० ॥ इति समकितसित्तरी संपूर्णा॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सहगुरुसा

मिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंजीर ॥ शासननायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूछे गौतम स्वामि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आरांधियें, कहो केणी परें अरिहंत ॥ सूधा सरस तव वचन रस, जांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिराविये, पापस्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो ङुरित आचार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आणि ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो जवपार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ए छिंमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु उलवीयें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तङुजय करि सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलिय जवोजवें, मिछाङुक्कड तेह रे ॥४॥ प्राणी ॥ समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजें, नवि परमत अजिलाष ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं छंमो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ साहम्मी धर्मे करी स्थिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥६॥ प्रा० ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ ङव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥आजव०॥ मिछा०॥८॥प्राणी॥ चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादें, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे

प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा०॥ चा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डहोल्युं जेह ॥ आ जव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें जेदें तप नवि कीधुं, छते योगें निजशक्तें ॥ धर्में मन वच काया वीरज, नवि फोरवियुं जगतें रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें इणी परें, विविध विराध्यां जेह ॥ आ जव० ॥ मिछा० ॥१३॥ प्रा०॥ चा०॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिनेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ वाउ, वनस्पति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए॥करि कर्षण आरंज, क्षेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंज अनेक, टांकां जोंयरां ॥ मेडी माल चणावीया ए ॥ लिंपण धुंपण काज, एणीपरें परपरें ॥ पृथिवीकाय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अपकाय ॥ छोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ जाडजुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणीपरें कर्मादान, परें परें केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति॥ पान फूल फल चूंटीयां ए ॥ पहोंक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छेद्यां छुंद्यां आथीयां ए ॥५॥ अलसी ने एरंड, घाणी घालीनें ॥ घणा तिलादिक पीलिया ए ॥ घाली कोलुं मांहि, पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जे अनुमोदीया ए॥ आ जव परजव जेह ॥ वलि० ॥ ते मुऊ० ॥ ७ ॥ कमी सरमीयां कीडा, गाडर गंडोला, इयल पूरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेइंड्रिय जीव, ने में दूहव्या॥ते मुऊ०॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ए॥गद्दहीयां घीमेल, कानखजूरडा॥ गींगोडा धनेडीयां ए॥एम तेइंड्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ते मुऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकण वींछु तीड, जमरा जमरीयो ॥ कोंता बग खड मांकडी ए ॥११॥ एम चौरिंड्रिय जीव ॥ जे में दू० ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या

पंखी जीव, पाडी पाशमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकरी जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोज जय हास्यथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाउक्कड आज ॥ तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देई सारुं काज रे ॥जिनजी॥ मि० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विरूंब्यो देह रे ॥ जि० ॥२॥मि०॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव जव मेली आथ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि०॥३॥मि०॥ रयणीजोजन जे कर्यां जी, कीधां जक्ष्य अजक्ष्य ॥ रसनारसनी लालचें जी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ मि० ॥ व्रत लेई विसारीयां जी, वली जांग्यां पच्चरकाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति अराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा०॥ पालो निरतिचार तो ॥१॥ व्रत लीधां संजारीयें ॥ सा०॥ हियडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥सा०॥ ए बीजो अधिकार तो॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा०॥ योनि चोराशी लाख तो॥ मन शुद्धें करो खामणां ॥सा०॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥३॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो॥ राग द्वेष एम परिहरो॥ सा०॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥४॥ साहम्मी संघ खमावियें ॥सा०॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥सा०॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥सा०॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥सा०॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥६॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा०॥ धनमूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥सा०॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥सा०॥ माया मोस जंजाल तो ॥८॥ त्रिविध

त्रिविध वोसिरावियें ॥सा०॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधना तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए देशी ॥

॥ जन्म जरा मरणें करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनु नवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥१॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध नगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ नव परनव जे कस्यां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावियां ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली उत्थाप्यां सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीयार तो ॥ नव नव मेली मूकीयां ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषियां ए, जनम जनम परिवार तो॥ जन्मांतर पहोता पढी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ नव परनव जे कस्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधें त्रिविधें वोसिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए बठो अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल बठी ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शियल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावियां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ॥ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें, दीधां बहुमान ॥ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारं वार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समतानावें नावियें, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यकाम ॥ ढार उपर ते लीपणुं, झांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥

भाव भली परें भाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि ऊपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करिय संलेषण सार ॥ अणसण आदरियें, पच्चक्की चार आहार ॥ लखुता सवि मूकी, ढांकी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥१॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शालि भद्र, खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार ॥ शिवमं दिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥३॥ दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चउद पूरवनो सार ॥४॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न कोई सार ॥ इह भवने परभवें, सुख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउं भील भीलडी, राजा राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्यां बे सुरभोग ॥ एक भवथी लेशे, सिद्धिवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमती ने ए व ली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थई फुलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवनपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रें, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिणेसर भांख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जेणें चित्तमां राख्यो ॥ तेणें पाप पखाली, भवभय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो भवि भावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतस्या ए, करवा अम उपगार ॥१॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणें आव्या भणी ए, जो तारो तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणें महाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी ऊभग्यो

ए, ठोडव देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुझ फल्या ए, नाठां दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ज०॥ नव नव विनय तुमारडो ए, नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजियें ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ६॥ ज० ॥ इति ॥ अथ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुःखनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर, चरण थुणतां, अधिक मन, ऊलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव, सूरिंद पटधर, तीर्थ जंगम, इण जगें ॥ तपगन्नपति श्री, विजयप्रन्न सूरि, सूरि तेजें ऊगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजयें, थुण्यो जिन, चोवीशमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत, उंगण त्रीशें, रही रांदेर, चोमास ए ॥ विजयदशमी, विजय कारण, कियो गुण, अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आराधन, सिद्धिसाधन, सुकृत लील, विलास ए ॥ निर्जराहेतें, स्तवन रचियुं, नामें पुण्य, प्रकाश ए ॥५॥ इति श्रीवीरजिन आराधनारूप पुण्य प्रकाश स्तवनं संपूर्णं ॥श्लो०॥१२७

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥ सुत सिद्धारथ नूपनो रे, सिद्धारथ न गवान ॥ बारह परखदा आगलें रे, नांखे श्री वर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ नवि यण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान नक्ति करो ॥ ए आं कणी ॥ गुण अनंत आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञा नज वडूं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ २ ॥ न० ॥ ज्ञानें चारित्र गुण वधे रे, ज्ञानें उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें थिविरपणुं लहे रे, आचारिज उवझाय रे ॥ ३ ॥ न० ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण कर्म करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ न० ॥ प्रथम ज्ञान पढें दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणंग पग थालीयें रे, जेम चढे मो क्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ न० ॥ मइ सुअ उंहि मण पज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मूंगा श्रुत एक ठे रे, स्वपरप्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥ न० ॥ तेह नां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, ध र्म धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ न० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, नणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मूंगा पांगुला थाय रे ॥ ८ ॥ न० ॥ नणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लन चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परें

रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए ॥ ज० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगु रु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ ज० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना भरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी ॥ आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्तिनिदान रे ॥ प्राणी आ० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनया दिके गुणवंत ॥ पितरें भणावा मूकियो रे, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंक्ति यत्न करे घणो रे, छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आव डे रे, ग्रंथ तणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढें व्यापी देहडी रे, राजा राणी स चिंत ॥ श्रेष्ठी तेहिज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूर तिलका गेहिनी रे, शीलें शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटडी रे, मूंगी रोगें व्यंग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वर्षनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ दुर्भग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवस रें उद्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक भूपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सां भले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसितनयन वदन मुदा रे, नहिं प्र माद प्रवेश रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परभवें रे, मूरख पर आधी न ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे दुःखीया दीन रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जग जीवडा रे, न लहे तत्त्वसंकेत रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, भांखो करु णावंत ॥ गुणमंजरी मुझ अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंमना भरतमां, खेटक नयर सुठाम ॥ व्यवहारी जिनदेव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्ति पासें शीखवा, तातें मूक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वभावें रामतें, करतां वहाडा जाय ॥ पंक्ति मारे त्यारें, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिं णी शीखवे, भणवानुं नहिं काम ॥ पंड्यो आवे जो तेडवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खडिया लेखणो, बाली कीधां राख ॥ शठने विद्या

नवि रुचे, जेम करहाने ड्राख ॥ ५ ॥ पाडा परें मद्दोटा थया, कन्या न दिये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुऊ करणी जोय ॥६॥ त्रटकी जांखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय ॥७॥ रे रे पापिणी! सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥८॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी तत खेव ॥ ए तुऊ बेटी ऊपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूर्बागत गुणमंजरी, जातिस्मरण पामी ॥ ज्ञानदिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥१०॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वांछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥१२॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइयें, धान्य फलादि उदार ॥१३॥ दीवो पंचदीवट तणो, साथियो मंगलगेह ॥ पोसह मान करी शके, तिणिविध पारण एह ॥१४॥ अथवा सौजाग्यपंचमी, उज्ज्वल कार्त्तिक मास ॥ जावजीव लगें सेवियें, उजमणां विधि खास ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

ढाल ॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ मशी कागल रे, कांबी खडीया लेखणी ॥ कवली ऊबली रे, चंडुवा ऊरमर पुंजणी ॥१॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा, तास जूखण, केसर चंदन, ऊावली ॥ वासकूपी, वालाकूंची, अंगलुहणां, ठाबडी ॥ कलश थाली, मंगलदीवो, आरती ने, धूपणां ॥ चरवला मुहपत्ति, साहम्मी वछल, नोकरवाली, थापना ॥२॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे कह्यां ॥ तपसंयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्यां ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंवरने अंग रे ॥ रोग उपनो रे, कवण कर्मना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ मुनिराज जासे, जंबुद्वीपें, जरतसिंहपुर, ग्राम ए ॥ व्यवहारी वसु, तास नंदन, वसुसार वसुदेव, नाम ए ॥ वनमांहे रमतां, दोय बांधव, पुण्ययोगें, गुरु मल्या ॥ वैराग्य पामी, जोग वामी, धर्मधामी, संवस्या ॥४॥ ढाल ॥ लघुबांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ पणसय मुनिनी रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्मयोगें रे, अशुज उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे, पोरिसी जणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सर्वघाती, निंद व्यापी, साधु मागे, वां

चणा ॥ उंघमां अंतराय थातां,सूरि हूवा दूमणा ॥ ज्ञान उपर, द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या,भूतडो ॥ पुण्य अमृत, ढोली नाख्युं,जस्यो पाप, तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुऊ लागुं पाप रे ॥ श्रुत अन्यासो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, जोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुण मुख उच्चरे ॥७॥त्रु०॥ बार वासर, कोइ मुनिने, वायणा, दीधी नहीं ॥ अशुन ध्यानें, आयु पूरी,नूप तुऊ नं,दन सही ॥ ज्ञानविराधन, मूढजडपणुं, कोढनी वे,दन लही ॥ वृऊबांधव, मानसरवर, हंसगति, पाम्यो सही ॥८॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिसमरण उपनो ॥ नव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुनमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दीवडो ॥ गुण अवगुण रे, नासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रु० ॥ ज्ञान पावन, सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम, आवडे॥गुरु कहे तपथी, पाप नासे, टाढ जेम, घन तावडे ॥ नूप पनणे, पुत्रने प्रज्ञु, तपनी शक्ति, न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी, तप आराधो, संपदा ल्यो, बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु वयणां सुधारसें रे,नेदी साते धात॥ तपशुं रंग लागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० ॥१॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसस्यो महियलमांहि ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांहि ॥ त० ॥ २ ॥ नूपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनिनूप ॥ त०॥ नीम कांति गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशिरूप ॥त०॥३॥ राजरमा रमणी तणा रे, नोगवे नोग अखंम ॥ त० ॥ वरसें वरसें ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम॥त०॥४॥ नुक्तनोगी थयो संयमी रे, पाले व्रत षटकाय ॥त०॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निजताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंतें दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥त०॥६॥ अमरसेन राजाघरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥त०॥ लक्षणलक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो नेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या नर्तार ॥ त० ॥ सीमंधर स्वामी कने रे, सुणी पंचमी अधिकार ॥ त० ॥८॥ तिहां पण ते तप आदस्युं रे,लोक सहित नूपाल ॥त०॥ दश हजार वरसां लगें रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चोंपशुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्तें गयो रे, सादि अ

नंत निवास ॥त०॥१०॥ रमणीविजय शुजापुरी रे, जंबु विदेह मकार ॥त०॥ अमरसिंह महिपालने रे, अमरावती घर नार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥त० ॥ मानसरस जेम हसलो रे, नाम धर्खुं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवी रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरवसमता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥१३॥ पंचमी तप महिमाविषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त०॥ जेणें जेहथी शिव पद लह्युं रे, तेहने तस उपकार ॥ त०॥ १४ ॥ इति ॥

॥ ढाल ठही ॥ करकंडुने करुं वंदणां ॥ ए देशी ॥

चोवीश दंडक वारवा॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगव्यो प्राणांत स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला उर सुखकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ महानिशीथ सिद्धांतमां ॥हुं०॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥हुं०॥२॥ अपराधी पण उद्धस्यो ॥हुं०॥ चंड कोशीयो साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजणा ॥हुं०॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखजदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूस्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदस्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुक ऊपर हित आणी रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजय सिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पंन्यास रे ॥हुं०॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥हुं०॥ चंद्रकिरण यश जास रे ॥हुं०॥६॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥हुं०॥ खिमाविजय गुरुनाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुक हजो ॥ हुं०॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥कलश॥ इय वीर लायक, विश्वनायक, सिद्धिदायक, संस्तव्यो ॥ पंचमी तप सं, स्तवन टोडर, गूंथी निज, कंठें ठव्यो ॥ पुण्यपाटण, क्षेत्रमांहे, सत्तर त्राणुं, संवत्सरें ॥ श्रीपार्श्वजन्म, कल्याणदिवसें, सकल जवि, मंगल करे ॥८॥ इति श्रीपंचमीदिनस्तवनं ॥

॥ अथ आदिजिनस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

आदिजिणंद अरिहंत जी ॥ प्रजु अमनें रे ॥ तुमें द्यो दरिसन महाराज ॥ शुं कहुं तुमनें रे ॥ आठ पहोरमां एक घडी ॥ प्र० ॥ लाग्युं तमारुं ध्यान ॥ शुं० ॥ १ ॥ मधुकरने मन मालती ॥ प्र० ॥ जिम मोराने मन मेह

॥ शुं० ॥ सीताने मन रामजी ॥ प्र० ॥ तेम बाध्यो तुमशुं नेह ॥शुं०॥२॥ रोहिणीने मन चंदजी ॥ प्र० ॥ वली रेवायें गजराज ॥ शुं०॥ समय समय प्रभु सांभरे ॥ प्र० ॥ मनडामां महाराज ॥ शुं०॥ ३ ॥ निःस्नेही थइ न वि छूटीयें ॥ प्र० ॥ करुणानंद कहाउं ॥ शुं० ॥ गुण अवगुण जोता रखे, ॥प्र०॥ तो तारक केम कहाउं ॥ शुं० ॥४॥ रढ लागी प्रभु रूपनी ॥ प्र० ॥ मुने न गमे बीजी वात ॥शुं०॥ वाहे वात बने नहिं ॥ प्र० ॥ मलियें मू की भ्रांति ॥ शुं० ॥५॥ सेवे चिंतामणि फले ॥प्र०॥ तुं तो त्रिभुवननाथ ॥शुं०॥ सो वातें छोडुं नहिं ॥प्र०॥ हवे आव्या मुफ हाथ ॥ शुं० ॥ ६ ॥ मुहनी वात मूको परी ॥ प्र० ॥ जिम जाणो तिम तार ॥ शुं० ॥ सद्गुरु सुंदर कविरायनो ॥ प्र० ॥ पद्मने प्रभुशुं प्यार ॥ शुं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रस्तवनं ॥

अवसर पामिने रे, कीजें नव आंबिलनी उली ॥ उली करतां आपद जा ये, ऋद्धि सिद्धि लहियें बहुली ॥ अ०॥१॥ आशो ने चैत्रें आदरशुं, सात मथी संभाली रे ॥ आलस महेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दीवा ली ॥ अ०॥२॥ पूनमने दिन पूरी थाते, प्रेमेशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥अ०॥३॥ देहरे जइने देव जुहारो, आ दीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, भावेशुं भगवंत ॥अ०॥४॥ बे टंकें पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्रीश्रीपालतणी परें समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथें संचरतां, आवे भवनो अंत ॥ अ० ॥६॥ सत्तर चोराणुयें शुदि चैत्रीयें, बारशें बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥अ०॥७॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, जे नर नारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥अ०॥८॥

॥ अथ पूजाविधिआश्चर्यी श्रीसुविधिजिनस्तवनं ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥ सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय ज यकार ॥ पूजानी विधि धारो सही, श्रीभगवंतें शास्त्रें कही ॥१॥ पूर्व स न्मुख स्नान आदरो, पश्चिमदिशि रही दातण करो ॥ उत्तरें वस्त्र पहेरो सही, पूजो उत्तर पूर्व मुख रही ॥२॥ घरमां पेसतां वामें भाग, देरासर करवानो लाग ॥ दोढ हाथ भूमिथी कीजीयें, उंचुं नीचुं सहुथी वरजीयें

॥ ३ ॥ पूर्व उत्तरमुख पूजा जाण, बीजी दिशें हुए करतां हाण ॥ नवांग पूजानो विधि एह, विधि करतां होय निर्मल देह ॥४॥ पग जंघा ने हाथ बे तणी, खंजा मस्तकनी पांचमी नणी ॥ नाल कंठ हृदय ए जाण, उदरें नवमुं तिलक वखाण ॥ ५ ॥ चंदन विण पूजा नवि होय, वासपूजा प्रजातें जोय ॥ कुसुमपूजा मध्यान्हें करो, सांजे धूप दीप आदरो ॥६॥ धूप उखेवो माबे पास, जमणे पासें दीप प्रकाश ॥ ढोणुं आगल मूको सही, चैत्यवंदन करो दक्षिण रही ॥७॥ हाथथकी जे जूमियें पडे, पग लागे म लीन आजडे ॥ मस्तकथी ऊंचुं परिहरो, नाजीथकी नीचुं मत करो ॥८॥ कीडे खाधुं तजीयें फूल, एम फलादिक ढोइयें अमूल ॥ फूल पांखडी नवि ठेदियें, कलिकां कदिये नवि नेदीयें ॥९॥ गंध धूप आखे पाणीयें, फूल दीप बलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठमुं सुंदर सही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥१०॥ शांतिकारण उज्ज्वल वस्त्र, लाजकारणें पीत पवित्र ॥ वैरी झींपवा पहेरो श्याम ॥ रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥ पंच वर्ण वस्त्रें होय सिद्ध, खंमित सांध्यां वस्त्र निषिद्ध ॥ पद्मासनने मौनें रही, मुखकोश पूजाविधि कही ॥१२॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पामीजें सुख संपदा ॥ आनंदविमल पंमितनो दास, प्रीतिविजय प्रणमे उल्लास ॥१३॥ इति ॥

॥ अथ अष्टापदतीर्थस्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें, ज्यां जिनवर चउवीश जी ॥ मणिमय बिंब जराव्यां जरतें, ते वंदूं नित्य दीस जी ॥ती०॥१॥ निज निज देह प्रमाणें मूर्त्ति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दश दोय इणी परें, जिन चोवीशे सोहे जी ॥ती०॥२॥ बत्रीश कोशनो पर्वत ऊंचो, आठ तिहां पावडीयो जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणें, नवि जाये कोइ चडीयो जी ॥ती० ॥३॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें, वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ती०॥ ४ ॥ तद्भव मोक्षगामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी ॥ जंघाविद्याचारण वांदे, ते तो लब्धिप्रसादें जी ॥ ती० ॥५॥ शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवंतां जी ॥ बारमा देवलोकें ते पहोता, लेहशे सुख अनंतां जी ॥ ती० ॥ ॥६॥ कंचनमय प्रासाद इहां ठे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार ठे आवश्यकसूत्रें, जो जो दइ उपयोग जी ॥ ती०॥७॥ जिहां आदीश्वर मु

कें पहोता, अविचल तीरथ एह जी ॥ जशवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनें द्र वधते नेह जी ॥ती०॥७॥ इति अष्टापद स्तवन ॥

॥ अथ नेमराजुलनुं चोमासुं लिख्यते ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी, मेली न जाशो अंतरजामी ॥ माता मेहुला रे वरसे, प्रीतम एणी रीतें केम परवडशे ॥ मारा सम जाउं मां रे वहाला, लालच सागी तुमशुं लाला ॥ मा० ॥ १ ॥ भादरवो भरजोरें गाजे, नदीयें नीर खलाखल वाजे ॥ धरती शोभे नीलाम्बर साही, वालम संयम ले जो परणी ॥ मा० ॥२॥ आशोयें आश घणेरी अमने, जीवन जावुं न घटे तमने, आभूषण पहेरी परवरियां, सलूणा साहेब रंगें न रमिया ॥ मा० ॥ ३ ॥ कार्त्तिकें कंताजी शुं कहो बो, चतुर थइने शुं चूको बो ॥ जीव जीव नने सोलशें राणी, तेमां एके नहिं निर्वाणी ॥ रूपचंद बोले बे चोमासुं, नेमजीने मन मलवानुं साचुं ॥ मा० ॥ ४ ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥ एक वार गोकुल आवजो ॥
॥ गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

एक वार वत्सदेश आवजो ॥ जिणंद जी ॥ एक वार वत्सदेश आवजो ॥ द र्शन नयन ठहरावजो ॥ जिणंदजी ॥ एक वार आवजो ॥ जयंतीने पाय न मावजो ॥ जि० ॥ एक०॥ वली समवसरण देखावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ए आंकणी ॥ समवसरण शोभा जे दीठी, क्षण क्षण सांभरी आवशे ॥जि० ॥ एक०॥ १ ॥ भूतल सुगंधीजल वरसावे, फुलना पगर भरावशे ॥जि०॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडानी शोभा रचावशे ॥ जि० ॥एक०॥२॥ रूपानो गढ ने कनक कोशीशां, वच्चें रतन जडावशे ॥ जि० ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशां, झगमग ज्योति दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चार दु वारें एंशी हजारा, शिवसोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक०॥ ३ ॥ देव चा रे कर आयुधधारी, डुवारें खडा करे चाकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ दूर पा सथी एक समयें वंदे, जरंतीने लघु बोकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ४ ॥ सह स्र योजन ध्वज चार ते उंचा, तोरण चउ आठ वावडी ॥ जि० ॥ एक०॥ मंगल आठने धूप घटाडी, फूलमाला कर पूतली ॥ जि०॥एक०॥ ५ ॥ आ ठ सुरी बीजे गढद्वारें, रत्नगढें चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जातिवै र डंडी पशु पंखी, तुझपद कमलने सेवतां ॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचव

र्षमथी जल थल केरां, फूल अमर वरसावता ॥ जि० ॥ एक० ॥ पर्षदा सात ते उपर बेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥७॥ आवश्य कटीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम किलामणी ॥ जि० ॥एक० ॥ साध वी वैमानिकनी देवी, उनी सुणे दोय तुरणी ॥जि०॥ एक० ॥ ८ ॥ बत्री श धनुष अशोक ते उंचो, चामर छत्र धरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउ मुख रयणसिंहासन बेसी, अमृतवयणां सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ॥ ९ ॥ धर्मचक्र नामंमल तेजें, मिथ्यातिमिर हरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमे सुणीयें, तब देवछंदें सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुर कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥जि०॥ ए क० ॥ रंजादिक अपछरनी टोली, वंदी नमी गुण गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरजामी दूरें विचारो, मुज चित्त नीनुं ज्ञानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउं तो, कौतुक अमें मानशुं ॥जि०॥एक०॥१२॥ सुलसा दिक नव जिनपद दीधुं, अमशुं अंतर एवडो ॥जि०॥एक०॥ वीतराग जो नाम धरावो तो, सहुने सरिखा त्रेवडो ॥ जि० ॥एक०॥१३॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि०॥ एक०॥ सेवक रागें साहेब रीजे, धन धन त्रिशला मावडी ॥जि०॥ एक० ॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण अमें आमणदूमणा ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुजवीर हजूरें रहेतां, उत्सव रंग वधामणां ॥ जि० ॥एक०॥१५॥ इतिसमवसरणस्तवन ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन ॥ रासडाना रागमां ॥

रूपैयो ते आलुं रोकडो, महारा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥ मनडुं ते महारुं मोकले, महारा वालाजी रे ॥ ससिहर साथें संदेश, जइने कहे जो महारा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥महा०॥ एक वार आवोने आ देश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रजुजी वसो पुष्कलावती ॥ म हा० ॥ महाविदेहक्षेत्र मजार ॥ जइ० ॥ पुरी राजे पुंमरीगिणी ॥ महा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ रू० ॥ वि चरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो बहुप्राणीने ॥ महा० ॥ तेहनो पामे कोण ताग ॥ जइ० ॥३॥ मन जाणे मली मलुं ॥ महा०॥ पण पोतें नहीं पांख ॥ जइ० ॥जगवंत तुम जोवा जणी ॥ महा० ॥ अलजो धरे छे आं ख रे ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम महोटा मूंगरा ॥ महा० ॥ नदी नालानो नहिं

पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ म० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ ज इ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये काशीदी ॥ महा० ॥ करनारो नहिं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीयो केम मोकलुं ॥ महा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ महा० ॥ लाख गमे अभिलाष ॥ जइ० ॥ तमे लेजामां ते लहो ॥ महा० ॥ मुफ मन पूरे ठे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोकालोक स्वरूपना ॥ महा० ॥ जगमां तुमें ठो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणावियें ॥ महा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥८॥ वाचकउदयनी विनति ॥ महा० ॥ ससीहर कह्या संदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो माहरी ॥महा०॥ वस्ती दूर विदेश ॥ जइ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिनस्तवन ॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पांख नहीं रे आवुं ऊडी, लब्धि नहिं कोय रूडी रे ॥ श्रीयुगमंधरने कहेजो ॥ १ ॥ के दधिसुत विनतडी सुणजो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्रीयुग० ॥ २ ॥ दुःखम समयमां इणे जरतें, अतिशय नाणी नवि वरते, कहियें कहो कोण सांजलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, ए तो फगडानो ठामें रे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें डुःख सहेवुं, प्रजु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥श्रीयुग०॥ ५ ॥ महोटा मेल करि आपे, बेहुने तोल करी थापे, सज्जन जश जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुगल पावे, तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरीविजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपतिकुल आयो, पंफित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए ॥ इति युगमंधरजिन स्तवन ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो महारा वहालाजी रे, श्रीगिरनारने गोंख ॥जइने०॥ अमें पण तिहां आवशुं ॥ महारा० ॥ जिहारें पामीशुं जोख ॥जइ०॥१॥ जान लेई जूनेगढें ॥ महा० ॥ आव्या तोरण आप ॥ जइ० ॥ पशुआं पेखी पाठा वख्या ॥ महा० ॥ जातां न दीधो जवाप ॥ जइ० ॥ २ ॥ सुंद

र आपण सारिखा ॥महा०॥ जोतां नहिं मळे जोड ॥जइ०॥ बोल्याबोल्या करो ॥महा०॥ ए वातें तमने खोड ॥जइ०॥३॥ हुं रागी तुं वैरागीयो ॥महा०॥ जगमां जाणे सहु कोय ॥जइ०॥ रागी तो लागी रहे ॥महा०॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥महा०॥ सब ला मेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने जइ मळी ॥ महा० ॥ महोटा साथें स्यो वाद ॥ जइ० ॥ ५ ॥ गढ तो एक गिरनार छे ॥ महा० ॥ निरतो छे एक श्रीनेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती ॥ महा० ॥ पूरो पाळ्यो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ महा० ॥ मानी लेजो महाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मळ्यां ॥ महा० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सूरशशि कृत जिन प्रभुनी आंगीनुं स्तवन ॥

॥ धन धन रे दीवाली मारे आजुनी रे, मेंतो छबी नीरखी जिनराजनी रे ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ पहेरी आंगी आलौकिक जातिनी रे, मांही बुट्टी दीधी छे जात जातनी रे ॥ध०॥१॥ मणि हिरला मुकुटमां जड्या बहु रे, काने कुंमलनी शोभा हुं शी कहुं रे ॥ ध० ॥ २ ॥ मुने कृपा करी ते हुं कहुं कशी रे, महारे वहाले मुज सामुं जोयुं हसी रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ प्रभु शांति जिणंद हृदयें वस्या रे, थई सूरशशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजनुं स्तवन ॥ फतमल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी ॥ बीज तिथि गुणगेह, आदरो भवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहाशुदि बीजें जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभ ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्रवदिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवल नाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥६॥ करणीरूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम

तद्रूप नीर, समकित ढोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड,पच्च क्खाण व्रत चोकी सोहे जी ॥८॥ नासे कर्मरिपु चोर,समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुजव रूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारी,पान करी सुख लीजीयें जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस कीजीयें जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालीयें शील वसुधा सनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वचकायायें कीजियें जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुज चित्त, क रि धरीयें संयोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजियें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ इणविध करीयें हो बीज, राग ने द्वेष दूरें करी जी ॥ केव ल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुज क्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, जक्ति पामे सुखसंपदा जी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे॥ पहेलुं ज्ञा न ने पढी क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥पंचमी० ॥१॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥२॥ मति अठ्ठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि ढे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय जेदें मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उ दार रे ॥ पंचमी०॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रे ॥ केवल ज्ञान समुं नहीं कोइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥४॥ पारसनाथ प्रसादें करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो जेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो, दीपे रे त्यां दे श मगध सहुमां शिरें रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुवि शेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गजपरें रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसस्या रे लो ॥ हां० ॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो, सूधा रे तप सं

यम शीयलें अलंकस्या रे लो ॥२॥हां०॥ फूल्या रसजर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुणशील वन हसी रोमांचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासें संचियो रे लो ॥३॥ हां०॥ देव चतुर्विध आवे कोडा कोडि जो, त्रिगडो रे मणि हेम रजतनो ते रचे रे लो ॥हां०॥ चोशठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगें रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥हां०॥मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्नें जड्यां रे लो ॥हां०॥ सुणतां ढुंदुभिनाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अड्यां रे लो ॥५॥ ॥हां०॥ ताजे तेजें गाजे घन जेम लुंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥हां०॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुंब जो, पोषे रे रसन पडे घोषे नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥हां०॥ देइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी महोटे नायगें रे लो ॥७॥ ॥हां०॥ त्रिजुवन नायक लायक तव जगवंत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारे जगना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सुजाण रे॥ मोहनी निंदमां कां पडो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरि आदरो ॥१॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापडा पंच प्रमादथी, कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥वि०॥२॥ करी शको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्वकालें करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥वि० ॥३॥ जूजुआ पर्व षटनां कह्यां,फल घणां आगमें जोय रे॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥४॥ जीवने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणीयो सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥५॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणें, कहे वीर प्रजु ताम रे ॥ वि० ॥६॥ अष्टमहासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ॥७॥ लाज होय आठ पडिहा

रनो, आठ पवयण फल होय रे ॥ नाश आठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥वि० ॥८॥ आदिजिन जन्म दीक्षा तणो, अजिततनुं जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजव तणुं एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ए॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्तिदिन जाण रे॥ पास जिन एह तिथें सिद्धला, सातमा जिन च्यवनमान रे ॥ वि० ॥१०॥ एह तिथि साधतो राजियो, दंरूविरज लही मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥वि० ॥११॥ अतीत अनागत कालना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाण रे ॥वि० ॥१२॥ धर्मवासित पशु पंखीयां, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥१३॥ जांखीयो वीरें आठम तणो, जविकहित एह अधिकार रे ॥ जिनमुखें उच्चरे प्राणीया, पामशे जव तणो पार रे ॥वि० ॥१४॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोडि रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोडि रे॥ वि० ॥१५॥ कलश ॥ एम त्रिजग जाषण, अचल शासन, वर्द्धमान, जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेम गुरु सुप, साय पामी, संथुण्यो, अलवेसरू ॥ जिनगुण प्रसंगें, जणो रंगें, स्तवन ए, आठम तणो ॥ जे जविक जावें, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥ १ ॥ श्लोक संख्या ॥ ४३ ॥

॥ अथ एकादशीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोडशुं परिवर्या ॥ १ ॥ जगपति धिगुण फूल अमूल, जक्ति गुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥२॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त,रक्त आरंज परिग्रहे॥ जगपति मुफ आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुफ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोइ उपाय बताव, जिम वरे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पंचाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमी नाण, मल्लीजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, मांहे क

श्राण कह्यां वली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणे उपवास, दोढशो जपमाला ग णो ॥ नरपति मन वचकाय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नर पति दाहिण धातकी खंम,पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पा टण अजिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शियलसली ला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार जूषण चीवर धरी॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पो षे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे॥नरपति देववंदन श्रावश्यक,काल वेलायें अनुसरे॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ,मु निवर करि करुणा री ॥१॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोडो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वडबीज, शुज अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि जासे महाजा ग्य, पावन पर्व घणां री॥एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री॥३॥ सीत एकादशी सेव, मास अग्यार लगें री ॥ अथवा वरस इग्यार, उज वी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥ सांजली सफुरु वेण, श्रानंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजवीय, श्रारण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर श्राय, पाली पुण्यवशें री ॥ सांजल केशवराय, श्रागल जेह थशे री ॥६॥ सौरी पुरमां शेठ, समृद्धदत्त वडो री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पु ण्यजोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुज स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र,उत्तम ग्रह शकुनें री ॥८॥ नालनिक्षेप निधान, जूमि थी प्रगट हवो री ॥ गर्जदोहद अनुजाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ए॥ बु द्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक जण्यो री ॥ यौवनवय अग्यार, रूप वती परण्यो री ॥१०॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगीथार कंचन कोडि, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजली सुव्रत शेठ, जातिस्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिनप्रत्यय मुनि शास्त्र, जक्कें तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

पछी सयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥१॥ शासन जक्तें देवी शक्तें, थंजाणा ते बापडा जी ॥ कोलाहल सुणी कोटवाल आव्यो, नूप आगल धस्या रांकडा जी ॥२॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणां जी ॥ रायने प्रणमी चोर मुकावी, शेठें कीधां पारणां जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा, लोक कहे इठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सहु प्रशंसा करे जी ॥ हरखे शेठजी तपजजमणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरिपासें, तप व्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्मे नडियो पापें जडियो, सुर कहे जाउं ओषध जणी जी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन कायत्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जितपद रामी, सुव्रत नेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥

कान पयंपे नेमने ए ॥ धन्य धन्य यादव वंश, जिहां प्रजु अवतस्या ए ॥ मुऊ मनमानसहंस, जीयो जिन नेमने ए ॥१॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्नत्रयीअवदात ॥ ॥ज०॥२॥ चरण विराधी उपन्यो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ ज० ॥ तिणें मन नवि उल्लसे ए, चरणधर्मनी सेव ॥ ज० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए, दुष्ट कर्मनो जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण शरणुं बलीया तणुं ए, कीजें सीजे काज ॥ ज० ॥ एहवां वचनने सांजली ए, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ याईश

जिनवर बारमो ए, जावि चोवीशियें लद्ध ॥जयो०॥६॥कलश॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल,मंरुणो ॥ बाण नंद मुनि,चंद वरसें, १७९५ राजनगरें,संथुण्यो ॥ संवेगरंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय गुरु, अनुसरी॥ कपूरविजय कवि, क्षमाविजय गणि, जिनविजय,जयसिरि वरी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रजुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ जावदया सागर प्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥१॥ वीर प्रजु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण जरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्यूं रे, वीर विहूणा रे जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥३॥ मात विहूणो बाल ज्यूं रे, अरहो परहो अथडाय ॥ वीरविहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥५॥ निर्यामक जव समुद्र नो रे, जवअडवी सञ्चवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो जवि जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे॥ वीर० ॥८॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहूने एणी परें सिद्धि ॥ जव जव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे ॥ वीर० ॥९॥

॥ अथ आंबील तप आश्रयी श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंअर बेठा गोंखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्यें जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो आशोई चैत्री जणी ॥ लाला ॥ अठ्ठाई विशेष ॥ १ ॥ जवि कजन, जिनवर जग जयकार ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नंदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाजिगममांहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अठ दिन महिमाय ॥ २ ॥ ज० ॥ जीहो नवपद केरा यंत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा किजें रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥ नासे पापनो व्याप ॥३॥ ज० ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारज ॥ ला० ॥ उवज्झाय साधु ए पंच ॥ जीहो दंसण नाण

चारित्र तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ४ ॥ ज० ॥ जीहो ए नव पद आराधतां ॥ ला० ॥ चंपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीयो थयो ॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ५ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीयें रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधियें रे लो, जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ पहेली मिथ्या श्रुतभणी रे लो, बीजी जिन सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धि परीक्षा अवसरें रे लो, पूछी समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री० ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृपभाण रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ कुष्ठी वर परणावियो रे लो, मयणा वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीयें रे लो, सुंदरी विणसे तुझ देह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्यपसायें कमला लही रे लो, वाध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ माउले वात ते जव लही रे लो, वांदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवियो रे लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, हुं जाउं परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता बहु लावशुं रे लो, पूरशुं तुम तणी खांत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अवधि करी एक वरसनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल सार्थें चल्यो रे लो, जलपंथें सुविशेष रे ॥ सु० ॥ ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी बब्बर पति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह ॥ जिनहर बार उघाडते रे, कनककेतु बीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुर नर, श्री श्रीपालचरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्रतटें आवंत ॥ मकरकेतु नृपसुता रे, वीणावादें रीझंत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्यसुंदरी रे, परणी कुब्जा रूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनूप ॥ च० ॥ ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरें रे, साथें बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापालें सांभली रे, परदल

केरी वात ॥ खंधें कुहाडो लेइ करी रे, मयणा हुइ विख्यात ॥ च० ॥ ५ ॥ चंपाराज्य लेई करी रे, जोगवी कामितजोग ॥ धर्म आराधी अवतस्यो रे, पहोतो नवमे सुरलोग ॥ च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणि आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें ॥ ए आंकणी ॥ अडदल कमलनी थापना, मध्यें अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं दिशें सिद्धादिक चउ, वक्र दिशें तुं गुणधार ॥ मो० ॥ २ ॥ श्री० ॥ बे पडिक्कमणां जंत्रनी, पूजा देव वंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजें पखाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ जूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रूंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजियें, धरो सद्दहणाजोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ गुरु पडिलाजी पारियें, सहाम्मिवच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणां पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥५॥ श्री० ॥ इह जव सवि सुख संपदा, परजवें सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पंमित शांति विजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनुं स्तवन ॥

॥ हांरे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मघवा नाम जो ॥ राणी तेहनी कमला, पंकजलोयणी रे लो ॥ हांरे मारे आठ पुत्र ने, ऊपर पुत्री एक जो ॥ मात पिताने वहाली, नामें रोहिणी रे लो ॥१॥ हांरे मारे देखी यौवन, वय निजपुत्री जूप जो ॥ स्वयंवर मंरूप मांमी, नृप तेडाविया रे लो ॥ हांरे मारे अंग वंग ने, मरुधर केरा राय जो ॥ चतुरंगी फोजांथी चंपायें, आविया रे लो ॥२॥ हांरे मारे पूरव जवना रागें, रोहिणी ताम जो ॥ जूप अशोकने कंठें, वरमाला धरे रे लो ॥ हांरे मारे गज रथ घोडा, दान अने बहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आरूंबरें रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे रोहिणी राणी, जोगवतां सुख जोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री, चार सोहामणी रे लो ॥ हांरे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल ठे नाम जो ॥ ते खोले लेइ बेठी, गोंखे जामिनी रे लो ॥४॥ हांरे मारे एहवे कोइक, नगर वणिकनो पुत्र जो ॥ आयुःक्षयें श्री बालक, मरणदशा लहे रे लो ॥ हांरे मारे मात पितादिक, सहु तेनो परिवार जो ॥ रडतो पडतो गोंख तले, थइने वहे रे लो ॥५॥ हांरे मारे ते

देखी अति हरखी, रोहिणी ताम जो ॥ पिउने भांखे ए नाटक, कुण भा तनुं रे लो ॥ हांरे मारे दीप कहे ए, पूरव पुण्य संकेत जो ॥ जन्मथकी नवि दीठुं डुःख, कोइ जातनुं रे लो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पिउ कहे जोबन मदमाती, सहुने सरखी आशा ॥ ए बालकना डुःख थी रोवे, तुऊने होवे तमासा ॥ बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजें हांसी ॥१ ॥ तव राणीने रीश करी खोलेथी, पुत्रने खूंची लीधो ॥ रोहिणी राणी नजरें जोतां, गोंखथी नाखी दीधो ॥बो० ॥ २ ॥ ते देखी सहु अंतेउरमां, स्वजनें पोकार ते कीधो ॥ रोहिणी एम जाणे जे बालक, कोइकें रमवा लीधो ॥ बो० ॥ ३ ॥ नगरतणे रखवाले देवें, अधर ग्रह्यो तिहां आवी ॥ सोनाने सिंहासण थाप्यो, आभूषण पहेरावी ॥ बो० ॥४॥ नगरलोक सहु भाग्य वखाणे, राजा विस्मय थावे ॥ दीप कहे जस पुण्य सखाइ, तिहां सहु नव निधि थावे ॥ बो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रूडो मास वसंत ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्य जिनवरना, अंतेवासी मुनिराज वहाला ॥ रूपकुंभ ने सुवर्णकुंभजी, चउ ज्ञानी भवऊहाज वहाला ॥१॥ रोहिणी तप फल जग जयवंतुं ॥ ए आंकणी॥ पाउ धार्या प्रभु नयर समीपें, हरख्यो रोहिणी कंत वहाला ॥ सहु परिवारशुं पदयुग वंदे, निसुण्यो धर्म एकंत वहाला ॥रो० ॥२॥ कर जोडी नृप पूछे गुरुने, रोहिणी पुण्यप्रबंध वहाला ॥ शुं कीधुं प्रभु सुकृत एणें, भांखो ते सयल संबंध वहाला ॥ रो० ॥ ३ ॥ गुरु कहे पूर्व भवमां कीधुं, रोहिणीतप गुणखाण वहाला ॥ तेथी जन्मथकी नवि दीठुं, सुख डुःख जाण अजाण वहाला ॥ रो० ॥४॥ भांखशे गुरु हवे पूर्व भव नो, रोहिणीनो अधिकार वहाला ॥ दीप कहे सुणजो एक चित्तें, कर्मप्रपंच विचार वहाला ॥ रो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गुरु कहे जंबू क्षेत्र भरतमां, सिद्धपुर नगर मऊार रे॥ पृथिवीपाल नरेसर राजा, सिद्धमती तस नार ॥ राजन सुणजो रे ॥ कांइ पूरव भव अधिकार, दिलमां धरजो रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ एक दिन आव्या चंद्र उद्यानें, राणी ने वली राय रे ॥ खेले क्रीडा नव नव भातें, जोजो कर्म नि

दान ॥ रा० ॥२॥ एहवे कोइक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम रे॥ राजा ते मुनिवरने देखी, राणीने कहे ताम ॥ रा० ॥३॥ ऊठो ए मुनिने व होरावो, जे होय सुजतो आहार रे ॥ निसुणी राणीने मुनि उपर, उपन्यो क्रोध अपार ॥ रा० ॥ ४ ॥ विषयथकी अंतराय थयो ते, मनमां बहु दुःख लावे रे ॥ रीशें बलती कडवुं तुंबडुं, ते मुनिने वहोरावे ॥ रा० ॥ ५ ॥ मुनिने आहारथकी विष व्याप्युं, कालधर्म तिहां कीधो रे ॥ राजायें राणीने ततक्षण, देशनिकालो दीधो ॥ रा० ॥ ६ ॥ सातमे दिन मुनि ह त्यापापें, गलत कोढ थयो अंगें रे ॥ काल करीने छठी नरकें, उपनी पाप प्रसंगें ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारकीने तिर्यंच तणा जव, जटकी काल अनंत रे॥ दीप कहे हवे धर्मजोगनो, कहिशुं सरस वृत्तंत ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ ते राणी मुनि पापथी ॥ केशरीया लाल ॥ फरती जवचक्र फेर रे॥ केश रीया लाल ॥ तारा नयरमां उपनी ॥ के० ॥ वनमित्र शेठने घेर रे ॥ के० ॥ ॥१॥ जूउं जूउं कर्म विटंबना ॥ के० ॥ धनवनी कुखें उपनी ॥ के० ॥ दुर्गं धा तस नाम रे ॥ के० ॥ नगर वणिकना पुत्रने ॥ के० ॥ परणावी बहु मान रे ॥ के० ॥ २ ॥ जू० ॥ सुखशय्यानी उपरें ॥ के० ॥ आवी कंतनी पास रे ॥ के० ॥ बहु दुर्गंधता उछली ॥ के० ॥ स्वामी पाम्यो त्रास रे ॥ ॥ के० ॥ ३ ॥ जू० ॥ मूकी परदेशें गयो ॥ के० ॥ जुउं जुउं कर्म स्वजाव रे ॥ के० ॥ एक दिन कन्यानो पिता ॥ के० ॥ ज्ञानीने पूछे जाव रे ॥ के० ॥ ४ ॥ जू० ॥ ज्ञानीयें पूर्वजव कह्यो ॥ के० ॥ जांख्यो सहु अवदात रे ॥ के० ॥ फरी पूछे गुरुरायने ॥ के० ॥ केम होवे सुख शात रे ॥ के० ॥ ॥ ५ ॥ जू० ॥ गुरु कहे रोहिणीतप करो ॥ के० ॥ सात वर्ष सात मास रे ॥ के० ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनें ॥ के० ॥ चोविहारो उपवास रे ॥ के० ॥ ६ ॥ जू० ॥ वासुपूज्य जगवंतनी ॥ के० ॥ पूजा करो शुज जाव रे ॥ के० ॥ एम ए तप आराधतां ॥ के० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वजाव रे ॥ के० ॥ ७ ॥ जू० ॥ करजो तप पूरण थये ॥ के० ॥ उजमणुं जली जात रे ॥ के० ॥ तेथी एक जव आंतरे ॥ के० ॥ लेशो ज्योति महांत रे ॥ के० ॥ ८ ॥ जू० ॥ एम मुनि मुखथी सांजली ॥ के० ॥ आराधी ते लार रे ॥ के० ॥ ए तारी राणी थई ॥ के० ॥ रोहिणी नामें नार रे ॥ के० ॥

॥ए॥जू०॥ इम निसुणी हरख्यां सहु ॥ के०॥ रोहिणी ने वली राय रे॥ के०॥ दीप कहे मुनि कुंजने ॥ के० ॥प्रणमी स्थानक जाय रे ॥ के० ॥१०॥ जू० ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्यजी ए, समोसस्या जिनराज ॥ नमो जिनराजने रे ॥ राय ने रोहिणी हरखियां ए, सीधां सघलां काज ॥ न० ॥ १ ॥ बहु परिवारशुं आवियां ए, वंदे प्रजुना पाय ॥न०॥ प्रजुमुखथी वाणी सुणी ए, आनंद अंग न माय ॥न० ॥२॥ राय ने रोहिणी बेहु जणां ए, लीधो संयम खास ॥न०॥ धन्य धन्य संयमधर मुनि ए, सुर नर जेहना दास ॥न०॥ ॥ ३ ॥ तप तपी केवल लही ए, तास्यां बहु नर नार ॥न०॥ शिवपद अविचल पद लह्युं ए, पाम्या जवनो पार ॥ न० ॥ ४ ॥ एम जे रोहिणी तप करे ए, रोहिणीनी परें तेह ॥ न० ॥ मंगलमाला ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥ न० ॥५॥ धन्य वासुपूज्यना तीर्थने ए, धन्य धन्य रोहिणी नार ॥ न० ॥ ए तप जे जावें करे ए, पामे ते जय जयकार ॥ न० ॥ ६ ॥ संवत अढार ठंगणशाठनो ए, उज्ज्वल जाद्रव मास ॥ न० ॥ दीपविजयें तस गाइयो ए, करी खंजात चोमास ॥ न० ॥ ७ ॥ कलश ॥ वासुपूज्य जग,नाथ साहेब, तास तीर्थें, ए थया ॥ चार पुत्र ने, आठ पुत्रीथी, दंपती, मुगतें गयां ॥ तपगछ विजया, णंद पटधर, विजय देवेंद्र, सूरीसरु ॥ तास राज्यें, स्तवन कीधुं, सकल संघ, सोहंकरु ॥ सकल पंकित, प्रवर जूषण, प्रेम रत्न गुरु, ध्यायिया ॥ कवि दीपविजयें, पुण्य हेतें, रोहिणी गुण, गाइया ॥१॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत आदिजिननी विनति ॥

॥ पामी सुगुरु पसाय रे, शत्रुंजय धणी ॥ श्रीरिसहेसर विनवुं ए ॥१॥ त्रिजुवननायक देव रे, सेवक वीनति ॥ आदीश्वर अवधारीयें ए ॥ २ ॥ शरणें आव्यो स्वामी रे, हुं संसारमां ॥ विरुए वैरीयें नड्यो ए ॥ ३ ॥ तार तार मुज तात रे, वात किशी कहुं ॥ जव जव ए जावठ तणी ए ॥ ४ ॥ जन्म मरण जंजाल रे, बाल तरुणपणुं ॥ वली वली जरा दहे घणुं ए ॥५॥ केमे न आव्यो पार रे, सार हवे स्वामी ॥ श्ये न करो एक माहरी ए ॥ ६ ॥ तास्या तुमें अनंत रे, संत सुगुण वली ॥ अपराधी पण उद्धस्या ए ॥७ ॥ तो एक दीन दयाल रे, बाल दयामणो ॥ हुं शा माटें वीसस्यो ए ॥ ८ ॥ जे गिरुआ गुणवंत रे, तारो तेहने ॥ ते मांहे अचरि

ज किश्युं ए ॥ ९ ॥ जे मुझ सरिखो दीन रे, तेह्ने तारतां ॥ जग विस्तरशे यश घणो ए ॥ १० ॥ आपद पडियों आज रे, राज तुमारडे ॥ चरणे हुं आव्यो वही ए ॥ ११ ॥ मुज सरिखो कोइ दीन रे, तुझ सरिखो प्रनु॥ जोतां जग लाभे नहीं ए ॥ १२ ॥ तोये करुणासिंधु रे, बंधु नुवन तणा ॥ न घटे तुम उवेखवुं ए ॥ १३ ॥ तारणहारो कोई रे, जो बीजो हुवे ॥ तो तुम्हने शाने कहुं ए ॥ १४ ॥ तुंहिज तारीश नेट रे, पहिलां ने पछें ॥ तो एवडी गाढिम कीशी ए ॥ १५ ॥ आवी लाग्यो पाय रे, ते केम छोडशे ॥ मन मनाव्यां विण हवे ए ॥ १६ ॥ सेवक करे पोकार रे, बाहिर रह्या जस ॥ तो साहिब शोना कीसी ए ॥ १७ ॥ अतुली बल अरिहंत रे, जगने तारवा ॥ समरथ छो स्वामी तुमें ए ॥ १८ ॥ शुं आवे छे जोर रे, मुझने तारतां ॥ के धन बेसे छे किश्युं ए ॥१९॥ कहेशो तुमें जिणंद रे, नक्ति नथी तेहवी ॥ तो ते नक्ति मुझने दीयो ए ॥ २० ॥ वली कहेशो नगवंत रे, नहिं तुझ योग्यता ॥ हमणां मुक्ति जावा तणी ए ॥ २१ ॥ योग्यता ते पण नाथ रे, तुमहीज आपशो ॥ तो ते मुझने दीजियें ए ॥२२॥ वली कहेशो जगदीश रे, कर्म घणां ताहरे ॥ तो तेहज टालो परां ए ॥ २३ ॥ कर्म अमारां आज रे, जगपति वारवा ॥ वली कोण बीजो आवशे ए ॥२४॥ वली जाणो अरिहंत रे, एहने वीनति॥ करतां आवडती नथी ए ॥२५॥ तो तेहीज महाराज रे, मुझने शीखवो ॥ जेम ते विधिशुं वीनवुं ए ॥ २६ ॥ माय ताय विण कोण रे, प्रेमें शीखवे ॥ बालकने कहो बोलवुं ए ॥२७॥ जो मुझ जाणो देव ! रे, एह अपावन ॥ खरड्यो छे कलिकादवें ए ॥ २८ ॥ केम लेउं उत्संग रे, अंग नखुं एहनुं ॥ विषयकषाय अशुचिशुं ए ॥२९॥ तो मुझ करो पवित्र रे, कहो कोण पुत्रने ॥ विण मावित्र पखालशे ए ॥ ३० ॥ कृपा करी मुझ देव रे, इहां लगें आणीयो ॥ नरक निगोदादिकथकी ए ॥३१॥ आव्यो हवे हजूर रे, ऊनो थइ रह्यो ॥ सामुं श्ये जूउं नहीं ए ॥ ३२ ॥ आडो मांझी आज रे, बेठो बारणें ॥ मावित्र तुमें मनावशो ए ॥ ३३ ॥ तुमें छो दयासमुद्र रे, तो मुझने देखी ॥ दया नथी श्ये आणता ए ॥ ३४ ॥ उवेखश्यो अरिहंत रे, जो आणी वेला ॥ तो महारी शी पेर थशे ए ॥३५॥ नना छे अनेक रे, मोहादिक वैरी ॥ छल जुए छे माहरां ए ॥ ३६ ॥

तेहने वारो वेगें रे, देव दया करी ॥ वली वली शुं वीनवुं ए ॥ ३७ ॥ मरुदेवी निजमाय रे, वेगें मोकली ॥ गज बेसारी मुक्तिमां ए ॥ ३८ ॥ भरतेसर निज नंद रे, कीधो केवली ॥ आरीसा अवलोकतां ए ॥ ३९ ॥ अठाणुं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमें ॥ जुझ करंता वारीया ए ॥ ४० ॥ बाहुबलने नेट रे, नाण केवल तमें ॥ स्वामी सहामुं मोकल्युं ए ॥ ४१ ॥ इत्यादिक अवदात रे, सघला तुम तणा ॥ हुं जाणुं छुं मूलगा ए ॥ ४२ ॥ महारी वेला आज रे, मौन करी बेठा ॥ उत्तर शें आपो नहीं ए ॥४३॥ वीतराग अरिहंत रे, समता सागरू ॥ महारां तहारां शुं करो ए ॥४४॥ एकवार महाराज रे, मुझने स्वमुखें ॥ बोलावो सेवक कही ए ॥४५॥ एटले सिद्धां काज रे, सघलां माहरां ॥ मनना मनोरथ सवि फल्या ए ॥४६॥ खमजो मुज अपराध रे, आसंगो करी ॥ असमंजस जे वीनव्युं ए ॥४७॥ अवसर पामी आज रे, जो नवि विनवुं ॥ तो पछतावो मन रहे ए ॥ ४८ ॥ त्रिभुवन तारणहार रे, पुण्यें माहरे ॥ आवी एकांतें मल्या ए ॥ ४९ ॥ बालक बोले बोल रे, जे अविगतपणे ॥ माय तायने ते रुचे ए ॥ ५० ॥ नयणें निरख्यो नाथ रे, नाभि नरिंदनो ॥ नंदन नंदनवन जिस्यो ए ॥ ५१ ॥ मरुदेवी उरहंस रे, वंश इख्कागनो ॥ सोहाकर सोहामणो ए ॥५२॥ माय ताय प्रभु मित्र रे, बंधव माहरो ॥ जीव जीवन तुं वालहो ए ॥ ५३ ॥ अवर न को आधार रे, इण जग तुज विना ॥ त्राण शरण तुं मुज धणी ए ॥५४॥ वलि वलि करुं प्रणाम रे, चरणे तुम तणे ॥ परमेश्वर सन्मुख जुओ ए ॥५५॥ भव भव तुम पाय सेव रे, सेवकने देजो ॥ हुं मागुं छुं एटलुं ए ॥५६॥ श्री किर्त्तिविजय उवझाय रे, सेवक एणि परें ॥ विनय विनय करी वीनवे ए ॥५७॥ इति श्री आदिजिनविनतिः समाप्ता ॥श्लोकसंख्या ॥४८॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ भाषा ॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पभणिशुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मण तणु वयण एकंत करवि, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणीतल मंडण ॥ मगधदेस सेणिय नरीसर, रिउ दल बल खंडण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा ॥ विप्प वसे वसुभूइ तछ, जसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय

पसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव, नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक वि
चार सार, गुणगणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंजावर
॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपंकज जल पाडिय ॥ तेजें
ताराचंद सूर, आकास जमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हिउं नि
रधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंजीर सिंधु, चंगमच्चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु
वम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल जीत इछ, गुण मेल्हा
संचिय ॥ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंजा पउमा
गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ,
जसु आगल रहियो ॥ पंचसया गुणपात्र छात्र,हींडे परवरियो ॥ करे निरंत
र यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होशे चरम नाण, दंसण
ह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तुछंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह जरह वासंमि, खो
णीतल मंरुणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, वरगुवर गाम तिहां ॥ विप्प
वसे वसुजूइ सुंदर, तसु जज्जा पुहवी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥
ताण पुत्त विद्यानिलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जाषा ॥
चरम जिणेसर केवलनाणी, चउव्विह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सा
मी संपत्तो, चउव्विह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां
कीजें, जिण दीठे मिथ्यामति खीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासण वइठो, तत
खिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ९॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा
जिम दिन चोरा ॥ देवडुंडुहि आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आवियो गाजी
॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा,चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चा
मर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहि जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम
रस जर जरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण
जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें ऊलऊलकं
ता, गयण विमाणें रण रणकंता ॥ पेखवि इंदजूइ मन चिंते, सुर आवे
अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंरुक जिम ते वहता, समवसरण
पहोता गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें कोपें तणु
कंपे ॥ १४ ॥ मूढ लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥
मू आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥
॥ वस्तुछंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुरम

हिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुख्ककारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजय जयकार ॥ १६ ॥ जाषा ॥ तो चढिउं घण माण गजें, इंदजूइ जूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज तो ॥ दहदिसि देखे विबुधवहू, आवंती सुररंज तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरु धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वैर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणीराय तो ॥ चित्तें चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रजुपाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सम वीर जिण, पेखवी रूप विशाल तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजगगुरु, इंदजूई नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेली करे, जगतें नामे सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लिउं ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आजाष करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें जुवन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तुछंद ॥ इंदजूई इंदजूई चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संचरिउं समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्जाय मने, गोयम जवह विरत्त ॥ दिख्क लेइ सिख्का सहिय, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ जाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, आज पचेलिमां पुस्र जरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणहार, पंचसया मुनि परवरिय ॥ जूमिय करय विहार, जवियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपकार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिख्क, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरुजत्ति, सामिय गोयम उपनिय ॥ इण ठल केवल नाण, राग ज राखे रंग जरें ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जिण ॥

आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥ इश्र देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउं ॥ तापस पन्नरस एण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तव सोसिय निय अंग, अम्ह शक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउं ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचन मणि निप्पन्न, दंरु कलस धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरहेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंरुरीक, कंरुरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खंरु घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुभ भाव, उज्जल भरिउं खीरमीसें ॥ साचा गुरु संजोग, कवल ते केवल रूप हुउं ॥ २९ ॥ पंचसया जिणनाह, सम समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंतो घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुछंद ॥ इणे अनुक्रमें इणे अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ ॥ जाणवि जगगुरु वयण तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणेसर इम भणइ, गोयम म करिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही, होशुं तुल्ला बेउ ॥३१॥ भाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए भरहवासंमि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायक मल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावा पुरि सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयमसामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालियो ए ॥ जाणंतो ए तिहुअणनाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अति भलुं ए कीधेलुं सामि, जाणियुं केवल मागशे ए ॥ चिंतवियुं ए बालक जेम, अहवा केडें लागशे

ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, जगतें जोलो जोलविउ ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लाविउ ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वालिउ ए ॥३५॥ आवतो ए जो ऊलट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेजें उमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव इम निस्तरे ए ॥ ॥ ३६ ॥ वस्तुछंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास ॥ गिहिवासें संवसिय तीस वरिस संजम विजूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुयण नमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल बहेके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौजाग्यनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनिपवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सवि वश हुउ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहेलो पजणीजें, मायावीज श्रवण निसुणीजें, श्रीमती शोजा संजवे ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवझाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुरं पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें,

किउं कवित्त उपगार करो ॥ आदेहिं मंगल एह पत्नणीजें, परव महोछव पहिलो लीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन्य माता जिणें उयरें धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सह गुरु जिणें दिख्किया ए ॥ विनयवंत विद्याजंकार, जस गुण कोइ न लप्ने पार, विद्यावंत गुरु वीनवे ए ॥ गौतमस्वामीनी रास त्नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करे ॥ ४६ ॥ इतिश्री गौतमस्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रत्नु कंठें ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी ॥

॥ रमती ऊमती अमुन साहेली, बेहु मली लीजियें एक ताली रे ॥ सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासें पूरण मासें, पोष दशम निशि रढीयाली रे ॥ स० ॥१॥ पशु पंखी वसीयां वनवासें, ते पण सुखीयां समकाली रे ॥स०॥ एणी रात्रें घेर घेर उत्सव होशे, सुखीयां जगत मां नर नारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगें, जन्म्या प्रत्नु जी जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरकें थयां अजुवालां, थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी आवे दिक्कुमरी, अधोलोकनी वस नारी रे ॥ स० ॥ सूतीघर ईशानें करती, जोजन एक अशुचि टाली रे ॥स०॥४॥ ऊर्ध्व लोकनी आठज कुमरी, वरसावे जल कुसुमाली रे ॥ स० ॥ पूरव रुचक आठ दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशाली रे ॥स० ॥५॥ अड पछिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे ॥स०॥ विदिशीनी चउ दीपक धरती, रुचक द्वीपनी चउ बाली रे ॥ स० ॥६॥ केलतणां घर त्रणे करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षापोटली बांधी बेहुने, मंदिर मेहल्यां शणगारी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ प्रत्नु मुख कमलें अमरी त्नमरी, रास रमंती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रत्नु माता तुं जगतनी माता, जन दीपकनी करनारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ माजी तुऊ नंदन घणुं जीवो, उत्तमजीवने उपगारी रे ॥ स० ॥ छप्पन दिक्कुमरी गुण गाती, श्री शुत्नवीर वचन शाली रे ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ आमलकी क्रीडानुं स्तवन ॥

॥ आव्यो आषाढो मास, नाव्यो धूतारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ माता त्रिशला नंदकुमार, जगतनो दीवो रे ॥ मारा प्राण तणो आधा

र, वीर घणुं जीवो रे ॥ ए आंकणी ॥ आमलकी क्रीडायें रमतां, हार्यो सुर प्रभु पामी रे॥ सुणजोने स्वामी आतमरामी, वात कहुं शिर नामी रे॥ वीर घणुं जीवो रे ॥ १ ॥ मा०॥ सौधर्मा सुरलोकें रहेतां, अमो मिथ्यात भराणां रे ॥ नागदेवनी पूजा करतां, शिर न धरी प्रभु आणा रे ॥ वी० ॥ २ ॥ मा० ॥ एक दिन इंद्र सभामां बेठां, सोहमपति एम बोले रे ॥ धैरजबल त्रिभुवननुं नावे, त्रिशलाबालक तोलें रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ मा० ॥ साचुं साचुं सहु सुर बोल्या, पण में वात न मानी रे ॥ फणिधरने लघु बालक रूपें, रमत रमीयो छानी रे ॥ वी० ॥४॥ मा० ॥ वर्द्धमान तुम धैरज महोटुं, बलमां पण नहिं काचुं रे ॥ गिरुआना गुण गिरुआ गावे, हवे में जाण्युं साचुं रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ मा० ॥ एकज मुष्टिप्रहारें मारुं, मिथ्यात भागुं जाय रे ॥ केवल प्रगटे मोहरायने, रहेवानुं नहिं थाय रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ मा० ॥ आजथकी तुं साहेब मारो, हुं बुं सेवक तहारो रे ॥ क्षण एक स्वामी गुण न विसारुं, प्राणथकी तुं प्यारो रे ॥ वी० ॥ ॥ ७ ॥ मा० ॥ मोह हरावे समकित पावे, ते सुर सरग सधावे रे ॥ महावीर प्रभु नाम धरावे, इंद्रसभा गुण गावे रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मा० ॥ प्रभु मलपता निज घेर आवे, सरखा मित्र सोहावे रे ॥ श्रीशुभवीरनुं मुखडुं देखी, माताजी सुख पावे रे ॥ वी० ॥ ए ॥ इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमिनाथनुं स्तवन ॥ आवो हरि कुंकुमने पगले ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो सखि सज्जन ना विसरे ॥ आठ भवंतर नेह निवाही, नवमे केम विछडे ॥ सु० ॥ नेह विछुड्या आ डुनीयामां, झंपापात करे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ घर छंमी परदेशें फरतां, पूरण प्रेमें ठरे ॥ सु० ॥ जान सजी करी जादव आये, नयनसें नयन मिले ॥सु०॥२॥ तोरण देख गये गिरनारे, चारित्र लेइ विचरे ॥ सु० ॥ डुःखण भरियां डुर्जन लोकां, दयिता दोष भरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ माता शिवासुत सांभल सज्जन, साचा एम ठरे ॥सु०॥ तोरण आवी मुझ समजावी, संयम शान करे ॥सु० ॥ ४ ॥ राजुल रागविरागें रहेतां, ज्ञान वधाइ वरे ॥ सु० ॥ प्रीतम पासें संजम वासें, पातक दूर हरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, ज्ञानसें ध्यान धरे ॥ सु० ॥ केवल पामी शिवगति गामी, आ संसार तरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ नेम जिनेश्वर सुखसज्झायें, पोढीया शिवनगरें ॥ सु० ॥ श्री शुभवीर अखंड स

नेही, कीर्त्ति जग पसरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति श्री नेमिनाथस्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथनुं स्तवन ॥

॥ सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे ऊजी रहेने ॥ ए देशी ॥

॥ शामलीया लाल, तोरणथी रथ फेरयो, कारण कहोने ॥ गुण गिरुवा लाल, मुजने मूकी चाल्या, दरिसन द्योने ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु हुं छुं नारी तमारी, तुमें श्ये प्रीत मूकी अमारी, तुमें संयमस्त्री मनमां धारी ॥शा०॥ गु० ॥१॥ तुम पशुआ उपर कृपा आणी, तुमें मारी वात को नव जाणी, तुम विण परणुं नहिं को प्राणी ॥ शा० ॥ गु० ॥ २ ॥ आठ भवानी प्र तडली, मूकीने चाल्या रोतडली, नहिं सज्जननी ए रीतडली ॥ शा० ॥ गु० ॥ ३ ॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, तो कर मूकावुं हुं माथे, पण जावुं प्रभुजीनी साथें ॥ शा० ॥ गु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रभु हाथे व्रत लीधो, पोतानो कारज सवि कीधो, पकड्यो मारग एणें शिव सीधो ॥ शा० ॥ गु० ॥ ५ ॥ चोपन दिन प्रभुजीयें तप करियो, पण पोतें केवल वर ध रियो, पणसत छत्रीशशुं शिव वरियो ॥ शा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ एम त्रण क ल्याणक गिरनारें, पाम्या ते जिन उत्तम तारे, जो पदपद्म तस शिर धा रे ॥ शा० ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥ सेत्रुंगर तुं शीदनें आव्यो ॥ ए देशी॥

॥ आवो गिरि सिद्धाचल जइयें, पाप हरी निर्मल तो थइयें, कुमति क दाग्रहने तजीयें, आवो गिरि सिद्धाचल जइयें ॥ १ ॥ तारण तीरथ दो कहीयें, थावर जंगमने लहियें, लोकोत्तरने नित्य भजीयें ॥आ०॥२॥ पद अणवाणे पग्र चरियें, पुण्य घणो लाभे भरीयें, सिद्धा अनंता कांकरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोना रूपाने फूलें, मुक्ताफल अमुलक मूलें, पूजीने ना म नहीं भूले ॥ आ० ॥ ४ ॥ चडीयें गिरिवर अनुकरमें, अंतर ध्यान र सें रमीयें, मरुदेवानंदनने नमीयें ॥ आ० ॥ ५ ॥ रायण हेठल जिनरा या, पूर्व नवाणुं इहां आव्या, लली लली तस प्रणमुं पाया ॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ सूरजकुंडमां जलें नहाशुं, पेरण क्षीरोदक आवुं, आंगी रची जिनगुण गाशुं ॥ आ० ॥ ७ ॥ तीरथ दरशनें फरीयें, जोग उपाधि दूरें करियें, लाभ अनंतो एणें गिरियें ॥आ० ॥ ८ ॥ गाम बगोदरेथी आवे, संघवी संघवण मन भावे, जिन गुणमाला कंठें ठावे ॥आ० ॥९॥ उंगणीश

बीबोत्तर वरषें, ऊजल पोसनी छठ दिवसें, जिनवर नेटी मन उल्लसे ॥ आ०॥१०॥ देवकीनंदन अनुसरीयें, उलखा जोलें जल नरीयें, सिद्धशिला काउस्सग्ग धरीयें ॥आ०॥११॥ नावें डुंगर चित्त लाया, सिद्धवडनी शीतल छाया, जाणुं मावडली माया ॥ आ० ॥१२॥ विमलाचल फरसे प्राणी, जीव नविक होवे नाणी, रिखन कहे वरे शिवराणी ॥ आ० ॥ १३ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंरूण स्वामी रे, जगजीवन अंतर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिर नामी ॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ करियें तो नवजल तरियें ॥ जात्री० ॥ १ ॥ श्रीरुषन जिनेश्वरराया रे, जिहां पूर्व नवाणुं आया रे, प्रनु समवसर्या दुखदाया ॥ जात्री० ॥२॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुं रे, पांच कोडी पुंमरिक जाणुं रे, जे पाम्या पद निर्वाणुं ॥ जात्री० ॥ ३॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे, बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ काति पूनमें करमने तोडी रे, जिहां सिद्धा मुनि दस कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥ जात्री० ॥ ॥ ५ ॥ एम नरतेश्वरने पाटें रे, असंख्याता मुनिवाटें रे, पाम्या मुक्तिरमणी ए वाटें ॥ जात्री० ॥६॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, थावच्चासुत सुखकार रे, सयपंच सेलग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकीसुत सुजगीश रे, सिद्धा बहु जादववंश रे, ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥८॥ पांचे पांमव एणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद रुषि राया रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जात्री० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जिहां सिद्धा साधु अनंत रे, इम नांखे श्रीनगवंत ॥जात्री०॥१०॥ उज्ज्वलगिरि समो नहिं कोय रे, तीरथ सघलां में जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥११॥ एकल आहारी (१) सचित्त परिहारी (२) रे, पदचारीने (३) नूमि संथारी (४) रे, शुद्ध समकित (५) ने ब्रह्मचारी (६) ॥जात्री०॥१२॥ एम छहरी जे नर पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जन्म मरण नय टाले ॥जात्री० ॥१३॥ धन्य धन्य तेह नर नारी रे, नेटे विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥१४॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उछायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥

॥ अथ सीताजीनी सक्षाय प्रारंज ॥

॥ जनकसुता हुं नाम धरावुं, राम ठे अंतरजामी ॥ पालव अमारो मेलने पापी, कुलने लागे ठे खामी ॥ अडशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ महारो नाहलीयो डुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ महारुं मन मांहेथी अकुलाय ॥अ०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पञ्चर पंकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांगलो अंबर पूगे ॥अ०॥२॥ तो पण तुं सांजलने रावण, निश्चय शील न खंकुं ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो पण सत्य न ठंकुं ॥ अ० ॥३॥ कुण मणिधरना मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥अ०॥४॥ परदारानो संग करीने, आखो कोण उगरियो ॥ ऊंकुं तो तुं जोय आलोची, सहि तुऊ दहाडो फरियो ॥ अ० ॥५॥ जनकसुता हुं जग सहु जाणे, जामंफल ठे जाइ ॥ दशरथ नंदन शिर ठे स्वामी, लखमण करशे लडाई ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं धणीयाती पीयु गुणराती, हाथ ठे महारे ठाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये ठे काती ॥ अ० ॥७॥ उदयरतन कहे धन्य ए अबला, सीता जेहनुं नाम ॥ सतीयामांहे शिरोमणि कहियें, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ आयंबिल तपमां आहार लेवाना विधिनो स्वाध्याय ॥
॥ प्रारंजः ॥ चोपाईनी देशीमां ॥

॥ समरी श्रुतदेवी शारदा, सरस वचन वर आपो सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो, जविजन जावथकी ते सुणो ॥१॥ विगय सकलनो जिहां परिहार, अशनमांहे पण जेद विचार ॥ विदल सर्व तिल तूअर विनां, अलसी कोद्रव कांगनी मना ॥२॥ खड धान्य पूंहक डुकट फल सर्व, वर्जीजें आंबिलने पर्व ॥ ठसामण परें जो जल जले, तो आंबिल आंबिल रस टले ॥३॥ बीड लवण शूंठ मिरच ने सुआ, मेथी संचल रामठ कह्यां ॥ अजमादिक जेला रंधाय, तो आंबिलमां लेवा थाय ॥४॥ जीरुं जले ते जे वडी कही, ते सूजे पण जीरुं नहीं ॥ गोमूत्र विना अठे अणाहार, ते सवि लेवानो व्यवहार ॥५॥ सात जाति जे तंडुल तणी, जे सूजती आंबिलमां जणी ॥ शेकेल धान्य अपक्की दाल, मांका खाखर लेवा टाल ॥६॥ हलदर लविंग पिंपर पींपली, हरडे सैंधव वेशण वली ॥ खादिम स्वादिम

जे कहेवाय, ते आंबिलमां नवि लेवाय ॥ ७ ॥ उत्कृष्ट विधें ऊष्णजल नीर, जघन्य विधे कांजीनुं नीर ॥ एम निर्दूषण आंबिल करे, मुख धोवण दातण नवि करे ॥ ८ ॥ जे निर्दूषण लिये आहार, उंदननो तेने व्यवहार ॥ आटो लिगट पाणी विनु, ते पण आंबिलमां सूजतुं ॥ ९ ॥ अशठ गीतारथ अणमत्सरी, जे जे विधि बोले ते खरी ॥ लाजालाज विचारे जेह, विधि गीतारथ कहियें तेह ॥ १० ॥ आंबिल तप उत्कृष्टुं कह्युं, विघ्न विदारण कारण लह्युं ॥ वाचक कीर्त्तिविजय सुपसाय, जांखे विनयविजय उवज्झाय ॥ ११ ॥ इति आंबिल तपनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ चेतन अब कछु चेतीयें, ज्ञान नयन ऊघाडी ॥ समता सहजपणुं जजो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ या दुनीयां हे बाउरी, जेसी बाजीगर बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले, ज्युं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ २ ॥ माया तरुछाया परें, न रहे स्थिरकारी ॥ जानत हे दिलमें जनी, पण करत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी ॥ पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधियारी ॥ चे० ॥ ४ ॥ परमातम अविचल जजो, चिदानंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुख कारी ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ आतमबोधनी सज्झाय ॥

॥ हो सुण आतमा मत, पड मोह पंजरमांहे ॥ माया जाल रे ॥ धन राज्य जोबन रूप रामा, सुत सुता घरबार रे ॥ हुकम होदा हाथी घोडा, कारिमो परिवार ॥ माया जाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुलबल हरि चक्री रामा, तुं जो ऊर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल निकट आवे, गलित जावे सत्त ॥ माया० ॥ हो० ॥ २ ॥ पुहवीने जे छत्र परें करे, मेरुनो करे दंम रे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंम ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥ जे तखत बेसी हुकम करता, पहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सहेरा धरत टेढा, मरी गया जमदेश ॥ मा० ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोल ने अधर राता, करत नव नवा खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य घाठे, करत परघर टेल ॥ मा० ॥ हो० ॥ ५ ॥ जज सदा जगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥ रूप कहे कर धर्मकरणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ मा० ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सद्याय ॥

॥ सांजल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग उडावण डारे रे जाइ ॥ सां० ॥ ३ ॥ एम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नर जवनें रे जाइ ॥ उलखी शुद्धधर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे जाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विजाव परजावमां जजीयें, रमणस्वजावमां करियें रे जाइ ॥ उत्तमपदपद्मने अवलंबी, जवियण जवजल तरीयें रे जाइ ॥ सां० ॥ ५ ॥ इति आत्महित सद्याय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सज्झाय ॥ राग प्रजाती ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडी घडी घडीयालां वाजे, तोही न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे बे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें उशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें बेठो मोज करे बे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोलासेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजानें शरणें जाउं, जोरालो को न जेथी रे॥ दुनीयामां दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दंत पडया ने डोसो थयो, काज सर्युं नहिं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहियें वातो केती रे ॥जो०॥५॥

॥ अथ निंदावारक सज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥निं०॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु जरया रे, केहनां नलीयां चुवे केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहेजो सहु

को तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, स मयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धोबीडानी सज्झाय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतियुं रे, रखे राखतो मेल लगार रे ॥ एणे रे मेलें जग मेलो कस्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर सोहामणुं रे, समकिततणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, मांही नवतत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहां झीले मुनिवर हंसला रे, पिये छे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदें जे शील रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप त डके करी रे, जालवजे नवतत्त्ववाड रे ॥ छांटा उफाडे पाप अढारना रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया सेवाल रे ॥ निश्चें पवित्रपणुं राखजे रे, पछें आ पणी नीमी संजाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, चल मेलीने संकेल रे ॥ समयसुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृतवेल रे ॥ धो०॥ ६ ॥

॥ अथ ढंढणऋषिजीनी सज्झाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे॥ हुं वारी लाल॥ अजिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धें लेशुं आहार रे॥ हुं वा री लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिनप्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुद्ध आ हार रे ॥ हुं० ॥ न लीये मूल असूझतो ॥ हुं० ॥ पंजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुझने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीयो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे॥ हुं० ॥ कृष्ण उम्माह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादव कुलचंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४॥ गलीआरें मुनिवर मल्या ॥ हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखीने ॥ हुं० ॥ आव्यो जावविशेष रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ऋषिजी लेई आविया ॥ हुं० ॥ प्रजुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ॥ ६ ॥ मुज लब्धें मोदक मल्या ॥ हुं० ॥ पूछे छे कहो कृपाल रे ॥ हुं०॥ लब्धि नहिं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे ॥ हुं० ॥

॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुऊने लेवो नहीं ॥ ढुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ ढुं० ॥ इंट निंजाडे जाइने ॥ ढुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥८॥ आवी सूधी जावना ॥ ढुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ ढुं० ॥ ढंढण ऋषि मुक्तें गया ॥ ढुं० ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ ढुं० ॥ ढं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मुहपत्तीना पच्चास बोलनी सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ सिरि जंबू रे, विनयजक्ति शिर नामिने ॥ कर जोडी रे, पूठे सोहमस्वामीने ॥ जगवंता रे, कहो शिवकांता केम मले ॥ कहे सोहम रे, मिथ्या ज्रम दूरें टले ॥ त्रुटक ॥ दूरें टले विष गरल ईहा, उजय मारग अनुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत क्रिया, अजेदारोपण करी ॥ जिम पंगु दर्शित चरण कर्षित, अंध बिहुं निज पुर गया ॥ तिम सत्त्व सजतां तत्त्व जजतां, जविक केइ सुखिया थया ॥ १ ॥ ढाल ॥ वैकल्य ज्युं रे, कष्ट ते करवुं सोहिलुं ॥ पण जंबू रे, जाणपणुं जग दोहिलुं ॥ तेणें जाणी रे, आवश्यक किरिया करो ॥ उपगरणे रे, रजहरणो मुहपत्ती धरो ॥ त्रुटक ॥ मुहपत्ती श्वेतें मानोपेतें, शोल निज अंगुल जरी ॥ दोय हाथ ऊाली दृग निहाली, दृष्टि पडिलेहण करी ॥ त्यां सूत्र अर्थ सुतत्त्व करीने, सद्दहुं एम जावियें ॥ नचा वच्चा रूप तिग तिग, पखोडा षट लावियें ॥ २ ॥ ढाल ॥ समकितमोहनी रे, मिश्र मिथ्यात्वने परिहरुं ॥ काम राग रे, स्नेह दृष्टि राग संहरुं ॥ ए साते रे, बोल कह्या हवे आगलें ॥ अंगुलि वचें रे, त्रण वधूटक कर तलें ॥ त्रुटक ॥ करतलें वामें अंजलि धरि, अखोडा नव कीजियें ॥ प्रमार्जन नव तेमज करियें, तिग तिगंतर लीजियें ॥ सुदेव सुगुरु सुधर्म आदरुं, प्रतिपक्षी परिहरुं ॥ वली ज्ञान दर्शन चरण आदरुं, विराधक त्रिक अपहरुं ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ॥ मनोगुप्ति रे, वचन कायगुप्त जजुं ॥ मनोदंरु रे, वचन काय दंरुने तजुं ॥ पचवीश रे, बोल ए मुहपत्तीना लह्या ॥ हवे अंगना रे, परिहरुं एम सघला कह्या ॥ त्रुटक ॥ कह्या वधूटक करि परस्पर, वाम हाथे त्रिक करो ॥ हास्य रति ने अरति ठंमी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥ जय शोक डुगंठा तजीने, पयाहीणो आचरो ॥ कृष्णलेश्या नील कापोत, ललाटें त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ रस गारव रे, ऋद्धि शाता गारवा ॥ मुख हैडे रे, त्रण त्रण एम धारवा ॥ मायाशल्य रे, नियाण मिथ्यात्व टालियें ॥ वाम खंधें रे, क्रोध मान दोय गालियें ॥ त्रुटक ॥ गालीयें माया लोज द

हिण, खंध ऊर्ध्व अधो मली ॥ त्रिक वाम पादें पुढवी ने अप, वली तेउनी रक्षा करी ॥ जमणे पगे त्रण वाउ वणसई, त्रसकायनी रक्षा करुं ॥ पंचाश बोलें पडिलेहण, करत ज्ञानी जव हरुं ॥५॥ ढाल ॥ एह मांहेथी रे, चालीश बोल ते नारीने ॥ शीश हृदयना रे, खंध बोल दश वारीने ॥ इं ण विधिश्युं रे, पडिलेहणथी शिव लह्यो ॥ अवधि करी रे, बकायनो विराधक कह्यो ॥ त्रुटक ॥ कह्यो किंचित् आवश्यकथी, तथा प्रवचनसारथी ॥ जावना चेतन पावना कही, गुरु वचन अनुसारथी ॥ शिव लहे जंबू रहे जो शुज, वीरविजयनी वाणीयें ॥ मन मांकडुं वनवास रमतुं, वश करि करी घर आणियें ॥ ६ ॥ इति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ काया उपर सज्झाय ॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सीचंतां रे शूके ॥ उठ कोडि रोमावली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ १ ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मोक्षनो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥२॥ अरिहंत आंबो मोरीयो, सामायिक थाणे ॥ मंत्र नवकार संजारजो, समकित शुरू ठाणे ॥ का० ॥ ॥ ३ ॥ वाडी करो विरता तणी, सवि लोज निवारो ॥ शील संयम दोनुं एकठा, जली पेरें पालो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, बेठा इण काली ॥ फल चूंटीने चोरियां, न करी रखवाली ॥ का० ॥५॥ इण वाडी एक शूडलो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन करी राखीयो, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥६॥ कां जोलपणे जव हारियो, मत मोडी संजाली ॥ रत्न चिंतामणि सारिखी, कांइ गांठ न वाली ॥का०॥७॥ रत्नतिलक सेवक जणे, सुणजो वनमाली ॥ वाड जली परें पालजो, करजो ढंग वाली ॥का०॥८॥

॥ अथ वणझारानी सज्झाय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणुं ॥ वणझारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी जरजे उदार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहुमूल ॥ अ० ॥ मोक्षनगर जावा जणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवें करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ जट

तणी ॥व०॥ पूरणनुं नहिं काम ॥अ०॥४॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे रे स्थान ॥ अ० ॥५॥ एम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिव पुरवास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोठें भरया गुणराशि ॥अ०॥६॥ क्षायिक भावें ते थशे ॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणिज जे एम करे ॥व०॥ पद्म नमे वारं वार ॥अ०॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सोदागरनी सद्याय ॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघा मुलनां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मो सम आये माल सवाया, रतनपुरीमें ठाया ॥ सु० ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समझाया, जिनसें बहोत नफाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जडाया, एककुं चौकी बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी दूर करनां, दीपकी ज्योतें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ उंर दिन वली महेलमें रहनां, वंदरकुं न हलानां ॥ दश सहेरसें दोस्तीहिं करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां जिनवर भजनां, सजनां जिनकुं दलाइ ॥ नवसर हार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाइ ॥ श्रीशुभवीरविजय घर जाई, होत सताबी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ आपस्वभावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे कर्माधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहिं केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पास, अवर सबे अनेरा ॥आ०॥२॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संघ जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥३॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूरी करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥४॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकूं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥आ०॥ ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कब

ठीक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आ० ॥६॥ शुद्ध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री शोल सतीयोनी सद्याय ॥

॥ शोल सतीनां लीजें नाम, जेथी मनोवांछित शुभ काम ॥ भक्ति भाव अति आणी घणो, भाव धरीने भवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदनबाला नाम, राजिमती द्रौपदी अभिराम ॥ कौशल्या ने मृगावती, सुलसा सीता ए महासती ॥२॥ सती सुभद्रा सोहामणी, पोल उघाडी चंपा तणी ॥ शिवा नाम जपो भगवती, जगीश आपे कुंती सती ॥ ३ ॥ शीलवती शीलें शोभती, भजो भावें ए निर्मल मती ॥ दमयंती ने चूला सती, प्रभावती ने पद्मावती ॥४॥ शोल सतीनां नाम उदार, भणतां गणतां शिव सुखकार ॥ शाकिनी डाकिनी व्यंतर जेह, सतिनामें न पराभवे तेह ॥५॥ आधि व्याधि सवि जाये रोग, मन गमता सवि पामे जोग ॥ संकट विकट जाये सवि दूर, तिमिर समूह जेम उगे सूर ॥६॥ राज ऋद्धि घरे होये बहु, राय राणा ते माने सहु ॥ वाचक धर्मविजय गुरुराय, रत्नविजय भावें गुण गाय॥७॥

॥ अथ आत्मशिक्षानी सद्याय ॥ राग रामग्री ॥

॥ आतमरामें रे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ तहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मव्युं जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूठें सब मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ स्वजनवर्ग सवि कारमो, कूडो कुटुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नही कोइ आधार रे, जिणें पामे भवपार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकीयां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ भव उछेगें रे तुं भम्यो, तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदयमां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ भोग अनंता तें भोगव्या, देव मणुअ गतिमांहि रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांछा छे त्यांहि रे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चय इम धारी रे, इणविध निज चित्त ठारी रे, मणिचंद्र आतम तारी रे ॥ आ० ॥५॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिब आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले स्थानक गणी

थें बीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थेराणं रे ॥ नविया वीश स्थानक तप कीजें ॥ उंली वीश करीजें रे ॥ ज० ॥ ग णणुं एह गणीजें रे ॥ ज० ॥ जिम जिनपद पामीजें रे ॥ ज० ॥ नरनव लाहो लीजें रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उवज्झाय उठे सव्व साहूणं, सातमे आठमे नाण ॥ नवमे दंसण दसमे विणयस्स, चारित्र अ गीयारमे जाण रे ॥ ज० ॥वी०॥२॥ बारमे बंनवयधारीणं, तेरसमे किरिया णं ॥ चउदमे तव पनरमे गोयम, सोलसमे नमोजिणाणं रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीयें, अढारसमे नाणस्स ॥ उंगणीश मे नमोसुयस्स संनारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देववंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संघ विनय बुध शि ष्य सुदर्शन, जंपे एह विचार रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयलविष शिखामणनी सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, बारी छे दुर्गतितणी ॥ ठांरु संगति रे, मूरख तुं परस्त्री तणी ॥ जीव नोला रे, फोला तेहशुं म म करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ जो वात करिश परनारी साथें, लोक सहु हेरे अछे ॥ राय रांक थइने रह्या रानें, सुखें नहिं बेसे प छें ॥ ए मदनमाती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो वली सुख देखाडे, पछे पछाडे नामिनी ॥ २ ॥ ढाल ॥ कर पगना रे, नयण वयण चाला करे ॥ बोलावी रे, नरने लेइ धाई पडे ॥ नोलावी रे, हाव नाव देखाडशे ॥ पगे लागी रे, मरकलडे मन पाडशे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खंके लीलछी ॥ बोलंती रूडी चित्त कू डी, कूड कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक व्यसन पडियो, पछें न पो साये पायको ॥ दीवान दंके मान खंके, मार सहे पछे रायको ॥४॥ढाल॥ ठांकी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरें करा ॥ जा नाशी रे, रूप देखी जीव एह तणुं ॥ कन्नो रही रे, एह स हामुं म म जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ घणुं म जोइश एह सामुं, कुलखी दीठे नवि गमे ॥ जिम शुनी पूठें श्वान हींके, तेम परनारी पूठें कां न मे ॥ जिम बिल्लाडो दूध देखे, कोले फांग न देख ए ॥ परनार पेख्यो पु रुष पापी, किस्यो नय न लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फुलवेणी रे, शिरसिंदू

र सेंथो जस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां इंद्रिय करि गहगह्यो ॥ शिर राखडी रे, आंख देई तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ कां रह्यो मूरख आंख देई, शणगार जार इणे धस्या ॥ ए ऊली जीहा, आंखे पीहा, कानकूपा मल जस्या ॥ नारी अभि पुरुष माखण, बोल बोलतां विगरे ॥ स्त्रीदेहमां शुं सार दीठो, मूढ महियां कां करे ? ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापीयो ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीयो ॥ कां जूलो रे, शणगार देखी ए हना ॥ जाणो प्राणी रे, ए छे दुःखनी अंगना ॥ ए ॥ त्रूटक ॥ अंगना तुं छोडी छोकरे, यश कीर्त्ति सघले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लीये को, परलोक दुर्गति दुःख सहे ॥ विजयजद्र बोले नवि फोले, शीयल थकी जे नरवरा ॥ तस पाय लागुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयंकरा ॥१०॥

॥ अथ श्री शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरां चरण कमलकी में जाउं बलिहारी ॥ ज० ॥ १ ॥ वीश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ ज० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया, मृगलांछन प्रभुचरण सुहाया ॥ ज० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पांचमा सोहे, शोलमा जिनवर, जग सहू मोहे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मंगल आरति तोरी कीजें, जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ ज० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥ ज० ॥६॥ इति शांतिजिन आरती ॥

॥ अथ श्रीआदिजिननी आरती ॥

॥ अप्सरा करती आरती, जिन आगें ॥ हां रे जिन आगें रे, जिन आगें, हां रे ए तो अविचल सुखडां मागे ॥ हां रे नाभिनंदन पास ॥ अप्सरा करती आरती जिन आगें ॥१॥ ता थेइ नाटक नाचती, पाय ठमके॥ हां रे दोय चरणे फांफर फमके ॥ हां रे सोवन घूघरी घमके ॥ हां रे लेती फुदडी बाल ॥ अ० ॥२॥ ताल मृदंग ने वांसली, रूफ वीणा ॥ हां रे रूडां गावंती स्वर जीणा ॥ हां रे मधुर सुरासुर नयणां ॥ हां रे जोती मुखडुं निहाल ॥अ०॥३॥ धन्य मरुदेवा मातने, प्रभु जाया ॥ हां रे तोरी कंचन वरणी काया, हां रे में तो पूरवपुण्यें पाया ॥ हां रे देख्यो तोरो देदार ॥अ० ॥४॥ प्राणजीवन परमेश्वर, प्रभु प्यारो ॥ हां रे प्रभु सेवक हुं छुं तारो॥

हां रे जवो जवनां दुःखडां वारो ॥ हां रे तुमें दीनदयाल ॥अ०॥५॥ सेवक जाणी आपणो, चित्त धरजो ॥ हां रे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हां रे मुनि माण कसुखीयो करजो ॥ हां रे जाणी पोतानो बाल ॥अ०॥६॥

॥ अथ जिननवअंगपूजाना दोहा लिख्यते ॥

॥ जल जरी संपुटपत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ रूषज चरण अंगूठडो, दायक जव जल अंत ॥ १ ॥ जानुबलें काउस्सग्ग रह्या, विचस्या देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥२॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरशीदान ॥ करकांडे प्रजु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥३॥ मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ जुजाबलें जव जल तस्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतें जगवंत ॥ वसीया तिण कारण जवि, शिरशीखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पदपुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत ॥ त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जाल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पहोर प्रजु देशना, कंठविवर वर्त्तूल ॥ मधुरध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशमबलें, बाल्या राग ने रोष ॥ हीम दहे वनखंमने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण ऊजली. सकल सुगुणविश्राम ॥ नाजिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥९॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणें नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागथी, कहे शुजवीर मुणींद ॥ १० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरती कीजें पास कुंवरकी, जन्म मरण जयहर जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म कहावे, वामा मात प्रजु हुलरावे ॥ आ०॥ १ ॥ यौवन वन फलजोगी जणावे, नारी प्रजावती सती परणावे ॥ काय नीरोग जोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञानविलोकी कमठ हरावे, गहनदहनथी फणी निकसावे ॥ सेवकमुख नवकार सुणावे, धरणराय पदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधी कमठ हठ तप लय लावे, जिन दर्शनसें सुरगति पावे ॥ जोग संयोग वियोग बनावे, संयमश्री आतम परणावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान लेहरीयां काउस्सग्ग जावें, स्वामीकूं वड लेइ तव ठावे ॥ मेघमाली जलधर वरसावे, जब नासा जर जर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणेंद्रासन कंपावे,

पद्मावतीसाथें त्यां आवे ॥ नाथ ऊर्ध्वं शिर फणीकुं धरावे, जइ अपरा धी देव ऊरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांइ शरण लइ समकित पावे, फणिपति नाटक विधि विरचावे ॥ प्रभुचरणे नमि गेह सिधावे, जगदीश्वर घन घाती हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल दुग पावे, धर्म कही जिन नाम खपावे ॥ भूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रभु निपजावे ॥ आ० ॥८॥ आरतिगतकी आरती गावे, श्रोता वक्ता रति उतरावे ॥ मनमोहन प्रभु पास कहावे, श्री शुभवीर ते शीश नमावे ॥ आ० ॥ ९ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोभा सुंदर सार ॥आज०॥१॥ छिनु छिनु जनमन मोहन अर्चो, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥२॥ विविध जातिके पुष्प मंगावो, सफल करो अवतार ॥आ०॥३॥ धूप उखेवो ने करो आरती, मुख बोलो जयकार ॥आ०॥४॥ समवसरण आदीश्वर पूजो, चोमुख प्रतिमा चार ॥आ०॥५॥ हैये धरी भाव भावना भावो, जिम पामो भवपार ॥आ०॥६॥ सकलसंघ सेवक जिनजीको, आनंदघन उपकार ॥आ०॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपांच कारणनुं स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथसुत वंदियें, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तुतत्त्व सवि जाणीयें, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्तभंगि रचना विना, बंध न वेसे वात ॥२॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंधपुरुषें एह गज, ग्रही अवयव एकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनयें करी, जुगतियोग शुद्धबोध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहिं किस्यो विरोध ॥५॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग आशावरी ॥

॥ श्री जिनशासन जग जयकारी, स्याद्वाद शुद्धरूप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात निवारण, अकल अभंग अनूप रे ॥श्री०॥१॥ ए आंकणी॥कोइ कहे एक कालतणें वश, सकल जगत गति होय रे॥ कालें उपजे कालें विणसे, अवर न कारण कोय रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ कालें गर्भ धरे जग वनिता, कालें जन्मे पुत्त रे॥ कालें बोले कालें चाले, कालें झाले घरसुत्त,

रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कालें दूधथकी दहीं थाये, कालें फल परिपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, कालें सहु थाय खाख रे ॥ श्री०॥ ४ ॥ जिन चोवीश बार चक्रवर्ती, वासुदेव बलदेव रे ॥ कालें कलित कोई न दीसे, जसु करता सुर सेव रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणीआरा, उए जुई जुइ जात रे ॥ षड्ऋतुकाल विशेष विचारो, जिन्न जिन्न दिन रात रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ कालें बालविलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्ध पण वली पली वपु अति डुर्बल, शक्ति नहिं लवलेश रे ॥श्री०॥७॥

॥ ढाल बीजी ॥ गिरुआ गुणवीरजी ॥ ए देशी ॥

॥ तव स्वजाववादी वदे जी, काल किस्युं करे रंक ॥ वस्तुस्वजावें नीपजे जी, विणसे तिमज निःशंक ॥ सुविवेक विचारी, जुउं जुउं वस्तु स्वजाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उते योग जोबनवती जी, वांऊणी न जणे बाल ॥ मुछ नहिं महिलामुखें जी, करतल उगे न वाल ॥ सु० ॥ २ ॥ विण स्वजाव नवि नीपजे जी, केम पदारथ कोय ॥ आंब न लागे लींबडे जी, बाग वसंतें जोय ॥ सु०॥ ३ ॥ मोरपिछ कुण चीतरे जी, कोण करे संध्यारंग ॥ अंग विविध सवि जीवनां जी, सुंदर नयन कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा बोर बबुलना जी, कोणें अणीयाला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजुआ जी, तरु फल फूल प्रसिद्ध ॥सु०॥५॥ विषधर मस्तक नित्य वसे जी, मणि हरे विष ततकाल ॥ पर्वत थिर चल वायरो जी, ऊर्ध्व अग्निनी ज्वाल॥ सु० ॥ ६ ॥ मत्स्य तुंब जलमां तजे जी, बूडे काग पहाण ॥ पंखी जात गयणे फिरे जी, इणी परें सयल विनाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु शुंठथी उपशमे जी, हरडे करे विरेच ॥ सीझे नहिं कण कांगडू जी, शक्ति स्वजाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ देश विशेषें काष्ठना जी, जूमिमां थाय पहाण ॥ शंख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वजाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ९ ॥ रवि तातो शशी शीतलो जी, जव्यादिक बहु जाव ॥ उए ड्रव्य आप आपणांजी, न तजे कोई स्वजाव ॥ सु० ॥ १० ॥ इति स्वजाववादः ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कपूर होय अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ काल कीस्युं करे बापडो जी, वस्तु स्वजाव अकज्ज ॥ जो नवि होये जवितव्यता जी, तो केम सीझे कज्ज रे॥ प्राणी म करो मन जंजाल, जाविजाव निहाल रे ॥ प्राणी म० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जलनिधि तरे जं

गल फरे जी, कोडि जतन करे कोय ॥ अणजावी होवे नहीं जी, जावी होय ते होय रे ॥प्रा०॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, झालें झालें केइ लाख ॥ केइ खर्यां केइ खाखटी जी, केइ आधां केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाउल जेम जवितव्यता जी, जिण जिण दिशि उजाय ॥ परवश मन माणस तणुं जी, तृण जेम पूंठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नियतिवशें विण चिंतव्युं जी, आवि मले ततकाल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्युं जी, नियति करे विसराल रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणां जी, नयण हणे गोवाल ॥ दोय सहस्स जस देवता जी, देह तणा रखवाल रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कोकुहो कोयल करे जी, केम राखी शके प्राण ॥ आहेडी शर ताकियो जी, उपर जमे सींचाण रे ॥ प्रा०॥ ७ ॥ आहेडी नागें झस्यो जी, बाण लाग्यो सींचाण ॥ कोकुहो ऊडी गयो जी, जुउं जुउं नियति प्रमाण रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममां जी, रानें पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवी जी, राख्या ही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ इति जवितव्यतावादः कथितः ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग मारुणी ॥ मनोहर हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ काल स्वजाव नियतमती कूडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्में निरय तिरिय नर सुरगति जी, जीव जवांतरें जाय ॥ चेतन चेतीयें रे ॥ १ ॥ कर्म समो नहिं कोय ॥ चेतन० ॥ ए आंकणी ॥ कर्में राम वस्या वनवासें, सीता पामे आल ॥ कर्में लंकापति रावणनुं, राज थयुं विसराल ॥ चे० ॥२॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर, कर्में नर गुणवंत ॥ कर्में रोग शोक दुःख पीडित, जन्म जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्में वरस लगें रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में वीरने जुवो योगमां रे, खीला रोप्या कन्न ॥चे० ॥ ४ ॥ कर्में एक सुखपालें बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय रथ चढ्या चतुर नर, एक आगल उजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यममानी अंध तणी परें, जग हींडे हाहूतो ॥ कर्मबली ते लहे सकल फल, सुख जर सेजें सूतो रे ॥ चे० ॥६॥ उंदर एकें कीधो उद्यम, करंफियो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो जूख्यो, नाग रह्यो दुःख झोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूषक तस मुखमां, दिये आपणो देह ॥ मार्ग लइ वन नाग पधार्या, कर्ममर्म जुउ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति कर्मविवादः कथितः ॥

॥६॥ नवस्थितिनो परिपाक थयो तव, पंकितवीर्य उल्लसीयो ॥ नव्यत्व नावें शिवगति पामी, शिवपुर जइने वसियो रे प्राणी ॥ सम० ॥७॥ वर्द्ध मान जिन एणी परें विनयें, शासननायक गायो ॥ संघ सकलसुख होये जेहथी, स्याद्वादरस पायो रे प्राणी ॥सम०॥ ॥कलश॥इय धर्म नायक,मुक्ति दायक, वीर जिनवर, संथुण्यो ॥ सय सतर संवत, वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष, धरी घणो ॥ श्रीविजय देव, सूरिंद पटधर, श्रीविजयप्रन्न, मुणींद ए ॥ श्री कीर्त्तिविजय वाचक, शिष्य इणी परें, विनय कहे, आणंद ए ॥ १ ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ शुन्न गुरु चरणे नामी शीश, सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहीशुं त्यां मनना दश दोष, डुशमन देखी धरतो रोष ॥१॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग इछे यश मन घणो, न करे विनय वडेरा तणो ॥२॥ नय आणे चिंते व्यापार ॥ फलसंशय नीयाणां सार ॥ हवे वचनना दोष निवार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥३॥ लइ कुंची जा घर ऊघाड, मुखें लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥४॥ करे विकथा ने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ कायाकेरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार ॥५॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे ऊंचे हाथ ॥ पग लांबे बेसे अविनीत, उंठींगण ले थांजो नीत ॥६॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रसफल निर्गमे, करहा कंटक तरुयें नमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा ऊजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुन्नवीर वचन पालती, स्वर्गें गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति सामायिक बत्रीश दोषस्वाध्यायः ॥

॥ इति श्रीश्रावकस्य दैवसिकादिकपंचप्रतिक्रमण सूत्राणि सार्थानि, स्तवनसद्यायस्तुत्यादि सहितानि च समाप्तानि ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे उद्यमवादी नणे ए, ए चारे असमर्थ तो ॥ सकल पदार्थ साधवा ए, एक उद्यम समरथ तो ॥१॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीझे काज तो ॥ रामें रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज्य तो ॥२॥ कर्म नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो ॥ देउल वाघमुखें पंखी थां ए, पियु पेसंतां जाय तो ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम नीकले ए, तील मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढे ए, जुउ एकेंड्रिय वेल तो ॥४॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीझे काज तो ॥ ते फरी उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उंस्या विना ए, नवि रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पडे कोलीयो ए, मुखमां परखे जतन्न तो ॥६॥ कर्म पुत्त उद्यम पिता ए, उद्यमें कीधां कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरें टले ए, जुवो कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥ दृढप्रहारी हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी षट्मासमां ए, आप थयो अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टीपे टीपे सर नरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो ॥ गिरि जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥९॥ उद्यमथी जल बींदुउ ए, करे पाषाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या नणे ए, उद्यम जोडे दाम तो ॥१०॥इति॥

॥ ढाल छठी ॥ ए छंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ए पांचे नयवाद करंता, श्रीजिनचरणे आवे ॥ अमियसरस जिनवाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे रे प्राणी ॥ समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे प्राणी ॥ ते मिथ्यामति जाणो रे प्राणी ॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोई काज न सीझे ॥ अंगुलियोगें करतणी परें, जे बूझे ते रीझे रे प्राणी ॥स०॥२॥ आग्रह आणी कोइ एकने, एहमां दीजें वडाई ॥ ॥ पण सेना मिली सकल रणांगण, जींते सुजट लडाई रे प्राणी ॥ सम० ॥ ३ ॥ तंतुस्वजावें पट उपजावे, काल क्रमें रे वणाये ॥ नवितव्यता होये तो निपजे, नहिं तो विघ्न घणांय रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतुवाय उद्यम नोक्तादिक, नाग्य सकल सहकारी ॥ एम पांचे मली सकल पदारथ, उत्पत्ति जुउ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥५॥ नियतिवशें हलुकरमो थइने, निगोदथकी निकलियो ॥ ६ ॥ . . . . नवादिक पामी, सद्गुरुने जइ मलियो रे प्राणी ॥ सम०